

This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

#### Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

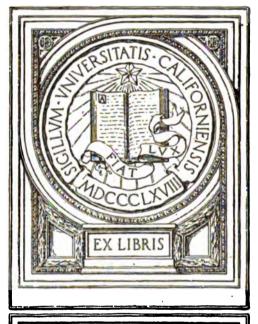
- + *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + Refrain from automated querying Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

#### **About Google Book Search**

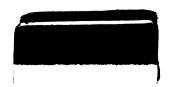
Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at http://books.google.com/



## GIFT OF HORACE W. CARPENTIER



730 J24



Univ. of Valifornia

# THE REKHÂGANITA

OR

### GEOMETRY IN SANSKRIŢ COMPOSED BY SAMRÂD JAGANNÂTHA

#### VOLUME I. BOOKS I-VI.

UNDERTAKEN FOR PUBLICATION

BY

THE LATE

## HARILÂL HARSHÂDARÂI DHRUVA,

B. A., LL. B., D. L. A. (SWEDEN), M. R. A. S. (LONDON AND BOMBAY),

CITY JOINT JUDGE AND SESSIONS JUDGE, BARODÂ,

Edited and carried through the press with a Critical Preface, Introduction, and notes in English

## KAMALÂS'ANKARA PRÂNAS'ANKARA TRIVEDÎ, B. A.

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF BOMBAY, HEAD MASTER, BROACH
HIGH SCHOOL (FORMERLY PROFESSOR OF ORIENTAL
LANGUAGES, SÂMALADÂS COLLEGE, BHÂVANAGAR, AND ACTING PROFESSOR OF
ORIENTAL LANGUAGES, ELPHINSTONE AND DECCAN
COLLEGES).

1st Edition - 300 Copies.

(Registered for copy-right under Act XXV. of 1867).

Bombay.

GOVERNMENT CENTRAL BOOK DEPÔT.

1901.

[All rights reserved].

Price 12 Rupees.

Bombay Sanskrit Series Ao. LXI.

TO MINU AMMONIAO

#### BOMBAY:

Printed at Javaji Dadaji's "Nirnaya-sagara" Press.

Committee

श्रीः

# रेखागणितम्

## सम्राड्जगन्नाथविरचितं

( प्रथमभागात्मकं षष्ठाध्यायपर्यन्तम् )

स्वर्गवासिमहाशयध्रुवोपपदेन हर्षदरायात्मजेन हरिलालेन

संस्करणार्थमङ्गीकृतं

त्रिवे**द्युपंप**दधारिणा

## प्राणशंकरसूनुना कमलाशंकरेण संशोधितं

खनिर्मिताङ्ग्लभाषाभूमिकाटिप्पणीभ्यां च सम्रुपेतम् ।

तश्च

### मुम्बापुरीस्थराजकीयग्रन्थशालाधिकारिणा

"निर्णयसागरा"ख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा

शाके १८२३ वत्सरे १९०१ ख्रिस्ताब्दे प्राकाश्यं नीतम्।

प्रथमा आदृत्तिः

मूल्यं द्वादश रूपकाः

455405

Digitized by Google

HO VINU AMAVILIAS

इदं पुस्तकं मोहमय्यां निर्णयसागराख्ये मुद्रणालये मुद्रितम् ।

## UNIV. OF CALIFORNIA

# अनुक्रमणिका.

	पृष्ठ.		वृष्ट -
प्रास्ताविकपद्यानि	9- 3	एकविंशतितमक्षे <b>त्र</b> म्	२७
परिभाषा	\$- c.	प्रकारान्तरम्	२७-९
प्रथमोऽप्यायः	6-06	द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	२९–३०
प्रयमक्षेत्रम्	6- 9	त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	<b>३</b> 9
द्वितीयक्षेत्रम्	9-90	<b>चतुर्वि</b> शतितमक्षेत्रम्	३१-२
तृतीयक्षेत्रम <u>्</u>	90	प्रकारान्तरम्	३२
चतुर्यक्षेत्रम्	90-9	पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	३३
पश्रमक्षेत्रम्	99-2	प्रकारान्तरम्	<b>३</b> ३
प्रकारान्तरेण	93	षड्विंशतितमक्षेत्रम्	38-A
षष्टक्षेत्रम्	93	प्रकारान्तरम्	३५
सप्तमक्षेत्रम्	95-8	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	₹ <i>५</i> − <b>६</b>
अष्टमक्षेत्रम्	98-4	अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	३ ६ – ७
नवमक्षेत्रम्	94-6	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	३७-४९
प्रकारान्तरेण	98	अस्योपपत्तिक्रापकक्षे	त्राणि
दशमक्षेत्रम्	9 ६-७	प्रथमक्षेत्रम्	३७
एकादशक्षेत्रम्	90	द्वितीयक्षेत्रम्	₹ <i>७</i> –८
प्रकारान्तरेण	90-6	नृतीयक्षेत्रम् तृतीयक्षेत्रम्	<b>∮</b>
द्वादशक्षेत्रम्	96-5	<sup>नृतास्ता</sup> नम् चतुर्थक्षेत्रम्	·60-9
प्रकारान्तरेण	98	<b>पश्चमक्षेत्रम्</b>	89-3
त्रयोदशक्षेत्रम्	२०	षष्ठक्षेत्रम्	۲۶−۶ ۲۹−۶
<b>चतुर्दशक्षेत्रम्</b>	२०-१	<sub>नठसनम्</sub> सप्तमक्षेत्रम्	83-4
पत्रदशक्षेत्रम्	२१	· •	
<b>षोडशक्षेत्रम्</b>	२२-३	सप्तमक्षेत्रस्याष्टीप्रका	राः
सप्तदशक्षेत्रम्	२३	षष्ठः प्रकारः	84-8
अष्टादशक्षेत्रम्	<b>२३-४</b>	सप्तमः प्रकारः	84-0
प्रकारान्तरम्	२४	अष्टमः प्रकारः	83-6
ए <b>कोनविंश</b> तितमक्षेत्रम्	२५	एकोनत्रिशत्तमक्षेत्रम्	४८-९
विंशतितमक्षेत्रम्	२५-६	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	४९-५०
प्रकारान्तरम्	२६	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40



	ge.		ष्ट्रंष्ट्रं.
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40-9	षष्ठक्षेत्रम्	۶۶
प्रकारान्तरम्	<b>५</b> ٩	प्रकारान्तरम्	,,
त्रयस्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	49-2	सप्तमक्षेत्रम्	68
प्रकारान्तरम्	५२	प्रकारान्तरम्	,,
चतुर्स्रिशत्तमक्षेत्रम्	५२–३	अष्टमक्षेत्रम्	८४-५
प्रकारान्तरम्	५३	प्रकारान्तरम्	८५
पव्वत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	43-8	नवमक्षेत्रम्	८५-७
षट्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	48-4	प्रकारान्तरम्	64-6
सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	५५	दशमक्षेत्रम्	८७-९
अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	44-6	प्रकारान्तर <b>म्</b>	66- <b>9</b>
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	<b>५</b> ६	एकादशक्षेत्रम्	८ <b>९</b> –९१
चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	48-0	प्रकारान्तरम्	९०-९१
एकचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	५७	द्वादशक्षेत्रम्	९ <b>१</b>
द्विचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	40-6	त्रयोदशक्षेत्रम्	९१–२
त्रयश्वत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	46-8	चतुर्दशक्षेत्रम्	85-3
चतुश्रत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	५९	प्रकारान्तरम्	**
पश्चनत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	ę o	तृतीयोऽध्यायः	<b>९४</b> –१२६
षट्चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	"	प्रथमक्षेत्रम्	48
सप्तचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	६१-७८	द्वितीयक्षेत्रम्	९५
प्रकारान्तराणि सप्तदश	६२-७८	तृतीय <b>क्षेत्रम्</b>	९५–६
अष्टचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	96	प्रकारान्तरम्	<b>९</b> ६
द्वितीयोऽध्यायः	७९-९३	चतुर्थक्षेत्रम्	30
प्रथमक्षेत्रम्	७९	प्रकारान्तरम्	"
प्रकारान्तरम्	,,	पत्रमक्षेत्रम्	,,
द्वितीयक्षेत्रम्	७९-८०	प्रकारान्तरम्	<b>\$</b> <
प्रकारान्तरम्	60	षष्ठक्षेत्रम्	,,
तृतीयक्षेत्रम <u>्</u>	60-9	सप्तमक्षेत्रम्	<b>९८-९</b>
प्रकारान्तरम्	<b>د</b> ۹	अष्टमक्षेत्रम्	९९-१०२
चतुर्थक्षेत्रम्	८१–२	प्रकारान्तरम्	909-2
प्रकारान्तरम्	,,	नवमक्षेत्रम्	१०२–३
पत्रमक्षेत्रम्	८२-३	प्रकारान्तरम्	903
प्रकारान्तरम्	"	दशमक्षेत्रम्	१०३-४

	पृष्ठ.		<b>पृष्ठ</b> .
प्रकारान्तरम् <b></b>	<b>१०३</b> -४	त्रयखिंशत्तमक्षेत्रम्	929-2
एकादशक्षेत्रम्	908	चतुबिंशत्तमक्षेत्रम्	922-8
प्रकारान्तरम्	,,	पश्चत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	928-4
द्वादशक्षेत्रम्	904	षट्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	924-6
प्रकारान्तरम्	,,	प्रकारान्तरम्	१२६
त्रयोदशक्षेत्रम्	904-6	चतुर्थोऽध्यायः	930-83
प्रकारान्तरम्	906	प्रथमक्षेत्रम्	970
<b>ब</b> तुर्दशक्षेत्रम्	900-6	प्रकारान्तरम्	"
प्रकारान्तरम्	,,	द्वितीयक्षेत्रम्	"
पबद्शक्षेत्रम्	906-6	प्रकारान्तरम्	926
प्रकारान्तरम्	,,	तृतीयक्षेत्र <b>म्</b>	926-30
षोडशक्षेत्रम्	909-90	प्रकारान्तरम्	१२९–३०
प्रकारान्तरम्	990	चतुर्थक्षेत्रम्	930
सप्तदशक्षेत्रम्	990-99	पत्रमक्षेत्रम्	939
प्रकारान्तरम्	,,	षष्ठक्षेत्रम्	939-2
<del>अ</del> ष्टादशक्षेत्रम्	999	प्रकारान्तरम्	938
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	999-3	सप्तमक्षेत्रम्	,,
विंशतितमक्षेत्रम्	992	<b>अष्टमक्षेत्रम्</b>	933
एकविंशतितमक्षेत्रम्	993	नवमक्षेत्रम्	,,
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	,,	दशमक्षेत्रम्	455-4
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	8-518	प्रकारान्तरम्	938-4
चतु <b>र्वि</b> शतितमक्षेत्रम्	998-4	एकादशक्षेत्रम्	934-0
पश्वविंशतितमक्षेत्रम्	, 994	प्रकारान्तरम्	938-0
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	994-8	द्वादशक्षेत्रम्	<b>१३७</b> -८
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	998	प्रकारान्तरम्	,,
<b>भ</b> ष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	998-0	त्रयोदशक्षेत्रम्	१३८–४१
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	996	प्रकारान्तर <b>म्</b>	938-89
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	995-6	चतुर्दशक्षेत्रम्	989-3
प्रकारान्तरम्	996-8	प्रकारान्तरम्	<b>»</b>
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	११९–२०	पश्चदशक्षेत्रम्	983
प्रकारान्तरम्	920	षोडशक्षेत्रम्	<b>9</b> 85-3
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	१२०–२१	पश्चमोऽध्यायः	988-49

	<b>रह.</b>		पृष्ठ.
परिभाषा	988-4	परिभाषा	101
प्रथमक्षेत्रम्	986	प्रथमक्षेत्रम्	909-3
द्वितीयक्षेत्रम्	985-0	प्रकारान्तरम्	907-3
तृतीयक्षेत्र <b>म्</b>	180-6	द्वितीयक्षेत्रम्	903-8
चतुर्थक्षेत्रम्	986	प्रकारान्तरम्	948
पश्चमक्षेत्रम्	9 3 %	तृतीय <b>क्षेत्रम्</b>	9-809
षष्ठक्षेत्रम्	985-40	प्रकारान्तरम्	908
सप्तमक्षेत्रम्	940-9	चतुर्थक्षेत्रम्	908-0
<b>अ</b> ष्टमक्षेत्रम्	949-2	प्रकारान्तरम्	900
नवमक्षेत्रम्	942-3	पद्मस्तेत्रम्	906-9
दशमक्षेत्रम्	945-8	प्रकारान्तरम्	,,
एकादशक्षेत्रम्	948-4	षष्ठक्षेत्रम्	909-60
द्वादशक्षेत्रम्	944-8	प्रकारान्तरम्	"
त्रयोदशक्षेत्रम्	१५६-७	सप्तमक्षेत्रम्	960-9
चतुर्दशक्षेत्रम्	940-6	अष्टमक्षेत्रम्	9 < 9 - 7
प्र <b>कारा</b> न्तरम्	,,	नवमक्षेत्रम्	१८२-३
पश्चदशक्षेत्रम्	946	प्रकारान्तरम्	,,
षोडशक्षेत्रम्	946-8	दशमक्षेत्रम्	9<3-8
सप्तदशक्षेत्रम्	१५९–६ <b>१</b>	प्रकारान्तरम्	,,
प्रकारान्तरम्	9	एकादशक्षेत्रम्	968-4
अष्टादशक्षेत्रम्	969-3	प्रकारान्तरम्	१८५
प्रकारान्तरम्	१६२	द्वादशक्षेत्रम्	9 64- 8
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	१६२–६३	प्रकारान्तरम्	,,
विंशतितमक्षेत्रम्	8 É 3 – R	त्रयोदशक्षेत्रम्	966-0
प्रकारान्तरम्	958	चतुर्दशक्षेत्रम्	960
एकविंशतितमक्षेत्रम्	968-4	पबदशक्षेत्रम्	966-9
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	954-0	प्रकारान्तरम्	"
प्रकारान्तरम्	9 ६ ६ – ७	षोडशक्षेत्रम्	969-90
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	9 60-6	सप्तदशक्षेत्रम्	950
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	१६८-९	अष्टादशक्षेत्रम्	959-2
पश्वविंशतितमक्षेत्रम्	9 ६ ९ – ७ ०	प्रकारान्तरम्	"
षष्ट्रोऽध्यायः	१७१–२०६	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	94.7

	रुष
विंशतितमक्षेत्रम्	953
एकविंशतितमक्षेत्रम्	"
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	993-8
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	984
चतुर्विशतित्मक्षेत्रम्	"
प <b>व</b> र्विश्चतितमक्षेत्रम्	956
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	996-0
सप्तर्विशतितमक्षेत्रम्	990-6
अष्टार्विशतितमक्षेत्रम्	996-99
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	999-309
प्रकारान्तरम् <b></b>	२००-२०१
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२०१-२
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२०२–३
प्र <b>कारान्तर</b> म्	२०३
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२०३-५
प्रकारान्तरम् <b></b>	208-4
त्रवर्षिशत्तमक्षेत्रम्	₹04-€

Notes.		
Book I.	1- 64	
Book II.	65- 72	
Book III.	<b>73-</b> 88	
Book IV.	89-100	
Book V.	101-2	
Book VI.	103-118	
Appendix contai	ning the	
readings of V.	119-141	
Errata.	143-144	

# Critical Notice of the Manuscripts of the Rekhâganita.

The edition of the Rekhaganita was undertaken for the Bombay Sanskrit Series by the late Mr. Harilâl Harshadarâi Dhruva B. A., L L. B., D. L. A. (Sweden), M. R. A. S. (London and Bombay), M. P. T. S., &c., &c., City Joint Judge and Sessions Judge, Baroda. He read a paper on the Rekhaganita at the VIII. International Congress of Orientalists, Stockholm and Christiania, which he attended as a Pandit Representative Delegate of His Highness, the Maharaja S'iyaji Rao Gaekwad He intended to publish the work in three volumes, of Barodâ the first volume to contain the text, the second to contain the English notes, and the third to contain Varia Lectiones. The matter for the 1st Volume was sent to the Curator, Government Central Book Depôt, Bombay, for publication and it was entrusted to the Nirnayasagar Press. But the press returned it to the author, as the figures for Propositions were in most cases wanting. The manuscript thus returned remained with him till his death. It is a matter of great sorrow that the eminent scholar was not spared by Providence to finish the work he began very zealously.

The manuscript, that was sent to the press and was returned for want of figures, was handed over to me by Mr. Dhruva's widow. I took it up and thought that the work would be soon ready as figures alone were wanting. To my great surprise, however, I found that it was a copy of a single manuscript. The copy was made by a S'âstrî of Amreli in Kâthiâwâd. 'संपूर्ण । समाप्तीयं प्रम्यः । द्वयं भूयात् । संवत् १८८६ कार्तिक द्वरी ५ प्रतिकृतिरियं कृतें कृषिकर्मणा व्यवस्थानास्मनेनाऽमरेकीगुजेर-वाकायाः संस्कृतिशक्षकेण प्रमासपत्तनस्थेन ॥ संवत् १९४६ आयादश्रुदी ५' is what is found at the end of the manuscript. On examining it minutely I found that it was incorrect on almost every page of it. It was now evident that I had not simply to supply figures, but to settle the text as

well. Thereupon I asked Mr. Dhruva's widow if she had any other manuscripts of the work with her, and she handed over to me two manuscripts. One of these breaks up at the end of the fifth book and is without figures. The second has figures here and there; but they are in most cases incorrect and without letters. This manuscript is also incomplete. It goes almost to the end of the third book and then begins with the 15th proposition of the tenth book and comes up to the end of the work. Thus neither of the two manuscripts was of great use to me. I then secured other manuscripts of the work and two very valuable editions of Euclid from England and settled the text and the figures with the help of these.

It is thus clear that Mr. Dhruva did not live to do anything more than get a manuscript of the work copied by an Amreli S'âstrî. It is a matter of regret that the work did not get through his scholarly hands. The collation of Mss. from different parts of India to settle the text, the construction of figures, the English notes, the Critical Notice of Manuscripts and the Introduction, all this being my work, the shortcomings of the present edition, whatever they may be, are wholly attributable to me.

The present edition is based upon the following manuscripts:-

Kârtika) Sudi 5" in the words of the writer. The Ms. extends over 144 double pages and a portion more. Each single page contains 29 lines on an average and each line contains an average of 25 letters. The copy is written in bold beautiful Devanâgari characters, and the text contains some mistakes in writing......"

This Ms. I have designated D.

A Ms. obtained from Mr. Dhruva's widow. It begins with 'श्रीगणेशाय नमः । अथोक्रीदशाख्यं रेखागणितं खिक्यते । . This is the Ms. of which Mr. Dhruva says, "It is to Pandit Durgaprasada's find that we owe the discovery of Euclid, being the original author, whose Elements of Geometry Jagannatha Samrat translated. One of the Mss. lent to me by the Pandit has at the beginning a note thus, 'अथोक्कीवज्ञाक्यं रेखागणितं किक्यते'." It is an incomplete Ms. It goes on regularly till about the end of the Third Book. The last line of the Ms. on page 66 is 'yes-राम्सरं झदरेला झजरेला संयोज्या पुनर्झचिद्वात् अववर्गयहवर्गयोः' to page 66 no page is wanting and all the pages are correctly numbered. After this page, there is a long gap and though the next page is numbered 67, it begins with the last portion of proposition 14, Book X. The first line on the page is, 'बात-स्वोऽस्ति वहि वहं हजातिकं भवति तदा वर्ज बहातिकं भविष्यति कृतः यहि मिकित चेत् तदा बहरती. After this the Ms. goes on regularly to the end. The pages are correctly numbered up to the 70th page. From the next page they are numbered afresh, as one, two. three &c., and the last page is 65. The opening page of the Ms. has '¿ apar line yay'. Thus there are in all 135 pages. Figures are given in the first 66 pages, but most of them are incorrect. In the last 69 pages no figures are given in Book X., though a vacant space is left for every figure, and the figures that are given here and there in the remaining books are quite incorrect. The Ms. has the following colophon:-

Digitized by Google

<sup>\*</sup> Baroda State Delegate p. VII. and VIII.

'शिस्पशास्त्रसिदं प्रोक्तं ब्रह्मणा विश्वकर्मणे । पारम्पर्ववशादेतदागतं घरणीतले ॥ तहुष्टिकं महाराज जयसिंहाज्ञया पुनः । प्रकाशितं मया सम्यक् गणकानन्दहेतवे ॥ श्रीमहाजाविराजप्रसुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सज्ञाङ्कुगन्नाथ इति समिन्धारूदितेन प्रणीते । प्रम्थेऽसिन् नाम्नि रेलागणित इति सुकोणाववोधप्रदात-र्व्यप्याधेष्येत्रमोहापष्ट इह विरतिं चल्नसंख्यो गतोऽभूत् ॥'

This Ms. is designated A. It is not quite correct.

III. This is the other Ms. I got from Mr. Dhruva's widow. It is a very neat and correct Ms., but it is incomplete. It goes to the end of the Fifth Book. It has no figures. It consists of 85 double pages and has ten lines on each page. This is probably the Ms., of which S'âstrî Durgâprasâda Dviveda, Professor, Sanskrit College, Jeypore, wrote to me as follows in reply to my letter to him requesting him for a loan of a Ms. of the work:—

'श्रीमत्सु विविधविद्याविद्यारदेषु सनमस्कृति कुशलोदन्तं चेदं वृत्तजातं विनिवेद्यते—चिराधिगतं यौष्माकीणं लेखरबमधिगत्य भूयानानन्दः प्रादुरभूत्।
सद्यः साफल्यमधिगच्छतां भवदीयोऽयं विश्वजनीनो रेखागणितसंस्करणव्यापारभरः। इहाविर्भूयापि तत् पुसकं तिरोभावमधिश्रयदिव दश्यते। यतो यत्वतो
गवेषणे विद्वितेऽपि सकलप्रयोजनप्रयोजकं सक्षेत्राकृति पुसकं नोपलम्यते।
उपलम्यमानाम्यपि द्वित्राणि पुस्तकानि खुद्धिराहित्यादिदोषाकान्ततया न कार्यनिवादकाणि। प्रथमं तावन्मदीयपुस्तकं (यस्य प्रारम्भतः पद्ध अध्याया भवदन्तिकं सिन्तः) शुद्धप्रायमपि क्षेत्रविकलमास्ते। द्वितीयं राजकीयं पूर्वपुस्तकमात्कम्। तृतीयं मच्छात्रस्य निकटे वर्त्तते तद्भिद्धमातृकमपि न स्पृहणीयम्।
पृतस्यां पुस्तकत्रव्यामप्याकृतयो नासते किं तु मदम्यणें कतिपयाध्यायानामाकृतयो याथातच्यगुणानाकान्ता वर्त्तन्ते। तदाकृतिपुस्तकमपि पद्धमाध्यायावसानकं पुरा स्वर्गवासिनो श्रुवस्य निकटे प्रहितम्। तत्र रेखागणितपुस्तकेन सह
अवदन्तिकमधिगतं भवेत्।

\*\*\*

This Ms. is designated B.

IV. The fourth Ms. collated for the present edition belongs to the Government Sanskrit College, Benares, and was kindly

<sup>\*</sup> The letter is given in full to shew how difficult it is to secure a correct and complete Ms. of the work even from Jeypore, the place of its birth.

lent to me by Mr. Arthur Venis, M. A., Principal of the College. In reply to my letter of the 13th December 1898 he was good enough to send me the Ms. on the 24th idem. The note on the Ms. in the College Library is रेसागणितं पण्डितराजजगन्नायविर-चित्रमेकपुटकारमकं संपूर्णस्.

The Ms. begins as follows:-

श्रीगणेशाय नमः । श्रीशारदायै नमः । श्रीगुरवे नमः । श्री सिद्धिः । गजाननं गणाचिपं सुरासुराचितं सदा । समस्तमककामदं शिवासुतं सुसप्रदस् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमण्यवर्तिनस् । समस्तभूतिमूचितं नमामि विज्ञवारणम् ॥

symplete &c. The verses dedicated to Ganes's are thus in this Ms. in a different form. It is a complete Ms. in a bookform on country-paper, and appears to be old as many pages are eaten by white ants on their border. Though the Ms. is incorrect, does not contain all the figures and those that are given are inaccurate, particularly in the latter portion, still it was of great use to me in filling up the omission of lines on many pages in Mr. Dhruva's Ms. sent to the press. The Principal was kind enough to allow me to keep it with me for a long time and I returned it to him on the 29th March 1901 after the whole text of my first volume and a part of the second volume were printed off.

This Ms. is designated K.

V. The fifth Ms. was obtained from His Highness, the Mahârâjâ's Sanskrit College, Trivandrum, through my friend Prof. S. Râdhâkrishna Aiyar B. A., F. M. U., Principal of His Highness the Mahârâjâ's College, Puḍukoṭâ. This is a very neat Ms. in a book-form. But on comparing it with the above Ms., I found it an exact copy of it. It was not therefore of use for collation. It contains a few figures not found in the Benares Ms.

VI. Having learnt that there was a complete Ms. of the work in the library of His Highness, the Maharaja of Kashmir, deposited in the Raghunatha Temple, I applied to Dr. M. A. Stein, M. A., late Principal of the Oriental College, Lahore, for a loan of it and received the following reply from him:—

Digitized by Google

'I have duly received your letter of 27th ult. (i. c. November 1898) concerning the loan of the Jammu Ms. of the Rekhaganita which you desire to collate.

Your name and work are well known to me and it would be a pleasure to me to assist you in the scientific task you have undertaken in the place of the late Mr. Dhruva.

The Raghunatha Temple Library of H. H. the Maharaja of Jammu is not under my control, though the cataloguing of its Sanskrit Mss. has been prepared and published by me (Bombay 1894). I am not authorized to arrange for the loan of Mss. outside Jammu, though I myself am allowed to use works from the collection which was first arranged and catalogued by me at Lahore.

Certain Draft Rules regulating the loan of Mss. which were proposed with a view to facilitating access to the Library are still under consideration by the Durbar. I do not know whether and when they will be adopted.

In the meantime I would recommend only two courses. You might ask the Director of Public Instruction, Bombay, to apply officially for the loan of the Ms. through the Resident in Kâshmir, Sialkot. In this way alone there would be a chance of the Ms. being made available for your direct use......

I then adopted the course proposed in this letter, and the Hon. Mr. E. Giles M. A., Director of Public Instruction, was kind enough to apply to the Assistant Resident, Kåshmir, for the loan of the Ms. The Assistant Resident forwarded the correspondence to the Vice-President, Kåshmir State Council, and the reply from him was that His Highness expressed his inability to forward the original manuscript, but that a true copy could be furnished on payment of the wages of the copyist. Thus, notwithstanding all the trouble so kindly taken by the Hon. Mr. Giles, the Ms. was not made available for my direct use; and since I had to be satisfied with a copy, I did not think it advisable to get the copy of the whole Ms. as I learnt that it was incorrect and lacked figures like other Mss. of the work. I, however, got a true copy of 10th, 11th and 12th Books, the text of which, it was the most difficult to settle,

as the books are the hardest of the lot. Pandit Gangadhara P. Gokulachandra of the Raghunatha Temple, Jammu, who was mentioned by Dr. Stein in his letter to me as the proper person to get the work accurately copied, was then applied to and he was kind enough to secure me a copy of the 10th, 11th, and 12th Adhyayas.

This Ms. is designated J.

VII. The last and the most important Ms. collated is another Ms. in the Library of Government Sanskrit College, Benares. My attention to it was drawn by Mahâmahopâdhyâya Sudhâkara Dvivedî's article on Pandit Jagannâtha in his Gaṇakataranginî. I applied to the Principal of the College who wrote to me as follows in reply to my letter:—

वाराणसीस्पराजकीयसंस्कृतपाठशाकीयपुस्तकाक्ये वर्तमानं जगन्नाथसन्ना-जामाञ्चया किसितं रेसागणितपुस्तकं तु स्थकन्नये सण्डितं जीणं च। एवं स्थितेऽप्यत्यन्तावश्यके कथित्रत् सण्डशो गन्तुमईति न त्वेकदा सर्वे पुस्तकमिति विभाष्य पुनरप्यपेक्षितसण्डविषयकं पत्रं केस्यं भवित्ररिति॥

I replied to the Principal:—

श्रीजगन्नाथसम्राजामाञ्चया छोकमणिनाम्ना केसकेन किसिता रेसागणित-प्रतिरतिप्राचीनत्वादेवोपयुज्यतेतरां मम ।.....

I then received the whole Ms., part by part. It is a very important Ms. \*It was copied for King Jayasimha himself by his order by the scribe Lokamani in the Samvat year 1784 (A. D. 1728), i.e. very shortly after the work was composed. The colophon of the Ms. runs as under:—

# युगवसुनगभ् (१७८४) वर्षे श्रुचिशुक्ते युगतियौ रवेवीरे । स्विक्तक्तांकमणिः किस सम्राजामाञ्चया पुस्तम् ॥

It is thus the oldest Ms. that can be secured and I need not say that I had great satisfaction in securing it. It is wanting

<sup>\*</sup> Being copied by the orders of Samrāj about the time the work was composed as the colophon shews, it is probable, nay almost certain, that it was made under the orders of Jagannātha Samrāj or the King himself. Jayasimha must have ordered out Jagannātha Samrāj, his protege, to supply him with a copy and Jagannātha, in his turn, must have directed Lokamani, probably his pupil, to do the work.

in a few pages. The remark on the last page clearly shews the pages that are wanting:—

#### 'एतानि न सन्ति ३३।४६-५५।६९-७८।१८८-२१९। द्वितीयं पत्रत्रयम् ।'.

It contains 292 pages in all. It is a very correct Ms. and is nicely written in Devanâgarî characters. It contains all the figures very accurately drawn with letters distinctly marked. Having received it after the first nine books were printed off, I have given its varce lectiones in the Appendix. From the 10th Book, they are put down in the foot-notes along with those of other Mss. I had great satisfaction in finding that the text settled for this edition and the figures constructed by me\* corresponded with those in the Ms. Unfortunately the most important portion of the Ms., pages 188-219, dealing with the Tenth Book, Prop. 16 to Prop. 101, is lost. A few technical terms in the Fifth Book are in this Ms. explained in the margin. The words used in explaining them are निम्नवति, सिक-दार, इबदालि निम्नबति, तफुमाले निम्नबति, अक्त निम्नबति, तर्कींबे निम्नबति, करुवे निश्चति, and मुखावा निश्चति. These are Arabic words and the work being copied within a few years of its compilation, they go to support the theory of the work having an Arabic work as its original.

The Ms. is designated V.

The two books which were of great use to me in the construction of some of the figures, particularly figures of the latter portion, were the well-known Gregory's edition of 1703 containing all the fifteen books in the Latin and the Greek and obtained from England through my pupil, Mr. Triumbakrão Jâdavrão Desãi, Barrister at Law, and another excellent edition, published in London in 1570 by Mr. H. Billingsley. It is the first translation into English of Euclid's work as its title-page which runs as under shews:—

<sup>\*</sup> The difficulty of constructing figures will be understood, when it is borne in mind that most of the alternative proofs given by Pandit Jagannātha are not found in any English edition, that many intermediate steps in the proofs of Propositions are omitted, that no authorities are given and that the letters  $\P$  and  $\P$  occasion a deal of confusion on account of the carelessness of copyists.



'The Elements of Geometrie of the most auncient Philosopher Evolide of Megara.

Faithfully (now first) translated into the Englishe toung by H. Billingsley, citizen of London.

Whereunto are annexed certaine scholies, annotations and inventions, of the best mathematiciens, both of time past, and in this our age.

With a very fruitfull Præface made by M. J. Dee, specifying the chief mathematicall scieces, what they are and wherunto commodious: where, also, are disclosed certaine new secrets mathematicall and mechanicall untill these our daies greatly missed.

Imprinted at London by John Daye.'

The Preface of Mr. Dee bears the year 1570. It has at its end the remark:—

Written at my poor house at Mortlake.

Anno. 1570. February 9.'

The Title-page is a beautiful one, having the ten pictures of Ptolomeus, Martinus, Aratus, Strabo, Hipparchus, Polibius, Geometria, Astronomia, Arithmetica and Musica and a motto Vvinere Virescit Veritas.

This valuable work contains 16 books. In the introductory remarks on the fourteenth book, it is said that Apollonius was the first author of the book, which was afterwards set forth by Hypsicles. Mr. Billingsley quotes from the Preface of Hypsicles to the 14th book in support of his statement. "Basilides of Tire (sayth Hypsicles) and my father together, scanning, and peysing a writing or booke of Appollonius, which was of the comparison of a dodecahedron to an icosahedron inscribed in one and the selfe same sphere, and what proportion these figures had the one to the other, found that Apollonius had fayled in this matter. But afterward (sayth he) I found another copy or booke of Apollonius, wherein the demonstration of that matter was full and perfect and shewed it unto them, whereat they much rejoysed. By

which wordes it semeth to be manifest that Apollonius was the first author of this booke, which was afterward set forth by Hypsicles. For so his own wordes after in the same preface seme to import." Billingsley gives the 14th book as set forth both by Hypsicles and Flussas, and the 15th book as set forth by Hypsicles and Campane and Flussas. The 16th book, which he says, is added by Flussas, contains 37 Propositions. Billingsley's edition of Euclid is a very important book. It is a big volume of 463 folios and was with great difficulty purchased from Messrs. Bernard Quaritch, 15 Piccadilly, through Mr. Edward Seymore Hale of Bombay. This book was of great use to me in settling figures of Propositions of the 10th book which is the hardest of all, as it deals with incommensurable quantities.

#### INTRODUCTION.

THE REKHÂGANITA: ITS CONTENTS.

The Rekhâganita or the Science of Geometry is a Sanskrit version of Euclid's Elements of Geometry by Samrat Jagannatha under the orders of Javasimha, king of Jeypore. It contains fifteen 'adhyayas' or books. The first four and the sixth books are devoted to plane geometry and the fifth deals with the laws of proportion which are utilized in the sixth book. The contents of these books are well-known and therefore need no detailed account. The seventh, eighth, and ninth books are purely arithmetical. As the subject-matter of the tenth book which treats of incommensurable quantities and of the eleventh and the succeeding books which are concerned with solid geometry cannot be clear unless the theory of numbers is explained, the intermediate three books, the seventh, eighth, and ninth, are devoted to the elucidation of the principles of numbers. A number ( ) is defined as a multitude composed of units ( Numbers are divided into even ( ) and odd (विषय). Even numbers are subdivided into evenly-even (समसम) and evenly-odd (समविषम). Evenly-even numbers are those which, when divided by an even number, have an even quotient, as 8. Evenly-odd numbers are those which, on being divided by an even number, give an odd quotient, as 6. Odd numbers may be oddly-odd (विषमविषम), when they have an odd quotient, on being divided by an odd number, as 9. Numbers are further divided into prime numbers ( प्रथमाङ ), and composite numbers (योगाक), and into commensurable (मिडित), and incommensurable ( ). A number produced by the product of two numbers, the multiplier ( aut ) and the multiplicand ( गुज्य ), is a plane or superficial number ( क्षेत्रफ्छ ). the two numbers ( now and now ) being called its sides or arms ( HS ). A superficial number, multiplied by a number, becomes a cube number ( चनकड ). The product of a number by itself is a square number ( anis ), and a number, multiplied by its square, becomes a cube number (धनाक्). Numbers are further defined as proportional ( सजातीय), when the second is the same multiple of the first as the fourth is of the third. Like plane numbers (संवातीयक्षेत्रफल) and like cube numbers ( सजातीयधनपद्ध ) are those which have their sides proportional. Finally a perfect number ( quis ) is one which is equal to the sum of all its aliquot parts, as 6.\* The Seventh Book demonstrates in general the most common properties of numbers, chiefly of prime and composite numbers, and partly treats of the comparison of one number with another. The enunciations of a few propositions will make this clear.† 'If of two numbers the less is continually taken from the greater until unity is left, the two numbers are incommensurable or prime to one another.' To find the greatest common measure of two or more quantities.' 'A small quantity is a part of a large quantity or of its multiple.' 'If two quantities be the same part of two other quantities. the sum of the first two shall be the same part of the sum of the other two.' 'If from two numbers two other numbers in the same ratio be taken, the remainders shall be in the same ratio.' 'The product of the multiplicand by the multiplier is the same as that of the multiplier by the multiplicand.' 'If there are small numbers in a certain ratio, such that smaller numbers in the same ratio cannot be found, then these numbers shall be prime to one another.' 'If a certain number is prime to another, its square also shall be prime to it.' 'If two numbers are incommensurable, their squares as well as their cubes shall also be incommensurable.' 'To find the least common multiple of two or more numbers.' 'To find the least common multiple which can be measured by many fractions.'+ The book contains 39 propositions. The plane and solid numbers, their sides and proportion, the properties of square and cube numbers, the natures and conditions of their sides, and the mean proportional numbers of plane, solid square, and cube numbers form mainly the subject of the

<sup>\*</sup> The aliquot parts of 6 are 1, 2 and 3 and these together make up the number, 6. The numbers to which this property belongs are 6;28;496;8128; 33,550,336; 8,589,869,056; 137,438,691,328; and 2,305,848,008,139,952,128. All perfect numbers terminate with 6 or 28. Vide Chambers' 'Popular Educator.'

<sup>†</sup> Props. 1, 2 and 3, 4, 5, 7, 16, 21, 25, 27, 34 and 36, and 39 respectively, Book VII.

Eighth Book. To elucidate this a few propositions may be enunciated. \* If in a certain series of numbers in a certain ratio. the first and the last are incommensurable, then these are the lowest numbers in the series in the same ratio.' lowest numbers in a certain ratio.' 'The ratio of a plane or superficial number with another plane number shall be the product of the ratios of the sides of those plane numbers.' 'If in a certain series in a certain ratio, the first number measures the last number, then the first number shall also measure the second number.' 'If there are two square numbers and if there is a mean proportional number between them, the ratio of the square numbers to one another shall be equal to the square of the ratio of the sides of the square numbers.' 'The squares and cubes of those numbers which are in a certain ratio shall also be in the same ratio.' 'If a number falls between two numbers, and if the three numbers are in the same ratio, then the two numbers shall be like plane numbers.' 'If between two numbers there fall two other numbers so that the four numbers are in the same ratio, then the two numbers (between which two other numbers fall) shall be like solid numbers'. If three numbers be in one ratio, and if the first be a square number, the third shall also be a square number. 'If four numbers are in one ratio and if the first be a cube number, the fourth shall also be a cube number.' 'Two like plane numbers are in the ratio of their squares.' 'Two like solid numbers are in the ratio of their cubes.'\* There are in all 27 propositions in this book. The Ninth Book continues the treatment of square and cube numbers, takes up odd and even numbers, not hitherto dealt with, and treats of their properties, as the following enunciations of some of the propositions will show. product of two like plane numbers is a square number. ' 'The square of a cube number is a cube number.' 'The product of two cubes shall be a cube.' 'A composite number, multiplied by a certain number, becomes a solid number.' 'If in a series beginning with unity, there be numbers in the same continual

<sup>•</sup> Props. 1, 2, 5, 7, 11, 13, 18, 19, 20, 21, 26, and 27 respectively, Book VIII

proportion, the third number from unity is a square number and so are all forward, leaving one between, the fourth number from unity is a cube number and so are all forward, leaving two between, and the seventh number from unity is both a square and a cube and so are all forward, leaving five between.' 'If the given prime numbers measure a certain least number, no other prime number shall measure that least number.' 'If three least numbers be in the same ratio, then the sum of any two of them shall be incommensurable with the third.' 'If there be two incommensurable numbers other than unity, there shall be no third number in the ratio of these two.' To find a third number in the ratio of two numbers, if possible.' 'To find a fourth number in the ratio of three numbers, if possible.' 'The sum of any number of even numbers shall be even.' 'The sum of an even number of odd numbers shall be even.' 'The sum of an odd number of odd numbers shall be odd.' 'If an even number be taken from an even number, the remainder shall be an even number.' 'If an odd number be taken from an even number, the remainder shall be an odd number.' 'If an even number be taken from an odd number. the remainder shall be an odd number.' 'If an odd number be taken from an odd number, the remainder shall be an even number.' 'The product of an odd number and an even number shall be an even number.' 'The product of two odd numbers is odd.' 'An odd number measures an odd number with an odd quotient.' 'Numbers beginning with two in which each succeeding number is double of the preceding number shall be evenly even.' 'A number whose half is an odd number is an evenly odd number.' 'The number, which is not in the series beginning with two in which each succeeding number is double the preceding one and of which the half is not an odd number, is evenly-even and also evenly-odd.' 'In a series of numbers beginning with unity, in which each succeeding number is double of the preceding one, if the sum of the terms be a prime number, then the product of this sum and the last number shall be a perfect number." The book

<sup>\*</sup> Props. 1, 3, 4, 7, 8, 15, 16, 17, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 31, 34, 35, 36 and 38, Book IX.

comprises 38 propositions. The Tenth Book, which is generally considered as the hardest of all the books to understand, treats of lines and other magnitudes rational and irrational, but particularly of irrational magnitudes commensurable and incommensurable. Magnitudes (i. e. lines, superficies and solids) are called later or commensurable, if they have a common measure and are farm or incommensurable if they can not be measured by a common measure. If the squares of lines can be measured by the self-same area, the lines are Alegari or commensurable in power, and the lines whose squares are not measurable by the same area are August or incommensurable in power. If there is a line supposed and laid before us, of any length we please, if this line thus first set forth is imagined to have such divisions and so many parts as we list, 3, 4, 5 and so forth, which may be applied to any kind of measure, inches. feet and such others, and if to this line thus first supposed and set forth be compared a number of lines, some of these will be commensurable and some incommensurable; and of commensurable lines some will be commensurable both in length and power and some commensurable in power only; and of incommensurable lines some will be incommensurable in length and some incommensurable both in power and length. The first line so set, to which and to the squares of which other lines and squares are compared, is called a rational line (अक्संजाईरेसा). Lines which are commensurable to this line, whether in length and power or in power only, are also rational; the square which is described on the rational right line supposed is rational; and the squares which are commensurable to this square are also rational. Thus the line which is first supposed and set forth, the lines which are commensurable to it, the square on it, and such superficies as are commensurable to the square are all rational and constitute what is called मुख्याशि. The rational line is the basis of most of the propositions of the tenth book from the tenth proposi-The line which is incommensurable to the first line supposed and set forth, the superficies which is incommensurable to the square (i. e. the square described on the rational line), and the line the square of which shall be equal to that superficies are called irrational ( ). These irrational lines and figures are the chief subject of the tenth book. They are divided into many classes of which 13 are the chief. They are as follows:—

I. A medial line ( Academ ) is defined in Prop. 17. A rectangle which has its sides commensurable in power only shall be irrational and is called a medial superficies. The line the square of which is equal to this figure is irrational and is called a medial line. Thus a medial line is an irrational line of which the square equals a rectangle contained by two rational lines commensurable in power only. Propositions from 17 to 35 treat of the properties of medial lines. It will be enough to note a few of these to shew their nature. \* 'A line commensurable to a medial line shall also be a medial line. 'The difference between two medial superficies is irrational.' 'To find out two medial lines commensurable in power only, containing in power a rational or a medial superficies.' 'To find out two medial lines incommensurable in power, the squares of which, added together, make a medial superficies and twice the rectangle of which is rational.'\*

II. A binomial line ( ) is the next irrational line. It is treated first in Prop. 33. If the lines which are commensurable in power only be added together, the line so formed shall be irrational and is called a binomial line. Thus a binomial line is an irrational line composed of two rational lines commensurable in power only. It is made up of two parts or names, of which one is greater than the other. The square of one part is therefore greater than that of the other. This line is divided into six classes, viz., the first binomial line (प्रथम बोगरेखा), the second binomial line (हितीय बोगरेखा) and so forth. The first three binomial lines ( प्रथम, दितीय and तृतीय बोगरेखा) are formed when the square of the greater line exceeds that of the less by the square of a line which is commensurable in length to it, viz., the greater; and the last three kinds of binomial lines ( चतर्थ, प्रस्त, and चह्र योगरेका ) are formed when the square of the greater part exceeds the square of

<sup>\*</sup> Props. 19, 20, 21, 22 and 31 respectively.

the less by the square of a line incommensurable in length to it, viz., to the greater part. Propositions from 45 to 50 show how these lines are found out.

- III. A first bimedial line (प्रथममध्ययोगरेखा) is defined in Prop. 37 as an irrational line composed of two medial lines, commensurable in power only, containing a rational superficies.
- IV. A second bimedial line ( ( ( ) an irrational line composed of two medial lines, commensurable in power only and containing a medial superficies. Prop. 38 teaches how to form this line.
- V. A greater line ( which is taught in Prop. 39, is an irrational line composed of two lines which are incommensurable in power, the squares, of which, taken together, make a rational superficies and twice the rectangle contained by which makes a medial superficies.
- VII. A line containing in power two medial superficies (scottom weat and superficies yard) is an irrational line composed of two lines which are incommensurable in power, the squares of which added together make a medial superficies, but the superficies which they contain is medial, incommensurable to that which is composed of the two squares added together. This line is taught in Prop. 41-

Propositions 42 to 69 deal with the properties of the above lines.

The next line taken up is

VIII. The residual line ( specient). The method of forming the line is taught in Prop. 70. It is an irrational line which is left when from a rational line given is taken a rational line commensurable to the whole in power only.

Like a binomial line it has also six varieties. The first three kinds (प्रथम, द्वितीय, and तृतीय अन्तरंखा) are formed when the square of the whole line made up of the residual line and the line joined to it exceeds the square of the line joined by the square of a line commensurable to it in length; and the last three kinds (चतुर्थ, पश्चम and पष्ट अन्तरंखा) are formed when the square of the whole line made up of the residual line and the line joined to it exceeds the square of the line joined by the square of a line incommensurable to it in length. Propositions 82 to 87 teach how to find these lines.

- IX. A first medial residual line (प्रथममध्यान्तरोखा) is an irrational line which remains, when from a medial line is taken away a medial line commensurable to the whole in power only and the part taken away and the whole line contain a rational superficies. Proposition 71 deals with it.
- X. The next proposition treats of the second medial residual line (द्वितीयसभाग्तरेका) which is an irrational line which remains, when from a medial line is taken a medial line commensurable to the whole in power only and the part taken and the whole line contain a medial superficies.
- XI. A less line ( at a taught in Prop. 73, is an irrational line which remains, when from a right line is taken a line incommensurable in power, the square of the whole line and the square of the part taken together make a rational superficies, and twice the rectangle contained by them makes a medial superficies.
- XII. A line making with a rational superficies the whole superficies medial ( अक्सेजाई योगमध्यों ) is an irrational line which remains, when from a right line is taken a right line incommensurable in power to the whole line and the square of the whole line and of the part taken together make a medial superficies and twice the rectangle contained by them is rational. This is treated of in Prop. 77.
- XIII. The last irrational line is taken up in the next Prop. (78). It is a line making with a medial superficies the whole superficies medial (HERRITIAN HERRITIAN II is an irrational

line which remains, when from a right line is taken a right line incommensurable to it in power, the squares of the whole line and of the part taken together make a medial superficies, and twice the rectangle contained by them makes up a medial superficies incommensurable to the first medial superficies.

The Tenth Book is the longest of the elements and contains in all 109 propositions.

Thus in the first ten books is taught whatever is requisite and necessary to the knowledge of all superficial figures of any sort whatever. The remaining books are concerned with solid figures (घनक्षेत्र), such as cubes, cones (शक्क), Pyramids (स्वीफळक्षवनक्षेत्र), cylinders (समतलमलक्षरिक्षिक्षशक्कृषवनक्षेत्र or समतलमलक्षरक्षक्षक्षत्र), prisms (छेदितस्वनक्षेत्र), spheres (गोलक्षेत्र) and parallelepipeds (समानान्तरघरातळ्घनक्षेत्र or घनहस्तक्षेत्र). The eleventh book contains 41 propositions and propositions, 24th to the end, treat of the properties of parallelepipeds.

The Twelfth Book sets forth the properties of pyramids. prisms, cones, cylinders and spheres, and compares pyramids to pyramids and prisms. Likewise are compared cones, cylinders and spheres; and to prove the properties of these bodies it is first established that like polygons inscribed in circles and the circles themselves are to one another as the squares of their diameters. The enunciations of a few propositions will clearly shew the nature of the book.\* 'Every pyramid having a triangle as its base may be divided into four parts, of which two are equal and similar pyramids and the other two are equal prisms greater than half the whole pyramid.' 'Pyramids having triangles as their bases and of the same altitude are to one another as their bases.' 'Every prism can be divided into three equal pyramids having triangles as their bases.' 'If two pyramids having triangles as their bases be similar, they shall be in the treble ratio of that which their like sides have.' 'A cone is a third part of a cylinder having the same base and altitude with it.' 'Like cylinders and cones are in the treble ratio of that in which the diameters of their circles (bases) are.' 'Spheres

<sup>•</sup> Props. 3, 5, 6, 8, 9, 10, and 15, Book XII.

are in the treble ratio of that in which their diameters are.'
There are in all 15 propositions in the book.

The Thirteenth Book teaches the most wonderful properties of a line divided by an extreme and mean proportion, the composition of the five regular solids, a tetrahedron, a cube, an octohedron, an icosahedron, a dodecahedron (बतुद्धकक्षक्षक्क, वनहरूत, अइफ्लक्ष्मनक्षेत्र, विश्वतिष्ठकवृतक्षेत्र, समभुजद्वादशक्षकक्षेत्र respectively), the method of inscribing them in a sphere and a comparison of the solids to one another and to the sphere in which they are inscribed. The book contains 21 propositions.

The Fourteenth Book which comprises ten propositions treats of the comparison and proportion of the five regular solids.

The Fifteenth Book, which is the last book in our text, deals with the inscription of the five regular bodies within one another. It teaches how to inscribe an equilateral cone in a cube, an octohedron in an equilateral cone, or in a cube, a cube in an octohedron, and a dodecahedron in an icosahedron.

### The striking features of the Rekhâganita.

Having thus given a *resume* of the contents of the Rekhaganits, let me next point out the striking features of the work as compared to English editions of Euclid.

- 1. Definitions, Postulates, and Axioms are called परिभाषा or Terminology.
- 2. Axioms are given before Postulates and the last three Axioms are placed after the Postulates.
- 3. The Twelfth Axiom has a simpler form. It is defined as follows:—

If two straight lines which are not parallel be produced in the direction in which the distance between them is greater, the further they are produced, the greater the distance between them; while if they are produced in the direction in which the distance is less, the further they are produced, the less the distance between them till at length the two straight lines meet together, and then the distance between them goes on increasing.

- 4 This form of the 12th Axiom necessitates the introduction of the following propositions preliminary to the 29th Proposition of the First Book:—
- (1) Of all the straight lines that can be drawn from a given point on a given straight line, the perpendicular is the shortest.
- (2) The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes equal angles with the perpendiculars.
- (3) The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes right angles with the perpendiculars.
  - (4) The opposite sides of a rectangle are equal.
- (5) If two perpendiculars be drawn to a line and a straight line be drawn across the perpendiculars, of the four angles made by the line with each perpendicular, the alternate angles shall be equal, the exterior angle shall be equal to the interior and opposite angle upon the same side of the line and the two interior angles upon the same side of the line shall be together equal to two right angles.
- (6) If the four angles formed by the intersection of two lines be not right angles, then a perpendicular on one of the lines shall meet the other line in the direction of the acute angle.
- (7) If a straight line falls upon two other straight lines and if the interior angles on one side are less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only.
- 5. In the proof of propositions throughout the book, no authorities are given anywhere. For the sake of conciseness a few intermediate steps, which may be understood without being mentioned, are omitted.

6. Most of the propositions have one or more alternative proofs given for them. The following propositions have alternative proofs:—

Book I.

5, 9, 11, 12, 18, 20, 21, 24, 25, 26, 32, 33, 34, 47.

Of these 18th and 20th Propositions have two alternative proofs; and Prop. 47th is proved in seventeen ways by describing squares in different ways. In each of these seventeen alternative proofs there are three diagrams caused by the equality and the inequality of the sides that contain the right angle.

Book II.

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 14.

Of these Propositions 9 and 10 have two alternative proofs. Book III.

3, 4, 5, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 30, 31, 33, 36.

Prop. 30 has three alternative proofs.

Book IV.

1, 2, 3, 6, 10, 11, 12, 13, 14.

Propositions 10th and 13th have two alternative proofs.

Book V.

14, 17, 18, 19, 20, 22.

Proposition 22nd has two alternative proofs.

Book VL

1, 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10, 11, 12, 15, 18, 29, 31, 32.

Propositions 9 and 10 have two alternative proofs.

Book VII.

7, 13, 28.

Book X.

1, 12, 64, 65.

Book XII.

9, 13.

Book XIII.

15.\*

7. The number of propositions and their order in some Adhyayas is different.

In Book III. our text has 36 propositions, propositions 11 and 12 being included in proposition 11 as under:—

'If two circles touch one another internally or externally, the straight line which joins their centers being produced shall pass through the point of contact.'

In Book V. propositions 12 and 13 in the Sanskrit text are found to be propositions 13 and 12 respectively in Bil's edition.

Book I. Prop. 20, 21, 34.

Book III. Prop. 8, 4, 9, 10, 11, I2, 13, 17.

Book Vī. Prop. 2, 4, 5, 6.

Book VII. Prop. 7, 28.

The following are found in Bil.

(I. 5), (I. 12), (I. 20 one alternative), (I. 25), (VII. 13).

Book I.

Prop. 11 is only a particular case.

Prop. 24 contains three cases.

Prop. 25 gives the direct proof.

Book III.

Prop. 8 gives a common proof to Propositions 7 and 8.

Prop. 9 gives the direct proof found in recent editions of Euclid.

Prop. 30 gives the converse of the 1st part of the Proof.

Book IV.

Prop. I. is the converse of Prop. I.

Digitized by Google

<sup>\*</sup> Of 110 alternative proofs in all the books taken together, the following are Reductio ad Absurdum:—

In Book VI. the order of most of the propositions is different as below:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition and Greg.'s edition.
9	13
10	11
11	12
12	9
13	10
18	19
19	20
20	18
23	24
24	26
<b>2</b> 5	23
26	25
31	32
32	31

Propositions 27,28 and 29, which are omitted in recent editions of Geometry, are found in the Rekhâganita and Bil.'s and Greg.'s editions.

In Book VII. the Rekhâganita has 39 propositions and Bil.'s edition has 41 propositions. Of the two additional propositions in the English text, proposition 20 is noticed in the Sanskrit text as corollary to proposition 19 and proposition 22, which is enunciated as follows in Bil.'s edition, finds no place in the Sanskrit text:—

'If there be three numbers, and other numbers equal unto them in magnitude, which being compared two and two are in the self-same proportion and if also the proportion of them be perturbate, then of equality they shall be in one and the same proportion.'

This proposition is omitted, perhaps because it answers to the 25th proposition of Book V, The following shews the difference in the order of propositions in the two texts:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.		
20	21		
21	24		
22	23		
23	25		
and so on till 28 which	becomes 30 in the English text		
29	33		
30	34		
31	31		
32	32		
33	35		
34	36		

and so on till the end.

In Book VIII., propositions 16 and 17 in Bil.'s edition are in the Sanskrit text given as corollaries to propositions 14 and 15 respectively, and 26th and 27th propositions in the Rekhâganita appear as corollaries to Prop. 25 in Bil.'s edition. Thus the total number of propositions in both the works is the same 27.

In Book IX. the Rekhâganita contains 38 propositions, while Bil.'s edition has 36. Propositions 30 and 31 are not found in Bil.'s edition; but they are mentioned there and attributed to Campane.

The difference in the order of propositions is shown below:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
14	20
15	14
16	15
17	16
18	17
19	18
20	19
<b>26</b>	27
27	26
32	30
33	31

and so on till the end.

In Book X. Bil's edition contains 9 propositions more than the Rekhåganita. These are propositions 7, 8, 13, 16, 24, 112, 113, 114, and 116. They are enunciated as under:—

Prop. 7

'Magnitudes incommensurable have not that proportion, the one to the other, that number hath to number.'

Prop. 8 Converse of the above.

Prop. 13

'If there be two magnitudes commensurable, and if one of them be incommensurable to any other magnitude, the other also shall be incommensurable unto the same.'

Prop. 16

'If two magnitudes incommensurable be composed, the whole magnitude also shall be incommensurable unto either of the two parts components; and if the whole be incommensurable to one of the parts components, those first magnitudes also shall be incommensurable.'

Prop. 24

'A rectangle parallelogram, comprehended under medial lines commensurable in length, is a medial rectangle parallelogram.'

Prop. 112

'The square of a rational line applied unto a binomial line maketh the breadth or other side a residual line, whose names are commensurable to the names of the binomial line and in the self same proportion; and moreover that residual line is in the self same order of residual lines that the binomial line is of binomial lines.'

Prop. 113

'The square of a rational line applied unto a residual maketh the breadth or other side a binomial line, whose names are commensurable to the names of the residual line, and in the self same proportion; and moreover that binomial line is in the self same order of binomial lines that the residual line is of residual lines.'

### Prop. 114

'If a parallelogram be contained under a residual line and a binomial line, whose names are commensurable to the names of the residual line and in the self same proportion, the line which containeth in power that superficies is rational.'

#### Prop. 116

'Now let us prove that in square figures the diameter is incommensurable in length to the side.'

There are thus nine additional propositions in Bil.'s edition; but there are two propositions in the Rekhâganita which are not found as propositions in the English text. They are 27th and 29th. 27th proposition is mentioned in Bil.'s edition at the end of the 31st proposition and the 29th proposition is given as a corollary to the 32nd proposition. The difference in the number of propositions in the two books is thus reduced to seven, the Sanskrit text comprising 109 and the English text 116 propositions in all.

The difference in the numbering of propositions is as follows:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
7	9
8	10
9	11
10	12
11	15
12	<b>14</b> .
13	17
14	18
and so on up to 19th	which is 23rd in Bil.'s edition.
20	26
21	27
22	28
<b>2</b> 3	25
24	29
25	30
26	31
27	Mentioned at the end of 31st Prop.
28	32
<b>2</b> 9	Cor. to 32
30	33
31	<b>34</b> ·
32	35
	h which is 111th in Bil.'s edition.
109	115

In Book XI. Bil's edition has one proposition, 38th, which is wanting in the Rekhaganita. It is enunciated as below:—

'If a plane superficies be erected perpendicularly to a plane superficies, and from a point taken in one of the plane superficies be drawn to the other plane superficies a perpendicular line, that perpendicular line shall fall upon the common section of those plane superficies.' Propositions 32nd and 35th in the Rekhâganita appear as 2nd cases of propositions 31st and 34th respectively. Thus the Sanskrit text has in all 41 propositions, while the English text has 40 propositions.

. The following shews the difference in the order of propositions:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
32 .	2nd case of 31
33	32
34	34
35	2nd case of 34
<b>36</b>	33
37	35
. <b>3</b> 8	36
<b>39</b>	37
40	<b>39</b>
41	40

In Book XII, 6th, 13th, and 14th propositions in Bil.'s edition do not find a place in the Sanskrit text. They are enunciated as under:—

#### 6th Prop.

'Pyramids consisting under one and the self-same altitude and having poligonon figures to their bases are in that proportion, the one to the other, that their bases are.'

### 13th Prop.

'If a cylinder be divided by a plane superficies being parallel to the two opposite plane superficies, then as the one cylinder is to the other cylinder, so is the axe of the one to the axe of the other.'

#### 14th Prop.

'Cones and cylinders consisting upon equal bases are in proportion the one to the other as their altitudes.'

Thus while the Sanskrit text has 15, the English text has 18 propositions in all.

The difference in the order of propositions is noticed below:-

Rekhâganita.	Bil.'s edition.	
6	7	
7	9	
9	10	
10	12	
12	15	
13	16	
14	17	
15	18	

In Book XIII. the Sanskrit text has three propositions more than Bil.'s edition. These are the 3rd, 4th, and 6th propositions. Of these Prop. 3rd is noticed in Bil.'s edition as a theorem added by M. Die. The order of the propositions in both the texts varies as under:—

Rekhâganita.	Bil.'s edition.
5	3
7	5
8	4
9	6
10	7
11	12
12	9
13	10
14	8
15	11
16	13
17	15
18	14
19	16
<b>2</b> 0	17
21	18

In Book XIV. Flussas has twenty propositions, while the

Rekhaganita has only ten; and there is no agreement in the order of propositions as shown below:—

Rekhâgaņita.	Flussas.
2	3
3	4
4,	5
9	7
10	2

Propositions 1, 6 and 8 agree in both.

Proposition 5th in the Rekhaganita is noticed by Hypsicles after the 3rd Prop.; but no proposition in Bil.'s edition answers to the 7th Prop. of our text.

In Book XV. I find nothing in Bil.'s edition to correspond to Prop. 1 in the Sanskrit text. The order of the other propositions is as shown under:—

Rekhâgaņita.	Bil.'s edition.	
<b>2</b> ·	1	
3 ,	2 after Hypsicles.	
4	3	
5	4	
6	5	

8. Prop. 7th Book I. in the Rekhâganita is enunciated in a very ingenious way as under:—

'The straight lines drawn from the extremities of one straight line (on the same side of it) can meet in one point and never in another.'

This enunciation is very like the one found in Bil.'s edition:—

'If from the ends of one line be drawn two right lines to any point, there can not from the self-same ends on the same side be drawn two other lines, equal to the two first lines, the one to the other, to any other point.'

# Whether the Rekhaganita is an original work or a translation.

The next question that suggests itself for consideration is whether the Rekhaganita is an original work or a translation. The subjects treated in the different books, the number of propositions in each of them, the very order in which they are given, the method of proof adopted in them, and the fact that the author flourished, as we shall see further on, in the eighteenth century, leave not a shadow of doubt that the work is not original, but a translation. Nay, if there is any doubt on the matter, it is removed by one of the Mss. in my possession which says 'अयोक्रीवशास्यं रेखागणितं छिल्यते.' It must also be noted that if the work were original, the letters in the diagrams illustratting its propositions would be in the order of the Sanskrit alphabet, either w, w, w &c. or w, w. a &c. But the lettering is Greek or Arabic, both being Phœnician in character. It is thus unquestionably settled on the above grounds that the work is not original, but a translation.

But if it be not an original work, how are the following introductory stanzas to be explained:—

> अपूर्व विहितं शासं यत्र कोणावनोधनात् । क्षेत्रेषु जायते सम्यग्ध्युत्पत्तिर्गणिते यथा ॥ शिल्पशास्त्रीतदं प्रोक्तं त्रह्मणा विश्वकर्मणे । पारम्पयवशादितदागतं धरणीतछे ॥ सद्विष्टिसं महाराजजयसिंहाञ्चया पुनः । प्रकाशितं सथा सम्यग् गणकानम्बहेतवे ॥

These verses would lead the reader to either of the two conclusions, that the Rekhâganita was an original work or that the author was a plagiarist. That the work is not original is clear from the above causes. That it is not easy to charge the author with plagiarism is evident from the fact that in the introductory stanzas to his other work, 'Siddhânta-samrâj' he clearly says that it is a translation of an Arabic work, 'Mijâsti'.

Digitized by Google

'अम्यं सिद्धाम्तसम्राजं सम्राद् रचयति स्फुटम् । तुष्टये श्रीजयसिंहस्य जगकाथाद्वयः कृती ॥ अरबीभाषया अम्यो मिजासीनामकः स्थितः । गणकानां सुबोधाय गीवाण्या प्रकटीकृतः ॥'

How then is this inconsistency to be explained? The problem, it must be confessed, is not easy of solution. The only possible solution seems to be that knowing as the author must have done that the science of Geometry (शिक्षशास) was first cultivated in India and thence imported to Greece and other countries, and that it was in his time completely lost, he gave it a divine origin to inspire his people with greater respect for it. This incidentally lands us into the question

# Whether Geometry was first discovered in India or in Greece.

This is no place to enter into an exhaustive treatment of the subject, nor is it possible to arrive at an incontrovertible solution of the question in the present state of our knowledge. Suffice it to say that a nation to which the world owes the ingenious invention of numerical symbols and the decimal notation, a nation which made great advances in Algebra and Arithmetic, and a nation which made independent astronomical observations, arrived at a fairly accurate calculation of the solar year of 360 days with an intercalary month every three years. was acquainted with the phases of the moon, and had made observations of a few of the fixed stars\*—a nation so far advanced in the cultivation of mathematics and astronomy cannot be supposed to be completely ignorant of the elements of geometry. It will not be amiss to quote the views of a few western scholars on this subject:--" Though no date can be fixed to the commencement of geometry in India, yet the certainty which we now have that algebra and the decimal arithmetic have come from that quarter, the recorded visits of the earlier Greek philosophers to Hindustan (though we allow weight rather to the tendency to suppose that philosophers visited India than to the strength of the evidence

<sup>\*</sup> Vide 'Imperial Gazetteer of India' Vol. VI, pp. 104-6 by W. W. Hunter.

that they actually did so ) together with very striking proofs of originality which abound in the writings of that country, make it essential to consider the claim of the Hindus or of their predecessors to the invention of geometry. waiving the question whether they were Hindus who invented decimal Arithmetic and Algebra we advance that the people that first taught those branches of science is very likely to have been the first that taught Geometry and again seeing that we certainly obtained the former two either from or at least through India, we think it highly probable that the earliest European geometry also came either from or through the same country." In Geometry, the points of contact between the S'ulva Sûtras and the work of the Greeks are so considerable that according to Cantor, the historian of Mathematics. borrowing must have taken place on one side or the other. In the opinion of that authority, the S'ulva Sûtras were influenced by the Alexandrian geometry of Hero (215 B. C.) which he thinks, came to India after 100 B. C. The S'ulva Sûtras, are, however, probably far earlier than that date, for they form an integral portion of the S'rauta Sûtras and their geometry is a part of the Brahmanical theology, having taken its rise in India from practical motives as much as the science The prose parts of the Yajurvedas and the of grammar. Bráhmanas constantly speak of the arrangement of the sacrificial ground and the construction of altars according to very strict rules, the slightest deviation from which might cause the greatest disaster.'+ 'Whatever conclusions we may arrive as to the original source of the first astronomical ideas current in the world, it is probable that to the Hindus is due the invention of algebra, and its application to astronomy and geometry.'t 'For whatever is closely connected with the ancient religion must be considered as having sprung up among the Indians themselves, unless positive evidence of the strongest kind point to a contrary conclusion.' The geometrical pro-

Vide the article on 'Geometry' Penny Cyclopædia, Vol. XI.

<sup>†</sup> Vide 'History of Sanskrit Literature' by A. A. Macdonell, p. 424.

<sup>#</sup> Monier Williams' 'Indian Wisdom' p. 184.

<sup>§</sup> Dr. G. Thibaut on the S'ulva Sûtras. Vide 'Journal of the Asiatic Society of Bengal,' 1875, p. 228,

position, the discovery of which the Greeks ascribed to Pythagoras, was known to the old Achârvas, in its essence at least.\* It should not at the same time be ignored that Herodotus, the well known Greek historian, attributes the invention of the science to the Egyptians. 'Herodotus, the earliest authority on the subject, assigns the origin of the art to the necessity of measuring lands in Egypt for the purposes of taxation in the reign of Sesostris about 1416-1357 B. C. (Hero. B. IL. Chap. 109). This is probable as not only resting on such authority, but also because a priori we should expect the necessity of measuring lands to arise with property in land and to give birth to the art. Of the state of the science, however, among the Chaldeans or Egyptians, we have no record.'+ The fact is that very minute rules are laid down in the Taittiriya Samhitâ and the Brâhmanas for the arrangement of the sacrificial ground and the construction of altars and in the Baudhayana and Apastamba for the shape of the bricks required for the construction of altars! and that the S'ulva Sûtras which form the 30th section of the Kalpa Sûtra of Apastamba and which are assigned by Dr. Thibaut to high antiquity \ teach geometrical principles for the construction of altars for the S'rauta sacrifices and contain a number of geometrical rules, such as that of finding the

<sup>\* &#</sup>x27;Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1875,' p. 232.

<sup>†</sup> Chambers' Encyclopædia. p. 700.

<sup>‡ &#</sup>x27;किं च तत्तत्कतुक्रियाकाण्डमस्तावे तत्तत्त्रमाणप्रभितानायुवावचरचनाचातुर्यचर्याचणानां क्रुस्वसूत्रादिप्रसिद्धानां नानाविषकुण्डवेदिकादीनां तचैव कास्यायनभीतसूत्रमाण्यादिप्रथितानां सुक्षुवकूर्वेडापात्रीपुरोडाक्षपात्रीशृतावदानाश्चपवेषान्तर्थानकटमाक्षित्रहरणवक्वतंदिपात्राणां निर्माणमञ्जिपवांकोचनयापि गणितविषासङ्गावः स्कृदं प्रतिकल्लति ।' Introduction to केत्रजिति by S'åstri Durgåprasåda Dviveda.

<sup>§ &#</sup>x27;Besides the quaint and clumsy terminology often employed for the expression of very simple operations—for instance in the rules for the addition and subtraction of squares—is another proof of the high antiquity of these rules of the cord.' 'Journal of the Asiatic Society of Bengal 1875,' p. 271.

value of a diagonal of a square in relation to its side, of turning a square into a circle and of turning a circle into a square.\* Indeed the science of Geometry like the science of Grammer formed a part of the Brahmanical theology and "it is not likely that the exclusive Brahmans should have been willing to borrow anything closely connected with their religion from foreigners."† Thus there is a strong probability that the science of Geometry was invented in India. It was, however not cultivated in India; because the construction of alters which originated the science fell into disuse owing to the rise of Buddhism and the worship of images.

# The Rekhâgaṇita, a translation of the Arabic work on Geometry by Nasir eddin.

It being settled that the Rekhaganita is not an original work the next question that naturally requires solution is to decide the original of which it is a translation. This proved a very difficult task. None of the English editions of Geometry that are available to us, neither the celebrated Gregory's edition in the Latin and the Greek, nor the excellent edition of Billingsley, the very first version of Euclid in English, contain any of the striking characteristics of the Rekhaganita noted before. Help was sought from some of the Professors of Mathematics. But replies were received from all that they were sorry not to be able to help me in the matter. Knowing that the Arabians were the most zealous cultivators of the Greek sciences of Astronomy and Geometry between the 9th and 14th centuries and that the British Museum might be possessing copies of the Arabic versions of Euclid, I consulted the Secretary of the Oriental Department of the British Museum, London, about the original of the work, informing him of some of the cha-

<sup>\* &</sup>quot;चतुरमं मण्डलं चिकीर्यम्मध्यादंसे निपाल तत्पार्थतः परिलिक्य तत्र बदितिरिक्तं अवित तला तृतीयेन सह मण्डलं परिलिखेत्समासविधिः।

मन्दछं चतुरश्रं चिकीर्षत् विष्कंमं पश्चदश्चमागान् कृत्वा द्वावुद्धरेच्छेपः करणी । "

<sup>†</sup> Vide p. 424, 'History of Sanskrit Literature' by A. A. Macdonell.

racteristics of the Sanskrit work; but he too wrote to me that he could not trace the original.\* I then addressed Mahâmahopådhyaya Sudhakara Dvivedi, Professor of Mathematics. Government Sanskrit College, Benares, and author of Ganakatarangini and other works, requesting him to let me know whether he had any arguments in support of what he advanced in the Ganakatarangini-'अरबीभाषातः संस्कृते जगन्नायकृतो युक्केदारुय-प्रम्थस्याप्यनुवादो रेसागणितनाम्ना प्रसिद्धोऽस्ति यत्र पञ्चदशाध्यायाः सम्ति। In reply the S'astri wrote to me that he had an Arabic work which seemed to him to be the original of the Rekhaganita and on my requesting him to lend me the work, he was good enough to send it to me. The Arabic work+ contains all the fifteen books. On comparing it with the Rekhaganita I find in it all the striking features of the latter noticed above. The fortyseventh proposition of the First Book is proved in seventeen ways. The book contains all the propositions preparatory to the 29th Prop. of the first book that are found in the Sanskrit text. No authorities are given in the proof of propositions. There is not a shadow of doubt that this Arabic work is the original of the Rekhaganita. The work does not mention the name of the author, but the Preface, which runs as under. makes it clear that the author is the same scholar that has composed 'Majisti':-

BRITISH MUSEUM,

London: W. C.

March 2, 1899.

DEAR SIR,

I am afraid that we can not help you in your search for the original of the Rekhâganita. We have nothing in Arabic which appears to be at all likely, and we do not possess a copy of James Williamson's work.

Yours faithfully, (Signed) ROBERT K. DOUGLAS.

† I found another Arabic work containing all the fifteen books with Prof. Isfahâni, but it contains no alternative proofs and is not the original of the Rekhâganita.

‡ Perigal's 'Messenger of Mathematics' New Series, Vol. III. p. 104 contains alternative proofs of Book I. Prop. 47.

Digitized by Google

<sup>•</sup> The following is the reply received:-

### صفحه اول

الحمد لله الذي منه الابتداء واليه الانتهاء وعنده حقايق الابناء و ويده ملكوت الاشياء وصلوته علىممد وآله الاصفياء وبمد فلمآ فرغت من تحرير المجطى رائتان احرركتاب اصول الهندسته و الحساب المنسوب الى اقلبدس الصورى بايجاز غيرمخل واستقصى فى ثبت مقاصده استفصاء غير مخل واضيف اليه مايلبق مهمما استفدته من كتب اهل هذاالعلم واستنبطته بقريحتي وافرزما يوجد من اصل الكتاب في نسختي الحجاج وثابت عن المزيد عليه اما بالاشارة الى ذالك اوباختلافالوان الاشكال وارقامها فقلمت ذالك متوكلاً على الله انه حسى وعلمه تقى اقول الكتاب يشتمل على خس عشرة مقاله مع الملحقتين بآخره وهي اربعماته وثمانية وستون شكلافي نسخه الحجاج وبزيادة عشرة اشكال في نسخه ثابت وفي بعض امواضع فى الترتيبِ ايضاً بينهما اختلاف وانا رقمت عدد اشكال المقالات باالحمرة لثابت حرافى اذالحجاج اذاكان مخالفاله

# صفحه دوم

المقالة الاولى \* سبقه واربعون شكلا وفي نسخه ثابت بزيادة شكل وهو شكل مــه هـ، وقد جرة العادة ــ بتصديرها بذكر حدود و اصول موضوعة وعلوم متعارفة يحتاج اليها فى بيان الاشكال ١٢

Digitized by Google

The following is the English rendering of the passage, supplied to me kindly by Professors Isfahâni and Sanjânâ of the Bhâvanagar College:—

Praise be to God from whom is the beginning (of every thing) and unto whom is the end (of every thing). He possesses the truths of all events and in His hands are the sources of all things. And the blessings of God be on Muhammad and his chosen family.

After I had finished the composition of the "Majisti" (Almagest), I thought it right to compose (edit) the book which contains the principles of number and calculation attributed to Euclides of "Sur" with a brevity not injurious; also to inquire into its object and design with thorough investigation, and to add to it what I found worthy from amongst those (principles) which I had gathered from the writings of experts in this science or had discovered by my ingenuity; also to improve upon the texts of the two editions of Hajjaj and Sabit by giving hints either about additional points or about the differences between their descriptions of Propositions or their Proofs.

Then I commenced it, depending upon the help of God, Who is every thing to me and in Whom I place my confidence.

1 assert that the book (of Euclides) contains 15 chapters with two more at the end of it and that it contains altogether 468 Propositions in the edition of Hajjaj, and 10 more in that of Sabit; and that in some places there are differences as to their order and even arrangement (of proof); and I have taken down the number of Propositions in the (several) chapters as are (to be found) in the edition of Sabit, pointing out the difference wherever Hajjaj does not agree with him.

First chapter—Propositions 47, and in the edition of Sabit one more Proposition and that is the 45th and it is customary to prefix to these a statement of definitions and a description of established principles (axioms) and well-known subjects (postulates), needful to the exposition of the Propositions.'

The Preface states that the author undertook the work on

Geometry after having finished 'Majisti' and that he has drawn upon the works of \*Hajjaja and Sabit,† but mostly followed Sabit in whose works there are fifteen chapters and 478 propositions, Hajjaja's work containing 468 propositions. It will be noticed that the Rekhâganita contains 478 propositions in all. Siddhântasamrâj is, as Pandit Jagannâtha himself says, a translation of Majisti.

### अरबीभाषया प्रन्थो मिजास्तीनामकः स्थितः। गणकानां सुबोधाय गीवांष्या प्रकटीकृतः॥

The author of the Arabic works seems to be Nasir eddin Mohammed Ben Hussein Al Thussi, a Persian Astronomer, who died A. D. 1276.‡ Jagannâtha thus seems to have translated both the astronomical and the geometrical works of the same Arabic author Nasir.

#### Cultivation of the Science of Geometry.

It will not, I believe, be out of place to give a brief survey

<sup>\*</sup> Hajjaja Bin Usuf Bin Matar was an inhabitant of Kufa (near Bagdad). He translated Euclid in two vols. One of which was named Haruni after his patron Harunal rashid, and the other Mamuni after his patron Mamunal rashid son of Harunal rashid. This is described by the philosopher Hunain bin Ishak. These two vols. are commented upon by Sabit bin Kurrah Herani (inhabitant of Hera). Hajjaja's works are also commented upon by Abu Usman Damishki.

<sup>† &#</sup>x27;The astronomer Thabet ben Korrah was one of the translators or rather perhaps revised the translation of Honein ben Ishak, who died A. D. 873. There is a manuscript in the Bodlein Library purporting to be the translation of the latter edition by the former.' Penny Cyclopædia Vol. XI.

<sup>‡</sup> He was a Persian. He translated Euclid into Arabic. 'The same author (D' Herbelot) gives the names of the Arabic versions, one of which, that of Nasir eddin, the most celebrated of all, was printed at the Medicean press of Rome in I594'. Penny Cyclopædia Vol. XI. 'Nasir died aged about 70. He also wrote a work on Geography. He went to Tartary and won the friendship of Hulaku, surnamed, Ilkhan, the brother of the reigning prince of Tartary. Hulaka was prevailed upon by Nasir to give up the invasion of Constantinople and to invade Persia. Hulaku overran Persia, fixed his seat at Marajha in Azerbijan where he collected men of science, built an observatory and placed Nasir at the head of both. The instruments there used are described from an Arabic manuscript. The tables made at this observatory are called the Ilchanic Tables from the name of their author's patron. They enjoyed great reputation in the East. The Ilchanic tables, according to Delambre differ from those of Ptolemy only in the correction of some of the mean motions.' Vide the article on 'Majisti', Penny Cyelopædia.

of the rise and development of the science of Geometry among the Greeks. According to Proclus, a commentator on Euclid's 'Elements', the art was brought from Egypt to Greece by Thales. He and Pythagoras founded the earliest schools of geometry in Greece in the 6th century B. C. Pythagoras was the first that gave geometry the form of a deductive science and discovered the 47th proposition of the 1st book and other Pythagoras was followed by Anaxagoras propositions. Ænopides, Hippocrates of Chios and others. Plato was the next to advance the science. "Over his Academy at Athens, he placed the celebrated inscription, 'Let no one ignorant of Geometry enter here', thus recognizing it as the first of the sciences and as the proper introduction to the higher philosophy."\* Many of his pupils cultivated the science. One of them. Euxodus generalized the results of his studies at the Academy in a treatise. Aristotle also wrote a work on Geometry and it was from one of his pupils Endemus that Proclus took most of Aristæus is reputed to be the instructor of Euclid in Geometry.† It is not known where Euclid was born-He flourished in the reign of Ptolemy, the son of Lagus (323-284 B. C.). "He put together the Elements and arranged many things of Endoxus and gave unanswerable demonstrations of many things which had been loosely demonstrated before him." 1 It is said that Ptolemy asked him an easy method of studying geometry, to which he replied that there was no royal road to learning. He belonged to the Platonic sect. He opened a school at Alexandria. Besides the Elements which are commented upon by Campanus, Proclus, Pappus, Pelitarius and others, he is said to have written the following works:-

- 1 A treatise on Fallacies, preparatory to geometrica reasoning.
- 2 Four books of Conic sections.
- 3 On Divisions,
- 4 On Porisms in three books.
- 5 Locorum ad Superficiem.

<sup>·</sup> Chambers' Encyclopædia, p. 700.

<sup>†</sup> Vide Chambers' Encyclopædia, p. 700,

<sup>‡</sup> Penny Cyclopædia, Vol. XI.

All these books are lost. The following exist and are mentioned in Gregory's edition:—

- 6 On Optics and Catoptrics.
- 7 On Astronomical Appearances.
- 8 The Division of the Scale and Introduction to Harmony.
- 9 A Book of Data \*

The science of Geometry was continued to be cultivated by the Greeks even after they were subdued by the Romans. The Romans, however were completely ignorant of the science of mathematics, and only one Roman, Bothius, who flourished at the end of 5th and the beginning of the 6th century, was acquainted with the science. He translated the first Book of Euclid. "The rise of the Mohammedan power in the 7th c. and the rapid and desolating consequences which followed further hastened the extinction of the Greek sciences. time now came when those who devoted themselves to science were everywhere branded as magicians and exposed to popular fury. It was in these times that fortunately for civilization an asylum was found for the spirit of inquiry in Arabia. An acquaintance with the science of the Hindus prepared the Arabians for the reception of the writings of the Greek astronomers and mathematicians and the dispersion of the scientific coteries of Alexandria gave to Bagdad many preceptors in the learning of the west. In little more than a century after it took place the Arabians were the most zealous patrons and cultivators of Greek science and from the 9th to the 14th centuries they produced many astronomers, geometricians, &c. through them the mathematical sciences were again restored to Europe towards the close of the 14th c., being first received in spain and Italy."† The movement was aided by the Renaissance in the 16th century, but so great was the reverence of scholars for the name of Euclid that no improvement was made in it till the times of Kepler and Descrates.

Pandit Jagannâtha and his works.

Very little is known of the author besides the fact that he was



Vide Penny Cyclopædia, Vol. XI.

<sup>†</sup> Chambers' Encyclopædia, p. 700.

patronized by Jayasimha II., better known as Savai Jayasimha, king of Jeypur, who ruled forty-four years (A. D. 1699-1743). We know this from what the author himself says in the Preface and also at the end of every 'adhyaya'. There is a tradition noticed by Mahamahopadhyaya Pandit Sudhakara Dvivedî in the Ganakatarangini that to falsify what Persian and Arabic scholars in the court of king Aurangzebe said, that the Sanskrit Pandits could not master Persian or Arabic, king Jayasimha of Jeypur, who was sent by Aurungzebe in 1672 to fight Sivaji, brought Pandit Jagannatha, who was then only 20 and who was thoroughly proficient in Sanskrit, to his country to teach him Persian and Arabic. He acquired a thorough knowledge of both the languages in a short time. He composed the Rekhâganita and the Sidhântasamrâj. They are both translations of Arabic works as is shown before. The Siddhantasamrai contains thirteen Adhyavas, one hundred and forty one Prakaranas and one hundred and ninety-six Kshetras. It contains both verse and prose. Jagannatha seems to have translated the 'Majisti' in verse. He explains it in prose and in the course of his explanations, quotes the views of the Arabic scholars, Mirja, Ulukavega and others and of the Emperor Mahomed Shah.\*

<sup>\* &</sup>quot;पुनः समरकंदनगरेऽक्षांकैः ३९।३७ युते बलुक्वेगोन वेथेनोपरुख्या क्रांतिः १३।३०।१७."

<sup>&</sup>quot;अत्र जमशीदेन रीतिः प्रदक्षिता सा यथा।"

<sup>&</sup>quot; अस्य मिर्जोत्त्रग्वेगोक्तप्रकारेणांश्रद्वयस्य पूर्णज्या निकास्यते।"

<sup>&</sup>quot;अब मिजोल्यवेगस्य द्वितीयः प्रकारः ॥" and in many other places.

<sup>&</sup>quot; अथात्र यथास्परेसामिरेव सिष्मति तथा बतितमाविद्संजैः ॥"

<sup>&</sup>quot; अत्रोपपत्तिः श्रीमहाराजाधिराजजयसिंहदेवैतिकाक्षितास्ति सा यथा ॥"

<sup>&</sup>quot; इन्द्रप्रस्थे अवन्तां तथा काह्यां सवाईजयपुरे च सर्वत्र वद्यरचना कृता। पूर्व प्राचीनिमानित्तर्तिकर्ता मतमञ्ज्ञेन वंत्रैप्र्रेहनस्वत्रवेषं कृत्वा निश्चयः कृतः तदनन्तरं समरकंदनगरे उस्कवेगनाज्ञा वंत्रेप्रहनस्ववेषं कृत्वा निश्चयः कृतः। ततो वर्षसतत्रवानन्तरं शीमहाराजाधिराज जयसिंहप्रशुवर्याणामाञ्चया वंत्ररचना जाता। पूर्व ववनैर्जानुस्वहस्कं नाम गोस्नापरपर्यावं
धातुमयं वंत्रं कृत्वा वेषः कृतः तत्रावं दोषः यद्यात्नामतिभारतया क्रांतिष्ट्रतं कदंबस्थानाजभति तस्य नस्नत्या वेषं कृत्वा निश्चयः कृतः त्रिंसत्कस्नात्रिका अधुद्धता भवति। एवं ददं
सदा शीमहाराजाधिराजजयसिंहदेवैनवीनया युक्ता अयत्रकाक्षयंत्रं कृतम्। अस्य कर्तन्यता
वद्याच्याये द्रश्च्या।"

<sup>&</sup>quot; फिरंगदेशे शीमहाराजाधिराजैश्रेहंगदश्चरीफनामा ववनः प्रेषितः स्थितः तेन स-हैकद्वीपे गस्वाऽश्वांशा ४।१२ निश्चितास्ते दक्षिणाः ॥"

<sup>&</sup>quot; तथा सहसदसेहदीनामा यवन अग्रे द्वीपेषु प्रेषितः ॥"

Many of the proofs given in the work are those found out by king Jayasimha himself. The following are the opening stanzas of the work:—

गजाननं गणाधिपं सुरासुराचितं सदा । समस्तमक्तकामदं क्षिवासुतं सुक्षप्रदम् ॥ १ ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्तिनम् । प्रशस्तमृतिभूषितं नमामि विश्ववारणम् ॥ २ ॥

लक्ष्मीनृसिंहचरणास्त्रस्हं सुरेशै-वैन्धं समस्तजनसेवितरेणुगन्धम् । वाग्देवतां निसिक्ष्मोइतमोषहर्षी वन्दे गुरू गणितसास्त्रविसारदं च ॥ ३ ॥

श्रीगोविन्दसमाह्मयादिविषुधान् बृन्दाटवीनिर्गतान् यस्तत्रैव निराकुछं श्रुचिमनोभावः स्वशक्त्यानवत् । म्छेच्छान् मानसमुक्ततान् स्वतरसा निर्जितः श्रूमण्डके जीयात् श्रीजयसिंहदेवनृपतिः श्रीराजराजेश्वरः ॥ ४ ॥

करं बनार्दनं नाम तूरीकृत्य स्वतेजसा । आजते दुःसहोऽरीणां वया प्रैप्मो दिवाकरः ॥ ५ ॥

> राजाभिराजो जयसिंहदेवो वो मस्त्यदेशाभिपतिश्व सङ्गाह । श्रीरामपादाम्बुजसक्तवित्तो यज्वा सदा दानरतः ब्रुबीखः ॥ ६ ॥

गोळादिवज्रेषु नवीनयुक्ति-प्रचारदक्षो गणितागमज्ञः । सत्यप्रियः सत्यरतः कृपाळु-स्तिग्मप्रताषो जयति क्षमाबाज् ॥ ७ ॥

वेनेष्टं वाजपेयाचैर्महादानानि षोडशः । दत्तानि द्विजवर्थेम्यो गोआमद्विपवाजिनः ॥ ८ ॥

स धर्मपाको गणितप्रवीणान् ज्योतिर्विदो गोळविचारद्शान् । कारुंस्तथाद्वच चकार वेथं गोकादिवसैर्बुसदो च मानाम् ॥ ९ ॥ तेन श्रीजवसिंहेन प्रार्थितः शास्त्रसंविदा । करोति श्रीजगन्नाथः सम्राद्ध सिद्धान्तमुत्तमम् ॥ १०॥\*

### अथ वेघोपयोगीनि यम्राणि प्रोच्यन्ते ।

नाडीयमं गोख्यमं दिगंशास्यं तथैव च । दक्षिणोदग्भित्तिसंज्ञं वृत्तपष्ठांशकं तथा ॥ ११ ॥ यम्रं सम्राडिति स्यातं यम्राणामुत्तमोत्तमम् । जयप्रकाशं तद्वच सर्वयम्रशिरोमणि ॥ १२ ॥

Rekhâganita was the name given to the translation of the Arabic work of Nasir eddin by Jagannâtha himself. Both the Rekhâganita and the Siddhântasamrâj were composed by Pandit Jagannâtha at the direction of king Jayasimha who was so much pleased with the Pandit at their composition that he is said to have presented him with grants of many villages.

### King Jayasimha II. or Savâi Jayasimha.

King Jayasimha, who was our author's patron, was a flower of the Hindu princes of Hindustan. He had a fervent love for mathematics and astronomy and did more than any other prince to promote the cultivation of astronomical and mathematical studies. As a statesman and legislator he was equally famous. He removed his capital from Ambér to Jayapûra which was founded by him in 1728 and which became the seat of science and art. "Jeipoor is the only city in India built upon a regular plan, with streets bisecting each other at right angles. The merit of the design and execution is assigned to Vidyâdhara, a native of Bengal, one of the most eminent coadjutors of the prince in all his scientific pursuits, both astronomical and historical." The king was highly esteemed for his mathe-

प्रम्थं सिद्धान्तसम्राजं सम्राद्ध रचयति स्फुटम् । तुष्ट्ये श्रीजयसिंहस्य जगन्नाथाङ्कयः कृती ॥ श्रदेशीभाषया प्रम्थो मिजास्तीनामकः स्थितः । गणकानां सुबोधाय गीर्षाण्या प्रकटीकृतः ॥

Mahâmahopâdhyâya Sudhâkara Dvivedî has the following verse in place of the 10th verse and also an additional verse as under:

<sup>†</sup> Vide Col. Tod's 'Rajasthana, Vol. II. pp. 356-59.

matical knowledge. He constructed a set of observatories at Delhi, Jayapûra, Oojein, Benares, and Mathura and instruments invented by him were used there for astronomical observations. He corrected the Tables of De la Hire which were published in 1702 by his observations at different observatories for seven years. The inaccuracies of these tables were in his opinion due to instruments of inferior diameters. "The Raiput prince might justly boast of his instruments. With that at Delhi he in A. D. 1729 determined the obliquity of the Ecliptic to be 23°, 28' within 28" of what it was determined to be the year following, by Godin. His general accuracy was further put to the test in A. D. 1793 by our scientific countryman, Dr. W. Hunter, who compared a series of observations on the latitude of Oojein with that established by the Rajpoot prince. difference was 24" and Dr. Hunter does not depend on his own observations within 15". Jeysing made the latitude 23°. 10' N.; Dr. Hunter, 23°, 10', 24" N. From the results of his varied observations Jeysing drew up a set of tables, which he entitled Zeij Mahomedshahi, dedicated to that monarch. By these all astronomical computations are yet made, and almanacks constructed."\*

"When we consider that Jeysing carried on his favourite pursuits in the midst of perpetual wars and court intrigues, from whose debasing influence he escaped not untainted, when amidst revolution, the destruction of the empire, and the meteoric rise of the Maharattas he not only steered through the dangers, but elevated Ambér above all the principalities around, we must admit that he was an extraordinary man."† "His name throughout Râjputânâ and also in Mâlva is to this day held in the highest veneration by all classes of the Hindu population. The Marwari Sâvkârs hold it as an article of faith that good fortune will attend their dealings if they take the name of Jayasingh along with that of their gods in their morning orisons."!

<sup>\*</sup> Col. Tod's 'Râjasthâna' Vol. II., pp. 356—59.

<sup>†</sup> Vide Col. Tod's Râjasthâna Vol. II. pp. 346-369.

<sup>†</sup> Vide 'Journal of the Asiatic Society of Bengal' Vol. IV. pp. 938-48.

The prefatory verses of the Rekhâganita and the Siddhânta-sâmrâj have both historical allusions. The protection which the king is described to have afforded to the learned Brahmans of Vrindâvana refers to the persecutions of the Brahmans of Mathurâ by Aurangzebe by whose orders many temples were destroyed. The removal of the 'people-grinding impost' (set which was imposed by Aurangzebe and for the repeal of which king Jayasiñtha II. is given by Col. Tod the credit of having written the most fiery letter of remonstrance.\*

Nothing now remains but to acknowledge my gratitude to my friend, Prof. S. Rådhåkrishna Aiyar B. A., Principal Mahårajå's College, Pudukotå, who read over the translation of some of the alternative proofs to see whether there was anything mathematically wrong in them and Prof. K. J. Sanjånå, Prof. Isfahåni, Mahåmahopådhyåya Sudhåkara Dvivedî and other gentlemen who helped me in various ways.

HAWÂDIÂ CHAKALÂ, Surat, 10th May 1901.

K. P. TRIVEDÎ.

Digitized by Google

<sup>\*</sup> Mr. Orme attributes the authorship of the letter to Jasvantsimha of Marwar.

UALA CALA

# श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः॥

गणािषपं सुरार्चितं समस्तकामदं नृणाम् । प्रशस्तभूतिभूषितं सारामि विष्नवारणम् ॥ १ ॥

लक्ष्मीनृतिहचरणाम्बुरुहं सुरेशै-र्वन्दं समस्तजनसेवितरेणुगन्धम् । वाग्देवतां निखिलमोहतमोपहन्नीं वन्दे गुरुं गणितशास्त्रविशारदं च ॥ २ ॥

श्रीगोविन्दसमाह्ययादिविबुधान् वृन्दाटवीनिर्गतान् यस्तत्रेव निराकुलं ग्रुचिमनोभावः स्वर्<del>गस्या</del>नयत् ।

म्लेच्छान् मौनसमुन्नतान् स्वतरसा निर्जित्य भूमण्डले जीयाच्छ्रीजयसिंहदेवनृपतिः श्रीराजराजेश्वरः ॥ ६ ॥ करं जनार्दनं नाम द्रीकृत्य स्वतेजसा ।

भाजते दुःसहोऽरीणां यथा प्रैष्मो दिवाकरः ॥ ४ ॥ येनेष्टं वाजपेयाचैर्महादानानि षोडशः।

दत्तानि द्विजवर्थेभ्यो गोप्रामगजवाजिनः ॥ ५ ॥ तस्य श्रीजयसिंहस्य तृष्टी रचयति स्फटम् ।

द्विजः सम्राड् जगन्नाथो रेखागणितमुत्तमम् ॥ ६ ॥

१ A. begins the work as follows:—ओं श्रीगणेशाय नमः । अथो-श्रीदश्वाख्यं रेखागणितं छिख्यते । तत्रास्मिन् प्रन्थे &c. K. begins it thus:—श्रीगणेशाय नमः । श्रीसारदाये नमः । श्रीगुरवे नमः । ओं सिद्धिः । गजाननं गणाधिपं गुरागुरार्चितं सदा । समस्तभक्तकामदं शिवागुतं गुखप्रदम् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्त्तिनम् । समस्तभृतिभूषितं नमामि विव्रवारणम् ॥ लक्ष्मीनृसिंह् &c.

अपूर्व विहितं शास्तं यत्र कोणावनोधनात् । क्षेत्रेषु जायते सम्यग्व्युत्पत्तिर्गणिते यथा ॥ ७ ॥ श्चित्पशास्त्रमिदं प्रोक्तं ब्रसणा विश्वकर्मणे । पारम्पर्यवशादेतदागतं धरणीतले ॥ ८ ॥ तद्विच्छिनं महाराजजयसिंहाज्ञया पुनः । प्रकाशितं मया सम्यग् गणकानन्दहेतवे ॥ ९ ॥

९ विदितं D. २ This and the next verse are omitted in B.

# अथ रेखागणितं प्रारभ्यते ।

तैत्रास्मिन् मन्ये पञ्चदशाध्याया अष्टसप्तत्युत्तरचतुःश्चतं क्षेत्राणि सन्ति । तत्र प्रथमाध्यायेऽष्टचत्त्वारिंशत् क्षेत्राणि प्रदर्श्यन्ते ॥

## तत्र आदी परिभाषा।

यः पदाश्रों दर्शनयोग्यो विभागानर्हः स बिर्नेदुशब्दवाच्यः । यः पदाश्रों दीर्घो विस्ताररहितो विभागार्हः स रेखाशब्दवाच्यः । येख विस्तारदैर्घ्याभ्यां भिद्यते तद् धरात्तळक्षेत्रसंश्चं भवति । अस रेखापि द्विविधा । एका सरला अन्या वका ।

# अथ सरलरेखालक्षणम् ।

यस्यां न्यस्ता विन्दवोऽवलोकिताः सन्त एकविन्दुनाच्छादिता इव दृश्यन्ते सा सरला रेखा श्रेयान्यथा कुटिला ।

## अथ धरातलक्षेत्रमपि द्विविधम्।

एकं जलवत् समं द्वितीयं विषमम् । तद्यथा । विन्दून् लिखित्वा स्त्रं निःसारयेत् तद्यदि सर्वत्र संलेगं स्यात्तदा तद् धरातलं समं वेयमन्यया विषमम् ।

## अथ कोणलक्षणम्।

घरार्तले रेखाद्वययोगात् सै्च्युत्पचते सैव कोणः । स च द्विविघः समो विषमश्च।तौ यथा। समानरेखायां लम्बयोगा-दुत्पन्नी कोणी प्रत्येकं समकोणी भवतः रेखे च मिथो लम्बरूपे स्तः।

१ अबोझीदश्चास्यं रेखागणितं लिस्यते । D. २ अय प्रन्ये D. ३ शक्लानि D. K. ४ बिन्दुर्वाच्यः D. A. K. ५ बिस्तारदैर्ध्ययोयिद्भियते तद्धरातलं तदेव क्षेत्रम् । D. K. ६ K. has यत्र in the beginning and omits तद् before घरातलं. ७ छमं भवति D. ८ धरातल A. B. ९ या सूच्युत्पयते स कोणः । K. D.

तत्र समकोणान्यूनोऽल्पकोणो भवति । समकोणादिधकोऽधिककोणो भवति । समातिरिक्तो विषमकोणो भवति । इह समकोणः सरंलरेखाभ्यामेव भवति ।

विषमकोणः सरलरेखाभ्यां सरलकुटिलरेखाभ्यां कुटिलरेखाभ्यां च भवति ।

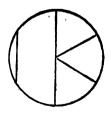


### अथ क्षेत्रलक्षणम् ।

तेत्र धरातलं रेखया रेखाम्यां रेखामिनी वृत्तं क्षेत्रसंत्रं भैवति । तच वृत्तकोदण्डन्यस्रचतुरस्रादिभेदेन र्वेहुभेदं ज्ञेयम् ।

### अथ वृत्तलक्षणम्।

समधरातले बिन्दुं कृत्वा तस्मात् समानि सूत्राणि सर्वतः कृत्वा चक्राकारा कुटिला रेखा कार्या सा समानान्तरेण बिन्दुतः सूत्राणां स्पर्श करिष्यति सैव वृत्तसंज्ञा भवति।



### तदाकान्तं धरातलं वृत्तक्षेत्रं भवति ।

९ K. omits सरलकुटिलरेखाभ्यां. २ D. omits तत्र. ३ श्रमुख्यते D. ४ बहुविधम् D. ५ तस्मादेव बिन्दुतः सर्वाणि सूत्राणि या स्प्रशति कुटिल रेखा तदृत्तं श्रेयम् । D. तस्मात् समानि सूत्राणि या स्प्रशति कुटिल रेखा तदृत्तं श्रेयम् । K.

विन्दुश्च केन्द्रसंज्ञः।

केन्द्रोपरिगतं सूत्रमुभयतः पालिसंलमं व्याससंज्ञं स्थात् । व्याससत्त्रं वृत्तक्षेत्रस्य समानं भागद्वयं करोति ।

या रेखा केन्द्रगा स्यात् किं च पालिलग्ना स्यात् तदुभयतः खण्ड-द्वयं विषमं भवति सा रेखा चापकर्णसंज्ञा पूर्णज्यासंज्ञा च भवति ।

अथ सरलरेखाकृतानि क्षेत्राण्युच्यन्ते ।

तेत्रादौ त्रिभुजमुच्यते ।

तर्त् त्रिविषम्। एकं समित्रवाहुकम्। द्वितीयं समित्रवाहुकम्।
तृतीयं विषमत्रिवाहुकम्।



पुनस्तत्कोणैरपि त्रिमुजं त्रिविधं भवति । तद्यथा । यस्मिन्नेकः समकोणोऽन्यौ न्यूनकोणौ तत् समकोणत्रिभुजं ज्ञेयम् ।



यसैकोऽधिककोणोऽन्यौ न्यूनौ ससद् अधिककोणत्रिभुजं बेयम्।



<sup>9</sup> सध्यविन्दु: for विन्दुश्व K. २ भवति D. K. ३ भवति D. K. ४ इसानि D. ५ A. and B. omit आदी. ६ तत्रिभुजं B.

# यस्य चे त्रयोऽपि न्यूनकोणास्तन् न्यूनकोणात्रिभुजं सेत्।



# अथ चतुर्भुजम् ।

यस्य बाहुचतुष्टयं सर्गीनं कोणचतुष्टयमपि	समानं	तचतुरस्रं	सम-
कोणं समचतुर्भुजं ज्ञेयम् ।			

यस्य कोणचतुष्टयं समानं	सन्गुस्तबाहुद्वयं	च मिथः	समानं तद्वि-
षमचतुर्भुजम् आयतसंत्रम् ।			

यस्य कोणचतुष्टयं विषमं भुजचतुष्टयं च समं तद् विषमकोणस-मचतुर्भुजं श्रेयम् ।

<sup>9</sup> D. omits च. २ भवेत D. K. ३ B. adds क्षेत्रम्. ४ D. K. add अथ च after समानं. ५ D. adds अथ च after समानं and omits च. ६ K. has आयतं च हेथम्. D. has हेथम् and B. च भवति after this.

यस कोणचतुष्टयं विषमं भुजचतुष्टयं च विषमं तद् विषमकोण-विषमचतुर्भुजं श्रेयम् ।

### अय समानान्तरालरेखालक्षणम् ।

या रेखा प्रथमनिःसारितरेखया कदापि न मिलति सा समाना-न्तरा रेखा भवति ।

यो सरला रेखा सैकयैवान्ययुक्ता सती सरला भविष्यति न द्विती-यादिरेखायोगेन दर्शनम् ।

श्रथ यस्यैकराशेः समाना ये ये राश्ययत्ते मिथः सर्वेऽिप समानाः । ये राश्ययो मिथः समानास्ते समानराशिप्रमाणयोगवियोगाभ्यां समाना एव ।

यदि च राश्चयः समाना न भवन्ति ते समानराश्चियोगवियोगा-भ्यामपि समाना न भवन्ति ।

वे<sup>3</sup> राञ्चयः समानयोगवियोगाभ्यां समाना भवन्ति तेऽपि पूर्वे समाना एव सन्ति ।

ये च राञ्चयः समानराञ्चियोगवियोगाभ्यां समाना न भवन्ति तेऽपि पूर्व समाना न सन्ति ।

ये राश्य एकादिगुणितान्यराशिसमाना भवन्ति ते सर्वे समाना एव। यः कोऽपि राशिः खखण्डादिषक एवास्तीति प्रसिद्धम् । चिद्धं रेखा धरातलं वृत्तं क्षेत्राणि च प्रसिद्धानि सन्ति । रेखायां धरातले चिद्धं रेखा च कर्तुं शक्यत इति सर्वे प्रसिद्धम् । एवं चिद्धादिप रेखा कर्तुं शक्यते ।

<sup>9</sup> D. K. omit the whole portion from this to व्यासार्धमि-तेन रतं कर्त्त अक्यते. २ B. adds रेखाया: ३ B. adds च. ४ तेऽपि A.

अब चिह्नं चिह्नोपरि रेखायां चान्या समाना रेखा धरातलं स्वस-मानधरातले च तिष्ठति ।

रेखाद्रयस्य संपात एकचिह्न एव भवति । धरातलद्वयसंपात एकरेखायामेव भवति । ये च चिह्ने तयोरुपरि सरलेका रेखा योजयितुं शक्यते । या च सरलरेखा सा वर्धयितुं शक्यते । चिह्नोपर्यभीष्टरेखाव्यासार्धमितेन वृत्तं कर्जु शक्यते । यावन्तः समकोणास्ते सर्वेऽपि समानाः । सरलरेखाद्वयं धरातलं व्यासुं न शक्नोति । कुटिलरेखाद्वयमथवा कुटिलसरलरेखाद्वयं धरातल्मावृणोति ।

यद्रेखाद्वयं समानान्तरं न भवति किन्तु विषमान्तरं भवति तत्र यस्मिन् प्रदेशे बह्वन्तरं भवति तिह्शि विधितयो रेखयोरन्तरमुत्तरोत्तरम-धिकमेव भवति यत्र च खल्पमन्तरं तिह्शि विधितयो रेखयोरन्तरमुत्तरो-त्तरमल्पमेव भवति यावद्रेखाद्वयसंयोगस्तदनन्तरमन्तरं विधिषणु भवति ।

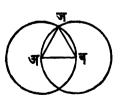
यत्र कोणशब्दस्तत्र सरलरेखाकृत एव कोणो ज्ञेयः । यत्र रेखाशब्दस्तत्र सरलैव रेखा ज्ञेया । यत्र च भूमितलर्शब्दस्तत्र जलसमीकृतमेव भूतलं ज्ञेयम् ।

इति परिभाषा ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् । यहा सम्बन्धितः क्षेत्रं क्ष्रिकारीयः।

तैत्र यदा समित्रभुजं क्षेत्रं कर्तव्यमस्ति । तैत्र अबरेखा च ज्ञातास्ति तदुपरि त्रि-भुजं कियते ।

तथ्या ।



१ A. omits रेसा. २ D. begins it with अथ. ३ K. inserts भवति after अन्तरं. ४ A. and B. omit तत्र. ५ D. omits तत्र. ६ अव निर्देश रेसा तदुपर &c. D. and A.

अं केन्द्रं कृत्वा अबव्यासार्धेन दृत्तं कार्यम्। एवं बं केन्द्रं कृत्वा बअव्यासार्धेन द्वितीयं वृत्तं कार्यम्। यत्र वृत्तद्वयसंपातस्तत्र अचिह्नं कार्यम्। तेत्र अजरेला बजरेला च कार्या।

(4) T

एवमत्र अवजित्रमुजं समानत्रिमुजं जातम् । कुतः ।

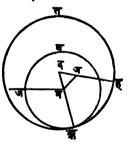
अत्र अबरेखा अजरेखासमानास्ति । यतो बजवृत्तस्य व्यासा-र्घमस्ति । पुनर्बजरेखा बजरेखासमानास्ति अजवृत्तस्य व्यासार्ध-त्वात् । पुनर्बजं अजसमानं जातं अबद्गुल्यत्वात् । तसाद्भुजरेखात्रयं मिश्रः समानं जातम् ।

### अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

तैत्रैकाभीष्टा रेखा कृतास्ति तदन्यत्रकृतविन्दुतस्तचुल्या रेखा कर्तव्यास्तीति।

तत्र बिन्दुः अचिह्नं कल्पितं रेखा बर्जं कैल्पितम् ।

अनिहात् बनिहपर्यन्तं रेखा कार्या । अबेरेखोपरि समत्रिमुजं अवदं कार्यम् । ब-केन्द्रकं बजेन वृत्तं जझवसंग्लं कार्यम् । द-ब रेखा दीर्घा वृत्तपालिमिलिता झसंलमा च कार्या । पुनर्द्शेन देकेन्द्रकं हझतवृत्तं कार्यम् । दअरेखा दीर्घा वृहद्वृत्तपालिह-संलमा कार्या ।

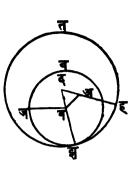


तत्र अहरेला बजरेलया समाना जाता।

कुतः।

<sup>9</sup> B. and D. omit द्वितीयं. २ D. has ततः for तत्र. ३ D. K. omit तत्र. ४ D. K. omit कल्पितम्. ५ A. and B. पुनरतः. ६ A. B. omit it.

दहरेखादझरेखयोः समानत्वमस्ति । तत्र दअरेखा दबरेखासँमानास्ति । तस्मात् अहरेखा बझरेखा चै समाना जाता। पुँनर्बझ रेखा बजरेखा चै समानास्ति । तस्मात् अहरेखा बजरेखासमानास्तीति सिद्धम् ॥

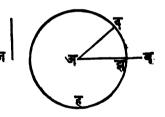


### अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

यत्र बृहद्रेखा छघुरेखा च ज्ञातास्ति तत्र छघुरेखातुल्यं खण्डं बृहद्रेखातः भिन्नं कर्त्तव्यमस्तीति चेत्।

तदा बृहद्रेखा अबसंज्ञा छघुरेखा जसंज्ञा कल्पिता।तत्र अचिहात् अहरेखा जसमाना निष्काशनीया पूर्वोक्तपकारेण।

पुनः अकेन्द्रं कृत्वा अदेन दह्मवृत्तं कार्यम् । इदं अबरेखातः अदरेखासमानां अझरेखां पृथक् करोति । तस्मात् अझ रेखा जरे-खासमाना जाता ॥



## अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

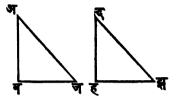
यंत्र त्रिभुजद्वयमस्ति तत्रैकत्रिभुजस्य मुजद्वयं तदन्तर्ग-तकोणश्च द्वितीयत्रिभुजस्य भुजद्वयेन तदन्तर्गतकोणेन च समानं भैवति तदा प्रथमत्रिभुजस्य शेषकोणद्वयं तृतीय-

१ •रेखासमानास्ति D. २ D. K. omit अस्ति. ३ omitted in D. K. ४ omitted in D. K. ६ तस्मादिष च A. B. ७ D. K. omit इति चेत्. ८ पूर्वोक्तप्रकारेण पृथक् कार्या. A. B. ९ शक- अम्. D. K. १० D. omits यत्र त्रिभुजदूरमस्ति । ११ D. adds यदि after समानं.

मुजश्च द्वितीयत्रिभुजस्य कोणाभ्यां तृतीयभुजेन च समानं भवति ।

तत्र प्रथमत्रिभुजं अवजं द्वितीयत्रिभुजं दहसं अवं दहसमं अजं

दश्नसमं च कल्पितं अकोणदकोणौ अ च समौ कल्पितौ।तदा बजं हश्नसमं भविष्यति बकोणहकोणौ समानौ जकोणझकोणौ च समानौ भविष्यतः । क्षेत्रं च क्षेत्रसमानं भविष्यति।



अत्रोपपत्तिः।

तत्र अबरेखा दहरेखायां न्यस्ता अकोणो दकोणे न्यस्तः अजं दशोपरि च न्यस्तम्। एवं कृते बजं हशोपरि स्थास्यति यतो रेखाद्वयं सरलम् । बजकोणो हशकोणयोः स्थास्यतस्तदा क्षेत्रं क्षेत्रसमानं भविष्यति ॥

## अथ पश्चमं क्षेत्रम् ।

तत्र यस्य त्रिभुजस्य भुजद्वयं समानं तस्य तृतीयभुजोपरि संख्यकोणद्वयं समानं भवति । अथ भुजद्वयं स्वमार्गवृद्धं सत् तृतीयभुजाधःसमुत्पन्नकोणद्वयमपि समानं भवति ।

यथा अवजित्रभुजे अवं अजसमानमस्ति तदा अवजकोणअजवकोणौ समानौ भविष्यतः । पुनः अवरेखाँ द्पर्यन्तं हपर्यन्तं अजरेखा च विषता । ततः समुत्पन्नौ वजहकोणजवदकोणौ वजरेखाधः- स्थितौ समानौ भवतः ।

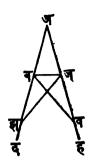


अत्रोपपत्तिः ।

बदरेसायां झचिन्हं कुर्यात् । जहरेसायां बझरेसासमाना जव-

<sup>9</sup> A. B. add इति after भविष्यति. २ K. शक्कम्. ३ D. inserts र्षनीया.

रेला पृथक् कार्या। बवरेला अझरेला च कार्या। अजझित्रमुजे अववित्रमुजे जअमुजः अझमुजः अकोणेन कमेण अकोणश्च बअमुजेन अवमुजेन अकोणेन कमेण समानाः। जझमुजः बवमुजः एतौ समानौ जातौ। अजझकोणअववकोणो च समानौ जातौ। झकोणवकोणाविष समानौ जातौ। पुनः जबझित्रमुजे बजवित्रमुजे च बझमुजः झजमुजः झकोणः कमेण



जवभुजेन वबभुजेन वकोणेन समानाः । तदा जबझकोणः बज-वकोणः इमौ द्वौ समानौ जातौ । पुनः झजबकोणः वबजकोणः इमौ समानौ जातौ । एतौ अजझकोणअववकोणयोः शोधितौ । शेषौ अजबअबजकोणौ समानौ भवतः। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# प्रकारान्तरेण पश्चमं क्षेत्रम्।

तत्र अबरेखायां दचिन्हं कार्यम् । अदरेखातुल्या अहरेखा भिन्ना

कार्या । ततो दहरेला दजरेला इबरेला च कार्या ।

अद्जित्रिभुजे दअभुजः अजभुजः अ-कोणश्च अह्वत्रिभुजस्थेन हअभुजेन अ-बभुजेन अकोणेन क्रमेण समानः। ततो ब

बहरेला दजरेला पैरस्परं समाना जाता। अबहकोणः अजदकोणश्चैताविप समानौ जातौ। एवं बदहित्रिभुजे दबभुजः बहुभुजः
दबहकोणश्च दहुजित्रभुजस्य जहुभुजेन जदभुजेन हजदकोणेन
समानः। पुनः बदहुकोणजहुदुकोणौ परस्परं समानौ स्तः। बहुदकोणः जदहकोणश्च पैरस्परं समानः। पुनः बद्जकोणः बहुजकोणश्चीताविप समानौ। एवं बद्जित्रभुजे बद्भुजः दज्भुजः बद्जकोणश्च वहुजित्रभुजस्य जहुमुजेन हुबभुजेन जहुबकोणेन च समानः। ततो
अबजकोणअजबकोणौ समानौ जातौ। तदेवमभीष्टौ कोणौ सिद्धौ॥

<sup>9</sup> च मिय: A. B. २ मिय: A. B.

### अय पष्ठं क्षेत्रम्।

तत्र यस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयं समानं तत्कोणसंबन्धि भु-जद्वयमपि समानं भवति ।

(यमाप समाम मवात

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र अबजित्रभुजे बजकोणी स-मानी । अबं अजमि सेमानम् । यदि ब

मुजद्वयं समानं न भवति एको भुजोऽधिकः स्यात्तदा अधिकभुजः अजं किल्पतः । बआसमानं जदं भिन्नं कृत्वा बदरेखा कार्या । अ-जबित्रमुजे अवभुजो बजभुजः अवजकोणः दबजित्रमुजस्य दज-भुजेन जबभुजेन दजबकोणेन समानः । एवं बृहित्रभुजं लघुत्रिभुज-समानं जातम्।तिददमनुपपन्नम् । बृहत्क्षेत्रं लघुक्षेत्रेण कथं समानं भवि-ध्यति । तसात् अजं अबं समानम् । तदेवमुपपनं कोणद्वयसाम्ये तत्सक्तभुजद्वयसाम्यं भवेतीति ॥

# अथ सप्तमं क्षेत्रम् ।

तत्रैकरेखोभयपार्श्वयोनिः स्तं रेखाद्वयं यत्र मिलितं तिश्च-न्हादन्यत्र तद्रेखाद्वयसंपातो न भवति कदापीति।

अत्रोपपत्तिः ।

अबरेखाप्रान्ताम्यां अजरेखा बजरेखा च निःस्ता जिन्हे तयो-बोंगो जातः । अथ यदि तत्समानमन्यद्रेखा-द्वयमन्यत्र चिन्हे मिलति इति कल्प्यते तदा अजरेखातुल्या अदरेखा बजरेखातुल्या बदरेखा दिचिन्हे मिलिता स्यात् । पुनर्द-

<sup>9</sup> समानं भवति A. B. २ अजिरेखातुल्यः A. B. ३ साम्यमि D. ४ D. omits इति at the end. ५ D. K. have रेखाद्वयं निःसतं. ६ मिलनं न भवति D. K.

जरेखा निष्कास्या। तदा अजदकोणः अदजकोणेन समानः स्यात्।

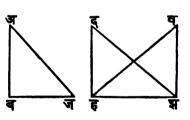
कुतः । अजअदयोः समानत्वात् । अय च बजदकोणः अजदकोणादल्पोऽस्ति । तदा बजदकोणः अदजकोणादल्पो भवि-ष्यति । पुनः अदजकोणः बदजकोणाद- अ

ह्पोऽस्ति । बजदकोणः बद्जकोणादत्यन्तमस्यः स्यात् । इमौ तौ समानौ स्तः । कृतः । बद्बजभुजयोः साम्यात् । तस्मादिदमनुपपनं यतः समानौ कोणौ विषमौ जातौ । तदेवमुपपनं जचिन्हादन्यत्र भुजयोगो न भविष्यतीति ॥

## अथाष्टमं क्षेत्रम्।

यस्य त्रिभुजस्य भुजत्रयमन्यत्रिभुजस्य भुजैः समानं भवति तदा तस्य कोणत्रयमपि अन्यत्रिभुजकोणैरवश्यं समानं भ-विष्यति।

तत्रैकं त्रिभुजं अवजं द्वितीयं दहसं च कल्पितम्। अत्र अव-भुजः दहभुजसमानः अजभुजस्तु दस्भुजेन समानः वजभुजः हस्नेन च समानः कल्पितः।



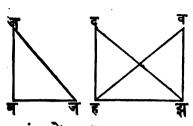
यदा भुजत्रयं समानं जातं तदा अकोणः दकोणेन समानः बको-णस्तु हकोणेन समानः जकोणो झकोणेन समानो भविष्यति । कुतः । बजभुजं हझभुजे स्थाप्यते क्षेत्रं क्षेत्रे च स्थाप्यते तदा शेषौ अवअजौ भुजौ दहदझभुजयोः स्थास्यतः । यदि न स्थास्यत-स्तदा भिन्नौ तिष्ठतः । यथा वहवझौ कल्पितौ ।

तेत्रेयमनुपपत्तिः।

<sup>9</sup> बतो D. २ तत्रेयमुपपत्तिः A. D.

दहदझरेले इझरेलोभयपान्ताभ्यां निःसते दिनन्हे मिलिते वहव-

श्नरेखे पूर्वरेखासमाने प्रान्ताभ्यां निःसते बचिन्हे मिलिते। इदम-नुपपञ्चम् । इदं सप्तमक्षेत्रे प्रति-पादितमस्ति । तस्मात्रिभुजं त्रिभु-जोपरि स्थास्यत्येव । कोणा अपि कोणसमाना भवन्त्येव । तदेवसपपनं यथोक्तम् ॥



अथ नवमं क्षेत्रम् ।

तत्र कोणस्य समानभागद्वयकरणं प्रदर्श्यते ।

तद्यथा बअजकोणः कल्पनीयः । बअभुजे दिचन्हं कृतम् । त-

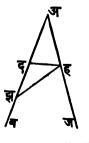
जुल्यमेव द्वितीयेऽपि भुजे हचिन्हं कार्यम्। दह-रेसाकायी। दहरेसोपरि दशहं समत्रिभुजं कार्यम्। अझरेखा कार्या। इयं रेखा अकोणस्य समं माग-द्वयं करोति ।

यतो दअझत्रिमुजे हअझत्रिभुजे दअभुजः हअभुजश्च मिथः समानः । दश्चभुजहश्चभुजौ समानौ । अझ उमयोरेक एवास्ति । उमयो-

ब्रिमुजयोर्मुजाः समानाः।कोणा अपि समाना भवन्ति । तस्मात् झअ-दकोणझअहकोणी समानी जाती । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ॥

यदि झिचिन्हं रेखयोरन्तर्गतप्रदेशमध्ये भवति रेखोपरि वा रेखाया

बहिन मैवति तदेयमुपपत्तिरुपपन्ना भविष्यति। अथ **श्र**चिन्हं रेखयोरन्तः प्रदेशमध्ये ऽवश्यं भविष्यति कुतः । यदि मध्ये न मविष्यति तदा रेखायां बहिर्वा भविष्यति। तदैतादृशं क्षेत्रं स्यात्तदृर्शनम्। तत्र झदहकोणझहदकोणौ समानौ भविष्यतः। जहदकोणः बदहकोणेन समः । झचिन्हं यदि

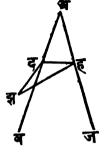


<sup>9</sup> D. inserts अत्र after कोण:. २ भवेत D. K.

बद्भुजे पतित तदा दृहज्जृगृहत्कोणः दृहङ्गृगृहत्कोणसण्डं च इमी समानी जाती । इदमनुपपन्नम् ।

यदि झचिन्हं बद्भुजाद्बहिर्भविष्यति तदा झदहकोणः बदहको-

णान्महान् भविष्यति। दहजकोणादिप भविष्यति। यतो बदहकोणो दहजकोणश्चेमौ समौ स्तः। झदहः महान्कोणः दहझकोणेन समोऽस्ति। पुनः दहझकोणसण्डं दहजकोणान्महज्जातम्। तदि-दमनुपपन्नम्। येतः सण्डं कोणादिषकं न भवि- श्र ष्यति। तसात् झिचन्हं भुजयोर्भष्य एव भवि-ष्यति।।



पुनः मकारान्तरेण कोणस्यार्द्धकरणम् ।

तत्र द्बरेलायां झिचिन्हं कार्यम् । दझरेलातुल्यं हवं पृथकार्यम् ।

झहवदरेसे कार्ये । संपातः तसंज्ञः कल्पनीयः । अतरेसा कार्या । इयं अकोणस्य समानं भाग-द्वयं करोति ।

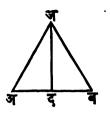
#### अत्रोपपत्तिः।

दैत्र पश्चमक्षेत्रकथितोपपत्या झहदकोणः व-दहकोणश्चेतौ समानी जातौ । दतं हतं समा-नम् । दअतित्रभुजं हअतित्रभुजं समानम् । तसात् अकोणस्य भागद्वयं समानं जातम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् । तत्र यद्रेखायाः समानं भागद्वयमपेक्षितं भवति । तदा तद्रेखोपरि समत्रिभुजं कार्यम् ।

<sup>9</sup> D. omits it. २ यत् सण्डं कोणादधिकं भविष्यतीति K. ३ D. K. omit from तत्र to 'पपत्या.

यथा अबरेखोपिर समं अबजं त्रिभुजं कृत-मस्ति । पुनस्तत्र जकोणस्य जदरेखया समानं मागद्वयं कृतं तदा जदरेखा अबरेखाया अपि समानं मागद्वयं करिष्यति ।



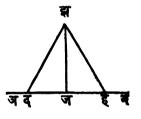
अत्रोपपत्तिः ।

अद्जित्रिमुंजे अजमुजः जदमुजः अजदकोणश्च दजबित्रमुज-स्थेन वजमुजेन जदमुजेन बजदकोणेन च समानः । तस्मात् अदं बदं द्वयमि समानम् । तदेवमुपपन्नं रेखायाः समानं भागद्वैयकरणम् ॥

## अधैकादशं क्षेत्रम् । तत्रैकरेखायामभीष्टचिन्हाल्लम्बो निष्कासेनीयोऽस्ति ।

यथा अबरेखायां जिनन्हं दत्वा तसालम्बो निष्कासनीयोऽस्ति । तद्यथा ।

अबरेलायां दचिन्हं देयम् । जदतुल्यं जहं कार्यम् । दहरेलायां समत्रिमुजं दझहं कार्यम् । पुनः झजरेला कार्या । इयमेव रूँ-



अत्रोपपत्तिः ।

म्बस्दपा जाता ।

दश्रजिभुजस्य भुजत्रयं ह्झाजस्य भुजैः समानमस्ति । झजद-कोणझजहकोणौ जिनन्हस्य समानौ । तस्मात् जस्य द्वौ कोणौ स-मकोणौ जातौ । झजरेखा छम्बो जातः । तदेवमुपपत्रं चिन्हाछम्य-करणम् ॥

अथ प्रकारान्तरेण ।

तत्र अबरेखायां अचिन्हाल्लम्बकरणं चिकीर्षितमस्ति । तत्र अब-

१ ° इयम् D. २ ° श  $^\circ$  K. ३ निष्कासितोऽस्ति D. निष्काशितोऽस्ति. K.  $^\circ$  सम्बः D. K.  $^\circ$  पुनः D. ६ A. B. add तदानयनं निरूप्यते । K. adds तदानयनं.

रेसायां जिन्हं कार्यम् । पुनः जअसमानं जदं कार्यम् । जिन-न्हात् जहरूम्बेः कार्यः । दिनन्हात् क्ष्म् हिं दझरूम्बेः कार्यः । अजहकोणस्य

दश्रुलम्बैः कार्यः । अजहकोणस्य जवरेखया खण्डद्वयं समानं कार्यम् । पुर्नैः जदश्रकोणस्य दहरेखया च

खण्डद्वयं समानं कार्यम् । तेदा जहरेखादहरेखयोयोगे हचिन्हं जातम् । पुनः दहरेखातुल्या जबरेखाँ पृथक् कार्या । पुनः अवरेखा

च कार्या । इयं लम्बरूपा जाता ।

अत्रोपपत्तिः ।

अजवित्रभुजे अजभुजः जबभुजः अजवकोणश्च जदहित्रभुजे जदमुजेन दहभुजेन जदहकोणेन समानः । वअजकोणश्च हजद-कोणेन समानो जातः । पुनैः हजदः समकोणोऽस्ति । वअजको-णोऽपि समकोणः । ततः अवरेखा लम्बो जातः । अयमेवाऽसीष्टः ॥ अथ द्वादशं क्षेत्रम् ।

तत्राभीष्टचिन्हात् अभीष्टरेखायां लम्बंनिष्कासनं कर्त-ध्यमस्ति।

यथा जिन्हात् अबरेखायां लम्बो निष्कौसितोऽस्ति । तद्यथा ।

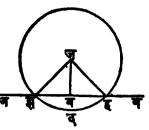
अबरेखाद्वितीयदिशि द्विन्हं का-र्यम् । जं केन्द्रं कृत्वा जदव्यासार्द्धेन हद्शं वृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तं अबरे-खायां ह्झचिन्हे संपातं करिष्यति । पुनः ह्झरेखायाः वचिन्हे समानं खण्ड-

द्वयं कार्यम् । पुनः जवरेखा कार्या । अयमेव लम्बः ।

<sup>9</sup> D. omits it. २ A. B. add व. ३ A. B. add व. ४ D. omits it. ५ एवं जहरेका दहरेक्योगेंगः हविहे जातः । A. B. ६ A. B. insert जविहात्. ७ D. omits it. ८ B. has इदमेवाभीष्टम् ॥ ९ शक्लम् K. १० लम्बः कर्त्तव्योऽस्ति A. B. ११ ०क्षि K. १२ इवं K.

#### अत्रोपपत्तिः ।

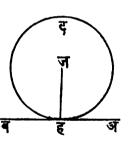
जहरेला जझरेला कार्या। जहव-त्रिमुजे जझवत्रिमुजे जहं जझं समानम्। उमयं चे वृत्तस्य व्यासार्द्धतुल्यमस्ति। हवं वझं उमयं समानं पूर्वकृतमस्ति। जवं-उमयोस्निमुजयोर्भुजोऽस्ति। तसात हजव-



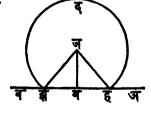
स्य त्रयो मुजाः जझवस्य मुजत्रयेण समाना जातौः । हवजकोणो जवझकोणेन समानो जातैः । वस्य कोणद्वयं समकोणं जातम् । जवं च लम्बो जातः । ईदमेवाभीष्टमस्माकम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबरेखायां इचिन्हं कार्यम् । हजरेखा संयोज्या । पुनः जं केन्द्रं कृत्वा जहव्यासा-देंन वृत्तं कार्यम् । तत् हृद्संग्नं भवति । वृत्तस्याद्यन्तौ हृचिन्हे भवतः । तदा जह-रेखा लम्बो जातः । एतस्योपपत्ति तृतीयाध्याये व वक्ष्यामः ॥



हचिन्हे यदि वृत्तस्थान्तो न भवति किं च झचिन्हे भवति तदा हझरेस्वायां वचिन्हे सण्डद्वयं समानं कार्यम् । जव-रेसा संयोज्या । इयं छम्बः ।



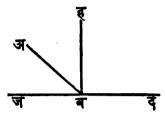
अत्रोपपत्तिः पूर्वोक्तप्रकारेण ॥

<sup>9</sup> D omits च. ২ omitted in D. ২ comitted in D. ৮ হবभेनसाकमिष्टम्। ५ K. adds द्वादशक्षेत्रे क्षेत्रा।

## खय त्रयोदर्श क्षेत्रम् ।

तत्रैकरेखोपरि अन्यरेखायोगः कार्यः तत्र रेखोभयदिशि जातं यत् कोणद्वयं तत् समकोणद्वयं भवति अथवा कोणद्व-ययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति ।

अथ अबरेलायां जदरेलाया योगः कृतस्तेन अबजकोणः अबदकोणश्च इमो समुत्पनो ।



अबरेसा यदि लम्बस्तदा द्वौ समकोणो जातो । यदा अबरेसा लम्बो न भवति तदा बिचन्हात् बहुलम्बः कार्यः । तदा कोणत्रयं भ-वित अबजं एकः अबहं द्वितीयः हबदं तृतीयः। अर्थं द्वितीयकोणः प्रथमकोणेन युक्तः कृतश्चेत् तदा हबजः हबदश्चेतौ द्वौ समकोणो भविष्यतः। अर्थे द्वितीयकोणे तृतीयकोणश्चेद्योज्यते तदा अबज अब-दकोणौ यथास्थितौ भवतः । तस्मादेतत्समकोणद्वययोगः समकोणद्वय-तुल्यो जातः। इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं दिग्द्वयतः समागतं तदन्यरेखाचिन्हे यदि योगं करोति तत्र तद्रेखाद्वययोगात्समकोणद्वयं भवति वा कोणद्वययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति तदा निष्कांसितरे-खाद्वययोगात् सरलैकरेखा भवति ।

<sup>9</sup> omitted in D. २ A and B. omit द्वितीयकोणे. ३ ०कि K. ४ K. and B. add रेखाद्वयमन्यरेखया चिन्हे योगं करोति यथा रेखान्ता- मामेकत्र योगो भवति तत्रोत्पन्नं कोणद्वयं द्वी कोणी समकोणी अथवा द्वयोवोंगः समकोणद्वयसमानः रेखात्रयाणां मध्ये मिलितं रेखाद्वयमेका सरस्य रेखा भवति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

जबबदरेले अबरेलायां बनिन्हे मिलिते जाते । जबअकोणः

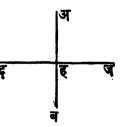
दबअकोणः एतौ समकोणद्वयसमानौ जातौ।
तदा जबदरेखा सरला एका रेखा जाता।
यदि सरला न भवति तदौ जबहरेखा
सरला रेखा भवति। तत्रै जबअः इबअः हएतौ द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ द

पता द्वा काणा द्वयाः समकाणयाः समाना द ज जांती । तदा जबअकोणः द्वअकोणः एताविष कोणी द्वयोः सम-कोणयोस्तुल्यौ भवतः । पुनस्तयोजीबअकोणश्चेच्छोध्यते तदा ह्वअ रुषुकोणः द्वअवृहत्कोणश्चेतौ समानौ स्याताम् । एतदनुपपन्नम् । यतस्तौ प्रत्यक्षं रुषुमहान्तौ । तस्मादुपपन्नं जबदरेखा सरलांसीति ॥

## अथ पञ्चदशं क्षेत्रम् ।

तत्र रेखाद्वयसंपातादुत्पन्नं कोणचतुष्टयं तेषु परस्परसन्मुखं कोणद्वयं समानं भवति ।

यथा अवरेलाजदरेलाभ्यां हिनन्हे सं-पातः कृतः। तत्र जहबकोणअहृदकोणौ पर-स्परसन्मुलौ समानौ स्तः। कृतः। बहुजकोण- द्र जहस्मकोणयोयोंगः समकोणद्वयतुल्योऽस्ति। पुनर्जहस्मकोणअहृदकोणयोयोंगोऽपि समको-



णद्वयसमानोऽस्ति । जहअकोणश्चोमयोः कोणयोर्मिलितोस्ति स दूँरी-कियते चेत्तदा बहुजकोणअहदकोणाविष शेषौ समानौ स्तः । तदा रेखाद्वयसंपातात् उत्पन्नं कोणचतुष्टयं चतुर्भिः समकोणैः समानं जातम्। इदमेवास्माकिमष्टम्।

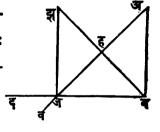
<sup>9</sup> omitted in D. ३ omitted in D. ३ omitted in D. ४ omitted in D. ५ D omits इति. ६ दूरीकृता तदा D. K.

अथ च यर्सिश्चिन्हे यावत्यो रेखा मिलितास्तत्रोत्पन्ना ये को**नास्ते** चतुर्मिः समकोणैः समाना भवन्ति ॥

### अथ षोडशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजस्यैको भुजः स्वमार्गवृद्धः कार्यः तत्रस्त्रिभुजा-द्वहिरुत्पन्नकोणः त्रिभुजान्तर्गतस्वपार्श्वस्थितान्यकोणाम्यां प्रत्येकादिधकोऽस्ति ।

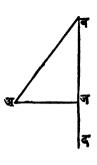
यथा अबजित्रमुजे बजमुजः द्प-र्यन्तं नीतः । तत्र त्रिमुजाद्वहिरूत्पन्नः अजदकोणः त्रिमुजान्तर्गतअकोणात् ब-कोणाच प्रत्येकादिषकोऽस्ति ।



अत्रोपपत्तिः ।

तत्र अजभुजस्य हचिन्हे सण्डद्वयं समानं कार्यम्। बहरेसा च कार्या। बहरेसा विद्वता बहसमाना झपर्यन्तं नेया। जझरेसा च कार्या। तदा अबहत्रिमुजं जातम्। एवं हजझित्रमुजं जातम्। तत्र बहभुजः हझभुजेन समानः। अहभुजश्च हजभुजेन समानः। बहुअकोणः झहजकोणेन समानः। तस्मात् बअहकोणः हजझकोणेन समानो जातः। तदा अजदबिहर्गतकोणः अजझकोणादिषकोऽस्ति। अकोणादप्यिकः। पुनः अजभुजः विचन्हपर्यन्तं नेयः। तदा बजवकोणः बकोणादिषकः। बजवकोणश्च अजदकोणश्चेतौ समानौ जातौ। अजदकोणोऽपि बकोणादिषको जातः। इदमेवास्माकमभीष्टम्।

अनेन इदमपि ज्ञातमेकचिन्हादुत्पन्नं रेखाद्वयं तृतीयरेखया यदि योगं करोति तदा तत्रोत्पनेकदिक्कोणद्वयं कदापि समानं न भवति । दिगन्न चिन्होत्पन्नरेखातो प्राधा । यथा अचिन्हात् अवरेला अजरेला च नि-सता बदरेलायां बजिन्हे मिलिता । तदा अ-बजकोणअजदकोणौ चैकदिश्युत्पनौ समानौ न भवतः । यतो रेलात्रययोगेन अबजित्रभुजं जातम् । अजदकोणः त्रिभुजाद्वेहिःस्थः अब-जकोणादिषकोऽस्ति । इदं पूर्वेक्षेत्रे प्रतिपा-दितमस्ति । तस्मौदुक्तमेवोपपनम् ।



## अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजस्य कोणद्वययोगः समकोणद्वययोगादल्पो भ-षति ।

यथा अवजित्रमुजे वजकोणौ सम-कोणद्वयाच्यूनौ स्तः।

कुतः।

बजमुजः दपर्यन्तं नेयः । अजद-कोणअजबकोणयोयोंगः समकोणद्वय-समानोऽस्ति । अजदकोणस्तु बको- **4 9 E** 

णादिवर्कः । पुनर्वकोण अजबकोणयोर्योगः समकोणद्वयाच्यूनोऽस्ति । एवमन्यकोणेष्वपि ज्ञेयम् । तदेवमुपपत्रं यथोक्तम् ॥

## अथाष्टादशं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजे बृहद्भुजसन्मुखः कोणः छघुभुजसन्मुखकोणा-न्महान् भवति ।

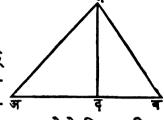
<sup>9</sup> दृहिस्थं क्षेत्रं K. २ पूर्वे च प्रतिपादितमस्ति K. ३ इदमेवास्माकम-भीष्टम् ॥ D. ४ After this A adds वोडशे उक्तम् । ५ अनेन प्रकारेण D. K. ६ omitted in D.

यथा अबजित्रमुजे अबमुजः अजमुजान्महानस्ति । तस्माजाकोणः

बकोणादधिको भविष्यति।

#### कुतः।

यदि अबभुजे अजतुल्यं अदं पृथक् कियते जदरेखा च कियते तदा अदज-कोणअजदकोणी समानी भवतः। अ- ज

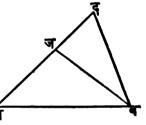


दजकोणस्तु अवजकोणान्महानस्ति । अजदकोणोऽपि महानस्ति । पुनः अजबकोणोऽपि अजदकोणादिषकोऽस्ति। तस्मात् अजबकोणः अबजकोणादतिमहान् जातः । तदेवमुपपन्नम् ।

पुनः प्रकारीन्तरम् ।

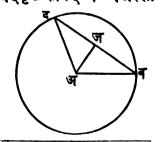
अजरेला दपर्यन्तं नेया। अबतुल्यं अदं च कार्यम्। दबरेला

च कार्या। तत्र अबदकोण अदबकोणौ समानौ स्तः। अबद्कोणस्तु अबजको-णान्महानस्ति । अदबकोणोऽपि अब-जकोणान्महानस्ति । पुनः अजबकोणः अदबकोणादिधकोऽस्ति । तस्मात् अ- ज



जबकोणः अबजकोणादतीव महान् जातः । तदेवमुपपन्नं येथोक्तम् ॥ पुनः प्रकारौन्तरम् ।

अं केन्द्रं कृत्वा अबव्यासार्द्धेन बदवृत्तं कार्यम् । बजरेला वृत्तलमा दपर्यन्तं नेया । अदरेखा च कार्या । अबदत्रिभुने बकोण-दकोणौ समानौ स्तः। अजबकीणश्च अद्बकोणाद्धिकः । अबद्कोणाद्प्य-धिकोभविष्यति । इदमेवेष्टमस्माकम् ॥

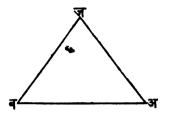


९ °रेण D. K. २ D. omits it. ३ "न्तरेण D. ४ अजबकोणो महानस्ति अद्बक्तोणात् अवद्कोणादप्यधिकः K. D.

## अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजे योऽधिककोणस्तत्सन्मुखभुजोऽपि महान् भ-वति योऽल्पकोणस्तत्सन्मुखभुजोऽपि लघुर्भवति ।

यथा अबजित्रभुजे जकोणः ब-कोणान्महानस्ति । तस्मात् अबभु-जोऽपि अजभुजान्महान् भविष्यति । कुतः ।



यदि अबभुजः अजभुजान्महान्

न भवति तदा तत्समो वा तक्यूनो वा भविष्यति।यदि समस्तदा बज-कोणौ समानौ भविष्यतः । जकोणस्तु बकोणादिषकोऽस्ति । पुनः अबभुजः अजभुजात् यद्यल्पोऽस्ति तदा बकोणः जकोणादिषकः स्यात् । जकोणस्तु बकोणादिषकः कल्पितोऽस्ति । तस्मात् अबभुजः अजभुजादिषको भविष्यतीत्येतदेवेष्टम् ।

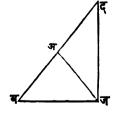
#### अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजस्य भुजद्वययोगः तृतीयभुजादिधकोऽस्तीति निरूप्यते ।

यथा अवजित्रिभुजे अवअजयोगः वजादिषकोऽस्ति । अत्रोपपत्तिः ।

बअमुजः दर्पर्यन्तं वर्द्धनीयः । अदः अजसमानः कार्यः । दज-

रेला च कार्या। तत्र बजदकोणः अजदकोणा-दिषकोऽस्ति। अजदकोणश्च अद्जकोणेन तु-ल्योऽस्ति। बजदकोणोऽपि बदजकोणादिध-कोऽस्ति। तसात् बदमुजः बजमुजादिधको जातः॥

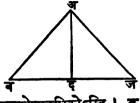


९ D. K. have कुतः for अत्रोपपत्तिः।

पुनः प्रकारान्तरेण प्रदर्शते ।

तंत्र अकोणस्य अदरेखया समानं खण्डद्वयं कार्यम् । तदा अदज-

कोणः दअबकोणादिधकोऽस्ति । दअब-कोणश्च दअजकोणेन तुल्योऽस्ति । त-स्मात् अदजकोणः जअदकोणान्महा-स्नातः । तदा अजभुजः जदभुजान्म- व हान् भविष्यति । पुनः अदबकोणः दअजव

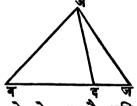


हान् भविष्यति । पुनः अद्बकोणः द्अजकोणादिघकोऽस्ति । द-अजकोणश्च द्अबकोणेन तुल्योऽस्ति । तदा अवभुजः बद्भुजा-न्महाञ्चातः । तसादिधकयोर्द्वयोर्योगस्तृतीयादिषको जातः । इदमेव-मसाकमभीष्टम् ॥

पुनैः प्रकारान्तरम् ।

तत्र अबअजयोगः बजादिषको यदि न भवति तदा तत्तुल्यो भ-

विष्यति वा न्यूनो भविष्यति। पुनः बदं वअ-तुल्यं पृथक् कार्यम् । अदरेखा संयोज्या । तदा जदरेखातुल्यं शेषं जअतुल्यं भविष्यति अथवाधिकं भविष्यति । यदि तुल्यं भविष्यति ﴿



तदा जअदकोणबअदकोणो जदअबदअकोणयोः समानौ मिन-ष्यतः । पुनः जदअबदअकोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ स्तः । तदा जअदकोणबअदकोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ भिवष्यतः । इदमनुपपन्नम् । त्रिभुजस्यैककोणो समकोणद्वयतुत्यो न भवति ॥

यदि जदरेखा जअरेखायाः अधिका तदा जअदकोणः जदअ-कोणादिषकः स्यात् । तिई जअबकोणः बदअकोणजदअकोणयो-योगादिषकः स्यात् । एतौ द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोः समानौ । बअजकोणः समकोणद्वयादिषको जातः । इदमेनुपपन्नम् ।

<sup>9</sup> D. omits this sentence. २ पुनः प्रकारान्तरेण विश्वतितमं क्षेत्रम् । तृतीयप्रकारेणाह् ॥ D. पुनः प्रकारान्तरेण विश्वतितमं क्षेत्रं तृतीयं चाह् । K. ३ D. omits from इद° to भवति. K. omits from त्रिभु° to भवति. ४ B. inserts मिलित्वा after कोणो. ५ इदं वाधितम् ॥ D. K.

### अथैकविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र त्रिभुजैकभुजोभयपान्तात् निःसृते रेखे त्रिभुजान्त-मिलिते तद्भुजयोयींगः त्रिभुजशेषभुजयोगाक्यूनोऽस्ति अथ चान्तर्गतभुजरेखायोगोत्पन्नकोणः त्रिभुजशेषभुजद्भययोग-कोणादिधकोऽस्ति ॥

यथा अबजित्रमुजे बजमुजोमयपान्तानिः सते बदजदरेले दिन-

न्हे मिलिते स्तः। बद्जद्योगो बअजअ-योगान्यूनोऽस्ति। पुनबद्जकोणो बअज-कोणादिषकोऽस्ति।

अस्योपपत्तिः ।

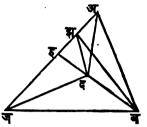
पुनर्द्वितीयप्रकारेणोच्यते ।

तत्र बददजयोगो बअअजयोगाद्यदि न्यूनो न भवति तदा स-मानोऽथवाधिकः स्यात् । तत्र बददजरेखयोरन्यतरैका रेखा बअ-अजरेखयोरन्यतरैकरेखाया अल्पास्ति वा न वा । यद्यल्पास्ति तदा जदं जअरेखाया अल्पमस्तीति कल्पनीयम् ।

९ मविष्यति A. B. २ पुनरेकविंशतितमं क्षेत्रं. D.

बदबअरेखयोरन्तरतुल्या अझरेखा भिन्ना कार्या । तदा झिचिइं

हचिहे न पतिष्यति । यदि पतिष्यति तदा बअअहयोगो बदसमानः स्यात् । बअअहयोगो तदा बहरेखातः न्यूनो भविष्यति इति बाधितम् । यतो भुजद्व-ययोगस्तृतीयभुजादिधकोऽस्ति । पुन- क्



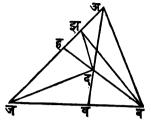
र्झिचहं हजरेलायामपि न पतिष्यति । यदि पतिष्यति तदा बअअह-योगो बहरेलातः अत्यल्पः स्यात् । इदं बाधितम् । तर्हि झचिहं अह-रेलायां भविष्यति । पुनर्झदरेला कार्या । झबरेला च कार्या । बदरेला बअअझरेलायोगतुल्या बझादिधकास्ति । तदा बझदकोणः बदझ-कोणादिधको जातः । बदं बअअझयोगेन तुल्यं स्थितं तर्हि जदं ज-झोन तुल्यमिषकं वा स्थास्यति । तस्मात् जझदकोणः जदझकोणेन तुल्यो वाधिकः स्यात् । यदि जदं जझोन तुल्यं स्यात् जझदकोणश्च जदझकोणेन तुल्यः स्यात् । यदि जदं जझादिधकं स्यात् तदा जझदकोणो जदझकोणादिधको भविष्यति । तदनन्तरं बझजकोणो बदझकोणजदझकोणयोगान्महान्स्यात् । इदं बाधितम् । यतो बदझकोणजदझकोणयोगींगः समकोणद्वयादिधकोऽस्ति । ततो बझजकोणोऽपि समकोणद्वययोगादिधको जातः । इदं बाधितम् । त्रिभुजैककोणस्य समकोणद्वययोगादत्यल्यत्वात् ।

पुँनः जद्भुजः जअभुजादल्पो न भविष्यति बद्देरसा बअरेसायाश्च अल्पा न भविष्यति चेत् तदा समाना वा अधिका भविष्यति । तत्र अदरेसा कार्या । यथा पूर्वमुपपत्त्या साधितं तथात्रापि साध्यते । तद्यथा। बअजकोणः बद्धजद्भकोणयोर्योगेन समानः अथवाऽधिकः स्यात् । पक्षद्वयेऽपि ईदमनुपपन्नम् । यतः बद्धअजद्भकोणयोर्योगः

 $<sup>{</sup>f 9}$  यदा  ${f A}, {f B}, {f R}$  ३ इदं बाधितम् ।  ${f K},$ 

समकोणद्वयादिधकोऽस्ति । बञ्जजकोणस्तु त्रिभुजस्यैककोणोऽस्ति ।

अयं समकोणद्वयादिषको जात इति बाधितम् । त्रिमुजे कोणद्वययोगः सम-कोणद्वयाच्यून एव भवतीति नियमो-ऽस्ति । तस्मात् बद्दजरेखायोगो बआअजरेखायोगाच्यूनोऽस्ति ।



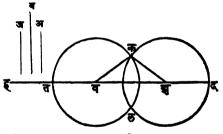
अय अदरेखा वपर्यन्तं नेया । तत्र बदवकोणः बअदकोणादिध-कोऽस्ति । जदवकोणश्च जअदकोणादिषकोऽस्ति । तसात् बदज-कोणः बअजकोणादिषकः सिद्धः । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

## अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रैकं त्रिभुजं कर्जुमपेक्षास्ति तत्र त्रयो भुजास्तथा कल्प-नीयाः यथा भुजद्वययोगस्तृतीयभुजादिधको भवति ।

ते च त्रयो भुजाः अ-बज्जसंजाः जेयाः।

तत्र प्रथमं दहरेला कार्यो । दहरेलायां दझ-



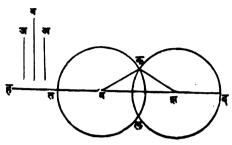
रेखा अरेखातुल्या पृथक् कार्या । झवरेखा च बरेखातुल्या पृथक् कार्या । वतरेखा जरेखातुल्या पृथक् कार्या । पुनर्झकेन्द्रं कृत्वा झद-व्यासाद्धेन दकलवृत्तं कार्यम् । वकेन्द्रं कृत्वा वतव्यासाद्धेन तकल-वृत्तं कार्यम् । तदा वृत्तद्वयसंपातः कचिन्हे भवति । पुनः कझ कवरेखा च कार्या । तत्र कझवत्रिभुजमस्माकमभीष्टं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

कझभुजः झदतुल्योऽस्ति । झदं अतुल्यमस्ति । कझं अतुल्यं

९ कर्त्तव्यमित्यपेक्षास्ति D. K.

जातम् । **झव**भुजश्च बतुल्योऽस्त्येव । पुनर्वकभुजः वततुल्योऽस्ति । वतं जतुल्यमस्ति तस्मात् वकं जतुल्यं जातम् ।



अथासाभिर्यदुक्तं तिस्रो रेखास्तादृशा अपेक्षिताः यासु रेखाद्वय-योगस्तृतीयरेखाया अधिको भवतीति किमर्थमुक्तमिति चेत्तत्र पूर्वोक्तोप-पत्त्या रेखाद्वययोगस्तृतीयरेखाया अधिकोऽस्तीति प्रतिपादितमेव । अत एव वृत्तद्वयसंपातो भवति । कुतः । अरेखाबरेखायोगः जरेखाया य-द्यधिको न भवति तदा वतरेखा वदरेखातुल्या भविष्यति अथवा-धिका भविष्यति । तसात् कत्लवृत्तं कदलवृत्तं स्वान्तःपाति करि-ष्यति। अथ दिचिन्हे तदा संलग्नं भविष्यति यदा वतं वदसमानं स्यात्। तदा दिचिन्हात् परतो भविष्यति यदा वतं वदादिधकं स्यात् । पुनः संपातो न भवति । यदि बरेखाजरेखायोगः अरेखातोऽधिको न स्या-त्तदा कदलवृत्तं कतलवृत्तं स्वान्तर्गतं करिष्यति । कुतः । दशरेला **झत**समाना चेत्तदा दकलवृतं तचिन्हे लगिष्यति । यदि दशं झतात् अधिकं स्यात् तदा दकलवृत्तं तचिन्हात् परतो भविष्यति । वृत्तद्वयसं-पातस्तदापि न भविष्यति । पुनः अरेखाजरेखायोगः बरेखाया अधिको न भविष्यति तर्हि झवरेला वतरेलाझदरेलायोगतुल्याधिका स्यात् । तदापि संपातो न भविष्यति । एवं तदैकं वृत्तं अन्यद्वत्तं स्वान्तर्गतं न करिष्यति किं तु वृत्तद्वयं भिन्नं भिन्नं स्थास्यति यद्य-धिकस्तदेतिं ॥

Digitized by Google

<sup>9</sup> K. adds द्वाविशतितमं क्षेत्रम् after इति.

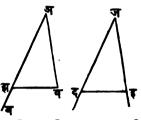
## अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्र अभीष्टरेखाया अभीष्टचिद्गोपरि कल्पितकोणतुल्यः कोणः कर्तव्योऽस्ति ।

तैत्करणप्रकारो यथा।

अबरेखोपरि अचिह्ने जकोणतुल्यः कोणः कर्तव्योऽस्ति । तत्र

प्रथमं जकोणस्य मुजद्वयोपिर दह-चिद्वद्वयं कार्यम् । दहरेखा कार्या । अबरेखोपिर अवझित्रमुजं जदहित-मुजतुल्यं कार्यम् । तत्र अवरेखा जहतुल्या अझरेखा जदतुल्या वझरेखा दहतुल्या च कार्या । तत्र अकोणो



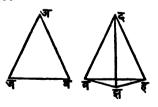
दृहतुल्या च कार्या। तत्र अकाणो जकोणतुल्यो जातः। इदमे-वास्माकमभीष्टम्।

# अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

तत्राभीष्टत्रिभुजस्य भुजद्वयं अन्यत्रिभुजभुजद्वयसमान-मस्ति तत्र प्रथमत्रिभुजस्य भुजद्वयसंबन्धिकोणो द्वितीयत्रिभु-जभुजद्वयजनितान्तर्गतकोणादिधकश्चेदस्ति तदा प्रथमस्य तृ-तीयभुजः द्वितीयस्य तृतीयभुजान्नियमेन अधिकः स्यात् ।

यश एकं अबजित्रमुजं द्वितीयं दह्रमत्रिमुजं चास्ति । तत्र अब-

मुजो दह्न भुजतुल्योऽस्ति अजभुजश्च दह्म मुजतुल्यः। तत्र अकोणो दको-णादिषकोऽस्ति। तदा बजमुजो हह्मै-मुजादिषकः स्यादेवेत्यत्र कि चित्रम्।



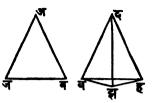
अत्रोपपत्तिः ।

दहरेसाया दिचेहे हदवकोणो बअजतुल्यः कर्तव्यः। तत्र दव-

<sup>9</sup> omitted in D. २ भवति K. ३ अधिको जातः तदा A. B.

रेसा अजरेसातुस्या कर्त्तव्या । हवरेसा च कार्या । अथ हवरेसा

बजरेखातुल्यास्ति । पुनर्वझरेखा कार्या । तदा दवझित्रमुजे दवभुजो दझभुजश्चेमौ समानौ । दवझकोणो दझवकोण एतौ समानौ स्तः ।

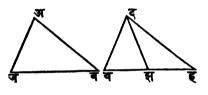


पुनईझवकोणो दझवकोणादिषकोऽस्ति । हवझकोणश्च दवझ-कोणादल्यः । एवं इझवकोणो हवझकोणादिषकोऽस्ति । हवसु-जोऽपि इझसुजादिषको जातः । पुनईवसुजो बजसुजतुल्योऽस्ति । तसात् बजसुजो हझसुजादिषको जात इति सिद्धम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् । २४

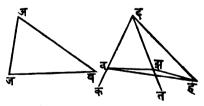
एवं पूर्वीक्तप्रकारेणोपरिस्था इवरेखा न चेत्तदा इवरेखा दश्नरे-

खायां संपातं करिष्यति वा ह्यारेखायां पतिष्यति वा ह्यारेखायां पतिष्यति वा ह्यारेखाया अधः पतिष्यतीति प्रकारत्रयेण तस्याः संस्था जाता।



प्रथमप्रकारस्तु पूर्वे कथितः । द्वितीयप्रकारे तु हझरेला हवरेलायाः स्वण्डं भविष्यति । तदा हवरेला हझरेलायाः अधिका जाता ।

तृतीयप्रकारे तु तकपर्यन्तं द-झदवरेखे कार्ये । झवरेखा च कार्या । तदा तझवको-णकवझकोणौ तुल्यौ भवि-



ष्यतः । एवं हझवकोणः तझवकोणादिषकः । हवझकोणस्तु कवझकोणान्यूनः । तदा हवभुजः हझभुजादिषकः स्यात् ॥

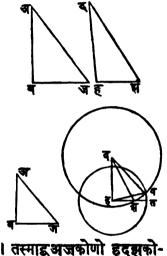
९ •रेण चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् । D. K.

### अय पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्रैकस्य त्रिभुजस्य भुजद्वयं द्वितीयत्रिभुजस्य भुजद्वयेन समानं प्रथमस्य तृतीयभुजश्च द्वितीयस्य तृतीयत्रिभुजाद्धि-कस्तदा प्रथमत्रिभुजस्य समानभुजद्वयोत्पन्नकोणो द्वितीयत्रि-भुजस्य भुजद्वयान्तर्गतकोणाद्धिकः स्यात्।

यथा एकं अवजित्रभुजं द्वितीयं दहझत्रिभुजं तत्र अवभुजो दह-

भुजेन तुत्यः । अजभुजो दझभुजेन तुत्यः। बजभुजोऽपि हझभुजादिषिकः। तदा बअजकोणो हदझकोणादिषिकः स्यात् । यदि अधिको न स्यात् तदा तुत्यो भविष्यति वा न्यूनो भविष्य-ति । यदि तुत्यस्तदा बजभुजो हझ-भुजतुत्यः स्यात् । इदं बाधितम् । अथ च यदि न्यूनस्तदा बजभुजो हझान्यूनः स्यात् । इदमेपि बाधितम् ।



यतो बज्रभुजो हझ्भुजादिषकोऽस्ति । तस्माद्धअजकोणो हदझको-णादिषको जात इति सिद्धम् ॥

युनः प्रकारान्तरम् ।

दं केन्द्रं कृत्वा दझ्य्यासार्द्धेन झववृत्तं कार्यम् । इझं तपर्यन्तं नेयम् । इतं बजतुल्यं कार्यम् । पुनः हं केन्द्रं कृत्वा इतय्यासार्द्धेन तववृत्तं कार्यम् । वृत्तद्वयसंपातो विचन्हे भैवति । दवरेसा हवरेसा च कार्या । तदा हद्वित्रभुजस्य त्रयो भुजाः बआजित्रभुजस्य भुजत्रयेण समाना जाताः । इद्वकोणश्च हदझकोणादिषक इति सिद्धम् ।

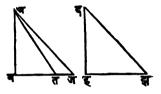
९ इदमनुपपन्नम् । A, B, २ इदमप्यनुपपन्नम् । A, B, ३ प्रकारान्तरेण । D, प्रकारान्तरमाह । K, ४ K, omits भवति.

# अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम् ।

तत्र एकस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयमेको भुजश्चान्यस्य त्रिभु-जस्य कोणद्वयेनैकभुजेन च समानश्चेच्छेषौ भुंजौ शेषकोणश्च तुल्यावेव भविष्यतः क्षेत्रं क्षेत्रसमानं च भविष्यति ।

यथा अबजित्रभुजे दहझत्रिभुजे च अकोणो दकोणतुत्यः। बको-

णश्च हकोणतुल्यः। अवभुजदहभुजी च तुल्यो कल्पितो। अथवा बजभुज-हझभुजो च तुल्यो कल्पितो। अथवा अजभुजदझभुजो च तुल्यो कल्पितो। यदि अवभुजदहभुजो तुल्यो कल्पितो।



यदि अवभुजदह्मुजौ तुत्यौ कल्पितौ तत्र बज्रभुजहृश्मभुजौ यदा समानौ स्तरतदास्माकमभीष्टमेव स्थात् । यदि तुत्यौ न भवतस्तदे-दमनुपपन्नम्।

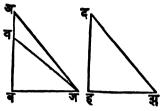
अत्रोपपत्तिः ।

तत्र वतं ह्झतुत्यं कार्यम् । तअरेखा च कार्या । एवं अतबत्रि-भुजं दझहत्रिभुजं च तुत्ये भवतः । पुनः तअबकोणझदहकोणौ तुल्यो भविष्यतः। पुनर्जअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ स्थितावेवं। तस्मात् जअबकोणतअबकोणौ तुल्यौ स्याताम् । इदं बाँधितम् । कुतः । एककोणस्य द्वितीयकोणखण्डत्वात् ॥

१ °भुजकोणी A. B. २ सिद्धम् । A. B. ३ °स्तत्रेदं दूषणम् । कृतः D. K. तदेवमुपपन्नम् । B. ४ A. B. omit the portion from पुनः to स्थितावेव. ५ इदमतुपपन्नम्. A. B.

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बवं दहतुल्यं कार्यम् । ज-वरेला च कार्या। एवं तत्र जवबत्रि-भुजं झदहत्रिभुजं चैते तुल्ये स्या-ताम् । जवबकोणझदहकोणावपि

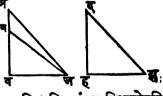


तुल्यौ स्याताम् । पुनर्जअबकोणस्तु **झदहको**णतुल्यः स्थितः । तसा-ज्जवबकोणजअवकोणौ तुल्यौ भविष्यतः । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम्।

तत्र यदि अबरेला दहरेलोपरि कियते तदा अजमुजो दशमु-

जोपरि स्थास्यति बजमुजश्च हझमु-जोपरि स्थास्यति । यतः अकोणो दकोणतुल्यः कल्पितः बकोणश्च हकोणतुल्यः अबं दहतुल्यं च कल्पि-तमेवास्ति । एवं तत्र जकोणो झकोणे



तमेवास्ति। एवं तत्र जकोणो झकोणे स्थास्यति। त्रिभुजं च त्रिभुजोपरि स्थास्यति।

पुनर्यदि बजमुजो झहमुजतुल्यः कल्प्यः बकोणो हकोणोपिर स्थाप्यः अबरेला हदरेलायां स्थाप्या तदा जिन्हं झिनिहे पितिष्यति । तदा दकोणः अकोणोपिर स्थास्यति । यदि न स्थास्यति तदाऽन्यिसिश्चिहे पितष्यति । यथा विनिहे पिततस्तदा जवबकोणो जअबकोणतुल्यो मिष्यति । इदमनुपपन्नम् । तसात् बकोणो हकोणे अकोणो दकोणे च स्थास्यति । तदा द्वौ त्रिमुजौ समानौ जातौ । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

## अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयोरन्यरेखायां संपातः कृतः तत्रैककोणो द्वितीयदिक्संबन्धिकोणश्चेतौ तुल्यौ यदि भवतः तदा रेखा-द्वयं समानान्तरालकं भवति ।

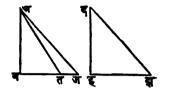
<sup>9</sup> B. inserts एवं अजद्शयोस्तुस्यत्वकल्पनेऽपि सिध्यति after इदम- नुपपन्नम्.

# अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र एकस्य त्रिभुजस्य कोणद्वयमेको भुजश्चान्यस्य त्रिभु-जस्य कोणद्वयेनैकभुजेन च समानश्चेच्छेषो भुंजौ शेषकोणश्च तुल्यावेव भविष्यतः क्षेत्रं क्षेत्रसमानं च भविष्यति ।

यथा अवजित्रभुजे दहझत्रिभुजे च अकोणो दकोणतुल्यः। बको-

णश्च हकोणतुत्यः। अवभुजदहभुजो च तुत्यो कल्पितो। अथवा वज्रभुज-हझभुजो च तुत्यो कल्पितो। अथवा अजभुजदझभुजो च तुत्यो कल्पितो।



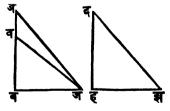
यदि अवमुजदृह्मुजो तुत्यो कल्पितो तन्न बज्ञभुजहृझ्भुजो यदा समानो स्रास्तदास्माकमभीष्टमेव स्याद् । यदि तुत्यो न भवतस्तदे-दमनुपपन्नम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बतं इझतुल्यं कार्यम् । तअरेखा च कार्या । एवं अतबत्रि-भुजं दझहत्रिभुजं च तुल्ये भवतः । पुनः तअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ भविष्यतः। पुनर्जअबकोणझदहकोणौ तुल्यौ स्थितावेवं। तस्मात् जअबकोणतअबकोणौ तुल्यौ स्याताम् । इदं बाँधितम् । कुतः । एककोणस्य द्वितीयकोणखण्डत्वात् ॥

अथ बजहझभुजौ यदि तुल्यौ भवतस्तदा बअभुजहद्भुजौ तुल्यौ

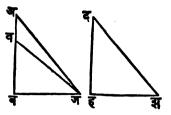
भवतः वा अतुल्यौ स्तः । तत्र यदि तुल्यौ तदास्माकमभीष्टमेव सिद्धम् । यद्यतुल्यौ तत्रेदं दूषणम् ।



९ ॰ अजकोणी A. B. २ सिद्धम् । A. B. ३ ॰ स्तत्रेदं द्षणम् । कृतः D. K. तदेवसुपपन्नम् । B. ४ A. B. omit the portion from पुनः to स्थितावेव. ५ इदमनुपपन्नम्. A. B.

#### अत्रोपपत्तिः ।

तत्र बवं दहतुल्यं कार्यम् । ज-वरेसा च कार्या । एवं तत्र जवबित्र-मुजं झदहत्रिमुजं चैते तुल्ये स्या-ताम् । जवबकोणझदहकोणाविप

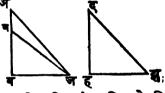


तुल्यौ स्याताम् । पुनर्जअबकोणस्तु झदहकोणतुल्यः स्थितः । तसा-ज्जवबकोणजअवकोणौ तुल्यौ भविष्यतः । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र यदि अबरेखा दहरेखोपरि कियते तदा अजमुजो दशमु-

जोपरि स्थास्यति बजमुजश्च हझ्मु-जोपरि स्थास्यति । यतः अकोणो दकोणतुल्यः कल्पितः बकोणश्च हकोणतुल्यः अबं दहतुल्यं च कल्पि-तमेवास्ति । एवं तत्र जकोणो सकोणे



तमेवास्ति। एवं तत्र जकोणो झकोणे स्थास्यति। त्रिभुजं च त्रिभुजोपरि स्थास्यति।

पुनर्यदि बजमुजो झहमुजतुल्यः कल्प्यः बकोणो हकोणोपिर स्थाप्यः अबरेला हदरेलायां स्थाप्या तदा जिन्हं झिनिहे पतिष्यति । तदा दकोणः अकोणोपिर स्थास्यति । यदि न स्थास्यति तदाऽन्यसिश्चिहे पतिष्यति । यथा वनिहे पतितस्तदा जवबकोणो जअबकोणतुल्यो मविष्यति । इदमनुपपन्नम् । तसात् बकोणो हकोणे अकोणो दकोणे च स्थास्यति । तदा द्वौ त्रिमुजौ समानौ जातौ । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

## अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयोरन्यरेखायां संपातः कृतः तत्रैककोणो द्वितीयदिक्संबन्धिकोणश्चेतौ तुल्यौ यदि भवतः तदा रेखा-द्वयं समानान्तरालकं भवति ।

<sup>9</sup> B. inserts एवं अजव्झयोस्तुस्यत्वकल्पनेऽपि सिध्यति after इदमनुपपन्नम्.

यथा अबरेखायां जदरेखायां इझरेखा संपातं करोति। तत्र अ-

हझकोणो दझहकोणेन स-मानो यदि जातस्तदा अब-रेखा जदरेखा च समाना-न्तरा भवति ।



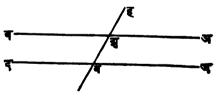
यि च रेखे समानान्तरे न भवतस्तदा उभे रेखे बर्दिते विचन्हें मिलिप्यतः । तत्र वहझत्रिमुजं भविष्यति । एवं त्रिमुजाद्वहिस्थः अहझकोणस्त्रिमुजान्तर्गतः हझवकोणश्चेतौ तुल्यौ स्याताम् । इदमनु-पपन्नम् । तस्मादेखाद्वयं समानान्तरकं भवतीति सिद्धम् ॥

## अथाष्टाविशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयेनान्या तृतीया रेखा संपातं करोति तदा बहि-र्गतकोणोऽन्तर्गतद्वितीयरेखासमीपस्थकोणसमो भवति वान्त-र्गतैकदिकोणद्वययोगः समकोणद्वयसमानो भवति तदा रे-खाद्वयं समानान्तरं स्यात्।

यथा अबरेखया जदरेखया च हझवरेखा संपातं करोति । तत्र हझ-

बकोणो बहिर्गतः स्वद्को-णोऽन्तर्गतश्च समानौ कल्पि-तौ । पुनर्बस्वकोणस्वद-कोणौ युक्तौ द्वाभ्यां समको-



णाभ्यां समानौ कल्पितौ । तदा अवरेखा जदरेखासमानान्तरा भ-विष्यति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

तत्र ह्झबकोणः अझवकोणसमानोऽस्ति । झवदकोणस्यापि स-मानः । अझवकोणझवदकोणावपि समानौ । तदा अबरेखा जद-रेखासमानान्तरा जाता । पुनरपि बझवकोणअझवकोणयोयोंगः द्वयोः समकोणयोः समानोऽस्ति । बझवकोणझवदकोणावपि द्वयोः समकोणयोः समानौ । तस्मात् अझवकोणझवदकोणौ समानौ जातौ । अबरेखाजदरेखे च समानान्तरे जाते। इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

### अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

अस्योपपन्तिरष्टभिः क्षेत्रैज्ञीयते तत्प्रथमक्षेत्रं निरूप्यते ।

एकाऽभीष्टरेखा कार्या। तदुपर्यभीष्टं चिहं कार्यम्। त-स्माद्रेखापर्यन्तमभीष्टा रेखा नेयाः तासु या लम्बरेखा सा सर्व-रेखाभ्यो न्यूना भवति।

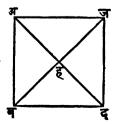
यथा अचिहं बजरेला च कल्पिता । अचिहात् अबल्म्बश्च कृतः। अयं लम्बः सर्वरेलाभ्यो न्यूनोऽस्ति। अत्रोपपत्तिः ।

अनिहात् अजरेला कार्या । तत्र अवजित्र- व जे मुजं जातम् । अवजकोणश्च समकोणो जातः । अजवकोणो न्यूनको-णोऽस्ति । अवभुजश्च अजभुजान्यूनोऽस्ति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

## अथ द्वितीयक्षेत्रम्।

तत्रैकस्यां रेखायां यदि लम्बद्धयं समानं भवति तदा तयो-मेस्तकलग्नाऽन्या रेखा कार्या। एवमत्र लम्बरेखासंपातजनितौ कोणौ परस्परं समानौ भवतः।

यथा समानौ अवलम्बजदलम्बौ बदरेखायां म् पतितौ । तन्मस्तकलमा अजरेखा कृता । तत्र कोणद्वयं समुत्पन्नम् । तत्र बआजकोणदजअ-कोणौ समानौ भविष्यतः ।



#### अत्रोपपत्तिः ।

अदरेसा बजरेसा च कार्या । अनयोईचिद्दे संपातो जातः । एवं अबदत्रिमुजे अबमुजः बदमुजः अबदको- अ

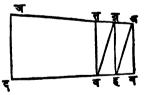
अबदात्रभुज अबभुजः बद्भुजः अबद्काणश्च द्वितीयत्रिभुजस्य जद्बस्य जद्भुजद्बभुजजद्बकोणैः समानः । अद्भुजबजभुजौ
च समानौ । अद्बकोणजबद्कोणावपि स-

मानौ जातौ। एवं हबद्त्रिभुजे हद्बकोणह- में द् बद्कोणो समानौ। तर्हि बह्भुजद्हभुजौ च समानौ जातौ। पुनः अहभुजजहभुजौ च समानौ जातौ। तस्माद् अहजित्रभुजे अह-भुजः हजभुजश्च समानौ जातौ। पुनः हअजकोणहज्जअकोणश्चेता-विष समानौ जातौ। दअबकोणबजदकोणौ पूर्व समानौ स्थितौ। तस्मात् बअजकोणदजअकोणौ समानौ जाताविति सिद्धम्। इद-मेवास्माकमभीष्टम्॥

## अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायां लम्बद्धयं समानं भवति तदा तयोर्मस्तक-लग्नान्या रेखा कार्या एवं तयोर्लम्बरेखान्यरेखासंपातजनिती कोणौ समकोणौ भविष्यतः।

यथा दबरेखायां अबरेखा जदरेखा च लम्बी जाती । अजरेखा च कृता । तत्र बअजकोणदजअकोणी समानावुत्पनी समकोणी च जाती ।



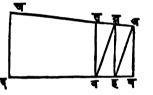
कुतः।

यदि द्वौ समकोणी न भवतः तदोभाविधककोणी अथवा न्यून-कोणौ भविष्यतः। तत्र यद्यधिककोणौ तदा अचिहात् अहलम्बः

<sup>9</sup> D. and A. omit अन्यरेखा. २ तदा न्यूनाधिको भविष्यतः । D.

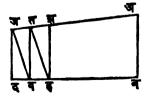
अजरेलायां नेयः । अयं लम्बः अबजदरेलयोरन्तराले पतिष्यति । तदा अइदकोणः अबहित्रभुजस्य बहिर्गतः स्यात् । अयं अबहिकोणादिषको जातः । अबहिकोणश्च समकोणोऽस्ति । तस्मात् अहदकोणः अधिककोणो जातः । पुनर्हिचिहात् इझलम्बो हदरेलायां नेयः । अयं लम्बः अहजदरेलयोरन्तराले पतिष्यति । तत्र हझजकोणोऽप्यधिककोणो भविष्यति । पुनर्झिचिहात् झवलम्बः झजरेलोपिर कार्यः वचिहात् वतलम्बश्च वदरेलायां कार्यः । अनेनैव प्रकारेणान्ये लम्बा
अपि कार्याः । अझतचिह्नेम्यो बदरेलायां निःसता एते लम्बाः अबझहतवसंज्ञका ज्ञेयाः । एते पूर्वस्मादुत्तरोत्तरमिका भवन्ति । सर्वेभ्यो

न्यूनः अबलम्बः । कुतः । यतो अबह-त्रिमुजे बकोणः समकोणोऽस्ति । हको-णश्च न्यूनकोणोऽस्ति । अबमुजश्च अह-मुजाक्यूनः । एवं अहझत्रिमुजे अः सम- ९

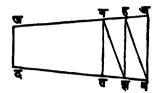


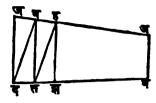
कोणोऽस्ति । झः न्यूनकोणश्चास्ति । अह्भुजो ह्झ्मुजान्यूनो जातः । एवं ह्झ्मुजो झवभुजान्यूनो जातः। झवभुजोऽपि वतभुजान्यूनः। अन्वभुजः अह्भुजान्यूनोऽस्ति । अह्मुजो ह्झ्मान्यूनः । पुनई्झ्मुजो झवभुजान्यूनः। इत्यं रेखा उत्तरोत्तरमिका भवन्ति । अजरेखाया बदरेखायाः सकाशादन्तरं जदित्रयिकं भवति अदित्यन्तरं न्यूनं भवति।

अय च दजअकोणोऽप्यधिककोणोऽस्ति।
एवं अजरेसायाः बदरेसायाः सकाशादन्तरं अदिश्यधिकं भवति। प्रथमं साधितं
अदिश्यन्तरं स्वल्पमस्तीत्यनुपपन्नम्। विलक्षणत्वात्॥



यदि च अजकोणौ न्यूनकोणौ भवतः तदापि पूर्वोक्तप्रकारेण लम्बाः





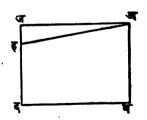
कार्याः । अजरेलायां बनिहाल्लम्बस्यारम्भः कार्यः । एते लम्बा अब-जदरेलान्तर्गता भवन्ति । ते च अबहृझवतसंज्ञा उत्तरोत्तरं न्यूना एव भवन्ति । अजरेला जदिशि बदरेलायाः निकटे भवति अदिशि दूर-स्थिता च भवति । पुनर्दचिह्वाल्लम्बाः कार्याः । एवं पूर्वभकारेण अजरेला अदिशि बदरेलाया निकटे भवति जदिशि दूरस्थिता च भवति । एव-मेकरेला एकस्यां दिशि दूरस्थिता भवति तस्यामेव च निकटस्थिता भव-तीत्यनुपपनम् । विलक्षणत्वात् । तस्मादुमी अजकोणी समकोणी भवत इति सिद्धम् । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

# अथ चतुर्थक्षेत्रम् ।

तत्र समकोणस्य चतुर्भुजस्य परस्परसन्मुखं भुजद्वयं स-

यथा अवजदसमकोणचतुर्भुजे अवभुजजद्भुजी तुल्यौ स्तः।

यदि च समी न स्तस्तदा एको भुजोऽधिकः स्यात्।स जद्भुजः कल्पितः। अथ द्ज-रेखायां अवतुल्यं दृहं पृथकार्यम्। अह-रेखा च कार्या। एवं तत्र वअहकोणदृहअ-कोणी समकोणी भवतः। यतो अवहदी



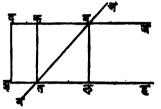
लम्बी समानी स्तः । बञ्जजकोणद्जञ्जकोणी समकोणी कल्पिती । तसात् बञ्जजकोणो बञ्जहकोणश्चेती समानी जाती । सञ्जहकोणश्च बञ्जजकोणस्य खण्डमस्ति । इदमनुपपन्नम् । एवमेव अजदकोणः अजहत्रिभुजान्तर्गतः अहदकोणश्च त्रिभु-जाह्रहिर्गतः एतावि समानौ स्माताम् । इदमप्यनुपपन्नम् । तसात् अवजदभुजावेव समानावित्युपपन्नम् । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

## अथ पश्चमं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायां लम्बद्धयं कार्यमन्या रेखा लम्बद्धये यथा संपातं करोति तथा कार्या तत्रोत्पभं प्रतिलम्बं कोणचतुष्टयं तत्र लम्बस्यैकदिश्युत्पभः कोणः द्वितीयलम्बस्यान्यदिश्यु-त्पभेन कोणेन समः स्यादेवमेकलम्बस्य बहिर्गतकोणो द्विती-यलम्बस्यान्तर्गतकोणेन च समः पुनरेकलम्बस्यान्तर्गतकोणो द्वितीयलम्बस्यान्तर्गतकोणश्चानयोयोगः समकोणद्वयेन स-मानः ।

यथा झदरेखायां इझजदलम्बी पतितौ । तत्र अबरेखया संपातः

कृतः । पुनर्वतिचिद्वयोद्देवतकोणहत्तव-कोणौ समानौ स्तः। अवजकोणो बहिः-स्यः अतहकोणोऽन्तर्गतश्चेतौ समानौ स्तः। हतवकोणजवतकोणयोर्योगः स-मकोणद्वयेन समानोऽस्ति ।



#### अत्रोपपत्तिः ।

तत्र तझरेलावदरेले यदि समे तदा तयोः कोणचतुष्टयं सम-कोणमेव स्यात् । तदास्माकमभीष्टसिद्धिरेव ।

यदि तझरेला वदरेला समाना न भवति किं तु वदमिषकं स्यात् तदा दवरेलायां झततुल्या दकरेला पृथकार्या । कतरेला च कार्या । कवतुल्या तल्लरेला पृथकार्या । वल्लरेला कार्या । एवं तत्र वलतक-समकोणं चतुर्भुजं जातम् । वलतित्रमुजे वलभुजो लतभुजो लको-णश्च वकतित्रमुजस्थेन तकमुजेन कवमुजेन ककोणेन च समानः । पुनः कवतकोणः वतलकोणश्चेतौ समानौ जातौ । एवं तवककोणः अवजकोणेन समः । अवजकोणवतहकोणौ समानौ । पुनः जवत-कोणअवजकोणयोयोंगो द्वयोः समकोणयोः समानः । पुनः जवत-कोणो वतहकोणश्च एतावपि द्वयोः समकोणयोः समानी जातौ । इद-मेवासाकमभीष्टम् ।

तदेवं सिद्धं या रेखा लम्बद्वयोर्मध्ये एकसिल्लम्बे लम्बरूपा भवति सा द्वितीये लम्बेऽपि लम्बरूपा भवत्येव ॥

### अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥

यत्र रेखाद्वयसंपातेन समुत्पन्नकोणचतुष्टयं तद्यदि सम-कोणं न भवति तदैकरेखोपरिस्थापितलम्बो न्यूनकोणदिशि द्वितीयरेखया संपातं करिष्यति ।

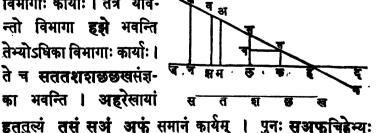
यथा अबरेखाजदरेखासंपातो हचिहे जातः । अहजकोणश्च न्यूनकोणो जातः । जहवकोणोऽधिककोणो जातः । तत्र जदरेखायां **अव**लम्बो निष्काञ्यः । अयं लम्बः अदिशि अबरेखायां संपातं करिष्यति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

अहरेलायां तिचहं कार्यम् । तकलम्बो जदे कार्यः । अयं लम्बो झहचिह्नयोर्मध्ये पतिष्यति वा झचिह्ने पतिष्यति वा झचिहाद्वहिः पतिष्यतीति विचार्यम् ।

यदि झहमध्ये पतति तदाऽन्या रेखा कार्या। तस्या हकतुल्या

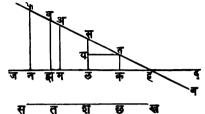
विभागाः कार्याः । तत्र याव-न्तो विभागा हुझे भवन्ति तेभ्योऽधिका विभागाः कार्याः। ते च सततशशास्त्रस्यसंज्ञ-का भवन्ति । अहरेखायां



Digitized by Google

सललम्बअमलम्बफनलम्बा जदरेखायां कार्याः । तचिहात् तयलम्बः सललम्बोपरि कार्यः । एवं हतकत्रिभुजे हतककोणः तसयकोणश्चेतौ

कोणी समानी । पुनः हकत-कोणतयसकोणी समानी । हत्तभुजः तसभुजेन समानः । यतळकावेती भुजी समानी । छकः हकश्चेतावपि समानी



जातौ । एवं लमः मनश्चेतौ समानौ जातौ । एवं हनस्य यावन्तो विभागाः परस्परं समाना भवन्ति खसविभागतुल्याश्चेव भवन्ति । पुनः हनरेलाखसरेले च समाने । खसमिषकं हम्नात् । हनमिषकं हम्नात् । पुनः फनलम्बो झहचिहाद्वहिर्जातः । वझलम्बः फनह-त्रिमुजान्तर्जातः । पुनः वझलम्बो विद्वतः फह्मुजे संपातं करोति । पुनः अवरेलायाः संपातं करिष्यति । इदमेवासाकमभीष्टम् ॥

पुनः तकलम्बो झिचिहे यदा भविष्यति तदा वझतकावेकत्र भवि-ष्यतः । तदा संपातोऽपि भविष्यत्येव । यदि तकलम्बो झहचिहाद्ध-हिर्भविष्यति तदा वझलम्बः तकहत्रिभुजान्तर्भविष्यति नियमेन च संपातं करिष्यतीति । इदमेवासाकमभीष्टम् ॥

## अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

तत्र द्वयो रेखयोस्तृतीया रेखा संपातं यदि करोति तदा-न्तर्गतौ द्वौ कोणावेकदिको द्वयोस्समकोणयोर्यदा न्यूनौ भवतस्तदा रेखाद्वयं तस्यामेव दिशि संपातं करिष्यति।

यथा अबरेखायां जदरेखायां ह्झरेखया संपातः कृतोऽिस्त । तत्र अह्झकोणोऽन्तर्गत एकदिकेको जझहकोणोऽन्तर्गत तिहक एव द्वितीयश्चेतौ द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोर्न्यूनौ स्तः । अतः अबरेखा जदरेखाया अजदिशि संपातं करिष्यति ।

<sup>9</sup> A. B. K. omit हनमधिकं हज्ञात्।

#### अत्रोपपत्तिः ।

कथितकोणयोर्मध्ये एकः कोणः समकोणोऽस्ति वाऽधिककोणोऽस्ति वा न्यूनकोणोऽस्ति । यद्येकः समकोणस्तदा द्वितीयो न्यूनकोणः स्यात्।

तत्र रेखाद्वयं कोणदिश्यवश्यं मिलिष्यति । यद्येककोणोऽधिककोणस्स च अहझकोणः किल्पतः । अ

पुनः हिचिन्हात् अबोपिर हवल- ज

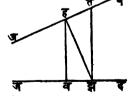
स्वोदयः श्रविद्याच अबोपिर शतलम्बोदयः कार्यः । एवं तझलम्बहवलम्बयोईझरेखया संपातः कृतः ।

तदा वहझकोणत्झहकोणौ समानौ भवतः । अहझकोणहृझजकोणौ समकोणद्वयाभ्यां न्यूनौ स्तः । पुनः अहवकोणः समकोणोऽस्ति । तेन वहझकोणहृझवकोणौ मिलितौ चैकसात्समकोणाक्यूनौ भविष्यतः ।

तदा हझतकोणो हुझवकोणश्चेकसात्समकोणाक्यूनौ जातः । पुनः अत्झकोणः समकोणोऽस्ति । तेन वहझकोणः समकोणोऽस्ति । तेन वहझकोणः समकोणोऽस्ति । तेन वहझकोणः समकोणोऽस्ति । पुनः अत्मक्षकोणः समकोणोऽस्ति । पुनः अत्मकोणः समकोणोऽस्ति । पुनः अत्मकोणः समकोणोऽस्ति । पुनः अत्मकोणः समकोणोऽस्ति । पुनः

पुनर्यदि द्वौ कोणौ न्यूनौ भवतस्तदा इचिहात् जदरेस्रोपरि

हवल्रम्बोदयः झचिद्वात् जदरेखोपरि झतलम्बः कार्यः। तत्र जझहकोणो झहवकोणश्चैतयोर्योगः जझतकोणस-मोऽस्ति। यतो जझतकोणः समको-

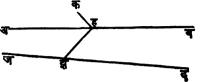


णोऽस्ति । पुनः जझहकोणझहवकोणयोर्योगः एकः समकोणः । एतौ कोणौ अहझकोणजझहकोणयोः शोधितौ । शेषं अहवकोणो न्यूनकोणो जातः। जवहकोणः समकोणश्चावशिष्टोऽस्ति । तेन अबरेखा-जदरेखायोगः अजदिशि भविष्यति ।

#### प्रकारान्तरम् ।

यदि द्रौ कोणी अहझ जझ हसंजी न्यूनी तदा हचिहात् हझ-

रेस्रोपरि हक्करुम्बोदयः । तदा कहञ्जकोणः समकोणः स्यात् हञ्जकोणश्च न्यून-



कोणः स्यात् । तदा हकरेखा झजरेखयोर्योगो जदिशि भविष्यति । पुनः हअरेखा झजरेखयोर्योगोऽपि जदिशि भविष्यति ॥

अथ सप्तमक्षेत्रस्य प्रकारान्तरमष्टभिः क्षेत्रैरुच्यते । तत्र पञ्चक्षेत्राणि पूर्वोक्तान्येव ज्ञेयानि । षष्टमुच्यते ।

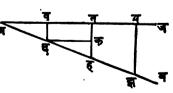
तत्र न्यूनकोणसंबन्धैकभुजस्य समाना अभीष्टा विभागाः कार्याः । तत्र चिह्नानि कार्याणि । चिह्नेम्यस्तत्कोणसंबन्धि-द्वितीयभुजे लम्बाः कार्याः । एते लम्बा द्वितीयभुजस्यापि स-माना विभागाः करिष्यन्ति ।

यथा बआजकोणो न्यूनकोणोऽस्ति । तस्य अबभुजस्य अददह-ह्झविभागाः समानाः कृताः । पुनः दह्झचिद्देभ्यो अजभुजोपरि दबहतझयल्प्या निष्कासिताः । एतैर्लभ्यैः अजभुजस्य अववततय-संज्ञा विभागाः समानाः कृताः ।

अत्रोपपत्तिः ।

तत्र हृदरेखायाः दिचेद्दोपरि हृदककोणः अकोणसमानः कृतः।

दकरेखया च हतरेखायाः कचिहे संपातः कृतः। पुनः अवदत्रिभुजे में दकहत्रिभुजे अकोणो हदककोणे-न समः। अदवकोणश्च दहकको-



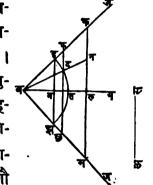
णेन समः। अद्भुजश्च दह्भुजेन समः। तस्मात् अवभुजो दक्कभुजेन समानो भविष्यति । अथ अवद्कोणः समकोणो यद्यस्ति दकह्को-णेन तुल्योऽप्यस्ति तदा दकहकोणोऽपि समकोणो जातः । तेन दक- तवसमकोणचतुर्भुजं जातम् । दकभुजो वतभुजेन तुल्यो जातः । अवभुजोऽपि वतभुजेन तुल्यो जातः । एवं तयभुजः अवभुजेन तुल्यो मविष्यति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

### अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

तत्रैककोणस्य भुजद्वयान्तश्चिहं यदा भवति तदा तिच-ह्रस्पृष्टा रेखा भुजद्वयसमानसंलैग्ना कर्त्तु शक्यते ।

यथा दिचिहं अबजकोणस्य अबबजभुजयोर्मध्येऽस्ति । तत्र

बकेन्द्रं कृत्वा बद् तुत्येनार्द्धव्यासेन हदझ-चापं कार्यम्। हझरेखा च कार्या। पुनः हब-झकोणस्य बवरेखया विभागद्वयं कार्यम्। द्वौ विभागौ न्यूनकोणौ भवतः। हबवित्रभु-जे झबवित्रभुजे च हबभुजो बवभुजो ह-बवकोणो झबभुजेन बवभुजेन झबवकोणे-न च समानः। पुनः बवहकोणो बवझकोण-श्रैतौ समानौ जातौ। तेनैतौ कोणौ समकोणौ

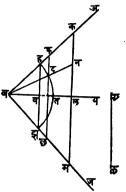


जातौ।पुनः बवरेला यचिद्वपर्यन्तं कार्या। इयं रेला हदझचापे तिचिद्वे संपातं करिष्यति। बवरेला च द्वचादिगुणिता तथा विद्वता कार्या यथा बवतरेलयाऽधिका भवति। सा रेला अससंज्ञा अन्यत्र कल्प्या।पुनः बअभुजे एकादिगुणितबहतुल्या विभागाः कार्याः। ते च बहहक-संज्ञाः कल्पिताः। पुनः हकचिद्वाभ्यां बयरेलोपरि हवलम्बः कल्लल्म्बश्च कार्यः। एतौ लम्बौ बयरेलायाः बववलविभागौ समानौ करिष्यतः। एतौ विभागौ असविभागाभ्यां समानौ जातौ। तेनैतौ मिल्लेतौ विभागौ बतादिधकौ भविष्यतः। तसात् कल्ललम्बो बतरेलायाः

९ • समानां लग्ना D. A. K. omit भुजद्वयसमानसंलग्ना. २ ज्ञेया for अन्यत्र कल्प्या K.

बहिः पतिष्यति । पुनः बजभुजात् बकतुल्यं बमं पृथकार्यम् । लम-

रेखा कार्या । एवं बकलत्रिभुजे बमल-त्रिभुने कबभुनो बलभुनः कबलकोणश्च मब्भजेन बलभजेन मबलकोणेन समा-नोऽस्तीति । बलककोणबलमकोणौ स-मानौ भविष्यतः । पुनः बलक्कोणः समकोणोऽस्ति । बैलमकोणोऽपि समको-णोऽस्ति । तेन कलमरेखा सरलाऽस्ति । पुनः बदरेखा नपर्यन्तं कार्या। दचिह्नोपरि

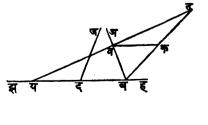


नदरेखायाः दनलकोणेन समः नदफकोणः कार्यः । तदा फद-कमरेखे समानान्तरे जाते । पुनः फदरेखा बैकनत्रिभुजाद्यथा बहिर्गता भविष्यति तथा वर्द्धिता कार्या । बक्सजस्य फचिहे बम्भजे छचिह्ने च संपातं करिष्यति । फदछरेखा च दचिह्नगता अव-बज्ञभुजयोः संलमा जाता । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

### अथाष्ट्रमक्षेत्रम् ।

तत्र रेखाद्वयोपर्येका रेखा यदा संपातं करोति तदा तदन्त-र्गतकोणद्वययोरेकदिक्कयोर्योगो यदि द्वयोः समकोणयो-र्न्यूनो भवति तदा रेखाद्वयं तिहत्येव संपातं करिष्यति ।

यथा अबजदरेखे तद्वपरि तृतीया रेखा बदसंज्ञा संपातं करोति। तत्र अबदकोणी जदबकोण-श्चानयोर्योगो द्वयोः समकोण-योर्न्युनोऽस्तीति कल्पितम् । तदा रेखाद्रयं अजिदिश्येव सं- इ पातं करिष्यति ॥

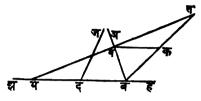


omitted in D. A. B. K have wan.

#### अत्रोपपत्तिः ।

बदरेला उभयत्र हिचह्मचिहपर्यन्तं दीर्घा कार्या । बआरे-

स्तायां बदतुल्या बवरेला पृथ-कार्या। तत्र अबदकोणो जद-बकोणयुक्तो द्वयोः समकोणयो-र्न्यूनोऽस्ति । अबहकोणयुक्तो झार्य



द्वयोः समकोणयोः समानः । तेन अबह्कोणो जदबकोणादिधिकः । पुनर्बिच्होपिर बवरेखायाः सकाशात् जदबकोणतुल्यः वबतकोणः कार्यः। तबब्धारेखे बकोणसंबिन्धभुजे ये तयोः संपातं कुर्वती विच-ह्याता तबयरेखा कार्या । ततः तबबकोणो वबदकोणादिधिकः स्यात् । पुनर्विच्होपिर अबदकोणतुल्यो बवककोणः कार्यः । तत्र बकरेखा तथा विद्वता कार्या यथा तबरेखायां कचिहोपिर संपातं करोति । तदनन्तरं अबजदरेखासंपातो भविष्यति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

वबरेखायां बदरेखां स्थापयेत् तदा दजरेखा बकरेखायां स्था-स्यति । बअरेखा वकरेखायां च पतिष्यति । तस्मात् अबरेखा जदरे-खयोः संपातो भविष्यति ॥ इत्यष्टौ क्षेत्राणि समाप्तानि ॥

# अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥

समानान्तररेखयोर्यदि तृतीया रेखा संपातं करोति तन्नै-ककोणोन्तर्गतोऽभीष्टदिश्युत्पन्नो द्वितीयरेखान्तर्गतकोणश्च द्वितीयदिकः एतौ समानौ भवतः। एवं बहिर्गतकोणो द्वि-तीयरेखाया अन्तर्गतकोणेन समानो भवति। एवमेकदिक-मन्तर्गतकोणद्वयं द्वयोः समकोणयोः समानं भवति।

Digitized by Google

यथा अबरेखायां जदरेखायां ह्झवरेखया संपातः कृतोऽस्ति ।
तत्र अझवकोणदवझकोणश्चेतौ समी कोणौ भविष्यतः । अथ यदि
समानौ न भविष्यतः तदा अझवकोणोऽधिककोणः कल्पितः। पुनः बझवकोणस्य अझवकोणेन योगः ज

तत्र प्रथमयोगः द्वयोः समकोणयोः समानः द्वितीययोगादिधको भ-वित । तदा द्वितीययोगः द्वयोः समकोणयोर्न्यूनो जातः । यथा अब-जदरेखयोः इझवरेखया संपातः कृतः तत्र बझवकोणदवझकोण-योयोगो द्वयोः समकोणयोर्न्यूनो जातखदा अबरेखाजदरेखे बददिशि मिलिष्यतः ।

पुनः हझबकोणो हवदकोणेन समानोऽस्ति । कुतः । हझबको-णअझवकोणयोः समानत्वात् ।

पुनः बझवकोणदवझकोणयोर्योगो द्वयोः समकोणयोः समानो-ऽस्ति । कुतः । बझवकोणअझवकोणयोगस्य द्वयोः समकोणयोः समानत्वात् । पुनः दवझकोणअझवकोणौ समानौ जातौ । इदमे-वासाकिमिष्टम् ॥

## अथ त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यावत्यो रेखा एकरेखायाः समानान्तरा भवन्ति ता रेखाः परस्परं समानान्तरा एव भविष्यन्ति ।

यथा अबरेखा जदरेखा च हझरेखायाः समानान्तरास्ति तदा अब-रेखा जदरेखा च परस्परं समानान्तरा मविष्यति । <u>इ</u> <u>म</u> अत्रोपपत्तिः । <u>ज</u> <u>प</u> वतकरेखया तिस्रणां रेखाणां संपातः

<sup>1</sup> This sentence is omitted in A. B.



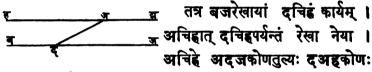
कृतः। तत्र अबरेखा हझरेखा च परस्परं	_	
समानान्तरास्ति तदा अवतकोणझत-		27
वकोणश्चेतौ समानौ भविष्यतः। पुनः	<u> </u>	त इ
जदरेला इझरेला च समानान्तरास्ति		<b>布</b>

तदा दकतकोणोऽन्तर्गतो झतवकोणो बहिर्गतश्चेतौ समानौ भवि-ष्यतः । तदा अवककोणदकवकोणौ समानौ जातौ । तदा अबरेखा जदरेखा परस्परं समानान्तरा जाता ॥ इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

# अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्राभीष्टरेखायाः कियदन्तरे चिह्नं कृत्वा तद्गतसमा-नान्तररेखा कर्षुं चिकीर्षितास्ति।

यथा बजरेलाया अचिह्रगता रेला समानान्तरा कर्चव्यास्ति ।



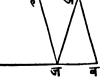
कार्यः । पुनर्हे अरेखा झपर्यन्तं नेया । तदा हझरेखा जबरेखायाः समानान्तरा जाता । इदमेवेष्टम् ॥

# अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्रेष्टत्रिभुजस्यैको भुजो वर्द्धनीयः पुनस्तत्रैव यो बहिः स्थितः कोणः स सन्मुखान्तर्गतकोणद्वययोगेन समानो भ-वति । अन्तर्गतकोणत्रययोगोऽपि द्वयोः समकोणयोः समानो भवति ।

यथा अबजित्रभुजे बजभुजो दपर्यन्तं वर्द्धितः तत्र अजदकोणो

बहिःस्थः बअकोणद्वययोगेन समानोऽस्ति। यतो जिचहात् बअरेखायाः समानान्तरा जहरेखा कार्या। तत्र अजहकोणो बअज-कोणन तुल्यो जातः। हजदकोणश्च बको- द



णेन तुल्यो जातः। तदा अजदकोणो बहिःस्थः बअकोणद्वययोगेन तुल्यो जातः।

पुनः अजदकोणः अजबकोणयुक्तो द्वयोः समकोणयोः समानोऽस्ति । तदान्तर्गतकोण- जययोगो द्वयोः समकोणयोः समानो जातः । द

पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र अचिहात् बदरेखायाः समानान्तरा अझरेखा कार्या । तदा झअबकोणो बको-णेन तुल्यो जातः। पुनः झअजकोणः अजद-कोणेन तुल्यो जातः । तदा अजदकोणः अबकोणयोस्त्रत्यो जातः ॥ इदमेवेष्टम् ॥



### अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं समानं समानान्तरं चास्ति तद्ययोः संल-ग्ना रेखा कार्या एवं द्वितीयाग्रयोः संलग्नरेखायास्तद्रेखाद्वयं समानं समानान्तरं भवति ।

यथा अबरेखाजदरेखे समाने समा- अ नान्तरे च स्तः । तदा तदमयोः अज-रेखाबदरेखे च कृते । एते रेखे समाने ब समानान्तरे च भविष्यतः ।

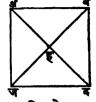
#### अत्रोपपत्तिः ।

बजरेला कार्य। तदा अबजित्रभुजे बजदित्रभुजे च अबभुजो बजमुजः अबजकोणश्च दजमुजो बजमुजो दजबकोणश्चेते यथा-क्रमेण समानाः स्युः। तदा अजमुजो बद्भुजेन समानो जातः। पुनः अजबकोणः दबजकोणश्चेतौ समानौ स्तः। ततः अजमुजो बद्दभुजेन समानान्तरो जातः। इदमेवास्माकमिष्टम्॥

### पुनः प्रकारान्तम् ।

अदरेखा बजरेखायां हचिहे संपातं यथा करोति तथा कार्या। तत्र अहबित्रभुजे जहदित्रभुजे च अहबकोणो

जहदकोणेन समानोऽस्ति । पुनः अबहकोणः दज-हकोणश्चेतौ समानौ स्तः । अबमुजो जदमुजसमा-नोऽस्ति । तदा अहमुजदहमुजौ समानौ जातौ ।



तदा बहुमुजजहमुजी च समानी जाती। पुनः अहजित्रमुजे बहु-दित्रमुजे च अहुमुजो हज्जमुजः अहजकोणश्च दहुमुजेन बहुमु-जेन बहुदुकोणेन च यथाक्रमं समानः। एवं अजमुजबद्मुजी समानी जाती। पुनः अजहकोणदबहुकोणी समानी जाती। तदा अजमुजो बदुमुजेन समानान्तरो जातः। इदमेवास्माकिमष्टम्॥

# अथ चतुस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यस्य चतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजाः समानान्तरा भवन्ति तस्य परस्परसन्मुखं भुजद्वयं समानं भवति तथा परस्परसन्मुखं कोणद्वयं च समानं भवति तत्कर्णश्च क्षेत्रस्य समानं भागद्वयं करोति।

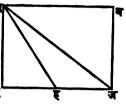
यथा अवजद्चतुर्भुजक्षेत्रस्य वद्कर्णः कल्पितः। अत्रोपपत्तिः।

अद्बकोणो जबद्कोणेन समः। पुनः अबद्कोणः जद्बकोणेन समः। एवं अद्बित्रभुजे जबद्ति-भुजे च अद्बकोणः जबद्कोणश्चे-तौ समानौ स्तः। पुनः अबद्कोणः जद्बकोणश्चेतौ समानौ जातौ।

बद्भुजश्चोभयोस्निभुजयोरेक एव । तर्हि अद्भुजबज्जभुजौ समानौ । अबभुजजद्भुजौ च समानौ । पुनः अकोणजकोणौ समानौ जातौ । अद्जकोणजबअकोणी च समानी। एवं द्वी त्रिभुजी समानी। तदा बद्दकर्णेन चतुर्भुजस्य भागद्वयं समानं कृतमित्युपपत्रम्॥

#### प्रकारान्तरम् ।

यदि अवभुजः जद्भुजेन समानो न स्यात् तर्हि जहमुजेन समानः स्यात् । तत्र अहरेला कार्या । एवं अहरेला वजरेलायाः समानान्तरा भविष्यति । पुनर्वजरेला ह



अद्देखायाः समानान्तरास्ति । तदा अहरेखा अद्देखा समानान्तरा जाता । इदं नाधितम् ।

अथानेन प्रकारेण अदरेखा बजरेखायाः समाना भवति ।

यदि बअद्कोणः बजद्कोणेन समानो न भवति तदा बअह्कोणो बजद्कोणेन समानः स्यात् । तत्र अजरेखा कार्या । तदा बअज-कोणह्जअकोणौ समानौ । तदा जअह्कोणः अजबकोणेन स-मानो जातः । जअद्कोणः अजबकोणेन समानोऽखि । इदमप्य-नुपपन्नम् ॥ एवं बकोणो द्कोणेन समानोऽखि । पुनः अद्जितिभुजं अबजित्रभुजेन समानम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथ पश्चित्रशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र चतुर्भुजक्षेत्रद्वयं समानान्तरभुजमेकस्यां भूमावेक-दिशि च भवति द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्ये च भवति तच-तुर्भुजद्वयं समानं भवति ।

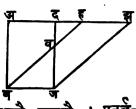
यथा अवजद चतुर्भुजं हवजझचतुर्भुजं चैते द्वे चतुर्भुजे अझ-रेलाबजरेलयोर्मध्ये बजरेलोपरि स्तः ते अ<u>द्</u>र

च समाने स्तः।

अत्रोपपत्तः।

अद्भुजः हश्भुजश्च बज्रभुजेन समा-

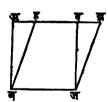
नोऽस्ति तदा अद्भुजः हश्भुजश्चेतौ समानौ जातौ । पुनर्दहरेखा अद्रे-खायां झहरेखायां च युक्ता कार्यो । तदा हअबत्रिभुजे झदजत्रिभुजे अहभुज-



झद्भुजी च समानी । पुनः अबभुजजद्भुजी समानी । पुनर्ब-अहकोणजद्भकोणी समानी । तदैते द्वे त्रिभुजे समाने जाते । पुनरनयोक्षिभुजयोः दवहत्रिभुजं दूरीिक्रयते वबजित्रभुजं च योज्यते तदा अबजद्चतुर्भुजं हबजझचतुर्भुजं चैते समाने भविष्यतः । इदमेवास्माकिमिष्टम् ॥

अधाऽसिन्क्षेत्रे हिन्हं अदाद्वहिः पतिष्यति तदा बहुजदौ संपातं करिष्यतः । अधवा हु-निहं दिन्हे पतिष्यति । अबअद्योर्भध्ये वा पतिष्यति । अनयोः प्रकारान्तरकृतक्षेत्रयोः प्रथ-मत्रिमुजे लघुत्रिभुजदूरीकरणं नास्ति त्रिभुज-योगः कर्त्तव्योऽस्ति । द्वितीयक्षेत्रे चतुर्भुजं युक्तं कार्यमेतावान् विशेषः ॥





# अथ षट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

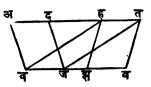
तत्र द्वे चतुर्भुजक्षेत्रे समानान्तरभुजे एकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्ये समानभूमिके यदा भवतस्तदा ते द्वे चतुर्भुजक्षेत्रे समाने भवतः।

यथा अवजदचतुर्भुजं ह्झवतचतुर्भुजं च अतववरेखयोर्मध्ये वजझवसमानभुजोपिर भवतस्ते च समाने क्र द ह त एव भवतः।

अस्योपपत्तिः ।

बहरेखा जतरेखा च कार्या। एते रेखे समाने समानान्तरे च भवि-

ष्यतः । कथम् । बजरेखाहतरेखे च समाने समानान्तरे च स्तः । पुनः अ-बजदचतुर्भुजं हबजतचतुर्भुजं चैते स-



माने स्तः।यतः अतरेखाबजरेखयोः समानान्तरयोर्मध्ये एकभुजोपरि तिष्ठतः । पुनर्ह्झवतचतुर्भुजं हबजतचतुर्भुजं चैते समाने । तदा अ-बजदचतुर्भुजं हझवतचतुर्भुजं चैते समाने जाते ॥ इदमेवासा-कमभीष्टम् ॥

### अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

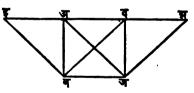
त्रिभुजद्वयमेकभुजोपर्येकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयो-र्मध्ये यदा भवति तदा तित्रभुजद्वयं समानं भवति ।

यथा अवजित्रभुजं दबजित्रभुजं च बजभुजोपरि अदबजस-मानान्तररेखयोर्मध्येऽस्तीति । तसात्रिमुजद्वयं समानं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

बिचहात् जअरेखायाः समानान्तरा बहरेखा कार्या। पुनर्जिचि-

हात् बदरेखायाः समानान्तरा जग्नरेखा कार्या । पुनः अद-रेखा दिगृद्धये तथा वर्दिता कार्या यथा निष्कासितरेखा-



द्वयसंपातं करोति । तदा हबजअचतुर्भुजं दबजझचतुर्भुजं च बज-मुजोपिर समानान्तरयोह्झरेखाबजरेखयोर्मध्ये तिष्ठति । तदैते द्वे चतुर्भुजे समाने जाते । अनयोर्द्धे द्वे त्रिभुजे समाने जाते । इद-मेनेष्टम् ॥

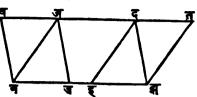
## अथाष्टत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

द्वे त्रिमुजे समानभुजद्वयोपर्येकदिशि द्वयोः समाना-न्तररेखयोर्मध्ये यदा स्यातां ते द्वे त्रिभुजे समाने एव भवतः। यथा अबजित्रभुजं दहझत्रिभुजं बजहझसमानभुजोपरि बझअ-

दसमानान्तररेखयोर्मध्येऽस्ति । तस्मात्ते समाने जाते ।

अत्रोपपत्तिः ।

बचिहात् जअरेखायाः स-



मानान्तरा बवरेखा कार्या । झिचिहात् हृदरेखायाः समानान्तरा झत-रेखा कार्या । अदरेखा दिग्द्रये विद्वता तथा कार्या यथा वतिचह्रयोः संपातं करोति । एवं बजअवचतुर्भुजं दहझतचतुर्भुजं वजहझस-मानभुजोपरि समानान्तररेखयोर्मध्येऽस्ति । तदेते चतुर्भुजे समाने जाते । तदैतयोरद्धं त्रिभुजे समाने भवतः । इदमेवेष्टम् ॥

## अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

त्रिमुजद्वयं समानमेकदिशि स्थितमेकमुजोपरि यदि भवति तिश्रमुजद्वयं द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्यवर्त्ति भविष्यति।

यथा अबजित्रभुजद्बजित्रभुजे बजभुजोपरि स्थिते । पुनः अदरे-

स्वा कार्या।सा बजरेसायाः समानान्तरा मु

यदि समानान्तरा न स्यात् तदा अहरेखा बजरेखासमानान्तरा स्यात्। हजरेखा कार्यो । तत्र हबजत्रिभुजं

अबजित्रभुजेन समानम् । अबजित्रभुजं दबजित्रभुजेन समानम् । तदा हबजित्रभुजं दबजित्रभुजेन समानं जातं खण्डस्य साम्यात् । इदमनुपपन्नम् । तस्मात् अदरेखा बजरेखायाः समानान्तरा जाता । इत्युपपन्नम् ॥

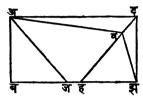
# अथ चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र समानं त्रिभुजद्वयमेकरेखायां समानभुजद्वयोपरि भवति तत्रिभुजद्वयं द्वयोः समानान्तररेखयोर्मध्यवर्ति भवति। यथा अबजित्रभुजं दह्झित्रिभुजं बज्जमुजह्झभुजयोरुपरि बझ-रेसायामस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अदरेला कार्या । इयं रेला बझरेलायाः समानान्तरास्ति । यदि

समानान्तरा न स्यात् तदा अवरेखा समा-नान्तरा स्यात् । वझरेखा कार्या । तदा वहस्रत्रिभुजं दहझत्रिभुजं चैते समाने स्यातां स्वखण्डस्य समत्वात् ।



इदमनुपपन्नम् ॥

### अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

चतुर्भुजं त्रिभुजं चैकदिश्येकभुजोपरिस्थितं द्वयोः समा-नान्तररेखयोर्मध्यवर्षि भवति तदा चतुर्भुजं त्रिभुजाद् द्विगुणं भवति ।

यथा अवजद्चतुर्भुजं हवजित्रमुजं वजभुजोपरि अहबजस-मानान्तररेखयोर्मध्यवर्त्यस्ति । तस्मात्रिभुजाद्विगुणं जातम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

अजरेसा कार्या । एवं अबजदचतुर्भुजं अबजित्रभुजाद्विगुणमस्ति।

पुनः अबजित्रिभुजं हबजित्रिभुजेन समान- भू मिता। तदा अवजदचतुर्भुजं हबजित्रिभु-जाह्रिगुणं जातम्।

चतुर्भुजं त्रिभुजं च द्वयोः समयोर्भुजयो- क्या जे रूपरि स्थितमेकदिशि द्वयोः समानान्तररेखयोर्भध्यवर्ति भवति तदापि चतुर्भुजं त्रिभुजाद्विगुणं भवति ॥

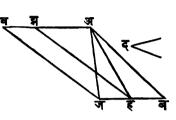
अथ द्विचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् । तत्रैकं त्रिभुजं ज्ञातमस्ति एककोणश्च ज्ञातोऽस्ति ताभ्यां

९ स्थातां च खण्डस्य समानत्वात् D.

तादृशचतुर्भुजिचिकीपीस्ति यस्य फलं ज्ञातित्रमुजफलसमं स्यात् यस्य च कोणः कल्पितकोणसदृशः स्यात् ।

यथा अत्र त्रिमुजं अबजं कोणो दसंज्ञश्चास्ति । तत्र बजमुजो

हिनिहेऽद्वितः कार्यः । अहरेला देया । हजरेलायां हिनिहोपरि द-कोणतुल्यः जहझकोणः कार्यः । अनिहात् बजरेलायाः समाना-न्तरा अवरेलाकार्या । इयं झिनिहे



संपातं करिष्यति । पुनर्जिचिहात् झहरेखायाः समानान्तरा जवरेखा कार्यो । इयं च अवरेखायां विचिह्ने संपातं करिष्यति । तदा झहजव-चतुर्भुजं समानान्तरभुजं अहजित्रभुजाद्विगुणं जातं अबजित्रभुजस-मानं जातं झहजकोणश्च दकोणतुल्यो जातः । इत्युपपन्नम् ।।

# अथ त्रयश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र चतुर्भुजद्वयं समानान्तरभुजं समानान्तरभुजमहच्चतु-र्भुजमध्यवित चेद्रवित यस्य च बृहच्चतुर्भुजकर्णरेखायाः एकं पूर्विदिशि द्वितीयमपरिदिशि चकर्णरेखासंलग्नं भवित तयोरेकः कोणो बृहच्चतुर्भुजकोण एव भवित एतादृशं चतुर्भुजद्वयं मिथः समानं भवित ।

यथा अतझहचतुर्भुजं झकजवचतुर्भुजं च अबजदचतुर्भुजम-ध्यवर्ति बदकर्णस्योभयदिशि स्थितं कर्णस्य झचिहे ज् लग्नम् । तदाऽनयोः अकोणजकोणौ बृहचतुर्भु-जस्य द्वी कोणौ स्तः । तस्मादेतौ समानौ जातौ ॥ व अत्रोपपत्तिः ।

तबकझचतुर्भुजं हझवदचतुर्भुजं चैतौ समानान्तरभुजौ सः। पुनः अबद्त्रिभुजं बजद्तिभुजं बृहचतुर्भुजस्य समानं भागद्वयमस्ति । पुनः तबझ्त्रिभुजं बकझ्त्रिभुजं तबकझचतुर्भुजस्य समानं भागद्वय- मस्ति । पुनर्हश्रदत्रिभुजं श्वदित्रिभुजं चैते हश्वदचतुर्भुजस्य समाने द्वे भागे स्तः ।

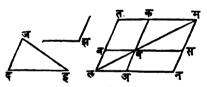
यदि अवदित्रमुजात् तवझित्रमुजं हझद- ज है द त्रिमुजं च शोध्यते तदा शेषं अतझहचतुर्भुजं स्यात्। एवं दबजित्रमुजात् बकझित्रमुजं झव-दित्रमुजं शोध्यते तदा शेषं झकजवचतुर्भुजं क पूर्वशेषचतुर्भुजसमं स्यात्। इदमेवेष्टम्॥

# अथ चतुश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र कल्पितैकरेखायां कल्पितत्रिभुजे कल्पितैककोणे च ता-दृशं चतुर्भुजं कल्प्यते यस्य फलं त्रिभुजफलसमं स्यात् यस्यैक-कोणः कल्पितकोणसमश्च यस्यैकभुजश्च कल्पितरेखातुल्यः स्यात् ।

तत्र कल्पितरेला अबरूपा त्रिभुजं जदहरूपं कोणस्तु झसंज्ञः ।

तत्र वबकतचतुर्भुजं कल्प नीयं त्रिभुजसमं पूर्वोक्तवत् यस्यैककोणः पूर्वकोणसमः कल्प्यः तथा यथा अबक-



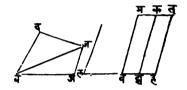
सर्वेकरेखा भवति । पुनः अनेपिर लअबवचतुर्भुजं समानान्तरभुजं कार्यम् । तत्र लबकणों दीवों देयः । तकरेखापि तथा दीर्घा कार्या यथा रेखाकणीं मिचिहोपिर लगौ स्तः । पुनर्मचिहात् कअरेखास-मानान्तरा मनरेखा कार्या । पुनर्लअरेखा वबरेखा च तथा दीर्घे कार्ये यथा नमरेखायां नसचिहोपिर संलगे स्तः । तत्र तनचतुर्भुजं समानान्तरभुजं जातम् । नबचतुर्भुजं तबचतुर्भुजं च तनचतुर्भुजं जस्य मध्ये द्वयं समानान्तरभुजं जातम् । तदा बनचतुर्भुजं अब-भुजोपिर बतचतुर्भुजसमं जातम् । बतचतुर्भुजं च पूर्व जदह-त्रिभुजसमं कल्पितम् । पुनः अबसकोणो वबककोणसमो जातः । पुनर्वबककोणो झकोणतुल्यो जातः । स एवष्टः कल्पितः पूर्वम् ॥

# अथ पश्चचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र कल्पितैकरेखोपरि चतुर्भुजं सैमानान्तरं तथा कर्त्तव्यमस्ति यथेष्टचतुर्भुजसमानं स्यात् तस्य च कोणः अभीष्ट-कोणसमानः स्यात् तस्यैकसुजः कल्पितरेखाश्चजसमानः स्यात ।

यथा हतरेला कल्पिता अबजदं चतुर्भुजं कल्पितं छकोणश्च । ब-

अबजद चतुर्भजस्य जकर्णेन विमागद्वयं कार्यम् । पुनर्हतरे-सायां झहतकचतुर्भुजं अबज-त्रिमुजसमं कार्यम् । हकोणो



लकोणसमः कार्यः । झकरेखोपरि वझकमचतुर्भुजं बजदत्रिभुजसमं कार्यम् । वझककोणो लकोणसमः कार्यः । एष कोणः हझककोणेन सार्द्ध समकोणद्वयेन समः । तदा हवरेखा एका सरला रेखा जाता। एवं तमरेखापि सरलाखि । तदा हमचतुर्भुजं समानान्तरभुजं हतरे-स्रोपरि अबजदचत्रभुजेन समं हकोणस्त लकोणेन समी जातः इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

# अथ षद्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् । तत्र एकस्यां रेखायां समकोणं चतुर्भुजं क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति।

यथा अबरेलायां अचिहात् अबतुत्यः अजलम्बः कार्यः। ब-चिह्नात् अजरेलासमानान्तरा अबतुल्या बदरेला कार्या। जदरेखा संलमा कार्या। अदचतुर्भुजं समा-नान्तरभुजं समभुजं समकोणं जातम् । इदमेवास्मा-कमिष्टम् ।

१ समानान्तरभुजं D.

# अथ सप्तचत्वारिशत्तमं क्षेत्रम्।

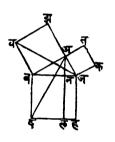
तत्र समकोणत्रिभुजस्य कर्णवर्गो भुजद्वयस्य वर्गयोगेन तुल्यो भवति ।

यथा अवजित्रभुजे अः समकोणोऽस्ति बजकर्णस्य वर्गः बअअ-जभुजयोर्वर्गयोगतुल्योऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

त्रिभिर्भुजैः समकोणं समचतुर्भुजं चतुर्भुजत्रयं कार्यम् । कानि

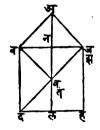
तानि चतुर्भुजानि एकं बदहजं द्वितीयं बव-श्रअं तृतीयं अतकजम् । बअशं बंअजं एतौ द्वौ समकोणौ स्तः । तदा श्रअजमेका सरला रेखा जाता । एवं बअतमेका सरला रेखा जाता । पुनः अचिहात् बदरेखायाः समानान्तरा अल्रेखा कार्या। इयं रेखा त्रिभु-

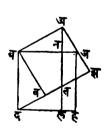


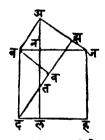
जान्तरे पितष्यित । कुतः । दबअकोणः समकोणादिधकोऽस्ति । तदा बअलकोणो बअजकोणान्यूनोऽस्ति । तस्मादियं रेखा बजरेखायां न-चिद्दे संपातं करिष्यित । पुनिरयं रेखा बहचतुर्भुजस्य बलं जलं चतु-र्भुजद्वयं करिष्यित । ततो वजरेखा अदरेखा च संयोज्या । वजबित्र-भुजे बअदित्रभुजे वबभुजो बजभुजो वबजकोणः अबभुजबद्दभुज-अबदकोणेन समानोऽस्ति । तदैतौ त्रिभुजौ समानौ जातौ । पुनर्व-जबित्रभुजं झबचतुर्भुजस्यार्द्वमस्ति । अनेन प्रकारेणापि बअदित्रभुजं बलचतुर्भुजस्यार्द्वमस्ति । तदा झबचतुर्भुजं बलचतुर्भुजेन समानं जातम् । एवं तजचतुर्भुजं जलचतुर्भुजेन समानं जातम् । तदा बजवर्गः बआअजभुजयोर्वर्गयोगेन समानो जातः । इदमेवास्माकम-मीष्टम् ।

### प्रकारान्तरेणाह ॥

तत्र त्रिभुजं कर्णस्य च चतुर्भुजं पूर्वकृतमेव स्थापितं अल्ररेसा च यथावस्थिता स्थापिता । पुनर्वझरूपं अवस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपिर स्थाप्यम् । ततो बअभुजः जअभुजतुल्योऽथवाऽधिकोऽथवा न्यूनः स्यात् । तदा क्रमेण झचिहं जिचेहे पितष्यित वा अजरेसाया बिहः पितष्यित अथवा अजरेसायां पितष्यिति । पुनर्दवरेसा संयोज्या । तत्र अववकोणो जवदकोण एतौ समकोणौ स्तः । पुनर्जववकोणो द्वयोः समकोणयोः शोध्यते । तदा शेषं अवजकोणो ववदकोणश्चैतौ समानौ भवतः । पुनः अवं ववतुल्यमस्ति बजं बद्दुल्यम् । अवजकोणो ववदकोणश्चैतौ समानौ जातौ । पुनर्ववदकोणो वअजकोणसमकोणसमानो जातः। तदा दवझरेसा एका सरला रेसा जाता । अवरेसायाः समानान्तरा च जाता । तया अल्ररेसायां तिचेहे संपातः कृतः। नअजकोणो जवअकोणेन समानोऽस्ति। पुनः अझवः समकोणोऽस्ति । तदा तिचहं वचिहे भविष्यति । पुनर्दत्रजं सरलैका रेसा



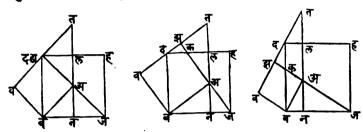




भविष्यति यदा अबं अजतुत्यं भविष्यति । अथवा तिवहं विचेहे न भविष्यति अथवा अन्यचिहं भविष्यति । पुनर्यदा अबं अजादिषकं स्यात् तदा तिचहं झवरेसोपरि पतिष्यति वा झबरेसाया बहिः पति-ष्यति । एवं क्षेत्रत्रयेऽपि बअझवक्षेत्रं बअतद्क्षेत्रं समानं भविष्यति । एवं बअतद्क्षेत्रं बनलद्क्षेत्रं समानं भविष्यति तदा बअझवक्षेत्रं बनलद्क्षेत्रसमानं भविष्यति । पुनः अनेन प्रकारेण अज्ञभुजस्य चतुर्भुजं जलचतुर्भुजसमानं भविष्यति ।

## पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

तत्र कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपरि पातनीयम्। अबभुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजाद्वहिः पातनीयम्। जअरेखा कार्या सा दचिहे संपातं करिष्यति



यदा अवअजो समी स्तः। अथवा सा जअरेखा दहरेखायां किचिहे संपातं करिष्यति यदि अवं अजादिषकं स्यात्। अथवा दबरेखायां किचिहे संपातं करिष्यति यदि अवं अजाक्यूनं स्यात्।

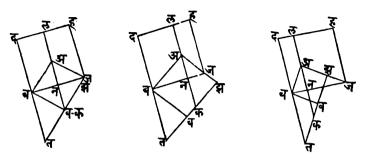
एवं प्रकारत्रयेऽपि अबोपिर बवलम्बो निष्काइयः। दिचहात् बवोपिर दवलम्ब उत्पाद्यः। पुनः अकरेखा तथोत्पाद्या यथा दवरे-सायां श्रचिहे संपातं करिष्यति। दवबित्रमुजे अबजित्रमुजे दब-भुजो बजमुजतुल्यः। वकोणः अकोणतुल्यः। दबवकोणो जबअ-कोणतुल्यश्चास्ति। तदा अबबवमुजौ तुल्यौ स्याताम्। अबझवक्षेत्रं अबमुजस्य समचतुर्भुजं समकोणं मिवष्यति त्रिमुजाहृहिः पितष्यति। पुनर्वदरेखा अल्ठरेखा च तथा वर्द्धनीया यथा तिचहे संपातं करिष्यति। तदा दबअतक्षेत्रं अबवझसमचतुर्भुजसमकोणक्षेत्रेण समानं जातम्॥ पुनर्दबअतक्षेत्रं दबनलक्षेत्रसमानमस्ति। तदा अबभुजस्य समचतु-भुजसमकोणक्षेत्रं दबनलक्षेत्रसमानं जातम्॥

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

अब्भुजसमकोणचतुर्भुजक्षेत्रं त्रिमुजोपर्युत्पादंनीयम् । तत्र शचिहं

१ कार्यम् A. B. २ कार्यम् A. B. ३ कार्यम् A. B.

जिचहं भविष्यति यदा भुजद्वयं समानं भविष्यति वा अजभुजा-



द्विहः पितष्यित यदा अबं अजादिषकं स्यात् वा अजोपिर पित-ष्यित यदा अबं अजादृनं स्यात् । पुनर्नअजकोणो जबअकोण-जुल्यः स्यात्ततो अनरेखा उत्पाद्या यथा झवभुजे किचिह्ने संपातं किर-ष्यित । तदा किचिह्नं विचिह्नं भिवष्यित यदि अबं अजसमानं वा झवोपिर पितष्यित यदि अबं अजादिषकं स्यात् वा झवाद्विहः पितष्यित यदा अबं अजान्यूनं स्यात् । ततो द्वरेखा झकरेखा च उत्पाद्या यथा तिचेह्ने संपातं करिष्यित ।

एवं अबजित्रभुजे अकझित्रभुजे च अवभुजो बअजकोणः अ-बजकोणश्च अझभुजेन अझककोणेन झअककोणेन च समानस्तदा अकं बजसमानं जातम् । दबसमानं च बतं अकसमानं जातम् । अतंक्षेत्रं दनक्षेत्रेण समानं जातम् । अववझसमकोणसमचतुर्भुजे-नापि समानं जातम् । तदा दनक्षेत्रं अबभुजस्य समकोणचतुर्भुज-क्षेत्रेण समानं जातम् ॥

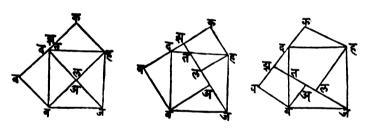
अनेन प्रकारेण अजभुजस्य समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं जलचतु-र्भुजक्षेत्रेण समानं मविष्यति । पुनः अजभुजस्य समकोणचतुर्भुजक्षेत्रं अबजित्रभुजोपरि पातनीयं वा अबजित्रभुजाह्नहिः पातनीयम् । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

९ अतक्षेत्रेण द्नक्षेत्रं समानं जातम् D. K. २ इदमेवेष्टम् A. B.

# पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

पूर्वपकारेषु अल्डरेखया कर्णचतुर्भुजस्य भागद्वयं कृत्वा उपपत्तिरुक्ता । अधुना कर्णचतुर्भुजस्य भागद्वयमकृत्वेवोपपत्तिरुच्यते ।

तत्र कर्णचतुर्भुजं त्रिभुजोपर्युत्पाद्यम् । जअभुजस्तथा वर्द्धनीयः यथा चतुर्भुजस्य तिचिह्ने संपातं करोति।यदि तिचिह्नं दिचिह्ने पति तदा अवअजभुजौ समानौ स्याताम् । यदि तिचिह्नं दह्मभुजे वा दबभुजे पति तदा अवअजभुजौ न्यूनाधिकौ स्याताम्। पुनर्दिचिहात् अजभुजोपरि द्रझ्लम्ब उत्पाद्यः। पुनः अयं लम्ब उभयत्र वर्द्धनीयः। पुनस्तल्लम्बोपरि विचिहात् हचिहात् लम्बद्धयं ववहकसंज्ञं उत्पाद्यम् । जझरेस्वायां हचिहात् हल्लक्ष्मः कार्यः। तदा हल्लक्षमः अचिह्ने पतिष्यति



हरुअब एका सरला रेला भविष्यति यदा अवअजभुजौ समौ स्या-ताम् । हरुलम्बो अचिहात् अन्यत्र चिह्ने पतिष्यति यदा द्वौ भुजौ न्यूनाधिकौ स्याताम्। अवजित्रभुजे वबदित्रभुजे कदहित्रभुजे रुजह-त्रिभुजे च वजभुजः वद्दभुजः दहभुजः हजभुजभौते समानाः। अव-करुकोणाः समानाः। शेषकोणा अपि समानाः। एतानि चत्वारि त्रिभु-वानि समानानि । पुनः अवसेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं जातम्। एतत् अवभुजस्य वर्गोऽस्ति। रुक्कसेत्रमपि समकोणसमचतुर्भुजं जातम्। इदं अज्ञभुजस्य वर्गोस्ति। एते द्वे समकोणसमचतुर्भुजं बहसेत्रसमकोणसम-मतुर्भुजसमे स्तः। अत्रोपपत्तिः ।

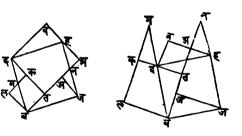
बदवन्निभुजदक्रहन्निभुजयोयींगः अबजनिभुजहरुजनिभुजयो-गसमः । शेषक्षेत्रं प्रथमत्रिभुजद्वयेन चेद्योज्यते तदा प्रथमसमकोण-समचतुर्भुजद्वयं स्यात् । यदि द्वितीयत्रिभुजद्वयेन योगः क्रियते कर्णस्य समकोणसमचतर्भजं स्यात् ॥

### प्रकारान्तरेणाह ।

अबअजो द्वौ भुजौ यदाऽधिकन्यूनौ स्तंः अबभुजोपरि समकोण-समचतुर्भुजं न पात्यते यथा अज्ञमुजस्य समकोणसमचतुर्भुजं अजोपरि न पातितं तदा बअभुजस्तथा वर्द्धनीयो यथा जहभुजे नचिह्ने संपातं करोति । पुनईचिह्नात् दचिह्नाच बअरेखायां हझद-तलम्बा उत्पाद्यो । हझरेला वर्द्धनीया । पुनर्देचिहात् हझरेलायां दवलम्ब उत्पाद्यः । तकरेखा तबरेखातुल्या कार्या । पुनः कलरेखा कार्या । एषा रेखा दबरेखायां **तब**रेखासमानान्तरा संपातं करिष्यति । पुनर्वचिह्नात् कलरेखायां बल्जलम्ब उत्पाद्यः । तदा अबजित्रभुजं तदबित्रभुजं वदहित्रभुजं चैतानि समानि स्युः। छतं

समकोणसमचतुर्भुजं दशं समकोणसमचतुर्भुजं चैते **अज**भुजस्य **ब**अभुजस्य वर्गरूपे स्तः। पुनर्रुबम-त्रिमुजं अजनत्रिमुजं च

मिथः समानमस्ति । द-



मकत्रिभुजं इनझित्रभुजं च समम्। तदा स्वसित्रभुजदबतित्रभु-जयोर्योगः छतक्षेत्रसमकोणसम्चतुर्भुजहनक्षत्रिमुजयोर्योगोऽस्ति भयं बनजित्रभुजेन समः । वदहित्रभुजं प्रथमयोगे योज्यते तदब-त्रिभुजं द्वितीययोगे योज्यते पुनर्दतनहृक्षेत्रं द्वाभ्यां चेद्योज्यते यदा

२ °तनीयं D. 9 D. K. inserts तत्र after स्त:.

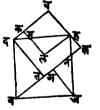
अवमजादिषकमित । दनतहक्षेत्रस्य एकं सण्डं योज्यमपरं हीनं कार्य यदा अवमजादृनमित । तदा द्वे समकोणसमचतुर्भुजे कर्णस्य सम-कोणसमचतुर्भुजस्य समे भैवत इत्युपपन्नम् ।

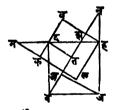
### पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदैक भुज चतुर्भुजं द्वितीय भुज चतुर्भुजं पातनीयं भवति तदा पूर्वोक्त-भकारेण क्षेत्र मुत्याचम् । पुनर्वकं वहतुल्यं कार्यम् । कलहल्लेखे वझवद-समानान्तरे कार्ये क्रमेण । पुनर्ताथा वर्द्धनीये यथा लचिहे संपातं क-रिष्यतः । तदा कल्लरेखा दहरेखायां मचिहे मिलिष्यति ।

अर्थे त्रयाणां त्रिभुजानां साम्यात् हळअजयोः साम्यात् कोणानां साम्याच हळमत्रिभुजं जअनित्रभुजं पैरस्परं समानं जातमिति निश्चित्य । पुनर्दकह्मसमत्वेन दकमित्रभुजं हझनित्रभुजमन्योन्यसम-मिति निश्चितम् । तदा दवहित्रभुजमळहित्रभुजयोर्योगः वळचतुर्भुज-

हनझित्रभुजयोगोऽस्ति । अयं योगो बनजित्रभुजेन समः। दवहित्रभुजं प्रथम-योगेन युक्तं कार्यं तदब-





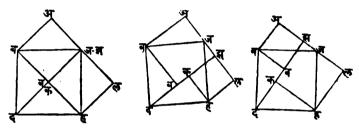
त्रिभुजं द्वितीयेन धोज्यं हृदत्तनक्षेत्रं द्वयोयोगयोर्थुं कार्य यदि अबं अजादिषकं स्यात्।यदि न्यूनं तदैकं खण्डं पूर्वयोगे योज्यं द्वितीयं खण्डं न्यूनं कार्यम् । तदा बळचतुर्भुजं बतचतुर्भुजं च दजचतुर्भुजेन समानं जार्तमिति सिद्धम् ॥

९ स्तः D. K. ९ एवं A. B. ३ समत्वाच D. ४ मिथः D. ५ यो-ज्यते A. B. ६ चेथोज्यते A. B. ७ °श्रेयोज्यते A. B. ८ D. K. omits इति सिद्धम्.

### पुनः प्रकारान्तरम् ।

तत्र यथाकर्णचतुर्भुजं त्रिभुजे न पतित एक्सुजस्य च चतुर्भुजं त्रिभुजे पतित तथा क्षेत्रं कार्यम् ।

यथा अवभुजस्य अझवजनतुर्भुजं त्रिभुजे पैतितं तदा झिनिहं जिन्हें पतिष्यति यदि भुजद्वयं समं स्यात् । यदि भुजद्वयं न्यूनाधिकं स्यात् तदा झिनिहं अजभुजे पतिष्यति वा बहिः पतिष्यति । पुनर्दव-रेखा कार्या । तत्र पूर्वोक्तप्रकारेण निश्चीयते दवझ एकासरका रेखा जातेति । पुनः हनिहात् तद्देखायां अझरेखायां च हक्कम्बो हल्ल-



म्बश्च उत्पाद्यः । तदा हक्ष्यब एका सरला रेला भविष्यति यदि मुजद्वयं समं स्यात् । यदि न्यूनाधिकं स्यात् तदा हक्कलम्बो झवबदमध्ये
भविष्यति । पुनश्चतुक्षिभुजसमत्वेन हक्कहल्लसमत्वेन च ईंदं निश्चितं
कलक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं अजभुजस्य जातमिति । पुनः अबजत्रिभुजलजहित्रभुजयोयोगस्य कदहित्रभुजयबदित्रभुजयोगसमत्वेन
शेषक्षेत्रद्वययोगेन इदं निश्चितं जातं द्वयोर्भुजयोश्चतुर्भुजे कर्णचतुर्भुजेन समे साः ॥

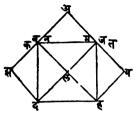
### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

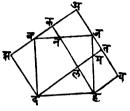
तैत्र कस्यापि भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपिर न पततीतीष्टं यदा तदा त्रिभुजं कार्यम् । कर्णस्य चतुर्भुजं च कार्यम् । भुजद्वयं वर्द्धनीयं च ।

Digitized by Google

<sup>9</sup> पातितं B. २ A. B. omit it. ३ A. B. add निश्चिता after it. ४ सिद्धं A, B. ५ व्सास्ति D. K. ६ निश्चीयते D. K. ७ यहेदमिष्टं D. K.

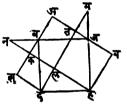
पुनर्दिनिहात् हिन्हात् दश्र छन्ने हव छन्नश्च तहू योपर्युत्पाद्यः । दत-रेसा हकरेसा भुजयोः समानान्तरा कार्या । एतह्र्यं छन्निहे संपातं





करिष्यति जहरेसायां जबरेसायां मिचहे निचहे च संपातं करिष्यति। तदा बकनिचहानि एकत्र मिलितानि स्युः जतमिचहानि चैकंभूमिलि-तानि स्युः यदि भुजद्वयं समं स्यात् । एति बहत्रयेण त्रिभुजं स्यात् यदि न्यूनाभिकं भुजद्वयं स्यात् । पुनः अबजित्रिभुजम्मदबित्रभुज-

छद्दृत्रिमुजवजद्दित्रभुजानां समत्वं निश्चिः तम्। पुनर्झछक्षेत्रं छवक्षेत्रं च भुजद्वयस्य सम-कोणसमचतुर्भुजं जातम् । बक्जतयोः सम- निर्वेतन् कोणानां समत्वेन च बकनित्रभुजजत- हाः मित्रभुजे समे जात इति निश्चितम्।



अनेनैव प्रकारेण दमहित्र भुजं हनजित्र भुजं सममिल । मलह-त्रिभुजं क्षेत्र द्वये हीनं चेत् कियते तदा शेषं नलमजिक्षेत्रं दलहित्र भु-जेन समं स्यात् । जवहित्र भुजेनापि समं स्यात् । मवहतक्षेत्र बकन-त्रि भुजयोगस्यापि समानः स्यात् । दलहित्र भुजं दशकित्र भुजं चैते समे पूर्व क्षेत्र द्वयेन योज्यते । पुनने बदल क्षेत्रं मलहित्र भुजं च पूर्व क्षेत्र-द्वयेन योज्यते तदा कर्णस्य चतुर्भुजं भुजद्वयस्य चतुर्भुजेन समं स्यात्।।

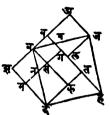
# पुनरपि प्रकारान्तरम् ।

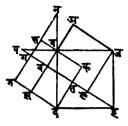
असिन्नेव प्रकारे एकभुजस्य चतुर्भुजं द्वितीयोपरि पतिष्यति तदा भुजद्वयं समं चेंचिहि स्पष्टमेव । यदि भुजद्वयमधिकं न्यूनं वा तदा

१ चैकन्न A. B.

अबभुजो वर्द्धनीयः । असिन् द्विहात् हिनहात् द्शलम्बह्वलम्बौ

कार्यो । हचरेसा बज-रेसा च यचिहे संलगा कार्या । पुनर्दचिह्नात् दतलम्बो हचरेसायां इस बचिह्नात् बकलम्बः





दतरेसायां जिन्हात् जललम्बः हबरेसायां च कार्याः । पुनर्दमं दकतुल्यं झदिशि कार्यम् । मनसगरेसा दकसमानान्तरा कार्या । इयं रेसा दबरेसायां निन्दे बकस्य सन्दि हवस्य गनिदे संपातं करिन्यति । ततो अबजित्रभुजं लहजं तहदं झदबं दबकं एतानि समानानीति निश्चितम् ।

पुनः कमक्षेत्रं झतक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं भुजद्वयस्याखि ।
पुनः मद्जलयोः समत्वेन कोणानां समत्वेन च मदनित्रभुजं लज्जयत्रिभुजं च परस्परं समानं जातिमिति निश्चितम् । पुनर्वसववयोः साम्येन कोणानां सामान्येन च बनसित्रभुजं बवयित्रभुजं परस्परं समानं
जातम् । तदा मनदित्रभुजबदकित्रभुजयोर्योगः मकचतुर्भुजबवयत्रिभुजयोगोऽस्ति । अयं योगो हज्जयित्रभुजेन समानोऽस्ति । पुनर्झदबत्रिभुजं प्रथमेन युक्तं कियते तदहित्रभुजं च द्वितीयेन युक्तं कार्यम् ।
बदतयक्षेत्रं द्वेयोर्युक्तं कार्यं यदि अबमजादिषकं स्यात् । न्यूनं चेचिहि एकं खण्डं योज्यं द्वितीयं न्यूनं कार्यम् । तदा मकक्षेत्रं झतक्षेत्रं
समकोणसमचतुर्भुजं बहक्षेत्रेण समकोणसमचतुर्भुजेन सममित्युक्तपकारेषु अन्येऽपि प्रकाराः संभवन्ति ते विस्तरभयादुपेक्षिताः ॥

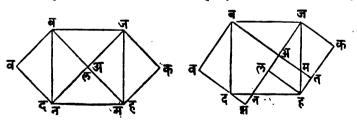
पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदि भुजानां चतुर्भुजानि स्वस्वभुजोपरि पतन्ति तदाष्ट्रधा क्षेत्रसंस्था

<sup>9</sup> चेयुक्तं कियते A. B. २ चेद्द्वयोर्योजनीयं A. B.

स्वात्। तषशा। प्रथमप्रकारे यथा कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजं पतित ताइशं क्षेत्रं कृत्वा बआजअभुजो वर्द्धनीयो यथा कर्णचतुर्भुजं मिचहे निचहे च संपातं करिष्यतः। मिचहं निचहं च हचिहे दिचहे क्रमेण पतिष्यित यदि भुजद्वयं समानं स्यात्। अथवा भुजद्वयोपिर पतिष्यित यदि न्यूनाधिकं स्यात्। पुनः दिचहात् हचिहात् दश्रलम्बो हतलम्बः उमयोरूपर्युत्पाद्यः। पुनरेतद्वयं वर्द्धनीयम्। बचिहाज्जचिहात् बवल्लम्बो जकलम्बश्च कार्यः। यथा वचिहे कचिहे मिलति। यदा भुजन्द्वयमिकं न्यूनं स्यात् तदा बअभुजः अजाभुजादिषकः कल्पितः। पुनहचिहात् हललम्बो जझरेलोपिर कार्यः। अयं लम्बः अचिहात् अन्यत्र पतिष्यित यदा भुजद्वयं न्यूनाधिकं स्यात्। यदा द्वी भुजो समानौ स्यातां तदा अचिहे पतिष्यित।

पुर्नेलकं अवक्षेत्रं च समकोणसमचतुं भुंजं स्यात् बैदरेखावर्गतुल्यं च यदा भुजद्वयं समं स्यात् । यदा न्यूनाधिकं स्यात् तदा अकक्षेत्रं अवक्षेत्रं समकोणसमचतु भुंजं मिवष्यति। लक्षेत्रं च समकोणविषमच-तुर्भुजं मिवष्यति । पुनः अबजित्रभुजं कहजित्रभुजं लहजित्रभुजं वबदित्रभुजं चैतानि समानानि स्युः । पुनः अजमित्रभुजं लहन-त्रिभुजं च समानं कोणसमत्वात् अजभुजलहभुजयोः समत्वाच । तदा जमहनौ समौ मिवष्यतः । महनदौ च समानौ स्याताम्।

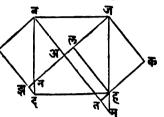


हमतित्रभुजं दनझत्रिभुजं च समानं भविष्यति । पूर्वे अजमत्रिभुजं लहनत्रिभुजं सममासीत् । अस्मिन् द्वये लखहमक्षेत्रं योज्यते तदा

९ °ईक अबदेत्रे A. B. २ °वे स्वातां A. B. ३ वह A. B. K.

नअमहक्षेत्रं छहजत्रिभुजसमं स्यात्। हजकित्रभुजस्यापि समं स्यात्।
मजकतक्षेत्रनदश्चित्रभुजयोगस्यापि समं स्यात्। अस्मिन्द्रये अवज-त्रिभुजं ववदित्रभुजं योज्यते तदा नअमहक्षेत्रअवजित्रभुजयोगः मजकतक्षेत्रदनश्चित्रभुजववदित्रभुजयोगसमो जातः। पुनरुमयो-

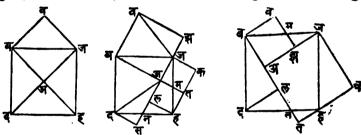
देवअनक्षेत्रेण अजमित्रभुजेन च योगः कार्यः । तत्र प्रथमात् वहवर्गो क भविष्यति द्वितीयात् अवअकौ द्वौ स-मकोणचतुर्भुजौ भवतः।इष्टं च स्यात्।



अनेनैव प्रकारेण बअन्यूनत्वेऽपि स्यात्।

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

यदा कर्णस्य चतुर्भुजं अवसंज्ञैकचतुर्भुजं च त्रिभुजोपिर पतित भुजद्वयं समं च स्यात् तदा मदिष्टं प्रकटमेवं । कुतः । उत्पन्नत्रिभु-



जानां समत्वात् । एतेषु त्रिभुजद्वययोगः भुजवर्गतुल्यः । चतुर्णी त्रिभु-जानां योगः कर्णवर्गतुल्यो भवति ।

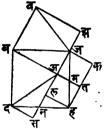
यदि अवं अजादिषकं स्यात् तदा तस्य चतुर्भुजं कार्यम् । जअ-रेखा वर्द्धनीया । यथा दह्भुजे निचहं स्पृष्ट्वा बहिर्गच्छति तथा कार्या । दचिहात् हचिहात् दसलम्बो हललम्बस्तस्यां रेखायां कार्यः । जैचिहात् जकलम्बः अजरेखायां कार्यः । पुनर्हचिहात् हकलम्बः

१ ॰ बोत्पर्श त्रिभुजानां समस्वात् A. B. २ ज्ञानिहे कानिहात् ज्ञाकल्यम्यः &. A. B.

जैकलम्बोपरि कार्यः । पुनर्बे अरेखा वर्द्धनीया यथा जह्भुजे मचिह्नं स्पृष्ट्वा अस्मिँहन्ये तचिह्ने मिलति । अकक्षेत्रं समकोणचतुर्भुज-मस्तीति पूर्वोक्तमकारवत् निश्चितम् ।

पुनर्जवरेला दअरेला च कार्या । अजहलयोः समत्वात् अजम-कोणलहनकोणयोः समत्वाच अमजित्रभुजं लहनित्रभुजं समानं

जातमिति निश्चितम् । पुनरुभयोर्छअमहसे त्रयोगादिति निश्चितं नअमहसेतं लजह त्रिभुजेन समानमस्ति । हजकत्रिभुजेनापि समानम् । पुनर्जमहनयोः समत्वात् मह-नदशेषौ समानौ जाताविति निश्चितम् ।

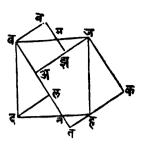


असाँ दुजसमत्वात् कोणयोः साम्याच दसनित्र भुजहमतित्र भुजयोः समानत्वं जातमिति निश्चितम् । पुनर्दब अकोणज्ञ बवकोणयोः समानत्वात् बदवजयोः समानत्वाच बवब अयोः समानत्वात् दव अत्र भुजज्ञ बवित्र भुजयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द असकोणज्ञ वश्चरोषकोणयोः समानत्वात् सञ्चकोणयोः समकोणत्वेन पुनः अद्भुजवज्ञ भुजयोः समानत्वेन अदस्ति भुजज्ञ वश्चित्र भुजयोः समानत्वं निश्चितम् । पुनर्द ब असौ ज्ञ ववश्चयोः समानौ दसनित्र भुजं हमतित्र भुजेन समानं स्थितं तदा दव अनक्षेत्रं हमतित्र भुजमनयोयोगः ज्ञ ववश्च क्षेत्रेण समानः । पुनः मजतकक्षेत्रं हमतित्र भुजमनयोयोगः ज्ञ ववश्च क्षेत्रेण समानः । पुनः मजतकक्षेत्रं द्व योर्थक्तं कार्यम् । तदा दव अनक्षेत्रं हजकित्र भुजेतुल्य न अमहक्षेत्र मेतद्वयं वा तत्तुल्यं दव महक्षेत्र मिप ज्ञ ववश्च क्षेत्र मजकतक्षेत्राभ्यां समानमितः । पुनर्ब मजित्र भुजं द्व योर्थक्तं कार्यम् । तदा कर्णवर्गः भुजद्वयवर्गसमः स्थात् ।

यदा अबभुजः अजादूनोस्ति तदा न्यूनभुजो वर्द्धनीयः यथा

९ एतल्लम्बोपरि A. B. २ A. B. omit उमयोः. ३ °योगान्निश्चीयते A. B. ४ A. B. omit भुजसमत्वात्. ५ °हजकत्रिभुजं नश्रमहक्षेत्रमपि एतेषां योगरूपं द्वमहक्षेत्रं A. B.

दहरेखायां निचह्नलमं सत् बहिर्गच्छति दिचिहात् हिचिहाच अस्योपिर दललम्ब-हतलम्बो कार्यो । तहरेखा च वर्दिता कार्या । जिचहात् अस्योपिर जकलम्बः कार्यः । तदेति निश्चितं अवजित्रभुजं

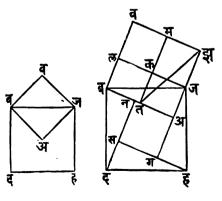


कहजित्रभुजं दलवित्रभुजं च समानमित । पुनः अकक्षेत्रं समको-णसमचतुर्भुजमित । दलनित्रभुजं बवमित्रभुजं च समानमित । पुनर्नहमजौ समौ स्तः । पुनर्नतहित्रभुजं मजझित्रभुजं च समा-नमित । पुनर्वदनित्रभुजमझजित्रभुजयोयोगः कहजित्रभुजनतह-त्रिभुजववमित्रभुजानां योगेन तुत्यः । पुनः शेषक्षेत्रं द्वयोर्युकं कार्यम् । तदा कर्णवर्गः भुजद्वयवर्गतुत्यः स्यात् ।

## पुनः प्रकारान्तरम् ।

त्रयाणां भुजानां चतुर्भुजानि त्रिभुजे पतन्ति । यदा भुजद्वयं समानं स्यात् तदा भुजद्वयस्य चतुर्भुजे समाने स्यातामिष्टं च प्रकटीभवि-ष्यति।यदा चैको भुजो न्यूनाधिकोऽस्ति यथा अबं अधिकमस्ति तदा

पूर्वीक्तप्रकारेण चतुर्भुजं कार्यम् । जकरेखा छचिन्हपर्यन्तं वर्द्धनीया । तकरेखा
मचिन्हपर्यन्तं च कार्या ।
दचिन्हात् दनलम्बः अबरेखायां कार्यः । हचिन्हात्
हसलम्बः दनरेखायां कार्यः।
जअरेखा च वर्द्धनीया यथा



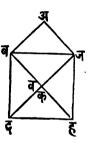
इसरेखायां गचिन्हे लगा स्यात् । तदां जदचतुर्भुजस्य चत्वारि त्रिसु-

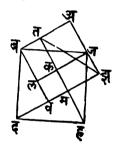
जानि समानि उत्पत्स्यन्ते। तानि च पूर्वोक्तप्रकारेण समानि स्युः। नगचतुर्भुजं शेषं त्यात्। एतच अबअजभुजयोरन्तरवर्ग एव। पुन-स्तझरेसा कार्या। तदा अलक्षेत्रस्य अमक्षेत्रस्य च चत्वारि त्रिभुजानि भविष्यन्ति। पूर्वोक्तचतुर्णी त्रिभुजानां समानि स्युः। शेषं कवचतुर्भुजं नगचतुर्भुजत्य समं त्यात्। तदा जदचतुर्भुजं अबचतुर्भुजत्य अकचतुर्भुजत्य समानमस्तीति निश्चितम्। इतमेवेष्टम्॥

#### प्रकारान्तरम् ।

भुजद्वयस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे पतति कर्णस्य चतुर्भुजं न पतति ।

यदा मुजद्वयं समानं चेत् तदा पूर्वोक्तप्रकार एव पर्य-वसन्नः। यदा अवभुजोऽ-धिकोऽस्ति तदा चतुर्भुजं कार्यम् । वदरेसा कार्या। कहरेसा च कार्या। तत्र





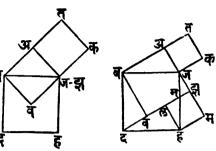
दबझरेला सरला एका रेला जातेति निश्चितम् । हकतरेलाप्येका सर-लाखि । पुनर्जकरेला वर्द्धनीया लपर्यन्तम् । तदा जदचतुर्भुजस्य च-त्वारि त्रिभुजानि मविष्यन्ति । मध्ये कवचतुर्भुजं च भविष्यति । पुनः तझरेला कार्या । तदा अलक्षेत्रस्य अमक्षेत्रस्य च चत्वारि त्रिभुजानि समानि मविष्यन्ति । उपरितनचतुर्णो त्रिभुजानामपि समानि भवि-ष्यन्ति । कवचतुर्भुजं द्वयोयोज्यते तदेष्टं स्फुटं स्थात् ।

### पुनः प्रकारान्तरम् ।

एक भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे पतिति । यदा भुजद्वयं समानं स्यात् तदा स्पष्टमेव । यदि अबं अधिकं स्यात् तदा चतुर्भुजं कार्यम् । दव-रेखा लगा कार्या। तदा दवझरेखा सरलैका रेखा जातेति निश्चितम् ।

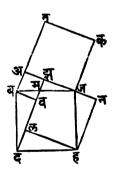
A. B. add this sentence. R. A. B. read this sentence as समानि च स्थ: ३ D. omits this.

पुनः अजरेखा वर्द्धनीया।
तत्यां हिचिहात् हमलम्बः
कार्यः। हललम्बश्च दश्गीपरि कार्यः। अवजितिभुजं वबदित्रभुजं लदहत्रिभुजं मजहित्रभुजं चैह



तानि समानि जातानि । लमचतुर्भुजमकचतुर्भुजस्य समानमस्ति । पुनर्लहनित्रभुजं दलहित्रभुजेन जमहित्रभुजेन च युक्तं कार्यम् । तदा दनहित्रभुजं लमचतुर्भुजजनझित्रभुजयोगेन अकचतुर्भुजेनापि जनझित्रभुजयुक्तेन समानं जातम् । बदवित्रभुजं प्रथमेन युक्तं कार्यम् । अबजित्रभुजं द्वितीयेन युक्तं कार्यम् । शेषक्षेत्रं द्वाभ्यां युक्तं कार्यम् । तदेष्टमसादीयं प्रकटं स्यात् ।

पुनर्यदा अबं न्यूनं स्यात् तदा चतुर्भुजं कार्यम् । दवरेखा लमा कार्या । पूर्वोक्तप्र-कारेणैवेदं निश्चीयते दहजमक्षेत्रं झजम-त्रिभुजेन साद्धं अकचतुर्भुजेन समानमस्ति । पुनः बदमित्रभुजं अवचतुर्भुजेन मजझ-त्रिभुजेन समानमस्तीतीष्टं प्रकटं जातम् ॥

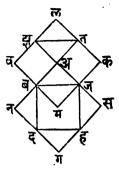


पुनः प्रकारान्तरम् ।

कस्यापि भुजस्य चतुर्भुजं त्रिभुजे न पतित तथा चतुर्भुजं कार्यम् । वझरेखाकतरेखे दीर्घे कार्ये यथा लचिह्नलमे स्याताम् । पुनर्वबरेखा कजरेखा दीर्घा कार्या मचिह्नलमा स्यात् । तदा कवचतुर्भुजं भुज-द्वययोगस्य चतुर्भुजं जातम् । पुनः अबरेखा अजरेखा वर्द्धनीया।

१ युक्तं सत् A. B.

दिनिहात् हिनिहात् द्वयोरुपरि दनलम्बः हसलम्बद्ध कार्यः। पुनर्लम्बौ वर्द्धनीयौ यथा गिनिहे लग्गौ स्तः। अवजित्रभुजं नदबित्रभुजं गदहित्रभुजं सहजित्रभुजं नैतानि समानि स्यः। नसचतुर्भुजं वकचतुर्भुजेन समानम्। पुनर्श्वतरेसा कार्या। झलतित्रभुजं झअतिनि भुजं वअजित्रभुजं वमजित्रभुजं नैतानि

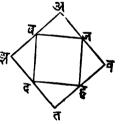


चत्वारि समानि जातानीति निश्चितम् । पूर्वोत्पन्नानां चतुर्णो त्रिभु-जानामपि समानि । एतचतुष्टयं द्वाभ्यां चतुर्भुजाभ्यां शोध्यम् । शेषं वअचतुर्भुजं अकचतुर्भुजं बहचतुर्भुजस्य समानमस्ति । इदमेवास्म-दिष्टम् । एवमष्टौ प्रकारा उपपन्नाः ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

कर्णस्य चतुर्भुजं तथा कार्य यथा त्रिभुजे न पतति । अवअज्ञुभुजौ च

वर्द्धनीयौ । दिचिह्नात् हृचिह्नात् द्वयोरुपरि द्वस्त्रस्यः हृवलम्बश्च कार्यः । पुनर्लम्बौ वर्द्ध-नीयौ यथा तिचिह्ने लग्नौ स्तः । तदा अतच- स्व तुर्भुजं भुजद्वययोगस्य चतुर्भुजं जातम् । च-लारि त्रिभुजानि च समानि जातानि । यः क-



श्चिदिष त्रिभुजद्वययोगो भुजयोघीतसमो भवति । चैतुर्णी योगः भुजद्वयघातद्विगुणोऽस्ति । अयमतचतुर्भुजात् भुजद्वययोगवर्गात् भुजद्वयद्विगुणघातयोगरूपः शोध्यः । शेषं बहचतुर्भुजं भुजद्वयवर्गयोगसमं
स्यात् । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

कर्णस्य चतुर्भुजं त्रिभुजोपरि कार्यम् । दचिहात् दश्चलम्बः अबो-

A. and B. have चतुणीं योगः अत्चतुर्भुजात् शोध्यः । शेषं सह-चतुर्भेजं°

परि कार्यः। हचिह्नात् हत्ररुम्बो दझरेखायां कार्यः। जअभुजो वर्द्धनीयः तचिह्नपर्यन्तम् । भुजद्वयान्तर-वर्गरूपचतुर्भुजं मध्ये उत्पन्नम् ।

ज ब

एवं चत्वारि त्रिभुजानि समानि जातानि । एतेषां ज

मध्ये यः कश्चित्रिभुजद्वययोगो भुजद्वयघातसमानोऽस्ति । चतुर्णो त्रि-भुजानां योगः द्विगुणेन भुजद्वयघातेन समोऽस्ति । अयं भुजान्तरवर्ग-युतः भुजद्वयवर्गसमः स्यात् । यतोऽस्मिन् वअचतुर्भुजं युक्तं क्रियते तदा दजचतुर्भुजं भुजद्वयवर्गयोगसमानं भवति ॥

अथाष्टचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र यदा त्रिभुजस्यैकभुजवर्गः शेषभुजद्वयवर्गसमानः स्यात् तदा शेषभुजद्वयमध्यकोणः समकोणः स्यात् ।

यथा अबजित्रभुजे बजवर्गः अबअजयोः वर्गयोगसमानस्तदा आः समकोणो जातः।

कुतः ।

अदलम्बः अजरेसायां अबतुत्यः कार्यः । जदरेसा लग्ना कार्या । तदा दजवर्गजववर्गी समी स्तः । दजजबी समी स्तः । तदा अबजित्रमुज-अदजित्रभुजयोः कोणी भुजी च समी स्याताम् ।



तदा जअबकोणो जअदकोणेन समः स्यात्। तदा जअबः समकोणो भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्तम्राङ्क् जगन्नाथ इति समिभधाख्यातनाम्ना प्रणीते । प्रन्थेऽस्मिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्थध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं चादिमः संगतोऽभूत् ॥ इति रेखागणिते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

१ °णा भुजाब समाः स्युः। A., B.

### अथ द्वितीयोऽध्यायः प्रारभ्यते॥

तत्र चतुर्दशक्षेत्राणि सन्ति ।

तत्र रेखाद्वयधीतशब्देन समकोणचतुर्भुजक्षेत्रमुच्यते ।

### तत्र प्रथमं क्षेत्रम्।

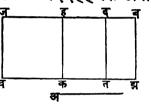
तत्रैकरेखाद्वितीयरेखाघातः प्रथमरेखाया द्वितीयरेखाख-ण्डानां च घातेन तुल्यः स्यात् ।

यथा अरेसाबजरेसाघातः द्वितीयरेसायाः बददहहजसण्डानां

अरेखायाः घातेन समानोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

पुनर्बञ्चलम्बो बजरेसायां अतुल्यः कार्यः । समकोणबवचतुर्भुजं कार्यम् ।



एतत् क्षेत्रं अरेखाबजरेखाघातरूपं जातम् । पुनर्दतरेखा हक-रेखा च बझरेखायाः समानान्तरा कार्या। एते द्वे रेखे अरेखासमे जाते । बतक्षेत्रं दकक्षेत्रं हवक्षेत्रं च अरेखाघातो बददहहजखण्डस्य जातः। एतेषां योगो बवक्षेत्रं भवति ।

#### प्रकारान्तरम् ।

बददहृहजलण्डानां <sup>अ</sup>योगो बजरेला भवति । एतत्लण्डअरेल-योघीतयोगः अरेलासँकलबजरेलाघात एव स्यात् ।

# अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ।

तंत्र रेखा स्वखण्डैः पृथक् गुणिता तद्योगः रेखावर्गसमः स्यात ।

९ शक्लानि K. २ °घातेन K. ३ योगेन A. B. °संपूर्ण D. K. ५ तत्र रेखा निजलण्डगुणा सती रेखावर्ग एव स्यात् । A. B.

भवति ।

यथा अबरेखा अजजबखण्डाम्यां गुणिता तैद्योगो अववर्गतुल्यो

उपर्वेत्तिः । अबरेखोपरि अहसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । जझरेखा अदरेखायाः समानान्तरा दे कार्या । अदरेखा अबरेखा च समानास्ति । अझक्षेत्रं जहक्षेत्रं च अर्बरेसातुत्याया अदरेसाया अजजबयोर्घातोऽस्ति । एततक्षेत्रद्वययोग एव अबरेखाया वर्गः । इदमेवेष्टम् ॥ प्रकारान्तरम् ॥ दरेला अबरेलातुल्या कार्या । तदा दरेलाघातः अबरेलाघातः अबरेखावर्गोऽस्ति । अयं दरेखाअबरेखाखण्डयो-र्घातत्रस्यो जातः ॥ अथ तृतीयं क्षेत्रम। तत्र रेखानिजैकखण्डघातः खण्डघातगुणरूपखण्डवर्गयोग-तुल्यो भवति। यथा अबरेलाबजरेलाघातः बजवर्गअजजबघातयोगतल्योऽस्ति । कर्तैः । बजरेखोपरि जहसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । ब अद्क्षेत्रं संपूर्ण कार्यम् । तदा अझरेखा जदरेखापि जबरेखासमास्ति । तदा अहक्षेत्रं अबबजयोघीतत्र्ल्यमस्ति । इद्मेव क्षेत्रं जबवर्ग- झॅ १ अवनगेतुल्या स्यात् । A. B. २ D. K. have पुनः for उपपत्तिः.

३ A. B. omit this sentence. ४ अवरेखातुल्यअद्रेखाघातअजजबख-ण्डरेखयोघीततुल्योऽस्ति । A. B. ५ रेखायां A. B. ६ रेखायाः खण्डद्वयोघी-

ततत्वण्डवर्गयोगताच्यो भवति । A. B. ७ अत्रोपपत्तिः A. B.

Digitized by Google

समजहस्रेत्रअजजवधातसमअद्क्षेत्रयोयींगतुल्यम् । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

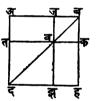
दरेला जबरेलातुल्या कल्प्या । दरेलाअबरेलयोर्घातः अबरेला-बजरेलयोर्घातः । अबरेलाबजरेलयोर्घातोऽपि अ ज व दरेलाअजरेलाघातदरेलाजबरेलाघातयोर्थोगेन समः । द्वयोर्घातयोर्मघ्ये एको घातः अजजबयोर्घातोऽस्ति द्वितीयो जबवर्गोऽस्ति ॥

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

तत्र रेखावर्गः स्वखण्डयोर्वर्गयोगेन द्विगुणतत्खण्डघात-युतेन समो भवति।

यथा अबरेखायाः जिचहे खण्डद्वयं कृतमस्ति । अस्यां अबरे-खायां अद्दसमकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । जझरेखा अदरेखासमाना-

न्तरा कार्या। बदरेखा लग्ना कार्या। इयं रेखा जझ-रेखायां विचन्हे संपातं करिष्यति । विचन्हात् व- त तकरेखा अबरेखासमानान्तरा कार्या। तदा ज-वबकोणः अदवकोणेन समः स्वात्। अदवकोणः



अवदकोणेन समोऽस्ति । तदा जवरेखा जबरेखासमाना जाता । तदा जकक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । इदमेव बजरेखाया वर्गः ।

अनेनैव प्रकारेण तझक्षेत्रं अजरेखाया वर्गः। अवक्षेत्रं अजजबरे-खयोघीततुल्यमस्ति । वहक्षेत्रमेतत्क्षेत्रसमानमस्ति । तदा अबवर्गरूपं अहक्षेत्रं अजरेखावर्गसमं तझक्षेत्रं जबरेखावर्गसमं जकक्षेत्रं अजज-बघातसमं अवक्षेत्रं अजजबघातसमं वहक्षेत्रं चैतेषां चतुर्णी योगतु-ल्यमस्ति । इदमेवास्माकमभीष्टम् ॥

अथ द्वितीयः प्रकारः ।

अबअजयोर्घातः अजवर्गस्य अजजबघातयोर्थोगस्य च तुल्योऽस्ति ।

पुनः अबबजयोर्घातः बजवर्गअजजबयोर्घाततुल्यः । तदा अब-अजयोः अबबजयोर्घातयोगः अबवर्गरूपः अजवर्गेण जबवर्गेण च अजजबयोर्द्विगुणघातेन तुल्योऽस्ति ॥

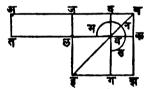
# अथ पद्ममं क्षेत्रम् ।

अभीष्टरेखायाः खण्डद्वयं समानं पुनस्तस्या एव खण्डद्वयं न्यूनाधिकं यदा भवति तदा खण्डद्वयद्यीत एकखण्डरे-खार्जान्तरवर्गयुक्तोऽर्द्धरेखावर्गेण तुल्यो भवति ।

यथा अबरेला जिचेहे अद्भिता कृता दिचेहे लण्डद्वयं च कृतं तदा अददवयोर्घातज्जदवर्गयोगो जबवर्गेण तुल्यो भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

जबरेस्रोपरि दबरेस्रोपरि जझसेत्रं दकक्षेत्रं च समकोणसमचतुर्भुजं का-



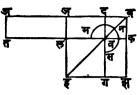
र्यम् । बहकणः कार्यः । द्वरेखा कवरेखा च दीर्घा कार्या गचिहलचिहपर्यन्तम् । तचिहपर्यन्तमपि जतक्षेत्रं पूर्णं कार्यम् । तदा जवक्षेत्रं वझक्षेत्रं च समानमस्ति । दकक्षेत्रं द्वयोर्थकं कार्यम् । तदा जकक्षेत्रं जतक्षेत्रमपि दझक्षेत्रस्य समानं स्यात् । पुनर्जवक्षेत्रं द्वयोर्थकं कियते । तदा अवक्षेत्रं मनसक्षेत्रसमानं स्यात् । पुनर्ज्ञगक्षेत्रं द्वयोर्थकं कियते । तदा अददबघातसमञ्जवक्षेत्रजदवर्गसम-लगक्षेत्रयोर्थोगः जबवर्गसमजझक्षेत्रजुल्यो जातः । इदमेवास्माक-मिष्टम् ।

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

अदद्बयोर्घातो जबद्बघातरूपअजद्बधातजद्दबघाततुल्यो-ऽस्ति । पुनरूभयोः समयोर्घातयोर्जदवर्गी युक्तः कार्यः । अनेन किं

१ कार्य खण्डद्वयं च न्यूनाधिकं कार्ये D. K. १ ° घात एकखण्डार्द्धरेखा-न्तरकायोगां: A. B.

जातम् । अदद्बघातो जद्दवर्गोऽनयो-र्योगो जबद्बघातो जद्द्बघातो जद्वर्गभौतेषां त्रयाणां योगेन समः। पुनर्जद्द्बघातो जद्दवर्गोऽनयोयोंगो



जबजद्घातेन तुल्यः । पुनर्जबजद्घातो जबद्बघातोऽनयो-योंगो जबवरोंण समः । तदा अद्द्बघातो जद्वगोंऽनयोयोंगो जबवरोंण समानो जातः ।

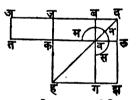
# अथ पष्ठं क्षेत्रम् ।

तत्रैका रेखांद्विता कार्या रेखायामभीष्टा रेखा योज्या रेखायोगोऽभीष्टरेखया गुण्यस्तत्र रेखार्द्धवर्गो युक्तः कार्यः अयं रेखार्द्वाभीष्टरेखायोगस्य वर्गेण समो भवति ।

यथा अवरेखा जिचहेऽदिता कृता । अस्यां बदरेखा योजिता । अथ अदबदयोघीतो बजवर्गोऽनयोयींगो जदवर्गसमानो जातः ।

अत्रोपपत्तिः ।

जदोपरि बदोपरि जझक्षेत्रं बलक्षेत्रं समकोणं समचतुर्भुजं कृत्वा तत् क्षेत्रं संपूर्ण कार्यम् । जतक्षेत्रं जबक्षेत्रसमानं वझक्षे-



त्रस्यापि समानम् । जलक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । अलक्षेत्रं मनसक्षेत्रेण समानं जातम् । पुनः कगक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । अलक्षेत्रं अदद-लघातरूपमथवा अददबघातरूपं कगक्षेत्रं च जबवर्गसममनयोयोंगो जक्मक्षेत्रेण जदवर्गरूपेण समानो जातः । इदमेवासादिष्टम् ॥

# पुनः प्रकारान्तरम्॥

अदबद्घातः अबबद्घाततुल्यस्य द्विगुणजवबद्घातस्य बद-षर्गयुक्तस्य समानः । जबवर्ग उभयोः समयोर्युक्तः कार्यः । एतेन किं जातम् । अदबद्घातो जबवर्गोऽनयोर्योगो द्विगुणजबबद्घातो जबवर्गश्च बद्दवर्गश्चैतेषां योगेन तु जद्दर्गतुल्येन समानो जातः ॥

# अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया वर्गो रेखेंक खण्डवर्गश्चानयोर्योगो द्विराणरे- खातत्खण्डघातो द्वितीयखण्डवर्गश्चानयोर्योगेन समः।

यथा अबवर्गबजवर्गयोर्योगः अबबजयोद्धिगुणघातअजवर्गयो-र्योगेन समोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अबोपिर समकोणं समचतुर्भुजं कार्यम् । बकं बजातुल्यं कार्यम् । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अझक्षेत्रं झहक्षेत्रं समानमस्ति । जब्धेत्रं जहक्षेत्रमुभयोर्थोज्यम् । तदा अकक्षेत्रं जहक्षेत्रं जहक्षेत्रं समानं भविष्यति । अनयोर्थोगः अकक्षेत्राहिगुणो- ऽस्ति । अपि च लमनक्षेत्रजक्वर्गयोगेन समानम- इ व इ

स्ति । पुनस्तवक्षेत्रमुभयोर्थोज्यम् । तदा लमनक्षेत्रं जकक्षेत्रं तवक्षेत्र-मेतेषां योगोऽथवा अहक्षेत्रं जकक्षेत्रं अववर्गेण जववर्गेण कमेण सममनयोर्थोगो द्विगुणअववजघाततुल्यं द्विगुणं अकक्षेत्रं अजव-र्गतुल्यं तवक्षेत्रमनयोर्थोगेन समः । इदमेवास्माकिमिष्टम् ।

#### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अबवर्गः अजवर्गजबवर्गद्विष्मस्त्रण्डघातयोगेन समः । पुनर्जब-वर्ग उभयोर्थोज्यः । तदा अबवर्गजबवर्गयोर्थोगो द्विगुणजबवर्गद्विगुण-अजजबघातअजवर्गयोगेन समः । जबवर्गअजजबघातयोगः अबजबघातेन समः । तदा अबजबवर्गयोर्थोगो द्विगुणअबजब-घातअजवर्गयोगसमः॥

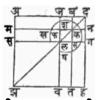
# अथाष्टमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया अभीष्टं खण्डद्वयं कार्य रेखास्वकीयैकखण्ड-गुणा चतुर्गुणा चापरखण्डवर्गयुता सती रेखाप्रथमखण्डयोग-वर्गतुल्या भवति ।

९ एकखण्ड $^{\circ}$  D. २ रेखातत्खण्डघातद्विगुणः A. B. द्विगुणो रेखातत्खण्ड $^{\circ}$ भातः K. ३ द्विमञ्जज्ञस्य घातयोगेन A. B.

यथा अबरेखा तस्याः खण्डद्वयमेकं जवं द्वितीयं अजम् । अबरेखायां जबतुल्यं बदं योज्यम्। अब- म जबघातश्चतुर्गुणः अजवर्गयुक्तः अद्दर्गतुल्यो जातः।

अत्रोपपत्तिः ।



अदरेखायां अहक्षेत्रं समकोणं समचतुर्भुजं कार्यम् । द्झकणः कार्यः । जवरेखा बतरेखा च अझरेखायाः समानान्तरा च कार्या यथा एतह्नयं दझरेखायां कल्लचिह्नयोः संपातं करिष्यति । पुनराभ्यां चिह्नाभ्यां कमनरेखा लसगरेखा अदरेखायाः समानान्तरा कार्या । जकक्षेत्रं बनक्षेत्रं फसक्षेत्रं कगक्षेत्रं चैतानि चत्वारि समकोणसमचनुर्भुजानि जातानि समानि स्युः । एतेषां योगः चतुर्गुणितजकक्षेत्रतसमानः । पुनः अफक्षेत्रं मल्लं सहं लतं एतानि समानानि । एतेषां योगः चतुर्गुणितअकक्षेत्रतसमानः । पुनः अफक्षेत्रं मल्लं सहं लतं एतानि समानानि । एतेषां योगः चतुर्गुणितअकक्षेत्रतसमानम् । अकक्षेत्रं तु अबबक्षातरूपमित्त । अबजबयोरिप धानतोऽस्ति । अजवर्गतुल्यसवक्षेत्रेण युतं खश्यक्षेत्रं अदवर्गतुल्यअहन् क्षेत्रेण समानं जातम् । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ॥

अवबजयोघीतः अजजबघातजबवर्गयोगेन तुत्यः । चतुर्गुण-अजजबघातः द्विगुणअजजदघातेन तुल्यः । चतुर्गुणजबवर्गो जद-वर्गेण समानः । तदा चतुर्गुणअबजबघातो द्विगुणअजजदघात-जदवर्गयोगेन तुल्यः । पुनः अजवर्ग उभयोयींज्यः । तदा चतुर्गुण-अबजबघातअजवर्गयोयींगो द्विगुणअजजदघातअजवर्गजदवर्गयो-गेन तुल्यः । योगस्तु अदवर्गोऽस्ति ।

# अथ नवमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाया अभीष्टं खण्डद्वयं कार्यं तत्र खण्डद्वयवर्ग-योग एकखण्डरेखाईयोरन्तरस्य द्विगुणवर्गेणाईरेखाया द्वि-गुणवर्गयुतेन समानः।

यथा अबरेखा जिचहोपरि अद्विता कृता दिचहोपरि खण्डद्वयं कृतम् । तत्र अद्वर्गद्ववर्गयोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजद्वर्गयोर्यो-गत्रत्योऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः ।

जिचहात् जहरूम्बः अजरेलातुल्यः कार्यः । पुनः अहरेला बह-रेखा च कार्या । दिचिहात् दझरेखा जहरेखायाः समानान्तरा कार्या । **श**चिद्वात् शवरेला दजरेलायाः समानान्तरा कार्या । अश्वरेला *क*मा

कार्या । अजहत्रिमुजे बजहत्रिमुजे अज-भुजबजभुजी जहभुजेन समानी स्तः जिचिद्गस्य कोणद्वयं समकोणमस्ति । अहज- अ-

कोणः समकोणार्द्धी जातः । बहजकोणोऽपि समकोणार्द्धी जातः । अहझकोणः समकोणो जातः । एवं बदझत्रिभुजे बकोणः समकोणा-र्द्धमित । बद्दश्कोणः समकोणोऽस्ति । तदा बश्चद्कोणोऽपि समको-णार्द्ध जातः । बदशद्भुजौ समानौ जातौ। एवं हवश्रत्रिभुजे हवभुज-**झव**भुजी समानी स्तः । अजहजयोः समस्वेन अहवर्गो द्विगुणअज-वर्गेण समानो जातः । एवं ह्झवर्गो द्विगुणझववर्गेण समानो जातः । **झ**ववर्गस्तु जदवर्गतुल्योऽस्ति । तदा अहवर्गहझवर्गयोगः अझव-गोंऽस्ति । अयं अझवर्गः अदवर्गदझवर्गयोगतुल्योऽस्ति । अदवर्ग-दश्वायोगः अदवर्गदबवर्गयोगेन तुल्यः। एते सर्वेऽपि द्विगुणअ-जनगद्विगुणजद्वर्गयोगेन तुल्याः सन्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

मकारान्तरम् ॥ अदरेखायां बदरेखायां दशक्षेत्रं दसक्षेत्रं <sup>ल</sup> च समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । जवरेला <sup>श</sup> जदरेलायास्तुल्या पृथकार्या । अहरेला कार्या। सनरेला वर्द्धनीया लिचिहपर्यन्तम् । वफरेला जछरेला च अझरेलायाः समानान्तरा कार्या । शगकखरेखा अबरेखायाः समानान्तरा कार्या।

स

वलक्षेत्रं दसक्षेत्रं च समानं जातमिति निश्चितम् । दमक्षेत्रं जतं लगं शफं एतानि चत्वारि समानि । एवं अ व ज व व व नकक्षेत्रं खछं मगं कफं एतान्यि समानािन । रु व म न व जशक्षेत्रखछक्षेत्रयोर्थोगे पद्मक्षेत्राणि सन्ति । श म न व जशक्षेत्रखछक्षेत्रयोर्थोगे पद्मक्षेत्राणि सन्ति । श म छ ह

षाणि पद्मक्षेत्राणि पूर्वपद्मक्षेत्रसमानि सन्ति । एतानि दशक्षेत्राणि मिथो मिलित्वा दशक्षवर्गदसवर्गयोगतुल्यानि सन्ति । तदा अदवर्ग-दववर्गयोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोगतुल्यो जातः । इदमे-वासिदिष्टम् ।

#### मकारान्तरम् ।

अजरेसायाः सकाशात् जहं जदतुल्यं पृथक्षार्यम् । तत्र द्विगुण-अजवर्गजहवर्गन्योयोगः अजवर्गजहवर्ग- अहं जद् व योयोगेन तुल्यः । तत्र जहं जदतुल्यं अहं दबतुल्यमस्ति । तदा द्विगुणअजजद्यातद्ववर्गयोयोगः अजवर्ग-जदवर्गयोयोगेन तुल्योऽस्ति । पुनः अजवर्गजद्वर्गयोयोगो द्वयो-योज्यते । तदा द्विगुणअजजद्यातअजवर्गजद्वर्गद्ववर्गाणां योगः अदवर्गद्ववर्गरूपोऽस्ति । अयं द्विगुणअजवर्गद्विगुणजद्वर्गयोगेन तुल्यो मवति ॥

# दशमं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखायामपररेखा युक्ता कार्यो तत्र सर्वरेखाया वर्गो योज्यरेखावर्गयुतः पूर्वरेखार्द्धवर्गेण द्विगुणेनाऽवशिष्टरेखायो-ज्यरेखावर्गेण द्विगुणेन समानोऽस्ति ।

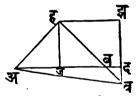
यथा अबरेखायों बदरेखायोगः कृतः । पुनः अबरेखा जिचेदे अदिता कृता । तत्र अदवर्गबदवर्गयोयोंगो द्विगुणअजवर्गद्विगुण-जदवर्गयोयोंगेन तुल्योऽस्ति ।

९ °या उपरि A. B. ९ °खोपरि A. B. F.

#### अत्रोपपत्तिः ।

जिचहात् जहलम्बः अजतुल्यः कार्यः। अहरेला हबरेला च युक्ता कार्या । दिचहात् दझरेखा जहरेखाया समानान्तरा कार्या । हचि-हात् हङ्गरेखा जदरेखायाः समानान्तरा कार्या। एते रेखे झचिह्ने संल-मे स्तः। हबरेला झदरेला दीर्घा कार्या यथा विचेहे संपातं करिष्यति । पुनः अवरेखा संयोज्या । अजहत्रिभुजे बजहत्रिभुजे च अजं बजं हुजं एतानि समानि सन्ति । जस्य कोणद्वयं समकोणमस्ति तदा अहजकोणोऽर्द्धसमकोणोऽस्ति । बहजकोणश्चार्द्धसमकोणोऽस्ति अहबकोणश्च समकोणो जातः । दजहकोणस्तु पूर्वमेव समकोण आसीत्तदा झहजकोणोऽपि समकोणो जात एव । पुनः बहझकोणः

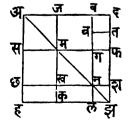
अर्द्धसमकोणो जातः । हृझवकोणः स-मकोणो जातः। तदा झवहकोणो हझव-त्रिभुजेऽपि अर्द्धसमकोणो जातः । तदा ह्झभुजवझभुजी च समानी जाती



अनेनैव पकारेण बद्भुजवद्भुजौ बवदत्रिभुजे समानौ स्तः। पुनः अजहजयोः समत्वेन अहवर्गो द्विगुणअजवर्गेण तुल्यो जातः। पुनहेववर्गो द्विगुणह्झवर्गेण समानः । द्विगुणजदवर्गेणापि समानः। तदा अहवर्गहववर्गयोगः अववर्गतुल्यः । अयं अदवर्गदववर्गयो-गस्य अदवर्गद्ववर्गयोगस्यापि तुल्यः। अयं योगो द्विगुणअजवर्ग-द्विगुणजदवर्गयोयोंगेन तुल्यो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ।

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अदरेखोपरि बदरेखोपरि च दहक्षेत्रं दबक्षेत्रं च समकोणसमचतु-र्भुजं कार्यम् । तत्र अझकर्णः कार्यः । ज-चिहात बचिहाच जकरेखा बलरेखा च अइरेखायाः समानान्तरा कार्या । मचिहात् नचिद्वात मसफरेखा नछशरेखा अदरे-खायाः समानान्तरा कार्या ।



दवक्षेत्रशलक्षेत्रे समाने जात इति निश्चितम् । पुनर्जसक्षेत्रं बमक्षेत्रं मछक्षेत्रं गखक्षेत्रं चैतानि समानीति निश्वितम् ॥ एवं हि दगक्षेत्रं फनक्षेत्रं खहक्षेत्रं सम्बक्षेत्रं चैतानि समानीति । पुनर्जसक्षेत्रफकक्षेत्रयोयोगः पूर्वक्षेत्रपञ्चक्षेत्ररूपोऽस्ति ।
एतद्वयं अजवर्गजदवर्गयोयोगतुल्यमस्ति । ह ल झ
शेषं पञ्चक्षेत्राणि एतत्पञ्चक्षेत्रसमानि सन्ति । एतानि सर्वाणि क्षेत्राणि
दहक्षेत्रदवक्षेत्रयोयोगतुल्यानि सन्ति । ततः अदवर्गबदवर्गयोयोगः
द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोयोगेन तुल्यो जातः ।

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

जदरेसायाः बचिद्वे सण्डद्वयं कार्यम्। तदा द्विगुणो जबजद्घातो बदवर्गयुक्तः अथवा द्विगुणअजजद्घात- अ ज व द द बदवर्गयोयोंगो जबवर्गजद्वर्गयोयोंगतुत्यो-

ऽस्ति । अजवर्गजदवर्गयोगेनापि तुल्योऽस्ति । पुनः अजवर्ग-जदवर्गयोर्थोगः पूर्वद्वयोर्थोज्यते । तदा अदवर्गबद्वर्गयोर्थोगो द्विगुणअजवर्गद्विगुणजदवर्गयोर्थोगेन तुल्यो भवति ।

# अधैकादशं क्षेत्रम्॥

तत्रैकरेखायास्तथा खण्डद्वयं कार्ये यथैकखण्डरेखयो-र्घातो द्वितीयखण्डवर्गः स्यात्।

यथा अबरेला कल्पिता । अस्योपिर अद्समकोणसमचतुर्भुज-क्षेत्रं कार्यम् । अज्ञभुजो हचिहेऽद्वितः कार्यः । क बहरेला छमा कार्या । हअरेला तथा दीर्घा कार्या अव्यक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । अस्मात् क्षे-ज्ञात् अवरेलायाः तचिह्नोपिर तादृशं लण्डद्रयं ज क द जातम् । अस्योपपत्तिः ।

हअभुजअवभुजयोयोंगः हबभुजादिषकोऽस्ति । हझभुजादप्य-िषकः । पुनः हुअभुज उभयोः शोध्यः । तदा अझं अतमि च अवान्यूनमस्ति । तस्मात् अवस्य तिचिद्वे सण्डद्वयं तथा जातम् ।

कथं जातमित्यत्रोच्यते ।

जअरेखा हिचिद्देऽदिता जाता । जअरेखायामझरेखाया बोगः कृतः । तदा जझअझघातहअवर्गयोयोंगो हझवर्गण समानोऽस्ति । हववर्गणापि तुल्योऽस्ति । हअवर्गअववर्गयोयोंगेनापि तुल्योऽस्ति । पुन्हंअवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा जझझअघातो जझझवयोषितोऽपि झकक्षेत्ररूपः अववर्गसमअदक्षेत्रेण तुल्यो जातः । पुनः अकक्षेत्रं द्वयोः शोध्यम् । तदा अतवर्गसमं अवक्षेत्रं तदक्षेत्रसमानमविश्वष्टम् । तदा अतवर्गसमं अवक्षेत्रं तदक्षेत्रसमानमविश्वष्टम् । तदि अजतवष्टिम् । तदा अजतवष्टिम् । तदा अजतवर्गसमानो जातः । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

अदं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । बदं हिचिहेऽद्वितं कार्यम् । हुअरेखा कार्या । हुझं हुअतुत्यं कार्यम् । जझ- त क झरेखा लगा कार्या । अनया अबरेखाया विचेहे

तादशं खण्डद्वयं कृतम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

शतरेखा ब अरेखायाः समानान्तरा कार्या । जअरेखा तथा वर्द्धनीया यथा शतरेखायां त-

चिह्ने संपातं करोति । पुनर्वचिह्नाद् वकलरेला बदस्य समानान्तरा कार्या । तवसेत्रं वदसेत्रं मिश्रः समानम् । अलक्षेत्रमुभयोर्थोज्यम् । तदा तलक्षेत्रं अदसेत्रं च समानं भविष्यति । बदस्य हचिह्नेऽर्धीक-रणाद् वझयोगाचेदं निश्चितं दशस्वच्यातः अदसेत्रसमानोऽस्त्रीति जततक्ष्यातेनापि समः ।

अनयोपपत्त्या तकझबयोः समानत्वं निश्चितम् । तकतअरेखयोः समानत्वं च निश्चितम् । तदा बदक्षेत्रसमानं तबक्षेत्रमस्ति । तत् अब-बवघातोऽस्ति । अयं अववर्गतुल्योऽस्ति ॥

# अथ द्वादशक्षेत्रम्।

यन्निभुजमधिककोणरूपमस्ति तत्कोणसन्मुखभुजस्य वर्गो-ऽवशिष्टभुजद्वयवर्गयोगादधिको भवति ।

यथा अवजित्रभुनस्य अकोणोऽधिककोणोऽस्ति। बचिद्वाद् बदलम्बो वर्धितअजेरस्रोपरि कार्यः । बजवर्गो बअवर्गअजवर्गयोगादिधकोऽस्ति। कि-यानिधकः। द्विगुणअजअद्घाततुल्योऽधिकः।

अत्रोपपत्तिः ।

जदस्य अचिद्दे सण्डद्वयं जातम् । जदवर्गो दअवर्गअजवर्गद्विगुणअदअजघातयोगतुल्योऽस्ति । पुनर्बदवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः ।
एवं कृते बदवर्गदजवर्गयोगो बजवर्गतुल्योऽस्ति । बदवर्गदअवर्गयोगो बअवर्गतुल्योऽस्ति । अयं अजवर्गद्विगुणदअअजघातयुक्तः
कृतश्चेत् बजवर्गतुल्यो भवति । तदा बजवर्गो बअवर्गअजवर्गयोगाद्
द्विगुणदअअजघाततुल्योऽधिको जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ।

# अथ त्रयोदशक्षेत्रम् ।

यस्य त्रिभुजस्य न्यूनकोणोऽस्ति तत्कोणसन्मुखभुजवर्ग इतरभुजवर्गयोगाच्यूनो भवति ।

यथा अवजित्रमुने बकोणो न्यूनकोणोऽस्ति । अचिद्वात् अद-रूम्बो बजोपरि कार्यः । अजवर्गः अववर्गबजवर्गयोगाद् द्विगुण-जववद्घाततुल्यो न्यूनोऽस्ति ।

अत्रोपपत्तिः।

जबस द्विहे सण्डद्वयं जातम् । तदा जबवर्गबद्वर्गयोगो द्वि-

गुणजबबद्धातजदवर्गयोगसमानः । पुनः अद्वर्ग उभयोयोज्यः ।

तदा जबवर्गबद्वर्गअद्वर्गयोगो जबवर्गबअव-र्गयोगतुल्यः । अयं द्विगुणजबबद्धातजद्वर्ग दअवर्गयोगसमानः। जद्वर्गद्अवर्गयोगो जअ-वर्गसमानः। तदा जअवर्गो जबवर्गबअवर्गयो-



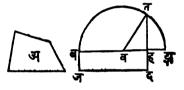
गाद् द्विगुणजववद्घाततुल्यो न्यूनो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्रैकं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रमन्यक्षेत्रसमानं कर्तव्य-मस्ति ।

यथा अक्षेत्रसमानं क्षेत्रं कर्तव्यमस्ति । तदा तत्क्षेत्रसमानमेकं

समकोणं क्षेत्रं कार्यम् । तद् ब-जदहक्षेत्रं भवति । पुनर्यदि बह-भुजहदभुजौ समानौ स्यातां तदा क्षेत्रं सिद्धमेव । यदि समानौ न



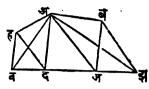
स्यातां तदा बह्नभुजो वर्द्धनीयः । ह्झं हद्तुल्यं कार्यम् । बझ्च्यासेन बतझं वृत्तार्द्धं कार्यम् । दहरेखा तिचह्रपर्यन्तं वर्द्धनीया । तदा हत-रेखा कर्तव्यसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजरूपा जाता ।

अत्रोपपत्तिः ।

बझरेला विचिद्वेऽदिता जाता हिचिद्वेऽस्या न्यूनाधिकं खण्डद्वयं जातमिला । तदा बहहझघातवहवर्गयोगो बझवर्गसमानो भवति । उक्तप्रकारेणायं बझवर्गो वतवर्गसमानः । अयं वतवर्गश्च बहवरी-हतवर्गयोगसमानः । पुनर्वहवर्ग उभयोः शोध्यः । शेषं बहहझघातो हतवर्गसमानो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

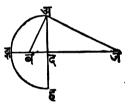
एकं त्रिभुजमभीष्टक्षेत्रसमानं कार्य यथा अबजदहक्षेत्रं कल्पि-तम् । अस्मिन् क्षेत्रे त्रिभुजानि कार्याणि तानि यथैकं अबजिन्धुजं अजदत्रिभुजं अदहत्रिभुजमेतानि क्षे-त्राणि जातानि। पुनरेकं त्रिभुजं अबज-त्रिभुजअजदत्रिभुजयोगसमानं कार्य-मुक्तप्रकारेण। तद्यथा। दजरेखा वर्द्ध-



नीया। बिचहाद् बझरेखा अजरेखायाः समानान्तरा कार्या। इमे रेखे झिचिहे संपातं करिष्यतः। पुनः अझरेखा कार्या। तदा अबजिनुअज-अझजिनुअजे समाने। तदा अझदित्रभुजं अबजिनुभुजअजदित्र-भुजयोगसमानं जातम्।

पुनरनेनैव प्रकारेणान्यश्रिभुजं अझदत्रिभुजअदहत्रिभुजयोगसमानं कार्यम् । पुनरनेनैव प्रकारेण त्रिभुजं कार्य यावत्कल्पितक्षेत्रसमानं

स्यात् । पुनः समकोणसमचतुर्भुजं त्रिभुजस-मानं कार्यम् । यथा अबजित्रभुजे अचिहाद् अदलम्बो बजोपरि कार्यः । अयं लम्बो झ यावद् दहं बजार्द्वतुल्यं भवति तावत्पर्यन्तं वर्द्वनीयः। अहव्यासेन अझहवृत्ताद्धं कार्यम् ।



इदं वृत्तं जबरेसायां झिचिह्ने संपातं करिष्यति । तदा दर्झं कर्तव्यसम-कोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य भुजो जातः । यतो दझवर्गः अददह्रघातस-मानोऽस्ति । अयं अददह्रघातः अदबजाई घातसमानः । पुनः अदब-जाई घातिक्रभुजस्य क्षेत्रफलम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजपभुवरजयर्सिहस्य तुष्टचै द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राद्ध् जगन्नाथ इति समिभधाख्यातनाम्ना प्रणीते । मन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्थध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरतिं संगतोऽमूद्वितीयः॥

इतिश्रीमञ्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते

द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

# भथ तृतीयोऽध्यायः षद्त्रिंशच्छकलैर्युतः प्रारभ्यते ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥

तत्राज्ञातकेन्द्रस्य वृत्तस्य केन्द्रज्ञानोपायः क्रियते ॥

यथा अबवृत्तम् । तैरपालौ दिचह्रजिचिह्ने कृते । जदरेला च कृता । इयं रेला हिचिह्नेऽद्विता कृता । पुनर्हचिह्नादस्यां रेलायां हुअलम्बः कार्यः । तथा पार्श्वद्वये लम्बो वर्द्धनीयो यथा वृत्तपालौ अ-चिह्ने बचिह्ने संपातं करोति । पुनः अबरेला धिचिह्नेऽअद्विता कार्या तिच्चहुमेव वृत्तकेन्द्रं स्यात् ।

धत्रोपपत्तिः।

यद्येतत्केन्द्रं न स्थात् तिचन्हं केन्द्रं भैविष्यति। पुनः तजरेला हतरेला तदरेलाश्च कार्याः। तदा तजहित्र मुजस्य तदहित्र भुजस्य मुजाः परस्परं तुल्या भवन्ति। कोणा अपि समाना भविष्यन्ति। तत् तहजकोण-तहदकोणावपि समानौ जातौ। एतत्कोणद्वयं समकोणद्वयं जातम्। पुनः अहजकोणअहदकोणौ पूर्वं समकोणावास्ताम्। एतदनुपपन्नम्।

तदा विचिद्दमेव केन्द्रं नान्यत् ॥

असादिदं निश्चितं यदि द्वे पूर्णज्ये तथा संपातं करिष्यतो यशा

चत्वारि समकोणक्षेत्राणि भविष्यन्ति । यैद्येका
पूर्णज्या द्वितीयज्यार्द्धे लमा भैवति समकोणक्षेत्रद्वयं स्यात् तदेका पूर्णज्या केन्द्रलमा स्यात् ।
पुनरेतनिश्चितमेकस्याः पूर्णज्याया अद्धीनस्रतो
लम्बः केन्द्रे संपातं करोतीति ।



अथ पूर्वकृतअबरेखायां विचन्हं केन्द्रं न स्यात् झं केन्द्रं स्यात् । तदा अबरेखा विचन्हेऽप्यद्धिता भवति झचिन्हेऽप्येतदशुद्धम् ॥

१ तस्मिन् पाले D. तस्मिन् वृत्तपाले K. २ इति कल्प्यते A. B. ३ A. B. add चेत्. A. B. have पुनरेका &c. ४ कार्यो A. B. ५ एतत्तदेव संभवति यदैका पूर्णज्या &c. B.

# अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तपाली चिह्नद्वयलग्ना रेखा कार्या सा वृत्तान्तर्गतैव भवति न हि बोह्मगा।

यथा अबवृत्तपालौ जिचन्हद्चिन्हयोर्जदरेखा क्रुता तदेयं रेखा कृतान्तर्गतैव जाता।

अत्रोपपत्तिः।

यदि वृत्तान्तर्गता न स्यात् तदा बहिर्गता भवति यथा जहदमस्ति । अस्य वृत्तस्य केन्द्रं निष्काश्यते । तत्र झिचिह्नं केन्द्रं चेल्लभ्यते पुनः

झदशजरेले कार्ये। जहदरेलायां हिच इं कार्यम्। झहरेला कार्या। झदहकोणझजहकोणौ झदह-त्रिभुजे झजहत्रिभुजे च तुल्यौ स्तः। झहदकोणो अ झजहकोणादिषकोऽस्ति। तदा झहदकोणो झ-दहकोणादिषको भविष्यति। तदा झदरेला झबरे-लापि च झहरेलाया अधिका भविष्यति। इदं व

सापि च झहरेसाया अधिका भविष्यति । इदं बाधितम् । अनेन प्रकारेण जदरेसा वृत्तपाळावपि न पततीति निश्चितम् । तदा जदरेसा वृत्तान्तर्गतैव स्थात् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथ तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्ते पूर्णजीबायां केन्द्रान्निस्तरेखा संपातं करिष्यति । यदि सा केन्द्रगा रेखा पूर्णज्यार्द्ध करोति तदा सैव लम्बः। यदीयं रेखा लम्बरूपा भवति तदा पूर्णज्याया अर्द्ध करि-ष्यस्येव ।

बया अववृत्ते जदपूर्णज्यायाया झकेन्द्रानिस्तया झहरेखया सं-पातः कृतः। पुनर्जदं हचिह्ने तथैवार्द्धितं कृतं तदा झहं जदोपरि रुम्बो जातः।

<sup>9</sup> बहिर्गता A. B.

#### अस्योपपत्तिः ।

झजरेला झदरेला च कार्या। झजहत्रिभुजस्य झदहत्रिभुजस्य च

भुजाः परस्परं समानाः सन्ति । कोणा अपि परस्परं समानाः सन्ति । तदा **झहजकोणझहद**कोणौ मिथ-स्तुत्यौ स्याताम्। तदैतौ द्वौ कोणौ समकोणौ जातौ।

पुनर्यदि **झहं** जदोपरि लम्बः कल्पनीयस्तदा ज इत्र

अत्रोपपत्तिः।

श्रजहकोणश्रदहकोणी मिथस्तुल्यो स्तः । हचिहस्य कोणद्रयं समकोणद्रयमस्ति। श्रहरेखा श्रहजित्रभुजस्यापि भुजोऽस्ति श्रहदित्रभुज-स्यापि भुजोऽस्ति । तदैतित्रभुजद्रयस्य भुजाः कोणाश्च परस्परं समाना जाताः। तदा हजभुजहदभुजो समानो जातो। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

यदि झहरेखा जदपूर्णजीवाया अर्द्ध करोति लम्बरूपा च न स्यात् तदा कल्प्यते हिचहात् जदपूर्णज्योपिर हवलम्बोऽस्ति। तदा हवरेखा-जदरेखासंपातेन द्वौ समं कोणौ जातौ। द्वितीयरेखाया हबरेख-

यार्द्धमपि कृतम् । अनयोर्मध्ये व कापि केन्द्रे न गता । ईदं बाधितम् ।

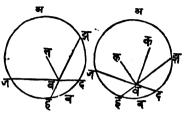
यदि झहरेसा जदपूर्णज्यायां लम्बो भवत्यद्धी न करोति तदा ज-दरेसाया अद्धी कचिह्ने भविष्यतीति कल्प्यते। तसात् कचिह्नात्तकरेसा झहरेसायाः समानान्तरा कार्या। तदैषा तकरेसा जदरेसायां लम्बो भविष्यति। यद्येकरेसा द्वितीयरेसायाः समकोणे संपातं करोत्यर्षे च करोति तत्र समकोणद्वयं जातमेकापि रेसा केन्द्रं न गैतेदं बाधितम्॥

<sup>9</sup> इदमनुपपन्नम् A. B. २ °वेदमनुपपन्नम् A. B.

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

यदि द्वे पूर्णज्ये केन्द्रादन्यत्र संपातं करिष्यतस्ते द्वे अपि

रेखे संपातेऽद्धिते न भवतः । यथा जदपूर्णज्या हझपूर्णज्या अवदृते विचेद्दे संपातं करिष्यति। अस्य दृत्तस्य केन्द्रं तिचह्नमितः। अत्रोपपत्तिः।



यदि विचिह्ने द्वयोरर्द्धे भवति तदा तवरेखा कार्या । इयं तवरेखा-द्वयोः पूर्णजीवयोर्लम्बो भविष्यति । तदा तवहसमकोणस्तवजसम-कोण एतौ मिथः समानौ स्याताम् । इदमशुद्धम् । तदिष्टं सिद्धम् ।

# प्रकारान्तरम् ।

विद्यात् जदरेस्रोपिर वकलम्बः कार्यः । ह्रझरेस्रोपिर वस्रलम्बः कार्यः । तदैतौ लम्बौ केन्द्रे संपातं करिष्यतः । तदा विचहं केन्द्रं स्यात् । केन्द्रं त्वन्यत्र कल्पितम् । तसादेतदशुद्धम् । असदिष्टमेव समीचीनम् ॥

# अथ पद्ममं क्षेत्रम् ।

यद्वृत्तद्वयं परस्परं संपातं करोति तयोः केन्द्रमेकत्र न स्यात् किं तु भिन्नं भिन्नं स्यादिति प्रतिपाद्यते ।

यथा अबृश्तं जदृश्तं कल्पितम् ।

अत्रोपपत्तिः ।

यदि द्वयोरेकं केन्द्रं स्यात् तर्हि इचिहे केन्द्रं कल्पितम् । इअ-

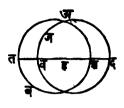
रेसा कार्या हझदरेसा च कार्या । तदा हझरेसा हअ-रेसासमाना स्यात् । कुतः । व्यासार्द्धत्वात् । हद-रेसा हअरेसापि समाना । अर्द्धव्यासत्वात् । पुनः हझरेसा हदरेसासमाना जाता । हअरेसायाः समानत्वात्। एका रेसा द्वितीयरेसायाः सण्डमस्ति ।

तसाहूयोः केन्द्रं भिन्नं स्थात् । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

९ मिश्रं भित्रम् । K.

#### प्रकारान्तरम् ॥

झेहरेला बर्द्धनीया बैतपर्यन्तम् । तदा हझ-रेला हदरेलाया न्यूनास्ति । तदा हबरेलाया अपि न्यूना भविष्यति । हतरेलासमानास्ति । इयं हतरेला हबरेलाया अधिकास्ति । एतदशुद्धम्।



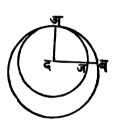
# अथ पष्टं क्षेत्रम्।

यष्ट्रचह्नयमेकस्मिश्चिह्नेऽन्तर्मिलति तष्ट्रचह्नयस्य केन्द्र-मेकत्र न भवति ।

यथा अबवृत्तं अजवृत्तम्।

अस्योपपत्तिः ।

यदि द्वयोः केन्द्रमेकमेव स्यात्तदा दिनिहं केन्द्रं कल्पितम्। दअरेला कार्या। दजबरेला च कार्या। तदा दजरेला दबरेला च मियस्तुल्या मविष्यति। दअरेलातुल्यत्वात्। एतदशुद्धम्। अस्मदिष्टमेव समीचीनम्।



# अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

यिश्वहं वृत्तान्तर्गतं केन्द्रादन्यत्र स्थितं भवति तस्मा-द्रेखा वृत्तपालिपर्यन्तं नेयाः । तासु मध्ये या रेखा केन्द्रं स्यृष्ट्रा वृत्तपालिगता सा रेखा सर्वाभ्यो रेखाभ्योऽधिका क्रेया। या केन्द्रसम्मुखा सा सर्वाभ्यो न्यूना क्रेया । महत्या रेखाया या रेखा निकटस्थिता भवति साधिका भवति । या न्यूनरेखानिकटस्थिता भवति सा न्यूना भवति । महत्या रेखाया अथवात्यल्परेखाया उभयदिशि तुल्यचापान्तरलग्ने रेखे समाने क्रेये ।

यथा अबवृत्ते तं केन्द्रं इं कल्पितचिह्नम्। इतरेखा कार्या। ततः सो-

९ दृझ B. K. २ तपर्यन्तम् K.

भयदिशि अचिद्दपर्यन्तं द्चिद्दपर्यन्तं वर्द्धनीया । पुनर्हचिद्दात् इझरेला इबरेला इअरेला कार्या। तदा इजरेला इझरेलाया अधिकास्ति।

#### अत्रोपपत्तिः।

तझरेला कार्या। इतरेलातझरेलायोगो इजतुल्यो इझरेलाया अधिकोऽित । अनेन प्रकारेण या काचित् रेला तस्या इजरेला अ-

धिका भवति । पुनर्हदरेला हअरेलाया न्यूना-िल्त । कथम् । तअरेला कार्या । तअरेलातुल्या सदरेला तहहअयोगान्यूनािल्त । पुनर्हतरेलो-मयोः शोध्या । शेषं हदरेला हअरेलाया

न्यूना स्यात् । अनेन प्रकारेणान्यरेखाभ्योऽपि न्यूना स्यात् । पुन-इंझरेखा इवरेखाया अधिकास्ति। कथम् । यदि वतरेखा झतरेखा च योज्येते तदा इतझत्रिभुजे इतवित्रभुजे तझभुजतवभुजौ समानौ स्तः। तहभुज उभयोरेकोऽस्ति। इतझकोणो इतवकोणादिधकोऽस्ति। तदा ह-झरेखा इवरेखाया अधिका जाता। अनेन प्रकारेणान्यापि रेखा ज्ञेया।

यदि इतबकोणो इतअकोणस्य समानः क्रियते इबरेखा योज्यते तदेयं रेखा इअरेखायाः समाना भविष्यति । कुतः । इतबित्रभुजे इतअत्रिभुजे तबभुजतअभुजो समानो । इतभुज उभयोरेकोऽस्ति । इतक्षकोणहतअकोणो समानो स्तः । तेन इबरेखा इअरेखायाः समाना जाता । अस्य रेखाद्वयस्य समाना रेखा कापि नास्ति । यदि मविष्यति सा इकरेखा कल्पनीया । तकरेखा कार्या । तदा तकइ-त्रिभुजबतइत्रिभुजयोर्भुजाः समाना भविष्यन्ति । तदा कतइबतइ-कोणो समानो स्तः । इदं वाधितम् । असाकिमिष्टं सिद्धम् ॥

# अथाष्टमं क्षेत्रम्।

यिश्वहं वृत्ताद्वहिर्भविष्यति तिश्वहाद्रेखा वृत्तपास्त्रिपर्यन्तं कार्याः । तत्र या रेखा वृत्ते संपातं करिष्यन्ति ताम्यो

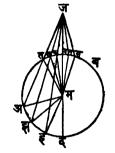
<sup>9</sup> कार्या D. K. ३ कार्या D. K. ३ भेवति A. B.

रेखाभ्यः केन्द्रगता रेखाधिका भविष्यंति । पुनरिषकरे-खाया या निकटा भवति सा दूरिस्थितरेखाया अधिका भ-वति । या रेखा वृत्तपालिपर्यन्तमात्रगता न तु भित्त्वा गता-स्तासु मध्ये या केन्द्रसम्मुखा भवति सा सर्वाभ्यो न्यूना ज्ञेया। अस्या न्यूनरेखाया या निकटस्थिता भवति सा दूरिस्थिताया न्यूना भवति । यद्रेखाद्वयमुभयदिशि समानचापे स्थितं तत्परस्परं समानं भवति ।

यथा अववृत्तं किल्पतं तत्र मकेन्द्रं जिचिह्नं किल्पतम् । जमदरेला कृता सा वृत्ते दविच्ह्नयोः संपातं करोति । पुनर्जहरेलाजझरेलाज-अरेलाः कार्याः । तदा जदरेला जहरेलाया अधिका स्यात् । यदि महरे-ला कियते तदा जममहयोगतुल्या जमदरेला जहरेलाया अधिका-िल्ता । अनेन प्रकारेण सर्वाभ्यो रेलाभ्योऽधिका स्यात् । जहरेलापि जझरेलाया अधिका स्यात् । कथम् । यदि मझरेला कियते तदा जमहित्रभुजे जमझित्रभुजे महभुजमझभुजौ समानौ । जमभुज उभयोरेक एव । पुनर्जमहकोणो जमझकोणादिधकोऽस्ति । तदा जहभुजो जझभुजादिधको जातः ।

अनेन प्रकारेण जञ्चरेखा जअरेखाया अधिकास्ति । पुनर्जवरेखापि

जकरेखाया न्यूनास्ति। कथम्। यदि मकरेखा निष्काश्यते तदा जमरेखा जकरेखाकमरेखा-योगान्न्यूना स्यात्। पुनर्यदि मबरेखा मक-रेखा उभयोः शोध्यते तदा जबरेखा जकरे-खाया न्यूना स्यात्। एवमन्याभ्योऽपि न्यूना स्यात्। पुनर्जकरेखापि जलरेखाया न्यूनास्ति।



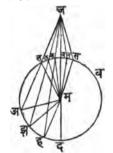
कथम्। यदि मलरेखां कुर्मस्तदा मकरेखाजकरेखायोगो मलरे-खालजरेखायोगान्न्यूनोऽस्ति । पुनर्मकरेखा मलरेखोभयोर्यथाकमं

<sup>9</sup> अवित A. B. २ निष्कास्या K.

शोध्यते तदा जकरेला जलरेलाया न्यूना स्यात् । एवं जलरेला जतरेलाया न्यूना स्यात् ।

अय जमनकोणो जमककोणतुल्यः कार्यः । जनरेखा च कार्या ।

तदा जनरेखा जकरेखायाः समाना भविष्यति । कथम् । जमरेखा जमनत्रिभुजे जमकत्रिभुजे एकैव पतितास्ति । मनभुजमकभुजौ समानौ स्तः । पुनरनयोद्धौं कोणौ समानौ स्तः । तसा-जानरेखा जकरेखासमाना जाता । पुनरनयो रेखयोः समानाऽन्यारेखा न भविष्यति । यदि

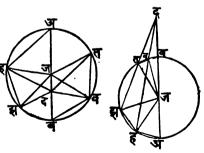


भविष्यति सा जसरेखा किल्पता । मसरेखां कुर्यात् । जमकत्रिभुजे जमसित्रभुजे कमजकोणसमजकोणौ समानौ स्याताम् ।
कुतः । उभयोक्षिभुजयोर्भुजानां समत्वात् । पुनः कमजकोणो नमजकोणेन समान आसीत् । तदा समजकोणनमजकोणौ समानौ जातौ ।
इदं वाधितम् । असादिष्टं सिद्धम् ॥

### पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबवृत्ते जं केन्द्रमस्ति । दिनिहं कल्पितम् । अधिका रेखा केन्द्र-गता दअसंज्ञा ज्ञेया । या न्यूनरेखा केन्द्रगता न भवति सा दबसंज्ञा ज्ञेया । पुनरिषकरेखाया एकदिशि दहरेखा दश्चरेखा च कार्या ।

अहरेला इजरेला च कार्या।
तदा जअहकोणजहअकोणो
समानौ जातौ। दहअकोणो
दअहकोणादिधकोऽस्ति। तदा
दअरेला दहरेलाया अधिकास्ति। पुनरिप हझरेला जझ-

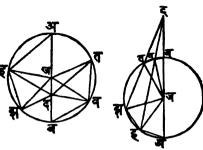


<sup>9</sup> रेखां च कुर्मः. D. K. २ °रेखा च कार्या । A. B.

TO VIXU AMMOTLAÇ

रेखा च कार्या। तदा जहझकोणजझहकोणी समानी बाती। दहझकोण

एकतरकोणान्न्यूनोऽस्ति । दशहकोणोऽधिकोऽस्ति। तदा दहरेला दश्गरेलाया अधिका जाता। पुनर्दबरेलाया एक दिशि दबरेला दतरेला च कार्या। बबरेला बतरेला



लगा कार्या। तथा वजरेला तजरेलापि च लगा कार्या। तदा जबव-कोणजवबकोणी समानी जाती। दववकोणो दववकोणान्न्यूनोऽिता। तदा दवं दवान्न्यूनं जातम्। अनेन प्रकारेण निश्चीयते दवरेला दत-रेलाया न्यूनािता। यदि दिग्द्वये द्वी कोणी समानी कियेते तदा द्वयोः कोणयोद्वें रेले समाने भविष्यतः। द्वयो रेलयोरन्या तृतीया रेला समाना न भविष्यति। कुतः। द्वे रेले एकदिशि समाने न भवतः॥

# अथ नवमं क्षेत्रम् ।

यचिह्नं वृत्तान्तर्भवति तद्गतरेखा अभीष्टा वृत्तपाछिलग्नाः कार्याः। तासु द्वाभ्यां रेखाभ्यामधिका यदि समाना भवन्ति तदा तिच्चहं तद्वृत्तस्य केन्द्रं भवति।

यथा अवरृते जिन्हं किल्पितम् । जनरेसा जदरेसा जहरेसाः समानाः किल्पताः । बदरेसा बहरेसा च कार्या । पुनर्द्वयोरेसयो-श्रीचिन्हे विचिह्ने चार्द्धं कार्यम् । जझरेसा जनरेसा योजनीया । तदा जनझित्रभुजस्य जदझस्य भुजाः समानाः सन्ति । कोणा अपि नियः

समानाः सन्ति । तदा झस्य द्वी कोणी समानी जाती । तदा जझरेखा बदरेखार्द्धे लम्बो जातः । तसाज्जझरेखा केन्द्रगा भविष्यति । पुनरियं रेखा अतचिद्वपर्यन्तं निष्कासनीया । अनेनैव प्रकारेण जवरेखा केन्द्रगा भविष्यतीति निश्चितम् । पुनर्जवरेसापि कचिहं लचिहपर्यन्तं निष्कास्या । तदा अतरेसा कलरेसा च केन्द्रगा जाता । इदं रेसाद्वयं जचिहादन्यत्र संपातं न करिष्यति । तसाज्जं केन्द्रं जातम् ॥

#### प्रकारान्तरम्॥

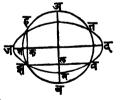
अबजदवृते हिचहं किल्पतं हआह्झहवरेखास्तुल्याः किल्पताः । तदा हिचहं केन्द्रं जातम् । यदि हिचहं केन्द्रं न भवति तदा तिचहं केन्द्रं किल्पतम् । हतरेखा योज्या । इयं रेखा बचिहदचिहपर्यन्तं निष्कास्या । तदेयं हबरेखा यावत्यो हिचहात् वृत्तपालिपर्यन्तं निष्का-

सिता रेखास्ताभ्योऽिषका भविष्यति । तिस्रो रेखा अस्या रेखाया एकदिश्चि द्वाभ्यां रेखाभ्यामिषकाः समाना जाताः । तत्रैकदिश्चि रेखाद्वयमि समानं न भवति । तस्मादेतदशुद्धम् ।

# अथ दशमं क्षेत्रम् । द्वे वृत्ते चिह्नद्वयादन्यत्र संपातं न करिप्यतः ।

यदि कुरुतस्तदा अबवृत्तद्ववृत्ते कल्पिते । अनयोईचिहे झ-चिहे वचिहे तचिहे संपातो जात इति कल्पितम् । इझरेखा झवरेखा

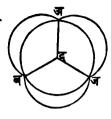
संयोज्या। अनयो रेखयोः कचिहे छचिहे चार्द्धे कार्यम् । एतचिह्नद्वयात् कदलम्बो छअलम्बश्च कार्यः। एती द्वौ लम्बौ प्रत्येकं केन्द्रगौ भविष्यतः। अनेन लम्बद्वयेन अब-



वृत्तस्य हसझचापझववचापयोः पूर्णज्याया अर्द्ध दजवृत्तस्य हजझ-चापझमवचापयोः पूर्णज्यायाश्चाद्धी कृतम् । तदा द्वयोः केन्द्रमेकं जातम् । इदमशुद्धम् ॥

# पकारान्तरेणाह ॥ एकस्य वृत्तस्य केन्द्रं दं कल्पितम् । दअरेला दबरेला दजरेला

संयोज्याः। एता रेखाः समानाः। कुतः। केन्द्रात् कृतपालिपर्यन्तं गतत्वात्। एता एव तिस्रो रेखा द्वितीयकृते केन्द्रादन्यचिह्नात्रिस्ता कृतपालिप-र्यन्तं समानाः सन्ति। तदा द्विहं द्वितीय-कृतकेन्द्रं जातम्। इदं वाधितम्॥



# अथैकादशं क्षेत्रम् ।

यद्वृत्तद्वयमेकिचिह्ने संलग्नमन्तर्बिहर्वा संलग्नं तयोः केन्द्र-गतैकारेखा वृत्तसंपात एव लगति नान्यत्र ॥

यथा अबवृत्तअजवृत्ते अचिह्ने संलग्ने स्तः । उभयोर्वृत्तयोः केन्द्रं

ह्झिचिहे भवतः । ह्झरेखा संयोज्या वर्द्धनीया च । इयं रेखा यदि अचिहे न लगति तदा च-चिहे तचिहे संपातं करिष्यतीति कल्पनीयम् । अहरेखा अझरेखा च संयोज्या । यदि वृत्तद्वय-



मन्तः संरुमं तदा हझरेखाझअरेखयोर्योगो हअरेखाया अधिको मिविष्यति । पुनर्हझरेखाझअरेखयोर्योगो हतरेखायाः समानोऽस्ति । हअरेखा हवरेखायाः समानास्ति । तदा हतरेखा हवरेखाया अधिका भविष्यति । इदमग्रद्धम् ।

यदि वृत्तद्वयं बहिर्मिथः संलग्नं तदा अहअझरेखयोर्योगो हझरेखाया अ-धिको भविष्यति। एतद्धजद्वयं हवझ-

ब् इंग्रें

तयोगस्य समानमस्ति। इदं हवझतं हझादिधकं जातम्। एतदशुद्धम्॥
पुनः प्रकारान्तरम्।

श्रं अबवृत्तस्य केन्द्रं न भवति । अस्माद्वृत्तपालिपर्यन्तं श्रः अरेखा श्रवरेखा च निःसृताखि । श्रवरेखा केन्द्रसम्मुखाखि परं च न केन्द्रगा । इयं श्रअरेखाया न्यूना भविष्यति । श्रतरेखाया अपि न्यूना जाता । एतद्शुद्धम् । अस्मदिष्टमेव समीचीनम् ॥

# अथ द्वादशं क्षेत्रम् ।

वृत्तद्वयस्य संस्पर्श एकस्मिन्नेव चिह्ने भवति नाम्यत्र ।

यथा अववृत्तजदवृत्तयोः संस्पर्श एकसिन् चिह्ने भवति । यदि चिह्नद्रयोपिर संस्पर्श स्थात्तचिह्नद्वयं जचिह्नं द-चिह्नं च भवति । उभयोर्वृत्तयोः केन्द्रे हझसंग्ने क-ल्पिते । हझरेखा संयोज्या उभयत्र विद्वता च जहारी । इयं जचिह्ने दचिह्ने च लगिष्यति । तदा हजरेखा हदतुल्या झजतुल्याया झदरेखाया न्यूना भैविष्यति । इदं वाधितम् ।

अथवा द्वे वृत्ते बहिः अचिह्ने बिचिह्ने मिलिष्यतः । तदा अवपूर्ण-ज्या लग्ना कार्या । इयमेकस्य वृत्तस्या-न्तर्गता द्वितीयस्य बहिर्गता भविष्यति । इदमगुद्धम् । असदिष्टं सिद्धम् ॥

#### -पुनः प्रकारान्तरम् ।

हिचहं अबवृत्तस्य केन्द्रमिता। पुनर्झिचहं तस्य वृत्तस्य केन्द्रं न भ-वित । तस्मात् झजं झदात् अधिकं स्यात् । झकेन्द्रं जदवृत्तस्यास्ति । तदा झजझदी समानी जाती । इदमशुद्धम् ।

पुनरिप विचिद्वं जदवृत्तस्य केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्हवरेला योज्या । इयं अचिद्वगा भविष्यति बचिद्वगा च । एतदशुद्धम् ॥

# अथ त्रयोदशं क्षेत्रम्।

एकस्मिन्वृत्ते यावत्यः पूर्णज्याः समाः सन्ति तासामन्त-राणि केन्द्रात्समानानि भवन्ति । यासां केन्द्रादन्तराणि तुल्यानि भवन्ति ताः पूर्णजीवास्तुल्या भवन्त्येव ।

यथा अबरुत्ते जदपूर्णज्या हुझपूर्णज्या समास्ति । तस्य रृत्तस्य

<sup>9</sup> भवति A. B.

विच इं केन्द्रम् । केन्द्रात्तयोरुपरि वतलम्बवकलम्बी च क्रमेण कार्यौ ॥ तक्रेंती लम्बी समानी भविष्यतः ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

यदि वजवदवहवझरेला योज्यन्ते तदा वजदित्रभुजल वहझ-त्रिभुजल्य च भुजाः कोणाश्च समा भविष्यन्ति । तस्मात् वतजतिभुजे वकहित्रभुजे जकोणह-कोणो समानौ स्तः । तककोणौ समकोणौ भ-वतः । बजभुजवहभुजो समानौ । तदा वत-भुजवकभुजो च समानौ जातौ ।

पुनरप्येतौ द्वौ लम्बौ समानौ कल्पितौ तदा जदरेला हझरेला च समाने भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

यदि वतवर्गवकवर्गी तुल्यौ स्यातां तहेंतौ तुल्ययोर्वजवहवर्गयोः शोध्यौ शैषौ जतवर्गहकवर्गी समानौ भवतः । एतद्वयमपि समानम् । एतद्विगुणतापि समाना । इदमेवेष्टमसाकम् ॥

### द्वितीयः प्रकारः।

यदि जदहशौ समानौ सः वतवकौ समानौ न भवतस्तदा कल्प्यते वकात् वतमिषकमस्ति । तदा जकोणो हकोणादिषको भविष्यति । दकोणो झकोणादिषको भविष्यति । तदा जवदकोणो हवझकोणा-न्न्यूनो भविष्यति । जववदौ द्वौ भुजौ हववझयोर्भुजयोः समानौ भवतः । तदा जदरेसा हझरेसाया न्यूना भविष्यति । एतदशुद्धम् ।

यदि वतवकौ समानौ भवतो जदहझो समानौ न स्थातां तदा तदकझाविप समानौ न स्थाताम् । तदैतयोर्वर्गाविप समानौ न भवतः । वतवकयोर्वर्गी समानौ स्तः । अतो वदवझयोर्वर्गाविप समानौ न मविष्यतः । जातौ च समानौ । तस्यादेतदशुद्धम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्ते सर्वाभ्यो पूर्णज्याभ्यो बृहती पूर्णज्या व्यासी भवति । या पूर्णज्या केन्द्राभिकटेऽस्ति सा दूरस्थितपूर्ण-ज्याया अधिकास्ति ।

यथा अववृत्तं कल्पितम् । तस्य जदं व्यासः कल्पितः । हझरेला

केन्द्रनिकटे पूर्णज्या वतरेला दूरगा पूर्णज्या क-ल्पिता। कं केन्द्रमिता। केन्द्रात्कळलम्बकम- अ लम्बो कार्यो।कळलम्बो न्यूनोऽस्ति। तदा कम-रेलायाः कनरेला कळतुल्या प्रथक् कार्या। न-चिद्राक्षसगरेला जदरेलायाः समानान्तरा कार्या।



चिद्वाञ्चसगरेला जदरेलायाः समानान्तरा कार्या । सगरेला हझरे-लायास्तुल्या भविष्यति । कसरेला कगरेला कवरेला कतरेला च योज्या । तत्र कसगकयोगो जदतुल्यः सगादिषको भविष्यति हझा-दिष । पुनरिष सकगित्रभुजे वकतित्रभुजे कसकवकगकतभुजाः समानाः सन्ति । गकसकोणः तकवकोणादिषकोऽस्ति । तदा सगं हझतुल्यं वतादिषकं भविष्यति । हझं वतादिषकं जातम् । इदमे-वाऽसाकिमष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

अवरृत्तं कल्पितम् जद्व्यासः। हृचिह्नं केन्द्रम्। श्रवपूर्णज्या जदस्य समानान्तरा कल्पिता । तत्र जचिह्नालुम्बः कार्यः । अप्रत्य अस्यां पूर्णजीवायां एष लम्बो श्रचिह्नं नैव पति-ष्यति । कुतः। यदि हृझरेला योज्यते तदा जझ-कोणौ हजझत्रिमुजे समानौ मविष्यतः। तर्ह्मंतौ द्वौ ब्री समकोणौ भविष्यतः। एतदशुद्धम् । झचिह्नवचिह्नयोर्मध्येऽपि न पति-ष्यति यथा जतम् । कुतः। तजहकोणः समकोणो भविष्यति । यदि

<sup>9</sup> व्यासे. A. B. K. २ यास्यति. A. B. K. ३ यत: A. B.

इतरेखा योज्यते कचिइपर्यन्तं वर्द्धिता जकरेखा युक्ता च कियते तदा हजककोणो हकजकोणसमः समकोणादिधको भविष्यति । हतजकोणो वतज-कोणान्न्यूनोऽस्ति हकजकोणादिधकोऽप्यस्ति



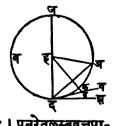
एतदशुद्धम् । तदैष लम्बो बहिः पतिष्यति यथा जललम्बः। अनेनैव प्रकारेण दिचहाहमलम्बो बहिः पतिष्यति। जदरेखा लमतुल्या झवरे-स्ताया अधिका भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण झबरेखा अधिका भवि-ष्यति दुरगान्यरेखायाः यदि समानान्तरा भविष्यति।यदि समानान्तरा न स्यात्तदा समानान्तरा कार्या। पूर्वोक्तप्रकारेणेदमुपपत्रं स्यात् ॥

# अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ।

तत्र वृत्तव्यासप्रान्तान्निष्कासितो लम्बो बहिर्गतो भवति। लम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये अन्या सरला रेखा भवितुं नाईति। व्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितो वृत्तान्तर्गतकोणो न्यूनकोणो भवति । तस्माद्धिकोऽपरो न्यूनकोणो सरलरेखाद्वयोत्पन्नो न भवति । पातजनितः कोणः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्यो न्यूनो भवति ।

यथा अबवृत्तं जदव्यासः कल्पितः । दिचहाल्लम्बः कार्यः । अयं लम्बो यदि वृत्तान्तर्गच्छति स लम्बः अचिह्ने आगत इति कल्पितः ।

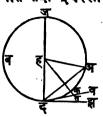
हकेन्द्रात् अचिहपर्यन्तं रेखा कार्या । तदा हदअ-कोणहअदकोणी समानी भविष्यतः। एतौ द्वी समकोणौ भविष्यतः । इदमग्रुद्धम् । त्रिभुजे कोणद्वययोगस्य द्विसमकोणसमत्वामावात् । तदा स स्रम्बो बहिः पतिष्यति । स रूम्बो द्रझं कल्पितः । पुनरेतस्रम्बवृत्तपा-



<sup>9</sup> D. inserts इदं वाधितम् after this. ३ °शितो. A. B.

स्योर्भध्ये नान्या रेखा सरला भविष्यति । यदि भविष्यति त<u>दा</u> दवरेखा

किल्पता। हिचिहात् दवरेखायां हतलम्बः कार्यः। अयं हदरेखायां न पतिष्यति । कुतः। हदरेखा दवरेखायां लम्बो न भवति । पुनर्बदिशायामपि न पतिष्यति । यदि बदिशायां पतिति त्रिभुजस्य



द्वौ कोणौ द्वयोः समकोणयोरिषकौ भविष्यतः। तसात् अदिशि भवि-ष्यति । पुनर्हतदित्रभुजे तकोणो दकोणादिषको भविष्यति । ततो हकतुल्या हदरेखा हतादिषका भविष्यति । इदं गिषतम् । तसा-त्कोऽपि न्यूनकोणः कदहकोणादिषको न भविष्यति । पुनर्झदक-कोणान्न्यूनो न भविष्यति । कुतः । यद्यधिको न्यूनो वा भविष्यति तदा लम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये सरला रेखा पतिष्यति ।

असात् क्षेत्रादिदं निश्चितं व्यासपान्तानिसृतलम्बो वृत्तसंलमो गिन-ष्यति न वृत्तं भेत्स्यतीति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

द्वितीयः प्रकारः।

इष्टचिद्वादभीष्टरेखायां या गताः रेखास्तासु मध्ये या न्यूना सा लम्बो भवतीति पूर्वमस्माभिः साधितमस्ति । तस्मात् हचिद्वात् या रेखा दृष्ट-पर्यन्तं गता भविष्यति सा वृत्ताद्वहिः पतिष्यति । कुतः । व्यासाद्वीद-धिकत्वात् । तदा दृष्टालम्बः वृत्तान्तर्न पतिष्यति । पुनरिष या रेखा दृष्ट्यलम्बद् जव्यासयोर्भध्ये पतिष्यति सा वृत्तान्तर्गतैव भविष्यति । कुतः । यो लम्बो हचिद्वादस्यां रेखायां निष्कासनीयः स लम्बो व्यासा-द्वीक्यूनो भविष्यति । तस्मात्कािप रेखा दृष्टालम्बवृत्तपाल्योर्भध्ये न पतिष्यति ॥

अथ षोडशं क्षेत्रम् । तत्रैकस्माचिद्वात् वृत्तपालिसंलग्ना यथा भवति तथा रेखा कर्त्तव्यास्ति ।

९ वृत्तपाळिमात्रसंलमरेखाचिकीर्पास्ति । f A.~B., वृत्तपाळिमात्रसंलमा f K.

यथा अचिहं बजवृत्तं किल्पतम्। वृत्तकेन्द्रं दिचहं किल्पतम्। पुनर्दकेन्द्रात् दश्रव्यासार्द्धेन अहवृतं कार्यम्। अदरेखा योज्या। इयं रेखा
बजवृत्ते झिचिहे संपातं करिष्यति। पुनर्झचिहात् झवलम्बः अदरेखायां
निष्कासनीयः। वदरेखा संयोज्या। इयं रेखा बजवृत्ते तिचिहे संपातं
करिष्यति। पुनः अतरेखा योज्या। इयं अतरेखा बजवृत्तसंलमा गिमष्यति वृत्तभेदं न करिष्यति। कृतः। अतदित्रभुजे वझदित्रभुजे दश्रभुजदत्तभुजौ वद्मुजद्झभुजयोः समानौ स्तः। दकोण
उभयोक्षिभुजयोरेक प्वास्ति। तसात् अतदकोणो

दत्त जुणा वद् जुजद्श जुजयाः समाना त्यः । द्याण द्यापा द्यापा द्यापा द्यापा द्यापा है व्यापा द्यापा द्यापा द्यापा समान् द्यापा समान् द्यापा समान् द्यापा समान् कोणो जातस्तरमात् अतलम्बो दतोपरि जातः। अयं लम्बो वृत्तलग्रो भविष्यति वृत्तं न भेत्यति॥

#### प्रकारान्तरम् ।

अदरेला संयोज्या हचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया। पुनः अहअझघाततुत्यं

समकोणसमचतुर्भुनं कार्यम् । अहरेखायां अवरेखा तद्भुनतुल्या पृथकार्या । पुनः अकेन्द्रोपिर व अवव्यासाद्धेन वतवृत्तं कार्यम्। अतरेखा च संयो-ज्या।इयं रेखा वृत्तलमा मविष्यति।कुतः।तअवर्ग-तुल्यहअअझघाततदवर्गतुल्यदझवर्गयोयोगो दअ-वर्गस्य समानोऽस्ति । तदा अतदकोणः समकोणो जातः

अतरेखा वृत्ते छगिष्यति ॥

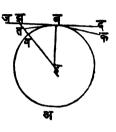
अ- जी तसात्

# अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

वृत्तसंख्यारेखायां केन्द्रात् वृत्तपाछिरेखासंपातगता रेखा छम्बो भविष्यति । यथा अववृत्तं जदरेला च हं केन्द्रं किल्पतं वसंपातः किल्पतः । तत्र वहरेला संयोज्या । इयं जदोपिर लम्बो भविष्यति । कुतः । यद्ययं रूम्बो न भविष्यति तिर्ह हम्नं लम्बो भविष्यति । अयं लम्बो ह्वतुल्य-ह्वरेलाया न्यूनो भविष्यति । इदमशुद्धम् । असिदिष्टं समीचीनम् ॥

### अस्य द्वितीयः प्रकारः ।

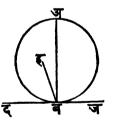
यदि इबलम्बो बजोपरि न मनिष्यति तदा बिच्हात् बहोपरि तकलम्बः कार्यः स्यात्। अयं लम्बोऽपि बचिह्ने वृत्तपालौ लगिष्यति । पुनरयं पूर्वलम्बवृत्तपाल्योर्मध्ये बज्जरेखाया वा बदरेखाया एकदिशि पतिष्यति । इदं बाधितम् ॥



#### अथाष्टादशं क्षेत्रम् ।

या रेखा वृत्तपालावेकस्मिश्चिद्वे लग्ना भवति तिश्वद्वात्तस्यां रेखायां निष्कासितलम्बरेखावश्यं केन्द्रगा भविष्यति ।

यथा अवरृतं जदरेला बिचहं बअलम्बः किल्पतः। अयं लम्बो यदि केन्द्रगतो न भवि-ध्यति तदा हचिहं केन्द्रं किल्पतम्। पुनईबरेला संयोज्या। इयं हबरेला लम्बो भविष्यति। पुनः अबरेलापि लम्बोऽिला। इदं बाधितम्। इष्टम- दिसाकं समीचीनम्।



# अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र केन्द्रकोणो वृत्तपालिकोणाद् द्विगुणो भवति यदि द्वौ कोणावेकचापस्थौ भवतः ।

यथा अवजवृत्ते दं केन्द्रमस्ति तत्र बदजकोणो वअजकोणाद्दिगुणोऽस्ति । कुतः । यदि अदरेखा योज्यते हचिह्नपर्यन्तं दीर्घा च







कियते तदा बद्हकोणो द्वअकोणद्अबकोणयोयींगस्य समानो-ऽिता। तसात् बअहकोणाद्विगुणो जातः। अनेनैव प्रकारेण हदजकोणो जअहकोणाद्विगुणो जातस्ततो बदजकोणो वअजकोणाद्विगुणो जातः। इदमेवासाकिमष्टम्।

तत्र अदरेखा अवअजयोर्मध्यगा स्याद्यथा पूर्वक्षेत्रम् । अन्यतरमुजे पतिष्यति वा द्वयोर्बहिः पतिष्यति तयोर्द्वयोरेतत्क्षेत्रद्वयम् ॥

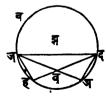
# अथ विशतितमं क्षेत्रम्।

# वृत्तस्य खण्डे चेत्कोणाः संभवन्ति ते समा एव ।

यथा जअदकोणजहदकोणी अबवृत्ते जहअदलण्डे समानी भवतः । पुनर्झ केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्झदरेला झजरेला संयोज्या । तदा जझदकोणः प्रत्येककोणाहिगुणो जातः । तस्मात्तौ द्वौ कोणौ समानौ जातौ । इयमुपपत्तिस्तदैव स्याद्यदि लण्डं वृत्ताद्धीदिषकं स्यात् । यद्यिकं न स्यात्तदैवं स्यात् । हजअकोणहदअकोणौ हज-







द्श्रवृत्तसण्डे वृत्तार्द्धादिधिके समानौ स्तः। वस्य सन्मुसकोणद्वयं समान् नमस्ति। तस्मात् अवदित्रभुजे हजवित्रभुजे दअवकोणज्जहवकोणौ समौ भविष्यतः। इदमेवास्माकिमष्टम्॥

# अथ एकविंशतितमं क्षेत्रम्।

यच्चतुर्भुजं वृत्तान्तर्भवति तस्यैककर्णस्य कोणद्वययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति ।

यथा बअद्कोणबजदकोणौ मिलितौ अजवृत्ते अबजदचतुर्भु-जस्य द्वयोः समकोणयोः समानौ स्तः। कृतः। यदि अजरेखा बदरेखा योज्यते तदा दअजकोणदबजकोणौ दअबजखण्डे समानौ भवि-

ष्यतः । अनेनैव प्रकारेण बआजकोणबद्जकोणौ अवस्यात् स्थावने समानी स्तः । तस्मात् द्अवकोणो द्वजकोणजद्वकोणयोर्थोगेन समानो जातः । पुनर्वजदकोणो द्वयोर्थोज्यते । तदा द्अवकोण- द्वजदकोणयोर्थोगो बद्जित्रभुजस्य त्रयाणामिष कोणानां योगेन समानः स्यात् । पुनिक्षभुजस्य त्रयाणां कोणानां योगः समकोणद्वययोग्युल्योऽस्ति । इदमेस्माकिमष्टम् ॥

# अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम्।

तन्नैकरेखोपरि वृत्तस्य सजातीये न्यूनाधिके द्वे खण्डे ए-कदिशि न भवतः।

यदि मवतस्तदा अबरेस्रोपिर न्यूनं अजबवृत्तसण्डमिषकं अ-बद्दवृत्तसण्डं सजातीयं कल्पनीयम् । पुनः अजबसण्डे हृचिहं कल्पितम् । अहरेसा संयोज्या । झचिह्नपर्यन्तं

विद्वता च । पुनर्बहरेसा बझरेसा च संयो- जिता । तस्मात् अहबकोणो बहिः स्थितः । जिता । कृतः । वृत्तसण्ड-

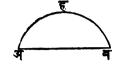
योः सजातीयत्वात् । इदं बाधितम् । अस्तदिष्टं समीचीनम् ॥

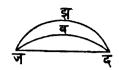
# अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

समासु रेखासु यानि सजातीयानि वृत्तखण्डानि भवन्ति तानि समानि भवन्ति ।

यथा अबरेलायां जदरेलायां मिथः समानायां अहबवृत्तसण्डं

जझदृृत्तखण्डं सजा-तीयं कल्पितम् । इदं द्वयं मिथः समानमस्ति।





कुतः।

यदि अबरेखा जदरेखोपरि स्थाप्यते वृत्तखण्डं च खण्डोपरि स्थाप्यते तदा निरन्तरं लग्नं स्थात् । यदि निरन्तरं न स्थात्तदा एकं खण्डमन्यखण्डाद्विर्गतमन्तर्गतं वा भविष्यति यथा जवदखण्डम् । तदा जझदखण्डं जवदखण्डं सजातीयं जदरेखायामेकदिशि न्यू-नाधिकं पतिष्यति । इदं बाधितम् । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

# अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ।

वृत्तखण्डोपरि संपूर्णवृत्तं कार्यमिति चिकीपीति ।

यथा अजबसण्डं किल्पतम् । पुनः अबरेसा दिचिहेऽद्विता कार्या । पुनर्दिचिन्हाह् अरेसायां दजलम्बः कार्यः । ज ज जिल्होपरि अजरेसा संयोज्या । पुनः अचिन्होपरि अजरेसायाः जअहकोणः अजहकोणतुल्यः अविन्होपरि कार्यः। पुनः अहरेसा जदरेसे च वर्द्धनीये यथा

कार्यः। पुनः अहरेला जदरेले च वर्द्धनीये यथा है हिचिह्ने संपातं करिष्यतः । तसात् हिचिह्नं तस्य वृत्तस्य केन्द्रं जातम् ।

कुतः ।

यदि बहरेला योज्यते तदेयं अहरेलासमाना भविष्यति । कुतः । बद्भुजअद्भुजयोः साम्यात् । पुनर्दहभुज उभयोक्षिभुजयोरेक एवा- स्ति। दस्य द्वी कोणौ समकोणौ स्तः। अहरेला जहरेलायाः समानास्ति । कुतः । अजहकोणजअहकोणयोः समत्वात् । हचिहात् अजब- वृत्तपालिपर्यन्तं हअरेला हजरेला हवरेला च एताः समाना निष्पनाः। तसात् हं केन्द्रं जातम् । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

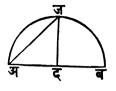
<sup>9</sup> कार्यमस्ति D.

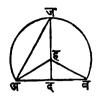
अथासिन् क्षेत्रे अहरेखा वृत्तखण्डाह्रहिः पतिष्यति वा अद-

रेखायां पतिष्यति वा व-त्तसण्डान्तः पतिष्यति ।

प्रथमप्रकारस्य क्षेत्रं

दर्शितमैवशिष्टप्रकारयोरे-तत्क्षेत्रद्वयमस्तीति निश्चितम् ॥





अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम्।

तुल्ययोर्वृत्तयोः समानकोणानां समानि चापानि भवन्ति ते कोणाः केन्द्रगा वा वृत्तपालिगा भवन्तु ते समानचापेषु भवन्ति ।

यथा अबजवृत्तं दहझवृत्तं कल्पितम् । अकोणदकोणौ वा व-कोणतकोणौ समानौ कल्पितौ। तदा बजचापहृझचापौ समा-

नौ भविष्यतः ।

कतः।

यदि बजरेखा हझरेखा

योज्यते तदैते द्वे समाने स्याताम् । कुतः । वबभुजवजभुजत-ह्भुजत्रझ्भुजानां समत्वात् वतकोणाविष समानौ । तसात् बअ-जवृत्तसण्डझदहवृत्तसण्डे सजातीये जाते। एते द्वे समरेसाद्वयस्थे चापे स्तरतसात्समाने जाते । शेषचापद्वयं समवृत्तद्वयस्य च समानं भविष्यतीत्यपपन्नं यथोक्तम् ॥

अथ षद्विंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र समानयोर्वृत्तयोः समचापोत्पन्नाः कोणाः समाना भवन्ति ते कोणाः केन्द्रलग्ना अथवा वृत्तपालिलग्ना भवन्ति।

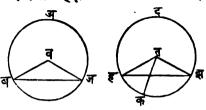
າ अवशेष<sup>o</sup> D. K.

यथा अबजनुते दहझनृते बजचापं हझचापं समानं कल्पितम् ।

द्वयोश्चापयोर्वकोणतकोणौ केन्द्रगतौ समानौ स्तः।

कुतः।

यदि न्यूनाधिकौ भवत-

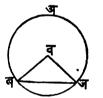


स्तदा हतककोणो वकोणतुल्यः कार्यः । हकचापं बजचापस्य समानं भविष्यति । तदा हझचापसमानमपि भविष्यति । इदं बाधितम् । तदेवं यथोक्तमुपपन्नम् ॥ अनेन प्रकारेण वृत्तपालिकोणा अपि समाना भवन्ति ॥

### अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

समानेषु वृत्तेषु समानपूर्णजीवाचापानि समानि भवन्ति ।
.यथा अवजवृत्ते दह्रभृवृत्ते च बजपूर्णज्या हृभ्रपूर्णज्या च समाना

कल्पिता । तदा बआजचाप-हदशचापे समाने भविष्यतः । पुनर्बजचापहृश्चचापे समाने भविष्यतः ।





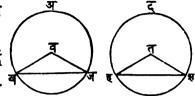
अनयोर्ष्ट्र चार्चिहं तिचहं केन्द्रं किल्पतम् । वबरेखा वजरेखा तहरेखा तझरेखा संयोज्या। तदा वतकोणी वबजित्र अजस्य तहझित्र-अजस्य च समानी स्तः। कुतः। अनयोर्भुजानां . समस्वात्। तसाचापानि समानानि जातानि । इदमेवासाकिमष्टम् ।

# अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्र समानेषु वृत्तेषु समानचापानां पूर्णजीवाः समाना भवन्ति । यथा अबजवृत्ते दहझवृत्ते बजचापहृझचापे समाने कल्पिते। तदा

बजपूर्णज्या हम्मपूर्णज्या समाना भविष्यति ।

अनयोर्वृत्तयोः केन्द्रं विचहं तिचहं कल्पितम् । वबजतहङ्ग-



त्रिभुजद्वयं कल्पितम् । अनयोर्भुजाः समाना भविष्यन्ति । वतकोणौ च समानौ भविष्यतः । वृत्तानां चापामां च समत्वात् । तसात् बजह्मा-विष समानौ भविष्यतः । न्यासस्तु पूर्वोक्त एवेत्युपपन्नं मदुक्तम् ॥

## अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

## तत्र एकस्य चापस्यार्द्धं कर्त्तुमिष्यते।

यथा वश्रजचापं कल्पितम् । तत्र बजरेखा संयोज्या । इयं रेखा दचिहेऽद्विता करणीया। असाचिहात् दअलम्ब उ-त्पाद्यः। अयं तचापं अचिहेऽद्वी करिष्यति ।

कुतः ।

बअरेखा जअरेखा संयोजनीया। एते रेखे समाने मविष्यतः। कुतः। बद्दजद्भुजयोः साम्यात्। दअभुज उभयोरेक एव। दस्य द्वी कोणी समकोणी स्तः। तसात् बअचापं जअचापं च समानं मविष्यति। यथोक्तमुपपन्नम्॥

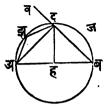
### अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

वृत्तखण्डपालौ यः कोणः स समकोणो भवति यदि खण्डं वृत्तार्द्धं भवेत् । यदि खण्डं वृत्तार्द्धोदधिकं तदा न्यूनकोणः स्वात् । न्यूने खण्डेऽधिकः कोणः स्वात् ।

यथा अवजदवृत्ते अदबं वृत्तार्द्धे कल्पितम् । अस्य केन्द्रं इचिहं

कल्पितम् । वृत्तपालौ दिनिहं कल्पितम् । बद-रेसा अदरेसा च संयोजया । तदा अदबकोणः समकोणो मनिष्यति ।

अत्रोपपत्तिः।



दहरेला योज्या । तत्र अहदकोणो हदबकोणाहिगुणोऽस्ति । कुतः।हदभुजहबभुजौ समानौ स्तः। बहदकोणो हदअकोणाहिगुणो-ऽस्ति।तसात् अहदकोणबहदकोणयोगः समकोणद्वयतुल्यो द्विगुणित-अदबकोणेन समानोऽस्ति । तसात् अदबकोणः समकोणो जातः॥

#### प्रकारान्तरम् ।

बकोणदकोणौ हदबत्रिभुजे समानौ सः । हदअत्रिभुजे दकोण-अकोणौ समानौ सः । तदा अदबत्रिभुजे बकोणअकोणयोगः अद-बकोणेन समानो जातः । तसादयं अदबकोण एकसमकोणो जातः ।

पुनः प्रकारान्तरम् ।

बदरेला बिचिइपर्यन्तं वर्द्धनीया । अद्वकोणः अद्वकोणेन समानो भविष्यति ।

अत्रोपपत्तिः ।

अदबकोणः दअबदबअयोगेन समानः । तत्र बवरेसायां अद-रेसा रुम्बो जातः । पुनरिष अबजदवृत्तसण्डं अधिकमस्त्यद्वेवृत्तात् । असिन् सण्डे अबदकोणो वा तत्तुत्योऽन्यकोणो वा न्यूनः कोणोऽस्ति । पुनः अदचापे झचिहं कार्यम् । अझरेसा दझरेसा च संयोज्या । अझदकोणः अझदबचतुर्भुजे बकोणेन सार्द्धं समकोणद्वयतुत्योऽस्ति । बकोणो न्यूनोऽस्ति । झकोणोऽधिको भविष्यति । अयमधिककोणो वृत्ता-द्वाच्यूने अझदसण्डेऽस्ति ।

<sup>9. °</sup>जिता. A. B. K.

#### प्रकारान्तरम् ।

अद्बित्रभुजे यदि दं समकोणोऽस्ति तदा अबव्यासे एकं वृत्तं कार्यम् । तद्द्विद्धे पतिष्यति । यदि न पति-ष्यति तदा अदरेखा वृत्तपर्यन्तं कार्या । तंत्र अविद्धं कार्यं ततो बिचिद्दपर्यन्तमेका रेखा योज्या । तदा त्रिभुजस्य बाह्यकोणोऽन्तःकोणश्चैकरूपः स्यात् । इदं बाधितम् ॥

## अथैकत्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तपालिसंलग्ना एका रेखा कार्या। रेखावृत्तसंपात-चिह्नादपरा रेखा वृत्तान्तर्गता पालिसंलग्ना कार्या। इयं रेखा तस्य वृत्तस्य खण्डद्वयं करिष्यति। एतद्रेखापूर्वरेखयोर्यो द्वौ कोणौ जातौ तत्रैकतरः कोणो द्वितीयदिक्खण्डगत-कोणेन समानो भवति।

यथा अजन्ते दहरेला बनिहे लगास्ति । बनिहात् बझरेला नि-कासिता । अनया रेलया वृत्तस्य लण्डद्वयं कृत-मस्ति तत्रैकं लण्डं झअजवं संजातं द्वितीयं झ-तवसंज्ञम् । तदा झबदकोणो झअजवनृत्तलण्डपतितकोणेन तुल्यो भवति । पुनझेबहकोणो

झतवलण्डगतकोणेन समानोऽस्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

बचिह्वकेन्द्रयोवेबरेसा संयोज्या । इयं रेसा अचिह्वपर्यन्तं वर्द्ध-नीया । अझरेसा संयोज्या । अझबकोणअबदकोणौ समकोणौ स्तः । झअबकोणो झबदकोणश्च प्रत्येकं झबअकोणयुतः समकोणो भवति । तसादेतौ कोणौ समानौ जातौ ।

१ बचिहतचिहपर्यन्तमेका रेखा योज्या  ${f B}_{f s}$ 

पुनर्झतबखण्डे तिचिह्नं कार्यम्। तझरेखा तबरेखा संयोज्या। तदा झतबकोणो झअबकोणसहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति। तसात् झतबकोणो झबहकोणेन तुल्यो जातः॥

#### प्रकारान्तरम् ।

श्र्विद्दात् श्रजरेखा दहरेखायाः समानान्तरा कार्या । जबरेखा बवरेखा च संयोज्या। इयं बवरेखा किचिद्दपर्यन्तं वर्द्धनीया । बकरेखा लम्बोऽिख दहरेखायां जश्ररेखायां च। अनेन लम्बेन श्रजरेखाया अर्द्ध कृतम् । श्रकरेखा कजरेखासमानािख बकरेखा उभयोरेकैवािखा । तदा बञ्जजकोणबजञ्जकोणौ समानौ भविष्यतः । बञ्जजकोणो श्रबदकोणसमानोऽिखा । तसात् श्रजबकोणो श्रबदकोणे न समानो जातः ॥

## अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

एकस्यां रेखायामेकं वृत्तखण्डं कार्यमिति चिकीर्पास्ति यथा वृत्तखण्डान्तोऽभीष्टकोणसमानः कोणो भवितुमर्हति ।

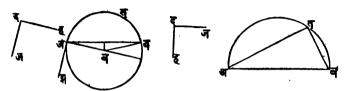
यथा अबरेसा जदहकोणः कित्पतः । अचिह्ने बअझकोणः किल्पतकोणतुल्यः कार्यः । अचिह्नात् झअरे- द
स्रोपरि अवलम्बः कार्यः । बचिह्नोपरि
अबवकोणो बअवकोणेन तुल्यः कार्यः ।
अवरेसा बवरेसा च वर्द्धनीया यथा व-

चिह्ने मिलिष्यतः । वं केन्द्रं कृत्वा बअव्यासार्द्धेन अबवृत्तं कार्यम् । तदा अतबवृत्तसण्डं चिकीर्षितसण्डं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

**झअ**रेखा **अवरे**खोपरि लम्बोऽस्ति । इयं वृत्तपालौ लगिष्यति वृत्तं

न भेत्यति । इयं रेला यसिश्चिह्ने लग्नास्ति तसाधिहानिःस्तया अवरे-स्वया वृत्तस्य खण्डद्वयं कृतमस्ति । तत्रैकं खण्डं अत्वबसंज्ञमस्ति । तसिन् बआझकोणेन तुल्यः कोणो भिवतुमर्हति जदहकोणेनापि तुल्यो भविष्यति । जदहकोणो यदि न्यूनकोणोऽस्ति तदा अवलम्बः अझरेसाअबरेसयोबिहः पतिष्यति । यथा उपरितनक्षेत्रे पतितः।



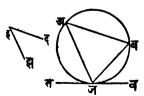
यदि सोऽधिककोणः स्यात् तदा अवलम्बः अझरेखाअबरेखयोर्मध्ये पतिष्यति । यदि स समकोणः स्यात् तदा अवलम्बः अबरेखोपरि पतिष्यति । पुनरेतस्य क्षेत्रस्य न्यासद्वयमेतादशम् ॥

#### अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

तत्र अभीष्टवृत्तस्यैकं खण्डं पृथकार्यमिति चिकीर्पास्ति । कीदशं खण्डमिता । यस्मिन् खण्डे किषतकोणेन तुल्यः कोणो यथा भविष्यति ।

यथा अबजवृत्तं दहझकोणः कल्पितः जिचहात् तजवरेला वृत्त-

पालिलमा कार्या । वजरेलाया जिन्होपरि वजबकोणो दहझकोणतुल्यः कार्यः। तदा रि जबरेला वृत्तात् वअजलण्डं पृथकरि-ष्यति । कीदशमिदं लण्डम् । अत्र वज-



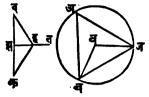
बकोणतुल्यः कोणो भवितुमहिति । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ॥

#### मकारान्तरेणाह ।

कृतस्य केन्द्रं विचिद्धं कल्पितम्। कल्पितकोणो यदि समकोणः स्वात्

Digitized by Google

तदा जिन्हाद्यासरेखा निष्कासनीया । तदा व्यासो वृत्तस्य समानं खण्डद्वयं क-रिष्यति । यदा कल्पितकोणः समकोणो न मविष्यति तदा झहरेखा तचिह्नपर्यन्तं



वर्द्धनीया। दहझकोणो दहतकोण एतयोर्द्धयोर्भध्ये एको न्यूनकोणः स्यात्। पुनर्हिचिह्नोपिर हझरेखायाः सकाशात् झहककोणो दहझकोणेन तुल्यः कार्यः। हदरेखा हकरेखा च समाना कार्या। दकरेखा योजनीया। पुनर्जिचह्नोपिर वजबकोणो हदककोणेन तुल्यः कार्यः। वबरेखा योजनीया। तदा वबजकोणो बजवकोणेन तुल्यः कार्यः। वबरेखा योजनीया। तदा वबजकोणो बजवकोणेन तुल्यो भविष्यति। अयं हकदकोणेन तुल्यो जातः। हकदकोणेन दुल्यो जातः। हकदकोणेन तुल्यो जातः। अयं केन्द्रगतः कोणः जअबवृत्तखण्डान्तःपतितपा- लिगतकोणाद्विगुणोऽस्ति। तसादिस्मन् खण्डे दहझकोणेन तुल्यः कोणो भविष्यति। द्वितीयखण्डे दहतकोणतुल्यः कोणो भविष्यति। तदेवमुपपन्नं यथोक्तम्॥

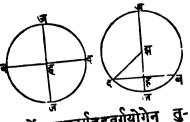
# अथ चतुस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

वृत्ते द्वे पूर्णज्ये यदि संपातं कुरुतस्तदैकस्याः खण्डद्वय-घातो द्वितीयायाः खण्डद्वयघातेन तुल्यो भवति ।

यथा अबवृत्ते अजबदरेखयोः संपातो हिचहे जातस्तदा अह-हजघातो बहहद्यातेन समानो भवति ।

अत्रोपपत्तिः ।

यदि द्वे पूर्णज्ये व्यासरूपे भवतस्तदा प्रकटैवोपपत्तिः । पुनर्यदि तयोरेका व्यासरूपा द्वितीया पूर्णज्या लम्बवत्संपातं व्यास- रेसायां करोति तत्र अजव्यासो शं केन्द्रं कल्पितम् । पुनर्झदरेखा संयोगिता । अहहजघातो झह-गांयुको झजवर्गातुल्यो भवति ।



मृजवर्गो सदवर्गतुल्योऽस्ति । सदवर्गो सहवर्गहदवर्गयोगेन तु-लोऽसि । पुनर्झहवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहहजधातो हदवर्गेण बहहदघाततुल्येन समानो जातः ॥

यदि खदरेखा छम्बवत्संपातं न करोति तदा झिचहात् सत-स्म्बो बदरेखोपरि कार्यः । अहहजघातो झतवर्गतहवर्गयोगतुल्येन झहवर्गेण युक्तो झजवर्गेण समानो भविष्यति ।

ब्रह्नगण युक्ता अजनगण समाना नार सार स्व अजनगेरत अतनगेतद्वर्गयोगतुल्यअद्वर्गेण स-मानोऽस्ति । पुनर्झतवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहहजघातहतवर्गयोयोंगः तदवर्गतुल्योऽवशिष्टः

जहरूजनातरुपानानाना प्रमान कर्मित त्यां जहरूजियां त्यां प्रत्योऽस्ति । स्यात् । पुनरिप बहहृद्धाततह्वर्गयोगः तद्वर्गेण तुत्योऽस्ति । पुनस्तह्वर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहहृजधातो बहृहृद्धातेन तु- स्योऽविशिष्यते ॥

यदि कापि तयोर्व्यासरूपा न भवति तदा तयोर्मध्ये या अजरेला

सा द्वितीयार्द्धे यदि संपातं करोति तदा झिचहात् झवलम्बः अजरेखायां कार्यः। झजरेखा झदरेखा च संयोज्या। झतरेखा झहरेखायां पतिष्यति। तदा अहहजघातो वहवर्गयुक्तो वजवर्गेण समा-



नोऽस्ति । पुनर्झववर्गो द्वयोयोज्यः । तदा अहहजघातो वहवर्गझव-वर्गयोगेन सहवर्गतुल्येन युक्तो वजवर्गझववर्गयोगेन तुल्योऽस्ति ।

<sup>9 °</sup>विश्वष्टः A. B.

झजनर्गेणापि तुल्योऽस्ति । झजनर्गो झद्दनर्गतुल्यो झह्दर्गहृद्दर्गयो-योगेन समानोऽस्ति । पुनर्झहनर्मो द्वयोः शोध्यः । तदा अहह्जघातो बहहृद्घाततुल्येन हृद्दर्गेण समानोऽनशिष्यते ॥

यदि तयोर्मध्ये कापि व्यासरूपा न भवति नाप्येका द्वितीयरेखाया

अद्धें संपातं करोति नापि द्वितीयोपिर लम्बवत्स्यात् तदा झवलम्बझतलम्बी झहरेखाया एकदिशि भवतो वादिग्द्वये भवतः। तदा अहहजघातो व-हवर्गयुक्तो वजवर्गेण समानोऽस्ति । बझवर्गो



द्वयोयों ज्यः । तदा अहह् जघातो वह वर्गवझ वर्गयोग तुल्य झह्वर्गयुतः सन् वजवर्गवझ वर्गयोग तुल्य झजवर्गेण समानः स्यात् । पुनरिष वह हद्घाततह वर्गयोगोंगः तद्वर्गसमानोऽस्ति । पुनस्तझ वर्गो द्वयो-यों ज्यते । तदा बहहद्घातः तह वर्गत झवर्गयोग तुल्य झह्वर्गेण युतः सन् तद्वर्गत झवर्गयोग तुल्य झह्वर्गेण समानो जातः । झद्वर्गो झजवर्गेण समानः । पुन झह्वर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा अहह जघातो वह हद्घातेन तुल्योऽवशिष्यते ॥

### अथ पश्चित्रंशत्तमं क्षेत्रम्।

तर्त्रं वृत्ताद्वहिःस्थितैकचिहादेका रेखा कर्णानुसारवृत्तपा-लिमात्रलमा कार्या द्वितीया वृत्तान्तर्गता ऊर्ध्वपालिलमा कार्या सा वृत्ताद्वहिःस्थितखण्डेन गुणिता सती प्रथमरेखा-वर्गेन तुल्या स्यात्।

यथा अबजवृत्तं दिचहं दजबरेला वृत्तगता द्वितीया द्वेरेला वृत्तपालिलमा प्रथमा कल्पिता। तदा बददजघातो दअवर्गेण समानो भविष्यति।

९ तत्र वृत्ताद्वहिःस्थितैकचिकान्निःसते ये रेखे तन्मध्ये यदेका रेखा वृत्तपालिमात्र-लगा भवति द्वितीया वृत्तान्तर्गता भवति तत्र या वृत्तान्तर्गता तस्या वृत्तबहिः-स्थितखण्डान्तःस्थितखण्डयोर्घातो पालिसंलगरेखाया वर्गो भवति । A. B.

यदि वृत्तगता रेसा केन्द्रगता भवति तदा हके-नदं कल्पितम् । पुनः अहरेसा संयोज्या । तदा बद-दजघातो हजवर्गयुक्तो हदवर्गेण तुल्योऽस्ति । हद-वर्गस्तु दअवर्गअहवर्गयोगेन तुल्योऽस्ति । दअवर्ग-हजवर्गयोगेनापि तुल्यः । हजवर्गी हअवर्गतुल्योऽस्ति ।



पुनर्हजवर्गो द्वयोः । शोध्यः तदा बददजघातो दअवर्गेण तुस्यो ऽवशिष्यते ॥

यदि केन्द्रगा न मवति तदा हदरेला हजरेलासंयोज्या । हचिह्नात् बदरेलोपिर हझलम्बः कार्यः । तदा बददजघात-झजवर्गयोयोंगो झदवर्गेण तुल्योऽस्ति । पुनर्झहवर्गो द्वयोयोंज्यः । तदा बददजघातो हजवर्गेण झजवर्ग-झहवर्गयोगतुल्येन युक्तो झदवर्गझहवर्गयोगेन हदवर्ग-तुल्येन समानोऽस्ति । हअवर्गसमहज्जवर्गदअवर्गयोगे-नापि समोऽस्ति । पुनर्हजवर्गो द्वयोः शोध्यः । तदा बददजघातो दअवर्गतुल्यः स्थात् ॥

## अथ पद्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ।

तत्र बिहः स्थिषिहात् वृत्तपर्यन्तं द्वे रेखे कार्ये। तत्रैका वृत्तान्तर्गता द्वितीया पालिलग्ना कार्या। द्वितीया वृत्तस्य प्रथ-मपालिपर्यन्तं कार्या। तत्रान्तर्गता निजबिहः स्थलण्डेन गुणिता द्वितीयरेखावर्गतुल्या चेत् तदा द्वितीयरेखा वृत्तान्तर्गता नैव स्यात् किं च पालिलग्ना बहिर्गतैव भवति।

यथा अवजवृत्तं दिचहं दजबरेखा वृत्तान्तर्गता । दअरेखा द्वितीया कल्पिता । पुनर्दिचिहात् दहरेखा कार्या यथा वृत्तपालिलमा

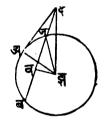
स्यात् वृत्तान्तर्गता न भवति तथा कार्या । पुनर्झकेनद्रात् अपर्यन्तं रेखा संयोज्या । तदा बददज्ञघातो अ दअवर्गेण समानोऽस्ति । दह्वर्गेणापि समानः । तदा दअरेखा हदरेखासमाना जाता । झअरेखा झहरेखा-समानास्त्येव । पुनर्झदरेखा द्वयोरेकास्ति । तसात् ब

दअझकोणो दहझसमकोणेन समानो जातः । दअझकोणोऽपि समकोणो जातः । दअरेखालम्बो जातः अझरेखोपरि । तसात् दअ-रेखा वृत्तपालिसंलमा जाता न च वृत्तान्तर्गता । तदेवमुपपनं यथोक्तम् ।

#### प्रकारान्तरम् ।

झअरेला झजरेला संयोज्या झचिन्हात् बदरेस्रोपरि झवलम्बः

कार्यः । तदा बद्दजघातजववर्गयोगो वदव-र्गेण समानोऽस्ति । पुनर्वझवर्गो योज्यः। तदा ब-द्दजघातो जववझवर्गयोगतुल्यझजवर्गेण तत्स-मेन झअवर्गेण युतः सन् वदवर्गवझवर्गयोगतुल्य-झदवर्गेण समानोऽस्ति । बद्दजघातो दअवर्गेण



समानोऽस्ति । तसात् दअवर्गझअवर्गयोगो झदवर्गेण समानः । तसात् झअदकोणः समकोणो जातः । तसात् दअरेखा वृत्तपालि-लगा भविष्यति न वृत्तान्तर्गता । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समभिधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरति संगतोऽभूत् तृतीयः ॥ इति श्रीमज्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते तृतीयाध्यायः समाप्तः ॥ ३ ॥

# अथ चतुर्थोऽध्यायः षोडद्यक्षेत्रीर्निरूप्यते। तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ।

वृत्तान्तरभीष्टरेखा तुल्या पूर्णज्या कर्तुमिच्छास्तीति परं चाभीष्टरेखा वृत्तव्यासादिधिका न भवति तथा कल्पनीया।

यथा अबजवृत्तं दहरेला कल्पिता। अस्मिन्वृत्ते बजव्यासः कार्यः। असात् दहरेलातुल्या झजरेला प्रथकार्या । पुनर्ज-

केन्द्रात् जझव्यासार्द्धेन अझववृत्तं कार्यम्। अजरे-स्वा संयोज्या। इयं पूर्णज्याऽभीष्टरेस्वातुल्या जाता ।



प्रकारान्तरम् ।

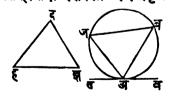
दहरेलाया झिचिहे अर्द्ध कार्यम् । वृत्तस्य वकेन्द्रं कल्पनीयम् । विचिद्वादुभयतः दझतुल्या वकरेला वतरेला पृथकार्या । पुनस्तचिद्वात् कचिद्वात्तललम्बः कमलम्बश्च कार्यः । लमरेला संयोज्या । इयं

ळमरेसाऽमीष्टरेसातुल्या पूर्णज्या जाता । कुतः । तकतुल्यत्वात् दहुतुल्यत्वाच ॥

# अथ द्वितीयं क्षेत्रम्।

वृत्तान्तिसुजं कर्तव्यमस्ति यस्य त्रिभुजस्य कोणा अ-भीष्टित्रभुजस्य कोणैस्तुल्या यथा भवन्ति।

यथा अबजवृत्तं दहझत्रिभुजं कल्पितम्। तदा वतरेखा अबजवृत्ते अचिह्ने संलग्ना कार्या। अचिह्नोपरि वअबकोणो हकोणतुल्यः कार्यः । तअजकोणो झकोणतुल्यः कार्यः । बजरेला संयोजिता । अवजत्रिभुज-मिष्टं जातम् ॥



<sup>9</sup> शक्के K. २ शकलम् K. ३, शकलम् K.

#### अत्रोपपत्तिः ।

अजबकोणो वअवकोणतुल्योऽस्ति हकोणतुल्योऽपि जातः । अवजकोणो जअतकोणतुल्योऽस्ति तदा झकोणतुल्यो जातः । दोषो वअजकोणो दकोणतुल्यः । इदमेवासाकिमष्टम् ।

#### प्रकारान्तरम् ।

दन्यूनकोणस्य दहमुजदञ्जभुजयोर्विचिहे तचिहेऽर्द्धे कार्यम् । वचिहतचिहाम्यां द्वौ लम्बौ निष्कास-

वाचहताचहाम्या द्वा लम्बा निष्कास-नीयौ तौ कचिहे मिलिष्यतः । पुनः कदरेखा कहरेखा कझरेखा च संयो-ज्याः । एतास्तिस्रो रेखाः समाना भवि-

ष्यन्ति । तस्य वृत्तस्य छकेन्द्रं कल्पनीयम् । छअरेखा योज्या । छिन्द्रोपिर अछबकोणो दकहकोणतुल्यः कार्यः । पुनः अछजकोणो दकझकोणतुल्यः कार्यः । शेषो बछजकोणो हकझकोणतुल्यः स्थात्। पुनः अबरेखा अजरेखा बजरेखा च संयोज्या । तदा अबजिन्धुजनस्साकिमष्टं स्थात्।

#### अत्रोपपत्तिः।

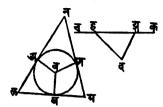
लअबकोणलब अकोणौ समानौ स्तः। कदहकोणकहदकोणौ समानौ। अलबकोणदकहकोणौ समानौ स्तः। तस्मात् अकोण-दकोणौ बकोणहकोणौ च समानौ जातौ। अनेनैव प्रकारेण शेषकोणा अपि समाना जाताः।

## अथ तृतीयं क्षेत्रंम्।

वृत्तोपरि तथा त्रिभुजं कल्पनीयं तथा तस्य कोणा अभीष्टत्रिभुजकोणतुल्या भवन्ति ।

९ शकलम् K.

यथा अवजवृत्तं दहञ्जत्रिभुजं कल्पितम् । हञ्जभुजः कचिइ-तचिद्वपर्यन्तं वर्द्धनीयः। वचिद्वं वृत्त-केन्द्रं कल्पितम् । वबरेखा योजिता । विचहोपरि बवअकोणो दहतको-णत्रल्यः कार्यः। बवजकोणो दशक-



कोणतुल्यः कार्यः । बिचिहात् अचिहात् जिचहाच तिस्रो रेखा वृत्तपा-लिलमाः कार्यास्तथा वर्द्धनीया यथा लिच्हनचिह्नमचिह्ने यथाकमं छ्याः स्युः । तस्मात् छमनत्रिभुजमिष्टं जातम् ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यचतुर्भुजमिता तस्य चतुःकोणयोगः चतुःसमकोणतुल्यः स्यात्। अलबवचतर्भने अः समकोणो बः समकोणश्चास्ति तौ चेच्छोध्येते तदा लकोणवकोणयोयोंगो समकोणद्वयतुत्यो जातो यथा दहतकोण-दहझकोणयोगो द्वयोः समकोणयोस्तुल्यः । अवबकोणो दहतकोण-तुल्यः । तस्मात् दहझकोणो छकोणतुल्यो जातः ।

अनेनैव प्रकारेण दश्चहकोणो मकोणतुल्यो जातः। तसात् शेषौ दकोषनकोणी समानी जाती । तदेवमुपपन्नं यथोक्तम् ।

#### प्रकारान्तरम् ॥

इकोणझकोणी रेखाद्वयेनाऽर्द्धिती कार्यी । एते द्वे रेखे त्रिभुजान्त-स्तचिद्वे संपातं करिष्यतः । पुनस्तचिद्वात् हृझभुजोपरि तकलम्बः

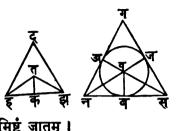
कार्यः । पुनर्वबरेखा कार्या । पुनर्वचि-द्वोपरि बवनकोणः कतृहकोणतुंल्यः कार्यः । बिचहादेका रेखा पालिसंलमा कार्या । पुनरियं रेखा बनरेखा च व- ह

र्द्धनीया निचह्ने यथा संपातं करिष्यतः । तस्मात् बनवकोणः कहत-

۹ पको B.

कोणतुल्यो जातः। विचिद्दे नवसकोणो हतझकोणतुल्यः कार्यः। नब-

रेखा वर्द्धनीया यथा वसरेखोपरि
सचिहे संपातं करोति । तसात् बसवकोणः कझतकोणतुल्यो जातः ।
पुनर्नचिहात् सचिहात् तथा द्वे रेखे
कार्ये तथा वृत्तलमे स्तः । गचिहपई क स्र



#### अस्योपपत्तिः ।

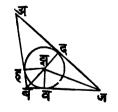
अवरेसा संयोज्या । वअरेसा वबरेसा समानास्ति । वनरेसा त्रिमुजद्वयेऽप्येकैव । अकोणबकोणौ समकोणौ स्तः । तसात् अनव-कोणबनवकोणौ समानौ जातौ । पुनः अनबकोणो दहझकोणेन तुल्यो जातः । एवं जसबकोणो दझहकोणेन समानो जातः । तसा-देतौ दकोणगकोणौ तुल्यो जातौ ॥

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ।

# त्रिभुजान्तर्वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

अवजित्रभुजं कल्पितम् । पुनर्बकोणजकोणौ रेखाद्वयेनाऽद्वितौ कार्यौ । तद्रेखाद्वयं झचिह्ने मिलिष्यति । पुनर्झचिह्नात् झदलम्ब-झहलम्बझवलम्बा भुजेषु कार्याः । एते त्रयो लम्बा मिथः समाना

भवन्ति । कुतः । झबवकोणझबहकोणी झह-बित्रभुजे झवबित्रभुजे च समानी स्तः । पुनर्व-कोणहकोणी समकोणी स्तः । झबभुजो द्वयो-स्निभुजयोरेकैवास्ति । तसात् झहभुजझवभुजी समानी जाती । एवं झवजित्रभुजे झदजित्रभुजे



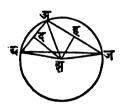
भुजा मिथः समानाः । पुनर्झकेन्द्रं कृत्वा अन्यतमलम्बव्यासार्द्धेन दहववृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तमसाकमिष्टम् ।

९ शकलम् K.

### अथ पश्चमं क्षेत्रम् ।

## यदि त्रिभुजोपरि वृत्तं कर्नुमिच्छास्ति ।

यथा अवजित्रमुजं कल्पितम् । अवभुजअजभुजयोर्दिचिहे हिचहे चार्द्ध कार्यम् । दझलम्बद्दझलम्बी कार्यी यथा झचिहे लग्नी स्तः ।







**झअझबझज**रेखाः संयोज्याः । एतास्तिसः समानाः स्युः । दबदअ-रेखयोः समत्वात् । दझभुजस्तूभयत्र एक एव । द्कोणौ समकोणौ स्तः । एवं अझहत्रिभुने जझहत्रिभुने बोध्यम् ।

**झ**चिहं केन्द्रं कृत्वा अन्यतमरेखां व्यासार्द्ध कृत्वा अवजवृत्तं कार्यम् । इदमेवासाकमिष्टम् ।

द्सलम्बह्सलम्बयोः संपातिसभुजाद्वहिः पतित । यथा पूर्ववृत्ते अथवा त्रिभुजान्तर्भवति वा भुजोपरि पतति ॥

## अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।

# वृत्तान्तः समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अबजदवृत्तं कल्पितं हुकेन्द्रं च तदा वृत्तान्तः अजव्यास-बदव्यासयोः संपातः समकोणेऽस्ति । पुनः अबरेलाबजरेलाजदरेलाद अरेलाः संयोज्याः । तदेष्टं चतुर्भुजमुत्पन्नम् । कुतः । चतुर्णी त्रिभु-जानां भुजानां कोणानां च समत्वात् ॥

९ शकलम् K.

#### प्रकारान्तरम् ।

वृत्ते प्रथमं हझरेला कार्या । पुनर्झचिद्वात् झवतरेला वृत्तपालिलमा कार्या । झवं झतं प्रत्येकं झहतुल्यं कार्यम् । हवरेला हतरेला योज्या । तदा वकोणतकोणौ प्रत्येकमर्द्धसमकोणौ



जाती । वहतकोणः समकोणो जातः । पुनः अजरेखा संयोज्या । तदा अझजनापं वृत्तस्य चतुर्थोऽशो भिषयित । तस्य पुनः अवपूर्ण-ज्याद्वजपूर्णज्ये अजपूर्णज्यातुल्ये कार्ये । पुनर्बदरेखा योज्या । तदेष्टं चतुर्भुजमुत्पन्नम् । कृतः । चतस्रो रेखाश्चतुर्णो पादानां पूर्णज्याः सन्ति । चत्वारः कोणाः समकोणाः सन्ति ॥

## अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

# वृत्तोपरि समकोणसमचतुर्भुजं कर्तव्यमस्ति।

यथा अवजदवृतं कल्पितम् । असिन् अजन्यासबद्व्यासौ समकोणे संपातं कुर्वन्तौ हचिह्नकेन्द्रसंलमौ कार्यौ । न्यासयोः प्रान्तिभ्यश्चतस्रो रेखा वृत्तपालिलमाः कार्योः । एता रेखा झवतकचिह्नेषु संपातं करिष्यन्ति । इदं समकोणसमचतुर्भुजिमष्टं जातम् ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

झहक्षेत्रस्य भुजाः समानान्तराः सन्ति । आहबकोणाः समकोणाः सन्ति । आहबकोणाः समकोणाः सन्ति । झकोणस्य समकोणत्वात् । इदं क्षेत्रं समकोणस-मचतुर्भुजमुत्पन्नम् । हआहबरेखयोः समत्वात् । एवं शेषं क्षेत्रत्रयं समकोणसमचतुर्भुजं जातम् । तसात् झकक्षेत्रमपि समकोणसमचतुर्भुजं जातम् ॥

९ शकलम् K.

### अथाष्टमं क्षेत्रम् ।

# तत्र समकोणसमचतुर्भुजान्तर्वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजद चतुर्भुजं किल्पतम् । तसात् अवभुजअदभुजौ झचिह्नहचिह्नयोरिद्धितौ कार्यौ । हवलम्बझतलम्बौ किचिह्नसंलमो
कार्यौ । तदेतस्य क्षेत्रस्य चत्वारि समकोणसमचतुर्भुजानि क्षेत्राणि भविष्यन्ति । तसात्
कहकझकवकताश्चतक्षो रेखाः समाना भविष्यन्ति । पुनः किचिहं केन्द्रं कृत्वा अन्यतमैकरेसाब्यासार्द्धेन वृत्तं कार्यम् । तदेष्टवृत्तं स्यात् ॥

## अथ नवमं क्षेत्रम् ।

# समकोणसमचतुर्भुजोपरि वृत्तं कर्नुमिच्छास्ति।

यथा अबजदक्षेत्रं कल्पितम् । अजकर्णबदकर्णौ हचिद्दे संपातं

कुर्वन्ती कार्यी । तदा हअहबहजहदरेखाः समानाः सन्ति । कुतः । अस्य क्षेत्रस्य चतुर्णी भुजानां समत्वात् । अबजदस्याप्यष्टी कोणाः

समानाः सन्ति । पुनर्हकेन्द्रं कृत्वा अन्य-

तमरेखा व्यासार्द्धेन वृत्तं कार्यम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥ अथ दशमं क्षेत्रम् ।

एकं त्रिभुजं तादृशं कर्त्तव्यमस्ति यस्य द्वी भुजी समानी स्यातां भूम्याश्रिती कोणी च मुखाश्रितकोणाद्विगुणी स्याताम्।

यभा अबरेला कल्पिता । अस्या रेलायाः जिचहे तथा लण्डद्वयं

९ शकलम् K. २ व्यासाधे कृत्वा D. K.

कार्य यथा अववज्ञघातः अजवर्गतुत्यः स्यात् । पुनः अकेन्द्रं कृत्वा अवव्यासार्द्धेन बहृद्वृतं का-र्यम् । पुनः अजतुत्या बद्पूर्णज्या कार्या। अद-रेखा कार्या। तसात् अबद्त्रिभुजिमष्टं जातम्।



अस्योपपत्तिः ।

जदरेला संयोज्या । अजदित्र भुजोपिर अजदिवृत्तं कार्यम् । बअवदरेले बिच्हानिस्ते स्तः तत्रैकया रेलया अजदिवृत्तभेदः कृतः
द्वितीया पालिं स्पृष्ट्वेव गता । कृतः । अववजघातः बद्दवर्गतुल्योऽस्ति ।
ततो बदरेला अजदवृत्तपालिं स्पृष्ट्वेव गता तया वृत्तभेदो न कृतः ।
इयं यसिश्चिहे लग्नास्ति तस्मानिस्ता द्वारेला वृत्तं भित्त्वा गतास्ति ।
तया वृत्तस्य खण्डद्वयं कृतमित्त । तस्मात् जअदिकोणो बद्वाकोणतुल्यो जातः । पुनर्जद्अकोणो द्वयोः कोणयोर्योज्यः । तदा बकोणतुल्यो जातः । अयं
योगो बजदकोणतुल्योऽस्ति । तस्मात् अजतुल्या बदरेला जदसमाना जाता । तेन जअदकोणजद्वअकोणौ समानौ जातौ । तस्मात्
बदम्स्याश्चितौ कोणौ अकोणाद्विगुणौ जातौ । इदमेवेष्टम् ।

#### अथवा प्रकारान्तरेणाह ।

अबद्तिभुजस्य अकोणो दजबित्रभुजस्य जदबकोणेन समानो-ऽिल्त । बकीण उभयोरेक एवास्ति । शेषं अदबकोणो दजबकोण-तुल्यो जातः । तसात् अजरेखातुल्या बदरेखा जदरेखासमाना भवि-ष्यति । अकोणो जदअकोणतुल्यो भविष्यति । अयं अकोणः पूर्वे जदबकोणतुल्यस्थितः। तसात् अबदकोणो अदबकोणः प्रत्येकं द्विगु-णितअकोणतुल्यो जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

प्रकारान्तरम् ।

अबजवृत्तं कार्यं हकेन्द्रं कृत्वा । पुनरेतद्वृत्तपालौ अचिद्धं कार्यम् ।

१ बकोण उभयोः संयोजितः K.

पुनः अचिहात् अदरेसा वृत्तपालिलमा निष्कास्या । इयं व्यासतुल्या

कार्या। दबहजरेला संयोज्या । पुनर्बकेन्द्रं कृत्वा बजाई व्यासेन जझवं वृत्ताई कार्यम्। इदं वृत्तं बदरेलाया बहिगीमिष्यति। कृतः । इ बवतुल्यबजरेलाया अदतुल्यत्वात् । इयं

अदरेखा बदरेखाया अधिकास्ति । पुनर्जदरेखा वचिह्नपर्यन्तं निष्का-स्या । पुनर्दकेन्द्रं कृत्वा दअव्यासार्द्धेन अझचापं कार्यम् । इदं चापं जझवचापं झचिह्ने भेत्स्यति । कुतः । वबतुल्या दअरेला बदरेलाया अधिकास्ति । पुनर्झजझबझदरेखा योजनीयाः । तत्र झबझदरेखे मिथः समाने । कुतः । बजदअरेखयोः समानत्वात् । पुनर्झचिह्नात् **झत**लम्बो बजरेस्रोपरि निष्कास्यः । तसाद् दबरेसा तचिह्रोपर्यद्विता भविष्यति । झतजकोणः समकोणोऽस्ति । झवजकोणोऽधिककोणो मविष्यति । झजवर्गो झबवर्गबजवर्गद्विगुणजबबत्वातयोगतुल्यो-ऽस्ति । द्विगुणजबबत्यातो जबबद्याततुल्योऽस्ति । पुनर्बजवर्ग-जबबद्धातयोगो जदजब्धाततुल्योऽस्ति । दअवर्गतुल्यझबवर्गो ज-दबद्घातसमानोऽस्ति । कुतः । अदरेखाया लघुवृत्तपालिसंलमत्वात् । पुनर्दजजबघातजददबघातयोगो जदवर्गतुल्योऽस्ति। तसात् जझवर्ग-जदवर्गी समानी जाती। तसात् जझजदरेले समाने जाते। पुनर्ज-समानयोर्बजझकोणबझजकोणयोर्योगेन समानः । तस्मात् जझद-त्रिमुजस्य समयोर्भुजयोर्जुझदकोणो जदझकोणः प्रत्येकं द्विगुणितज-कोणतुल्योऽस्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

# अथैकादशं क्षेत्रम् ।

अभीष्टवृत्तान्तः समानं पश्चभुजं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति । यथा अवजवृत्तं कल्पितम् । दशमक्षेत्रोक्तवत् त्रिभुजं कार्यम्।तद्

१ शकलम् K.

दहश्गित्रभुजं कल्पितम् । वृत्तान्तः अवजित्रभुजं कार्यं यथास्य त्रि-भुजस्य कोणा बहिःकल्पितित्रभुजस्यकोणैः समाना भविष्यन्ति । वृत्ता-न्तिस्भिजं अवजं कल्पितम् । पुनः अवजकोणः अजबकोणः प्रत्येकं ववरेखया जतरेखयाद्धितः कार्यः । पुनः अवरेखावजरेखाअतरेखा-तवरेखाः संयोज्याः । तसात् अतवजवं समपश्चभुजं क्षेत्रं जातम् ।

अस्योपपत्तिः ।

बअजकोणवबजकोणअबवकोणअजतकोणतजबकोणा मिथः

समानाः सन्ति । एतेषां चापानि समानानि पूर्णजीवाश्च समानाः । तसात्पश्चभुजा अपि समाना जाताः । अस्य पश्चभुजस्य यः कश्चित्कोणः पश्चचापेषु स चापत्रये लग्नोऽस्ति । तसात्पश्चकोणा अपि समाना जाताः ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

तद्वृत्तस्य झकेन्द्रं कल्पयित्वा झअव्यासाद्धं कार्यम् । झिचेहे अझ-बकोणस्तादशत्रिभुजभूमितुल्यः कोणः कार्यः । झिचेहे बझरेस्नाया बझजकोणस्तादश एव कार्यः । पुनः झिचेहे जझरेस्नाया जझदकोण-

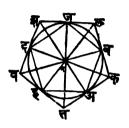
स्तत्कोणतुल्य एव कार्यः। पुनर्झचिहे दझरे-स्वाया दझहकोणः कार्यः। त्रिभुजस्य को-णत्रययोगः समकोणद्वयतुल्यो भवति । / त्रिभुजस्य मुसकोण एकसमकोणस्य पञ्चमां- ह

शद्वयेन तुल्योऽस्ति । यः कोणोऽसाभिः कृतः स प्रत्येकं चतुर्गुणपञ्चमां-शतुल्य एकस्य समकोणस्यास्ति । चतुर्णो कोणानां योगः समकोणत्रयस्य समकोणपञ्चमांशस्य योगेन तुल्योऽस्ति । तसात् श्लेषः अझहकोण एकसमकोणस्य चतुर्गुणपञ्चमांशतुल्यो जातः । तसात्पञ्चकोणा अपि समाना जाताः । एतेषां चापानि पूर्णजीवाश्च समाना जाताः । यदि अववजजददहहअपूर्णज्याः संयोज्यन्ते तदा पश्चसमभुजसमकोणक्षेत्रं भवति । इदमेवासाकमिष्टम् ।

## अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

तत्र वृत्तोपरि पश्चसमभुजसमानकोणं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति।

पूर्व वृत्तान्तः पञ्चसमानभुजसमानकोणं क्षेत्रं कार्यम्।पञ्चकोणेभ्यो वृत्तपालिलमा बहिः पञ्चरेखाः कार्याः। एताः पञ्चरेखा सवतकल-निद्देषु मिलिता भवन्ति । पञ्चसमभुजक्षेत्रं जातम्।



अत्रोपपत्तिः ।

मकेन्द्रं किल्पतम् । केन्द्रात् दशस्य चिहेषु रेखाः संयोज्याः । तत्र झजझदरेखे समाने खः । पुनर्मजमदरेखे अपि समाने । मझरेखोन्मयोखिभुजयोरेकैव । मझजित्रभुजस्य मझदित्रभुजस्य कोणा मिथः समाना जाताः । झमजकोणो झमदकोणश्च प्रत्येकं जमदकोणस्यार्द्ध-कोणोऽस्ति । अयं जमदकोणो दमहकोणेन समानोऽस्ति । कुतः । जदचापदहचापयोः समानत्वात्। एवं दमवित्रभुजस्य वमहित्रभुजस्य कोणा मिशः समानाः । दमवकोणो दमहकोणस्यार्द्धमितोऽस्ति । तसात् दमवकोणो दमझकोणेन समानो जातः । दस्य कोणद्वयं समकोणद्वयमस्ति । मदभुजो द्वयोरेक एव । तसात् मदझित्रभुजस्य मदवित्रभुजस्य च भुजाः कोणाः समाना जाताः । एवं सर्वेऽपि भुजाः समानाः ॥

#### मकारान्तरम् ।

मअरेखा कार्यो । अचिहात् अवझरेखा वृत्तपालिलमा कार्यो ।

९ शकलम् K.

अमरेखाया मिनहोपरि अमझकोणअमवकोणो दशमक्षेत्रोक्तत्रिभुजमुखकोणतुल्यो कार्यो । मझ-रेखा मवरेखा च दीर्घा कार्या यथा झवरेखायां झविचह्योः संपातं करिष्यति । तसात् झमव-कोणश्चतुणी समकोणानां पञ्चमांशो जातः । पञ्चकोण-र्शृत्तस्य पञ्चसमविभागा भविष्यन्ति । पुनर्भुजा मवसमानाः कार्याः । पुनर्वतत्तककलल्क्झरेखाः संयोज्याः । तसात्पञ्चत्रिभुजानां भुजाः कोणाश्च मिथः समाना जाताः । एते सर्वे मिलित्वा पञ्चसमभुजसमान-क्षेत्रं जातम् । पुनर्भवमजमदमहलम्बाः कार्याः । एते लम्बा मअव्या-सार्द्धेन तुल्या जाता इति निश्चितम् । तसात्पञ्चसमभुजस्य भुजा वृत्त-पालिल्या जाता ईति निश्चितम् ॥

### अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ।

## तत्र पञ्चसमभुजस्य मध्ये एकं वृत्तं कर्त्तुमिच्छास्ति।

१ इत्युपपन्नम् D. K. २ शकलम् K.

पश्चसमभुजसमानकोणानामर्द्धमिता भविष्यन्ति। याभी रेखाभिरेते कोणा अद्धिता जातास्ता अपि समानाः स्युः। तस्मादेषां त्रिभुजानां भूमयः पश्च-समभुजस्य क्षेत्रस्य भुजरूपाः सन्ति । तेषां त्रिभुजानां भुजाः कोणाश्च मित्रः समानाः सन्ति । पुनर्जस्य द्वयोः कोणयोः समानत्वात् वमकोणयोः समकोणत्वेन झजभुजस्य एकभुजत्वेन झवलम्बझमलम्बौ सन्मानौ जाताविति निश्चितम् । एवं शेषलम्बा अपि समाना भविष्यन्ति । पुनर्झचिहं केन्द्रं कृत्वा एकलम्बार्द्धव्यासेन वतकलमवृत्तं कार्यम् । इदमभीष्टवृत्तं जातम् ।

अथ याभ्यां जकोणदकोणौ अद्धितौ कृतौ ते रेखे पश्चसमभुजक्षे-त्रान्तर्मिलिष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यदा जझरेखा वर्द्धिता कृता तदा अवभुजे संपातं कुर्वती न गिन-ध्यति । यदि संपातं करिष्यति तदा विचेह्ने संपातः कृत इति कल्पितम् । जबरेखादवरेखा योजिताः । ह पुनर्जबवित्रभुजे जदवित्रभुजे जबजदौ भुजौ मिथः समानौ स्तः। जवभुजो द्वयोरेकैवास्ति । जस्य

द्वी कोणौ समानौ । तसाजाब अकोणो जदवकोणेन समानो जातः। जदहकोणेन समानः पूर्व स्थितः । इदम ग्रुद्धम् । पुनः अचिह्वोपिर सा रेखा न गमिष्यति । यदि गमिष्यति तदा जअरेखा दअरेखा वर्द्धनिया । प्रथमप्रकारेण निश्चितं जब अकोणो जद अकोणेन समानो जातः । एवं सा रेखा दहभुजे संपातं न करिष्यति । हचिह्वेपि संपातं न करिष्यति । तसात्सा जङ्गरेखा अहभुजे संपातं कुर्वती गमिष्यति । अनेनैव प्रकारेण दङ्गरेखा अबभुजे संपातं करिष्यति । तसात् एते द्वे जङ्गदङ्गरेखे पश्चसमभुजक्षेत्रस्थान्तः संपातं करिष्यतः ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ।

समीपस्थं भुजद्वयं प्रत्येकमर्द्धे कृत्वाऽर्द्धचिहात् वझतझलम्बी कार्यौ ।

एती द्वी लम्बी पञ्चसमभुजक्षेत्रस्यान्तर्मिलिष्यतः । कुतः । वङ्गलम्बो विदित्तश्चेत् पञ्चसमभुजक्षेत्राद्धहिर्गमिष्यति बजभुजे संपातं न करिष्यति । पुनस्तझलम्बः आहभुजे संपातं न करिष्यति । तसादेती लम्बी बजभुजे मिलिष्यतः । अथवा बहिर्मिलिष्यतः । पुनर्शद्श-

जरेला योज्या। पुनर्दवद्तमुजयोः समानत्वेन झद्स्य एकमुजत्वेन खत्योः समकोणत्वेन झद्वकोणझद्तकोणौ समानौ जाताबिति निश्चितम्। अनयोः कोणयोरन्यतरकोणः पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणार्द्धतुल्योऽितः। पुनर्भवजित्रभुजे झवदित्रभुजे झद्वकोणझज्वकोणौ
समानौ त्तः। तसाइझाजवकोणोऽिप पञ्चसमकोणसमभुजस्य क्षेत्रस्य कोणार्द्धेन तुल्यो जातः। पुनर्भदजित्रभुजे झजबित्रभुजे जस्य द्वौ कोणौ जबजदौ भुजौ च मिथः समानौ त्तः। झजभुज उभयोरेक एवातिः।
तसात् जदझकोणः पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणाक्यूनोऽस्त्ययं जबझकोणन तुल्यो जातोऽथवाऽिषको जातः। इदमगुद्धम्। तसात्
तानुभौ लम्बावन्तिर्मिलिष्यतः। पुनर्भिच्हात् लम्बा भुजोपरि निष्कासनीयाः। एते सर्वेऽिप लम्बाः समाना भविष्यन्ति। पुनस्ततो वृत्तं कार्यम्।

### पुनरन्यः प्रकारः।

अवभुजो निचहपर्यन्तं निष्कासनीयः । पुनः अवरेस्रोपरि वृत्तसण्डं कार्यम्। जवनकोणतुल्यो वृत्तसण्डे कोणो भवितु-मईति तथा कार्यम् । तत् सण्डं अझव जातम् ।

तस्य झिचिहेऽद्धे कार्यम् । पुनर्झअरेखा झव- हे रेखा च कार्या । तदा झबअकोणो झअबको-

णश्चैतौ समानौ । अनयोयोंगो जबअकोणेन तुल्यः । तसात् प्रत्येकं पञ्चसमकोणसमभुजस्य कोणार्द्वतुल्यो जातः । तसात् झअहकोणो झबजकोण एताविप तस्य क्षेत्रस्य कोणार्द्वतुल्यौ जातौ । पुनर्झजरेसा झदरेसा झहरेसा च कार्या। त्रिभुजानां समानत्वं निश्चितम् ।

पुनर्झिचिहात् भुजेषु लम्बाः कार्याः । एते लम्बाः समानाः । पुनर्वृत्तं कार्यम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रेम् । पश्चसमभुजोपरि वृत्तं कर्त्तुं चिकीर्शस्ति ।

यथा अवजदहं पश्चसमभुनं कल्पितम् । पुनर्जकोणदकोणौ
रेखाभ्यामद्भितौ कार्यौ । तद्रेखाद्वयं झचिह्ने मिलिष्यति । पुनर्झवझअझहरेखाः कार्याः । एतानि
त्रिभुजानि एते भुजाश्च समाना भविष्यन्ति ।
पश्चादेकं भुजं व्यासाद्धे कृत्वा वृत्तं कार्यम् ॥

पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

प्रथमं अजरेखाअदरेखा संयोज्या । पुनः अबजित्रभुजोपरि अबजवृत्तं कार्यम् । इदं वृत्तं पश्चसमभुजोपरि भविष्यति ॥

अत्रोपपत्तिः ।

पश्चसमभुजक्षेत्रे त्रीणि त्रिभुजानि भवन्ति । तसादस्य पश्चकोणाः घट्कोणैस्तुल्या भवन्ति । तत्रैककोण एकसमकोणेन समकोणपश्चमां- शयुतेन समानो जातः । तदा बअजकोणो बजअकोणश्च प्रत्येकं समकोणस्य पश्चमांशद्वयेन तुल्यो जातः । एवं हअदकोणोऽपि जअ-दकोणोऽपि । तसाद्वअदकोणश्चतुर्गुणितपश्चमांशेन तुल्योऽस्ति । अयं कोणो बजदकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । अवजकोणः अदजकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । पुनः अबजकोणः अदजकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्योऽस्ति । पुनः अबजकोणः अजदकोणेन सहितो द्वयोः समकोणयोस्तुल्यो जातः । तसाद्वृत्तं दिन्हे गमिष्यति । यदि दिन्हे न गमिष्यति अ-दरेसां भित्वा झन्हे गमिष्यति । कल्पतम् । झजरेसा कार्या । तदा अझजकोणः अदजकोणेन समानो जातः । तसात् अन्तस्थः कोणो

९ शकलम् K.

बहिःस्थकोणेन समानो जातः । अनेन प्रकारेणेदं निश्चितं वृत्तं हचि-ह्योपरि गमिष्यति ॥

## अथ पश्चदशं क्षेत्रम्।

वृत्तस्यान्तः समषड्भुजं क्षेत्रं निष्कासनीयमिति चि-कीर्षास्ति ।

तत्र अबद्वृतं कार्यं जद्व्यासो हकेन्द्रं च कल्पितम् । पुनर्ज-चिह्नोपरि हजव्यासार्द्धेन अबझ्वृत्तं कार्यम् । अहरेला बहरेला संयोजनीया। एते रेले वचिह्नतचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीये। पुनः अजजव-बववददततअपूर्णज्याः संयोजनीयाः। तदा समषड्भुजं क्षेत्रं जातम्।

#### अत्रोपपत्तिः ।

अहजत्रिभुजं बहजत्रिभुजं प्रत्येकं समत्रिभुजमस्ति । प्रत्येकक्षेत्रस्य

प्रत्येककोणः समकोणस्य द्विगुणिततृतीयांशेन तुल्योऽस्ति। तसात् दहृतकोणो बहुजकोणतुल्यो-ऽस्ति। अयमपि समकोणस्य द्विगुणिततृतीयांशेन तुल्योऽस्ति। तदा अहृतकोणोऽनेन तुल्यो जातः। तसात् केन्द्रस्यापि षट्कोणाः समाना जाताः। एतेषां चापानि पूर्णज्या अपि समाना जाताः। इदमेवासाकिमष्टम्।



अनेन क्षेत्रेणायं निश्चयो जातो वृत्तंषष्ठांशस्य पूर्णज्या व्यासार्द्ध-तुल्या भवति ॥

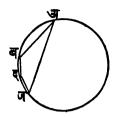
## अथ षोडशं क्षेत्रम् ।

वृत्तस्यान्तः पञ्चदशसमभुजं समकोणं क्षेत्रं कर्त्तुमि-च्छास्ति ।

तत्र अवपूर्णज्या पश्चसमभुजस्यैकभुजेन तुल्या निष्कासनीया ।

९ शकलम् K.

अजपूर्णज्या त्रिभुजस्यैकभुजेन तुल्या कार्या । अबचापे त्रयः पञ्चदशविभागाः पतिष्यन्ति । बजचापे द्वौ पञ्चदशविभागौ पतिष्यतः । तदा अजचापे पञ्च पञ्चदशांशाः पतिष्यन्ति । बजचापं दिचिहेऽद्वितं कार्यम् । तसात् बद-



चापं जदचापं प्रत्येकं वृत्तस्य पश्चदशमांशो जातः । पुनर्दजपूर्णज्या दवपूर्णज्या संयोजनीया। एवं सर्वेषु विभागेषु । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

इति श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समिनधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरति संगतोऽभूचतुर्थः ॥ इति श्रीमज्जगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ॥ ४ ॥

#### अथ पश्चमोऽध्यायः प्रारभ्यते।

# तत्र पश्चिविंशतिक्षेत्राणि सन्ति । तत्र प्रथमं परिभाषा निरूप्यते ।

यत्र प्रमाणद्वयं न्यूनाधिकमस्ति तत्र न्यूनं द्वितीयस्यांशो भवति महान् गुणगुणितलघुतुल्यो भवति ।

यदि बृहत्प्रमाणं निरवयवत्वेन निःशेषं करोति महत्प्रमाणं च रुष्विवयविघाततुल्यं भवति तत्रैको राशिर्द्वितीयराशेरंशो भवति वा गुणैगुणितद्वितीयतुल्यो भवति एतादृशं यत्र राशिद्वयं भवति तत्र निर्णेत्तिरित्युच्यते ।

यंत्र निष्पत्तिर्भवति तत्रैकराशिरेकादिगुणितो द्वितीयराशेरिको भवति ।

येषां निष्पत्तिः सैमाना भवति ते राशयः सजातीया भवन्ति ।

यत्र राशिचतुष्टयमस्ति तत्र प्रथमराशिस्तृतीयराशिश्च केनचित्प्र-माणेन गुणितो द्वितीयराशिश्चतुर्थराशिरन्येन केनचित्प्रमाणेन गुणित-स्तत्र प्रथमघातौ द्वितीयघाताभ्यामधिकौ वा न्यूनौ वा समौ भवत-स्तदा ते राशय एकनिष्पत्त्युपिर सन्ति।प्रथमराशिनिष्पत्तिर्द्वितीयेन यथा भवति तथा तृतीयनिष्पत्तिश्चतुर्थेन। इयं निष्पत्तिः सजातीया श्चेया।

यदि प्रथमघातो द्वितीयघातादिषको भवेत् तृतीयघातश्चतुर्थाद-घिको न भवेत् तत्र प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिस्तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तेरिष-का भवेत् तत्राधिकनिष्पत्तिः संज्ञा ज्ञेया । विजातीया च ज्ञेया ।

यत्र चतुर्णी राशीनां मध्ये द्वितीयः प्रथमः कल्पते तत्र विलोम-निष्पत्तिर्भवति ।

९ शकलानि K. २ लप्यवयिषातं B. ३ एकादिगुणिततुत्योभवति B. ४ निष्पत्तिर्भवति B. ५ तत्रैकराशिषाता द्वितीयराशेरिका भवन्ति तत्रापि निष्पत्तिरुत्यवते । B. ६ Ms. B. inverts the order.

यत्र प्रथमस्य प्रथमेन निष्पत्तिर्देशा द्वितीयस्य द्वितीयेन निष्पत्ति-र्देशा तत्र विनिमयनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमद्वितीययोगेन यदि द्वितीयस्य निष्पत्तिर्दीयते तत्र योग-निष्पत्तिर्देशा ।

प्रथमस्य प्रथमद्वितीययोयोगेन निष्पत्तिर्दीयते तत्र विलोमयोग-निष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमद्वितीययोन्तरेण द्वितीयस्य निष्पत्तिर्दीयते तत्रान्तरनि-ष्पत्तिर्हेया ।

प्रथमस्य प्रथमद्वितीययोरन्तरेण निष्पत्तिर्दीयते तत्रान्तरविस्रोमनि-ष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र पङ्क्तिद्वये बहूनि प्रमाणानि सन्ति प्रत्येकं प्रमाणद्वयमेक-पङ्क्तिस्थं यस्यां निष्पत्तौ भवेत् द्वितीयपङ्कौ तादृशं प्रमाणद्वयं त-स्यामेव निष्पत्तौ यदि भवेत् तत्रान्तरालस्थानि प्रमाणानि त्यक्त्वा आ-चन्तयोरेव निष्पत्तिरुंखते तत्र समाना निष्पत्तिर्ज्ञेया ॥

यत्र राशित्रयात्मकं पैक्किद्वयमस्ति तत्र प्रथमपक्कौ प्रथमप्रमाणस्य द्वितीयेन यथा निष्पत्तिरस्ति तादृश्येन द्वितीयपक्कौ प्रथमद्वितीवयो-रस्ति पुनः प्रथमपक्कौ द्वितीयपृतीवयोर्वा निष्पत्तिः सैन द्वितीयपक्कौ द्वितीयपृतीययोरियं यथाक्रमनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र प्रथमपङ्को प्रथमद्वितीययोर्यादश्ची निष्पत्तिरस्ति तथा द्विती-यपङ्को द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तिर्भवति पुनः प्रथमपङ्कौ द्वितीय-तृतीययोर्निष्पत्तिः सैव द्वितीयपङ्कौ प्रथमतृतीयनिष्पत्तिर्भवति इयं कमरहिता निष्पत्तिर्देया ॥

#### इति परिभाषा ।

Digitized by Google

<sup>9</sup> Ms. B. omits it. २ °र्ष्ट्यते B. ३ प्रमाणद्वय B.

## अथ प्रथमं क्षेत्रम् ।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रमाणे द्वितीय-प्रमाणं येवद्भुणं भवति ताबद्भुणं चतुर्थप्रमाणं तृतीये भ-वति तत्र प्रथमतृतीययोगे द्वितीयचतुर्थयोगस्तद्भुणित एव भवति ।

यथा अवरेलायां यावत्यो हरेलाः प्राप्यन्ते तावत्यो बदि जद-रेलायां झरेलाश्च प्राप्यन्ते तदा अवजदयोगे हझयोगास्तावन्त एव प्राप्यन्ते ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

अबरेसाया विविद्वे हतुत्यं भागद्वयं कार्यं जदरेसायास्ति विद्वे झतुत्यं भागद्वयं कार्यम् । तदा अवजतयोगो हझयो- अ
गतुत्योऽस्ति । वबतदयोगो हझयोगेन तुत्योऽस्ति ।
तसात् अवजदयोगे हझयोगास्तावन्तो भविष्यन्ति व
विश्व अवरेसायां यावत्यो हरेसाः सन्ति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

## अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ।

षद्प्रमाणानि यत्र भवन्ति प्रथमप्रमाणे यदङ्कगुणितं द्वि-तीयप्रमाणं भवत्येवं तृतीयप्रमाणे तद्गुणितचतुर्थप्रमाणं यदि भवति पश्चमप्रमाणे यद्गुणितं द्वितीयप्रमाणं भवति तद्गु-णितमेव चतुर्थप्रमाणं षष्ठप्रमाणे यदि स्थात् तदा प्रथमपञ्चम-प्रमाणयोयोंगे यद्गुणितं द्वितीयप्रमाणं स्थात् तृतीयषष्ठप्रमा-णयोगे तावद्गुणमेव चतुर्थप्रमाणं स्थात् ।

यथा अबप्रमाणे जप्रमाणं यद्गुणं स्यात् तद्गुणमेव अप्रमाणं दह-

 $<sup>\</sup>P$  शकलम् K. २ यहुणं D. K. ३ तहुणं D. K.

प्रमाणे स्यात् पुनर्बवप्रमाणे यद्भुणं जप्रमाणं स्यात् अत्र तद्भुणमेव अप्रमाणं हतप्रमाणे स्यात् तदा अवप्र-माणे यद्भुणं जप्रमाणं स्यात् तद्भुणमेव अप्रमाणं व दत्तप्रमाणे भवति ॥ अत्रोपपत्तिः।

अबप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितमेव झप्रमाणं दहप्रमाणे-ऽस्ति । पुनर्बवप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितं झप्रमाणं हतप्र-माणेऽस्ति । समानप्रमाणेषु समानानि प्रमाणानि योज्यन्ते तदा समान्येव भवन्ति । तसात् अवप्रमाणे यावन्मितं जप्रमाणं तावन्मितमेव झप्रमाणं दत्तप्रमाणेऽस्ति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

## अथ तृतीयं क्षेत्रम् ।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रमाणे यहुणितं हितीयं भवति तृतीयप्रमाणे तद्भुणमेव चतुर्थप्रमाणं भवति पुनः प्रथमप्रमाणं यद्भुणगुणितं तेनैव गुणकेन तृतीयं गुणनीयं प्रथमगुणनफले यद्भुणितं हितीयं स्थात् तद्भुणमेव चतुर्थप्रमाणं तृतीयगुणनफले स्थात् ।

यथा अप्रमाणे यद्भुणं बप्रमाणमस्ति तद्भुणमेव द्रप्रमाणं जप्रमाणे भवति हुझप्रमाणे यावन्ति अप्रमाणानि सन्ति मा ति वत्प्रमाणे तावन्त्येव जप्रमाणानि भवन्ति तदा हुझप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि सन्ति तावन्त्येव वत्प्रमाणे द्रप्रमाणानि भवन्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हझप्रमाणस्य किनिहे अप्रमाणतुल्या विभागाः | | | | | | | | | कार्याः । वतप्रमाणस्य लिनिहे जप्रमाणतुल्या विभागाः अव ज द ह व कार्याः । तदा अतुल्यहकप्रमाणे यावन्ति वप्रमाणानि सन्ति जतुल्य-

१ शकलम् K.

बलप्रमाणे तावन्त्येव इप्रमाणानि सन्ति । अतुत्यक्रझप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि तावन्त्येव दप्रमाणानि जतुत्यलतप्रमाणे भवन्ति । तदा इझप्रमाणे यावन्ति बप्रमाणानि सन्ति वत्तप्रमाणे तावन्त्येव दप्रमाणानि भविष्यन्ति । इदमस्रदिष्टम् ॥

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

प्रथमप्रमाणस्य द्वितीयप्रमाणेन यथा निष्वितः स्यात् तथा यदि तृतीयस्यापि चतुर्थेन स्यात् पुनः प्रथमप्रमाणं तृती-यप्रमाणं केनचित्समेनाङ्केन गुणनीयं तथा द्वितीयं चतुर्थे च केनापि समेनान्येनाङ्केन गुणनीयं तत्र प्रथमगुणनफलस्य द्वितीयगुणनफलेन या निष्पत्तिः सैव तृतीयगुणनफलस्य चतुर्थेन निष्पत्तिः स्यात्।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिः सैव जदयोर्भ-वति । अजौ केनचिदक्केन गुणितौ फलं हृझौ बदा-वाप्यन्येनाक्केन गुणितौ जातौ वतौ तत्र हृवयोर्था निष्पत्तिः सैव झतयोर्निष्पत्तिः स्यात् ।

#### अस्योपपत्तिः।

ह्मयोर्घाता लमसंज्ञा वतयोर्घाता नससंज्ञा लमसंज्ञा अजयोर्घाता नससंज्ञा बद्योर्घाताः । पुनर्लमो नसयोरिघकावथवा न्यूनावथवा समौ भविष्यतः । तसात् यावन्तो घाता ह्मयोर्था-वन्तो घाता वतयोस्तत्र प्रथमो द्वौ घातौ द्विती-यघाताभ्यामिकावथवा न्यूनावथवा समानौ भवि-ष्यतो नत्वन्यथा । तसात् हप्रमाणवप्रमाणयो निष्पत्तिः सेव झप्रमाणतप्रमाणयोर्निष्पत्तिः स्यात् । इदमेवासाकिष्टम् ॥

९ शकलम् K.

## अथ पञ्चमं क्षेत्रम् ।

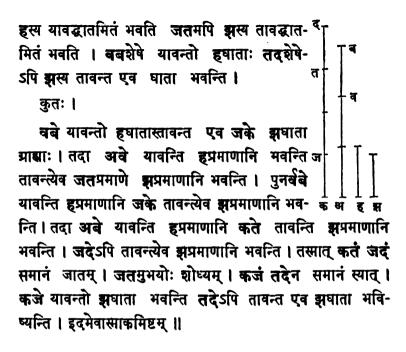
तत्र प्रमाणद्वयमध्ये एकं प्रमाणं गुणगुणितद्वितीयप्रमाणतुल्यमस्ति । अनयोर्द्वयोः प्रमाणयोर्मध्ये तादशमेव
प्रमाणद्वयं शोध्यं शेषमपि तादशमेव भवति । प्रथमशेषं
गुणगुणितद्वितीयशेषतुल्यं भवतीत्यर्थः।

यथा अवप्रमाणं गुणगुणितज्ञद्ममाणतुल्यमित । अनयोः प्रमाणयोः अहं जझं च शोधितम् । अहमपि तद्गुणगुणितजझतुल्यमित । हवशेषमपि तद्गुणितझदतुल्यमित ।
अत्रोपपितः ।
इसदं केनचिदहेन गुणितं जातं अतं हवसमानम् ।
तदा तहं तद्गुणकगुणितज्ञदतुल्यं भविष्यति । अवप्रमाणमपि तद्गुणगुणितमेवास्ति । तदा हतं अवं समानं ज्ञातम्।अनयोः अहं शोध्यम्।अतं हवेन समानं स्थात्।
इवमपि तद्गुणगुणितझदतुल्यं स्थात्। इदमेवास्थाकिमिष्टम् ॥ अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।
अथ षष्ठं क्षेत्रम् ।

द्वे प्रमाणे अन्ययोर्द्वयोः प्रमाणयोर्गुणगुणितयोस्तुल्ये स्यातां तयोः प्रमाणयोरन्यं तिद्धक्तं तृतीयप्रमाणद्वयं गुणि-तिद्वतीयप्रमाणद्वयतुल्यं शोधितं चेच्छेषमि गुणितद्वितीयप्र-माणद्वयतुल्यमेव भवति ।

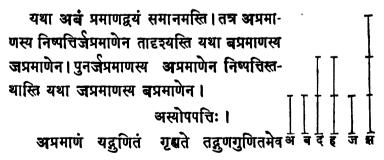
यथा अवप्रमाणं जदप्रमाणं हप्रमाणस्य झप्रमाणस्य यावद्धातिमतं भवति । पुनः अवं अबात् शोधितम्। जतं जदात् शोधितम्। अवं

९ शकलम् K.



## अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

यदि प्रमाणानि समानि सन्ति तत्रान्यप्रमाणेन सर्वेषां प्रमाणानां निष्पत्तिस्तुल्यैव भवति । अन्यप्रमाणस्यापि तै- निष्पत्तिस्तुल्या भवति ।



१ शकलम् K. २ खुस्यैवस्यात्तदा तानि प्रमाणानि समानानि भवन्ति। $D.\ K.$ 

बप्रमाणं प्राह्मम् । तत्र अवप्रमाणयोगुणघातौ दहतुल्यौ कलिपतौ । जप्रमाणस्यापि कियन्तो घाताः कल्पितास्तस्य फलं झं
कल्पितम् । एवं यदा दप्रमाणं झप्रमाणादिषकं वा न्यूनं समं वा
मविष्यति तदा इप्रमाणमपि तादृशमेव भवति । एवं हि झप्रमाणं
दप्रमाणात् इप्रमाणादिषकं न्यूनं वा समं भविष्यति तसानिष्यत्तिरेकेव जाता । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

## अथाष्टमं क्षेत्रम् ।

तत्र प्रमाणद्वयमस्ति एकं लघु द्वितीयं बृहत्। तत्र बृह-स्म्रमाणस्य केनिचन्तियप्रमाणेन निष्पत्तिरिधका भवति लघुप्रमाणस्य निष्पत्तिस्तृतीयप्रमाणेनाल्पा भवति । पुनः तृतीयप्रमाणस्याल्पप्रमाणेन निष्पत्तिर्महती भवति । तृतीय-प्रमाणस्य बृहस्रमाणेन निष्पत्तिर्म्यूना भवति ।

यथा अबं बृहत्प्रमाणं जं लघुप्रमाणं दं तृतीयप्रमाणमस्ति । तत्र

अबप्रमाणस्य दप्रमाणेन निष्पत्तिरघि-कास्ति जप्रमाणस्य दप्रमाणेन न्यूना भवति । पुनर्दप्रमाणस्य जप्रमाणेन निष्पत्तिरधिकास्ति । दप्रमाणस्य अबप्र-माणेन न्यूनास्ति ।

अस्योपपत्तिः । तत्र अबपमाणे जतुत्यबहुपमाणं

पृथकार्यम् । अहप्रमाणह्वप्रमाणयो- ते हं में ने से चे से से चे से से चे से चे

९ शकलम् K.

तत्फलं **झवं** कल्पितम् । यदि अहममाणं दप्रमाणादिषकमेवास्ति तदा स्वेष्छया एकादिगुणितं प्राद्यं तदिप फलं झवं कल्पितम् । ह्रबस्यापि तावन्त एव घाता प्राद्याः। अस्य फलं वतं कल्पितम् । पुनेर्जस्य ताव-द्वाताः कलसंज्ञाः कृताः । तत्र तवकले समाने स्तः । अनयोः प्रेमाणं प्रत्येकमिषकमस्ति दममाणात् ।

पुनर्दे द्विगुणं शासं तत्फलं मत्रमाणं किल्पतम् । पुनर्देप्रमाणं त्रिगुणं शासं तस्य नप्रमाणं किल्पतम् । एवं चतुर्गुणं पश्चगुणं वा शासं
यावत्कलप्रमाणादिषकं स्यात् । तत्फलं सप्रमाणं किल्पतम् । नप्रमाणं
कलप्रमाणादिषकं नास्तीति किल्पतम् । वतप्रमाणादिषकं नास्ति ।
तदा दप्रमाणं नप्रमाणोपिर वर्द्धनीयं तदा सप्रमाणं जातं सवप्रमाणं
वतप्रमाणोपिर वर्द्धनीयं तदा सत्प्रमाणं जातम् । पुनर्श्वयप्रमाणं दप्रमाणादिषकमासीत् । सतप्रमाणं च सप्रमाणादिषकं जातम् । सतप्रमाणं तावद्गुणअवप्रमाणसमं यावद्गुणं जप्रमाणं कलप्रमाणतुल्यम् ।
तस्तात् अवप्रमाणस्य जप्रमाणस्य च घाताः समानाः प्राप्ताः । अवधाता दघातेभ्योऽधिका जाताः । जस्य घाता अधिका न जाताः ।
तस्तात् अवप्रमाणनिष्पत्तिदेप्रमाणेनाधिका जाता । जप्रमाणस्य च
न्यूना जाता । पुनरपि दघाता जघातेभ्योऽधिकाः सन्ति । अवधाताच्यूनाश्च । तस्ताद् दस्य निष्पतिर्जप्रमाणेनाधिका जाता अवप्रमाणास्यूना
जाता । इदमेवास्ताकिमष्टम् ॥

# अय नवमं क्षेत्रम् ।

येषां प्रमाणानामन्यप्रमाणेन निष्पत्तिस्तुल्यास्ति तानि प्रमाणान्यपि तुल्यानि भवन्ति । एवमन्यप्रमाणस्य तैः प्र-माणैर्निष्पत्तिस्तुल्यास्ति तदा तान्यपि प्रमाणानि तुल्यानि ।

९ जाप्रमाणस्थापि तावन्तो घाता प्राह्याः । अस्य फलं कलं कल्पितम् । K. २ Bomits प्रमाणं. ३ शकलम् K.

यथा अप्रमाणस्य जप्रमाणेन निष्णितस्तथास्ति यथा बप्रम जप्रमाणेन । तदा अव्यप्रमाणे समाने जाते । पुन-रपि जप्रमाणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणेन तथास्ति यथा जप्रमाणस्य वप्रमाणेन निष्णित्रस्ति । तसादिप च अप्रमाणवप्रमाणे समाने जाते ।

अस्योपपत्तिः ।

वदि ते द्वे प्रमाणे समाने न भवतः किं च न्यूबा-विके भवतस्त्रदा तथोर्निष्पत्तिरिप न्यूमाधिका स्यात्। पूर्व च निष्यत्त-यस्तुस्याः कव्यिताः। एतद्युद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

# अथ दशमं क्षेत्रम्।

ययोर्द्रयोः प्रमाणयोर्मध्ये यस्यैकस्य प्रमाणस्य तृतीयप्रमा-णेन निष्पत्तिरधिकास्ति तस्रमाणमप्यधिकं भवति यस्य तृती-येन निष्पत्तिन्यूनास्ति तक्यूनम् । पुनस्तृतीयप्रमाणस्य तयो-मध्ये येन प्रमाणेन निष्पत्तिरधिकास्ति तस्रमाणं न्यूनं भवति येन प्रमाणेन निष्पत्तिन्यूनास्ति तस्रमाणमधिकं भवति ।

यथा अप्रमाणस्य निष्पत्तिज्ञेप्रमाणेनाधिकास्ति बप्रमाणस्य निष्प-त्तिन्यूनास्तीति कल्पिता । तदा अप्रमाणं बप्रमाणादिधकं भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

यदि अप्रमाणं बप्रमाणेन समानमस्ति तदा अप्र-माणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्जप्रमाणेनैकरूपा भविष्यति । यदि अप्रमाणं बप्रमाणाच्यूनमस्ति तदा अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्जप्रमाणेन न्यूना भविष्यति । बप्रमाणस्य जप्र-माणेनाधिका भविष्यति । अत्रैवं नास्ति । तस्तात् अप्रमाणं बप्रमाणाद-विकं जातम् ।

९ इदमेवास्माकमिष्टम् । D. K. २ शक्तम् K.

पुनरिप जपमाणस्य बप्रमाणेन निष्पत्तिरिषकास्ति । जप-माणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणेन न्यूनास्ति । तसात् अप्रमाणमिकमस्ति बप्रमाणतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि अप्रमाणं बप्रमाणतुल्यं स्यात् तदा जप्रमाणस्य निष्पतिः प्रमाणद्वयादप्येकरूपा स्यात् । यदि अप्रमाणं बप्रमाणाक्यूनमस्ति तदा जप्रमाणस्य निष्पत्तिः अप्रमाणादिषिका मिवष्यति बप्रमाणाच न्यूना मिवष्यति । ऐवं च नास्ति । कुतः । जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणा-दिषका कल्पिताऽस्ति । तस्मात् अप्रमाणमिकं ब्रुप्रमाणाज्ञातम् । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

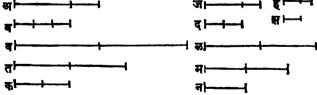
# अथैकादशं क्षेत्रम्।

या निष्पत्तय एकनिष्पत्तेसुल्याः सन्ति ता निष्पत्तयो मिथसुल्याः स्युः ।

यथा अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणेन यथा जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्द-प्रमाणेन । पुनर्हप्रमाणस्य निष्पत्तिर्झप्रमाणेन तथास्ति यथा जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्दप्रमाणेन । तसात् । अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणेन तथास्ति यथा ह्रममाणस्य निष्पत्तिर्झप्रमाणेन ।

#### अस्योपपत्तिः ।

तत्र अप्रमाणजप्रमाणहप्रमाणानां एकरूपा घाता प्राद्धाः । ते च



वप्रमाणतप्रमाणकप्रमाणरूपा भवन्ति । वप्रमाणद्रप्रमाणक्षप्रमाणा-नामपि एकरूपा घाता प्राद्याः । ते च लप्रमाणसप्रमाणनप्रमाणरूपा

९ अत्रैवं नास्ति B. २ शकलम् K. ३ प्रमाणात् B.

भवन्ति । अवयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा जदयोर्निष्पत्तिः । तदा वप्रमाणतप्रमाणे लप्रमाणमप्रमाणयोरिषके भवतो वा न्यूने स्तः समे स्तो वा । पुनर्जप्रमाणदप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा हप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तिः । तदा तप्रमाणकप्रमाणे मप्रमाणनप्रमाणयोरिषके वा न्यूने वा समे भवतः । तसात् वप्रमाणकप्रमाणे लप्प्रमाणनप्रमाणयोर्निष्पत्ति वा न्यूने वा समे भवतः । तसात् अप्रमाणवप्रमाणयोर्निष्पत्ति-हप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तितुल्या जाता। इदमेवासाकिमष्टम् ॥

# अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

तत्र या निष्पत्तिरन्यनिष्पत्तेसुल्या भवति अन्या नि-ष्पत्तिस्तृतीयनिष्पत्तेरिधका चेत् तदा प्रथमा निष्पत्तिरिप तृतीयनिष्पत्तेरिधका भविष्यति ।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा जप्रमाणद्वप्रमाणयोः । पुनर्जप्रमाणद्वप्रमाणयोर्निष्पत्तिह्वप्रमाणझप्रमाणनिष्पत्तेर्षिकास्ति । तसात् अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिह्वप्रमाणझप्रमाणनिष्पत्तेरिषका मविष्यति ।

### अस्योपपत्तिः ।

तत्र जप्रमाणहप्रमाणयोः कियन्तः समा घाता प्राचाः । तथैव



द्रप्रमाणझप्रमाणयोघीतौ प्राद्धाः । परं च ते घातास्तथा प्राद्धा यथा जप्रमाणस्य घाता दप्रमाणापेक्षयाऽधिका भवन्ति । हप्रमाणस्य घाता झप्रमाणाद्यथा अधिका न भवन्ति तथा प्राद्धाः । वप्रमाण-तप्रमाणे जप्रमाणहप्रमाणयोघीताः कल्पिताः । पुनः कप्रमाणस्रप्रमाणे

१ शकलम् K. २ ग्रेणकाः B.

द्रमाणद्दाप्रमाणयोशीतौ कश्यितौ। यथा चत्रमाणे उद्दुप्रमाणवोशीकी द्वाः तथा अप्रमाणस्य मप्रमाणयाता प्राधाः । पुनः क्रुप्रमाणे द्वाप्रमाणयोगीवन्तो घौतास्तावन्त एव वप्रमाणस्य नप्रमाणयात्त्र वाद्याः । अप्रमाणवप्रमाणवोशिष्यत्तिस्त्रथान्ति वथा अप्रमाणद्द्रप्रमाण्यामिको मवतो वा न्यूने वा समे स्तः । वप्रमाणं कप्रमाणाद्विकवस्ति । तप्रमाणं स्वप्रमाणाद्विकवस्ति । तप्रमाणं स्वप्रमाणाद्विकं यविष्यति तप्रमाणं स्वप्रमाणाद्विकं विष्यति तप्रमाणं स्वप्रमाणाद्विकं यविष्यति तप्रमाणं स्वप्रमाणवप्रमाण-योगिष्यत्ति । स्वप्रमाणयोगिष्यत्ते नास्ति । तस्तात् अप्रमाणवप्रमाण-योगिष्यत्ति । इदमेवा-साकमिष्टम् ॥

## अय त्रयोदशं क्षेत्रम्।

यत्र बहुनि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तत्र प्रथमप्र-माणस्य द्वितीयप्रमाणेन या निष्पत्तिः सेव सर्वेषां प्रथमप्रमा-णानां थोनस्य स्वस्वद्वितीयप्रमाणानां योमेन भविष्यति ।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अप्रमाणस्प्रमा-णयोर्निष्पत्तिरस्ति पुनर्हप्रमाणस्प्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथेवास्ति । तसात् अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथा जाता तथा अजहप्रमाणानां खेगस्य बदशप्रमाणानां योगेनास्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

<sup>9</sup> र्शुणके B. २ गुणका B. ३ शकलम् K.

न्यूनताधिक्यं समस्वं च सर्वेषां घातानां घातेम्य एकरूपमेव स्वात् । यदि वप्रमाणं रूप्रमाणादिषकमस्ति तदा वतकप्रमाणानां योगो रूप्मनप्रमाणयोगादिषको मविष्यति । यदि तक्यूनं स्वात् ह्या योगो योगाच्यूनः स्यात् । समस्वे समानः स्वात् । अप्रमाण-वप्रमाणयोनिष्पत्तिस्तादृश्यस्ति यथा सर्वेषां प्रमाणानां योगस्व निष्पत्ति-योगेनास्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

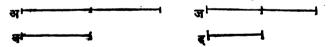
# अब चतुर्दशं क्षेत्रम् ।

षदि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तत्र यदि प्रथमप्रमाणं तृतीयापेक्षयाऽधिकं स्वात् तदा द्वितीयप्रमाणं चतुर्थोदप्यधिकं स्वात्। यदि प्रथमं तृतीयापेक्षयान्यूनमस्ति तदा द्वितीयं चतुर्थाञ्यूनं भविष्यति। समं चेत्तदि समम्।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्यत्तिस्यथास्ति यथा जप्रमाणद्प्र-माणयोरस्ति । अप्रमाणं जप्रमाणादिषिकं कल्पितं तदा बप्रमाणं द्वामाणादिषिकं भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

अधिकप्रमाणस्य अप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बप्रमाणेन यास्ति सा अपन् माणस्य या निष्पत्तिर्बप्रमाणेन तस्या अधिकास्ति । पुनर्जप्रमाणस्य निन



ख्यसिर्देशमाणेन तथास्ति यथा अग्रमाणस्य निष्यसिर्वेशमाणेनास्ति ।
तसात् अप्रमाणस्य निष्यसिर्देशमाणेन यास्ति सा अप्रमाणस्य निष्यसिर्वेशमाणेन यास्ति तस्या अधिकास्ति । तसात् अप्रमाणमधिकमस्ति
दशमाणात् । एवं साम्यं न्यूनत्वं च निक्षीयते । इदमसादिष्टम् ॥

## प्रकारान्तरम् ।

यदि अप्रयाणमधिकमस्ति जप्रमाणात् बममाणमधिकं न चेत् इप्र-

९ शकलम् K.

माणात् तदेदं बप्रमाणं दप्रमाणाञ्यूनं वा समानं भविष्यति । यदि न्यूनं तदा जप्रमाणबप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्जप्रमाणदप्रमाणयोर्निष्पत्तेर-धिका भविष्यति । अप्रमाणबप्रमाणनिष्पत्तेरप्यधिका भविष्यति । तसात् जप्रमाणं अप्रमाणादधिकं भविष्यति । अप्रमाणं जप्रमाणादधिकमेव कल्पितमसाभिः । एतदशुद्धम् । अनेनैव प्रकारेण समानमपि न भवि-ष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ पञ्चदशं क्षेत्रम्।

तत्र प्रमाणानां या निष्पत्तिः सैव समगुणकगुणितानां प्रमाणानां निष्पत्तिभेवति ।

यथा जञ्चप्रमाणे कल्पिते। तत्र जप्रमाणस्य घातः अवप्रमाणं कल्पितम्। अप्रमाणस्य घातः दहप्रमाणं कल्पितम्। जप्रमाणस्यमाणयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अवदह्रप्रमाणयोः।

अस्योपपत्तिः ।

वतप्रमाणसम्प्रमाणयोरस्ति । सैव तबप्रमाणमहप्रमाणयोरस्ति । एकस्यैकेन निष्पत्तिस्तादृश्यस्ति यथा योगस्य निष्पत्तियोगेनास्ति । तस्मात् जप्रमाणझप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तयास्ति यथा अवप्रमाणदृहप्रमा-णयोरस्ति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

# अय पोडशं क्षेत्रम् ।

तत्र चतुर्णो प्रमाणानां सजातीयानां प्रथमद्वितीययोनि-ष्यत्तिस्तथास्ति यथा तृतीयचतुर्थयोरस्ति। ईदृशानां प्रमाणानां

९ शकलम् K. २ गुण<sup>o</sup> B.

प्रथमतृतीययोरिप निष्पत्तिस्तथास्ति यथा द्वितीयचतुर्थयो-रस्ति। तत्र प्रथमस्य निष्पत्तिस्तृतीयेन तथास्ति यथा द्वितीयस्य निष्पत्तिश्चतुर्थेन ।

यथा अप्रमाणबप्रमाणयोनिष्यत्ति जीप्रमाणदप्रमाणनिष्यत्ते स्तुल्या किल्यता तदा अप्रमाणजप्रमाणयोनिष्यत्तिस्तथा भविष्यति यथा बप्रमाणद्रप्रमाणयोनिष्यत्तिभविष्यति ॥

#### अस्योपपत्तिः ।

तत्र अप्रमाणबप्रमाणयोरकरूपास्तुल्या घाता आधाः। ते च द्वप्रमाण-

भ्रप्रमाणतुल्याः कल्पिताः । पुनर्जप्र
गाणद्रप्रमाणयोरिप समाना घाता बार्मा विक्रामाणतप्रमाणतुल्याः हाः । ते च वप्रमाणतप्रमाणतुल्याः हाः । तसात् अप्रमाणवप्रमा
गिनष्पत्तिस्तथा जाता यथा हप्प
गाणभूप्रमाणयोरिस्त । पुनर्जप्रमाण-

द्रप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्यथा वप्रमाणतप्रमाणयोरितः । तसादिष इप्रमाण-श्रप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्यथा वप्रमाणतप्रमाणयोरितः चेत् हप्रमाणं वप्रमाणा-दिषकं स्यात् तदा अप्रमाणं तप्रमाणादिषकं भविष्यति । यदि च हप्र-माणं वप्रमाणान्यूनमस्ति तदा अप्रमाणं तप्रमाणान्यूनं भविष्यति । यदि समानं स्यात्तदा समानं भविष्यति । तसात् इप्रमाणअप्रमाणे यावद्गुणितअप्रमाणवप्रमाणे स्तः । वप्रमाणतप्रमाणे यावद्गुणितज्ञप्र-माणद्प्रमाणे स्तः।तत्र प्रथमे प्रमाणे द्वितीयान्यामिषके भविष्यतो न्यूने वा समे वा । तसात् अप्रमाणज्ञप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्वप्रमाणद्प्रमाणयो-भविष्यति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

# अथ सप्तदशं क्षेत्रंम् । तत्र चत्वारि प्रमाणानि सन्ति तेषु प्रथमद्वितीययोस्ताद्दशी-

१ शकलम् K.

निष्पत्तिरस्ति यादशी तृतीयचतुर्थयोः। तत्र प्रथमद्वितीययो-रन्तरनिष्पत्तिद्वितीयप्रमाणेन तथास्ति यथा तृतीयचतुर्थयो-रन्तरस्य चतुर्थप्रमाणेनास्ति ।

यथा अबप्रमाणबहुपमाणयोर्निष्पत्तिर्जदप्रमाणदृश्चप्रमाणनिष्पत्ति-तुल्या कल्पिता । तदा अहप्रमाणहृबप्रमाणयोर्निष्पत्तिस्तथा जाता यथा जञ्जप्रमाणश्चदप्रमाणयोर्निष्पत्तिरस्ति ।

### अस्योपपत्तिः ।

ते च वतप्रमाणतकप्रमाण-

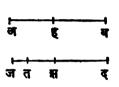
अहप्रमाणह्वप्रमाणज्ञमप्रमाणभद्रप्रमाणानामेकरूपा घाता प्राधाः ।

**रुम**प्रमाणमनप्रमाणतुत्याः <sup>अ</sup> कल्पिताः । तत्र वतप्रमाणं ।-अहप्रमाणस्य यावद्रुणम-स्ति तावदेव तकप्रमाणं 🗕 हब्दमगणस्य गुणनफ्लम-स्ति । तस्मात् वकप्रमाणं अवप्रमाणस्य तावद्रणमेव जातम् । एवं छनप्रमाणं जदममाणस्य तावद्रुणमेव जातम् । तसात् वकप्रमाणलनप्रमाणे अवप्रमाणजद्ममाणयोरेकरूपे यावद्रुणे जाते। पुनईबप्रमाणझदप्रमाणयोः कसप्रमाणनगप्रमाणे एकरूपे यांवद्वुणे कल्पनीये । तदा कतं प्रथमप्रमाणं इबद्वितीयप्रमाणस्य याबद्वुणमस्ति ताबदेव मनं तृतीयप्रमासं झदचतुर्थप्रमाणस्य यावद्वणमस्ति । पश्चमं कसप्रमाणं द्वितीयहब्यमाणस्य यावद्वणमस्ति तावदेव पष्ठं नगप-माणं शद्चतुर्थप्रमाणस्य तावद्गुणमस्ति । तस्मात् तसप्रमाणं इवप्रमा-णस्य याबद्धणमस्ति मगप्रमाणं इतद्यमाणस्य ताबद्धणमेवास्ति । त-स्मात् वक्रममाणलनप्रमाणे अवप्रमाणज्जद्पमाणयोरेकरूपे याव-द्वुणे स्तः । तसप्रमाणमगप्रमाणे च इबप्रमाणझद्प्रमाणयोरप्येकरूपे गुणे स्तः । अवपमाणबहुप्रमाणयोर्निष्यत्तिस्तथास्ति यथा जदप्रमाण-

दशप्रमाणयोरस्ति । तसात् वकप्रमाणलनप्रमाणे तसप्रमाणमगप्र-माणयोर्न्यूने वाऽिषके वा समे भवतः । पुनस्तकप्रमाणं मनप्रमाणं च द्वयोः शोष्यम्। तदा वतप्रमाणलमप्रमाणे कसप्रमाणनगप्रमाणयो-रिषके वा न्यूने समे वा भवतः । पुनर्वतप्रमाणलमप्रमाणे अहप्रमाण-जशप्रमाणयोर्यावद्वातरूपे स्तः । कसप्रमाणनगप्रमाणे ह्वप्रमाणझद-प्रमाणयोरप्येकरूपे गुणे स्तः । तसात् अहप्रमाणहवप्रमाणयोर्निष्पत्ति-जशप्रमाणश्रद्प्रमाणयोर्निष्पत्तिरविस्ति । इदमेवास्नाकमिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

अह्ममाणस्य निष्पत्तिहै बप्रमाणेन या भवति तादशी जझप्रमाणस्य निष्पत्तिर्झ-द्रमाणेन यदि न भवति तदा तझप्रमाणस्य निष्पत्तिर्झेदप्रमाणेन भवतीति कल्पनी-



यम् । पुनर्यथा अहममाणस्य निष्पत्तिस्त्रझप्रमाणेन तथा हबप्रमाणस्य निष्पत्तिझद्रममाणेन । पुनः अबस्य निष्पत्तिहेबेन जदझद्योर्निष्प-तितुल्यास्ति । ईयं कीदृश्यस्ति । यथा तद्रममाणस्य निष्पत्तिझद्रम-माणेन । तसात् जदतदी समानी जाती। इदं निष्तम् ॥

# अथाष्टादशं क्षेत्रेम्।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि भवन्ति तत्र प्रथमद्वितीययोर्निणितः कीर्द्दशी भवति यथा तृतीयचतुर्थयोर्भविष्यति । तत्र
प्रथमद्वितीययोगस्य द्वितीयेन निष्पत्तिस्तथा भवति यथा
तृतीयचतुर्थयोगस्य चतुर्थेन भवति ।

९ From पुनः to भवतः omitted in B. २ 'रैवास्ति B. ३ तसात् अवप्रमाणस्य निष्पत्तिः तद्वप्रमाणेन तथा ह्वप्रमाणस्य निष्पत्तिः झद्प्रमाणेन K. ४ तसात् अवप्रमाणस्य निष्पत्तिस्तद्प्रमाणेन तथास्ति ह्वझद्योर्निष्पत्तितुः स्वास्ति B. ५ शक्सम् K. ६ तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तिसद्यी भवति B.

#### अस्योपपत्तिः ।

यधेवं न भवति तदा दश्गश्चवप्रमाणनिष्पत्तितुत्या कत्पिता । श्वद-प्रमाणं श्रहप्रमाणाक्यूनं कत्पनीयम् । तदा अवबजप्रमाणनिष्पत्तिद्-हहश्गनिष्पत्तितुत्यासीत् । इयं दववश्गनिष्पत्तितुत्यास्ति । दहप्रमाणं दवाक्यूनमस्ति । तदा हश्गप्रमाणं वश्गप्रमाणाक्यूनं भविष्यति । इदं बाधितम् । एवं श्रवप्रमाणं हश्गप्रमाणादिषकं स्यात् । तदप्यगुद्धमेव । तदेवगुपपन्नं यथोक्तम् ॥

## पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबममाणबजममाणनिष्यत्तिर्दृहृझ्निष्यत्तितुल्यास्ति । तदा अब-दृहृनिष्यत्तिर्बजहृझ्गनिष्यत्तितुल्या मविष्यति । तसात् अजदृझ्गनिष्य-चिर्बजहृझ्गनिष्यत्तितुल्या मविष्यति । पुनः अजजबनिष्यचिर्दृझ्झह्-निष्यतितुल्या मविष्यति ॥

# अधैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि तत्र लघुप्रमाणद्वयं बृहत्प्रमाणद्वयाच्छोध्यं शेषयोरिप निष्पत्तिः प्रमाणनिष्पत्ति-तुल्यैव भवति ।

यथा अवं जदं अहं जशं चत्वारि प्रमाणानि सन्ति । अवजद-निष्पत्तिः अहजशनिष्पत्तितुल्या कल्पितास्ति । अहं अवाच्छोधितं

१ शक्लम् K.

जशं जदाच्छोषितम्।
तत्र हवं शद्मवंशि- अबजदिनिष्पत्तितुत्या भविष्यति ।
अत्रोपपत्तिः।

अवअहनिष्पत्तिर्ज्ञद्वज्ञ्ञानिष्पत्तितुल्यास्ति । पुनर्ह्वहञ्जनिष्पत्ति-र्द्श्वञ्चजनिष्पत्तितुल्यास्ति । तदा बहदञ्चनिष्पत्तिर्द्वअञ्चजनिष्पत्तितु-ल्यास्ति । तदा अवजदनिष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकनिष्टम् ।

## प्रकारान्तरम् ।

इवझदनिष्यत्तिः अइजझनिष्यतितुल्या न भवति तदा इवझव-निष्यत्तितुल्या कल्पिता । तसात् अवजवनिष्यत्तिः अइजझनिष्यत्ति-तुल्या भविष्यति । अवजदनिष्यत्तिरेतत्तुल्यैव स्थितास्ति । तस्मात् अवनिष्यत्तिजेवेन जदेनापि अइजझनिष्यत्तितुल्यैव जाता । तदा जवं जदं समानं जातम् । इदं वाधितम् । इदमेवास्रदिष्टम् ॥

# अथ विंशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र द्विप्रकारकं प्रमाणद्वयं भवति तत्रैकप्रकारे प्रमाणानां या निष्पत्तिरस्ति सैव निष्पत्तिद्वितीयप्रकारे प्रमाणेषु यदि स्वात् तत्र प्रथमप्रकारयादिप्रमाणमन्त्यप्रमाणात् यद्यधिकं स्वात् तदा द्वितीयप्रकारेऽप्यादिप्रमाणमन्त्यप्रमाणादिधकं स्यात्। न्यूनत्वे न्यूनं स्यात्। समत्वे समं स्यात्।

९ °मुर्वेरितम् D. K. २ शहलम् K.

त्तितुत्यास्ति । यदि अप्रमाणं	er I	<del> </del>   =
जप्रमाणाद्धिकं स्यात् तदा	<b>ब</b> <del></del>	IE
द्रप्रमाणं अपमाणादिषकं	ज ├─────	<b>  </b>   श
भविष्यति ।	•	

## अत्रोपपत्तिः ।

अ अधिकप्रमाणस्य निष्पत्ति बैप्रमाणेन भैवति । इयं दहनिष्पत्ति-तुल्यास्ति । इयं निष्पत्ति जन्यूनप्रमाणस्य बप्रमाणेन या निष्पत्तिक्क्षह-निष्पत्तितुल्यास्ति तस्याः अधिका जाता । तस्मात् दप्रमाणं झप-माणादिषकं जातम् ।

अनेन प्रकारेण यदि अप्रमाणं जतुल्यं स्यात् तदा द्रप्रमाणं झतुल्यं भविष्यति । न्यूने न्यूनम् ।

#### प्रकारान्तरम् ।

यदि दप्रमाणं श्रप्रमाणादिषकं न स्यात् तदा समानं भविष्यति वा न्यूनं भविष्यति । तत्र कल्पितं समानमस्तीति। तदा दप्रमाणस्य निष्य-त्तिर्द्दप्रमाणेन अवनिष्यत्तितुल्यास्ति। इयं कीदशी। यथा श्रस्य निष्य-त्तिर्द्दप्रमाणेन । इयं कीदशी। यथा जप्रमाणस्य निष्यत्तिर्वप्रमाणेन । तस्मात् अप्रमाणं जतुल्यं जातम्। कल्पितं अधिकम्। इदं वाधितम्।

पुनः कल्पितं दममाणं झप्रमाणान्यूनमस्तीति । तस्मात् अवनिष्पत्तितुत्या दहनिष्पत्तिजेवनिष्पत्तितुत्यझहनिष्पत्तेन्यूना भविष्यति ।
तस्मात् अप्रमाणं जप्रमाणान्यूनं भविष्यति । इदं वाधितम् । तदेवेसुपपन्नं यथोक्तम् ॥

# अथैक्विंशतितमं क्षेत्रम् ।

यत्र प्रकारद्वयेन प्रमाणानि सन्ति यथा प्रथमप्रकारे त्रीणि प्रमाणानि द्वितीयप्रकारे च त्रीणि प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमद्वितीययोर्थथा निष्पत्तिस्तथैव द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्वितीयप्रकारे द्विती-

<sup>9</sup> B. omits भवति इयं. २ इदमेवास्माकमिष्टम् । D. K. ३ शकलम् K.

यतृतीययोगीहशी निष्पत्तिस्तथैव द्वितीयप्रकारे प्रथमद्विती-ययोरिस्त । तत्रैतेषां प्रमाणानां प्रथमप्रकार आदिमप्रमाण-मन्तिमप्रमाणाश्चेदिधकं भवति तदा द्वितीयप्रकारेप्यादि-मप्रमाणमन्तिमप्रमाणादिधकं भविष्यति । न्यूनं चेत्तिहं न्यूनं स्यात् । समत्वे समं भविष्यति ।

दहश्मप्रमाणानि सन्ति । तत्र अवप्रमाणयोर्निष्यतिर्हश्मप्रमाणनिष्यत्त्या तुल्या चेत्पुनः बजप्रमाणयोर्निष्यत्तिर्द्दद्वप्रमाणयोर्निष्यत्त्या तुल्या चेत् अप्रमाणमधिकं चेज्जप्रमाणात्त्वा द्वप्रमाणं श्मप्रमाणाद्धिकं भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

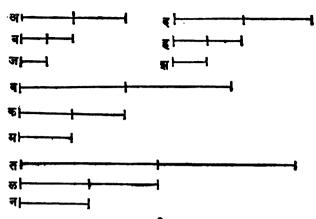
तत्र ह्झनिष्पत्तितुत्या अवनिष्पत्तिर्हदनिष्पत्तितुत्याया जवनिष्पत्तेरिषकास्ति । तस्माह्ममाणं झममाणादिषकमस्ति । एवं यदि
अप्रमाणं जप्रमाणेन समं न्यूनं वास्ति तदा द्रममाणं झममाणाङ्यूनं
वा समं भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

## अथ द्वाविंशत्तमं क्षेत्रम् ।

प्रकारद्वये प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमप्रमाण-द्वितीयप्रमाणयोर्थथा निष्पत्तिस्तयेव द्वितीयप्रकारेऽपि प्रथम-द्वितीययोरप्यस्ति । पुनः प्रथमप्रकारे या द्वितीयतृतीययो-निष्पत्तिद्वितीयप्रकारस्यद्वितीयतृतीयनिष्पत्त्या तुल्या चेत् तत्र प्रथमप्रकारे या प्रथमतृतीययोनिष्पत्तिः सा द्वितीयप्र-कारस्थप्रथमतृतीयनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।

यथा प्रथमप्रकारे अबजपमाणानि द्वितीयप्रकारे दहझप्रमाणानि सन्ति । तत्र अबयोर्निष्पत्तिर्दहनिष्पत्त्या तुल्या । बजयोर्निष्पत्तिर्ह्स-

९ शकलम् K.



निष्यस्या तुल्या । तत्र अजिनिष्यत्तिर्दश्चनिष्यत्त्वा तुल्या मविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

तत्र अद्प्रमाणयोरेकरूपा घाता माद्याः । ते च वत्तुल्याः कलिपताः । बहुपमाणयोरिष कळतुल्या एकरूपा घाता माद्याः ।
जञ्जप्रमाणयोरिष मनतुल्या एकरूपा घाता माद्याः । अवप्रमाणयोनिष्पत्तिर्दृहप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति । तदा वकप्रमाणयोनिष्पत्तिः तळप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । बजप्रमाणयोनिष्पत्तिर्दृङ्गप्रमाणयोनिष्पत्त्या तुल्यास्ति । तदा कमप्रमाणयोनिष्पत्तिर्छनप्रमाणनिष्पत्त्याः
तुल्या भविष्यति । तत्र वकमप्रमाणानि तस्त्रनप्रमाणानि च प्रकारद्वयेन
जातानि । एतेषामेकरूपा निष्पत्तिश्च जाता । तत्र वतप्रमाणयोर्मनप्रमाणाभ्यां न्यूनत्वं समत्वमाधिक्यं चैकरूपं स्यात् । तस्मात् अजप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्दृश्चप्रमाणनिष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

## प्रकारान्तरम् ।

तत्र अवजप्रमाणानामेकरूपा घाता वक्रमप्रमाणतुल्या प्राह्माः ।
पुनः दह्रमप्रमाणानामेकरूपा घाताः तल्लनप्रमाणतुल्या गृहीताः ।
तदा वक्रमप्रमाणानां निष्पत्तिः अवजप्रमाणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।
तल्लनप्रमाणानां निष्पत्तिद्हृं सप्रमाणनिष्यत्त्या तुल्या भविष्यति ।
पुनर्वमप्रमाणे तनप्रमाणाभ्यामिके न्यूने वा समाने भविष्यतः । त-

स्मात् अद्प्रमाणयोर्निष्यत्तिर्ज्ञश्चपमाणनिष्यत्तितुल्या भविष्यति । तस्मात् अजनिष्यत्तिर्दृश्चनिष्यतितुल्या भविष्यति ।

## पुनः प्रकारान्तरम् ।

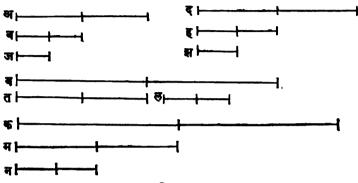
अवप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्दे हप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति। तस्मात् अद-प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्बे हप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । पुनर्बे जप्रमा-णयोर्निष्पत्तिर्हे सप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्यास्ति। तदा बहुप्रमाणयोर्निष्प-त्तिर्जे झप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । तसात् अद्प्रमाणनिष्प-तिर्जे झप्रमाणयोर्निष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । अजनिष्पत्तिः दश्निन-ष्पत्त्या तुल्या भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

तत्रापि प्रकारद्वयेन प्रमाणानि चेत् सन्ति तत्र प्रथमप्रकारे प्रथमद्वितीययोर्थथा निष्पत्तिद्वितीयप्रकारेऽपि द्वितीयतृती-ययोः सैव निष्पत्तिश्चेत् पुनः प्रथमप्रकारे द्वितीयतृतीययोर्था निष्पत्तिद्वितीयप्रकारेऽपि प्रथमद्वितीययोः सैव निष्पत्ति-भविष्यति तत्र प्रथमप्रकार आद्यन्तयोर्था निष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारेऽपि सैवाद्यन्तयोर्निष्पत्तिर्भविष्यति ।

९ शक्छम् K.

सन्ति। तदा अवभगाणयोर्निष्यतिर्द्धम्प्रमाणयोर्निष्यतितुल्यास्ति। बज-प्रमाणयोर्निष्यतिर्दद्दमगाणनिष्यतितुल्यास्ति। तत्र अजप्रमाणयोर्नि-ष्यतिर्द्धम्प्रमाणनिष्यतितुल्या भविष्यति।



## अस्योपपत्तिः ।

अबद्रमाणानामेकरूपघाता वतकप्रमाणतुल्या गृहीताः । पुनर्जह्मप्रमाणानामेकरूपघाता लमनतुल्या माद्याः । तसात् वत-प्रमाणनिष्पत्तिः अबनिष्पतितुल्या जाता । मनप्रमाणनिष्पत्तिश्च हुम्न-निष्पत्तितुल्या जाता । तसात् वतयोर्निष्पत्तिर्मननिष्पत्या तुल्या जाता । पुनरपि बज्जनिष्पत्तिर्दृहनिष्पतितुल्यास्ति । तसात् तलनिष्पत्तिः कमनिष्पतितुल्या जाता । तस्मादपि च वतलप्रमाणानि कमनप्रमाणानि च प्रकारद्वये जातानीति सिद्धम् । येषां मध्ये वतप्रमाणयोर्निष्पत्तिर्मनप्रमाणनिष्पत्त्या तुल्या जाता । तलप्रमाणयोर्निष्पत्तिः कमप्रमाणनिष्पत्तितुल्या जाता । तस्मात् वकप्रमाणे लनप्रमाणान्यामिष्ये भविष्यतो वा न्यूने समे वा । तस्मात् अज्ञप्रमाणयोर्निष्य-तिर्दृश्चप्रमाणयोर्निष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

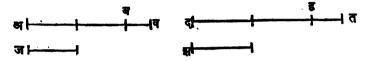
# अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

यत्र षद् प्रमाणानि सन्ति तत्र प्रथमद्वितीययोर्निष्यत्तिस्तृ-तीयचतुर्थयोर्निष्यत्तितुल्यास्ति चेत् पुनः पश्चमद्वितीययोर्नि-

१ शकलम् K.

ष्यतिः षष्टचतुर्ययोनिंष्यतितुस्यास्ति । तत्र प्रयमपश्चमयोर्यो-गस्य निष्यत्तिद्वितीयप्रमाणेन यथास्ति तथा तृतीयषष्टयोर्यो-गस्य निष्यत्तिश्चतुर्थेन मविष्यति ।

अवप्रमाणस्य निष्पत्तिजीप्रमाणेन यथास्ति दहप्रमाणनिष्पत्तिर्झप्र-माणेन तथास्ति । पुनर्ववप्रमाणनिष्पत्तिजीप्रमाणेन तथास्ति इतप्रमाणस्य



निष्यत्तिक्षेत्रमाणेन यथास्ति । पुनः अवप्रमाणस्य निष्यत्तिक्षेत्रमाणेन त्त्रथास्ति तथा दत्तप्रमाणनिष्यतिक्षेप्रमाणेन भविष्यति ॥

## अस्योपपत्तिः ।

अब्प्रमाणस्य निष्पत्तिर्जप्रमाणेन तथास्ति यथा द्रह्ममाणस्य निष्पत्तिर्झ्यमाणेनास्ति । पुनर्जप्रमाणस्य निष्पत्तिर्बद्धप्रमाणेन तथास्ति यथा झप्रमाणस्य निष्पत्तिर्हतप्रमाणेनास्ति । तस्मात् अब्प्रमाणनिष्य-त्तिर्वचप्रमाणेन तथास्ति यथा द्रह्ममाणस्य निष्पत्तिर्हतप्रमाणेनास्ति । पुनः अवप्रमाणनिष्पत्तिर्बचप्रमाणेन तथास्ति यथा द्रतप्रमाणनिष्पत्ति-हतप्रमाणेनास्ति । पुनर्ववप्रमाणनिष्पत्तिर्जप्रमाणेन यथा हतप्रमाणनिष्पत्तिर्भप्रमाणेनास्ति । तस्मात् अवप्रमाणनिष्पत्तिर्जप्रमाणेन तथास्ति यथा द्रतप्रमाणनिष्पत्तिर्भप्रमाणेन । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

## अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रेम् ।

तन्त्र यदि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति । तेषां प्रथमं सर्वापेक्षयाऽधिकमस्ति चतुर्थे प्रमाणं सर्वापेक्षया न्यून-

९ पुनर्जीप्रमाणस्य निष्पत्तिबैद्यप्रमाणेन तथास्ति यथा दृहप्रमाणस्य निष्पत्तिक्षे-प्रमाणेनास्ति । D. K. २ शक्तम् K.

# मस्ति । तत्र प्रथमचतुर्थयोर्थोगो द्वितीयतृतीययोगादिधको भविष्यति ।

यथा अवप्रमाणस्य निष्पत्तिज्ञेदप्रमाणेन तथास्ति हप्रमाणस्य निष्पत्तिक्शेप्रमाणेन यथास्ति । तत्र अवप्रमाणं सर्वापेक्षयाधिकं कल्पितं
अप्रमाणं सर्वापेक्षया न्यूनं कल्पितम् । तदा अवप्रमाणअप्रमाणयोयोगो जदप्रमाणहप्रमाणयोगापेक्षयाऽधिको भविष्यति ।

## अस्योपपत्तिः ।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्ट्ये द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समिनधारूढितेन प्रणीते । श्रन्थेऽस्मिन्नामि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इति विरति पश्चमः संगतोऽभूत् ॥ इति श्रीमञ्जगन्नाथसम्राङ्विरचिते रेक्नागणिते

पश्चमोऽध्यायः॥ ५॥

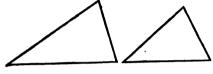
# अथ षष्ठोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

# तत्र त्रयिक्षेशत् क्षेत्राणि सन्ति ।

## तत्र परिभाषा ।

येषां क्षेत्राणां कोणा मिथः समानाः सन्ति । अथ च कोणाश्रिता

मुजा एकरूपनिष्पत्तियु-कास्तानि क्षेत्राणि सजा-तीयानि भवन्ति ।



एकरूपनिष्पत्तिस्त्वे-

कस्मिन् क्षेत्रे एकमुजो द्वितीयमुजस्य यावान् विभागो द्वितीयक्षेत्रे एक-मुजो द्वितीयभुजस्य तावानेव विभागश्चेत् तदैकरूपनिष्पत्तिर्ज्ञेया ।

यत्र ययोः क्षेत्रयोः कोणाः समाना भवन्ति तत्रैकक्षेत्रस्यैकभुजस्य द्वितीयक्षेत्रस्यैकभुजेन यादृशी निष्पत्तिरस्ति तथा द्वितीयक्षेत्रे द्वितीय- मुजस्य प्रथमक्षेत्रद्वितीयभुजेन निष्पत्तिस्तादृश्यस्ति चेत्ते क्षेत्रे समाने भवतः।

अथ क्षेत्रस्य मुखाद् भूमिपर्यन्तं गतो लम्बः क्षेत्रलम्बसंज्ञो ज्ञेयः।

अथैकरेलायास्तादृशं भागद्वयं कार्य यथा संपूर्णरेलाया बृहत्लण्डेन यादृशी निष्पत्तिरस्ति बृहत्लण्डस्य लघुलण्डेन तादृशी निष्पत्तिरस्ति चेत् सा रेला त्रैराशिकरूपा जाता ॥

# अथ प्रथमं क्षेत्रंम् ।

ये द्वे क्षेत्रे समानान्तरभुजे उभयतस्तयोर्छम्बाः समाना-श्चेव् भवन्ति तत् क्षेत्रयोर्निष्यत्तिर्मूमेर्निष्यत्तितुल्या भवति । तथैव द्वयोस्त्रिभुजयोर्छम्बौ समानौ चेज्रवतस्तर्हि भुजयोर्नि-षात्तिर्भूमिनिष्यत्तितुल्या भवति ।

१ सक्छम् is used for क्षेत्रम् throughout the book in K.

यथा इजक्षेत्रं जशक्षेत्रं च समानसम्बम्सि । एवं अबजित्रमुजं अजदित्रमुजं समानसम्बं कल्पितम् । तत्र चतुर्मुजयोर्निष्यत्तिर्वा त्रिभुजयोर्निष्यत्तिर्बजभूमिजदभूमिनिष्यत्तितुल्या मविष्यति ।

## अस्योपपत्तिः।

बदम्मिरुभयत्र विद्विता कार्या । बजतुल्यं बबं वतं प्रश्वकार्यम् । जदतुल्यं दकं कलं प्रथकार्यम् । अवअतअकअलरेलाः कार्याः । पुनः अवजं अववं अवतं एतानि त्रिभुजक्षेत्राणि समानि सन्ति ।

त्रयाणां त्रिभुजानां योगिक्षगुणितअबज-क्षेत्रसमो भवति। जवं ववं वतं एता भूमयः समानाः सन्ति। तिस्रणां भूमीनां योगिक्ष-गुणितबज्जतुल्योऽस्ति। पुनः अजदं अदकं व व व व व क क अकलं एतानि त्रिभुजानि समानानि सन्ति। एतेषां योगिक्षगुणित अजदित्रभुजतुल्योऽस्ति। जदं दकं कलं एतास्तिको भूमयः समान् नाः सन्ति। तिस्रणां भूमीनां योगिक्षगुणजदभूमितुल्योऽस्ति। तदा अतजित्रभुजं अलजित्रभुजाद्यधिकमस्ति तदा तजभूमिर्लजम्मे-रिषका स्यात्। न्यूनं चेन्यूना स्यात्। समानं चेत्समाना स्यात्। तस्मात् अबजस्य निष्पत्तिः अजदित्रभुजेन तादृशी निष्पत्तिरस्ति यादृशी बज-भूमेर्जदम्म्याः। अनेन प्रकारेण क्षेत्राणां निष्पत्तिर्भूमिनिष्पतितुल्या भविष्यति। इदमेवासाकिमिष्टम्॥

## प्रकारान्तरम् ।

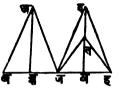
वेषां क्षेत्राणां निष्पत्तिर्भूमिनिष्पत्तेस्तुल्या स्यात् तानि क्षेत्राणि समानलम्बानि भवम्ति ।

यथा बहभूमी अवजित्रभुजं दजहित्रभुजं चास्ति । एतयोस्निभु-जयोर्निष्पत्तिवेजभूमिजहभूम्योर्निष्पत्त्या तुल्या कल्पिता । तदा अझ-रुम्बद्वरुम्बी मिथः समानी भविष्यतः ।

### अस्योपपत्तिः ।

बदि समानौ न स्तः तदा वतअझौ समानौ कल्पितौ।पुनः तज-

रेखा तहरेखा संयोज्या। तदा अवजित्रभुन-तहजित्रभुजयोर्निष्यचिर्वजजहभूम्योर्निष्यचि-तुत्या स्थात् । तसात् अवजित्रभुजस्य नि-ष्यचिर्दजहित्रभुजतजहित्रभुजाम्यामेकरूपा



नाता । तसाद् दजहत्रिमुजतहजतिमुने समाने जाते । एतदशुद्धम् ।
तसादसदिष्टमेव समीचीनम् ॥

# अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ।

बचेका रेखा त्रिभुजस्य भुजद्वयोपरि पतिता भूमिसमा-नाम्तरा चेत्स्यात् तदैकरूपनिष्पस्या भुजद्वयस्य खण्डद्वयं करिष्यति । या रेखा एकरूपनिष्पस्या भुजद्वयसण्डं करोति सा रेखा भूमिसमानान्तरा भवत्येव ।

यथा अवजित्रभुजे दहरेला बजरेला समानान्तरा कल्पिता। वह-रेला जदरेला च संयोज्या। तदा दबहित्रभुजदजहित्रभुजे च स-

माने जाते । कुतः । समानान्तररेसागतत्वादेकभूमिस्नत्वाच । अदहत्रिभुजस्य निष्पत्तिरास्यां त्रिभुजाम्यां समानास्ति । अदहत्रिभुजस्य निष्पत्तिर्देबहत्रिभुजेन तथास्ति यथा अदम्मेनिष्पत्तिदेबम्म्या अस्ति । अदहत्रिभुजस्य निष्पत्तिदेजहत्रिभुजेन तथास्ति यथा अहम्मेनिष्पत्तिर्हजम्म्या अस्ति । तसात् अदसण्डदबसण्डयोर्निष्पत्तिः अहसण्डहजसण्डनिष्पत्त्या ज्ञत्या जाता ।

पुनर्यदि अदखण्डदबलण्डयोर्निष्पत्तिः अहलण्डहजलण्डनि-ष्पत्त्या तुल्या कल्पिता तदा दहरेला बजरेलायाः समानान्तरा मवि-ष्यति । कुतः । अदभूमिदबभूम्योर्निष्पत्तिः अदहत्रिभुजबहदत्रि-भुजनिष्पत्तेत्तुल्यास्ति । अहभूमिहजभूम्योर्निष्पत्तिः अदह्तिभुज-

Digitized by Google

दजहित्रभुजयोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् अदहित्रभुजस्य निष्पति-देबहृदजहित्रभुजाभ्यामेकरूपा जाता । तसादेतित्रभुजद्वयं समानं जातम् । तदा दहरेसा बजरेसासमानान्तरा जाता । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

यदि दहरेला बजरेलासमानान्तरा चेत् अदलण्डदबलण्डयो-र्निष्पत्तिः अहलण्डहजलण्डनिष्पत्तितुल्या न मवेत् तदा अहहझ-योर्निष्पत्त्या तुल्या कल्पिता। पुनर्बझरेला दझरेला संयोजिता। दबहित्रभुजदझहित्रभुजे च समाने जाते इति निश्चितम्॥

पुनर्दहरेला बङ्गरेलासमानान्तरा भविष्यति इत्युपपत्त्या निश्ची-यते । तसात् बङ्गरेला बजरेला प्रत्येकं दहरेलायाः समानान्तरा

जाता । तसात् **बझरे**सा बजरेसा मिथः समानान्तरा जाता। एते मिथः संलग्ने च जाते। एतदशुद्धम् ।

पुनरि अदद्बयोर्निष्यत्तिः अह्हजयोर्निष्यतितुत्यास्ति । ब-जरेखायाः दहरेखा समानान्तरा न चेत्तदा दश्नरेखा बजरेखायाः समानान्तरा कल्पिता । पूर्वोक्तप्रकारेण अदद्बयोर्निष्यत्तिः अश्रश्नज-योर्निष्यत्तितुल्यास्तीति निश्चितम् । तसात् अह्हज्जयोर्निष्यत्तिः अश्न-श्रजयोर्निष्यत्तितुल्या जाता । अहरेखा अश्नरेखाया न्यूनास्ति । तदा हजरेखा श्रजरेखाया न्यूना जाता । इदं वाधितम् । असद्कमेव समीचीनम् ॥

# अय तृतीयं क्षेत्रम्।

तत्रं त्रिमुजेऽभीष्टकोणस्य या रेखा तुल्यखण्डद्वयं करोति सा रेखा तत्कोणसन्मुखभुजस्य तथा खण्डद्वयं करिष्यति यथै-

१ तत्राभिष्टैकत्रिभुजे K.

तत्खण्डयोर्निष्पत्तिः शेषभुजद्वयनिष्पत्तेसुल्या स्यात् । पुन-रियं रेखा तस्य भुजस्यानया निष्पत्त्या यदि खण्डद्वयं क-रोति तदेयं रेखा तस्य कोणस्य खण्डद्वयं तुल्यं करिष्यति ।

यथा बञ्जजिमुने अकोणात् अदरेला कृता । पुनर्दअरेला ब-अजकोणस्य लण्डद्वयं करिष्यतीति कल्पितास्ति । तदा बद्दजल-ण्डयोनिष्पत्तिर्बअभुजअजभुजयोनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।

## अस्योपपत्तिः ।

पुनर्जहरेसा जिचहात् दअरेसायाः समानान्तरा कार्या। बअरेसा तथा वर्धनीया यथा जहरेसायां हृचिहे संपातं करिष्यति । तसात् बअदकोणबहुजकोणौ समानौ भिवष्यतः । पुनर्जअदकोणअजह-कोणौ समानौ भिवष्यतः। तदा अहजकोणअजहकोणौ मिथः समानौ भविष्यतः। तदा अहरेसा च अजरेसातुल्या भविष्यति । तसात् बदस्वण्डजद्रसण्डयोनिष्पत्तिस्तथा भविष्यति यथा अबरेसाअहरेस-योरस्ति । अजरेस्रयापि तथास्ति। कुतः। अहरेसा अजरेस्रयोः समत्वात्।

पुनरिप बदद्जयोर्निष्पत्तिर्बअअजनिष्पत्तितुल्या यदा कल्पिता तदा कोणस्यापि द्वे सण्डे समाने भविष्यतः । कुतः । बदद्जयोर्निष्प-

तिर्बे अञ्चहिनष्पतितुत्यास्ति । त-सात् बअरेसाया निष्पत्तिः अहअ-जाभ्यां समाना जाता । तसात् अहअजौ समानौ जातौ । तदा ब-हजकोणतुत्यवअदकोणः अजहको- स

णतुल्येन जअदकोणेन समानो जातः। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

<sup>🤊</sup> कल्पिता. K.

#### प्रकारान्तरम् ।

दिचहात् दहरुम्बः अबगुजोपिर दश्ररुम्बध्य अजभुजोपिर कार्यः ।
तस्मात् बआजकोणस्य यदि सण्डद्वयं तुल्यं कल्प्यते तहेती रुम्बी
समानी भवतः । कुतः । अचिह्रस्य कोणद्वयं समानमितः । हकोणझकोणावि समकोणी स्तः । अदरेखा त्रिभुजद्वयेऽप्येकैवास्ति ।
तस्माह्हरेखा दश्ररेखा च बआदित्रभुजे जआदित्रभुजे च समानरुम्बरूपा जाता । तस्मात् बआदित्रभुजेस्य निष्पत्तिर्जअदित्रभुजेन तथा
जाता यथा बआभुजस्य आजभुजेनास्ति । पुनरि अनयोक्षिभुजयोर्निष्पत्तिर्वदक्तयोर्निष्पतितुल्यास्ति । तस्मात् बदद्जयोर्निष्पत्तिर्वअआजनिष्पत्तितुल्या जाता ।

यदि ताहशी निष्पत्तिः स्यात् तदा कोणस्य द्वे सण्डे समाने भविष्यतः । कुतः । त्रिमुजयोर्निष्पत्तिर्बद्दजयोर्निष्पसितुल्यास्ति । वज्रअजनिष्पत्तेरिष तुल्यास्ति । यदा
बजरेखा अजरेखा च मूमिः कल्पिता तदा अनयोसिमुजयोर्निष्पत्तिर्मृम्योर्निष्पत्त्या तुल्या भविष्यति ।
दहलम्बद्द्मलम्बो च समानौ भवतः । अद्- व द्वे द्वे
रेखा त्रिमुजद्वयेऽप्येकैव भविष्यति । तस्मात् हअद्कोणझअद्कोणौ
समानौ भविष्यतः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

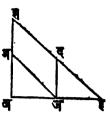
# अथ चतुर्थ क्षेत्रम्।

ययोर्द्वयोस्त्रिभुजयोः कोणाः समाना भवन्ति तयोर्भुजयो-निष्पत्तिरेकैव भविष्यति । यः कोणस्तुल्यो भवति तदाश्चि-तभुजयोर्निष्पत्तिस्तुल्या भवतीति ज्ञेयम् ।

यथा अवजित्रभुजे दह्जित्रभुजे वअजकोणजदहकोणौ समानी किल्पतौ । पुनवेजअकोणजहदकोणौ समानौ च किल्पतौ । पुनद् अवजकोणहजदकोणौ च समानौ किल्पतौ । तदा वजनिष्पत्तिर्ज्जह-

रेखया तथास्ति यथा धार्मनिष्यत्तिजीदरेखयास्ति अजनिष्यतिर्देहरे-खया बधास्ति । एतत्रिभुजद्वयं जहरेखायां स्थाप्यम् । बजरेखा हद-

रेखा च वर्धनीया यथा झचिह्नलमा स्यात् । तदा आजरेखा झहरेखायाः समानान्तरा भवि-ष्यति।जदरेखा झबरेखायाश्च समानान्तरा भवि- म ष्यति। झजक्षेत्रमपि समानान्तरमुजं भविष्यति। तस्माद् बजनिष्पत्तिजहरेखायास्त्रथास्ति यथा ब

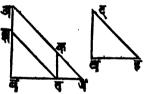


बअनिष्पत्तिः अझरेलगास्ति जदरेलयापि । पुनर्बजनिष्पत्तिजेहरे-लया तथास्ति यथा झददहनिष्पत्तिः अजदृहनिष्पत्तिरपि । तस्मात् बअजदयोर्निष्पत्तिः अजदृहयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमे-नासाकिमष्टम् ॥

## प्रकारान्तरम् ।

अवजित्रभुने दवहत्रिभुने अकोणदकोणी समानी कल्पिती ।

पुनर्बकोणवकोणौ समानौ कल्पितौ । उ जकोणहकोणौ समानौ कल्पितौ। यदि क अवभुजदवभुजौ समानौ भवतस्तदा शेषभुजा अपि समाना भविष्यन्ति। प्रति-



ज्ञातमुपपनं भविष्यति । यदि अबद्वौ समानौ न भविष्यतस्तदा अवमिषकं किल्पतम् । पुनर्वदतुल्यं बझं पृथक् कार्यम् । पुनः अज्ञरेखायाः समानान्तरा झतरेखा कार्या । तसात् झवतित्रभुजदवहित्र-भुजे समाने भविष्यतः । पुनः अञ्चझविष्यत्तिजीतत्वविष्यतितुल्या भविष्यति । अवबङ्गिनिष्पत्तिजीववतिष्यतितुल्या भविष्यति । पुन-विद्यति । अववङ्गिनिष्पत्तिजीववतिष्यतितुल्या भविष्यति । पुन-विद्यति । वतरेखा वहतुल्यास्ति । तसात् अवदवनिष्पत्तिजीवहवनिष्पत्तिज्ञिवहवनिष्यत्तिज्ञिवहवनिष्यत्तिज्ञिवहवनिष्यत्तिज्ञिवहवनिष्यत्तिज्ञिवहवनिष्यत्तिज्ञिवस्य ज्ञाता । पुनः तकं वअसमानान्तरं का-र्यम् । तदैवं निश्चितम् ज्ञवत्वनिष्यत्तिज्ञअअकनिष्यत्तिज्ञल्यास्तिति । इदमेवास्थाकमिष्टम् ॥

## अथ पश्चमं क्षेत्रम् ।

ययोस्त्रिभुजयोर्भुजानां यथाक्रममेकरूपनिष्पत्तिरस्ति चेत्तयोः कोणाः समाना भवन्ति ।

यथा अवजित्रभुजे दहझत्रिभुजे च अवदहिनष्पत्तिः अजदझ-निष्पत्तितुल्या कल्पिता । वजहझनिष्पत्तितुल्यापि कल्पिता । तस्मा-त्कोणाः समानाः स्युः । कुतः । हचिह्नोपरि हझरेखाया झहबकोणो

बकोणतुल्यः कार्यः । पुनर्झचिह्नोपरि ह्झव-कोणो जकोणतुल्यः कार्यः । द्वौ भुजौ वर्ध-नीयौ यथा वचिद्वे मिलिष्यतः । तसात् अवज-त्रिभुजवहङ्झत्रिभुजयोः कोणाः समाना जाताः ।

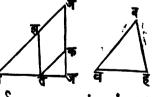
नाया यथा वाचह । मारूप्यतः । तसात् अवज- क्रिमुजवहझत्रिमुजयोः कोणाः समाना जाताः । वजहझनिष्पत्तिर्बअहवनिष्पत्तितुल्या मिवष्यति । इयं बअहदनिष्पत्तितुल्याऽऽसीत् । तसाद् हदहवरेसे समाने जाते । अनेन प्रकारण झवझदरेसे समाने जाते । तसात् दहझत्रिमुजस्य वहझत्रिमु-

## प्रकारान्तरम् ॥

जस्य अबजित्रभुजस्यापि कोणाः समाना जाताः। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

चतुर्थक्षेत्रे प्रकारान्तरक्षेत्रमत्र ज्ञेयम् । अबजित्रमुजं दवहत्रिमुजं

च कल्पितम्। एतयोर्भुजा यदि समानां भविष्यन्ति तदास्माकिमष्टं सिद्धम्। यदि समाना न भविष्यन्ति तदा अवं दवादिषकं कल्पितम्। वद्तुल्यं बझं व



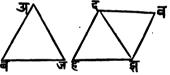
पृथकार्यम् । पुनर्वहतुल्यं बतं पृथकार्यम् । दहतुल्यं अकं पृथ-कार्यम् । झततकरेले संयोजनीये । तदा अवनिष्पत्तिदेवरेला-तुल्यझवरेलया यथा जवनिष्पत्तिर्वहरेलातुल्यवतरेलया भिव-ष्यति । तसात् अझझवनिष्पत्तिर्जततवनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् झतरेला अजरेलायाः समानान्तरा भविष्यति । अनेन प्रका-रेण तकरेला बअरेलायाः समानान्तरा भविष्यति । तदा अकरेला झतरेसे तुस्ये भविष्यतः । बझतित्रभुजस्य वदहित्रभुजस्य भुजाः समाना भविष्यन्ति । बझतित्रभुजस्य बअजित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति । तसात् बआजित्रभुजस्य वदहित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति ॥

## अथ षष्ठं क्षेत्रम्।

ह्रयोस्त्रिमुजयोरेकः कोणः समानोऽस्ति । तत्कोणसंब-न्धिनोर्भुजयोरेकैव निष्पत्तिरस्ति । तदा शेषकोणाः स-माना भवन्ति ।

यथा अवजित्रभुने दहझित्रभुने अकोणदकोणौ समानौ क-लियतौ । अवभुजदहभुजयोर्निष्पत्तिः अजभुजदझभुजनिष्पत्तितुल्या कल्पिता । दझरेखाया दिचहोपरि झदवकोणः अकोणतुल्यः कार्यः । झिचहोपरि दझवकोणो जकोणतुल्यः कार्यः । द्वौ भुजौ वर्ध-

नीयौ यथा विचिह्ने मिलिष्यतः । अबजिन्धुजस्य द्वझित्रभुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति । तदा



अजद्श्रनिष्पत्तिः अबद्वनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । पुनरियं अब-दहनिष्पत्तिस्तुल्याऽऽसीत् । तसात् दवदहो समानौ जातौ । एवं दिचह्रस्य द्वौ कोणौ अकोणतुल्यौ समानौ भविष्यतः । तसात् दह्श-त्रिमुजस्य वदश्रित्रभुजस्य बअजित्रभुजस्यापि कोणाः समाना जाताः। इदमेवासाकिमष्टम् ॥

## द्वितीयः प्रकारः ।

बअअज्ञभुजौ हृद्द्झभुजाम्यां समानौ यदि भवतस्तदास्माकं प्रति-झातं सिद्धमेव । यदि समानौ न भवतस्तदा

बअअजभुजी अधिकी कल्पिती । अतं दहतुल्यं पृथकार्यम् । अकं दझतुल्यं पृथकार्यम् । अकं दझतुल्यं पृथ-

न के किस के किस

कार्यम् । तकरेला योजनीया । तदा बअअतनिष्पत्तिर्जअअकनिष्प-

तितुत्या मिष्पति । बतत्र अनिष्पत्तिर्जककअनिष्पत्तितुत्वा मिष्य-ति । तसात् बजतकरेखे समानान्तरे भविष्यतः। तदा बअजित्र मुजस्य तअकित्र मुजस्य इद्द्रात्र भुजस्य कोणाः समाना भविष्यन्ति ॥

## अथ सप्तमं क्षेत्रम्।

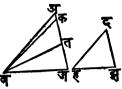
द्वयोखिभुजयोरेकैकः कोणः समानो भवति द्वितीय-कोणस्य भुजयोरेका निष्पत्तिरस्ति शेषस्तृतीयकोणः सम-कोणाक्यूनो भवतु वा मा भवतु द्वयोखिभुजयोस्तृतीय-कोण एकरूपोऽपेक्षितस्तदा शेषकोणाः सर्वेऽपि समाना भविष्यन्ति।

यथा अवजित्रमुजस्य दहङ्गित्रभुजस्य अकोणदकोणौ स कल्पितौ। अवदहभुजनिष्पत्तिर्वजहङ्गिनि-ष्पत्तितुल्या कल्पिता।पुनर्जकोणो झकोणः प्रत्येकसमकोणान्यूनो भवति वान भवति

तदा बकोणहकोणो समानो भविष्यतः। यदा न भविष्यतस्तदा बकोणोऽिषको भविष्यतीति किल्पतस्। पुनः अववकोणो हकोणतुल्यः कार्यः।
तदा बवअकोणो झकोणतुल्यो भविष्यति। तदा अवद्दृतिष्पत्तिबवह्झिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति। बज्रह्झिनिष्पत्तितुल्या किल्पताऽऽसीत्। तसात् बवबजरेखे समाने भविष्यतः। बवजकोणवज्जवकोणो समानो भविष्यतः। पुनर्जकोणझकोणो समकोणान्यूनो बिद्
न भवतस्तदा द्वी कोणो समकोणद्वयान्यूनो न जातो। इदं वाधितम्।
यदि समकोणान्यूनो भवतस्तदा अवबकोणो झकोणतुल्यः समकोणादिषको भविष्यति न्यूनः किल्पतोऽस्ति। इदं वाधितम्। तस्तात्
बकोणहकोणो समानो जातो। जकोणझकोणाविष समानो जातो।
इदमेवास्माकिमिष्टम्।

पूर्वक्षेत्रे यदुक्तं जझकोणौ समकोणाच्यूनौ भवतो वा न भवतस्त-

स्याबमाश्यः । अबजित्रिभुजं दहझत्रिभुजं सजातीयं न्यूनकोणं च कल्पितम् । पुनः अवभुजो बजभुजादिषकः कल्पितः । पुनर्ब-चिद्वात् बतल्म्बः अज्यभुजोपिर कार्यः । व



निहात् बतल्म्बः अज्ञभुजापार कायः । क जरु स तसात् अतमिषकं स्यात् तजात् । पुनः तज्जतुल्यं तकं पृथकार्यस् । बकरेखा संयोज्या । तदेयं बकरेखा बज्जतुल्या भविष्यति । पुनः अ-बकित्रभुजे दहझत्रिभुजे अकोणदकोणौ समानौ स्तः । अबरेखायाः दहरेखया निष्पत्तिस्तथास्ति यथा बज्जतुल्यबकरेखाया निष्पत्तिर्द्धन-रेखयास्ति । एते द्वे त्रिभुजे सजातीये न स्तः । कुतः । बक् अकोणस्य समकोणादिषकत्वात् । हझदकोणस्य समकोणास्यूनत्वात् ।

इदं यदुक्तं च न्यूनकोणो भवतु वा मा भवतु । इदं च नोक्तं न्यून-कोणो भवतु वाऽधिककोणो भवतु । कुतः । तत्र समकोणस्यापेक्षित-त्वात् ॥

## अथाष्टमं क्षेत्रम्।

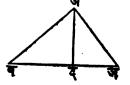
यदि त्रिभुजे समकोणान्निःसृतलम्बस्तस्य कर्णोपरि गत-स्तदा त्रिभुजस्य द्वे सजातीये क्षेत्रे करिष्यति । एते त्रिभुजे वृहित्रभुजस्य सजातीये भवतः ।

यथा अबजित्रभुने असमकोणात् अद्रलम्बो बजकर्णोपरि निष्का-श्वितः । तेन अबद्विभुनअजद्विभुने सजातीये भविष्यतः । एते च अबज्विभुनसापि सजातीये भवतः ।

## अस्योपपत्तिः ।

अवद्त्रिभुने अबजित्रिभुने च क्षेत्रद्वयेऽप्येकएव बकोणोऽस्ति ।

पुनः अद्वकोणजअवकोणौ प्रत्येकं सम-कोणौ सः। तसाद् बअद्कोणबजअकोणौ शेषौ समानौ जातौ । तस्मादेते द्वे त्रिभुजे सजातीये जाते। तदा द्ववअरेखयोर्निष्पत्तः



अववजयोर्निष्पत्त्या तुल्या जाता । अदअजनिष्पत्तितुल्यापि जाता । एवं हि जअदजवअत्रिभुजे च सजातीये जाते । पुनर्जअदवअद-त्रिभुजे च सजातीये स्तः । कुतः । दिचह्नस्य द्वौ कोणौ प्रत्येकं सम-कोणौ स्तः । जकोणस्तु दअवकोणतुल्योऽस्ति । वकोणस्तु जअद-कोणतुल्योऽस्ति । एते द्वे सजातीये स्तः । जदअदनिष्पत्तिर्दअदव-निष्पत्त्या तुल्या जाता । जअअवनिष्पत्तितुल्यापि जाता ।

असात्क्षेत्रादिदं निश्चितं लम्बः कर्णस्य खण्डद्वये त्रैराशिकरूपो-ऽस्ति । आवाधाद्भुजक्षैराशिकरूपोऽस्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

## अथ नवमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयमध्ये एकान्या रेखा तथोत्पाद्या वथैतद्रे-खात्रयमेकनिष्पत्तिरूपं भवति ।

तत्र रेसाद्वयं अवं बजं कल्पितम् । एतद्रेसाद्वययोगे व्यासं कृत्वा

अद्जवृत्तार्द्वमुत्पाद्यम् । पुनर्बनिहात् बद्द-लम्बो वृत्तपालिसंलमः कार्यः । अयं लम्बः अबबजरेलाद्वयमध्ये एकनिष्पत्तिरूपो भवि-ष्यति।द्वलम्बः समकोणात्कर्णोपर्यागतस्तसात् अ

**अबजब**रेखाद्वयमध्ये एकनिष्पत्तिरूपस्तिष्ठति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

पुनः प्रकारान्तरम् ॥

एकरेखा द्वितीयरेखोपरि पातनीया । बृहद्रेखां व्यासं कृत्वा वृत्ताद्धी कार्यम् । रुघुरेखान्ताल्लम्बो वृत्तपालिसंलमः कार्यः । यसिश्चिहे लमल-चिह्नाद्रेखान्तपर्यन्तमन्या रेखा कार्या । इयं रेखाऽसादिष्टा । एतत्पूर्वो-क्कक्षेत्रेण स्फुटमेव ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

रेसाद्वयान्तरमजं कल्पयित्वा वृत्ताद्धं कार्यम् । तश्च आजदं क-ल्पितम् । पुनर्वचिद्वात् बदरेसा वृत्तपालिसंलमा कार्या । इयं रेसा अववजरेसामध्ये पुकनिष्पत्तिरूपा भविष्यति ॥

## अस्योपपत्तिः ।

दं अद्जदहरेसाः संयोज्याः। तदा अद्जकोणबदहकोणौ प्रत्येकं समकोणौ सः। पुनईद्जकोणो द्वयोः शोध्यः। तदा शेषौ जदब-कोणहद्अकोणौ समानौ सः। पुनईद्अकोणहअद्कोणौ च स-

मानौ स्तः । तसात् बअद्त्रिभुजे बद्जित्रभुजे च बकोणो द्वयोरेकको-गोऽस्ति । पुनः दअबकोणजदब-



कोणी समानी स्तः । तदा बद्अकोणबजद्कोणावि समानी भवि-ध्यतः । तसात् अबबद्योनिष्यत्तिबद्बजनिष्यत्त्या तुल्या भविष्यति । असात्क्षेत्रादिदं निश्चितम् ॥

रेखाद्वययोगात् यो छम्ब उत्पन्नः स एव छम्बो रेखाद्वयमध्ये एक-निष्पत्तिरूपश्चेत्तदा रेखाद्वययोगं व्यासं कृत्वा यद्वृत्तार्द्धे कियते तद्वृत्तार्द्धे रूम्बान्तसंरुमं मविष्यति ॥

## अथ दशमं क्षेत्रम्।

तत्र रेखाद्वयं यस्यां निष्पत्तौ स्यात्तत्र तृतीया रेखा तिष्ठ-ष्पत्तिरूपा यदि कर्त्तुमिष्टास्ति ।

तदा तद्रेसाद्वयं अवं अर्जे कल्पितम् । एतद्रेसाद्वयात् अकोणः कार्यः । पुनः रेसाद्वयं वर्द्धनीयम्। बहरेसा अजतुत्या पृथकार्या च । बजरेसा संयोज्या । पुनर्हचिह्नात् हदरेसा बजरेसायाः समानान्तरा

कार्या । तस्माज्जदमिष्टरेखा भविष्यति । कुतः अवबद्दयोर्निष्पत्तिः अजजद्निष्पत्तितुत्यास्ति इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

इष्टरेखाम्यां समकोणः कार्यः । असौ असंज्ञः । बजकर्णः कार्यः । एतत्कर्णोपरि बअजं वृत्तार्द्धे कार्यम् । जिचहात् बजरेखोपरि जद- लम्बोऽपि कार्यः । पुनर्बअरेला वर्द्धनीया यथा जदरेलायां दचिद्दलमा स्यात् । तस्मात् अदरेला इष्टरेला स्यात् । कुतः । जअलम्बो जसमकोणा-रकणीपर्यागतः । तस्मात् बज्जजयोर्निष्पत्तिः अजजदनिष्पत्तितुस्या भविष्यति ॥



पुनः प्रकारान्तरम् ॥

बृहद्रेसायां बआजं वृत्ताद्धं कार्यम् । बआपूर्ण-ज्या छघुरेसातुल्या कार्या । पुनः अचिह्नात् आह-रूम्बो बजरेस्रोपरि कार्यः । तस्मात् बहं इष्टरेसा व भविष्यति । इदं पूर्वोक्तप्रकारेण स्पष्टमेव॥

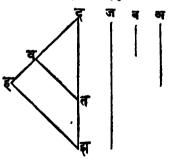


# अथैकादशं क्षेत्रम्।

यत्र रेखात्रयं वर्त्तते तत्र यदि चतुर्थी रेखोत्पाद्या भ-वति सा की हशी यथा प्रथमद्वितीयरेखयोर्निष्पत्तिरस्ति ता-हशी तृतीयचतुर्थरेखयोरिप निष्पत्तिः स्यात्।

यथा अबजं रेखात्रयं कल्पितम् । अन्यत्र दहरेखा दझरेखा च

कार्या। दिचिह्ने तयोयोंगे यथा हदझ-कोणो भविष्यति तथा योगः कार्यः। पुनर्दहरेखाया अतुल्या दवरेखा भि-न्ना कार्या। बहं बतुल्यं भिन्नं कार्यम्। इर पुनर्दझरेखाया जतुल्या दतरेखा प्र-थकार्या। वतरेखा संयोज्या। हचि-हात् हझरेखा वतरेखायाः समाना-

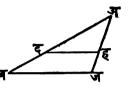


न्तरा कार्या । तस्मात् तझरेखा चतुर्थीष्टा रेखा जाता । कृतः। अतुल्यद्वरेखाबतुल्यवहरेखयोर्निष्यन्तिर्जतुल्यद्वरेखातझरेखयोर्निष्य-त्तितुल्या जाता । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

प्रथमरेला द्वितीयरेला अवअजसंज्ञा कल्पनीया । अचिहे उभयो-

योंगः कार्यो यथा बअजकोणो निष्पन्नो मवेत् । पुनर्बजरेला संयोज्या । पुनस्तृती-या रेखा अदसंज्ञा कल्पनीया । इयं अबरे-खायां स्थापनीया। दचिह्नात् दहरेला बज-



रेखायाः समानान्तरा कार्या । तदा अहरेखास्माकमिष्टा भविष्यति ॥

## अथ द्वादशं क्षेत्रम्।

# एकस्या रेखायाः कश्चन विभागः पृथकत्तेव्योऽस्ति।

तत्र अवरेसा कल्पिता । अस्यास्तृतीयांशो भिन्नः कर्त्तव्योऽस्ति । अजरेसा अवरेसालमा निष्कासनीया अचिद्वात् यथा वअजकोण

उत्पन्नो मिवष्यति । पुनः अजरेखाया अद्दृह-हजसंज्ञा रेखाः समाना विभागा भिन्नाः कार्याः । पुनर्वजरेखा योज्या । पुनर्दचिहात् दृझरेखा जब-रेखायाः समानान्तरा कार्या । इयं अबरेखायास्तु-



तीयां भिनां करिष्यति । कुतः । अझअवनिष्पत्तिः अदअजनिष्पत्ति-तुल्यास्ति । अदं अजस्य तृतीयांशोऽस्ति । तसात् अझं अवस्य तृती-यांश्चो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

## मकारान्तरं तृतीयांशकरणार्थम् ।

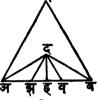
अबरेखा कल्पनीया । अजबित्रभुनं समानभुनं कल्पनीयम् । अनकोणं बकोणं च रेखाम्यामर्दितं कृत्वा दिचिहे द्वयो रेखयोयोंगः कार्यः । पुनः अदबकोणो दहरेखयाऽद्वितः कार्यः । अदहकोणो झदरेखया- भितः कार्यः । बदहकोणो दवरेखयाभितः कार्यः । तसात् अबरेखाया आचिहे विचिहे च त्रयो विभागाः समाना जाताः ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

यिक्षभुजं समानमुजं भवति तस्य यः किश्वत्कोणः समकोणस्य त्रि-भागद्वये समानो भवति । पुनर्दअबकोणो द्वअकोणः प्रत्येकं समको-णस्य तृतीयांशो भवति । तदा अद्वकोण एकसमकोणेन स्वतृती-यांशयुक्तेन समानो जातः । पुनः अद्झकोणो बद्वकोणः प्रत्येकं समकोणस्य तृतीयांशो जातः । झअद्कोणो झद्अकोण एतौ समानौ जातौ । तसात् झअरेसाझदरेखे समाने जाते । अनेन प्रकारेण बवरेसावदरेखे समाने जाते ।

पुनः अकोणदकोणयोगो बदकोणयोगश्च प्रत्येकः समकोणस्य

तृतीयांशद्वयेन समो भवति । झदवकोणः सम-कोणस्य तृतीयांशद्वयेन तुल्यो जातः । तदा द-कोणो झकोणो वकोणः प्रत्येकः समकोणस्य त्रि-भागद्वयं जातः । तसाद् दझरेखा झवरेखा वद-



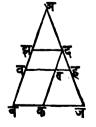
रेखा समाना जाता। अझं दश्चतुल्यमस्ति। बवं दबतुल्यमस्ति। तसाद् अझं झवं वबं एतानि खण्डानि समानि जातानि । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

## अथ त्रयोदशं क्षेत्रम्।

तत्रैकरेखाविभागनिष्यत्तितुल्या अन्यरेखाविभागाश्चिकी-षिताः सन्ति ।

तत्र अबरेसा कल्पिता। अजरेसाया दिचहहिचह्रयोरुपरि वि-

भागाः कल्पिताः । पुनरेतयो रेखयोः अकोणोपिर योगः कल्पितः । पुनर्बजरेखा संयोज्या । द्विहात् इचिहात् द्रझरेखा इचरेखा च जबरेखायाः समाना-न्तरा कार्या । पुनदेतकरेखा अबरेखायाः समाना-न्तरा कार्या । तस्मात् अबरेखाया झचिह्वचिह्यो-रुपरीष्टविभागा जाताः ।



अस्योपपत्तिः ।

तत्र अझझवयोर्निष्पत्तिः अददहनिष्पत्तेस्तुत्यास्ति । झवववयो-रपि निष्पत्तिः तदतकनिष्पत्तितुत्यास्ति । पुनर्दहहजयोर्निष्पत्तितुस्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम्।

उभे क्षेत्रे समानान्तरभुजे भवतः। एनयोरेककोणः समानो भवति। प्रथमक्षेत्रस्यैकभुजस्य द्वितीयक्षेत्रस्यैकभुजेन सा नि-ष्पत्तिरस्ति या द्वितीयक्षेत्रे द्वितीयभुजस्य प्रथमक्षेत्रे द्विती-यभुजेन निष्पत्तिरस्ति। एतादृशं क्षेत्रद्वयं समानं भवति। पुनर्यदि क्षेत्रद्वयं समानमस्ति तदा भुजयोर्निष्पत्तिः पूर्वोक्त-वत् स्यात्।

यथा अजक्षेत्रजझक्षेत्रयोः समानान्तरभुजयोः समानत्वेन कल्पि-तयोर्जकोणस्तुल्योऽस्ति । तत्र बजभुजजइभुजयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजद्भुजनिष्पत्तिब ज्
हुल्या भविष्यति ।
अत्रोपपत्तिः ।

अनयोः क्षेत्रयोर्बजभुजजहभुजावेकस्यां सरलरेखायां कल्पयेत् । अनेन प्रकारेण वजभुजजदभुजावेकस्यां रेखायां कल्पयेत् । पुनर्दह-क्षेत्रं पूर्ण कार्यम् । अजक्षेत्रजझक्षेत्रयोर्दहक्षेत्रेण निष्पत्तिः समास्ति । अजक्षेत्रदहक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्बजभुजजहभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । पुन-जिझदहक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजदभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् बजभुजजहभुजयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजदभुजयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति।

पुनरप्युक्तक्षेत्रभुजयोर्निष्पत्तिरुक्तप्रकारेण कल्पनीया। तदा क्षेत्रद्वयं समानं भविष्यति । कुतः । अनयोः क्षेत्रयोदेहक्षेत्रेण निष्पत्तिर्यास्ति सैव तद्भुजयोरस्ति । उभयोः क्षेत्रयोरेकक्षेत्रेण निष्पत्तिः स्यात् । क्षेत्र-द्वयं समानं जातम् । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

### अथ पश्चदशं क्षेत्रम्।

समानयोर्द्वयोस्त्रिभुजयोरेकः कोणो यदि समानो भवति तदा प्रथमक्षेत्रे तत्कोणसक्तभुजस्य द्वितीयक्षेत्रे तत्कोणसक्त-भुजेन या निष्पत्तिरस्ति द्वितीयक्षेत्रे द्वितीयभुजस्य प्रथमक्षेत्रे द्वितीयभुजेन सेव निष्पत्तिभीवष्यति । यदि भुजावस्यां निष्पत्तौ स्थातां तदा त्रिभुजद्वयं समानं भविष्यति ।

यथा समानयोः अबजित्रभुजजहदत्त्रिभुजयोर्जकोणौ समानौ किल्पतौ । तत्र अजभुजजहभुजयोर्निष्पत्ति- क्रिज्ञभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति ॥ अत्रोपपत्तिः ।

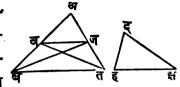
अजमुजजहभुजावेकस्यां सरलरेखायां मिलितौ कल्पनीयौ ।
तथा बजभुजजदभुजावन्यस्यां सरलरेखायां मिलितौ कल्पनीयौ ।
बहरेखा योज्या । अबजित्रभुजदहजित्रभुजयोर्बजहित्रभुजेन निष्पत्तिस्तुल्या स्यात् । अबजित्रभुजजबहित्रभुजयोर्निष्पत्तिः अजभुजजहभुजनिष्पत्तितुल्याखि । दहजित्रभुजबहजित्रभुजयोर्निष्पत्तिदैजभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्याखि । तस्यात् अजभुजजहमुजयोर्निष्पत्तिदेजभुजजबभुजनिष्पत्तितुल्या जाता । पुनरिष अनयोर्भुजयोर्निष्पत्तिरीहशी कल्प्यते तदेतित्रभुजद्वयं समानं भविष्यति । कुतः । एतित्रभुजद्वयं बजहित्रभुजेन सार्द्धमनन्तरोक्तैकनिष्पत्ताविद्धा । तस्यादिदमसदिष्टं सिद्धम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ।

अवजित्र अवस्थात्र अवशेणदकोणौ समानौ कल्पनीयौ। तत्र यदि अव अजदह भुजौ समानौ भवतस्तदास्मदिष्टं स्फुटमेव । यस्मात् त्रि अजद्वयसाम्यात् अजभुजद्य भुजयोः साम्यं भविष्यति । कुतः। यदि अव अजो दृह भुजे स्थाप्यते कोणश्च कोणे स्थाप्यते । अज्ञुजो दक्कभुजे चेन पतित तदा न्यूनाधिको भविष्यति। पुनः अजन भुजदक्कभुजौ यदि समानौ स्थातां तदा सैव निष्पत्तिरुपपना भविष्यति।

पुनरिप ते भुजा अस्यां निष्पत्तौ स्युस्तदा अजभुजदश्भभुजौ समानौ भविष्यतः । त्रिभुजद्वयमि समानं भविष्यति ।

यदि च अवभुजदहभुजौ न्यू-नाधिकौ स्यातां तदा अवभुजो-ऽधिकः कल्पनीयः । अबात् दह-तुल्यं अबं पृथकार्यम् । पुनर्वजरेला



संयोज्या । तत्र यदि त्रिभुजद्वयं समानं भवति तदा दश्भभुजो अजभुजादिषको भविष्यति । कुतः । यदि समानो वा न्यूनस्तदा दहशत्रिभुजं अबजित्रभुजान्यूनं भविष्यति । पुनर्दश्चतुल्यं अतं कल्पनीयम् । पुनः तवरेसा जबरेसा च संयोज्या । तसात् अवतित्रभुजं
दहश्चित्रभुजेन समानं भविष्यति । अबजित्रभुजेनापि समानं भविष्यति । असात् अवजित्रभुजं शोध्यते तदा वबजित्रभुजवतजत्रिभुजे समाने अवशिष्यतः । तसात् वजरेसा बतरेसायाः समानान्तरा भविष्यति ।

यदि निष्पत्तिद्वयं समानं भवति तदा दहतुल्या अवरेला अबरे-स्वातो न्यूना भवति तदा दङ्गरेलातो अजरेला न्यूना भविष्यति।पुनः क्षेत्रं संपूर्णं कार्यं। तत्र निष्पत्तिद्वयसाम्येन वबजित्रमुजवतजित्रमुजे समाने जाते इति निश्चितम्। पुनः अवजित्रमुजं योज्यम्। तदा त्रिमुजद्वयस्य साम्यं प्रकटं भविष्यति॥

## अथ षोडशं क्षेत्रम् ।

तत्र तादृशरेखाचतुष्टयं चेद्भवति तत्र यदि प्रथमरेखा-द्वितीयरेखानिष्पत्तिस्तृतीयचतुर्थरेखानिष्पत्तितुल्या भवेत् । तदा प्रथमचतुर्थरेखाघातः द्वितीयतृतीयरेखाघाततुल्यो भ-

त्रिमुजद्वयं समानं न भविष्यति K.

वति । यदि प्रथमचतुर्थरेखाघातो द्वितीयतृतीयरेखाघा-ततुल्यो भवति तदा प्रथमरेखाद्वितीयरेखानिष्पत्तिस्तृती-यचतुर्थरेखानिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अबरेसाजदरेसाहरेसाझरेसाः कल्पिताः । पुनः अचि-हात् जिचहात् अवलम्बजकलम्बो कि विकास्यो । पुनः झातुल्यहतुल्यो निष्कास्यो । पुनः अतक्षेत्रं जलक्षेत्रं च संपूर्ण कार्यम्। जिल्लाक्षेत्रं जलक्षेत्रं च संपूर्ण कार्यम्। जिल्लाक्षेत्रं च स्राहं

तुत्यजकरेखाझतुत्यअवरेखयोर्निष्पत्तितुत्या चेत्तदा क्षेत्रद्वयं समानं भिवष्यति । यदि क्षेत्रद्वयं समानं भवेत्तदैतेषां भुजाः पूर्वोक्तनिष्प-त्तितुत्या भविष्यन्ति । तसात् कित्पतरेखा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । इदमेवाऽस्माकमिष्टम् ॥

### अथ सप्तदशं क्षेत्रम्।

ताहशास्तिस्रो रेखाश्चेद्भवन्ति यासु प्रथमद्वितीययोर्निष्पितिद्वितीयतृतीयनिष्पत्तितुल्या चेद्भवति तदा प्रथमतृतीययोर्घातो द्वितीयरेखावर्गसमो भवति । यदि प्रथमतृतीयघातो द्वितीयवर्गतुल्यश्चेत् तदा प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिर्द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अबजास्तिसो रेसाः किल्पताः । पुनर्बरेसातुस्या दरेसा कार्या । प्वं तत्र चतस्रो रेसा भविष्यन्ति । यदि अरे- क्षाः विष्यति । स्वावरेसयोर्निष्पत्तिद्दरेसाजरेसानिष्पत्तितुस्या व । अरेसाजरेसाघातो बरेसाद- ज । रेसाघाततुस्यो भविष्यति । बरेसावर्गतुस्यो भ- विष्यति । यदि अरेसाजरेसाघातो बरेसावर्गतुस्य करेसादरेसाघातस- मानो भवेत् तदा अरेसाबरेसयोर्निष्पत्ति देरेसातुस्य करेसाजरेसयोर्निष्पत्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

## अथाष्टादशं क्षेत्रम्।

ये द्वे त्रिभुजे सजातीये भवतस्तदा तयोर्निष्पत्तिरेकत्रि-भुजस्य भुजस्य तादृशद्वितीयक्षेत्रभुजेन या निष्पत्तिस्तद्वर्गेण तुल्या भवति ।

यथा अवजिभुजदहझत्रिभुजे सजातीये कल्पिते । तदाऽनयो-निष्पत्तिवेजभुजहझभुजयोर्निष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ॥

अस्योपपत्तिः ।

बजभुजहझभुजयोर्निष्यत्तौ बवं तृतीयं पृथकार्यम् । पुनः अव-रेखा संयोज्या । अववित्रभुजे दह-झित्रभुजे बकोणहकोणौ समानौ भ-विष्यतः। अवभुजदहभुजयोर्निष्पत्ति-र्बजभुजहझभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति ।

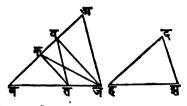
इयं हझ्भुजबवभुजनिष्यत्त्या तुल्या भविष्यति । अववित्रभुजदहझ-त्रिभुजे समाने भविष्यतः । पुनः अवजित्रभुजस्य निष्पत्तिर्दहझ्तिभुज-तुल्यअववित्रभुजेन तथास्ति यथा बजस्य निष्पत्तिर्ववेनास्ति । इयं नि-ष्पत्तिर्वजहझ्ननिष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

यदि दहं अबसमानं भवति तदा त्रिभुजद्वयं समानं भवति । इदं सिध्यति । यदि समानं न भवति तदा न्यूनं भविष्यतीति कल्पिन्तम् । तदा बअभुजात् दहुतुल्यं बवं पृथकार्यम् । पुनर्बतं हझ-तुल्यं पृथक् कार्यम् । पुनर्बकरेखैतद्रेखाद्वयनिष्पत्तौ पृथकार्या । पुनर्वजवतकजकतरेखाः संयोज्याः । बजवतनिष्पत्तेववकरेखानि-ष्पत्तिसाम्येन कतरेखावजरेखयोः समानान्तरभावित्वं निश्चितम् । पुनर्ववतित्रभुजवकजित्रभुजयोः समानत्वमि निश्चितम् । पुनर्ववतित्रभुजं दह्झत्रिभुजस्य समानमस्ति । अवजित्रभुजकवजित्रभुजयोर्निष्पत्तिः

अवकवभुजनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अवजित्रभुमदृह्झित्रिभुजयो-

निष्पत्तिबंअभुजबकभुजयोनिष्य-तितुल्या भविष्यति । इयं निष्य-त्तिबंअभुजबवभुजयोनिष्यत्तिवर्ग-तुल्या भविष्यति । बअभुजदह-



भुजयोरि निष्पत्तिषर्गतुल्या भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

## अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम्।

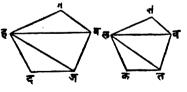
सजातीयपञ्चभुजेषु क्षेत्रेषु तदिषकभुजक्षेत्रेषु वा त्रिभुजानि भवन्ति सजातीयानि च भवन्ति । तत्क्षेत्रयोर्निष्पत्तिस्तत्र-त्यसजातीयभुजनिष्पत्तिवर्गतुस्या भविष्यति ।

यथा अवजदहक्षेत्रश्चवतकलक्षेत्रे सजातीये कल्पिते । तत्र बहहजवललतरेखाः संयोज्याः । आभिर्द्वयोः क्षेत्रयोक्षिभुजानि सजा-तीयानि समानानि च जातानि ।

### अस्योपपत्तिः ।

अकोणझकोणौ तुल्यौ साः । अबझवनिष्यतिः अहभुजझलभुज-निष्यत्तितुल्यास्ति । तसात् अबहत्रिभुजं झवलत्रिभुजं सजातीयं भवेत् । पुनईबजकोणः लवतकोणतुल्यः स्थास्यति । बहभुजवल-

भुजयोर्निष्पत्तिबेअभुजवझभुजनि-ष्पत्तितुल्यास्ति । बजभुजवत- ६ ६ भुजनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् हबजत्रिभुजलवतत्रिभुजे एते द्वे



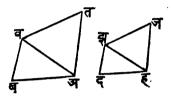
सजातीये भविष्यतः । एवं हजदत्रिभुजलतकत्रिभुजे सजातीये भविक्ष्यतः । सर्वसजातीयभुजानां च निष्पत्तिः समानास्ति । सर्वत्रिभुजानां च निष्पत्तिरेकैवास्ति । तसात् क्षेत्रयोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्यत्तिवर्गो भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ।

अभीष्टरेखायां तादृशं क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति यथान्यस्याभी-ष्टक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात्।

यथा अबरेला जदक्षेत्रं किल्पितम् । अस्य क्षेत्रस्य हझरेलया त्रि-भुजद्वयं कार्यम् । पुनः अबरेलायां अचिह्नोपिर दहझकोणतुल्यो बअ-वकोणः कार्यः । बचिह्नोपिर दकोणतुल्यो अबवकोणः कार्यः । द्वौ

भुजौ तथा वर्द्धनीयौ यथा विचहे मिलतः । तसात् अववित्रभुजदह-झित्रभुजे सजातीये मवतः । पुनः अचिहवचिह्रोपरि जहझकोणजझ-



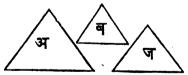
हकोणतुल्यौ द्वौ कोणौ कार्यौ । भुजद्वयं तथा वर्द्धनीयं यथा तिचहे मिलति । तसात् तबक्षेत्रजद्क्षेत्रे सजातीये भविष्यति । इत्येवेष्टम् ।

### अथैकविंशतितमं क्षेत्रम्।

एकक्षेत्रस्य यावन्ति सजातीयानि क्षेत्राणि भवन्ति ता-न्यपि मिथः सजातीयानि स्युः ।

यथा अक्षेत्रजक्षेत्रे बक्षेत्रसजातीये कल्पिते। तदा अक्षेत्रजक्षेत्रे अपि

सजातीये मविष्यतः । कुतः । अ-क्षेत्रजक्षेत्रयोः कोणा बक्षेत्रस्य कोणसमाः सन्ति । तस्मान्मिथः स-



माना भविष्यन्ति । पुनः अक्षेत्रजक्षेत्रभुजा बक्षेत्रभुजैः सहैकनि-ष्पत्तिरूपाः सन्ति । तसाद्भुजानां निष्पत्तिरेकरूपा मिथो भविष्यति । तसाद् अक्षेत्रजक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । इत्येवेष्टम् ॥

### अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम्।

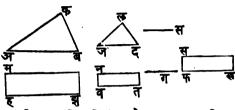
अभीष्टा रेखाः करपनीयाः। तासु रेखासु सजातीयानि क्षे-त्राणि कार्याणि। येषु क्षेत्रेषु क्षेत्रद्धयमेकरूपं भवति तथा का-

Digitized by Google

र्याणि। यदि ता रेखा एकनिष्पत्तिरूपाः स्युक्तदैतानि क्षेत्राण्ये-कनिष्पत्तिरूपाणि स्युः । यदि च क्षेत्राण्येकनिष्पत्तिरूपाणि भवन्ति तदा ता रेखा अप्येकनिष्पत्तिरूपा भविष्यन्ति ।

यथा अबजदह्मवतरेखाः कल्पिताः । कअबक्षेत्रलजदक्षेत्रे एकरूपे

कल्पिते । पुनर्महम्भक्षेत्र-नवतक्षेत्रे अन्यप्रकारके एकरूपे कल्पिते । अब-रेसाजदरेसानिष्पत्तौ तु-



तीया सरेखा कल्पिता । हृझ्ररेखायतरेखयोर्निष्पत्ती तृतीया गरेखा कल्पिता । यदि अवरेखाजदरेखानिष्पत्तिहृझ्यतयोर्निष्पत्तितुल्या चेत् तदा सजातीयवअकक्षेत्रलजदक्षेत्रनिष्पत्तिः अवरेखासरेखानिष्पत्ति- तदा अवरेखाजदरेखानिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तदा अवरेखाजदरेखानिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तसाद् अवरेखासरेखयोर्निष्पत्तिहृझ्ररेखागरेखयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसाद् अवरेखासरेखयोर्निष्पत्तिहृझ्ररेखागरेखयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् कअवक्षेत्रलजदक्षेत्रनिष्पत्तिमृह्झक्षेत्रनवतक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । स्थात् । तसात् अवष्यति ।

पुनरिष यदि क्षेत्राण्येकरूपनिष्यत्तौ भवन्ति अबरेखाजदरेखानि-ष्यत्तिहृं झरेखावतरेखानिष्यतितुत्या न भवित तदा अबरेखाजदरेखा-निष्यत्तिहृं झरेखाफखरेखानिष्यतितुत्या किष्यता। पुनः फखरेखायां सफखक्षेत्रं मह्झक्षेत्रस्य सजातीयं कार्यम्। तस्मात् कअबक्षेत्ररुजदक्षे-त्रयोनिष्यतिर्मह्झसफखक्षेत्रनिष्यतितुत्या भविष्यति । कअबक्षेत्ररु-जदक्षेत्रयोनिष्यतिर्मह्झनवतक्षेत्रनिष्यतितुत्या पूर्वं किष्यतास्ति । तस्मात् सफखक्षेत्रनवतक्षेत्रं समाने सजातीये च भविष्यतः। तस्मा-देतत्क्षेत्रद्वयं समानभुजं भविष्यति । ततः फखरेखा वतरेखासमाना भविष्यति । तसाद् अबरेखाजदरेखानिष्यतिर्द्श्वरेखावतरेखानिष्यत्ति-तुत्या भविष्यति । इदमेवेष्टमासीत् ॥

### अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम्।

एकस्मिन् समानान्तरभुजक्षेत्रे उदरगतकर्णोपरि यावन्ति समानान्तरभुजानि क्षेत्राणि पतन्ति तानि सर्वाण्यपि मिथः सजातीयानि भवन्ति ।

यथा तहक्षेत्रझवक्षेत्रे अजक्षेत्रमध्ये बद्कणींपरि कल्पिते । तदेत-स्रोत्रत्रयं सजातीयं जातम् ।

#### अस्योपपत्तिः ।

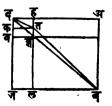
बजदित्रभुजे बजहज्ञयोर्निष्पत्तिर्बजकषस्यापि निष्पत्तिर्बदकद्-योर्निष्पत्तेस्तुत्यास्ति । बअदित्रभुजे बदकद्- व त अ योर्निष्पत्तिर्बअतअनिष्पत्तितुत्यास्ति । बअक-झयोरपि निष्पत्तेस्तुत्यास्ति । ततः अजसेत्र-झवक्षेत्रभुजयोर्निष्पत्तिरेकरूपा जाता । अ- ज व द नयोः कोणा मिथः समानाः स्युः । तसादेतत् क्षेत्रद्वयं सजातीयं जातम् । अनेनैव प्रकारेण अजक्षेत्रहतक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

# अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम्।

एकस्मिन्समानान्तरभुजे क्षेत्रे एकं समानान्तरभुजं क्षेत्रं मध्ये पतितं चेद्रवति तदैतद्वयं सजातीयं चेद्रवति तदोभयोः कोण एक एव भवति । तदा द्वितीयं क्षेत्रं तत्कर्णापतितं भविष्यति ।

यथा हवक्षेत्रं अजक्षेत्रमध्ये पतितमस्ति । दकोण उभयोरेक एव कल्पितः । दझबं कणों भविष्यति । तदा हबक्षेत्रमस्य कणें पतिष्यति ।

यदि कर्णे न पतित तदा दत्तवं कर्णः कल्पितः।
पुनः तकरेखा अदरेखायाः समानान्तरा कार्या।
हक्करेखा लचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया। तसाद् हकक्षेत्रं अजक्षेत्रकर्णे पतितम्। तसाद् अद्भु-



जदह्भुजयोर्निष्पत्तिर्जद्भुजद्कभुजयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । अद-भुजदृह्भुजयोर्निष्पत्तिर्जद्भुजद्वभुजनिष्पत्तितुल्या कल्पिताऽऽसीत् । तसाद् द्वदकभुजौ समानौ भविष्यतः। इदमसंगतम् । तसाद् द्व्यवं कर्णो भविष्यति । इदमेवेष्टमस्माकम् ॥

### अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम्।

यदि समानान्तरभुजक्षेत्रद्वयस्यैककोणश्चेत्समानो भवति तदा क्षेत्रद्वयनिष्पत्तिः क्षेत्रद्वयभुजनिष्पत्तिघाततुल्या भवि-ष्यति।

यथा अजक्षेत्रज्ञसक्षेत्रे जकोणः समानः कल्पितः । पुनर्बजभुजजवभुजो सरलैकरेखायां कल्पितो । हजभुजजदभुजो सरलैकरेखोपिर
कल्पितो । पुनर्दवक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । तत्र बजजवयोर्निष्पत्तिः कल्लयोखुल्या कल्पिता । दजजहयोर्निष्पत्तिर्रुमयोर्निष्पत्तितुल्या कल्पिता ।
तस्मात् कमयोर्निष्पत्तिः कलनिष्पतिल्मनिष्पत्त्योर्षाततुल्यास्ति । अजक्षेत्रज्ञतस्त्रेत्रयोर्निष्पत्तिर्वज्ञवयोर्निहिं

ष्पत्तितुत्यास्ति । कलरेलयोर्निष्पत्तेरपि तुत्यास्ति । तदा जतजझसेन्ययोर्निष्पत्तिर्द्वजजहयोर्निष्पत्तितुत्यलमयोर्निष्पत्त्या तुत्याऽस्ति । तदा अजक्षेत्रजझक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः कमयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । कमयोर्निष्पत्तिर्वजभुजजवनिष्पत्तितुत्यकलनिष्पत्तिद्वजजहनिष्पत्तितुत्यलमर्निष्पत्तिर्वज्यस्ति । तस्मात् क्षेत्रद्वयनिष्पत्तिर्भुजनिष्पत्तिषाततुत्यास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

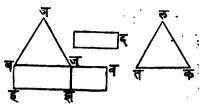
# अथ पङ्विंशतितमं क्षेत्रम् ।

तादृशैकक्षेत्रस्य चिकीर्पास्ति यत्क्षेत्रमन्यक्षेत्रेण समानं भ-वति तदन्यक्षेत्रस्य सजातीयं च भवति ।

यथा अवजक्षेत्रस्य सजातीयं दक्षेत्रेण तुल्यं क्षेत्रं कर्तुमिच्छास्ति ।

अथ बज्रभुजोपरि अबजक्षेत्रतुल्यं बझ्रक्षेत्रं समकोणसमानान्तर-

मुजं कार्यम् । हझरेला वर्द्ध-नीया । पुनर्ज्जझरेलोपरि झव-क्षेत्रं दक्षेत्रतुल्यं कार्यम् । ब-झक्षेत्रझवक्षेत्रे बवरेलाहझरे-



खान्तः पतिते स्तः । तसात् जवरेखा अवक्षेत्रस्य भुजो भवति ।

पुनर्बजजवरेखयोर्निष्पत्तिमध्ये तकरेखेकरूपनिष्पत्तौ कल्पिता । तकरेखोपरि तलकक्षेत्रं अवजक्षेत्रस्य सजातीयं कार्यम्।इदमेवेष्टम् । अत्रोपपत्तिः।

बजजबभुजयोर्निष्पत्तिमध्ये बझक्षेत्रझवक्षेत्रयोर्निष्पत्तिरस्ति । इय-मेव निष्पत्तिबजतकयोर्निष्पत्तेर्वर्गतुस्यास्ति । इयं निष्पत्तिः अबजक्षेत्र-छतकक्षेत्रनिष्पत्तितुस्यास्ति । अबजक्षेत्रं बझक्षेत्रेण समानमस्ति । तसात् तलकक्षेत्रं अबजक्षेत्रसजातीयं झबक्षेत्रेण तुस्यमस्ति । दक्षेत्रे-णापि तुस्यमस्ति । इदमेवेष्टम् ॥

### अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम्।

अर्द्धरेखोपर्य्येकं क्षेत्रं समानान्तरभुजं कार्यं तद्रेखा बहत्ख-ण्डोपरि च समानान्तरभुजं क्षेत्रं तथा कार्यं यथा द्वितीयक्षे-त्रस्य शेषभूतं क्षेत्रं प्रथमक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात् । तदार्द्धरे-खाजनितं क्षेत्रं महत्खण्डजनितक्षेत्रादिषकं भविष्यति ।

यथा अबरेसा किल्पता। जिचिहेऽदिता कृता। पुनर्जशक्षेत्रं जब-रेस्तायां किल्पतम्। ततो जहक्षेत्रं संपूर्ण ह कृतम्। अबरेसायां महत्सण्डं अदं क-ल्पितम्। अस्पोपरि अकं क्षेत्रं तथा कृतं जिल्पतम्। वदा अमक्षेत्रं यथा तच्छेपं बकक्षेत्रं जशक्षेत्रस्य सजातीयं स्यात्। तदा अमक्षेत्रं अकरेत्रादिषकं भविष्यति।

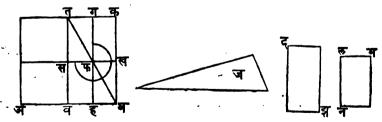
#### अस्योपपत्तिः ।

बमकर्णः संयोज्यः । तत्र हतक्षेत्रं तझक्षेत्रेण तुत्यमस्ति । तझ-क्षेत्रं सकक्षेत्रादिषकमस्ति । तदा हतक्षेत्रं सकक्षेत्रादिषकं भविष्यति । सकक्षेत्रं जकक्षेत्रेण तुत्यमस्ति । तसात् हतक्षेत्रं जकक्षेत्रादिषकं भविष्यति । तदा अतक्षेत्रं जकक्षेत्रे संयोज्यं तदा अकक्षेत्रं भवति । पुनरि अतक्षेत्रं हतक्षेत्रे योज्यं तदा अमक्षेत्रं भविष्यति । इदमर्द्ध-रेखाजनितं क्षेत्रमस्ति । इदमेव महत्खण्डजनितक्षेत्रादिषकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

### अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम्।

अभीष्टरेखाखण्डे तादृशं चतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यं ययाऽभीष्टक्षेत्रेण समानं स्यात् । तद्दितीयखण्डोत्पन्नक्षेत्रमिष्टान्यक्षेत्रेण सजातीयं स्यात् । यत्तुल्यं क्षेत्रं कृतं तत्क्षेत्रमर्द्धरेखोत्पन्नक्षेत्रा-दिधकं न स्यात् । अर्द्धरेखोत्पन्नक्षेत्रमपीष्टक्षेत्रस्य सजातीय-मपेक्षितम् ।

यथा अबरेला कल्पिता । येन क्षेत्रेण तुत्यं कर्त्तुमिच्छास्ति तत्सेत्रं जक्षेत्रं कल्पितम् । इष्टसमानान्तरभुजं सजातीयं क्षेत्रं दृशं कृतम् ।



अत्र अबरेसासण्डोपर्येकं समानान्तरभुजं जक्षेत्रतुल्यं क्षेत्रं कर्त्तव्य-मस्ति। तथा कार्ये यथा द्वितीयलण्डोत्पन्नं क्षेत्रं दशक्षेत्रसजातीयं स्यात्। पुनः अबरेसा विनिद्देऽद्विता कार्या। बचरेस्रोपरि दशक्षेत्रसजातीयं वकक्षेत्रं कार्यम्। पुनः अतक्षेत्रं पूर्णं कार्यम्। यदि अतक्षेत्रं जक्षेत्र-तुल्यं भवति तदाऽस्मदिष्टं सिद्धमेव। यदि अतक्षेत्रं जक्षेत्राङ्भिकं

Digitized by Google

स्यात् तदाऽस्यान्तरतुल्यं दझसजातीयं नमक्षेत्रं कल्प्यम् । दझक्षेत्रस-जातीये वकनमक्षेत्रे निथः सजातीये भविष्यतः । छकोणः तकोणतुल्यः कल्पितः । नलभुजो वतभुजसजातीयः । पुनः तसं लनतुल्यं पृथकार्यम् । तगं लमतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्गहरेला तबरेलायाः समानान्तरा कार्या । सफखरेला अबरेलायाः समानान्तरा कार्या । पुनर्वतकर्णो योज्यः । तसाद् अफक्षेत्रनिष्टमसाकम् ।

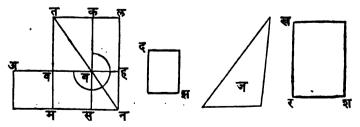
#### अस्योपपत्तिः।

नमक्षेत्रतुत्यं सगक्षेत्रं वकक्षेत्रतुत्यअतक्षेत्रजक्षेत्रयोरन्तरसमान-मस्ति । तसाद् अफक्षेत्रतुत्यं सफखक्षेत्रं जक्षेत्रस्य समानं भविष्यति । तसाद् अबरेखाया अहलण्डोपरि जक्षेत्रतुत्यं अफक्षेत्रं जातम् । हबद्वितीयलण्डोप्युत्पन्नं हखक्षेत्रं दृझक्षेत्रस्य सजातीयं जातम् । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

मुजरूपकल्पितरेखान्तर्गतेष्टरेखोपरीष्टान्यक्षेत्रतुल्यं समा-नान्तरभुजं क्षेत्रं कर्जुमिच्छास्ति। अस्य क्षेत्रस्यैकमुजखण्डमि-ष्टरेखा भवति। इष्टरेखातो यावद्भुजोऽधिकस्तद्धिकमुजोपरि समुखनं क्षेत्रमिष्टान्यसमानचतुर्भुजसजातीयं भवति।

यथा अवरेखा कल्पिता। यस तुल्यं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति तत् जं



किल्पतम् । समानान्तरभुजसजातीयं क्षेत्रं दशं किल्पतम् । तत्र अब-रेखोपरि समानान्तरभुजं क्षेत्रं जक्षेत्रतुल्यं तथा कार्यं यथा अबरेखा-

Digitized by Google

तद्भुजलण्डं भवति । स भुजो यावान् अवरेखातोऽधिको भवति तदुत्पनं क्षेत्रं दशक्षेत्रसजातीयं भवति ।

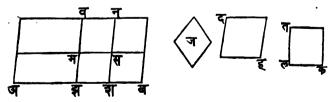
अश्र अबरेखा विचहोपर्यद्विता कार्या । बवरेखोपरि वकक्षेत्रं दश्चक्षेत्रसजातीयं कार्यम् । पुनः खश्चक्षेत्रं जक्षेत्रवक्षेत्रयोयोगतुल्वं कार्य दश्चक्षेत्रस्य सजातीयं च यथा भवति । पुनः खश्चक्षेत्रयकक्षेत्रे सजातीये भविष्यतः । पुनः तकोणरकोणौ समानौ कल्पितौ । पुनः तव- भुजरखभुजौ सजातीयौ कल्पितौ । पुनः तवरेखा तथा वर्द्धनीया यथा तमं रखरेखातुल्यं भवति । तकभुजोऽपि तथा वर्द्धनीयो यथा तलं रश्चतुल्यं भवति । पुनर्मचिह्नलचिह्नयोर्मनरेखालनरेखाअबरेखाकबरेखाकान्तरा कार्या । पुनः क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम्। तसाद् अनक्षेत्र- मिष्टं भविष्यति ।

### अस्योपपत्तिः ।

मलक्षेत्रं खशक्षेत्रतुत्यं जक्षेत्रवकक्षेत्रयोगतुत्यमस्ति। तसाद् अन-क्षेत्रतुत्यं वनकक्षेत्रं जक्षेत्रसमानं मविष्यति। इसक्षेत्रं दशक्षेत्रसजाती-यमविश्वष्टिमित्येवेष्टम् ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

अबरेस्रोपरि समानान्तरमुजक्षेत्रं जक्षेत्रतुल्यं कर्तुमिच्छास्ति यथा अबरेस्रातद्भुजयोरन्तरे दहक्षेत्रसजातीयमेकं क्षेत्रमुत्पचेत । ततः अबरेस्य झिचहोपर्य्यद्विता कार्या । पुनर्वझरेस्रोपरि दहक्षेत्रसजातीयं



बवक्षेत्रं कार्यम् । पुनः अवक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । पुनः कर्त्तव्यक्षेत्रभुजो अबरेखातो न्यूनोऽपेक्षितोऽस्ति वाधिकः । यदि न्यूनोऽपेक्षितोऽस्ति तदा जक्षेत्रं अवक्षेत्रादिषकं न भवतीति निश्चयः । यदि जक्षेत्रं अवसेत्रतुल्यं चेत्तदोत्पन्नमेव । एवं न चेत्तदा अवसेत्रत्रक्षेत्रान्तरं प्राध्मम् । यदि च भुजो अवरेखातोऽधिकोऽपेक्षितो भवति तदोभ-योयोंगो प्राधः । दहक्षेत्रसजातीयं तकक्षेत्रमन्तरतुल्यं योगतुल्यं वा कार्यम् । इदं क्षेत्रं बवक्षेत्रस्य सजातीयं भविष्यति । पुनर्लकोणदकोणौ समानौ कल्पितौ । तलभुजझवभुजौ सजातीयौ कल्पितौ तस्मात् लततुल्यं च वमं प्राध्मम् । लक्कतुल्यं च वनं प्राध्मम् । पुनर्भसरेखा नसरेखा ववक्षेत्रभुजस्य समानान्तरा कार्या । तदा असक्षेत्रमिष्टं जक्षेत्रतुल्यं म-विष्यति । असक्षेत्रभुजअवरेखयोरन्तरे यदुत्पन्नं शवसक्षेत्रं तद् दहक्षे-त्रस्म सजातीयम् ।

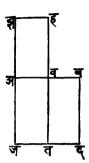
अथ यद्युत्पन्नं क्षेत्रं समकोणं समचतुर्मुजमपेक्षितं तदा अबरेक्षा द्विहेऽद्विता कार्या । यदि जक्षेत्रमद्वितरेक्षावर्गतुल्यं भवति भुजश्च रेक्षातो न्यूनोऽपेक्षितो भवति तदाईरेक्षोपि समकोणसमचतुर्भुजक्षेत्र-मेवेष्टं भविष्यति । यदि तुल्यं न भवति तदा अबरेक्षाईवर्गजक्षेत्रान्त-रतुल्यमेकं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । पुनर्यदि भुजो रेक्षातो-ऽिषकोऽपेक्षितो भवति तदा द्वयोर्योगतुल्यं समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । पुनः समकोणसमचतुर्भुजेकतुल्यम् अबरेक्षाईतः पृथकार्यम् । तद् दहसंज्ञम् । यदि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षाईतः स भुजो न्यूनो भवति तदैवं कार्यम् । यद्वि रेक्षार्थते । कृतः । अहहब्वधातस्य द्ववर्गन्यान्तरं द्ववर्गो भवति । अहहब्वधातस्य द्ववर्गेणान्तरं द्ववर्गो भविष्यति । अहहब्वधातस्य दह्वर्गेणान्तरं द्ववर्गो भविष्यति ।

### अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

इष्टैकरेखायास्तादशखण्डद्वयं कर्तुमिच्छास्ति यथा मह-त्खण्डं तद्रेखालघुखण्डयोर्मध्ये एकनिष्पत्तौ भवति । यथा अवरेखा कल्पिता । अस्यां समकोणसमचतुर्भुजं अद्दक्षेत्रं

Digitized by Google

कार्यम् । पुनः अजरेस्रोपित समानान्तरभुजं अद-क्षेत्रतुत्यं झतास्यं तथा कार्य यथा अजरेसा तद्धज-सण्डं स्यात् । अधिकरेस्रोपर्युत्पन्नं झवक्षेत्रं समको-णसमचतुर्भुजं भवति । तस्मात् अबरेसा विच्छो-परि इष्टविभागा भविष्यति ।



अस्योपपत्तिः ।

तत्र झतक्षेत्रं अद्क्षेत्रतुत्यमस्ति । तसात् झवक्षेत्रं द्वक्षेत्रतुत्यं मिविष्यति । झवक्षेत्रे वद्षेत्रे विच्हस्य कोणद्वयं समानमस्ति । तसात् तवसुजतुत्यअवसुजतुत्यअवसुजतुत्यअवसुजन्। तितुत्या जातास्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

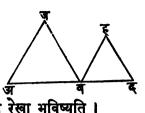
द्वयोखिभुजयोर्भुजद्वयं मिलितं सत्तथाकोणमुत्पादयति यथा प्रथमत्रिभुजस्य प्रथमभुजो द्वितीयत्रिभुजप्रथमभुजेन समानान्तरो भवति । त्रिभुजस्य द्वितीयभुजः प्रथमत्रिभुजस्य द्वितीयभुजेन समानान्तरितो भवति । समानान्तरभुजयोर्नि-ष्पत्तिरपि समाना चेद्रवति तदा तच्छेषभुजौ सरलैकरेखाप-तितौ भविष्यतः ।

यथा अबजित्रभुजबद्दृत्रिभुजयोर्बजभुजबह्भुजाम्यां जबह-कोण उत्पनः। अजभुजश्च बह्भुजस्य समानान्तरः कल्पितः। जब-भुजश्च दृह्भुजस्य समानान्तरः कल्पितः। पुनः अजभुजबह्भुजयो-निष्पत्तिज्ञंबभुजदृह्भुजयोर्निष्पत्त्या समाना कल्पिता । तसात् अबदं सरला रेखा जाता।

अस्योपपत्तिः ।

जकोणहकोणौ समानौ स्तः । यतः प्रत्येकं जबहकोणतुल्यौ स्तः।

कोणद्वयसंबन्धिभुजौ मिथ एकरूपनिष्पत्तौ स्तः । तसात् त्रिभुजद्वयं सजातीयं भवि-ष्यति । अकोणजकोणयोगतुल्यो जबद-कोणो जबअकोणेन साई समकोणद्वय-तुल्यो भविष्यति । तसाद् अवदं सरहैका रेखा भविष्यति ।



#### प्रकारान्तरम् ॥

यदि सजातीयत्रिभुजद्वयमेककोणमुत्पादयति । तस्य कोणस्य भुज-द्वयं स्वसजातीयभुजद्वयस्य समानान्तरितं भवति । तत्र त्रिभुजद्वयस्य मूमी मिलित्वा सरलैकरेखा भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जकोणो जबहकोणेन तुल्योऽस्ति । अकोणश्च हबदकोणेन तु-ल्योऽस्ति । यदि जबअकोणः अकोणजकोणाभ्यां योज्यते तदा त्रि-मुजस्य त्रयः कोणा भविष्यन्ति । अयं जबअकोणो जबहकोणहबद-कोणाम्यां योज्यते । तदा त्रिभुजस्य कोणत्रययोगतुल्यो भवति । त्रिभु-बस्य कोणत्रययोगः समकोणद्वयतुल्योऽस्ति । तदैतत्कोणत्रययोगोऽपि समकोणद्वययोगतुल्यो जातः । तसात् अवदं सरलैका रेखा भवि-ष्यति । इद्मेवासाकमिष्टम् ॥

### अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम्।

यत् त्रिभुजं समकोणं भवति तद्धुजत्रयोपरि यत् क्षेत्र-त्रयं क्रियते तत्कर्णोपरितनक्षेत्रं समकोणसंबन्धिभुजद्वयक्षेत्र-योगतुल्यं भवति । कदा । यदि कोणसंबन्धिमुजद्वयक्षेत्रे कर्णक्षेत्रानुरूपे तत्सजातीये च भवतः।

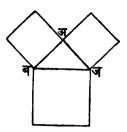
यथा अबजित्रभुजे अकोणः समकोणः कल्पितः । तदा बजक-**र्णक्षेत्रं बअ**भुजअज्ञभुजक्षेत्रयोर्योगसमानं भविष्यति यदि एते क्षेत्रे सजातीये भवतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

बजकर्णीपरि यत्समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं भवति बअमुजोपरि

समकोणसमचतुर्भुजं च यद् भवत्यनयोर्निष्प-त्तिर्बजवअनिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण यर्तिकचित्रिभुजादिक्षेत्रं बजकर्णे भवति बअभुजस्थेन तादृशक्षेत्रेण सजातीयं चेत्तदा तद्वयनिष्पत्तिबीजवअनि-



ष्पत्तिवर्गतुत्या भविष्यति । तसाद् बजकर्णस्य समकोणसमचतुर्भुजं बअभुजस्य च समकोणसमचतुर्भुजमनयोनिष्पत्तिर्बजकर्णस्यित्रमुजा-दिक्षेत्रतादृशबअमुजक्षेत्रनिष्पत्तिरिव भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण बजकर्णसमकोणसमचतुर्भुजअजमुजसमकोणसमचतुर्भुजयोनिष्पत्तिर्ब-जकर्णक्षेत्रअज्ञभुजक्षेत्रनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसाद् बजकर्णस्थसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य बञ्जमुजअज्ञमुजस्थसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य बञ्जमुजअज्ञमुजस्थसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रयोगेन निष्पत्तिर्वजकर्णक्षेत्रबञ्जभुजअज्ञमुजित्रमुजादिक्षेत्रयोनिष्पतितुत्या भविष्यति । बजकर्णस्थसमकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं बञ्जभुजअज्ञमुजसमकोणसमचतुर्भुजयोगेगेन समानं भवति । तसाद् बजक्षेत्रं बञ्जक्षेत्रअज्ञक्षेत्रयोगतुत्यं भविष्यति । इदमेवास्माकिमिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ॥

अविद्वात् अद्वल्नं निष्कासनीयः । बजक्षेत्रस्य निष्पत्तिर्वअ-क्षेत्रेण बजवअनिष्पत्तिर्वगंतुल्यास्ति । बज-बअनिष्पत्तिवर्गो बजबद्दनिष्पत्तितुल्यः । त-साद् बजक्षेत्रस्य वअक्षेत्रेण निष्पत्तिर्वज-बद्दनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एवं बजक्षेत्रजअक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वजज-अनिष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । बजजअनिष्पत्तिवर्गो बजजद्दनिष्पत्तितु- स्योऽस्ति । तसाद् बजक्षेत्रजअक्षेत्रयोनिष्यत्तिर्बजजदयोर्निष्यतितु-स्या भविष्यति । तसाद् बजस्य क्षेत्रस्य बअअजक्षेत्रयोगेन निष्पत्ति-र्बजस्य निष्पत्तिर्बदजदयोगेन या भवति तत्तुल्या भविष्यति । बजं बदजदयोगतुल्यंमस्ति । तस्मात् बजस्य क्षेत्रं बअअजक्षेत्रयोगतुल्यं भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

### अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम्।

द्वयोः समानवृत्तयोः केन्द्रस्थकोणयोः पालिस्थकोणयोर्वा निष्पत्तिस्तच्चापनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अवजवृत्तदह्रसृवृत्तयोः अकोणदकोणौ पालिगतौ वकोण-तकोणौ केन्द्रगतौ कल्पितौ । तस्माद् बजचापहृश्चचापयोर्निष्पत्तिः अकोणदकोणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । वकोणतकोणनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

अवजवृत्ते जकचापं कलचापं वजचापसमानं पृथकार्यम् । दहझ-वृत्ते झमचापं मनचापं हझचापसमानं पृथकार्यम् । पुनर्वकरेखा वल-रेखा तमरेखा तनरेखा संयोज्या । तस्माद् बजचापं जकचापं कल-चापं गुणगुणितबजचापतुल्यमितः । बवलकोणो गुणगुणितबवजको-णतुल्योऽितः । एवं हझचापं झमचापं मनचापं गुणगुणितहझचापतु-ल्यमितः । हतनकोणो गुणगुणितहतझकोणतुल्योऽितः । यदि बल्लचापं हनचापादिषकं स्यात्तदा बवलकोणो हतनकोणादिषको मविष्यति ।

यदि बलचापं हनचापं समं वा हनचापाच्यूनं वा स्याचदा बवल-कोणो हतनकोणसमानो वा हतन-कोणाच्यूनो वा मविष्यति । तसाद् बज्जचापहृङ्गचापनिष्यत्तिर्बकोणतको- णनिष्पित्ततुल्या भविष्यति । अकोणदकोणनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टचे द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । अन्येऽस्मिनाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात- र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति षष्ठकः संगतोऽभूत् ॥ १ ॥

इति श्रीजगन्नायसम्राड्विरचिते रेस्नागणिते षष्टोऽध्यायः समाप्तः ॥ ६ ॥

CALFORNA

#### NOTES.

#### BOOK I.

#### Definitions.

Page 3. धरातकक्षेत्रम्=A superficies. It is further on called धरातकम् and divided into सम or plain superficies and विषम or crooked superficies.

Euclid does not seem to have mentioned crooked superficies. 'Euclid leaves out here to speak of a crooked and hollow superficies, because it may easily be understood by the definition of a plain superficies, being its contrary. And even as from one point to another may be drawn infinite crooked lines, and but one right line, which is the shortest, so from one line to another may be drawn infinite crooked superficies, and but one plain superficies, which is the shortest.' Bil.

समकोण=A right-angle. In the definition of समकोण, the word कान=a perpendicular is taken as one with which the reader is familiar, it being used in astronomical works well known to Sanskrit students in India.

Page 4. विषयकोण=An angle other than a right angle. It means either an acute angle (अञ्चल), or an obtuse angle (अञ्चल), made either by right lines (सरकरेखा), or by crooked lines (विषयरेखा), or by a right line and a crooked line.

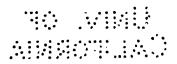
bounded by a right line and a crooked line.

क्षेत्र=A figure. वृत्त=The circumference. वृत्तक्षेत्र=A circle.

Page 5. ques—The circumference. This is the word generally used in the work for the circumference of a circle.

unau-A chord, which is defined as a line which does not pass through the center, but meets the circumference on both the sides and divides the circle into two unequal parts.

Read केन्द्रवा न स्वात in the definition (vide the errata).



न्यूनकोण is synonymous with अस्पकोण and means an acute angle.

Page 6. आयत=An oblong, called a long figure by Bil.

Page 7. समानास्तर रेखा=Parallel lines. The definition omits the most important thing, that parallel lines must be in the same plane. Two lines may not meet even if produced on both the sides and may not still be parallel if they are not in the same plane.

After this definition we have axioms, postulates, and an explanation of certain words used in the work. In Bil's work, postulates are called Petitions or Requests and axioms, Common Sentences. 'The axioms are called in the original Common Notions.' Tod. p. 253.

पा सरका रेखा से = When a straight line, joined with another is a straight line, it looks as one straight line, and not as joined with another straight line (i. e. the two straight lines form one straight line).

वे राज्य प्कादिगुलिता =Those quantities which are multiples (doubles, triples &c.) of the same quantity are equal to one another.

रेखायां धरातके चि°=Understand क्रमेण in the sentence. It is possible to take a point in a line and a line in a superficies.

Page 8. अथ चिद्वं चि°=A point coincides with a point, a straight line with another equal to it, and a superficies with another equal to it.

Here रेखा must be taken to mean सरका रेखा, as it is stated further on बन्न रेखा शब्दस्तन सरकैन रेखा श्रेया.

वे च चिह्ने त°=This is the First Postulate. The next two are the Second and Third Postulates.

सरकरेखाद्वयं भ्र°=Two straight lines cannot enclose a superficies, but two curved lines or a straight line and a curved line can.

यहेबाह्रयं स°=If two straight lines that are not parallel be produced in the direction in which the distance between them is greater, the further they are produced, the greater the distance between them; while if they are produced in the direction in which the distance is less, the further they are produced the

less the distance between them, till at length the two straight lines meet together and then the distance between them goes on increasing.

परिभाषा=Technicality, Terminology.

Bil. gives six Petitions (postulates) as follows:—

- '1. From any point to any point to draw a right line.
- 2. To produce a right line finite straightforth continually.
- 3. Upon any center and at any distance to describe a circle.
- 4. All right angles are equal the one to the other.
- 5. When a right line falling upon two right lines, doth make on one and the selfsame side, the two inward angles less than two right angles, then shall these two right lines being produced at length concur on that part, in which are the two angles less than two right angles.
  - 6. That two right lines include not a superficies.

'It is supposed by some writers that Euclid intended his postulates to include all demands which are peculiarly geometrical, and his common notions to include only such notions as are applicable to all kinds of magnitude as well as to space magnitudes. Accordingly, these writers remove the last three axioms from their place and put them among the postulates; and this transposition is supported by some manuscripts and some versions of the *Elements*.' Tod. p. 253.

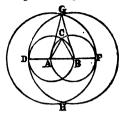
It will be noticed that our text places the last three axioms along with postulates, and the twelfth axiom has a much simpler form. This however, necessitates a series of propositions after the 28th proposition.

'Speaking generally it may be said that the methods which differ substantially from Euclid's involve, in the first place, an axiom as difficult as his, and then an intricate series of propositions; while in Euclid's method after the axiom is once admitted the remaining process is simple and clear.' Tod. p. 263.

Prop. I. p. 8-9.

Campanus shews how two other kinds of triangles, viz. an isosceles triangle and a scalene triangle, can be described upon the given line.

Upon the given line A B, describe an equilateral triangle

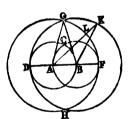


A B C. Produce A B both ways to meet the circumferences of the circles in D and F. From the center B at the radius B D, describe the circle D H G; and from the center A at the distance A F, describe the circle F G H. From the point G, where the two greater circles cut

one another, draw G A and G B to the points A and B. Then the triangle G A B shall be the isosceles triangle required.

B is the center of the circle A C F, therefore B A is equal to B F. Again because A is the center of the circle B C D, therefore A B is equal to A D. But A B has been shewn equal to B F, therefore A D is equal to B F. To each of these equals add A B. Therefore the whole B D is equal to the whole A F. But B D is equal to B G, both being the radii of the circle D G H; and A F is equal to A G, both being the radii of the circle F G H. Therefore A G is equal to B G and the triangle A B G is isosceles.

A scalene triangle may also be described upon the given line A B.



Take any point K in the circumference of one of the two greater circles, so that it may not be in one of the two sections and the line DF may not concur with it when it is produced on either side so as to meet the circumference. Draw the lines AK and BK. Then

A K B shall be the triangle required. The line A K shall cut the circumference of the circle F G H. Let it cut it in L. Now because A L is equal to A G, both being the radii of the circle F G H; and B G is equal to B K, both being the radii of the circle D G H; and A G has been shewn to be equal to B G; therefore A L is equal to B K, and therefore A K is greater than B K. Similarly B K may be shewn to be greater than A B. Therefore the triangle A B K is scalene.

Prop. 2 p. 9.

The point of may be joined with either end of the given line,

i.e. with either wor w, the equilateral triangle www may be described on either side of the line www or www and the two sides of the equilateral triangle may be produced in either direction. This will give rise to eight figures.

Prop. 3 p. 10.

The case in which one of the given straight lines cuts the other in one of the extremities is worth noting.

Let A B and C D be the two given straight lines, of which C D is the greater; and let C D cut A B in its extremity C. With the center A and radius A B, describe the circle B F.



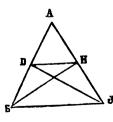
Upon A C describe an equilateral triangle A E C.\* Produce E A and E C to F and G. With the center E and radius E F describe the circle G F. Again with the center C and radius C G, describe the circle G L, cutting C D in L. Now because E F is equal to E-G, because they are the radii of the circle F G, and their parts E A and E C are equal,

they being the sides of the equilateral triangle E A C, therefore the remainder A F is equal to the remainder C G. But A F is equal to A B, because they are the radii of the circle B F. Therefore C G is also equal to A B. But C G is equal to C L, both being radii of the circle G L; therefore A B is equal to C L. Therefore from C D, the greater, C L is cut off, equal to A B, the less, which was required to be done.

Prop. 5, p. 12.

Alternative proof.

Let A B J be the given isosceles triangle. In A B, take any point D. From A J, the greater, cut off A H, equal to A D,



the less (I. 3). Join DH, DJ, and HB. In the triangle ADJ, the sides DA and AJ and the angle A are respectively equal to the sides HA, AB and the angle Ain the triangle AHB. Therefore BH is equal to DJ, and the angle ABH to the angle AJD.

<sup>\* (</sup>L 1). + (I, 4).

Similarly in the triangle BDH, the sides DB and BH and the angle DBH are respectively equal to the sides JH, JD, and the angle HJD in the triangle HJD. Therefore the angles BDH and JHD are equal and the angles BHD and JDH are also equal to one another.\* Therefore the angles BDJ and BHJ are equal.† Similarly in the triangle BDJ, the sides BD and DJ and the angle BDJ are equal to the sides JH and HB and the angle JHB in the triangle BHJ. Therefore the angles ABJ and AJB are equal.\$ Thus the required angles are proved equal.

This proof is given in Bil.'s edition and is attributed to Proclus.

Bil. also gives another demonstration invented by Pappus.

Let ABC be an isosceles triangle and let the side AB be equal to AC. Now understand this one triangle to be as

C B O

it were two triangles and thus reason. Because in the two triangles A B C and A C B, A B is equal to A C and A C to A B, and the angle B A C is equal to the angle C A B, for it is one and the same angle, therefore the base C B is equal to the base B C and the triangle A B C is equal to the triangle A C B; and is equal to the angle A C B and the angle

the angle ABC is equal to the angle ACB and the angle ACB to the angle ABC (I. 4).

Prop. 6 p. 13.

It may be noted that there will be another case in this proposition if the line equal to an an may be taken from the point an instead of from an. It may be then demonstrated as follows:—

Make आ द equal to आ व (I. 3). Join व द. Produce व आ to ह

<sup>\* (</sup>I. 4). † (3 Ax.). \$ Because the angles DBJ and HJB are equal (I. 4).



and make a g equal to a sq (I. 3), and join sq g.

Now in the triangles of a sand a sag, the sides of and sag are equal to the sides grand and an and the included angle of sag is equal to the included angle grans. Therefore the triangle of a sais equal to the triangle grans (I. 4). The less equal to the greater, which is absurd.

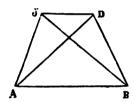
Prop. 7. p. 13.

In the enunciation the word qua is used in the sense of sized extremities.

The proposition is enunciated and proved as follows:—

The straight lines drawn from the extremities of one straight line\* can meet in one point and never in another.

From the extremities A and B (of the straight line A B),



are drawn the straight lines A J and B-J. They meet in J. If it be assumed that two straight lines equal to them meet in another point, then draw A D equal to A J and B D equal to B J, meeting it in D. Join J D.

Now the angle A J D is equal to the angle A D J,† because A J is equal to A D. But the angle B J D is less than the angle A J D. Then the angle B J D shall be less than the angle A D J also. Again the angle A D J is less than the angle B D J. Then the angle B J D shall be much less than the angle, B D J. But these angles are equal; because the sides B D and B J are equal. This is absurd, because two equal angles have become unequal. Therefore the straight lines A J and B J\$ cannot meet in any other point than in J.

In Bil.'s edition the proposition is enunciated as follows:-

If from the ends of one line be drawn two right lines to any point, there cannot from the self-same ends on the same side be drawn two other lines equal to the two first lines, the one to the other, to any other point.

<sup>\*</sup> Scil. on the same side of it.  $\dagger$  ( I. 5 ). \$ Or straight lines of equal length drawn from A and B.

Only the first case of the proposition, the one that is given in the Sanskrit text, is proved in Bil.'s edition. The other case in which the vertex of one triangle falls within another is attributed by Bil. to Campanus.

Bil. has the following note on this proposition:—

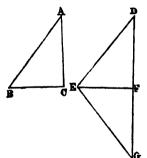
'In this proposition, the conclusion is a negation, which very rarely happens in the mathematical arts. For they ever for the most part use to conclude affirmatively and not negatively. For a proposition universal affirmative is most agreeable to sciences, as saith Aristotle, and is of itself strong and needeth no negative to its proof. But an universal proposition negative must of necessity have to its proof an affirmative. For of only negative propositions, there can be no demonstrations. And therefore sciences using demonstration conclude affirmatively and very seldom use negative conclusions.'

Greg.'s edition also gives only the case mentioned in the Sanskrit text.

Prop. 8.

Philo and others demonstrate this proposition without the help of the seventh proposition as follows:—

Let A B C and D E F be two triangles of which the sides A B



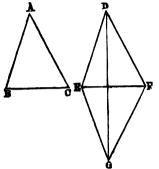
and A C are respectively equal to the sides D E and D F, and the base B C is equal to the base E F. Then the angle B A C shall be equal to the angle E D F. Place the two triangles A B C and D E F in one and the same plain superficies. Apply the triangle A B C to the triangle D E F in such a way that the base B C may coincide

with the base E F, the triangle D E F may be on the other side of the right line E F, and the vertex G may fall opposite to the vertex D. This can be done in three ways. Thus there arise three cases.

In the first case the line F G falls directly into the line D F. Now because D E is equal to E G, therefore the angle E D F is equal to the angle E G F (I. 5). Secondly let not F G fall directly, but make, with the line D F, an angle within the figure.

Join D G.

Now because D E is equal to E G, therefore the angle ED G

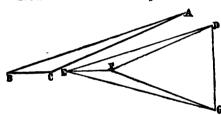


is equal to the angle E G D (I. 5). Similarly because D F is equal to F G, therefore the angle F D G is equal to the angle F G D (I. 5). Therefore the whole angle E D F is equal to the whole angle E G F.

Thirdly let F G make with D F an angle without the figure.

Join DG.

Now because D E is equal to E G, therefore the angle E D G

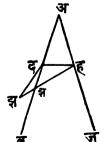


is equal to the angle
E G D (I. 5). Again because D F is equal to FG, therefore the angle FD G is equal to the angle
F G D (I. 5). But the
whole angle E D G has

been proved equal to the whole angle E G D, and the part F D G to the part F G D. Therefore the remaining angle E D F is equal to the remaining angle E G F.

Prop. 9 p. 15.

An objection may be raised that the point st, the vertex of the



equilateral triangle द द्वा है, may fall within the line क्षा or outside it. Both these objections are answered in the text.

The point of must be within the space included by the right lines of and of of.
Why? If it is not within this space, it must be on one of the lines or outside the space between the two lines as in the marginal figure. Then the angles of of of of the lines are of the marginal figure.

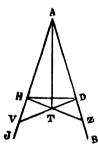
shall be equal.\* But the angle we get is equal to the angle we get.† Thus if the point on the side we get, the whole angle get and its part get are equal. This is absurd.

If the point we be outside the side wa, then the angle was shall be greater than the angle was. It shall also be greater than the angle as so, because the angles was and as we are equal. But the greater angle was is equal to the angle as w.\* Therefore the part as we is greater than the whole as who is absurd; because a part can not be greater than the whole. Therefore the point we must be within the space included by the two arms.

This objection is noticed in Bil.'s edition in the following words:—

'Here against this proposition may of the adversary be brought an instance. For he may cavil that the head of the equilateral triangle shall not fall between the two right lines but in one of them, or without them both.'

Alternative proof of Prop. 9.



In the line D B, take any point Z. Make H V, equal to D Z.\$ Join Z H and V D. Let T be the point where they intersect each other. Join A T. Then this shall bisect the angle A.

Proof of this.

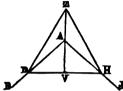
As proved in Prop. 5, the angles Z H D and V D H are equal. Therefore D T is equal to H T.\*\* Therefore the triangle D-

A T is equal to the triangle H A T." Therefore the Angle A is bisected.

Note that in this proposition it is not necessary that the equilateral triangle which is described on  $\overline{\epsilon}$  should be described on the other side of it, remote from  $\overline{\epsilon}$ . It may be

<sup>\*</sup> The triangle FTE being equilateral. + (I. 5). ‡ (I. 5). ¶ 'An instance is an objection or a doubt, whereby is letted or troubled the construction or demonstration, and containeth an untruth or an impossibility; and therefore it must of necessity be answered unto and the falsehood there of, made manifest.' Bil. § (I. 3). \*\* (I. 6). " (I. 8).

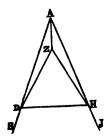
Let B A J be the given rectilineal angle. It is required to bisect it.



In AB, take any point D. Make AH equal to AD (I.3). On DH describe the equilateral triangle DZH (I.1). Join ZA and produce it to meet DH in V.

In the triangles DZA and HZA, the two sides DZ and ZA are equal to the two sides HZ and ZA, and the base DA is equal to the base HA. Therefore the angle DZA is equal to the angle HZA (I.8). Again in the triangles DZV and VZH, the two sides DZ and ZV are equal to the two sides HZ and ZV, and the angle DZV is equal to the angle HZV. Therefore the base DV is equal to the base HV (L4). Again in the triangles ADV and AVH, the two sides AD and AV are equal to the two sides HA and AV and the base DV is equal to the base HV. Therefore the angle DAV is equal to the angle VAH (I.8).

The third case is as under:-

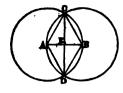


In this case the equilateral triangle DZH falls within the triangle ADH. In the two triangles ADZ and AZH, the angles DAZ and HAZ are equal (1.8).

Prop. 10 p. 16.

Another way of bisecting a given straight line is as under:—

Let A B be the given straight line. It is required to bisect it.



From the center A and the radius A B. describe the circle B C D, and from the center B and the radius B A, describe the circle A C D and join the intersectionpoints C and D. Join also A C, A D, B C and B D. Let C D cut A B in E.

In the triangles A C D and B C D the angle A C D can be proved to be equal to the angle B C D (I. 8), and then in the triangles A C E and B C E, the base A E can be proved to be equal to the base B E (I. 4).

Prop. 11 p. 18.

Alternative proof.

It is required to draw a straight line at right angles to we from the point a.

In the right line of a, take the point of. Make of a equal to wa. From the point a, draw the straight line ar at right angles to wa; and from the point g, draw ह जा at right angles to आ इ. Bisect the angle of or by the right line

sa a, and the angle sa a a by the right line are. § Then the point g is the point where the lines a g and g g meet. Again make of a equal to a gal and join of a. This shall be at right angles to a a.

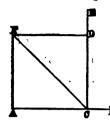
Proof.

In the triangle of or of, the arms of or and of of and the angle अ अ व are respectively equal to the arms च द and द इ and the angle was in the triangle was. Therefore the angle व अ आ is equal to the angle ह आ द.\$ But ह आ द is a right angle. Therefore the angle a wa is also a right angle. Therefore the line was required to was, which was required to be done.

This alternative proof is simply a particular case of the proposition in which a straight line is drawn at right angles to a given straight line from a point within it, the point being one of the extremities of the given straight line.

<sup>\* (</sup>Preceding case). § (I. 9). ¶ (I. 3). \$ (I. 4).

Bil. mentions this case and proves it in almost a similar His proof is as under:manner.



Let A B be the given right line and A be the given point in it. It is required to draw a straight line at right angles to A B from the point A.

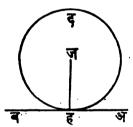
In A B, take any point C. From C draw CE at right angles to AB. From CE cut off CD equal to CA (I.3). Bisect the

angle A C D by the line C F (I. 9). From the point D draw DF at right angles to CE, meeting CF in F. Join FA. Then the angle at A is a right angle. Because DC is equal to C A and C F is common to the two triangles D C F and A C F and they contain equal angles at C, therefore the angle C D F is equal to the angle C A F (I. 4). But the angle C D F is a right angle (Con.); therefore the angle CAF is also a right angle. Q. E. F.

Prop. 12 p. 19.

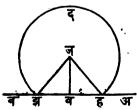
By अभीहरेलायास we should understand a straight line of unlimited length, to ensure that it shall meet the circle.

Alternative proof.



In the right line of take any point g. Join g s. Making sq the center with the radius as, describe a circle इ. If the beginning and the end of the circle be in g,\* then the line a g is a perpendicular. The proof of this we shall give in the Third Book.+

If the circle does not end in g, but stops with g; then



bisect the line grain the point g. Join the right line of a. This is a perpendicular. The proof of this is as shewn before (i. e. as given in the first case in the text).

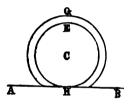
These two cases arise by not stick-

i. e. if the circle touches the line ♥ in €. + (III. 17). ‡ i. e. if the circle cuts the straight line of in the points of and .

ing to the words 'अवरेखादितीयदिशि द्विद्धं कार्यम्' p. 18 l. 19-20; but by taking the point in the given right line.

Bil. notices both these cases:—'There may be in this proposition another case. For if it be so that on the other side of the line AB, there be no space to take a point in but only on that side wherein is the point C\* &c. The first case where the circle touches the given right line is thus proved:—

'If it so happen that the circle which is described do not cut



the line but touch it, then taking a point without the point E, namely the point G, and making the center C, and the space C G, describe a part of the circumference of a circle, which shall of necessity cut the line A B.' Then the

case will be similar to the one in the text.

Prop. 13. p. 20, l. 13.

एतत्समकोणद्वययोगः=The sum of these angles made by right lines. समकोण is here equal to समरेखाजनितकोण.

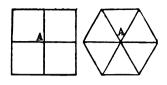
Prop. 15. p. 21.

'Thales Milesius, the philosopher, was the first inventor of this proposition, as witnesseth Eudemius, but yet it was first demonstrated by Euclid.' Bil.

Bil. notes that the corollary to Prop. XV., namely if two straight lines cut one another, they make four angles equal to four right angles, gave great occasion to Pithagoras to find out the wonderful proposition, which is as under:—

'Only three kinds of figures of many angles, namely, an equilateral triangle, a right-angled figure of four sides, and a figure of six sides having equal sides and equal angles, can fill the whole space about a point, their angles touching the same point.'

<sup>\*</sup> Corresponding to win the text.



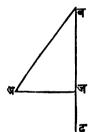


Prop. 16 p. 22.

After having proved the proposition the author makes the following remarks:—

From this it is also known that if two right lines drawn from the same point intersect a third right line, then the two angles formed on the same side of the lines shall never be equal. The direction here is to be taken from the lines drawn from the point.

From the point of are drawn the lines of a and of a and



they meet the line a q in the points a and a. Then the angles was and wat, formed in the same direction, shall not be equal. Because the triangle was is formed by the meeting of the three lines (wa, wa, and as). The exterior angle was is greater than the angle was. This is proved. Therefore what is stated is proved.

This is in fact another way of putting prop. 16. Two corollaries follow this prop. as mentioned in Bil.

1. It is not possible that from one and the self-same point should be drawn to one and the self-same right line, three equal right lines.

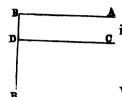


A B, A C, and A D, drawn from the same point A to the right line B D, can not be equal.

For if A B is equal to A C, the angle A B C shall be equal to the angle A C B (I. 5). Similarly if A B be equal to A D, the angle A B D shall be equal to the angle A D B (I. 5). But the angle A B D has been proved equal

to the angle A C B. Therefore the angle A C B is equal to the angle A D B or A D C. This is absurd (I. 16).

2. If a right line falling upon two right lines do make the outward angle equal to the inward and opposite angle, these right lines shall not make a triangle.



Though this is given as a Cor. by Bil., it is really the converse of the prop.

Prop. 17. p. 23.

This prop. may also be demonstrated without producing any side of the given triangle.



In B C, take any point D. Join A D.

The angle A D C is greater than the angle A B D (I. 16) and so is the angle A D B greater than the angle A C D. Therefore the two angles A D B and A D C are together greater than the angles A B C and A C B. But the angles A D B and A D C are together

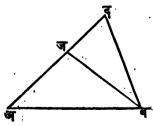
equal to two right angles (I. 13). Therefore the angles A B C and A C B are together less than two right angles.

Bil. mentions the following Cor. to this prop.:—

From one and the same point to one and the self-same right line can not be drawn two perpendicular lines.

Prop. 18 p. 24.

Alternative proof.

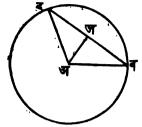


Produce the right line was to the point a. Make wa equal to as a. Join a w. The angles as a a quant and as a second are second. But the angle was as. Therefore the angle as a second as a

Again the angle was is greater than the angle was sufficient that the angle was greater than the angle was sufficient and sufficient than the angle was sufficient to the sufficient than the sufficie

<sup>\* (</sup>I. 8). + (I. 5). ‡ (I. 16).

Another alternative proof.

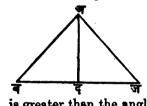


With the center ar and the radius er a describe the circle a a. Produce the line was to meet the circumference in z. Join w z.

In the triangle of a the angles and are equal.\* But the angle er ar is greater than the angle

अदत्र Therefore it is also greater than the angle अवद. Q. E. D.

Prop. 20 p. 26. Alternative proof.

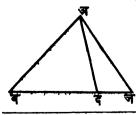


Bisect the angle or by the right line संद.! Then the angle संद ज is greater than the angle z w z.\$ But the angle Tag is equal to the angle द स ज. Therefore the angle अ द आ is greater than the angle of et a. Then the side, of of shall be greater than the side of 7.5 Again the angle of 7 is greater than the angle of wall But the angle of was is equal to the angle www. Therefore the angle war is greater than the angle war. Therefore the side was is greater than the side Therefore the sum of two greater sides is greater than This was what we wished.

Note that in this alternative proof, the proposition is proved without producing any of its sides.

This alternative proof is noticed in Bil.'s edition.

Another alternative proof.



the third.

If the sum of war and war be not greater than a s, then it must be either equal to it or less than it. Make च ह equal to ब अ.\*\* Join आ ह.

The remainder a shall be either equal to we or greater than it.

<sup>\* (</sup>I. 5), † (I. 16), † (I. 9), \$ (I. 16), ¶ (Cons.), § (1. 19), || (I. 16). •• (I. 8).

be equal to it, the angles ज अ द and ब अ द, shall be equal to the angles ज द अ and ब द अ respectively.\* But the angles ज द अ and ब द अ are together equal to two right angles.† Therefore the angles ज अ द and ब अ द shall be equal to two right angles. This is absurd. Because one angle of a triangle is not equal to two right angles.\$

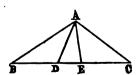
If the line आह be greater than the line आश, the angle आश इ shall be greater than the angle आह आ." Then the angle आश इ shall be greater than the sum of the angles आह इ का and आह आ. But these are equal to two right angles. Therefore the angle आश इ is greater than two right angles. This is absurd.\*\*

In this alternative proof, which is reductio ad absurdum, it is assumed that one angle of a triangle can not be equal to two right angles. This follows from the 17th Prop. in which it is proved that any two angles of a triangle are together less than two right angles.

Bil. makes the following note on this proposition:—

'Epicurus and such as followed him derided this proposition, not counting it worthy to be added in the number of propositions of Geometry for the easiness there-of, for that it is manifest even to the sense. But not all things manifest to sense are straightway as manifest to reason and understanding. It

If possible, let A B and A C be together less than B C. Make B D equal to



A B and E C equal to A C (I. 3). Then the angles B A D and B D A are equal and so also are the angles E A C and E C A (I. 5). But the angle B D A is greater than the angle D A C and therefore greater than the angle E A C (I. 16), and similarly the angle C E A is great-

<sup>\* (</sup>I. 5). † (I. 13). \$ This case can be proved in another way also. The exterior angle অব্যাঃ greater than the interior and opposite angle অব্বা
(I. 16). Similarly the angle ব্ৰা
is greater than the angle অব্যা
Therefore the angles অব্যা and অব্যা
and অব্যা

But they are equal to them (I. 5). This is absurd. "(I. 18).

(I. 18). \*\* The second case may also be proved as under:—

er than the angle B A E and therefore also greater than B A D (I. 16). Therefore the angles B D A and C E A are together greater than the angles B A D and C A E. But they have been proved equal to them. This is absurd,

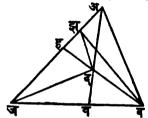
pertaineth to one who is a teacher of sciences by proof and demonstration to render a certain and undoubted reason, why it so appeareth to the sense and in that only consisteth science.'

Tod. has a similar note from Proclus. Vide Tod.'s 'Elements of Euclid.' p. 259.

Prop. 21 p. 27.

Alternative proof.

If the sum of a and a m be not less than the sum of a m



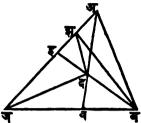
and so so, it must either be equal to it or greater than it. Now either of the two lines so a so and so so is not less than either of the two lines so and so so. If it is, let it be assumed that so so less than so so. Cut off so so equal to the

difference between we and was.\* †Then the point we shall not coincide with the point we. For if it does, then the sum of we we and we shall be equal to we. Therefore the sum of we we and we shall be less than the line we. This is absurd,\$ because the sum of the two sides of a triangle is greater than the third. Again the point we shall not fall within the line we we. For if it falls, then the sum of we and we shall be much smaller than we,\$ which is absurd. Therefore the point we shall be in the line we we. Join we want we.

Now the line ब द, which is equal to the sum of the lines ब ब and ब झ, is greater than ब झ. Therefore the angle ब झ द

<sup>\* (</sup>I. 3). It is argued that the sides बद and द ज, if not greater than ब अ and अ ज, must be either equal to them or less than they. In either case ज द may or may not be less than either अ ज or अ ब. Let it be less than ज अ. Then द ब must be greater than अ व (because ज द and द व are together equal to or greater than अ ज and अ ब and ज द is less than अ ज). Make अ स equal to बद्धा + Before this, seil. 'Produce ब द to meet अ ज in द.' ३ अ श = बद्धा - बद्धा

is greater than the angle a q q.\* When a q is equal to the sum of q a and a q, then a q shall be equal to or greater than



ज झा † Therefore the angle ज झा द shall be equal to or greater than the angle ज द झा शि ज द का द shall be equal to the angle ज द झा . If ज द be greater than ज झा, then the angle ज द झा a shall be greater than the angle ज द झा. And

then the angle way shall be greater than the sum of the angles way and way shall be greater than the sum of the angles way and way is greater than two right angles, and the angle way a also shall be greater than the sum of two right angles. This is absurd, because one angle of a triangle is much less than the sum of two right angles.

Again if the side we be not less than the side way, and the line way be not less than the line way, then we and we shall be equal to or greater than we and way. Join we way. As was proved in the first case, the angle way way be proved to be equal to or greater than the sum of the angles we way and we way. It is absurd in both the ways. Because the sum of the angles we way and we way is greater than two right angles, and the angle way is one angle of a triangle and has become equal to or greater than two right angles. This is absurd. Because it is a rule that in a triangle the sum of any two angles must be less than two right angles. Therefore the sum of the lines we want way.

Now, the line अन् should be produced to the point आ. Then the angle अन् द is greater than the angle अन् द ् and the angle अन्द न is greater than the angle अन्द ् Therefore the angle अन्द न is proved to be greater than the angle अन्द आ आ. This is just what we wished.

Page 29 l. 2 अयं समकोणद्वयादधिको जातः-

If should rather have been put as अयं समकोणद्वयेन तुस्यस्तस्माद्-धिको वा जातः

<sup>\* (</sup>I. 18). † Because वद्+जद is equal to or less than अव+अज (by assumption). ¶ (I. 5 and I. 18). \$ Because the angle वश्च has been shown to be greater than the angle वदस. § (I. 16).

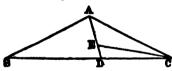
Note that if straight lines are drawn from both the extremities of a side of a triangle to a point within the triangle, then alone are they less than the other two sides of a triangle and contain a greater angle. If, however, one straight line is drawn from one extremity of a side of a triangle and the other from any point in the same side, to a point within the triangle, these two are not necessarily less than the other two sides of the triangle. They may sometimes be greater than the other two sides of the triangle and may sometimes contain a smaller angle.



Let ABC be a right-angled triangle. Take any point D in BC and join AD.

In the triangle ABD, AD is greater than AB (I. 19). Cut off DE equal to AB (I. 3). Bisect AE in F (I. 10) and join FC.

In the triangle A F C, A F and F C are together greater than A C (I. 20). But A F is equal to F E (Con.), therefore F C and F E are together greater than A C. To each of these unequals add E D or A B which is equal to E D. Then F C, F E, and E D are together greater than A C and A B. Q. E. D. Secondly, let A B C be an isosceles triangle of which the



base B C is greater than either of the two equal sides A B and A C. Make B D equal to A B (I. 3). Join A D. In A D, take

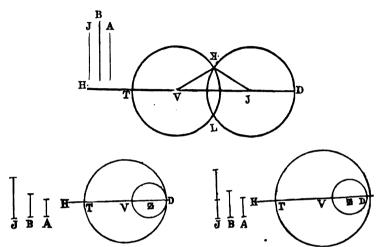
any point E. Join E C. Then the angle C E D shall be less than the angle B A C.

A B is equal to B D (Con.). Therefore the angle B A D is equal to the angle A D B (I. 5). But the angle A D B is greater than the angle C E D (I. I6). Therefore the angle B A D is also greater than the angle C E D. Much more therefore is the angle B A C greater than the angle C E D. Q. E. D.

Prop. 22 p. 29.

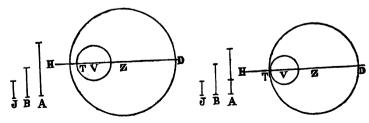
After having proved the Pro. the author observes as follows:-

If we are asked why the three given lines are so taken that any two of them are together greater than the third, we have to remark that it has already been demonstrated that the sum of any two sides of a triangle is greater than the third side. It is therefore that the two circles cut each other. If the sum of A and B be not greater than J, then the line V T shall be either equal to or greater than V D. Then the circle K T L shall make the circle K D L fall within itself. It will touch

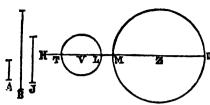


the circle K D L in the point D, when V T is equal to V D. It will go beyond D when V T is greater than V D. It will not meet the other circle again.

If the sum of the lines B and J is not greater than A, then the circle K D L shall make the circle K T L fall within it. Why? If D Z be equal to Z T, then the circle D K L shall touch the other circle in the point T. If D Z be greater than Z T, then the circle D K L shall pass beyond the point T. Then too the two circles shall not meet.



Again if the sum of the lines A and J be not greater than the line B, then the line Z V shall be equal to or greater



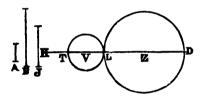
than the sum of the lines VT and ZD. Then too the circles shall not meet. Thus then one circle shall not make another fall within it, but

the two circles shall stand separate if V Z is greater than the sum of V T and Z D.

On this proposition Bill. observes as follows:—

'In this proposition the adversary per adventure will cavil that the circles shall not cut, the one the other (which thing Euclid putteth them to do).' He then proves that the circles must cut one another as follows:—

If the circles do not cut one another, they will either touch



one another or shall be distant, the one from the other. If possible let them touch one another. Then because T V is equal to V L and L Z to Z D, they being the radii

of the circles, therefore T V and Z D are together equal to V Z, that is, A and J are together equal to B, which they are not (Hyp.). Therefore the circles cannot touch one another.

Nor can they be distant from one another. If possible, let them be distant from one another. Then because T V is equal to V L and M Z is equal to Z D, they being the radii of the circles, therefore T V and Z D are together equal to V L and M Z. But V L and M Z are together less than V Z. Therefore T V and Z D are together less than V Z, which they are not (Hyp.). Therefore the circles shall not be distant from one another. They must therefore cut one another. Q. E. D.

Prop. 24 p. 31.

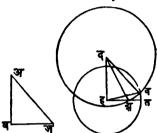
In this proposition there are three cases; for the line gramay fall either above gram or on it or under it. The first case is proved first and the second and third cases are given as an alternative proof; because Euclid gave only one case, viz., that in which grafalls above the line gram.

The third case may be proved without joining a st and producing a and a st to st and a. For a st and st st are together less than a a and a st (I. 21). But a st is equal to a a (Con.). Therefore a st is greater than st st. But a is equal to a st. Therefore a st is greater than st st. Q. E. D.

Prop. 25 p. 33.

Alternative proof.

With the center z, at the radius z z, describe the circle z z.



Produce g u to a. Make g a equal to a u.\* Again with the center g and radius g a, describe the circle a u. The circles intersect one another in the point u. Draw the lines q u and g u. Then the three sides of the

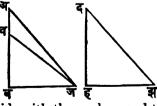
triangle इ द व are equal to the three sides of the triangle व अ आ.
The angle इ द व is equal to the angle व अ आ.† But the angle इ द व is greater than the angle इ द झ. Therefore the angle द व अ आ is greater than the angle इ द झ. Q. E. D.

This is a direct proof and is similar to that of Mechanicus, mentioned by Bil., though it is less complicated than that of Mechanicus.

Prop. 26 p. 35.

Alternative proof.

If of a is placed on a a, then the side of a shall fall on the



side a st and the side a st shall fall on the side a st. Because the angle a is assumed to be equal to the angle a and the angle a to and the side as a to the side a st. Thus the angle a shall cointing the stide at the stide a

cide with the angle wand the triangle with the triangle.

Again if the side was is assumed to be equal to the side was and the angle was be placed on the angle wand the line was on the line was, then the point was shall coincide with the point was.

<sup>\* (</sup>I. 3). + (I. 4).

Then the angle  $\mathbf{z}$  shall fall on the angle  $\mathbf{z}$ . If it does not fall on it, it shall fall on some other point, as on the point  $\mathbf{z}$ . Then the angle  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  shall be equal to the angle  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$ . This is absurd. Therefore the angle  $\mathbf{z}$  shall fall on the angle  $\mathbf{z}$  and the angle  $\mathbf{z}$  on the angle  $\mathbf{z}$ . Then the two triangles are equal. This is just what we wished.

Prop. 29 p. 37.

The proof of this proposition depends upon eight propositions. The first of these is as follows:—

Of all the straight lines that can be drawn from a given point on a given straight line, the perpendicular is the shortest.



Let we be the given point and we the given straight line. From the point we, draw the perpendicular we we. Then this line shall be the shortest of all the lines.

Proof.

Draw the line was from the point wa. Then was is a triangle formed. The angle was is a right angle. Then the angle was is an acute angle. Therefore the side was is less than the side was. This is just what we wished. Prop. II.

If two perpendiculars on a line be equal and if a straight line should be drawn on the top of these two perpendiculars, then the angles formed at the point where the perpendiculars meet the line at the top shall be equal.

Let equal perpendiculars आ ब and ज द be drawn on ब द. Let आ ज be drawn, joining their tops. There two angles are formed. These angles, ब आ ज and द ज ज, shall be equal.

Proof.

Join mag and man. They meet in g. Then in the triangle mag, the sides mag and mag and the angle mag are equal to the sides mag and man and the angle mag in the triangle mag. Therefore the sides mag and man are equal, and the angles mag and mag are equal and the angles mag and

<sup>\* (</sup>I. 17). † (1. 19).

<sup>&</sup>amp; The enunciation may be better worded as follows:--

The line joining the free extremities of two equal perpendiculars to a given straight line makes equal angles with the perpendiculars.

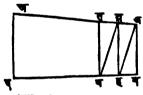
Thus in the triangle हुन्द, the angles अ इन्द्र and हुन्द are equal. Then the sides are and हुन्द are equal. Therefore the sides are and जह are equal. Thus in the triangle are are sides are and हुन्द are

equal, therefore the angles g w w and g w w are equal. But the angles g w w and u w w w have already been proved to be equal.

Therefore the angles a want and a war are proved equal. This is just what we wished.

Prop. III.

If two perpendiculars on a line be equal and if a straightline be drawn, joining their tops (free extremities), then the angles formed by this line with the perpendiculars shall be right angles.

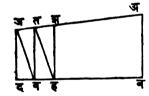


On the line q are drawn the perpendiculars m and m q and m m is also joined. Then the angles m m and q m m are equals and shall be right angles.

Why?

<sup>\* (</sup>I. 4). + (I. 6). ¶ (3. ax.). ‡ (I. 5). \$ (2. ax.). § (Prop. 11). (I. 11). \*\* (1. 16). " (1. 11). \* (I. 16).

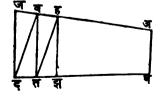
at right angles to a g.\* Other perpendiculars should be similarly drawn. From the points w, w, and w, the perpendiculars drawn on a g are w a, m g and a g. Of these each succeeding line shall be greater than the preceding line and ar a shall be the smallest of all. Why? Because in the triangle are the angle wis a right angle, therefore the angle wis an acute angle + Therefore the side or wis less than the side or with Similarly in the triangle of gran, the angle of is a right angle, therefore the angle a is an acute angle. Therefore the side ar r is less than the side r s. Similarly the side r s shall be less than the side of a and of a less than a a. The side of a is less than we, we less than gran, and gran less than gran. Thus each succeeding line becomes greater than the preceding line. The distance of a s from a becomes greater in the direction of a and less in the direction of ar.



Again if the angle द ज अ is also an obtuse angle, the distance of the line अ ज from the line ब द may be similarly shewn to be greater in the direction of w. But it has already been proved that the distance in the direction of a becomes less. This is

absurd, being inconsistent. If the angles a and a are acute angles, then also perpendi-

Œ



culars should be drawn as in the preceding case. || The first perpendicular should be drawn from the point on war. These perpendiculars shall be between the lines of and of a. These of a. हज, and द त shall be each less than the preceding one. The line ar ar shall be nearer the line ■ c in the direction of s and further from it in the direction of ar.

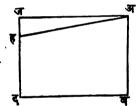
<sup>\* (</sup>I. 11). † (I. 17). § (I. 17). ¶ (I. 19). ‡ (I. 19). In this case they are drawn to the opposite side.

Again perpendiculars should be drawn from the point x. Thus in the way described above the line x x shall be nearer to the line x x in the direction of x and further from it in the direction of x. Thus one and the same line becomes further from and also nearer to another line in the same direction. This is absurd, being inconsistent. Therefore it is proved that the angles x and x are right angles. This is just what we wished.

Prop. IV.

The opposite sides of a right-angled quadrilateral figure are equal.

In the right-angled quadrilateral figure of a a, the sides of a and a a shall be equal. If they are not equal, one of



them must be greater than the other. Let we be the greater side. From it cut off grequal to we. Join we gard the the angles we want and we we shall be right angles. Because the perpendiculars we and greater equal. But the angles we want was a we are

assumed to be right angles. Therefore the angles य अ ज and य अ ह are equal. But the angle य अ ह is a part of the angle य अ ज. This is absurd. Similarly the exterior angle अ ह द of the triangle अ ज ह is equal to the interior angle अ ज द. This is also absurd. Therefore the sides अ व and ज द are equal. This is just what we wished.

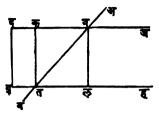
Prop. V.

If two perpendiculars be drawn to a line and a straight line be drawn across the perpendiculars, of the four angles made by the line with each perpendicular, an angle made in one direction (of the line) by one perpendicular shall be equal to the angle made in the other direction (of the line) by the other perpendicular, the exterior angle made by one perpendicular shall be equal to the interior angle (interior and opposite angle on the same side of the line) and the interior angles (on the

<sup>\* (</sup>I. 3). † (Prop. 1II.). ‡ i. e. the alterate angles shall be equal.

same side of the meeting line) made by the two perpendiculars shall be together equal to two right angles.

To the line झ द are drawn the perpendiculars इ झ and ज द



and the line we falls on them. Then the (alternate) angles द्वद्व and इत्व at the points द and त shall be equal, the exterior angle अवज shall be equal to the interior angle अवज (on the same side of the line are) and the sum of the

(interior) angles g a and maa (on the same side of the line was) shall be equal to two right angles.

Proof.

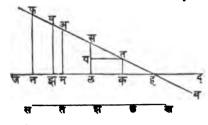
If the lines त झ and च द be equal, then the four angles formed by them (with इस द and च त) shall be right angles.\*
Then what we wished to prove is evident.

Cor. The line which is perpendicular to one of the two perpendiculars is also perpendicular to the other.

Prop. VI.

If the four angles formed by the intersection of two lines be not right angles, then a perpendicular on one of the lines shall meet the other line in the direction of the acute angle.

The two lines at a and at a meet in g. The angle at a as



an acute angle. The angle of a si s an obtuse angle. Let the perpendicular si si be drawn on the line of si.

Then this perpendicular shall meet the line of si in the direction of si.

Proof.

In the line आह, take any point त. Draw the perpendicular त क on आह. †

Let it be considered whether this perpendicular shall fall between the points  $\mathbf{x}$  and  $\mathbf{x}$ , or on the point  $\mathbf{x}$ , or beyond the point  $\mathbf{x}$ .

If it falls between m and m, take another line and divide it into parts equal to g . so that these parts may be more than those into which g m can be divided. Let them be स त, त जा. शुक्र, and छ ख. In the line अ ह make तस, स अ and अ फ equal to g 7.8 From the points 47, 27, and 55 draw the perpendiculars सक, अस, and फून on the line जह. From the point a. draw the perpendicular a w on the perpendicular स छ.।। Then in the triangle ह त क, the angle ह त क is equal to the angle त स्य,\$ the angle ह क त is equal to the angle त य स, \*\* and the side ह त is equal to the side त स.++ Therefore ह क is equal to त य.# But त य is equal to छ क. §§ Therefore क क and g as are equal. Similarly as H and H are equal. Thus all the divisions of g are mutually equal and are also equal to the parts of east. Therefore the lines grand east are equal. But was is greater than g gg. ¶¶ Therefore g a is greater than gran. Therefore the perpendicular var is beyond the points of and or; and the perpendicular of of is within the triangle फ न ह. Therefore the perpendicular व झ, being pro-

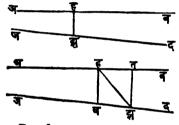
<sup>\*</sup> 獨复面 being an acute angle, and not in the direction of 司、面复面 being obtuse. † (I. 12). ‡ Equal to 夏克. \$ (I. 3). ¶ (I. 12). \$ In the triangle 司司司(Prop. V.). \*\* They being right angles. †† (Con.). ‡‡ (I. 26). §§ (Prop. IV.). ¶¶ Because 司司 is divided into a greater number of parts than 夏莉.

duced, meets the line of g, that is, it meets the line of g. This is just what we wished.

Again if the perpendicular त क falls on the point withen a war and त क shall coincide. Then there shall of course be a meeting (of the perpendicular with wa in the direction of w). If the perpendicular त क is beyond the points wand w, then the perpendicular a washall be within the triangle त क wand shall necessarily meet (the line way in the direction of w). This is just what we wished.

Prop. VII.

If a straight line falls upon two other straight lines and if the interior angles on one side are less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only.



Let the line g s fall upon the two lines wa and s z, and let the interior angles w g s and s s z on the same side (of the line g s) be less than two right angles, then the line w s shall meet s z in the direction of w and s.

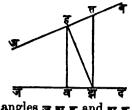
Proof.

Of the two angles mentioned above, one is either a right angle or an obtuse angle or an acute angle. If one is a right angle, the other shall be an acute angle. Then the two lines shall necessarily meet in the direction of the angles. If one angle is an obtuse angle, let w w w be assumed as that angle. From the point g draw the perpendicular g q on w q and from the point st, draw the perpendicular st a on st a.\* Now a st falls upon the two perpendiculars तुझ and हद. Then the angles as m and ams are equal. But the angles was m and was are less than two right angles, and the angle आह व is a right angle. § Therefore the angles व इ आ and g u a are together less than one right angle. Therefore the angles g m and g m a are together less than one right angle. But the angle of of wis a right angle. Therefore the lines ar and ar a shall meet in the direction of ar and ar.

<sup>\* (</sup>I. 12.). † (Prop. V.). ‡ (Hyp.). § (Cons.).



If both the angles be acute, then draw from the point we the

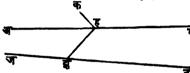


perpendicular g w on the line w and from m draw the perpendicular mm on the line of a.\* Now the angles of si g and mg a are together equal to the angle of stat, and because the angle द जा जा त is a right angle ! therefore the angles of a s and a s a are together equal to a right angle. Take away these angles from the angles we mand we see Then the remaining angle ar a is an acute angle. The angle

Alternative Proof.

If both the angles we say and we see be acute, then from the

जवह is a right angle. Then the lines अ द and जह shall



meet in the direction of ar and ar.

point g draw the perpendicular g s on the line g sr.& Then the angle as wis a right angle, and the angle ह झाज is an acute angle.

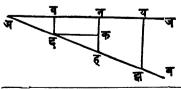
Then the lines & and s a shall meet in the direction of a. Therefore the lines g and g s shall also meet in the direction of sa.

An alternative proof of Prop. VII. is based upon eight propositions. Of these five are those given above.

Prop. VI.

If one of the arms of an acute angle be divided into as many equal parts as we wish and if from the points making those parts perpendiculars be drawn on the second arm of the angle, then these perpendiculars shall divide the second arm into equal parts.

Let a sa sa be an acute angle.



Let one of its arms are be divided into equal parts a z, द ह, and ह झ. From the points द. इ. and इत let the perpendiculars द्व, इत, and झय be on earsa. Then these

<sup>†</sup> Because the angle 東夏 is equal to the angle 夏東元 \* (I. 12). ‡ (Cons.). ( Prop. V. ). § (I. 12).

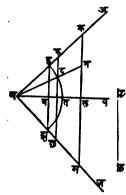
perpendiculars shall divide the arm अ ज into the equal parts, अ व, व त, and त य.

Proof.

Prop. VII.

If a point be taken within the two arms of an angle, it is possible to draw a line passing through that point, equally meeting the two arms.

Let द be a point within the two arms आ ब and ब ज of the angle आ ब ज. With the center ब and the radius ब द describe



the arc इ द झ. Join the line इ झ. Bisect the angle इ ब झ by the line ब ब. Both the parts shall be acute angles \$ In the triangles इ ब ब and झ ब ब, the sides इ ब and ब ब and the angle इ ब ब are equal to the sides झ ब and ब ब and the angle झ ब are equal. Therefore the angles ब ब झ and ब ब झ are equal.\*\* Therefore they are right angles. Produce the line ब ब to the point a. Let this line meet the arc इ द झ in the point a. Take a line representing the multiple of a a, such

that it may be greater than the line ब व त. Let that line be अ स drawn elsewhere. Divide the line ब आ into parts equal to

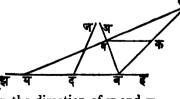
<sup>\* (</sup>I. 23). † (Con.). ‡ (Prop. V.). § (I. 26). ¶ (Prop. IV.). § (I. 10). § Because the whole is an acute angle. \*\* (I. 4).

we or its multiples. Let them be we and we. From the points g and s draw the perpendiculars g g and s s on the line a w. These perpendiculars shall divide the line w w into equal parts a and a s.\* These parts are equal to the parts of a st. † Therefore the two parts together shall be greater than a 7. Therefore the perpendicular as as shall fall beyond the line and. Cut off from the side a sa an equal to a sai and draw the line & H. Then in the triangles a & and a H & the sides as and as and the angle as a sare equal to the sides स द and द क and the angle स द क. Therefore the angles द कs and s s s are equal. But the angle s s s is a right angle. Therefore also the angle a way is a right angle. Therefore the line was is one straight line. T Produce the line was to m. At the point z in the line z z, make the angle z z z equal to the angle z = s. Then the lines we z and z z are parallel.\$ Produce the line us a so that it may go beyond the triangle as a. Let it meet the side as in a and an in a. Thus the line was passing through the point a meets the arms ar a and a m (equally, i. a making the angles a m and ब स द equal, they having respectively equal to the equal angles बहु स and बम स्ह ). This is precisely what we wished.

Prop. VIII.

If a straight line falls upon two other straight lines and makes the two interior angles on the same side of it together less than two right angles, then the two straight lines shall meet in that direction only (in which are the angles which are together less than two right angles).

Let a a fall upon the two straight lines as a and a a so that



स the two (interior) angles आ-बद and जद ब (on the same side of the line बद) are together less than two right angles. Then the two lines (अ ब and जद) shall meet

in the direction of wand sa.

Proof.

Produce the line we on both the sides to the points ge and get. From we, cut off a gequal to get. Now the angles we get and we get are together less than two right angles. But the angles we get and we get are together equal to two right angles. Therefore the angle we get is greater than the angle we get. At the point win the line get make the angle we get equal to the angle we get get and we are the arms of the angle get get. Through the point get (within the arms of the angle get), draw the line get get meeting the two arms (get and get). Now the angle get get is greater than the angle get. At the point ge make the angle get, equal to the angle get. Produce the line get so that it may meet the line get in get. Then the lines get and get shall meet one another. Proof.

Place the line q = 0 on the line q = 0. Then the line q = 0 shall fall on the line q = 0 (or rather q = 0), and the line q = 0 shall fall on the line q = 0. Therefore the lines q = 0 and q = 0 shall meet.

Thus end the eight propositions.

The above propositions, some of which are very intricate, are necessitated by the particular form in which the twelfth axiom is given in the text. (Vide p. 3 of the Notes).

It will be seen that though it is stated in the text (p. 37 अस्योपपित्यक्तिः क्षेत्रेज्ञायते) that the proof of the 29th Prop. depends upon eight propositions, only seven are given. The next eight Propositions, of which five are common, make up the alternative proof of the seventh. These seven propositions of both classes, go to prove the twelfth axiom as given by Euclid, on which rests the proof of the 29th Prop. Thus कहा के इंड clearly an error. It should be सहितः के के: The error may have arisen from the fact that there are eight propositions which make up the alternative proof of the seventh.

Digitized by Google

<sup>\* (</sup>I. 3). + (Hyp.). ‡ (I. 13). § (I. 23). ¶ (I. 16), तव व being the exterior angle of the triangle यवष. ॥ (I. 23).

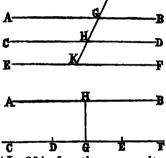
P. 48 Prop. 29.

L. 22. After अन्तर्गतकोणेन, understand एकदिकेन i. c. on the same side of the line.

P. 49 Prop. 30.

Bil. observes that the Prop. may be proved even by a principle only. For if the two straight lines concur on any one side, they should concur also with the middle line, and should not be parallel to it, which they are supposed to be.

The two parallel lines which are compared to one are in the



text placed in the extremes and the parallel to which they are compared is placed in the middle. But the Prop. can also be proved n by changing the position of the lines. Let A B and C D be both parallel to E F. Let G H K fall upon them. Now because either of the angles K H D and H G B T is equal to the angle HKE (I. 29.) for they are alternate angles, therefore they are (I. Ax.) Therefore A B is parallel

P. 50 Prop. 31.

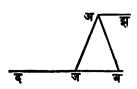
equal to one another. to C D. (I. 28.) Q. E. D.

विकीर्षिता is simply equivalent to हुन्।

P. 50 Prop. 32.

सन्मुख=Opposite, not adjacent.

Alternative proof.

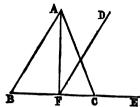


From the point w, draw wy w, parallel to w z.\* Then the angle system is equal to the angle st. झ And the angle झाश ज is equal to the angle अ ज इ.: Therefore the angle अ ज द is equal to the angles अ and इ. This was just what we wished.



<sup>\* (</sup>I. 31).

Bil. mentions another alternative proof as follows:— Let A B C be a triangle. Produce B C to E. In B C, take

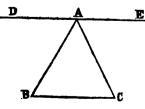


any point F. From F draw F D, parallel to A B (I. 31). Join A F. Now because F D is parallel to A B and A F meets them, therefore the alternate angles B A F and A F D are equal (I. 29). Again because D F is parallel to A B and B C

meets them, therefore the exterior angle DFC is equal to the interior and opposite angle ABF (I. 29). Therefore the whole angle A F C is equal to the angles F A B and A B-F. Similarly if from the point F a straight line be drawn parallel to C A, it may be proved that the angle A F B is equal to the angles FAC and ACF. Therefore the angles AFB and A F C are equal to the three angles of the triangle (A B C). But the angles AFB and AFC are together equal to two right angles (I. 13), therefore the three interior angles of the triangle A B C are together equal to two right angles. But the angles ACF and ACE are also together equal to two right angles (I. 13), therefore the angles A C F and A C E are equal to the three interior angles of the triangle A B C. Take away the common angle ACB. Then the remaining angle A C E is equal to the angles A B C and C A B. Q. E. D.

Endemus affirms that the latter portion of this theorem, viz., the three interior angles of a triangle are together equal to two right angles, was first found out by Pithagoras, who demonstrated it as follows:—

Let A B C be a triangle. Through the point A, draw D E,



parallel to BC. (I.31). Now be-E cause DE is parallel to BC, and AB and AC fall upon them, therefore the alternate angles are equal (I. 29). Therefore the angle DAB is equal to the angle ABC and the angle EAC is equal to the angle

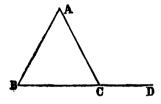
A C B. To each of these equals, add the angle B A C. Then the angles D A B, B A C, and C A E, i. e. the angles D A B

and B A E, are equal to the three interior angles of the triangle A B C. But the angles D A B and B A E are together equal to two right angles (I. 13). Therefore the three interior angles of the triangle A B C are together equal to two right angles. Q. E. D.

The converse of this Prop. can also be proved. It will be as follows:—

If the exterior angle of a triangle be equal to the two interior opposite angles, one of the sides of the triangle is produced and the line without the triangle is in the same straight line with the side of the triangle. And if the three interior angles of a rectilineal figure be equal to two right angles, the rectilineal figure is a triangle.

Let A B C be a triangle, and let the exterior angle A C D

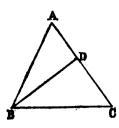


be equal to the two interior opposite angles, ABC and BAC. Then BC is produced to D and CD is in the same straight line with BC or BCD is one right line.

For since the angle ACD is equal to the two angles ABC and

BAC, add to each of these equals the angle ACB. Then the angles ACD and ACB are together equal to the three interior angles of the triangle ABC. But the three interior angles of the triangle ABC are together equal to two right angles (Hyp.), therefore the angles ACD and ACB are together equal to two right angles. Therefore CD is in the same straight line with BC(I.14).

Again suppose A B C to be a rectilineal figure, having only



three angles, at the points A, B, and C and these together equal to two right angles. Then A B C is a triangle. First A C is one right line. For in it, take any point D and join B D. Now in the triangles A B D and B C D, the three interior angles are together equal to two right angles (I. 32) and the angles at

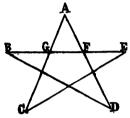
A, B and C are together equal to two right angles (Hyp.)

therefore the remaining angles, viz., ADB and CDB are together equal to two right angles. Therefore ADC is one right line (I. 14). Similarly AB may be proved to be one right line and so may BC be proved to be one right line. Therefore the figure ABC is a triangle. Q. E. D.

From this Prop. it is evident that every pentagon which is so described that each side of it intersects two of the other sides, has its five angles equal to two right angles.

Let A B C D E be such a pentagon as is required. Then all

to two right angles.

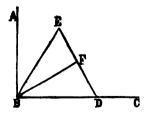


Now the exterior angle A F G is equal to the two interior opposite angles at B and D in the triangle B F D (L 32). Similarly the exterior angle F G A is equal to the two in-

its five angles shall be together equal

terior opposite angles at C and E in the triangle C G E (I. 32). But the two angles A F G and F G A together with the angle G A F are the three interior angles of the triangle A G F and are therefore equal to two right angles (I. 32). Therefore the four angles at the point B C D E together with the angle at the point A are together equal to two right angles. Q. E. D.

By the aid of this Prop. a right angle can be trisected.



Let A B C be a right angle. It is required to trisect it.

In B C, take any point D. Upon B-D, describe the equilateral triangle B-D E (I. 1). Bisect the angle E B D by the line B F (I. 9). Then the right angle A B C is divided into three

equal parts by the lines B E and B F.

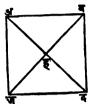
The triangle E B D is equilateral and therefore equiangular. The angle E B D is therefore two thirds of a right angle (I. 32). Therefore the remaining angle A B C is one third of a right

angle. But the angle E B D is bisected. Therefore the two angles EBF and FBD are, each, one third of a right angle. Q. E. F.

Prop 33 p. 51.

Alternative proof.

Join wa and was cutting each other in m. Then in the

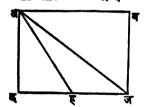


द triangles अहद and जहर the angle अहद is equal to the angle was and the angle was is equal to the angle z z z, t and the side z z is equal to sag. Then the side as gris equal to दह and चहु to जहूं. Again in the triangles अह ज and बहु द, the sides अह and है ज and

the angle was are respectively equal to the sides as and ag and the angle ag g. Therefore the sides ag and बह are equal and the angles अज़ह and इवह are equals. Therefore the side was is parallel to the side was. This was exactly what we wished.

Prop. 34 p. 52.

Alternative proof.



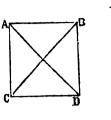
If the side we be not equal to sag, let it be equal to जह. Draw the line आह. This line shall be parallel to a sa. But the line व ज is parallel to अ इ. Therefore the lines of g and of a are parallel. is absurd. Similarly the line w shall be equal to the line a ज.

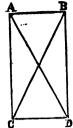
If the angle was be not equal to the angle was, let the angle इ अ इ be equal to the angle इ ज़ इ.॥ Join अ ज़. the angles a w w and g w w are equals and the angle w w g is equal to the angle of of at. But the angle of of is equal to the angle of of This too is absurd. Similarly the angle क is equal to the angle क. The triangle अ द ज is equal to the triangle was . This was exactly what we wished.

<sup>\* (</sup>I. 15). † (I. 29). ‡ (L. 26). § (I. 4). ¶ (I. 27). \*\* (I. 29). (I. 28). \$ (I. 29).

This alternative proof is the indirect proof of the Prop.

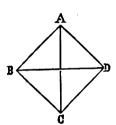
A parallelogram is either a square or an oblong or a rhmobus

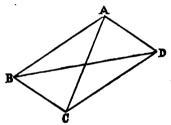




or a rhomboid. In a square and in an oblong, the diameters are equal. In the square and in the oblong ABDC, the diameters BC and AD may be shewn to be equal by applying Prop. 4 to the triangles ABC and ACD.

But in a rhombus and in a rhomboid, the diameters are not





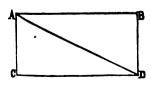
equal. In the rhombus and the rhomboid A B C D, the diameters A C and B D may be proved to be unequal by applying Prop. 24 to the triangles A B C and B C D.

Similarly it may be shewn that in a square and in a rhombus the diameters not only divide the figures into two equal parts, but they also bisect the angles. But in an oblong and a rhomboid, the diameters do not bisect the angles.

Bil. shews that the converse of this Prop. after Proclus is as follows:—

If a rectilineal figure whatever have its opposite sides and angles equal, then it is a parallelogram.

Let A B D C be a rectilineal figure, having its opposite sides



and angles equal. Then it shall be a parallelogram. Join A.D. In the triangles A.B.D. and A.C.D., the angles B.A.D. and B.D.A. may be proved to be respectively equal to the angles A.D.C. and C.A.D.(I.8).

Therefore A B is parallel to C D and A C to B D (L 27).

Prop. 35 p. 53-54.

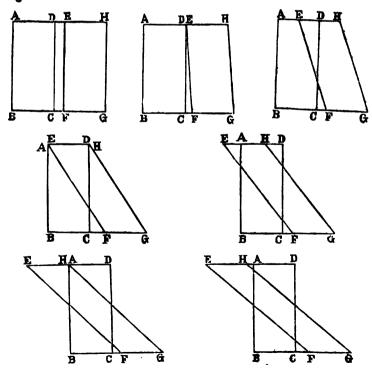
In the first case in which the point g falls outside w q, and w g and w g cut one another in w, from the two equal triangles w w g and w g w, first take away the triangle w g and then add the triangle w w w, and the result will be the two parallelograms w w w w and g w w which are equal to one another.

In the second case the points g and g coincide. Here the parallelograms will be obtained simply by adding the triangle g g g to the equal triangles as g g and g g g.

In the third case in which the point g falls between w a and w z, the parallelograms will be obtained by adding the four-sided figure g z z z to the equal triangles w z z and w z z.

Prop. 36 p. 54-55.

For this Prop. many figures are possible, such as the following:—

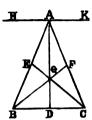


Digitized by Google

Prop. 38 p. 55-56.

With the help of this Prop. a triangle may be divided into two equal parts.

Let A B C be a triangle. It is required to divide it into



two equal parts. Bisect B C in D (I. 10) and join A D. Through A draw H A K parallel to B C (I. 33). Then the triangles A B D and A D C are equal (I. 38). Similarly by bisecting A B and A C in E and F and joining E C and F B, and drawing parallels through C and B to A B and A C the triangles E B C and A E C and the triangles A B F and B F C may

be proved to be equal.

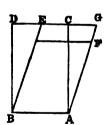
Prop. 39 p. 56.

This Prop. and the next one are the converse of Prop. 37 and 38 respectively.

In this Prop. what is stated with regard to triangles is applicable to parallelograms also.

If upon the same base and on the same side of it, there be two equal perallelograms, then they shall be between the same parallels.

Upon the same base A B and on the same side of it, let

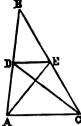


there be two equal parallelograms A B D C and A B E G. Then they shall be between the same parallels. If they are not between the same parallels, let one of them be set either within or without. Let the parallelogram B F which is equal to the parallelogram A B D C be set within the same parallel lines. Then B F shall be proved

equal to ABEG which is absurd (9 ax.). Therefore the parallelograms ABDC and ABEG shall be between the same parallels.

By the help of this Prop. it may be proved that if a right line divide two sides of a triangle into two equal parts, it shall be equidistant to the third side. Bil. mentions this as an addition of Campanus. Let A B C be a triangle and let the right line D E divide

the two sides A B and B C into two equal

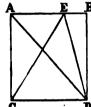


the two sides A B and B C into two equal parts in the points D and E. Then D E shall be parallel to A C. Join A E and D C. The triangles B D E and A D E are equal (I. 38) and so are the triangles B D E and C D E (I. 38). Therefore the triangles A D E and C D E are equal (I. Ax.). Therefore A C is parallel to D E (I. 39.). Q. E. D.

Prop. 41 p. 57.

This prop. has two cases; for the base being one, the triangle may have its vertex without the parallelogram or within. The first case is proved in the book. The figure for the second case is as under:—

The parallelogram A D is double of the triangle A CD (I. 34).



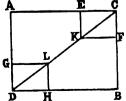
But the triangle A C D is equal to the triangle E C D (I. 37). Therefore the parallelogram A D is double of the triangle E C D. Q. E. D.

Prog. 43 p. 58-59.

This prop. has three cases only. The parallelograms about the diameter may either touch one another in a point or are severed from one another by a certain part of the diameter or cut one another. The first case is the one proved in the text. The second case is represented by the following figure:—

In this case the complements AGLKE and BFKLH

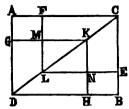
are not parallelograms. But they



are not parallelograms. But they can be proved to be equal in the same way as in the case in the text.

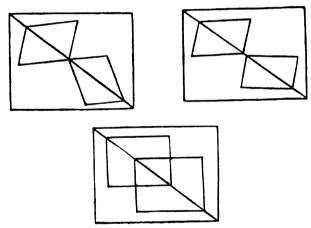
The following is the figure for the third case:-

In this case the parallelogram E F cuts the parallelogram G-



H. In this case the trapezium G M-L D may be proved to be equal to the trapezium L N H D and finally the complement A M to the complement E H.

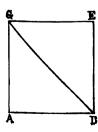
It may be noted that in each of the three cases the parallelograms about the diameter may not have one angle common with the whole parallelogram; still the demonstration in each of these cases will be the same. The following will be the figures for these cases:—

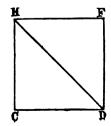


Prop. 46 p. 60.

Squares described on equal lines are equal.

Let A B and C D be equal. Then the squares E A and C F

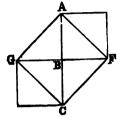




shall be equal to one another. The triangles ABG and CDH are equal (I. 4) and their doubles are equal. QED.

The converse of this is also true. If the squares be equal, the lines upon which they are described are also equal.

Let A F and C G be equal squares described upon the lines



AB and BC. Then the lines shall be equal. Put the lines AB and BC in such a way that they may form one straight line. Then FB and BG shall also be in one and the same straight line (I.14). Join AF, FC, CG, and GA.

The triangle A B F is equal to the triangle C B G (I. 34 and 7 Ax.). To each of these equals add the triangle B C F. Then the whole triangle A F C is equal to the whole triangle G F C, and they are upon the same base C F. Therefore C F is parallel to A G (I. 39). Again the alternate angles A F G and F G C are equal, each being half a right angle. Therefore A F is parallel to C G (I. 27). Therefore A F is equal to C G (I. 34). Now in the triangles A B F and C B G the angles B A F and A F B are equal to the alternate angles B C G and C G B respectively and the sides adjacent to these angles are equal, viz., G C and A F; therefore A B is equal to B C and G B to B F (I. 26). Q. E. D.

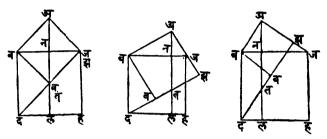
Prop. 47 p. 62.

## Alternative proof.

In this case the triangle and the square on the hypotenuse are to be placed as in the above case; and the line was also is to be drawn as in the above case. But the square was on was is to be placed on the triangle. Now the side was may be either equal to or greater or less than was. Then in these cases will respectively coincide with was or fall outside was or in the line was. Join was. Now the angles was and was are right angles; and therefore equal. Take away the common angle was from both. Then the remaining angle was is equal to the remaining angle was is equal to was and was to was and the angle was is equal

<sup>\*</sup> In other words, the squares on W washould be described on the same side as is the triangle W w w. + Both being angles of squares.

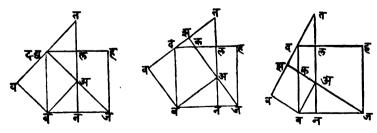




shall be one straight line. Or (i.e. in other cases) the point a shall not be on a or shall be another point (in other words, the two points shall not coincide with one another). If we be greater than wa, the point a shall be on the line wa, or shall fall without the line wa (when wa is greater than wa). Thus in all the three figures the figures wa wa and want shall be equal. Similarly the figures wa wa and want shall be equal. Then the figure was shall be equal to the figure was a figure was a shall be equal to the quadrilateral figure was.

# Another alternative (p. 63).

In this case the square on the hypotenuse is to be placed on



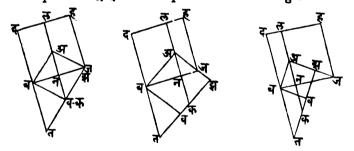
the triangle (i. e. is to be described on the upper side of the

Digitized by Google

hypotenuse) and the square on the side wa is to be placed outside the triangle. Produce the line was. It will meet the point wife was sequal to www. Or it will meet the line was in wife was is greater than www. Or it will meet the line was in wife was is less than was.

## Another alternative (p. 64).

The square on a w is to be placed on the triangle. In this



case the point  $m^{**}$  shall coincide with m, if the two sides are equal, or fall outside the side m m if m m is greater than m m, or fall on m m if m m is less than m m. Now the angle m m

<sup>\*\*</sup> One of the angular points of the square on W.

shall be equal to the angle of was,\* Then produce the line of a so as to meet of a (or of a produced) in of. Then the point of shall coincide with a if of a is equal to of of of fall on of a if of a is greater than of of, or fall outside of a if of a is less than of of.

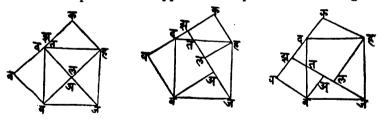
Then produce of a and of of oa so oa to meet in of.

Similarly the square on the side of of shall be equal to the figure of of. Again the square on of of should be placed on the triangle of of of outside the triangle of of outside the triangle of of outside the triangle of outside of outside the triangle of outside outsid

# Another alternative (p. 65).

In the foregoing cases the proof was given by dividing the square on the hypotenuse into two parts by the line www. Now the proof shall be given without dividing the square on the hypotenuse into two parts.

Let the square on the hypotenuse be placed on the triangles.



<sup>\*</sup> From the right angles হ'ব জ and ব জ'জ, take away the alternate angles হ'ব জ' and ব আ'ল which are equal ( I. 29 ), then the remaining angles অব জ and ল' অ' জ shall be equal.

<sup>+ (</sup> I. 26 ).

<sup>‡</sup> In the triangles अव ज and व व त, the angles अ and व are equal being right angles and the angles त व व and अव ज are equal, since each of them, plus व व ज is a right angle, and the side ज व is equal to व व, therefore व ज is equal to व त (1.26). But व ज = द व .. द व = व त. But द व = व ज = अक .. व त = अक.

<sup>§ (</sup> I. 86 ).

<sup>¶(</sup>I. 35).

<sup>\$</sup> And the square on outside the triangle.

Produce a as so that it may meet the square in the point a. If ar a is equal to ar ar, the point a shall coincide with z. If ar a and a sa are unequal, the point a shall fall on a g or a s. From the point z, draw the perpendicular z z on the side z z. Produce this perpendicular on both the sides. Again on this perpendicular (produced) draw the two perpendiculars and g as from the points wand g\*. From the point g, draw the perpendicular g on the line 3 st. Then when the sides as and as a are equal, the perpendicular grasshall meet the point at and res at a shall be one straight line. But if the two sides be unequal, the perpendicular ges shall fall on a point other than w (i. e. the points w and w shall not coincide ). In the triangles was, as as, as as, and क जह, the sides व ज, व ह, द ह and ह ज are equal, the angles w, w, and w are equal, and the remaining angles are also equalt, therefore these four trangles are equal. fore the figure at a is a square. It is the square on at a. figure as a is also a square. It is the square on war. These two squares are equal to the square = z.

#### Proof.

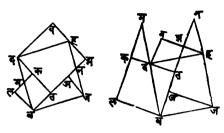
The sum of the triangles = = = and = = is equal to the sum of the triangles = = and = = is. If the rest of the figure be added to the first two triangles, then it would form the first two squares; and if it be added to the second two triangles then it would form the square on the hypotenuse.

<sup>\* (</sup> I. 12).

**<sup>† (1.12).</sup>** 

## Another alternative (p. 66).

If the two sides of and of a are unequal and the square on we



is not made to fall on the side was the square on was is not made to fall on was, then the side and should be so produced that it may meet as (or was produced) in the point was From the

points g and g draw the perpendiculars g g and g g on the line ब अर्क (or ब अ produced). Produce g आ, and from the point इ draw the perpendicular z z on the line z z.\* Make z z equal to and draw see parallel to ast. This line (or this line produced) shall meet द व (or द व produced) in the point a. From the point a draw the perpendicular a so on the line so. Then the triangles was, तदब, and a दह shall be equals. The squares & and a st shall be the squares on st st and st st. Again the triangles as a and as as are equal to one another and so are the triangles THE and THE. Then the sum of the triangles wan and and is equal to the sum of the square and the triangle and This (The square as-स + the triangle ह सङ्घ ) is equal to the triangle द स जा। triangle a z z is to be added to the first sum, a z a to the second sum, and the figure a a s to both the sums when sq-इ is greater than आ आ, and one part (इत स putting स where अस meets इ ह ) of the figure द न त ह is to be added and the other (सन्ह) to be subtracted when अव is less than अव.\$

```
*(I. 12).
†(I. 3.).
‡(I. 31).

§ They can be proved equal in the same way as in the preceding case.
¶ ∴ 有有工業可報.

¶ ∴ The triangles 事等有十官司 有土司司

$ 要司 十官司 有二要 有十官司 策

, = 司司司

∴ 事 有十官司 第二司司司
```

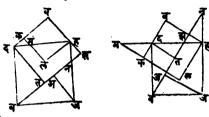
कत+इन स+वद ह+द त न ह=वन ज+त द व+द स न ह

ः कत+तव=जदः (when अव ७ अज). कत+हन स+वद्ह+दतस—तनह

=बनज+तर्व+दतत्तः—तनह ∴कत+तब=जर्( when अव ८ अज). Then the two squares shall be equal to the square on the hypotenuse.

# Another alternative (p. 67).

If the square on one side should fall into the square on the



other side, then make up the figures as in the above case. But #5 must be made equal to #5\*. Draw \$5 and \$5 parallel respectively to #5 and #5. Produce

them so as to meet in the point w. Then the line www (or www produced) shall meet the line www (or www produced) in the point w.

Now the three triangles (अवज, वद्त, and वद्द्द) being equal, हु क and अव being (consequently) equal, and the angles being equal, it is proved that the two triangles हु क म and ज अव न are equal to one another. Again द क and हु म being equal, the triangles द क म and हु म are equal to one another. Then the sum of the triangles द वह and म कह is equal to the sum of the square वह and ह न म. This sum (i. c. the latter sum) is equal to the triangle व न ज है. To the first sum (ब क + ह न म) add the triangle व वह and to the second sum (व न ज) add the triangle व व व and add the figure ह द त न to both the sums if अ व is greater than अ ज; but if अ व is less than अ ज, then add one part (व त स, स being the point where द ह meets त म) to both the sums and subtract the other part

<sup>\*(</sup>I.3). †(I.31).

<sup>‡ &</sup>lt; इंड = < क, < व दत = < क हज, and < इ दत = < क हज (both being equal to <व इ द, इ दत and व इ द being alternate angles and क इ ज and व इ द make up each a right angle with द इ क). Therefore the remaining angles क द ज and ज इ- इ are equal, and the third angles द ज क and इ ज इ are equal (I. 32 and 3 ax.). This proof applies to the case in which अ व > अ ज. In the other case < क द ज may be shown to be equal to < ज इ स as under:—

Angles at ব and ছ are together equal to two right angles. From these take away ৰ ব and ক ছ ব which are each a right angle. Then < ব হ ব = < ব হ ব + < ত হ ব. But < ব হ ব = < ব হ ব ( I, 29 ) and < ব হ ব = < ত হ ব (both making up one right angle with the complement ব হ ত). Therefore < ম ব = < ত হ ব ব

<sup>§</sup> Because the former sum is equal to the triangle ◀ ◀ ◀.

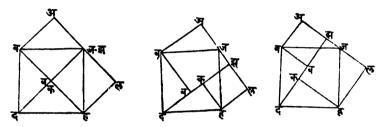
(স্বহু) from the same sums. Then the squares হ জ and ব্র are equal to the square হ জ\*.

Page 67 L. 18 पूर्वकोगे = पूर्वकथितोभययोगे = To both the sums mentioned before.

## Another alternative (p. 68).

In this case the figures are to be so described that the square on the hypotenuse may not fall on the triangle and the square on one side may fall on the triangle.

As the square of a on the side of a falls on the triangle.



Then the point whall coincide with the point when the two sides are equal. If the two sides are unequal, then the point whall either fall within the side was or without it. Join was. Then it can be proved as shewn before that was is one straight line. From the point was traight line. From the point was the perpendiculars was and wo on this line (was ) and on was (or was produced). Then was shall be one straight line when the two sides are equal. Then the two sides are unequal, the perpendicular was shall fall within was or was. Now the four triangles (was, was, was, and was, being equal, was and was being (consequently) equal, it is proved that the figure was is the square on the side was. Again the sum of the triangles was and was being equal to the sum of the triangles was and was being equal to the sum of the triangles

.....Digitized by Google

<sup>ै</sup>व छ+इन झेम्द व इ+इद त न=बन जमत द वमह द त न.

<sup>ं</sup> ब क + व त= व ज when अ ब > अ ज.

व छ+इन झ+इने इ+इन त त (त being the point where द इ meets त झ) --- में स इ=व न जा+त द व+द त स--न स इ.

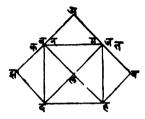
<sup>∴</sup> वें छ+व त=द ज.

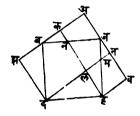
<sup>† (</sup>I, 12).

proved that the squares on the two sides are equal to the square on the hypotenuse.

## Another alternative (p. 68-9).

In this case it is desired that the square of none of the sides should fall on the triangle. Describe the triangle. Describe the square on the hypotenuse. Produce the two sides. From the points a and g, draw the perpendiculars a and g a on the two sides. Draw a and g a parallel to the two sides.





These two shall meet in the point wand shall meet the lines of war and war (or of wand of produced) in the points wand of and war produced) in the points wand of and war produced) in the points wand of war and the points wand of the points wand of the given triangle) are equal. If the two sides are unequal, each set of these three points shall form a triangle. Now the equality of the triangles war wand war war is proved. Therefore the figures was and war are the squares on the two sides. The and war being equal; and the angles being equals, it is proved that the triangles war and war are equal. Similarly the triangles war and war are equal. If the triangle war war

<sup>\* (</sup>I. 12). + (I. 31).

<sup>‡</sup> अ द=च व, ज क=क त=ह व=त व∴अ व—अ क=च व—त व∴व क=ज त.

<sup>§ &</sup>lt;अ ज व+ < ज ज त= ⊥ angle.

<sup>&</sup>lt; अव व + < अव व = ⊥ angle.

<sup>∴ &</sup>lt;म जत= <अवजः.c. <कवन.

One angle in both is a right angle : all the angles are equal.

<sup>¶ &</sup>lt;वद्स=<द्सह (L.29). <वद्स=झवद्(L.29) < झवद्≖ <हन अ as both make up a right angle with <नवस.

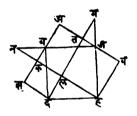
<sup>∴&</sup>lt;द न ह= <ज न ह.

Other angles and one side may be proved equal in both, so the triangle are equal (I. 26).

be subtracted from both the figures, then the remaining figure  $q \approx q \approx 4$  shall be equal to the triangle  $q \approx q \approx 4$ . It shall also be equal to the triangle  $q \approx q \approx 4$  (for the triangle  $q \approx q \approx 4$  is equal to the triangle  $q \approx q \approx 4$ ). It shall also be equal to the sum of the figure  $q \approx q \approx 4$  and the triangle  $q \approx q \approx 4$ . If the two equal triangles  $q \approx q \approx 4$  and  $q \approx 4$  and the triangle  $q \approx q \approx 4$  and the triangle  $q \approx q \approx 4$  be added to the two preceding figures, then the square on the hypotenuse shall be equal to the squares on the two sides.

It may be noted that the latter part of the proof does not apply to the third figure in which at a is less than at a.

For the third figure the proof may be modified as under:-



```
ध्वय-म कह=द्वह-म कह

∴ें क क्षण=द कह

, =जवह

, =वध्व+वकन (∵जतम=वकन)

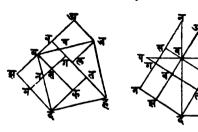
के छा ज+द कह+न वद्क + म कह=म वहत + वकन + द्वव+

के वद्छ+स कह(∵द कह=द झव)

∴हव=ब छ+झ क.
```

# Another alternative (p. 70.)

In this case if the square on one side falls on the other, then



if the two sides are equal, the case is clear. But if the sides be unequal, produce the side of a. On ar ar (or ar ar produced) draw the perpendiculars

दझ and g a from the points द and g.\* Let g w and w w (produced if necessary) meet in a. Again from the point a draw the perpendicular wa on wa, from a, draw the perpendicular we on wa (or wa produced) and from wa draw the perpendicular of so on g a.\* Make a st equal to a so in the direction of m. † Draw the line m n and parallel to a m. ! This line shall meet the line & a (or & a produced) in the point a, a s (or a s produced) in a, and s a in a. Then it is certain that the triangles was, see a, a see, see a, and see are equal. Therefore the figures = # and # # are the squares on the two sides (of the given right-angled triangle). Again at a and me being equal and the angles being equal, the triangles सर न and स ज व are proved equal. Again व स and व व being equal and the angles being equal, the triangles व न स and व व व are equal to one another. Then the sum of the triangles are and a z = is equal to the sum of the four-sided figure z = and the triangle = = . This (the latter) sum is equal to the triangle g a w. Again the triangle g g w should be added to the first sum and a z z to the second sum and the figure बहुत क to both the sums if क क is greater than क ज: but if it be less, then one part ( on a s, on being the point in which a s meets a a) is to be added and the other ( a a a) is to be sub-

<sup>\* (</sup>I. 12).

<sup>† (</sup>L 3).

<sup>‡ (</sup>I. 31).

<sup>§ ∵े</sup> विकस≕ △चिवयाः

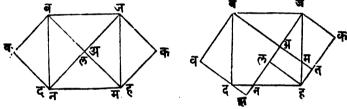
<sup>¶ ∵</sup>संसद्+बद्क=ल अध+हेल अ=हेज द.

tracted. Then the squares are and are are equal to the square are.\*

In the cases shewn above, other alternatives are possible but they are passed over through the fear of prolixity.

# Another alternative (p. 70-1).

When the squares of the sides fall on themselves, then there are eight cases. In the first case, having drawn the figure in such a way that the square of the hypotenuse falls on the triangle, produce the sides a st and a st so that they may meet the square on the hypotenuse in the points at and a shall fall respectively on a and a if the two sides are equal or shall fall on the two sides (produced if necessary) if the two sides are unequal. From the points a



and g, draw the perpendiculars q g and g q on both the sides thus produced.† Produce these two (perpendiculars q q and g q). From the points q and q, draw the perpendiculars q q and q q to that they may meet the produced perpendiculars in the points q and q. When the two sides are unequal, let q q be assumed to be greater than q q. From the point q draw the perpendicular q q on the line q q.† This perpendicular shall fall on a point other than q when the two sides are unequal, and shall fall on the point q when the sides are equal.

<sup>\*</sup> स न द + व द क = स क + व व य

श क 🕂 य व य 🖛 🗷 ज य

म क्र न व य ने म द व न व द त य = ह ज य न त द ह न व द त य.

<sup>&</sup>quot; 智 家 十 智 符 二 官 宝.

In the other case स क + ववय+ झद्व+ क तद्-वयक = इ जय+तद्-ह+क तद्-वयक

<sup>∴</sup>संक+क्षेत्र=वंह•

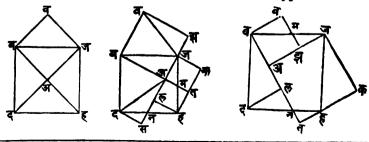
<sup>† (</sup>I 12).

Now the figures as and as a are squares and equal to the square on the line as when the two sides are equal. When they are unequal, then the figures of a and of a shall be squares and the figure & shall be right-angled, but shall have its sides unequal. Again the triangles of a sq. sq sq., and च च च are equal. The triangles ख ज स and छ इ न are equal as the angles are equal and the sides of and of grare equal. Then wa and was shall be equal. Therefore are and are shall be equal. Therefore the triangles g # a and g # s shall be equal. The triangles was has already been proved equal to the triangle way. If to these two the figure way was added, then the figure was shall be equal to the triangle mr and also to the triangle r a s and consequently to the figure at at a and to the triangle at a st. If to these two be respectively added the triangles was and was, then the figure was a together with the triangle as a shall be equal to the figure # # # together with the triangles # # and बबर. Again add to both the figure क क ज and the triangle अ ज म. Then from the first sum will arise the square च x and from the second the squares as a and as a. This was just what was wished.

In the same way it may be proved when q = 1 is less than q = 1.

Another alternative (p. 72-3).

When the square of the hypotenuse and one square, named of a, fall upon the triangle, and when the two sides are equal, then what I wish to prove is evident. Why? Because the triangles that are formed are equal. Of these, the sum of the two triangles is equal to the square on a side and the sum of the four triangles is equal to the square on the hypotenuse.



<sup>\* ∵∆</sup>इमत=∆नद्शः

But if we is greater than we so, then describe the square of it. Produce of a so that it may cut the line of in a and go out. From the points a and a draw the perpendiculars a and a sa on that line. From the point s, draw the perpendicular ss on the line sa s. Again from the point s draw the perpendicular w on the perpendicular w o. \* Again produce the line was that it may cut we in the point wand meet the perpendicular in a. The figure was may be proved to be a square as before. Join of a and a st. st of and a st being equal and the angles of of and of of the being equal, the triangles of of and as g are proved equal. Then by adding to these equals the figure to an arg it is proved that the figure of an arg is equal to the triangle as a g and consequently to the triangle FUR Again WH and FU being equal, the remaining parts स ह and स द are equal. Owing to this equality of the sides and the equality of the angles, the triangles इस स and इस द are equal. Again the angles & a sq and sq a being equal and ब द and द ज being equal and द द and द अ being equal, the triangles & a and a a a are equal. Again the remaining angles war and was being equal and the angles wand s being right angles and the sides at a and a to being equal, it is proved that the triangles at at and at at are equal. Therefore द्व and अस् are equal to ज्व and बन्न. The triangle इस न is equal to the triangle z a d, then the sum of the figure z स स and the triangle g स त is equal to the figure स द द झ. To each of these add the figure # # # 7. Then the figure # # wand the triangle g w so or its equivalent, the figure w w w z: in other words, the figure & a # g is equal to the figures of a g-झ and म ज क त. Again add the triangle च स ज to these equals. Then the square of the hypotenuse shall be equal to the squares of the two sides.

If the side was is less than was, then produce the smaller side so that it may cut the line as in a and go out. From a and g draw on it the perpendiculars as and g at Produce as and from a draw on it the perpendicular as at.

<sup>\* (</sup>I. 12).

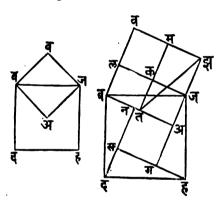
<sup>†</sup> As proved before.

<sup>1 (</sup>I. 12).

certain that the triangles अवज, कहज, and दक्ष are equal. Therefore अक is a square. The triangle दक्ष न is equal to the triangle न तह is equal to the sum of the triangles कहज, न तह, and न न न. Add the remaining figure to both these equals. Then the square on the hypotenuse shall be equal to the squares on the two sides.

## Another alternative (p. 74-5).

The squares on the three sides fall on the triangle. If the



on the triangle. If the two sides be equal, then the squares on the two sides shall be equal and what is desired to be proved is evident. But if one side is greater or smaller than the other, as a greater than a grea

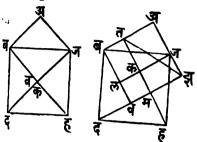
द, draw the perpendicular द न on आ न; and from द draw the perpendicular द स on द न. Produce ज आ so as to meet द स in ज. Then there shall be four triangles of the square ज द. They shall be equal as shown in the preceding cases. ज ज shall be the remaining figure. It shall be the square on the difference of the sides आ न and आ ज.† Join त स. Then the figures आ ज and आ ज shall be divided into four triangles. These four triangles shall be equal to the four triangles first spoken of. The remaining square क न shall be equal to the square ज ज. Thus the square ज न is proved equal to the squares आ न and आ ज. This was just what was wished.

<sup>\* (</sup>I. 12).

<sup>†</sup> Both सन and न अ are equal to अ ब—अजः द्न=अव and द्स=अवः and बन=अजः. Thus सन being equal to न अ, the figure नग is a square on अब—अजः.

## Another alternative (p. 75).

The squares on the two sides fall on the triangle, but the

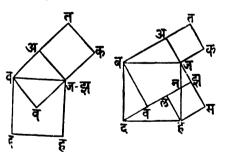


square on the hypotenuse does not fall on it. When the two sides are equal, it comes to the above-mentioned case. When the side of a is greater than of a, then describe the squares. Join of a and of-

Produce we to se. Then the square we shall be divided into four triangles and the square we shall be between them. Again join we. Then the figures we se and we we shall be divided into four equal triangles, and these four triangles shall be equal to the above mentioned four triangles. If to both these the square we be added, then what was desired to be proved shall be evident.

## Another alternative (p. 75-6).

The square of one side falls on the triangle. When the two



sides are equal, the case is evident. If water is greater than we wan, then describe the squares. Join was. Then it is clear that was is one straight line. Produce we was. On it draw the perpendi-

cular ह स.† Draw the perpendicular ह क on द स.† The triangles ज व ज, व व द, क द ह, and अ ज ह are equal. The square क म is equal to the square क क.‡ To the triangles द क ह and ज स ह, add the triangle क ह ज. Then the triangle द ज ह is equal to the

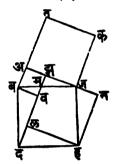
<sup>\*</sup> वव=छ ज and व छ=क ज ∴व छ=छ:क.

<sup>† (</sup> I. 12 ).

<sup>ै ∵</sup>छ इ=अ अ and छ ह=म इ.

square and together with the triangle and an or to its equivalent, i. c. the square and together with the triangle and and to the the first of these equals add the triangle and and to the second, and and add the remaining figure (and and) to both these equals, then what was desired to be proved would be evident.

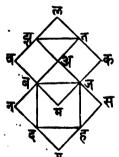
But if w w is less than w w, then describe the squares. Join



स त. In the above-mentioned manner it may be proved that the figure द ह ज स together with the triangle ज स स is equal to the square क क, क and the triangle च स स is equal to the square क च together with the triangle स ज स. † Therefore what was desired to be proved is evident.

## Another alternative (p. 76-7).

Describe the squares in such a way that the square of none



to the square ब इ. Join झ त. The triangles झ छ त, झ ब त, इ-झ झ, and ब झ झ are equal. They are also equal to the abovementioned four triangles. From both the squares take these

<sup>°</sup> कन is a square and equal to कहा. इहजम+सजह=सक्हन ज(∵ इ कह=हनज)+नजह=कन=कहा.

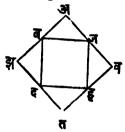
<sup>†</sup> वयद्=अयज ∴वयद्+ययम=जवज+यवम. ∴यद्म्=अव +मजङ

<sup>‡ (</sup>I. 12).

four triangles. The remaining squares q and q q shall be equal to the square q q. This was just what was wished. Thus eight cases are proved.

## Another alternative (p. 77).

The square on the hypotenuse should be so described that it

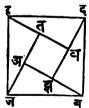


may not fall on the triangle. Produce ext and ext. From the points at and at an arrange drop perpendiculars at an arrange and at a composition. Then the square ext as the square on the sum of the two sides (ext and ext.), and the four triangles are equal. The sum of any

two of these triangles is equal to the rectangle of the two sides. The sum of the four triangles is equal to double the rectangle of the two sides. From the square at at, take away double the rectangle of the two sides. The remaining square at shall be equal to the sum of the squares of the two sides.† This was just what was wished.

# Another alternative (p. 77-8).

The square on the hypotenuse should be described on the



triangle. From the point of draw the perpendicular of one of one of the perpendicular of one of one

these triangles is equal to the rectangle of the two sides. The sum of the four triangles is equal to double the rectangle of

<sup>• (</sup>I. 12).

<sup>†</sup>  $(A T) = (AB + AJ)^2 = (AB)^2 + (AJ)^2 + 2AB$ . AJ. Subtract 2AB. AJ from both these equals.

 $<sup>\</sup>therefore (AT)-2AB\cdot AJ=(AB)^2+(AJ)^2.$ 

<sup>‡ (</sup>I. 12).

<sup>§</sup> अव=र्शः अज=र्ष=श्चाः अष—अज=र्शः—र्षः ∴अश्च=श्चाः ∴ श्वाः a aquare on अष्—अषः

the two sides. This together with the square on the difference of the two sides is equal to the sum of the squares on the two sides. Because if to this the square q we be added, then the square q we is equal to the sum of the squares on the two sides.

Prop. 48 p. 78.

The prop. may be proved indirectly also as under:-

Let A B C be a triangle in which the square on A C is equal to the squares on A B and B C. Then A B C shall be a right angle.

For if it be not a right angle, let it be an obtuse angle. From B draw B D at right angles to B C (I. 11). Make B D equal to A B (I. 3) and join D C. Then the square on D C is equal to the squares on D B and B C (I. 47) and consequently to

the squares on AB and BC, because DB is equal to AB (Cons.). Therefore DC is equal to AC (1Ax.). This is absurd (I. 24), because the angle ABC is greater than the angle DBC.

Digitized by Google

 <sup>4</sup> Triangles = 2AB·AJ.

<sup>4</sup> Triangles +  $(AB-AJ)^2 = 2AB\cdot AJ + (AB)^2 + (AJ)^2 - 2AB\cdot AJ = (AB)^2 + (AJ)^2$ .

#### BOOK II.

Prop. I. p. 79.

### Alternative proof.

The line a m is made up of the parts a a, a s, and s w.

Therefore the sum of the rectangles contained by the parts of this line and the line or must be equal to the rectangle contained by the line at and the whole line a w.

This alternative proof is based upon general principles.

Prop. II. p. 80.

### Alternative proof.

Make the line a equal to the line at a. Then the rectangle contained by the lines and a a is equal to the square on the line www. This is equal to the rectangles contained by the line and the parts of the line a a.\*

Prop. III. p. 80-1.

गुणरूपसण्ड-निजेकसण्ड mentioned before. The rectangle is the product of the whole ten which is the multiplicand and a part of it (निजेक्सपड) which is the multiplier (गुणह्य). Mss. A. and B. read तुरखण्ड for गुणरूपखण्ड. तुरखण्ड-निजेक्खण्ड (the aforesaid part ).

### Alternative proof.

Let the line z be equal to z z. The rectangle contained by इ and अ व is equal to that contained by अ व and a. But the rectangle contained by अब and बज is equal to the sum of the rectangles contained by the lines and as a

<sup>\*</sup> द=अव. ∴ द. अव=(अव). ³ But द. अव=द. अज+द. जव. ∴(अव)³ = अ व. अ ज+अ व. ज व.

and and a a. Of these two rectangles one is the rectangle contained as a and as a and the second, the square on as a.\*

The alternative proofs of Prop. 2 and Prop. 3 show that they are particular cases of Prop. 1.

Prop. IV. p. 81-2.

On this prop. Bil. has the following note:-

'This proposition is of infinite use chiefly in surd numbers. By help of it is made in the addition and subtraction, also multiplication in Binomials and residuals. And by help hereof also is demonstrated that kind of equation, which is, when there are three denominations in natural order, or equally distant, and two of the greater denominations are equal to the third being less. On this proposition is grounded the extraction of square roots. And many other things are also by it demonstrated.

## Alternative proof.

The rectangle w w. w w is equal to the sum of the square



on was and the rectangle was. was. Again the rectangle was a sis equal to the square on a sa and the rectangle as sa. sa s. t Then the sum of the rectangles of a. of or and of a. a which is equal to the square on we was is equal to the squares on we as and a and twice the rectangle a a. a a.

Prop. V. p. 82-3.

## Alternative proof.

म

The rectangle of g. g a is equal to the rectangle of g. g a, that is, to the rectangle ज व. द व and the rectangle of a. To both these equal rectangles add the square on str. Then what is the result? The rectangle war. a wand

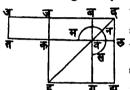
ज व. अव. ∴ज व. अज+(ज व )²=ज व. अव. or अव. ज व=अज. ज व+(ज व )². † (IL 3). ‡ (II. 3). § (IL 2). ¶ (II.1).

the square on signare equal to the rectangles signare, and signare of signare on signare. But the rectangle signare and the square on signare equal to the rectangle signare. Also the rectangles signare and signare equal to the square on signare. Therefore the rectangle signare and the square on signare equal to the square on signare.

Prop. VI p. 83.

# Alternative proof.

The rectangle se q. a q is equal to the rectangle se q. a q.



स which is equal to twice the rectangle ज स. § द द and the square on द त. To both these equals add the square on ज द. What is the result? The rec-स tangle क द. द द and the square on ज द

are equal to twice the rectangle ज व. व द and the squares on ज व and व द, which (i.e. twice the rectangle ज व. व द and the squares on ज व and व द) are equal to the square on ज द.॥

Prop. VII. p. 84.

## Alternative proof.

The square on was is equal to the squares on was and was and twice the rectangle was. was To both these equals add the square on was. Then the squares on was and was are equal to twice the square on was, twice the rectangle was.

on at a and the rectangle at at a are equal to the rectangle

```
* (II. 8). † (II. 2).

‡ अद. इव=अज. इव+जद. इव (II. 1).
= जव. इव+जद. इव (∵अज=जव).
∴ अइ. इव+(जद)²=जव. इव+जद. दव+(जद)².

But जद. दव+(जद)²=जव. जद(II. 3) and जव. जद+जव. दव
=(जव)² (II. 2);
∴ अद. इव+(जद)²=(जव)².

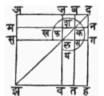
§ ∵अव=2जव. ¶ (II. 3). || (II. 4).

$(II. 4).
```

अ ब. ज ब.\* Therefore the squares on आ ब and ज ब are equal to twice the rectangle आ व. ज ब and the square on आ ज.†

Prop. VIII. p. 84-5.

The rectangle अ ब. ब ज is equal to the rectangle अ ज. ज व



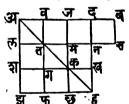
and the square on ज्ञाब.‡ But four times the rectangle आज. ज्ञाब is equal to twice the rectangle आज.ज्ञाब हं \$\) and four times the square on ज्ञाब is equal to the square on ज्ञाब .¶ Therefore four times the rectangle अव.ज्ञाब is equal to twice the rectangle

आ ज. ज द and the square on ज द. To both these equals add the square on आ ज. Then four times the rectangle आ ज. ज व and the square on आ ज are equal to the sum of twice the rectangle आ ज. ज द and the squares on आ ज and ज द. But the sum is the square on आ द.!

Prop. IX. p. 85-87.

Another alternative.

On आ द and ब द describe the squares द झ and द स.\$ Cut off



ज व equal to ज द.\*\* Join आह. Produce the line स न to the point छ. Draw ब फ and ज छ parallel to the line आह, and श ग क ख parallel to आ व.††

The figures व स and द स are equal.\$\$ Also the four figures

```
* ( II. 3 ).
† ( अव )<sup>9</sup>=( জাজ)<sup>2</sup>+( জাৰ)<sup>9</sup>+<sup>2</sup>সভা. জাৰ ( II. 4 ),
```

<sup>\$\$ ∵</sup>The line अव=दव (because अज=जब and व ज=जद).



but (ज व)2+अ ज. ज व=अ व. ज व (II. 3).

 $<sup>\</sup>therefore$  <sup>2</sup>(ज न)<sup>2</sup>+<sup>2</sup>अ ज. ज न=<sup>2</sup>अ न. ज न. ∴(अ न)<sup>2</sup>+(ज न)<sup>2</sup>=(अ ज)<sup>2</sup>+<sup>2</sup>अ न. ज न.

<sup>॥</sup> अ व. व ज=अ ज. ज व+(ज व)² (IL 3).

<sup>∴4</sup> अव. ৰ জ=4 अज. ज्व+4 (ज्व) $^2$ ; but 4 अज. ज्व=2 अज. ज्व, ज्व, and 4 (ज्व) $^2$ =(ज्व) $^2$  ∴ 4 अव. वज=2 अज. ज्व+(ज्व) $^2$ . Add (अज) $^2$  to both ∴ 4 अव. वज+(अज) $^2$ =2 अज. ज्व+(ज्व) $^2$ +(अज) $^2$ ; but (अज) $^2$ +(ज्व) $^2$ +2 अज. ज्व=(अव) $^2$  (1I. 4) ∴ 4 अव. वज+(अज) $^2$ =(ज्व) $^2$ .

<sup>\$(</sup>I. 46). \*\*(I. 3). ††(I. 31).

दम, जत, उन and ज द are equal. Similarly also the figures ज इ, ज ज ज ज ज ज क द are equal. The sum of the figures ज इ, and ज इ, makes up five figures and they are equal to the squares on अ ज and ज द. The remaining five figures are equal to the preceding five figures. The ten figures together make up the squares द इ and द द. Therefore the squares on अ द and द व are equal to twice the squares on अ ज and ज द. This is just what we required.

### Another alternative.

From the line wa, cut off wag equal to wa. Then twice the rectangle was. wag and the square on wag are equal to the squares on wag and wag is equal to wag. Therefore twice the rectangle was. wag and the square on way are equal to the squares on way and wag. Add the squares on way and wag to both. Then twice the rectangle was. wag and the squares on way, wag, and way, which

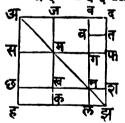
of twice the square on war and twice the square on war.

Prop. X. p. 87-89.

## Alternative proof.

are equal to the squares on w a and a a, are equal to the sum

On wa and a a describe the squares a and a a. Draw



म छ, and न स are equal. Similarly the figures द् न, फ न, स इ and न क are also equal. But the sum of the figures ज स. and फ क makes five of the preceding figures and is equal to the squares on अ ज and ज द; the remaining five figures are equal to these five figures; and all these figures are equal to the sum of the figures द इ and द ब. Therefore the sum of the squares

<sup>\* (</sup>I. 3), † (II. 7). ‡ ∵(সাৰ)²=(সাস)²+(সাৰ)²+²সাসা. সাৰ(II. 4), ৪ (I. 46). ¶ (I. 31).

on आ द and ब द is equal to twice the square आ आ and twice the square on आ द.

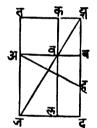
#### Another Alternative.

Divide the line ज द into two in the point ज.\* Then twice the rectangle ज ज. ज द and the square on ज ज व and ज द । ज द or twice the rectangle ज ज. ज द and the squares on ज ज and ज द । To both these equals add the sum of the squares on ज ज व and ज द. Then the sum of the squares on ज ज व and ज द. Then the sum of twice the squares on ज ज व and ज द shall be equal to the sum of twice the square on ज ज ज and twice

Prop. XI. p. 89-91.

the square on ज द.

Describe the square अ द § Bisect ब द in the point इ.¶ Join



the line हुआ. Make हुझ equal to हुआ. Join जझ.\$ By this line आ व is divided into two such parts (as are required) in the point व.

Proof.

Draw the line आत parallel to the line आ आ Produce the line आ आ so that it may meet the line आत in the point त. Again from the point ज draw the line ब क स parallel to ब द : †† The

figures त ब and ब द are equal to one another.# To both these add the figure अ छ. Then the figure त छ is equal to the figure अ द. ब द being bisected in ह and ब झ being joined to it, it may be proved that the rectangle द झ. झ ब is equal to the figure अ द,§§ and consequently to the rectangle ज त. त इ.¶¶

```
* Scil. and produce it so that ज == अ ज.
                                                      + (II, 7).
‡ 2 জাৰ. জাৰ্+(ৰাৰ্)<sup>2</sup>=(জাৰ)<sup>2</sup>+(জাৰ্)<sup>2</sup> (II. 7); but জাৰ=জাজা.
∴ 2 সামা, সাহ্+( বাহ)²=(সামা)²+(মাহ)². Add to both (সামা)²+(মাহ)².
∴ 2 জা আ. আহ্+(ৰহ্)²+(জাজ)²+(আহ্)²=৫ (জাজ)²+2 (আহ্)²; but
      ( अ द )<sup>2</sup>=( अ অ )<sup>2</sup>+( অ द )<sup>2</sup>+2 अ ज. অ द ( 1I. 4 ).
∴ (अद)²+(वद)²=2(अज)²+2(जद).²
                                                              ¶ (I. 10).
                                            ** (I. 81).
                                                              †† (I. 31).
               $ Scil. meeting জাৰ in ৰ.
|| ( I. 3. ).
                  §§ ∵ दझ. इन+(नह)2=(हइ)2 ( II. 6 ).
11 (I. 43).
                        =(आह)2∵हॹ=आह(Con.).
                        =(अव)2+(वह)2(I.47).
```

Take away (वह)<sup>2</sup> from both these equals. ∴द्रम, मृब=(अव)<sup>2</sup>=अद. ¶¶ ∵अद has been proved equal to तह. By this proof the equality of त क and स व is settled and the equality of the lines त क and त ब is also proved.\* त व has been proved equal to व द. व द is the rectangle अ व. व व and this is equal to the square on अ व.†

It will be easily noticed that this Prop. gives a geometrical construction for the solution of a particular quadratic equation. The solution is required in the construction of a regular decagon.

On this Prop. depends the demonstration of the well-known 10th prop. of the 4th Book. Many uses of a line thus divided will be found in Book XIII.

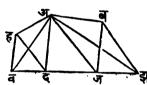
Prop. XIII. p. 91-92.

Generally three cases of this prop. are given; Euclid gives only the first case and the second and third cases are supplied by Simson. Vide Tod. p. 270.

Prop. XIV. p. 92-93.

#### Alternative Proof.

Describe a triangle equal to the given figure. Let a a a a-



ह be the figure. In this figure make triangles, thus one triangle is अ व ज, another is अ ज द, and the third अ-दह. These are the triangles formed. Again form a triangle equal to the sum of the triangles अ व ज and अ-

ज द in the way mentioned. Thus:—Produce the line द ज. From the point ज draw the line ज झ, parallel to the line अ ज.! These lines shall meet in the point झ. Again draw the line अ झ. Then the triangles अ ज ज and अ झ ज are equal. Therefore the triangle अ झ द is equal to the sum of the triangles अ ज ज and अ ज द.

 $<sup>\</sup>parallel$  (I. 37): they are upon the same base  $\Im$  and between the same parallels  $\Im$  and  $\Im$   $\Im$ .



<sup>\* ∵</sup>द्झ. इ व=जत. तक; but द्झ=जत ( I. 34 ).

<sup>∴</sup>इ व=त क; but इ व=त अ ( I. 34 ).

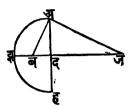
<sup>∴</sup>तक=तअ.

<sup>† ∵</sup>त व is the square on अ व, त क and त अ being proved equal.

<sup>1 (</sup>I. 31).

Again in the same way describe another triangle equal to the sum of the triangles was a and was. Proceed to describe a triangle in the same way so long as it may be equal to the assumed figure. Now a square equal to the triangle should be described. Thus:—

In the triangle at a si, draw from at the perpendicular at a



on a s.\* Produce this perpendicular so far as a s may be equal to half of a s. With a s as diameter, describe the semi-circle s s s. This circle shall meet the line s in the point s. Then a shall form a side of the square which is to be described. Because the square on a s is

equal to the rectangle sq, दह.† This rectangle sq द दह is equal to the rectangle contained by sq द and half sq sq; and the rectangle contained by sq द and half sq sq is the area of the triangle. This is just what we wished.

'By the aid of this Prop. we may determine a line such that the square on that line is equal in area to any given rectilineal figure or we can square any such figure. As of two squares that is greater which has a greater side, it follows that now the comparison of two areas has been reduced to the comparison of two lines.

The problem of reducing other areas to squares is frequently met with among Greek Mathematicians. We need only mention the problem of squaring the circle.

In the present day the comparison of areas is performed in a similar way by reducing all areas to rectangles having a common base. Their altitudes give them a measure of their areas.' Ency. Bri. p. 376.

<sup>† ∵</sup>By completing the circle and producing श्रद to meet the circumference in भ, it can be proved as in Book III. Prop. 3 and Prop. 35, that श्रद²= श्रद. दम and श्रद.दम=अद.दह∴श्रद²=अद.दह.



<sup>\* (</sup> I. 12 ).

#### BOOK III.

Prop. I. p. 94.

L. 18-19. omit समकोणक्षेत्रद्वयं स्यात्. It is omitted in V. and B. From this prop. it follows that if two chords intersect each other so as to form four right-angled figures and if one of them bisects the other (in other words, if one chord bisects another at right angles), then one of the chords passes through the centre. It also follows that a perpendicular issuing from the extremity of half a chord passes through the centre.

Prop. III. p. 95-96.

## Alternative proof.

If the line of g bisects the chord of g, but is not perpendicular to it, let it be assumed that

from the point g, g a is the perpendicular to the chord a q.
Then by the meeting of the two lines g a and a g two right

angles are formed and  $\varepsilon$  also bisects the other line and still neither of the two passes through the centre. This is absurd.\*

If the line  $\pi \xi$  is a perpendicular on the chord  $\pi \xi$  but does not bisect it, then let it be assumed that  $\pi \xi$  is bisected in the point  $\xi$ . From this point  $\xi$  draw the line  $\pi \xi$  parallel to the line  $\pi \xi$ . Then this line  $\pi \xi$  shall be perpendicular to the line  $\pi \xi$ . One line bisects another at right angles and yet neither of them passes through the centre. This is absurd.

Prop. IV. P. 97.

### Alternative proof.

From the point a draw the perpendicular a so on the line a and a so on the line a su. Then these two perpendiculars shall meet at the centre. Then the point a shall be the centre of the circle. But the centre is elsewhere. Therefore this is incorrect. What we wish to

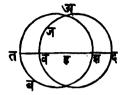
\* (Cor. 1st. Prop.) † (I. 81). ‡ (I. 29). § (I. 11).

prove is alone proper.

Prop. V. p. 98.

Another alternative (p. 101-2.)

Produce the line of a to a and a. Now a si is less than a a.

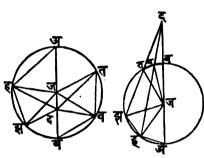


and therefore shall be also less than the line दूत.\* It (दूस) is equal to दूत.† But दूत is greater than दूत.‡ This is absurd.

Prop. 8, p. 99-102.

Another alternative (p. 101-2).

In the circle was, wa is the centre. a is assumed as a point



(within or without the circle other than the centre). The greatest line passing through the centre is द अ. The smallest line not passing through the centre is द अ. In one and the same direction of the greatest line draw the lines द  $\mathbf{z}$  and

दश्न. Join the lines अह and हज. Then the angles ज अह ह and ज ह अ are equal. Therefore the angle द ह आ is greater than the angle द अह. Therefore the line द आ is greater than द हा। Again draw the lines ह झ and ज झा. Then the angles ज ह झ and ज झ ह are equal. The angle द ह झ is less than one of them (ज ह झ) and the angle द झ ह is greater than one of them (ज झ ह). Therefore द ह is greater than द झा. Again on one side of the line द च draw the lines द च and द ता. Join च च and च ता and also च ज and ता ज. Then the angles ज च च and ज च च are equal. Therefore the angle द च च is less than

<sup>\*</sup> Because the radii ह द and ह व are equal.

<sup>†</sup> Because 5 is assumed as the center of both the circles.

<sup>‡</sup> ছম being equal to ছব and less than ছব, ছব is also less than ছব. This is abourd.

§ (I.5).

¶ Because the angle ব ছ আ is greater than the angle আছ আ.

|| (I. 19).

\$ Scil. therefore the angle ব আছ is greater than বছল.

\*\* (I. 19).

†† (I. 5).

the angle q = q. Therefore q = q is less than q = q.\* Similarly q = q may be shewn to be less than q = q. If on two sides q = q two equal angles are made, then the two sides subtending the two angles shall be equal; and there shall be no third line equal to these two. Why? Because two lines on one side cannot be equal.

This alternative proof is a common proof of the 7th and 8th propositions.

Prop. 9 p. 102-3.

Two Proofs are given, one, direct and the other, indirect. The direct proof is as under:—

Let 3 be the point in the circle at a and let 3 a, 3 a and 3-



ह be equal. Join ब द and ब ह and bisect the lines in the points झ and च ड Join ज झ and ज द. Then the sides of the triangles ज ब झ and ज द झ are equal. Then the angles also are equal to one another. Therefore the two angles at झ are equal. Then the line ज झ bisects the line ज द at right angles.

Therefore  $\mathfrak{A}$  as shall pass through the centre.\*\* Produce this line to the points  $\mathfrak{A}$  and  $\mathfrak{A}$ . Similarly it may be proved that the line  $\mathfrak{A}$  a passes through the centre. Produce the line  $\mathfrak{A}$  also to the points  $\mathfrak{A}$  and  $\mathfrak{A}$ . Then the lines  $\mathfrak{A}$  and  $\mathfrak{A}$  shall pass through the centre. These two lines shall not meet in a point other than  $\mathfrak{A}$ . Therefore  $\mathfrak{A}$  is the centre of the circle.

This direct proof is found in some recent English editions of Geometry.

Prop. 10. p. 103-4.

This is proved in two ways. One of them (the second) is found in all English works. The other is as under:—

<sup>\* (</sup>I. 19). When the point ব is outside the circle, ব ৰ may be shewn to be less than ব্ৰ as follows:—জব+ব্ৰ>জৰ+ব্ৰ (I. 20). but জব=জৰ:: ব্ৰ>ব্ৰ. or ব্ৰ<হৰ.

<sup>†</sup> Of the line passing through the center.

f Scil. at the center.

<sup>§ (</sup>L. 4).

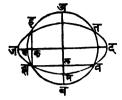
<sup>¶</sup> Of the greatest or the shortest line.

<sup>\$ (</sup> I. 10 ).

<sup>[ (</sup>I.8).

<sup>\*\* (</sup>Cor. III. 1).

Two circles cannot cut one another in more than two points.



If they do, then let the two circles be अ-ब and इ. a. Let them cut one another in the points इ, झ, च, and त. Join इ झ and झ ब. Bisect them in the points क and ऊ.\* From these two points draw the perpendiculars क इ and ऊ अ.† These two perpendiculars shall pass through the

centre.. By these two perpendiculars the chord of the arcs इ.स. इ. and इ.स. इ. of the circle आ इ. and the chord of the arcs इ.स. इ. and इ.स. इ. of the circle इ.स. are bisected. Then the two circles have the same center. This is absurd.

Prop. 11. p. 104.

Propositions 11 and 12 in English books are given as one in the text.



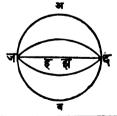
झ is not the centre of the circle आव. । From this are drawn two lines झ आ and झ व to the circumference of the circle. The line झ व is opposite the centre, but it does not pass through the centre. Therefore it is less

than **\mathbf{q}** \mathbf{q}.\|\ \text{Therefore it is also less than \mathbf{q}} \mathbf{q}.\\$ This is absurd. What we wished to prove was alone proper.

Prop. 12 p. 105.

## Alternative proof.

g is the centre of the circle as a. Then gs cannot be the



center of that circle. Therefore भ ज is greater than भ र.\*\* भ is the centre of the circle ज र. Therefore भ ज and भ र are equal. This is absurd.††

<sup>\*(</sup>I. 10). †(I. 11). ‡(Cor. III. 1). §(III. 5).

<sup>¶</sup> Because it is the center of the smaller circle w wand these two circles cannot have the same center (III. 6). || (III. 7).

<sup>\$</sup> Because 朝 v is equal to 朝 रा, 朝 being the center of the smaller circle.

<sup>\*\* (</sup>III. 7).

Again let a be the centre of the circle of a. Join the line ga. This shall pass through the points of and a.\* This is absurd. Prop. 13 p. 106.

### Alternative proof.

If ज द and ह झ be equal, but व त and व क be not equal, then



let a n be greater than a s. Then the angle signal be greater than s and the angle shall be greater than s.† Then the angle signal be less than the angle signal a shall be less than the angle signal. The two sides signal a signal a signal be less than the sides sides signal a signa

than F M. S This is absurd.

If व त and व क are equal, but ज द and ह झ be not equal, then त द and क झ shall not also be equal. Then their squares also shall not be equal. But the squares of व त and व क are equal. Therefore the squares of व द and व झ shall not be equal. But they are equal. This is absurd.

Prop. 14 p. 107-8.

Two procfs are given, of which one is almost the same that is found in English books. They are as under:—

## First proof.

Let sq a be the given circle, and sq z its diameter. The chord



हु झ is nearer to the center than वत, which is more remote. क is the center. From the center draw the perpendiculars क स and क स.

The perpendicular क स is less than क स. || From क स (the greater) cut off क न equal to क स (the less).\$ Through the point न draw the

line न स न parallel to ज द.\*\* The line स न shall be equal to

<sup>\* (</sup> III. 11 ).

<sup>† (</sup>I. 25).

<sup>1 (</sup>I. 32 and 3 Ax.)

<sup>§ (</sup> I. 24 ).

<sup>¶</sup> Because they are halves of জ ব and ছ জ ( III. 3 ) and halves of unequals are unequal.

<sup>🏿 🗸</sup> श being nearer the center than व त.

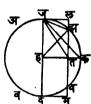
<sup>\$ (1.3).</sup> 

<sup>\*\* (</sup> I 31 ).

the line g m.\* Join a m, a n, a and a n. Then the sum of a m and n a, which is equal to a n, shall be greater than m n, and (consequently) greater than g m. Again in the triangles m a n, and u a n, the sides a m, a n and a n are equal. But the angle n a m is greater than the angle n a m. Therefore m n, which is equal to g m, is greater than u n. § g m is proved to be greater than a n. This was just what we required.

### Second proof.

Let sq a be the given circle sq a its diameter, and a its center.



Let the chord  $\mathbf{x}$   $\mathbf{z}$  be parallel to the chord  $\mathbf{z}$ . On it ( $\mathbf{x}$   $\mathbf{z}$ ) drop a perpendicular from the point  $\mathbf{x}$ . This perpendicular shall not meet the chord in the point  $\mathbf{x}$ . Why? Because if  $\mathbf{z}$   $\mathbf{x}$  is joined, the angles  $\mathbf{x}$  and  $\mathbf{x}$  in the triangle  $\mathbf{z}$   $\mathbf{x}$   $\mathbf{x}$  shall be equal. Then these two shall be right angles. This is absurd. Nor

shall the perpendicular fall between the points of and of like of Why? Because of of shall be a right angle.\*\* If of is joined and produced to of and of sis joined, then the angle of of of the angle of of the angle of of the angle

<sup>\*\*</sup> It being equal to the alternate angle সাবস্থা তা সভাস্থা, as ব and ভ will coincide when the perpendicular from সাতা স্থাৰ falls between স্থান ব as সাব.

†† (I.5).

‡‡ Because হ সাব is a right angle.

<sup>§§</sup> বহ is parallel to বৰ and বৰ falls upon them, therefore the angles হ বন ব and বৰ are together equal to two right angles (I. 29). But হ বৰ is a right angle; therefore বৰ ব is also a right angle. Thus হ ব ব is less than a right angle, being less than ব ব ব, and greater than an obtuse angle, being greater than ই ক ব (I. 16).

fore the perpendicular shall fall outside as  $\pi$   $\epsilon$ . Similarly the perpendicular  $\epsilon$   $\pi$  from  $\epsilon$  shall fall outside. The line  $\pi$   $\epsilon$ , equal to  $\epsilon$   $\pi$ , shall be greater than  $\epsilon$   $\pi$ . In the very same manner the line  $\epsilon$   $\pi$  shall be greater than another line, more remote (from the center), if it be parallel to it. If it be not parallel, it should be made parallel. This may be proved in the manner shewn above.

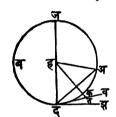
Prop. 14. p. 108-9.

स्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितो वृत्तान्तर्गतकोणः = The angle within the circle between the diameter and the circumference.

प्रान्तजनित: कोण: = The angle formed between the diameter and the perpendicular drawn to it from its extremity, the angle at the point of contact.

### Alternative proof (p. 109).

It has already been proved by us that of the lines drawn



from a given point on a given straight line, the perpendicular is the least. Therefore whatever line is drawn from the point g on g st shall fall outside the circle. Why? Because it shall be greater than half the diameter (g g in this case). Therefore the

perpendicular  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  shall not fall within the circle.\* Again whatever line shall fall between the perpendicular  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  and the diameter  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  shall necessarily fall within the circle (like  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$ ). Why? Because the perpendicular that shall be drawn from the point  $\mathbf{q}$  on this line ( $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$ ) shall be less than half the diameter ( $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$ ).† Therefore no line shall fall between the perpendicular  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  and the circumference.

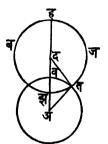
<sup>\*</sup> All the lines from \( \) on \( \) falling outside the circle, \( \) \( \) must fall outside.

<sup>+</sup> Because ₹ is not a prependicular on this line and therefore greater than any perpendicular from ₹ on this line. But ₹ ₹ is equal to ₹ ₹. Therefore the perpendicular from ₹ on this line shall be less than ₹ ₹. But ₹ is a point on the circumference. Therefore the perpendicular must meet the line (₹ ¾) within the circle, and therefore ₹ ¾ shall fall within the circle.

Prop. 16. p. 110.

Alternative proof.

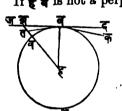
Join the line of and produce it to g. Describe a square



equal to the rectangle arg. arg. w g cut off w g equal to a side of the square+ From the center wand radius was describe the circle ara. Join wara. This shall be the tangent required. Why? The sum of the rectangle gray. argr which is equal to the square on wat and the square zn which is equal to the square a & is equal to the square on was. Therefore the angle

Therefore war touches the circle. अतृ ह is a right angle.॥ Prop. 17. p. 110-1.

Alternative proof (p. 111).



If g a is not a perpendicular on a s, then from the point a draw the perpendicular a son a g. Then this perpendicular also shall touch the circumference in the point , and it shall fall between the first perpendicular and the circumference on one side of a side of च ट. This is absurd.

The line of argument adopted is as under:—If to g a, a radius, a s, a tangent drawn from the point of contact a be not perpendicular, let a a be drawn perpendicular to it. there are two tangents from **w**, which is absurd. (III. 15).

Prop. 22 p. 113.

The prop. teaches us that there cannot be two unequal similar segments on one line on the same side of it.

It can alse be proved that there cannot be two unequal similar segments on one line on the opposite sides of it.

<sup>\* (</sup> II. 14 ). + ( L 3 ).

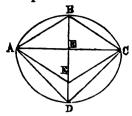
<sup>‡</sup> Because it is equal to अ व and अ व is equal to अ त.

<sup>§</sup> द झ being equal to त द.

ৰু হ জাজাল+(ৰ হা $)^2=($ ৰ জা $)^2$   $(\Pi.6)$ ; but হ জা. জাল=(জাৰ $)^2$  and (ৰ হা $)^2=($ ৰ- $\pi$ );<sup>2</sup>...(अ व)<sup>2</sup>+( $\pi$  द)<sup>2</sup>=(द अ)<sup>2</sup>..(अ  $\pi$ )<sup>2</sup>+( $\pi$  द)<sup>2</sup>=(द अ)<sup>2</sup>.

<sup>| (</sup> L. 48 ). \$ ( III. 15 Cor. ).

If possible let there be two unequal similar segments A B C



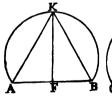
and A D C on the same line A C and on the opposite sides of it, and let A D C be the greater of the two. Bisect A C in E (I. 10), and from E draw E B and E D at right angles to A C (I. 11). Join A B, B C, A D and C D. The segment A D C being greater than

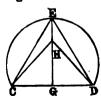
the segment A B C, the perpendicular D E is greater than the perpendicular B E. From D E cut off E F equal to E B (I. 3). Join A F and C F. The triangles A B E and A E F are equal and so are the triangles B E C and E C F (I. 4). Therefore the angle A B E is equal to the angle A F E and the angle E B C to the angle E F G. Therefore the whole angle A B C is equal to the whole angle A F C (2 Ax.). But the angle A F C is greater than the angle A D C (I. 21). Therefore the angle A B C is also greater than the angle A D C. But it is equal to it, as the segments are similar (Hyp.). This is absurd. Therefore there cannot be two unequal segments &c. Q. E. D.

Prop. 23 p. 113-4.

The prop. is proved in another way as follows by Pelitarius:—

Let the similar segments A B K and C D E be upon equal





straight lines A B and C D. Then, they shall be equal. For, if they are not equal, let CED be the greater. Bisect A B and C D in F and G respectively (I. 10) and

from F and G draw F K and G E at right angles to A B and C D respectively (I. 11). Join A K, K B, C E and E D. Then the segment C E D being greater than the segment A K B, the perpendicular G E is greater than the perpendicular F K. From G E cut off G H equal to F K (I. 3). Join C H and H D. In the triangles A K F and C G H, the angle C H G may be shown to be equal to the angle A K F and similarly the angle D H G may be proved to be equal to the angle

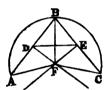
Digitized by Google

BKF(I.4). Therefore the whole angle CHD is equal to the whole angle AKB (2Ax.). But the angle CHD is greater than the angle CED (I.21). Therefore also the angle AKB is greater than the angle CED. But they are equal, because the segments are similar (Hyp.). This is absurd. Therefore similar segments of circles on equal chords must be equal. Q. E. D.

Prop. 24 p. 114-5.

### Another proof.

Let A B C be the circumference of the given segment. In

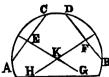


it take any three points A, B, and C. Join A B and B C. Bisect them in the points D and E (I. 10) and from D and E draw D-F and E F at right angles to A B and C D respectively (I. 11). Join D E. Then as the angles B D F and B E F are right

angles (Cons.), and D E divides them, the angles made by D-E with the two perpendiculars are less than two right angles. Therefore the perpendiculars shall meet (12 ax.). Let them meet in F. Now because D F bisects A B at right angles, the center of the circle is in the line D F (III. 1 cor.). For the same reason the center of the circle is in E F. Therefore F, the intersection of the two lines is the center of the circle.

Compane gives another way to find out the circle, which is almost the same as above:—

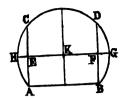
Let A B be the given segment. In it take only two lines A-



C and B D. Bisect them in E and F respectively (L 10) and from E and F draw E G and F H at right angles to A C and B D (I. 11). Let the perpendiculars cut one another in K. Then

the center of the circle is in either of the perpendiculars E G and F H (III. 1 cor.). and therefore, the intersection of the two lines is the center.

But if E G and F H do not cut one another but form one



straight line as G H, then too the center of the circle shall be in both the perpendiculars E G and F H (III. 1 cor.). therefore K, the bisection point of G H, is the center.

Prop. 28 p. 116-7.

Para: = Construction.

Prop. 30 p. 117-8.

वृत्तसण्डपासी यः कोण:-The angle in a segment.

## Alternative proof (p. 119).

In the triangle of a a, the angle a is a right angle. With of a



as diameter describe a circle. It shall pass through the point  $\mathbf{z}$ . If it does not pass through it, let it be otherwise. Produce  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  to meet the circumference

in a. Join a a. Then the exterior and interior angles of the triangle shall be equal.\* This is absurd.

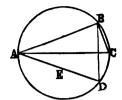
This alternative proof is the converse of the first part of the Prop.

Another way of putting the converse of the first case is as follows:—

If a right-angled triangle be inscribed in a circle, the side opposite to the right angle shall be a diameter of the circle.

<sup>\*</sup> The angle আৰ্থ, the exterior angle of the triangle ৰ বাই is a right angle ( Hyp. ) and the angle আবাৰ is a right angle, being an angle in a semi-circle.

Let the right-angled triangle ABC be inscribed in the



circle A B C; then the side A C, which is opposite to the right angle A B C, shall be a diameter of the circle.

For if it be not a diameter, let E be center of the circle. Join A E and produce it to meet the circumference in D. Join D B. Then the angle A B D is a

right angle, being an angle in a semi-circle. But the angle A-B C is a right angle (Hyp.). Therefore the angle ABD is equal to the angle ABC. This is absurd (9 Ax.). Therefore E is not the center of the circle. In the same way it may be shewn that no other point outside the line AC is the center. Therefore AC is a diameter of the circle. Q. E.D.

Prop. 31 p. 119-20

Alternative proof (p. 120).

From the point st\* draw st st parallel to a st. Join st st.



and a a... Produce a a to meet a a in a.

The line a a is a perpendicular on a and a a...

This perpendicular bisects the line a a...

This perpendicular bisects the line a a...

The a a is equal to a a...

Therefore the angles a a a and a a a...

Therefore the angles a a... a and a a...

shall be equal. But the angle इ इ ज is equal to the angle इ-इ इ.\$ Therefore the angle झ ज व is equal to the angle झ व इ.



<sup>\*</sup> Any point on the circumference.

<sup>† (</sup>I. 31).

<sup>‡ 4</sup> is the center of the circle.

<sup>§</sup> The angle কৰ is a right angle (III. 17) and is equal to the alternate angle ৰ ক জ (I. 29).

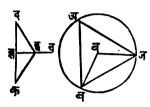
<sup>¶ (</sup>III. 8).

<sup>| (</sup>I.4).

Prop. 33 p. 121-22.

### Alternative proof.

Let a be the center of the circle. If the given angle be a right angle draw the diameter from any point a on the circum-



ference. The diameter shall cut the circle into two equal parts.\* When the given angle is not a right angle, produce the line of the point of the two angles of one is an acute angle. At the point of in the straight line of the make the

angle sets a equal to the angle a set; Make set equal to a set; Join set. At the point set make the angle a set equal to the angle sets. Join a set. Then the angle a set shall be equal to the angle a set. This (the angle a set) is equal to the angle sets. But the angle set is equal to the angle sets. But the angle set is equal to the angle sets. This angle at the center is equal to the angle at the circumference in the segment sets. Therefore in this segment there shall be an angle equal to the angle a set. In the other segment there shall be an angle equal to the angle a set. Q. E. D.

Prop. 34. p. 122-4.

There are five cases of this Prop:—

- (1) When the two chords are diameters,
- (2) When one of the two chords is a diameter and cuts at right angles the other chord that does not pass through the center;
- (3) When one of the chords passes through the center, but does not cut the other which does not pass through the center at right angles;

<sup>\*</sup> Each part shall thus be a semicircle, and the angle in a semicircle, being a right angle, shall be equal to the given angle.

 $<sup>\</sup>dagger$  (I. 23).  $\dagger$  (I. 3). § (I. 23).  $\P$  (I. 5).  $\|$  (I. 5).

<sup>\$ (</sup> I. 32 and 3 Ax. ),

- (4) When neither of the two chords passes through the center and when one of them bisects the other;
- (5) When neither of the two chords passes through the center and when one of them neither bisects the other nor cuts it at right angles.

The first three cases are very simple. The other two cases are as under:—

4th case.

If of the two chords neither is a diameter, then if the line



अ ज meets the other line (ब द) at the point of its bisection, from the point झ draw the perpendicular झ द on अ ज. Join झ ज and झ द. The line झ त (i. e. the perpendicular from झ on द व) shall coincide with झ इ.

Then the rectangle wg. g w together with the square on wg is equal to the square on www.† To both these (equals) add the square on www. Then the rectangle www.g w together with the squares on www. which are equal to the square on www. It is equal to the squares on www. The square on www. The square on www. Which is equal to the square on www. It is equal to the square on www. Then the rectangle www. which is equal to the square on www. Then the rectangle www. www. Then the rectangle www. www.

5th Case.

If of the two chords none is a diameter, nor does one meet



the other at its point of bisection, nor does it fall as a perpendicular upon the other, then the perpendiculars at a and at a fall on one side of the line at a or on two sides. Then the rectangle at a together with the square on a side square on a side.

<sup>\$ (</sup>II. 5).



<sup>\* (</sup> I. 12 ).

<sup>+ (</sup>II.5).

<sup>1 (</sup>I. 47).

<sup>§ (1.47).</sup> 

<sup>[ (</sup>I. 47).

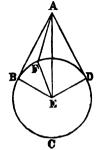
<sup>¶ ₹</sup> being the bisection point of ₹ ₹.

Prop. 35 p. 124-5.

The following three corrolaries follow from this Prop .:-

- (1) If from a certain point without a circle there be drawn any number of lines cutting the circle, the rectangles contained by every one of them and its outward part are equal to one another.
- (2) If from a certain point without a circle two tangents be drawn, they are equal to one another.
- (3) From a point without a circle only two tangents can be drawn.

For if more tangents can be drawn, draw A B, A F, and AD



touching the circle. Then the angles ABE, AFE and ADE are right angles (III. 17). Therefore the angle AFE is equal to the angle ABE, which is absurd, because it is greater than ABE (I. 21).

Prop. 36 p. 125-6.

### Alternative proof.

Join as as (as is the center) and as as. From the point as



draw the perpendicular  $\mathbf{x}_1 \mathbf{z}_2$  on  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$ . Then the rectangle  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$  together with the square on  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$  and  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$  together with the square on  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$ . Then the rectangle  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$  are gether with the square on  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$ , which is equal to the squares on  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$  and  $\mathbf{z}_3 \mathbf{z}_3$ , that is, together

with the square on my sq which is equal to the square on my sq, is equal to the square on my sq, which is equal to the squares on my sq and my sq. But the rectangle my sq. sq sm is equal to the square on my sq. Therefore the squares on my sq and my sq are equal to the square on my sq. Therefore the angle my sq is a right angle. Therefore the line my sq touches the circle, and does not cut it. This was just what was wished.

<sup>\* (</sup>I. 12). † (II. 6).

‡ (I. 47). § (I. 47).

¶ (Hyp.).

‖ वर्. इज+(जव)²+(वक)² = (वर)² (II. 6).

वर्. इज+(जव)²+(वक)²=(वर)²+(वक)².

∴वर. इज+(कज)² = (कर)².

but वर. इज=(इज)².

∴(इज)²+(क्ज)²=(कर)².

∴(इज)²+(क्ज)²=(कर)².

([(ज)²+(क्ज)²=(कर)².

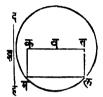
§ (III. 15).

#### BOOK IV.

Prop. I. p. 127.

### Alternative proof.

Bisect the line a g in m.\* Let a be the center of the circle.



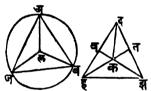
From a draw on both the sides the lines are and a a equal to a m.† From the points a and a draw the perpendiculars are and a m.‡ Join the line are. This line is a chord equal to the given line. Why?

Because it is equal to a s and therefore to a s.

Prop. II. p. 128.

### Alternative proof.

Bisect the two sides & and & all which contain the acute



angle  $\mathbf{z}$  in the points  $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$ . From the points  $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$  draw two perpendiculars (to the lines  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  and  $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$   $\mathbf{z}$  . These

three lines shall be equal. Let us be the center of the circle. Traw any line us w. At the point us make the angle was a equal to the angle us us; The remaining angle us us shall be equal to the remaining angle us us; Join the lines us us us and us. Then the triangle us us us shall be the triangle required.

Proof.

The angles & wa and & aw are equal. II Also the angles & again a grare equal.

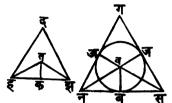
* (I. 10).	† (I. 3).	
‡ (I. 12).	§ ( I. 34 ).	
¶ (L 10).	# (I. 12).	\$ (I.4).
** (III. 1 ).	†† ( I. 23 ).	
‡‡ (L 23).	§§ ( I. 32 and 3 Ax. ).	
¶¶ (L5).	(L 4).	

equal.\* Therefore the angles of and of and of are equal. Similarly the remaining angles may be shown to be equal.†

Prop. III. p. 128-30.

### Alternative proof.

Bisect the angles at g and g by two lines. These two lines



shall meet in the point a. From the point a draw the perpendicular as on the side gras Draw as (a is the center). At the point a make the angle as a gras From

the point a draw the tangent. Produce this line and also a a so as to meet in a. Therefore the angle a a si sequal to the angle a a a. At the point a make the angle a a a equal to the angle a a. Produce the line a so as to meet a a in the point a. Therefore the angle a a si sequal to the angle a a. Again from the points a and a draw tangents to the circle†† and produce them to the point a. Therefore a a a is the triangle required.

#### Proof.

Join आ द. The side द आ is equal to द द. द न is common to both the triangles (न द अ and न द द). The angles at आ and द

<sup>\* (</sup>Cons.).

<sup>†</sup> The angles সভাৰ and বৃদ্ধ being equal (Cons.), the remaining angles ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal to the remaining angles ভাষাৰ and ভাষাৰ and ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal (I. 5) and so are the angles ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal (I. 5) and so are the angles ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal and so the angles ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal and be proved to be equal and also the angles ভাষাৰ and ভাষাৰ and ভাষাৰ are equal and be proved to be equal and also the angles ভাষাৰ and end of end of

<sup>‡ (</sup>I. 9). § (I. 12). ¶ (I. 23). || (III. 16).

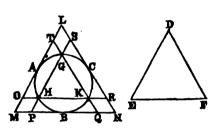
<sup>\$</sup> The angles at ₹ and ₹ are equal (Cons.) and the angles at ₹ and ₹ are equal; because the angle ₹ is a right angle (III. 17) and the angle ₹ is a right angle (Cons.). Therefore the remaining angles at ₹ and ₹ are equal (I. 32 and 3 Ax.).

<sup>\*\* (</sup> I. 23 ).

are right angles.\* Therefore the angles अनव and वनव are equal.† The angle अनव is equal to the angle द इस.‡ Similarly the angle ज सव is equal to the angle द इस. Therefore the angles द and n are equal.

Pelitarius shews another way of describing a triangle about a circle equiangular to the given triangle.

In the circle A B C, inscribe the triangle G H K equiangu-



lar to the triangle DEF (IV. 2), so that the angles at G, H, and K may be respectively equal to the angles D, E, and F. Draw LM, MN, and NL respectively parallel to GH, HK, and KG and touching the circle

in the points A, B, and C respectively. These three tangents shall meet in the points L, M, and N, which can easily be proved by producing the lines G H, H K, and K G on both the sides until they cut the lines L M, L N, and M N in the points O, P, Q, R, S, and T. Then the triangle L M N, circumscribed about the circle, shall be equiangular to the given triangle. For it may be proved to be equiangular to the triangle G H K by the property of parallel lines. Therefore it is equiangular also to the triangle D E F.

Prop. IV. p. 130.

It follows that the three bisectors of the interior angles of any triangle meet in a point and this is the center of the circle inscribed in the triangle.

<sup>\* (</sup>III. 17).

 $<sup>+ (\</sup>pi \pi)^2 = (\pi \pi)^2 + (\pi \pi)^2 (I.47) = (\pi \pi)^2 + (\pi \pi)^2 (I.47).$ 

 $<sup>\</sup>therefore (\vec{a} + \vec{n})^2 + (\vec{a} + \vec{n})^2 = (\vec{a} + \vec{n})^2 + (\vec{a} + \vec{n})^2 = (\vec{a}$ 

<sup>‡ ∴ &</sup>lt;व न व = <क हत, <अ न व = 2 <व न व, <द हज्ञ = <2 के हत∴ <अ न-व = <द हज्ञ.

<sup>§</sup> Take a chord, bisect it, join the center with the bisection-point and produce the line to the circumference. From the point where it meets the circumference, draw a tangent. Then this shall be parellel to the chord.

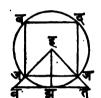
Prop. V. p. 131.

The three straight lines which bisect the sides of a triangle at right angles meet in a point and this point is the center of the circle circumscribed about the triangle.

Prop. VI. p. 131-2.

#### Alternative proof (p. 132).

In the circle first draw the line z z (z is the center).



Through the point of draw the tangent of of the Make of of and of the equal to of of. Join of of and of the circumference in the points of and of. Then the angles of and of are each half a right angle. Therefore the angle of of the ine of of. Then the arc of of of of the one-fourth

of the circle. Draw the chords wa and द ज equal to wo, the chord of the arc was. Join wa. Then the required square is formed. How? The four sides (of the quadrilateral figure) are chords of the four quarters of the circle and the four angles are right angles.

Prop. IX. p. 133.

After this Prop. Pelitarius adds the following Prop.:-

A square circumscribed about a circle is double of the square inscribed in the same circle.

Let A B D C be the square circumscribed about the circle
of which K is the center. Let E, F, G, and H
be the points of contact. Draw the diameters
E G and F H. Join E F, F G, G H, and H E.
Then there shall be inscribed in the circle a
square E F G H (IV. 6). The square A B C D
shall be double of the square E F G H. A B

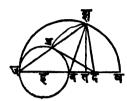
is equal to FH (I. 34). But the square of FH is double the square of which it is the diameter (I. 47). Wherefore the square of AB, that is, ABDC is double of EFGH. Q. E. D.

<sup>\* (</sup>III, 16).

Prop. X. p. 133-5.

#### Alternative proof.

Describe the circle of a with g as its center. Take any



point of on the circumference. From the point of draw the tangent of a.\* Make it equal to the diameter. Join the line of of the diameter. Join the line of of the center of and radius of of the semi-circle of of of the center of the semi-circle of of the center of the

cause the line a sa which is equal to a a is equal to a a. This line आ द is greater than the line च द. Produce the line च द to the point q. Again with the center q and radius q w describe the arc ar sr. This arc shall cut the arc ar sr ar at the point sr. Why? Because the line z w equal to z = is greater than z z. Join the lines says, says, and sag. Then sag and sag are equal to one another. Why? Because इ ज and द अ are equal-Again from the point of draw the perpendicular on the line दब्र.† Then the line दब shall be bisected in त.! The angle इत ज is a right angle. Therefore the angle झ व ज is an obtuse angle. Therefore the square on m m is equal to the squares on ma and a m together with twice the rectangle ma. a a. T Twice the rectangle ज ब. ब त is equal to the rectangle ज ब. ब द: and the square on ब ज and the rectangle ज ब. ब द are together equal to the rectangle ज द. ज ब.॥ The square on झ ब, which is equal to the square on द आ, is equal to the rectangle ज द. ब द.\$ Why? Because the line of touches the smaller circle. The rectangles द ज ज व and ज द. द व are equal to the square on

<sup>\* (</sup>III 16). † (I. 12).

<sup>‡</sup> The angles at ব being right angles and শ্ৰ and শ্ৰ being equal, ৰব may be proved equal to ব ব ( I. 47 ).

<sup>§ (</sup>I. I6).

<sup>¶ (</sup>II. 12).

<sup>| (</sup> II. 3 ).

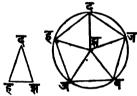
<sup>\$ (</sup> III. 35 ).

जद.\* Therefore the squares on ज झ and ज द are equal; Therefore ज झ and ज द are equal. Therefore the angles ज झ द and ज द झ are equal.‡ But the angle ज द झ, which is equal to the angle झ व द,§ is equal to the sum of the equal angles ज झ and ज झ कार्य क

Prop. XI. p. 135-37.

#### Alternative proof.

Taking as the center of the circle, draw any radius as



At the point of make the angle of of a criangle (as is described by the preceding prop.). At the point of the line of of make the angle of the same sort. Again at the point

win the line was make the angle was equal to the same angle; and at the point win the line was make the angle was (of the same sort). The three angles of a triangle are together equal to two right angles. The angle at the vertex of the triangle (described according to IV. 10) is equal to two fifths of a right angle. The angles made by us are (therefore) each four-fifths of a right angle. The sum of four (of these) angles is equal to three right angles plus one fifth

```
* (II. 2).
† (東南)<sup>2</sup>=(東南)<sup>2</sup>+(南南)<sup>2</sup>+2南南, 南南(II, 12).
                               +जब.बद
   but (व आ)2+अव. व व = आव. आव (II. 3).
   ∴(श्रज)³=(श्रव)³+जद्,जव,
             but श न=ज न=द अ:(श न)2=(द ख)2
   ∴(शंज)<sup>2</sup>=(वंअ)<sup>2</sup>+जव्.जव.
      but (द अ)2 = अद. बद (III. 35).
   ∴(इज)<sup>2</sup>=जद्.बद्+जद्.जद≔(जद्)<sup>2</sup> ( II. 2 ).
‡ (I. 5).
                        § (I. 5).
                                                ¶ (I. 32).
| (I. 23).
                3 (I, 23).
                                  ** (I. 23).
                                                    # ( I, 23 ).
ii (I. 32),
```

of a right angle. Therefore the remaining angle अ आ इ is equal to four-fifths of a right angle.\* Therefore all the five angles (at the point आ) are equal. Their arcs and chords are also equal.† If the chords अ व, व ज, ज द, द इ and इ अ are joined, a regular pentagon is formed. This was just what was wished.

Prop. XII. p. 137-8.

#### Alternative proof.

Draw the line as as ( as is the center). Through the point



अ draw the tangent अ व सा. At the point म in the line अ म make the angles अ म स and अ म व equal to the angle at the vertex of the triangle as described in prop. X.§ Produce the lines म स and म व so that they may meet the line स व in the points स and व. Therefore the angle स म व is equal to

one-fifth of four right angles. Again make the angles य म त, त म क, क म छ and छ म झ (each) equal to the preceding angle (य म झ). The circle shall be divided into five equal parts by the five angles. Make the sides equal to म द. Join द त, त क, क छ and छ झ. Then the sides and the angles of the five triangles are equal to one another. These (the bases of the triangles) together make up a regular pentagon. Again draw the perpendiculars म द, म ज, म द, and म इ. These perpendiculars are equal to the radius म झ. Therefore it is clear that the sides of the pentagon touch the circumference.

Prop. XIII. p. 138-41.

After the Pro. is proved it is shewn that the lines bisecting the angular points of the pentagon meet within the figure.

Now the lines by which the angles of and of are bisected shall meet within the regular pentagon.

<sup>\* (</sup>I. 15 Cor. and 3 Ax.) † (III. 25 and 28).

<sup>‡ (</sup>III. 16). § (I. 23).

Proof.

When the line of si is produced, it shall not go, meeting the



side ws. If it does meet it, let it meet it in point a. Join the lines wa and द्व. Now in the triangles wa a and wa द्व, the sides wa and wa are equal, the side wa are is common to both the triangles, and the two angles at ware equal. Therefore the angle wa way is equal

to the angle wat. But it is equal to the angle wat.\* This is absurd. Again the line shall not pass through the point wa. For if it does pass through it, then produce the lines was and was. It can been proved as in the first case that the angle was is equal to the angle wat. Similarly the line shall not meet the line was shall pass meeting the side was. In the same way the line was may be shewn to meet the side was. Therefore these two lines was and was shall meet within the regular pentagon.

#### Alternative proof.

Bisecting the two adjacent sides† draw the perpendiculars



व स and त स from the points of bisection. These two perpendiculars shall meet within the regular pentagon. Why? The perpendicular व स, if produced, shall go out of the regular pentagon. It shall not meet the side व ज. Also the perpendicular त स shall not

meet the side अह. Therefore these perpendiculars shall meet on the side ब अ, or shall meet outside. Join इन्द्र and इन्न. Now because the sides द्व and द्त्त are equal and इन्द्र is common and the angles at च and त are right angles, it is proved that the angles इन्द्र and इन्द्र त are equal. § Either of these angles is half of an angle of a regular pentagon. Again in the triangles इन्द्र त and इन्द्र, the angles इन्द्र व and इन्द्र

<sup>\* ∴ &</sup>lt;ज द ह= <ज द ब, which is absurd (9 Ax.).

<sup>† (</sup>I. 10). ‡ (I. 12).

श्व=शत्(I. 47) ∴ <शव्ब= <शव्त(I. 4).

#### Alternative proof.

Produce the side आ दा to the point न. Again on the line आ दा draw an arc, having an angle equal to the angle ज व न. Let आ दा व be the arc. Bisect it in the point दा.† Join दा अ and दा ज. Then the angles दा व आ का and दा ज का कि. Their sum is equal to the angle ज व आ है

Therefore each is equal to half an angle of a regular pentagon. Therefore the angles of a regular pentagon. Join of an angle of a regular pentagon. Join of an angle of a regular pentagon. Join of an angle of the triangles is clear. Again perpendiculars should be drawn on the sides from the point of the triangles is clear. These perpendiculars shall be equal. Inscribe the circle. This was just what was wished.

<sup>\*</sup> I. c. equal to or greater than an angle of a regular pentagon. It shall be equal to it, if the point W is on W and greater than it, if W is outside W as in the figure.

<sup>† (</sup>III. 29).

 $<sup>\</sup>ddagger$  (I.5)  $\because$  the chords  $\pi$  37 and  $\pi$  7 are equal (III. 28).

९ <जनन= < अझन (cons). ∴ <जनज= < अनझ+ <न अझ. ∵ <जन-न+ <जनज= 2 right angles and also the angles of अझन= 2 right angles.

Prop. XIV. p. 141-2.

#### Alternative proof.



First join was and wa. Then circumscribe a circle round the triangle was.\* This circle shall go round the pentagon.

Proof.

A regular pentagon is divided into three triangles. Therefore the five angles of the pentagon are equal to the six angles of the triangles. Each of these is equal to one right angle plus one fifth of a right angle. Then the angles a w a and a a w are each equal to two fifths of a right angle. Similary the angles g w z and w z z are each two-fifths of a right angle. Therefore the angle and is equal to four-fifths of a right angle. This angle together with the angle a s z is equal to two right angles. Again the angles of a st and of a st are together equal to two right angles. Therefore the circle (described about the triangle of a s ) shall pass through the point 3. If it does not pass through 3, let it be assumed that it shall go through the point sr. cutting the line sr z. Join sr z. Then the angle अ अ ज is equal to the angle अ द ज. The interior angle is equal to the exterior angle. (This is absurd. Therefore the circle shall pass through a). Similarly it may be proved that it passes through g.

Prop XV. p. 142.

Bil. shews three other ways of inscribing a regular hexagon in a circle.

<sup>\* (</sup>IV. 5).

 $<sup>+6 \</sup>times 90^{\circ} = 540 \div 5 = 108^{\circ}$ .

<sup>‡ ∵ &</sup>lt;জাৰ ব=108° ∴ <জাৰ ব+ <বা জাৰ=72° (I. 32 and Ax. 3). ∴ <জাবাৰ=86°.

<sup>§ &</sup>lt;ৰ জা হ= 4 × ৭০° = 72° + <ৰ জা হ= 108° = 180°.

<sup>¶ &</sup>lt;आ व आ (108°)+ <आ द आ (72°)=180°.

<sup>| (</sup>converse of III. 21).

Let A B C D E F be a circle. In it inscribe an equilateral



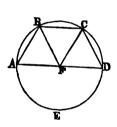
and equiangular triangle A C E (IV. 2). Therefore the arcs A B C, C D E, and E-F A are equal to one another (III. 27). Bisect each of these arcs (III. 29), and draw the right lines A B, B C, C D, D E. E F, and F A. Then the hexagon inscribed

shall be regular.

This method is ascribed to Orontius.

#### Alternative method.

Let A B C D E be the given circle. Let F be its center.

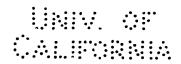


Draw any radius F A. Place A B equal to a radius in the circle (IV.1). This then shall be a side of a regular hexagon which shall be inscribed in the circle. Join F B. Now because A B is equal to F A and it is also equal to F B, therefore the triangle A F B is equilateral and is

At the point F in the line BF therefore equiangular. make the angle BFC equal to the angle BFA or to FBA (I. 23). Join BC. Now because the triangle A-BF is equiangular, each of its angles is one-third of two right Therefore the angle A F B is one-third of two right angles. Therefore the angle B F C is also one third of two angles. right angles. Therefore the angles FBC and FCB which are equal to one another (I. 5) are each equal to one third of two right angles (I. 32 and 3 Ax). Therefore the triangle B-F C is equilateral and equiangular. Again make the angle C-FD equal to the angle BFA or BFC (I. 23). Join CD. Then the triangle F C D shall be equilateral and equiangular. Since the three angles at the point F are together equal to two right angles, A F D shall be one straight line (I. 14), and is

the diameter of the circle. If the other semi-circle be divided into as many equal parts as the semi-circle A B C D is divided into, it shall be divided into as many equilateral and equiangular triangles. Therefore A B is a side of equilateral hexagon. The hexagon is also equiangular. For half of the whole angle B is equal to half of the whole angle C.

Thus a radius of a circle is a side of a regular hexagon inscribed in it.



#### BOOK V.

Page 144.

प्रमाणहर्षम् = Two magnitudes.

गुणगुणितसञ्जतस्यः = Equal to the less repeated a number of times; a multiple of the less.

निरमयन्त्वेन नि:शेषं करोति = Divides (it) without a remainder; measures (it).

रूप्यययविधाततुस्यम् = A multiple of the less.

राशिद्वयम् = Two quantities.

निष्पत्तिः = Ratio.

विकोमनिष्पत्तिः = Invertendo, by inversion; when in four proportionals, the second becomes the first, i. e. the second is to the first as the fourth is to the third..

Bil. calls it converse proportion by inversion.

### Page 145.

विनिमयनिष्यतिः = Permutando or alternando, by permutation or alternately; when in two ratios, the first term in the first ratio is to the first in the second as the second term in the first is to the second in the second, in other words, when there are four proportionals and the first is to the third as the second is to the fourth.

बोगनिक्यिः = Componendo, by composition; when the first together with the second is to the second as the third together with the fourth is to the fourth.

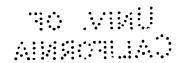
Bil calls it proportion composed or composition of proportion.

विक्रोसयोगनिष्यत्तिः = is the reverse of योगनिष्यत्तिः, that is, when the first is to the first together with the second as the third is to the third together with the fourth.

अन्तरनिष्पत्तिः = Dividendo, by division; when the excess of the first above the second is to the second as the excess of the third above the fourth is to the fourth.

Bil. calls it proportion divided or division of proportion.

अस्तरविक्रोमनिष्पत्तिः is the reverse of अस्तरनिष्पत्तिः



equality of distance. Bil. calls it proportion of equality; when there is a number of magnitudes in one order (प्राचित्र) and also as many other magnitudes in another order, and when the magnitudes are proportionals, when taken two and two of each order, and when it is inferred that the first is to the last of the first order of magnitudes as the first is to the last of the second order of magnitudes.

वशाक्रमनिष्यति:= Ex æquali, or orderly proportion. Bil. calls it ordinate proportionality.

कमरहिता निष्पत्तिः = Bil. calls it inordinate proportionality. Prop. 3. p. 147.

प्रथमप्रमाणं यद्वजगुणितं तेनैव गुणकेन तृतीयं गुजनीयं = Equimultiples of the first and the third should be taken.

Prop. 12 p. 155.

This Prop. is given as Prop. 13 in Todhunter's Geometry (Vide p. 154-5.).

Prop. 13 p. 156.

This Prop. is Prop. 12 in Todhunter's Geometry (vide p. 154).

Prop. 25 p. 170.

श्वसञ्जतप्रमाणयोगो ह्योर्थोजनीयः = Add य स+स त to both; i.e. to द व and त द. य व>त द∴य व+य स+क त>त द+व-स+ज त∴स व+ज त>ज द+व स∴स व+क्क द+इ-क

#### BOOK VL

Page 171.

पुकरूपनिष्पत्तियुक्ताः = Proportional.

संजातियानि = Similar.

केन्द्रकः = The altitude of a figure.

त्रेशक्तिकस्या = A straight line cut in extreme and mean ratio. Bil calls this line 'A line divided by proportion having a mean and two extremes.'

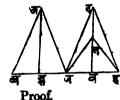
Prop I. p. 171-3.

Alternative proof (p. 172-3).

What is called alternative proof is really speaking the converse of Prop I.

Those figures which are to one another as their bases have equal altitudes.

The triangles अवज and द जह are on the base बह. The



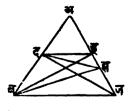
ratio of these triangles is assumed to be equal to that of their bases a m and m
Then the perpendiculars as m and m
a m shall be equal to one another.

If they are not equal, then let  $\pi$  and  $\pi$   $\pi$  be assumed to be equal. Join  $\pi$   $\pi$  and  $\pi$   $\pi$ . Then the triangles  $\pi$   $\pi$  and  $\pi$   $\pi$  are as their bases  $\pi$   $\pi$  and  $\pi$   $\pi$ . Thus the ratio of the triangle  $\pi$   $\pi$  with the triangles  $\pi$   $\pi$  and  $\pi$   $\pi$  is the same. Therefore the triangles  $\pi$   $\pi$  and  $\pi$   $\pi$  are equal. This is absurd. Therefore what we required to prove is alone correct.

Prop. II. p. 173-4.

### Alternative proof (p. 174).

If the line was be parallel to the line was, but the ratio of



<sup>\* (</sup> VI. I. ).

<sup>† (</sup>Alternative proof. VI. 1).

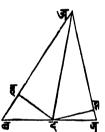
that z z is parallel to z z.\* Therefore z z and z z are both parallel to z z and therefore parallel to one another.† But they meet one another. This is absurd.

Again if the ratio of seq and get be equal to that of set and get, but if get be not parallel to get, then let get be assumed as parallel to get. In the above-mentioned manner it may be proved that the ratio of set and get is equal to that of set and get of that of set and get and get is equal to that of set and get of the ratio of set get is less than set. Therefore get is less than get of this is absurd. What we required to prove is alone correct.

Prop. III. p. 174-6.

#### Alternative proof (p. 176).

From the point a draw the perpendicular a s on the side w-



ब and द झ on the side आ जा. Then if the two parts of the angle ब आ ज be assumed equal, then these perpendiculars shall be equal. Why? The two angles at the point आ are equal; the angles at g and mare right angles, and the side आ द is common to both the triangles. Therefore the lines द g and द आ are equal saltitudes in the triangles ज अ द and

ज अ द. Therefore the triangles व अ द and ज अ द are as their sides व अ and ज अ. Again these triangles are as to their sides व द and द जा. Therefore the ratio of व द and द ज is equal to that of व अ and अ ज.

Again if the ratio be such, then the angle shall be bisected. Why? The ratio of the triangles is equal to that of a and a and also equal to that of a st and at a which was are assumed as bases, the ratio of these triangles shall be equal to that of their bases. Therefore the perpendiculars a st and a shall be equal. The side at a is common to both the triangles. Therefore the angles and at a st a shall be equal.

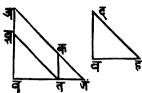
<sup>\* (</sup>I. 39). † (I. 30). ‡ (I. 12). § (I. 26). ¶ (VI. 1). \$ (Alternative proof VI. 1).

<sup>+</sup> 菊夏=哥朝 (I. 47) and the angles at आ are equal (I. 8).

Prop. IV. p. 176-7.

### Alternative proof (p. 177).

In the triangles of a st and a st let the angles of and a be



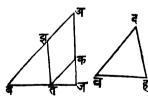
equal to one another, also the angles and and the angles and be equal to one another. If the sides and and and another another and another and another ano

what is promised to be proved shall be proved. But if wa and a set be not equal, let we be assumed to be greater. From it cut off a set equal to a a.† Draw the line set a parallel to wa.‡ Then the triangles set a and a set shall be equal.§ we shall be to set as a set o a set. Therefore we are is to a set as a set o a

Prop. V. p. 178-9.

#### Alternative proof (p. 178-9).

In this case the figure is the same as in the alternative proof



of the fourth Prop. Let a a a and a a g a g be two triangles. If their sides are equal, what we wish is proved. If they are not equal, let a g be greater than a g. Cut off a g equal to a g.

and was to get. Join sea and as. Then the ratio of was to sea which is equal to get shall be equal to that of sea to get which is equal to get. Therefore we shall be to sea as a to as.\*\* Therefore the line sea shall be parallel to sea. †

<sup>\* (</sup>I. 26). † (I. 3). ‡ (I. 81).

<sup>§ (</sup>I. 26), the angle इत व is equal to the angle क ज त (I. 29) and consequently to the angle द इ व.

<sup>¶ (</sup>VI. 2).

<sup>∥ (∇. 18).</sup> 

<sup>\$ (</sup>I. 3).

<sup>\*\* (</sup>Converse of V. 18).

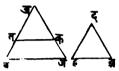
In the same manner a may be shown to be parallel to a w.

Then w m shall be equal to m a.\* The sides of the triangles a m a and a a m shall be equal. The angles of the triangles a m a shall be equal.† Therefore the angles of the triangles a m a and a m m shall be equal.

Prop. VI. p. 179-80.

Alternative proof (p. 179-80).

If the sides wa and wa sa be equal to g and a ga, then what



we promised to prove is proved. But if they are not equal, let we and we be greater (than grand qu). Cut off we great to qual to qual to

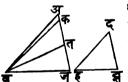
Therefore a shall be to a sa as a sa to a s.

Therefore a shall be to a sa as a to a s.

Therefore a shall be parallel to one another. Therefore the angles of the triangles a sa, a sa s, and g a shall be equal.

Prop. VII. p. 180-1.

In the preceding Prop. (Prop. VII. preceding figure) it is



said that the angles wand or may be less
than a right angle or not. This is what
we mean by it. Let the two triangles
we want or or be similar; and acuteangled. Let we be greater than we we.

From the point a draw the perpendicular a a on a w.\$ Therefore a a is greater than a w.\*\* Again cut off a se equal to a w.\! Join a s. Then a se shall be equal to a w.\! Again in the triangles at a and a se and

<sup>• (</sup>I. 84). † (I. 29).

<sup>‡ (</sup>I. 3). § (Converse of V. 18).

<sup>¶ (</sup>VI. 2). | (I. 29 and I. 4).

<sup>\$ (</sup> I, 12 ). \*\* आव> वज∴ <आजव> <वअज( I. 18 ).

<sup>∴ &</sup>lt;ज वत < the angle अ वत ( I. 32 and 5 Ax. ).

<sup>∴</sup> चत <अत(L 19). †† (I.3). ‡‡ (I.4).

अब is to द ह as ब क which is equal to ब ज is to ह झ. These two triangles are not similar. Why? Because the angle ब क आ is greater than a right angle, and the angle ह झ द is less than a right angle.

Thus the meaning is that both the remaining angles should be acute or obtuse. It will not do if one is acute and the other obtuse.

Again it is said, 'let the angle be either an acute angle or not.' It is not said, 'let it be an acute or an obtuse 'angle.' Why? Because a right angle is also desired.

In other words, समकोणान्यूनो भवतु मा वा भवतु = Each of the remaining angles may be either less or not less than a right angle or one of them may be a right angle. But if the expression न्यूनकोणो भवतु वाऽधिककोणो भवतु वा were used in place of 'समकोणान्यूनो भवतु मा वा भवतु', right angles would have been excluded, each of the remaining angles would, in that case, have to be taken as either acute or obtuse.

Prop. VIII. p. 181-2.

अस्माक्षेत्रादिदं निश्चितं &c. p. 182 = From this Prop. it follows that the perpendicular (drawn from the right angle of a right-angled triangle) is a mean proportional between the segments of the base, and that each of the sides is a mean proportional between the base and the segment of the base adjacent to that side.

आवाध = Segments of the base.

Prop. IX. p. 182-3.

This is Prop. XIII. in English books, in Bil. and in Greg.

Alternative proof (p. 182).

(Take two unequal lines). Let one line be placed on the other. Making the larger line a diameter, describe a semi-circle. From the end of the smaller line draw a perpendicular meeting the circumference. Draw an-

ৰ জ other line from the point where the per-

pendicular meets the circumference to the end of the line. This line shall be the required line. This is evident from the preceding figure of the proposition.

अवजां is the greater line and the smaller line being placed on अज stands as ज्ञान. Complete the figure as shewn in the text. Then जान is to जान as ज्ञान to आज (VI. 8 Cor.). Thus जान is the mean proportional between जान and जान or the smaller line.

#### Another alternative proof. (p. 182-3).

Assuming the difference of the two lines as w . describe a



semi-circle. Let it be a a z.

From the point a draw the tangent a z. This line shall be a mean proportional between the

lines अ व and व ज.

Proof.

Join q w, q w, and q g.† Then the angles w q w and w q g are, each, a right angle.‡ From these take away the angle g q w. Then the remaining angles w q and g q w shall be equal. Also the angles g q w and g w q are equal. Therefore in the triangles w q and w q w, the angle w is common, and the angles w w and w w are equal. Then the angles w w and w w q shall also be equal.§ Therefore the ratio of w w to w w shall be equal to that of w w to w w.¶

From this proposition it follows that if the perpendicular drawn from the point where two lines meet be the mean proportional between the two lines, then the semi-circle that can be drawn with the sum of the two lines as diameter shall meet the end of the perpendicular.

Prop. X. p. 183-4.

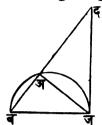
This is Prop. XI. in English books, Bil. and Greg.

<sup>\* (</sup>III. 16). † We is the center of the circle.

1 (11I. 30, and 17). § (I. 32 and 3 Ax.) ¶ (VI. 4).

#### Alternative proof (p. 183-4).

Let a right angle be formed by the two given lines. Let it

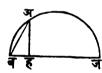


be w. Draw the hypotenuse w. Describe the semi-circle www. From the point w draw the perpendicular w. on the line ww.\* Produce the line www so as to meet the line wa in the point w. Then www shall be the required line. How? Because the perpendicular www is drawn from the right angle w on the hypotenuse. Therefore the ratio of

व अ to अ ज shall be equal to that of आ ज to आ द.†

Another alternative proof (p. 184).

Describe a semi-circle a sq sq on the greater line. Draw the



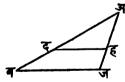
chord a sequal to the smaller line. From the point se draw the perpendicular set on the line a set. Then a g shall be the required line. This is evident from what is stated above.

Prop. XI. p. 184-5.

This is Prop. XII. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof (p. 185).

Let the first line and the second line be sq q and sq q. Let



them meet in the point of so that the angle of of may be formed. Join the line of of the third line. Let it be placed on of of. From the point of draw the line of parallel to

the line a s. Then a s shall be the line we want. I

Prop. XII. p. 185-6.

<sup>\* (</sup>I. 11). † (VI. 8 Cor.). ‡ (I. 12).

<sup>§</sup> If সাজা is joined, ৰ সাজা shall be a right-angled triangle. Therefore ৰ জ shall be to ৰ সা as ৰ সা is to ৰ ই (VI. 8 Cor.).

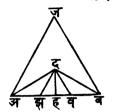
<sup>¶</sup> अद्:द्वः:आह:ह्या (VI. 2)∴ अव:अदः:अजः अह (V. 18)

<sup>∴</sup> अवः अजः: अदः अहः (V. 16).

This is Prop. IX. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof of trisecting a line (p. 185-6).

Take a line w and upon it describe the equilateral triangle



आ ब ज.\* Bisect the angles अ and ब by lines meeting in the point इ.† Bisect the angle अ द ब by the line द ह, and the angles अ द ह and ब द ह by lines द झ and द ब.‡ Then the line अ ब is trisected in the points झ and ब.

#### Proof.

An angle of an equilateral triangle is equal to two-thirds of a right angle. Therefore the angles and an are each one-third of a right angle. Then the angle and a sequal to one right angle together with a third part of it. Again the angles and and are are each equal to one third of a right angle. The angles and are and are are equal to one another. Therefore an and are are equal to one another. Similarly the lines are and are are equal to one another. Again the sum of the angles and are equal to one another. Again the sum of the angles and are equal to two thirds of a right angle. Therefore the angle are is equal to two thirds of a right angle. Then the angles are and are each equal to two thirds of a right angle. Therefore the sides are, and are equal. But angle. Therefore the sides are and are equal. Therefore are are equal.

It may be noted that though the enunciation states कश्चन विभाग:, a particular case only, viz. तृतीयांशविभागकरणम्, is given in the book.

Prop. XIII. p. 186-7.

This is Prop. X. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XV. p. 188-9.

*	1	I.	1	١.

<sup>† (</sup>I.9).

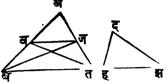
<sup>1 (</sup>I. 9).

<sup>§ (</sup>I.6).

<sup>¶ (</sup>I. 82 and 3 Ax.).

#### Alternative proof (p. 188-9).

Assume the angles अ and द of the triangles अ व ज and द ह झ



and a be equal. If the sides we and a be equal, then what we want is evident. Because the two triangles are equal. Be-

cause the two triangles being equal, the sides we said to shall be equal. How? If the side we be placed on the side to another and the angle (w) on the angle (a), if the side we does not fall on the side to the it must be greater or smaller. Therefore if the sides we said and to be equal, then the same ratio shall be arrived at.

Again if the sides be in this ratio, then as and a sa shall be equal and the two triangles shall also be equal.

But if the sides wa and a g be unequal, let wa be the greater of the two. Cut off wa equal to a g from wa. Join a w. Then if the two triangles be equal, then the side a must be greater than the side www. Why? Because if it be equal to it or less than it, the triangle a g w shall be less than the triangle wa www. Again make wa c equal to a w. Join the lines a wand a w. Then the triangle wa wa c. (Therefore the triangles wa wand also to the triangle wa w. (Therefore the triangles wa wand wa was shall be equal to one another). From these take away the triangle wa w. Then there remain equal triangles wa wand wa wand a way. Therefore the line was shall be parallel to was.

Again if the two ratios be equal, then the line of a, which is equal to a a, shall be less than the line of a. Then the line of of shall be less than a shall be less than the shall be less than a sh

<sup>¶ ∴</sup> अवःववः : अजः जत (VL 2) ∴ अवः अव : :अतः अज (V. 18) ∴ अवः दहः: इझः अज.



<sup>\* (</sup>VI. 4). † (L 3). ‡ (L 3). § (I. 89).

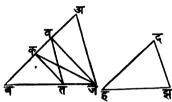
व ज and व त ज are equal.\* Add the triangle आ व ज. There the equality of the triangles shall be evident.

Prop. XVIII. p. 191-2.

This is Prop. XIX. in English books, Bil. and Greg.

Alternative proof (p. 191-2).

If a be equal to a a, the two triangles shall be equal.



This is evident. But if they are not equal, let \( \mathbb{E} \) be less than \( \mathbb{E} \) \( \mathbb{E}

the lines a w, a a, w w and wa. The ratio of a w to a a being equal to that of a w to a w, it is evident that the lines w and a w are parallel. The equality of the triangles w a and a w is proved. But the triangle w w w is equal to the triangle a w w w and a w w is equal to that of w w to w w ! Therefore the ratio of the triangles w w w and a w w is equal to that of w w to w w . This ratio shall be equal to the duplicate ratio of w w to w w. This is just what we wished.

Prop. XIX. p. 192.

This is Prop. XX. in English books, Bil. and Greg.

Prop. XX. p. 193.

This is Prop. XVIII. in English books, Bil. and Greg.

Prop. XXIII. p. 195.

This is Prop. XXIV. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXIV. p. 195-6.

This is Prop. XXVI. in English books, Bil., and Greg.

<sup>\* (</sup>VI. 2 and I. 37). † (I. 26). ‡ (I. 3). § (I. 3). ¶ (VI. 10). || (VI. 2). \$ (VI. 15). \*\* ∴ △ 有标項=△ 可要額. †† (VI. 1.).

Prop. XXV. p. 196.

This is Prop. XXIII. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXVI, p. 196-67.

This is Prop. XXV. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXVII. p. 197-98,

Propositions XXVII., XXVIII., and XXIX, are omitted in English books, 'as they appear now to be never required, and have been condemned as useless by various modern commentators.

They are given in Bil. and Greg.

If a parallelogram be described upon half the given line, and if upon a greater part of the line a parallelogram is so described that the figure on the remaining part of the line may be similar to it, then the figure on half the line shall be greater than that on the greater part.

Let we be the given line. Bisect it in w. Apply the paral-

I lelogram and to the line and. Complete the figure of g. Let we be the greater part of the line or w. On t it describe ar as so that the figure on

the remaining part, viz. a s. may be similar to sa sr. Then the figure of a shall be greater than of o.

Proof.

Join the diagonal = #. Now the figure = # is equal to # #.\* an is greater than m . Therefore m is greater than m s. But m s is equal to m s.+ Therefore m is greater than m s. Add at a to a s. The result is the figure at s. Again add बत to इत. The result shall be the figure अ स. This is the figure on half the line. This shall be greater than the figure on the greater part. This is just what was wished.

This Prop. contains a theorem relating to the theory of maxima and minima.

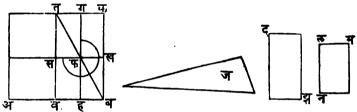
<sup>\* (</sup>I, 36).

'If a parallelogram is divided into two by a straight line cutting the base, and if on half the base another parallelogram be constructed similar to one of those parts, then this third parallelogram is greater than the other part.'

Prop. XXVIII. p, 198-9.

On a part of a given line to describe a parallelogram that shall be equal to a given rectilineal figure, so that the figure produced on the other part shall be similar to another given figure. The figure, to which the parallelogram is to be made equal, shall not be greater than the figure formed on half the line, which should be similar to the given figure.

Let we be the given line. Let we be the figure to which



an equal figure is to be constructed. Let द्वा be the given similar parallelogram.\* Now on a part of the line was a parallelogram equal to si is to be constructed, so that the figure produced on the other part may be similar to the figure द्वा Bisect wain a.† On was, describe the figure as similar to द्वा. Complete the figure war. If was be equal to sa, what we want is proved. But if was be greater than sa, let and be equal to the difference between was and sa, and similar to द्वा. The figures was and and similar to द्वा shall be similar to one another. The angle si is assumed to be equal to sa. The side a si is similar to the side was. Cut off a sa equal to sa and and equal to sa and equa

<sup>\*</sup> i. e. the parallelogram to which the defect of the parallelogram on the greater part of the given line is to be similar.

<sup>† (</sup>I. 10).

<sup>‡ (</sup>VI. 20).

<sup>§ (</sup>VI. 21).

<sup>¶ (</sup>I. 3).

<sup>| (</sup>I. 31).

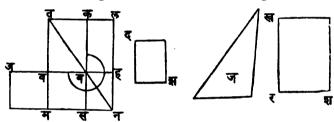
Proof.

सन, equal to न सन, is equal to the difference between आत, which is equal to च क, and ज. Therefore the figure स क स, equal to ज क, shall be equal to ज. Therefore the figure आ क is constructed on the part आह of the line आ न and is equal to ज. The figure ह ज, formed on the other part ह न, is similar to the figure ह ज. This is just what we wished.

Prop XXIX. p. 199-201.

Upon a right line of which the given line forms a part to draw a parallelogram which shall be equal to a given rectilineal figure so that the figure on the excess of the line over the given line shall be similar to another equilateral quadrilateral figure.

Let w to be the given line. Let w be the figure to which an



equal figure is to be drawn. Let  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  be a similar parallelogram. It is required to apply to the line  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  a parallelogram equal to the figure  $\mathbf{q}$  so that  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  may become a part of a side of it. On the excess of that side over  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$  the figure described shall be similar to the figure  $\mathbf{q}$   $\mathbf{q}$ .

Bisect we in at: On we describe the figure as similar to a set. Describe the figure as equal to the sum of the figures as and as so that it may be similar to a set. Then the figures as and as shall be similar to one another. Assume the angles and a to be equal and the sides as and a to be similar. Produce the side as so that as may be

<sup>\* ∴</sup> का ग=त ह, add फ व ∴ ग व=स व=अस; add व फ

<sup>∴</sup> गव=सव=अस. Add वफ

<sup>∴</sup> সং≕the gnomon स স জ.

<sup>†</sup> I. e. a parallelogram which shall be similar to the figure on the excess of the line over the given line.

<sup>‡ (</sup>I. 10). § (VI. 20). ¶ (VI. 26). ∦ (VI. 21).

equal to र जा. Produce also the side त क so that त क may be equal to र जा. Again from the points जा and क draw जा जा and क जा कि जा parallel to जा जा and क जा.\* Complete the figure. Then जा shall be the figure required.

Proof.

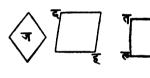
The figure  $\pi$  as is equal to the figure  $\pi$  and is equal to the sum of the figures  $\pi$  and  $\pi$   $\pi$ . †Therefore (the gnomon)  $\pi$   $\pi$   $\pi$ , which is equal to  $\pi$   $\pi$ , shall be equal to the figure  $\pi$ . This is what is wanted.

#### Alternative proof.

It is required to construct a parallelogram equal to the figure we on the line way so that on the excess of a side of it over we there may be formed a figure similar to we wanted.

Besict we in sa.‡ On we st describe the figure we a similar to a sc.§ Complete the figure we a. Now the side of the figure





which is to be constructed is either greater or less than wall it be less, it is evident that the figure of must be greater than the figure of the figure of be equal to to wan, then the required figure is constructed. But if it is not so, let wan be the difference between the (required) figure and of. If the side is to be greater than the line wan, then take the sum of both (want and of). Draw the figure of similar to of of, equal to the difference or the sum (of want and wall. This figure shall be similar to of of. Let the angles of and of be equal and the sides of of and of the similar. Therefore make of of the sides of of the similar. Therefore make of the sides of the sides of the similar. Therefore make of the sides of

<sup>• (</sup> I. 31).

<sup>†</sup> सङ=क स = ज+व क; subtract व क. ∴स ङ—व क i. e. व न क = ज. Again because अ स = व स (I. 36); but व स = क ह (I. 43). ∴अ स = क ह, add व न. ∴ज-व = व न क.

<sup>‡ (</sup>I. 10). § (VI. 20). ¶ (VI. 26). || (VI. 21).

equal to so a, and so a to so so.\* Draw the lines so at and so a parallel to the sides of the figure so a. Then the figure so a shall be equal to so and the figure so at a, which is formed on the difference between the side of the figure so at and the line so a, shall be similar to a s.

If the figure to be constructed is required to be a square, then bisect as a in z. If the figure as is equal to the square on half the line bisected, and the side is less than the line, then on half the line there shall be the square required. But if the figure wais not equal to it, then describe a square equal to the difference between the square on half of ar and ar. side is required to be greater than the line, then describe a square equal to the sum of both (the square on half ar and 3). Again describe a square and cut off from half the line 2. a a portion equal to a side of the square. Let it be as. the side is less than half the line, then do so. But if it be greater, then add we to half the line. Then a figure equal to the rectangle wg. g w shall be the required figure. Why? Because the difference between the rectangle at g. g and the square on a shall be the square on a and the difference between the rectangle wg. g and the square g g shall be the square on a a.

Prop. 28 and 29 contain problems which may be said to be solutions of quadratic equations. They come to what follows:—

"To describe on a given base a parallelogram and to divide it either internally (Prop. 28) or externally (Prop. 29) from a point on the base into two parallelograms of which the one has a given size (is equal in area to a given figure) while the other has a given shape (is similar to a given parallelogram).

If we express this in symbols, calling the given base a, the one part x, and the altitude y, we have to determine x and y in the first case from the equations.

$$(a-x)y=k^{2}$$

$$\frac{x}{y}=\frac{p}{q}$$

\* ( I. 3. ).

 $k^2$  being the given size of the first, and p and q the base and altitude of the parallelogram which determine the shape of the second of the required parallelograms.

If we substitute the value of y we get

$$(a-x) x = \frac{pk^2}{q}$$
or
$$ax-x^2 = b^2$$

Where a and b are known quantities, taking  $b^2 = \frac{pk^2}{q}$ 

The second case (Prop. 29) gives rise in the same manner to the quadratic

 $ax + x^2 = b^2$ ."

(Vide Encyclopædia Britannica p. 376).

Prop. XXX. p. 201-2.

'It leads to the equation  $ax + x^2 = a^2$ . It is only a special case of the last and an old acquaintance, the same problem as proposed in Book II. Prop. XI.'

Prop. XXXI. p. 202-3.

This is Prop. XXXII. in English books, Bil., and Greg.

Prop. XXXII. p. 203-4.

This is Prop. XXXI in English books, Bil., and Greg.



### APPENDIX.

Collation of the Ms. (V.) of the Rekhåganita in the Benares Sanskrit College Library, the one copied by Lokamani under instructions from Jayasimha.

#### BOOK I.

The Ms. begins with सिद्धिः श्रीगणेशाय नमः and gives the following as the first two verses:—

गजाननं गणाघिपं सुरासुराचितं सदा । समस्तमककामदं शिवासुतं सुखप्रदम् ॥ वितण्डचण्डयोगिनीसमाजमध्यवर्तिनम् । प्रशस्तभूतिभूषितं नमामि विघ्नवारणम् ॥

- Page 1 L. 9 The Ms. notices श्रीगोविन्दसमाह्मयादिपुरुवान् as another reading.
  - " L. 11 The Ms. notices दर्पसमुमतान् as another reading.
- Page 2 L. 2 गणिते तथा ॥
  - " L. 5 तदु<del>च्छिप्रं</del>
- Page 3 L. 1 अथ रेखागणितम्।
  - " L. 2 अथ उकलीदप्रन्थो लिख्यते । अत्र प्रन्थे पद्मदशाध्यायाः सन्ति अष्टसप्तत्युत्तरचतुःशतं शकलानि सन्ति ।
  - .. L. 3 शकलानि सन्ति ॥
  - " L. 5 स बिन्दुर्वाच्यः ।
  - " L. 7 विस्तारदैर्घ्ययोर्थद्भियते तद्धरातलं देवक्षेत्रम् । तद द्विविधम् । एकं जलवत् समं द्वितीयं विषमम् ।
  - ,, L. 10-11 °बिन्दुनाच्छाद्यन्ते सा सरलान्यथा कुटिला।
  - " L. 12-13 घरातलमि समं विषमं च हेयम्। समं यथा। यत्र बिन्दून् &c.
  - " L. 15 The Ms. drops अन्यथा विषमम् ।
  - " L. 17 स कोणः ।
  - " L. 18 समकोणो विषमकोणस्य । अथ समकोणविषमकोणलक्षणम् । समानरेखायां &c.
  - " L. 19 लम्बरूपे भवतः ।

```
Page 4 L. 4 समकोणस्त सरलरेखाभ्यामेव भवति ।
           L. 5 विषमकोणः सरलरेखाभ्यां ऋटिलरेखाभ्यां च भवति ।
           {f L}. 7 क्षेत्रसंज्ञमुच्यते ।
           L. 8 The Ms. drops বৰ.
           L. 11-12 सर्वतः कृत्वा तस्मादेव बिन्दुतः सर्वाणि सूत्राणि वा
                     स्पृशति कुटिला रेखा तद्वत्तं ज्ञेयम् ।
Page 5 L. 1 मध्यविन्दु: केन्द्र°.
           L. 2 Hand for Runa.
   ,,
           L. 4 केन्द्रगा न भवति पालिसंलमा स्यात्-
          {f L}. 10 त्रिविधं त्रिभुजं
           {f L}. 11 तत् त्रिभुजं समकोण^\circ
           {f L}. 12 यत्रैको^\circ......तद्धिककोणं त्रिभुजं...
   ,,
Page 6 L. 1 The Ms. drops =.
                     °स्तम्यूनकोणं भवेत् ।
           {f L}. 3 अथ च कोणचतुष्ट्यमपि ।
          {f L}_{f s} {f 5} अथ च सन्मुखबाहुद्वयं मिचः समानं.
          L. 6 आयतं च क्रेयम्।
          L. 7 The Ms. drops ₹.
                     विषमकोणं सम°
Page 7 L. 1-2 विषमकोणं विषमचतुर्भुजं च श्रेयम् ।
          L. 6 °वान्यरेस्तया युक्ता
          L. 7 ° योगेन । दर्शनम्—
          L. 8-14
                  The word राशि is corrected into रेखा al-
                     through.
Page 7 L. 11-12 The Ms. drops च and अपि.
          {f L}. 13 वे च राशयः
          L. 16 ते पूर्वमपि
          L. 17 तेऽपि सर्वे
          L. 18 राशिः रेखा वा
          {f L}. 19 क्षेत्रं प्रसिद्धानि
```

चिह्नोपरि तिष्ठति.....रेखा तिष्ठति

Page 8 L. 1 The Ms. drops अथ.

 ${f L}$ , 2  $^\circ$ धरातले तिष्ठतीति प्रसिद्धम् ।

Digitized by Google

# Page 8 L. 5 ये चिहे भवतस्तयोहपरि सरलैकरेखा

- $_{,,}$   $\mathbf{L}_{f .}$   $\mathbf{8}$  संवें समानाः
- .  $\mathbf{L}$ .  $\mathbf{9}$  अथ सरल $^{\circ}$
- " L. 11 The Ms. has the words किन्तु विषमान्तरं भवति struck off.
  - ${f L}$ .  ${f 13}$  यत्राल्पमन्तरं भवति
- " L. 20 तत्र is dropped.

## Page 9 L. 2 द्वितीय is dropped.

" L. 4 a is dropped.

"

- L. 5 एवमत्र is dropped.
- , L. 5 जातं समानत्रिभुजम् ।
- ,, L. 7 अत्र is dropped.
- " L. 8 °समानास्ति । कुतः । अज
- , L. 9 पुनर is omitted.
- " L. 12 तत्र is dropped.
- ,, L. 14 रेखा **बज**म्।
- " L. 18 ₹ is dropped.
- " L. 19 पुनर is dropped.

### Page 10 L. 1 'द्शरेखासमानास्ति।

- " L. 2 तत्र is dropped; द्व रेखासमाना ।
- " L. 3 न and पुनर are dropped.
- " L. 4 T is dropped.
- .. L. 8 इति चेत is omitted.
- . L. 9 तत्र is dropped.
- .. L. 10 निष्कासनीया
- " L. 13 अझरेखामद्रेखासमाना
- " L. 16 चतुर्थशकलम् ॥
- " L. 19 यदि भवति

## Page 11 L. 5 समानी for च समी

" L. 10-11 तत्र is dropped. न्यसेत् for न्यस्ता, न्यस्तः and न्यस्तम्.

## Page 11 L. 12 तदा is omitted.

" L. 14 शकलम् for क्षेत्रम्. ४२

```
Page 11 L. 15 तत्र is dropped.
         L. 16-17 अथ is dropped.
                   स्वमार्गशृद्धं कृतं सत्.....समुत्पनं कोण
         L. 20 अबरेखा वर्धनीया द्वपर्यन्तं......अजरेखा वर्धिता।
Page 12 L. 9 प्रन: is dropped.
         L. 13 तत्र is dropped.
          L. 17 च is dropped.
          L. 20 एवं is dropped.
         L. 22-24 पुन: and एवं are dropped.
Page 13 L. 1 अथ पष्टक्षेत्रम.
          L. 5 तत्र is dropped.
          {f L}. 8 कल्पितम्।
         L. 10 एवं is dropped.
         {f L}. 13 भवति ॥
         L. 14 सप्तमक्षेत्रम् ।
         {f L}. 15 रेखाद्वयं नि:स्रतं
         {
m L.~16} {
m g}यमिलनं न भवति ॥
Page 14 L. 2-3 अथ च is dropped.
Page 14 L. 4 तदा is dropped.
          {f L}. 10 अथाष्टमशकलम् ।
          L. 21 तदा is omitted.
{f Page 15 L.} 8 नवमक्षेत्रम् ।
         L.~17 अझुमुभयो^{\circ}
         L. 21 Had for Had.
Page 16 L. 2 समी जाती।
         {
m L.}~11 °द्धींकरणम् ।
         L. 12 तत्र is dropped.
          {f L}. 17 °क्षेत्रोक्तोपपत्या
          {
m L.}~21 दशमक्षेत्रम् ।
Page 17 L. 9 °कादशक्षेत्रम्।
          {f L}. 15\text{-}16 इयमेव लम्बः ।
Page 18 L. 12 पुनः is dropped.
```

# Page 18 L. 14 द्वादशशकलम्।

 ${
m L}$ , 17 निष्काशितो $^{\circ}$ 

Page 19 L. 4 = is dropped.

" L. 6-7 तस्मात् and जाताः are dropped.

" L. ८ जातः is dropped.

## Page 20 L. 2-3 तत्र is dropped.

रेखाया उभयदिशि कोणद्वयं जातं तत्।

" L. 8 यदा is omitted.

,, L. 10-11 अथ and तदा are omitted.

,, L. 12 द्वितीयकोणे is omitted.

L.~18 निष्काशित $^{\circ}$ 

The enunciation of Prop. 14 is given as noted in the foot-page on p. 20 रेखाद्वयमन्यरेखया &c. and the enunciation in our text is noticed in the margin.

## Page 21 L. 3 जातौ is dropped.

L. 5-6 तदा and तत्र are omitted.

L. 8 जातौ is dropped.

.. L. 11 इति is dropped.

,, L. 20-1 अस्ति and स्तः are dropped. दूरीकृतस्तदा.

.. L. 22 जातम् is dropped.

# Page 22 L. 1 = is omitted.

 $_{,,}$   $\mathrm{L.}$  5 °पार्श्वस्थितान्यसन्मुखकोणाभ्या°.

.. L. 8 and 12 तत्र is omitted.

. L. 12 च is dropped.

" L. 13 a is dropped.

.. L. 17-18 तदा is omitted.

# Page 23 L. 7 इदमेवास्माकमभीष्टम् for तस्मादुक्तमेवोपपन्नम् ।

" L. 12 स्त: is omitted.

.. L. 14-15 अजदकोणः अजबकोणश्चानयोर्योगः

.. L. 17 ब कोणः अज्ञबकोणश्चानयोर्योगः

.. L. 18 अनेन प्रकारेण for एवम्. यथोक्तम् is dropped.

Page 23 L. 19 शकलम् for क्षेत्रम्।

L. 20 तत्र is dropped.

Page 24 L. 4 यदि is dropped.

,, L. 5 कार्या for कियते.

.. L. 10 °प्रकारान्तरेण.

" L. 11-12 च is dropped. अवद्कोण: अद्वकोणश्रेती

 $_{,,}$  L. 14-15 महानिद्य **अवज**कोणात्

 $_{ extsf{.,}}$   $ext{L. 17}$  यथोक्तम् is dropped.

., L. 18 प्रकारान्तरेण.

Page 25 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

., L. 18 कुतः for अत्रोपपत्तिः.

 $\mathbf{L}$ . 20-21  $\mathbf{a}$  is dropped.

 $_{ extsf{,}}$   $ext{L. }23 ext{-}24$   $^{\circ}$ दिवकोऽस्ति ॥

Page 26 L. 9 The sentence beginning with तसाद° is omitted.

" L. 11 पुनर्विशतितमं क्षेत्रं तृतीयप्रकारेणाह for पुनः प्रकारान्तरम् ।

" L. 12 तत्र is dropped.

 $_{,,}$  L.~13 भविष्यति वा ।

" L. 15 तदा is dropped.

 $_{,,}$  -  $\mathrm{L}_{\cdot}$  17 जअद्कोणः बअद्कोणश्रेमी ।

" L. 18 पुनः is dropped. जद्यकोणः बद्यकोणधैतौ।

 ${f L}.~19$  जअदकोणः মুধ্রदकोणश्रेमी कोणी.

" L. 20 The Ms. drops from त्रिमु° to भवति ।

L. 24 जातः is dropped इदं बाधितम् ।

Page 27 L. 21 पुनरेकविंशतितमं क्षेत्रं द्विती°.

Page 28 L. 4 तदा **बअअह**योगो **बह** $^{\circ}$ 

 $_{,,}$  L.  $_{5}$  इदं बाधितम् ।

" L. 11 तिहै is omitted.

" L. 13 तुल्यः स्यायदि जदं जझेन तुल्यं स्यात् । पुनर्जझद्कोणो जद्झकोणादिषकः स्यायदि जदं जझादिषकं स्यात् । तदनन्तरं

" L. 21 चेत् and तत्र are omitted.

" L. 24 इदं बाधितम्. The Ms. notices इदमजुपपन्नम् also.

### Page 29 L. 11-12 कर्त्तव्यमिलपेक्षास्ति ।

तत्र त्रयो भुजाः कल्पनीयाः । भुजद्वययोगस्तृतीयभुजादधिको भवति यथा तथा कल्पनीयास्ते त्रयो भुजाः ।

, L. 13  $\blacksquare$  is dropped.

" L. 18 पुनर् is dropped.

,, L. 20 तदा is omitted. अस्ति for भवति. पुनर् is dropped.

" L. 21 तत्र is dropped.

Page 30 L. 1 न and पुनर् are dropped.

" L. 3 अथ is omitted.

,, L. 4-6 भवति । इदं किमर्थमुक्तम् । पूर्वमुपपत्त्या साधितमस्ति रेखाद्वययोगस्तृ......प्रतिपादितमस्ति । अतः कारणा-

" L. 17 एवं is dropped.

" L. 19 इति is dropped.

Page 31 L. 11 भवति for कार्यम्

 $\mathbf{L}$ . 18 चास्ति is omitted.

,, L. 19 अस्ति is dropped.

 $_{,,}$  L. 22 स्यादेव । अत्र किं चित्रम् ।

Page 32 L. 1 stay is dropped.

" L. 7 एवम् and अस्ति are dropped.

" L. 8 अपि is dropped.

,, L. 10 अथ प्रकारान्तरेण चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ।

" L. 18-19 दश्चद्वरेखे कार्ये तकपर्यन्तम् । श्रवरेखा च कार्या is dropped.

,, L. 20-1 तझवकोणः कवझकोण एतौ तुल्यौ.

,, L. 22-3 एवम्, तु and तदा are omitted.

Page 33 L. 2 = is dropped.

" L. 7 **প্রস্তা**ন্যুত্তপ্র

 ${f J}, {f L}. \ 18 \ {f Y}नः प्रकारान्तरेणाह ।$ 

,, L. 19 **दशा**र्धव्यासेन.

Page 34 L. 1 षड्विंशं शकलम्। The Ms. also notices the reading of the text.

Page 34 L. 2 বন্ন is dropped.

. L. 4 भविष्यन्ति. च is dropped.

,, L. 7 कल्पितौ अथवा is dropped.

.. L. 8 = is dropped.

" L. 10 यदि अवभुजदह्मुजो तुल्यो कल्पितो is omitted.

.. L. 11-12 तत्रेदं दूषणम् । कुतः

.. L. 13 अत्रोपपितः is omitted.

,, L. 14 ₹ is dropped.

., L. 19 **बब्र**भुजः **हद्**भुजः एतौ.

Page 35 L. 7 The Ms. adds तस्मादुक्तमेव सिद्धम् after इदम-

 ${f L}$ .  ${f 16}$  कल्पितः  ${f for}$  कल्प्यः.

Page 37 L. 3 °स्माकमिष्टम्।

Page 39 L. 13-14 असमकोणोऽस्ति । झन्यूनकोणखास्ति ।

Page 40 L. 10 चतुर्थ क्षेत्रम्।

 ${
m ,}~~~{
m L.}~20$  बअहकोणस्तु.

Page 41 L. 12 अबरेखायाः.

.. L. 14 स्त: is dropped.

L. 19 तत्र is dropped.

" L. 21 fa g is dropped.

Page 42 L. 6 द्वितीयलम्बेऽपि.

L. 8-9 समकोणक्षेत्रं न भवति.

,, L. 24 **अह**रेखायाः.

In the figure on p. 42, the line war is between an and war.

Page 43 L. 8 लमं मनश्रेती हकसमानी जाती.

Page 44 L. 8 कार्य: is dropped.

,, L. 24 জাৰিগা for **অজা**ৰিগা

Page 45 L. 16 द्वहतझय एते लम्बा निष्काशिताः

Page 46 L. 4 सप्तमक्षेत्रम्।

. L. 6 रेखासमानभुजद्वयलमा

,, L. 19 **बस**भुजात्

 $_{,,}$   $\qquad ext{L.} \ 20 \$ हक चिहात्

Page 47 L. 11 **बकम**त्रिभुजा°

Page 48 L. 9-10 विचहात् रेखा कार्या

 $,, \qquad ext{L.} \ 17$  संपातः कचिहे भविष्यति

 ${f L}$ .  $21 ext{-}22$  द्वितीयरेखायामन्तर्गत $^\circ$ 

Page 49 L. 8-9 अवजद्रेखायां

Page 50 L. 10 कर्तुं चिकीषांस्ति।

., L. 19 °स्थितकोणः

" L. 25 °रेखा कृतास्ति

Page 52 L. 1 पुन: is dropped.

Page 53 L. 13 The Ms. inserts जातौ after समानौ.

" L. 14 The Ms. drops ज्ञास्कोणः आज्ञबकोणेन समा-नोऽस्ति।

Page 54 L. 3 'स्वया झहरेखया च

 $_{,,}$   $_{}}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}$   $_{}}$   $_{}$ 

 $,, \quad \text{L. } 12$  बहुजदी व

Page 55 L. 3 वैते is dropped.

 $\dots$   $extbf{L}_{f a}$  18 निष्काशित $^\circ$ 

,, L. 21 द्वे चतुर्भुजे समाने

" L. 23 अयाष्टर्त्रिशक्षेत्रम्

" L. 25 ते समाने एव भवतः

Page 56 L. 9 तदैते

Page 58 L. 5 कार्या for देवा

Page 59 L. 15-16 पूर्वोक्तवत् is omitted. अस्पैककोण:

,, L. 18 अबोपरि is dropped.

 $_{,,}$   $_{\rm L}$ . 21 स्त्रअरेखा बचरेखे च

From p. 60 to L. 18 p. 61 missing.

Page 61 L. 18 पुनर is dropped.

, m L.~19 एवं प्रकारेणापि

Page 62 L. 1 पुनः प्रकारान्तरेणाह ।

" L. 2 पूर्वकृतमेव स्थापितं is dropped.

 $\mathbf{L}$ .  $\mathbf{L}$ .  $\mathbf{L}$  3 यथावस्थितेव स्थापिता

" L. 4 तत्र for ततो

Page 62 L. 6 वा for अथवा

,, L. 11 एका सरला जाता।

" L. 13 **अझवं** सम<sup>°</sup>.

Page 63 L. 1 पुनः प्रकारान्तरम् ।

" L. 13 बदरेखा वर्धनीया अलरेखा च

Page 64 L. 12 जातम् is dropped.

Page 66 L. 10 पुनर्देचिहात् ह्चिहाच

Page 67 L. 3 स्तः for भवत इत्युपपन्नम् ।

,, L. 9 हलअजयोः समलाच for हलअजयोः साम्बात्

,, L. 20 इति सिद्धम् is dropped.

Page 68 L. 7 तत्र is dropped.

" L. 12 **अज**भुजस्यास्ति ।

,, L. 17 यदीदमिष्ट for तत्र and इष्टं तदा is dropped.

Page 69 L. 1 पुनर is dropped.

" L. 13 चेत् is dropped.

" L. 18 पुनः प्रकारान्तरम् ।

Page 70 L. 7 कार्य: for कार्या:

Page 71 L. 1 प्रथमप्रकारो यथा

Page 73 L. 6 उमयोः is dropped.

 ${
m L.~12\text{-}13~}^{\circ}$ कोणयोः समत्वात्

Page 74 L. 8 नेहमजी शेषमुजी समी स्तः।

Page 75 L. 1 तानि च पूर्वोक्तप्रकारेण समानि स्यु: is dropped.

" L. 6 इदमेवेष्टम् is dropped.

,, L. 15-16 **हकत**रेखा सरलप्येकास्ति ।

" L. 17 पुनर is omitted.

Page 76 L. 21 बद्धारेखा कतरेखा दीर्घा कार्या यथा स्त्रिवहलमा स्थात्।

 ${f Page}\,77~{f L}.\,\,20$  °चतुर्भुजात् भुजद्वयवर्गभुजद्वयद्विगुणघातयोगरूपाच्छोध्यः ।

Page 78 L. 15 अविहात् अव्लम्बः

,, L. 22 समिभारूढितेन प्रणीते । From P. 79 to L. 15 p. 93 wanting.

 $\mathsf{Digitized} \ \mathsf{by} \ Google$ 

### Page 93 L. 21 समिभधारू ितेन प्रणीते ।

#### Page 94 L. 2 प्रथमशकलम्

.. L. 3 तत्र is omitted.

,, L. 4 तस्मिन् वृत्तपालौ for तत्पालौ.

.. L. 14 एतदशुद्धम् ।

. L. 18-19 समकोणक्षेत्रद्वयं स्यात् is omitted.

### Page 95 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्. Notices क्षेत्रम् also.

 $_{f J}$ ,  ${f L}$ .  ${f 8}$  निष्काष्यते

" L. 10 **झबह**रेखा for **झह**रेखा

,, L.~14 झबहरेसाया

### Page 96 L. 7 झहं तदा जदस्य

L. 16 समकोणी for समं कोणी।

,, L. 23-24 वधेकरेखया द्वितीयरेखायाः संपातः कृतः तत्र च सम-कोणद्वयं जातमेकापि रेखा केन्द्रोपरि न गता। इदं गाधितम्॥

Page 97 L. 3 The Ms. adds कदाचिदेका भवति after न भवतः।
.. L. 17 स्थादिति प्रतिपाद्यते is omitted.

### Page 98 L. 2 दझरेखा वर्धनीया

, L. 14 **द्धरे**सायास्तुस्यत्वात्

" L. 16 सप्तमशकलम्

#### Page 99 L. 2 कार्याः for कार्या

 $_{
m op}$ ,  $_{
m L}$ .  $_{
m 12}$  कार्या for योज्यते

,  ${f L.}~15$  अथ for यदि. कर्त्तव्यः for कियते and कार्या for योज्यते.

#### $,, \qquad ext{L.} \,\, 23 \,$ अथाष्टमशकलम्

Page 100 L. 10 कार्या for कार्याः; अधिका मनति । कथम् । यदि

 $_{,,}$   $\qquad$  m L.~19 निष्कास्यते

### Page 101 L. 3 जनरेसा कार्या

, L. 10 भवति for भविष्यति

" , मसरेखा कार्या

#### Page 102 L. 14 अथ नवमशकलम्

 ${f L}_{f c}$  18 **জন্**বৈন্ধা**জন্**বৈন্ধা

" L. 22-23 समकोणी जाती for समानी जाती

Digitized by Google

Page 103 L. 1 निकाच्या L. 24 पुनः प्रकारान्तरेणाह Page 104 L. 6 अथैकादशं शकलम् L. 25 तस्मादियं **झअ**रेखाया Page 105 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम L. 20 अथ त्रयोदशशकलम् Page 106 L. 3 अस्योपपत्तिः Page 107 L. 4 अधिका भवेत Page 108 L. 2 कार्या for किवते L. 3 इदं वाधितम् is noted in the margin after ,, भविष्यति. L. 7 जाता for भविष्यति L. 11 निष्काधितलम्बो ,, L. 18 कल्पितम् " Page 109 L. 12 अस्मान्छककादिदं L. 14 द्वितीयप्रकारः " L. 23 अथ षोडशशकलम् ,, L. 24 इत्तपालिमात्रसंलमा Page 110 L. 5 संबोज्या for योज्या L. 12 पुनः प्रकारान्तरम् L. 15 समकोणसमन्तुर्भुवस्त्रत्रभुवतुल्या for तद्भुवतुल्या. It ,, is marginally noted. Page 111 L. 12 अवाष्ट्रादशकलम् L. 21 अधैकोनविंशं शकलम् Page 112 L. 7 शकलम् for क्षेत्रम् The portion from इवसुपपत्तिसादैव स्वात् L. 12 P. 112 to बहरेखा वत° L. 11 P. 127 is wanting in the Ms. Page 127 L. 16 अथ द्वितीयशकलम्

Page 128 L. 21 अय तृतीयक्षकलम्
Page 129 L. 17 पुनः प्रकारान्तरम्
Page 130 L. 12-13 तस्माच्छेषी क्कोण°

Digitized by Google

```
Page 131 L. 1 अथ पश्चमशकलम्
Page 133 L. 1 अष्टमशकलम्
            L. 9 ° व्यासार्धे कृत्वा
            L. 10 अथ नवमशकलम्
            L. 18 अथ दशमशकलम्
Page 134 L. 17 अथवा प्रकारान्तरेण
Page 135 L. 11 निष्काइय:
            L. 23 अथेकादशशकलम्
            L. 25 दशमशकलोक्तवत
Page 136 L. 13 पुन: प्रकारान्तरम्
            L. 15 °स्तादशत्रिभुजस्य भूमित्रस्यकोणः कार्यः
Page 137 L. 3 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 138 L. 2 दशमशकलोक्त°
            L. 12 जाता इत्यूपपन्नम्
            L. 13 अथ त्रयोदशशकलम्
            {
m L.~22} प्रत्येकमनयोः कोणः पश्च^{\circ}
Page 139 L. 23 अनेन प्रकारेण
Page 141 L. 2 इदमेवास्माकमिष्टम् is omitted.
            {f L}. 3 अथ चतुर्दशशकलम्
            L. 4 वृत्तचिकीर्षोस्ति is adopted and एकं वृत्तं कार्यम्
  ,,
                     is struck off.
Page 142 L. 3 अथ पन्नदशशकलम्
           {f L}. 19 अनेन शकलेनायं
  ,,
           L. 21 अथ षोडशं शकलम्
Page 143 L. 13 समाप्त: is omitted.
Page 144 L. 2 विश्वतिशकलानि
            L.
               3 तत्र प्रथमशकलं निरूप्यते for तत्र प्रथमं परिभाषा
  ,,
                     निरूप्यते.
           L. 6-7 from यदि बृहत्प्रमाणं to {}^{\circ}तुल्यं भवति omitted.
             The Ms. has in the margin (on p. 89 of
          the Ms.) प्रमाणस्य यवनभाषायामेकदार इति संश्लास्त ।
            'त्रेराशिकस्य फलस्य निश्चवतिसंज्ञा ।
```

Page 144 L. 20 °निष्पत्तिसंज्ञा ज्ञेया

Page 145 L. 11 प्रत्येकप्रमाणद्वय°

" L. 12-13 तस्यां निष्पत्तां

,, L. 17 यथा प्रथमपङ्गी द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तिः सैव

,, L. 20 अथ च for पुनः

 $_{,,}$  m L.~21~  $^{\circ}$ तृतीययोर्या निष्पत्तिः

Several Arabic terms are used on the margin on pages 89 and 90 of the Ms. They are as follows:—

इबदालिनिझबति, तफ्झाले निझबति, अस्य अफ्तनिझबति संज्ञा ॥ ११ ॥

(The copyist seems to refer the reader to L. 11 of the Ms. in which the term विनमवनि-व्यक्ति occurs.),

तकांबेनिझबति १३ (referring to योगनिष्पत्तिः L.13), कलबेनिझबति १६ (referring to अन्तरिकलोमनिष्पत्तिः L.16),

मुह्मावा १ (referring to L. 1 i. e. to def. 5 यत्र राशिचतुष्ट्य &c.)

( P. 90 मुंतजिमेनिसबति ५ referring to यथाक्रम-निष्पत्ति L. 5 P. 90.),

(P. 90) मुजतरेबनिश्चवति.

Page 146 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

,, L. 3 aggi भवति तद्भुणं

,, L. 16 द्वितीयशकलम्

,, L. 18 तहुणितं चतुर्थप्रमाणं

Page 147 L. 11 तृतीयशकलम्

" L. 14 पुनर् is omitted.

" L. 25 जातुल्य° is omitted in जातुल्यवलप्रमाणे.

Page 148 L. 4 इदमेवास्माकमिष्टम्

,,

 ${
m L.}$  5 चतुर्थशकलम्

Page 148 L. 10 सेव तृतीयस्य चतुर्थेन स्थात L. 21 तत्र is omitted. Page 149 L. 1 पश्चमशकलम् L. 2 तत्र प्रमाणद्वयमध्ये is omitted. ۰, رو L. 3 मध्ये is omitted. L. 5 गुणगुणितं L. 10 हुब्समानम् is omitted. L. 11 तदा is omitted. L. 15 षष्टशकलम्. L. 17 तद्भिषतृतीयप्रमाणद्वयं ,, Page 150 L. 14 सप्तमशकलम् L. 17 निष्पत्तिसुल्येव and inserts on the margin ,, स्यात्तदा तानि प्रमाणानि समानानि भवन्ति Page 151 L. 10 प्रन: is omitted.  ${f Page~152~L.}~~3 ext{-4}$  जाप्रमाणस्यापि तावन्तो घाता प्राह्माः । अस्य फलं वलं कल्पितम् । L. 12 अस्ति for जातम् ,, L. 20 नवसशकलम्. ,, Page 153 L. 9 इदमेवास्माकमिष्टम् for अस्मिद्धं समीचीनम्  ${f L}$ . 10 दशमशकलम् ,, L. 14 मध्ये is omitted. L. 24 अस्ति for जातम् ,, Page 154 L. 3 बाप्रमाणात्. L. 11 अथैकादशशकलम् ,, Page 155 L. 4 वा after अधिक is omitted. L. 6 समे वा भवतः ,, L. 8 शकलम् for क्षेत्रम् L. 9 तत्र is omitted. ,, L. 21 कल्पित for कल्पिताः

Page 156 L. 6 भविष्यत: for स्त:

"

L. 11 त्रयोदशशकलम्

```
Page 156 L. 16 तथा for तथेवास्ति
             L. 17 जाता is omitted.
Page 157 L. 7 शकलम् for क्षेत्रम्
             L. 19-20 'वैप्रमाणादिकास्ति आप्रमाणस्य निष्पत्तिर्वप्रमावन
                       यास्ति तस्या: । अप्रमाणमधिक°
Page 158 L. 1-2 बदि न्यूनं चेत्
            L. 7 शक्सम् for क्षेत्रम्
             L. 17-18 अवप्रमाणक्लप्रमाणवोः
             L. 23 बोडशशकलम्
Page 159 L. 24 सप्तदशशकलम्
Page 160 L. 2 °रन्तरस्य निष्पत्ति°
             {f L}. 20 मनततीयप्रमाणं
Page 161 L. 14 Before पुन: अवस्य the Ms. inserts तसात
                       अब्प्रमाणस्य निष्पत्तिः तद्यप्रमाणेन तथा हबप्रमाणस्य
                       निष्पत्तिः द्वादप्रमाणेन
             L.~17 शकलम् for क्षेत्रम्
             L. 19 तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तिः । तत्र
             L. 20 निष्पत्तिर्भवति यथा
Page 162 L. 1-2 ° हज्जप्रमाणगोर्निष्यत्तिस्त्र्ल्या कल्पिता ।
             L. 17 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 163 L. 2 sassiftan
             L. 3 एवं is omitted.
   "
             L. 7 तदा is omitted.
             L. 8 पुनः प्रकारान्तरम्
             L. 13 इदमेवास्माकमिष्टम्
             L. 14 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 163 L. 15-17 तत्र is omitted.
             L. 17 प्रथमप्रकारे आदिप्रमाणादन्त्यप्रमाणं
   ,,
             L. 18 °दित्रमाणादन्त्यप्रमाणमधिकं स्यात्
             L. 21 तत्र is omitted.
Page 164 L. 7-8 इयं जन्यूनप्रमाणस्य निष्यत्तिर्बप्रमाणेन झहनिष्यत्ति-
```

Digitized by Google

त्रल्यास्ति तस्याः अधिकास्ति । तस्मात्

```
Page 164 L. 11 न्यूने न्यूनम् is omitted.
             L. 12 द्वितीयप्रकारान्तरम्
             {f L}. 15 हप्रमाणेन इयमबनिष्पत्ति^\circ
             L. 20-21 इदमेवास्नाकमिष्टम् for तदेवसूप
             L. 22 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 165 L. 8 चेदथ बज
             {f L}. 8-9 तुल्या चेत्तदा अप्रमाण^\circ
             L. 15 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 166 L. 4 एकस्पषाता प्राचाः
             {f L}, 14 ^\circ मेकरूपधाता
Page 167 L. 10 शकलम् for क्षेत्रम्
             L. 13 नेत् is omitted.
Page 168 L. 16 शक्लम् for क्षेत्रम्
Page 169 L. 17 शकलम् for क्षेत्रम्
Page 170 L. 5 न्यूनं कृतम् ।
             L. 14 इलोबेप्टम is omitted.
Page 171 L. 1 पशाध्याय:
             L. 2 अत्र for तत्र; शक्लान for क्षेत्राणि
             L. 3 तत्र प्रथमशक्लम् for तत्र परिभाषा
             {f L} 18 निष्पत्तिरस्ति तथा बृहत्सण्डस्य
              On the margin P. 107 the Ms. has प्रथमाइस्य
           द्वितीयाद्वतुल्यविभागा निष्पत्तिशब्दवाच्या
             L. 20 प्रथमशकलम्
            L. 21 भवतः for उभयतः
             L. 22 तत्र for तत्
             L. 23 तत्र for तर्हि
Page 172 L. 20 पुनः प्रकारान्तरम्
Page 173 L. 3 भूम्योर्निष्पत्त्या
             L. 8 द्वितीयशकलम्
Page 174 L. 1 'निष्यत्तेस्त्रस्वास्ति
             L. 22 तृतीयशकलम्
Page 175 L. 4 कल्पिता for कृता
             L. 4-7 The portion from पुनर्दे आरेखा वश्रा कोणस्य
```

Digitized by Google

to अस्योपपत्ति:, with तदा (L. 5) omitted, is found in the Ms. after कोणी समाने। भविष्यत: (L. 11).

Page 175 L. 11 तदा is dropped.

" L. 12 तदा and च are dropped.

Page 176 L. 11 यद्येताहशी

 $_{..}$  L.~13 °निष्पत्यापि

,, L. 19 चतुर्थशकलम्

L. 24 पुनर् before बज्जधकोण° is omitted.

Page 177 L. 2 करप्यम for स्थाप्यम

L.~25~ तदेव for तदेवं

Page 178 L. 1 पश्चमशकलम्

 $,, \quad ,, \quad ext{L. } 15 पुनःप्रकारान्तरम्$ 

Page 179 L. 1 शतरेखा तुल्या भविष्यति

,, ,, L. 5 शकलम् for क्षेत्रम्.

,, ,, L. 21 द्वितीयप्रकारः

Page 180 L. 4 सप्तमशकलम्

,, ,, L. 25 पूर्वशकले यदुक्तं

" " L. " न्यूनी भवतो वा न्यूनी न भवत<sup>°</sup>

Page 181 L. 14 शकलम् for क्षेत्रम्

.. .. L. 18-19 निष्कासितः

Page 182 L. 7 असाच्छकलादिदं

" " L. 9 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 15-16 अस्योपपत्तिः । द्वअरेखा द्वजरेखा च संयोज्या । अद्वजकोणः समकोणो भविष्यति । after भविष्यति

" " L. 17 तस्मादयं रेखाद्वयमध्ये

Page 183 L. 10 अस्माच्छकलादिदं

,, ,, L. 14 दशमशकलम्

" " L. 18 प्रथक् च कार्या

Page 184 L. 11 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 16 द्विहे तयोर्योगः कार्यः यथा

Page 185 L. 8 शकलम् for क्षेत्रम्

,. " L. 13 भिन्ना: is omitted.

Page 185 L. 15-16 तृतीयांशं भिन्नं करिष्यति ।

Page 186 L. 9 प्रत्येकं

,, ,, L.~10 झदचकोणोऽपि समं $^{\circ}$ 

,, ,, L. 12 प्रलेकं

Page 187 L. 1 अत्रोपपत्तिः

" " L. 5 शकलम् for क्षेत्रम्

,, ,, L. 25 उभयोः क्षेत्रयोरेकक्षेत्रेण निष्पत्तिसाम्यात् क्षेत्रद्वयं समानं जातम् ।

Page 188 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

,, ,, L. 18 कल्पते

" " L. 24 समत्वं for साम्यं

Page 189 L. 1 The MS. inserts त्रिभुजदूरं समान न मिष्यति after न्यूनाधिको भविष्यति.

" " L. 16 after भविष्यति the MS. inserts पुनर्बरेसाया वृद्युल्याऽवरेसाऽतरे- स्योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

Page 190 L. 23 बरेखावर्गतुल्योऽपि भविष्यति

Page 191 L. 1 शकलम् for क्षेत्रम्

" " L. 2-3 °रेकत्रिभुजभुजस्य

" " L.~22 बजबतनिष्पत्तिबस्रबक्तरेखा $^\circ$ 

Page 192 L. 9 The Ms inserts समानानि before भवन्ति which begins the line.

" " L. 10 भवति for भविष्यति

The MS. has on the margin on p. 121 dealing with prop. 18 and 19 Book VI. बावन्ति प्रथमक्षेत्रे तावन्त्येव द्वितीयक्षेत्रे त्रिशुजानि तावन्त्येव भवन्ति ।

Page 193 L. 12 तबक्षेत्रजब्क्षेत्रं सवातीयं भविष्यति

Page 194 L. 4 कवतंत्रसद्वेत्रे (These figures are rectangles in the MS.).

,, ,, L. 6 अन्यप्रकारजे

,, ,, L. 11 बकक्षेत्रलदक्षेत्रनिष्पत्तिः

" " L.~15 कबक्षेत्रलद्क्षेत्रनिष्पत्ति $^\circ$ 

Page 194 L. 20 कबक्षेत्रलदक्षेत्रयो°

" " " L. 21-22 कवक्षेत्रलदक्षेत्रयो°

Page 195 L. 18 तत्कर्णपतितं

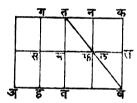
Page 196 L. 4 इदमेवेष्टम् ॥

Page 197 L. 11 'निष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति

 $\mathbf{Page} \ 198 \ \mathbf{L} \cdot \mathbf{17} \ \mathsf{तत्र} \ \mathbf{अब्रेखायाः खण्डोपर्ये°$ 

17-18 क्षेत्रमिष्टं कर्त्तव्यमस्ति तत् तथा कार्ये यथा

The figure for Prop. 28 in the MS. is as under:-



Page 199 L. 3-4 पुनस्तर्ग समतुत्वं पृथक् कार्यम् । मसं स्नमतुत्वं पृथक् कार्यम्

" " L. 8 मगक्षेत्रं for सगक्षेत्रं

" " L. 9 इसक्षेत्रं for सफसक्षेत्रं

,, ,, L. 10 ह्वसण्डोपरि for अहसण्डोपरि

,, ,, ,, हुसाक्षेत्रं for अफूक्षेत्रं

,, ,, ,, अहद्वितीय° for हबद्वितीय° असक्षेत्रं for हब्बक्षेत्रं

Page 199 L. 18 कर्तुमिष्यते तत्।

Page 200 L. 1 'खण्डं यथा भवति

Page 201 L. 4 पुनर्छकोणवकोणी

Page 201 L. 6 च before चमं is dropped.

" ,, L. 9 सजातीयं जातम्

" " ,, L. 11 जक्षेत्रमर्धरेखा°

,, ,, L. 18 योज्यं कार्यम्

Page 202 L. 14 समानान्तरितः

,, ,, ,, ,, द्वितीयत्रिभुजस्य द्वितीयभुजः

 ${f Page} \ 203 \ {f L.} \ 4-5 \ समकोणद्वयतुल्योऽस्ति ।$ 

तस्मात् जबश्रजबद्योः कोणयोर्योगः समकोणद्वयतुल्यो भविष्यति । तस्माद् श्रबदं &c.

Page 205 L. 4 बजज अक्षेत्रयोग°

" " ,, L. 11-12 वकोणतकोणनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति

" " L. 21 हनचापसमं वा

Page 206 L. 2 इदमेवास्मदिष्टम्

" " L. 8 समाप्तः is omitted.

# ERRATA.

Page.	Line.	Incorrect.	Correct.
5	4	केन्द्रगा	न केन्द्रगा
17	11	दत्वा	दत्त्वा
21	<b>25</b>	दूरीकृता तदा	दूरीकृतस्तदा
27	12	बहाद	बहाद
30	17	वृत्तं अन्य <sup>°</sup>	वृत्तमन्य <sup>°</sup>
31	14	मुजदूर्य अन्य <sup>°</sup>	भुजद्वयमन्य <sup>°</sup>
69	16	योज्यते	योज्येते
70	15	सामान्येन	साम्येन
72	6	<b>बह्</b> वर्गी	बह्वर्गो
75	5	अ <b>ब</b> चतु ँ	अवचतु°
76	22	After कार्या	insert यथा
104	23	अखवृत्तस्य	<b>अव</b> वृत्तस्य
106	7	समकोणी	समकोणी
108	17	अयं	<b>अ</b> यं
,,	21	समकोणी	समकोणी
109	3	अयं	अयं
111	3	अयं	अयं
,,	16	अयं	अयं
117	4	अ <b>न</b> यो°	अनयो°
,,	6	<b>अन</b> यो°	अनयो°
122	10	<b>हकद्</b> कोणेन	<b>हद्क</b> कोणेन
124	8	<b>बझ</b> वर्गा	वस्वगी
128	22	तथा	यथा
133	17	°रेखा व्यासा°	°रेखाव्यासा°
138	9	पश्चसमभुजसमा	1° पश्चसम्भुजसमानकोण°
139	5	<b>सम</b> कोणत्वेन	समकोणत्वेन
140	20	अञ्च	सञ्ज्
148	13-14	बदावा°	बदाव°

148	23	° <b>द्य</b> प्रमाणयो	धप्रमाणयो-
154	16	तस्मात् ।	तस्मात्
155	24	न	न
157	10	तृतीयापेक्षयाच्यून°	तृतीयापेक्षया न्यून°
163	21	Name the line	not named इ.
171	22	तत् क्षेत्र°	तत्क्षेत्र°
175	14	अहरेला अज°	<b>बह</b> रेखा <b>यज</b> °
177	2	for जहरेखायां	read वजहरेखायां
181	5	पुनः तज <sup>°</sup>	पुनस्तज <sup>°</sup>
<b>»</b>	18	<b>असमको</b> णात्	<b>अ</b> समकोणात्
184			ould be equal to aa.
187	13	read the line	•
189	12	<b>জৰ</b>	े तब
196	10	सरलै°	सरहै°
19 <b>9</b>	11	° <b>सण्डो</b> प्युत्पन्नं	<sup>०</sup> सम्डोपर्युत्पनं
204	7	°र्वजवश	<b>'बजब</b> श'

# diany, on Thenring

### BOMBAY SANSKRIT SERIES.

Edited under the superintendence of Prof. A. V. Kathavate and Prof. S. R. Bhandarkar.

	Rs	. a.	p.
No. I.—Panchatantra, Books IV. and V. Edited, with			
Notes, by Dr. G. Bühler	0	4	0
No. II.—Någojibhaṭṭa's Paribhåshendus'ekhara. Edited			•
and explained by Dr. F. Kielhorn. The Sanskrit			
Text and various Readings, Part I	0	8	0
No. III.—Panchatantra, Books II. and III. Edited,	_		
with Notes, by Dr. G. Bühler	0	4	0
No. IV.—Panchatantra, Book I. Edited, with Notes,	_	_	
by Dr. F. Kielhorn	U	6	0
No. V.—The Raghuvanis's of Kâlidâsa, with the Com-			
mentary of Mallinatha. Edited, with Notes, by S.	,	8	٠,
P. Pandit, M. A. Part I., Cantos I.—VI  No. VI.—Mâlavikâgnimitra: Sanskrit Play by Kâli-	1	0	0
dasa. Edited, with Notes, by Shankar P. Pandit,			
78 4	2	2	0
	2	4	v
No. VII.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edited and explained by Dr. F. Kielhorn. Part II.			
(Translation and Notes), Paribhâshâs I.—XXXVII.	Λ	8	0
No. VIII.—The Raghuvams'a of Kâlidâsa, with the	•	Ü	v
Commentary of Mallinatha. Edited, with Notes,			•
by S. P. Pandit, M. A. Part II., Cantos VII.—			
XIII	0	12	٥
No. IX,—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara, Edit-	-		
ed and explained by Dr. F. Kielhorn. Part II.			
(Translation and Notes), Paribhâshâs·XXXVIII.—			
LXIX	0	8	0
No. X.—The Das'akumâracharita of Dandin. Part I.			
Edited, with Critical and Explanatory Notes, by			,
	0	8	0
No. XI.—The Nitis'ataka and Vairagyas'ataka ! of		-	•
Bhartrihari, with extracts from two Sanskrit Com-			
mentaries. Edited, with Notes, by Kashinath			
Trimbak Telang, M. A. (copies not available.)			
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •			

	Rs.	2.	p.
No. XII.—Någojibhatta's Paribhåshendus'ekhara. Edit-			
ed and explained by Dr. F. Kielhorn, Part II. (Trans-	_		^
lation and Notes), Paribhāshās LXX.—CXXII	0	8	0
No. XIII.—The Raghuvains's of Kalidass, with the			
Commentary of Mallinatha. Edited, with Notes, by S. P. Pandit, M. A. Part III., Cantos XIV.—			
XIX	0	8	0
No. XIVVikramånkadeva-Charita. Life of King			
Vikramāditya Tribhuvanamalla of Kalyāņa, com-			
posed by his Vidyapati Bilhana. Edited, with an			
Introduction, by Dr. G. Bühler (copies not available).			
No. XV.—Målati-Mådhava: a Drama by Bhavabhûti.			
Edited, with Critical and Explanatory Notes, by			
Dr. R. G. Bhândârkar, M. A. (Second Ed. in the			
Press.)			
No. XVI.—Vikramorvas'iya: a Drama by Kâlidâsa.			
Edited with Notes, by Shankar P. Pandit, M. A.	_	_	_
(Third Edition.)	2	0	0
No. XVII.—Hemachandra's Des'inamamala. Edited,			
with Critical Notes, a Glossary and a Historical			
Introduction, by Professor R. Pischel and Dr. G.			
Bühler, Part I. Text and Critical Notes, by		•	^
Professor Pischel,	1	U	0
No. XVIII.—Vyâkaraṇa-Mahâbhâshya of Patañjali.			
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol. I. complete. Parts			^
I, II & III	4	8	0
No. XX. Ditto ditto by ditto. Vol. I. Part III.	1	0	0
No. XXI. Ditto ditto by ditto. Vol. II. Part II.	1	0	0
No. XXII. Ditto ditto by ditto. Vol. II. Part II.	_	0	0
No. XXIII. Våsishthadharmas'ästra. Edited, with	-	•	·
Notes, by Dr. A. A. Führer	0	8	0
No. XXIVKådambari by Båna and his son. Vol.			
I. Sanskrit Text, complete. Edited by Dr. P.			
Peterson	_	0	0
Do. Vol. II. Introduction and Notes, by do	4	8	0
No. XXV.—Kirti-Kaumudi. Edited, with Notes, by			
Prof. A. V. Kâthavate. (copies not available.)			

	Rs.	a.	p.
No. XXVI.—Vyâkaraṇa-Mahâbhâshya of Patanjali.			_
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol II. Part III	1	0	0
No. XXVII.—Mudrārākshasa, by Vis'ākhadatta, with			
the Commentary of Dhundiraja. Edited, with			
Notes, by K. T. Telang. (Copies not available.)			
No. XXVIII.—Vyâkaraṇa-Mahâbhâshya of Patanjali.			
Edited by Dr. F. Kielhorn. Vol. III. Part I	1	0	0
No. XXIX.—Do. do. of do. by do. Vol. III. Part II.	1	0	0
No. XXX.—Ditto do. of do. by do. Vol. III. Part III.	1	0	0
No. XXXI.—Subhåshitåvali of Vallabhadeva. Edited			
by Dr. P. Peterson and Pandit Durgaprasada	2	8	0
No. XXXII.—Tarka-Kaumudi of Laugakshi Bhaskara.			
Edited by Professor M. N. Dvivedi (Copies not			
available.)			
No. XXXIII.—Hitopades'a of Nåråyana. Edited by			
Dr. P. Peterson	0	14	0
No. XXXIV.—The Gaudavaho, by Vâkpati. Edited			
by Shankar P. Pandit, M. A No. XXXV.—Mahânârâyana Upanishad. Edited by	3	0	0
No. XXXV.—Mahanarayana Upanishad. Edited by			
Colonel G. A. Jacob	0	7	0
No. XXXVI.—University Selections of Hymns from			
the Rigveds. Edited by Dr. P. Peterson (2nd Edi-			
tion.)	4	0	0
No. XXXVII.—S'ârngadharapaddhati. Edited by Dr.			
P. Peterson, Vol. I	3	0	0
No. XXXVIII.—Naishkarmyasiddhi. Edited by Col.			
G. A. Jacob	2	0	0
No. XXXIX.—A Concordance to the principal			
Upanishads and Bhagavadgîtâ, by the same author.	4	0	0
No. XL.—Eleven Atharvana Upanishads, with Dipikâs,			
by the same author	1	4	0
No. XLL.—A Handbook to the study of the Rigveda,	-	_	•
by Dr. P. Peterson, Part I	1	8	0
No. XLII.—The Das'akumāracharita of Dandin, Part	•	Ŭ	v
II. (completing Dr.G. Bühler's Edition). Edited, with			
Critical and Explanatory Notes, by Dr. P. Peterson.	0	8	0
No. XLII.—A Handbook to the study of the Rigveda,	v	0	J
by Dr. P. Peterson, Part II., comprising the			
	0	0	^
Seventh Maṇḍala, with the commentary of Sâyaṇa.	2	8	0

		ns.	а.	р.
	XLIV.—Aphorisms of the Sacred Law of the Hindus, an Index of the Sûtras and the various Readings of the Hiranyakeshi-Dharmasûtra, by Dr.			
No.	G. Bühler, Part I	1	6	0
2.0.	prasåd. Part I., containing the first 7 (seven) Tarangas	_	8	0
	XLVI.—Patanjali's Yogasûtras. Edited, with the Scholium of Vyâsa and the Commentary of Vâchaspati, by Mahâmahopâdhyâya Râjârâm Shâstrî Boḍas.	1	10	0
No.	XLVII.—Parâs'ara Dharma Samhitâ with the Commentary of Sâyana-Mâdhavâchârya, Vol. I. Part I.		•	•
37	Edited by Pandit Vâman Shâstrî Islâmpurkar		2	0
	XLVIII.—Do. do. of do. by do. Vol. I. Part II.		0	0
No.	XLIX.—Nyâyakos'a. 2nd Edition. Edited by Mahâ- mahopâdhyâya Bhîmâchârya Zalkîkar	6	0	0
No.	mahopâdhyâya Bhîmâchârya Zalkîkar L.—Âpastamba Dharmasûtra, Part II. Edited by Dr. G. Bühler	1	2	0
No.	LI.—Râjataraṅgiṇi. Edited by Pandit Durgâprasâd, Vol. II. Taraṅga VIII	1	4	0
No.	LIIMrichchhakațika, Vol. I. with two Com-			
	mentaries and various readings, by Mr. N. B. Godbole	3	8	0
No.	LIII.—Navasâhasânkacharita, Part I. Edited by Pandit Vâman Shâstri Islâmpurkar	1	10	0
No.	LIV.—Råjatarangini of Kalhana, Vol. III. Edited by Dr. P. Peterson	-	2	0
No.	LV.—Tarkasangraha of Annambhatta. Edited with the author's Dipika and Govardhana's Nyâya- bodhinî and Critical and Explanatory Notes, by			
	the late Rao Bahadur Y. V. Athalye	3	4	0
No.	LVI.—Bhatti Kâvya or Râvanavadha; Vol. I. Edited with the commentary Sarvapathina of Mallinatha by Mr. Kamalâshankar P. Trivedi &c		0	0
No	TITTE TO TELLET THE TALL.			0
No.	LVIII.—Do. Vol. II. Edited by do LVIII.—A second selection of Hymns from the	_	J	3
	Rigveda. Edited by Dr. P. Peterson	4	0	0
No.	LIX.—Parâs'ara Dharma Samhitâ with the commentary of Sâyana-Mâdhavâchârya, Vol. II. Part I.	,	Λ	^
37	Edited by Pandit Vaman Shastri Islampurkar		0	0
No.	LX.—Kumârapâlacharita by Hemachandra. Edited, with a commentary, by the late Mr. S. P. Pandit	_8	8	0

# THE REKHÂGANITA

OR

GEOMETRY IN SANSKRIT COMPOSED BY SAMRAD JAGANNATHA VOLUME II. BOOKS VII-XV.

UNDERTAKEN FOR PUBLICATION

BY

THE LATE

# HARILÂL HARSHÂDARÂI DHRUVA.

B. A., LL. B., D. L. A. (SWEDEN), M. R. A. S. (LONDON AND BOMBAY).

CITY JOINT JUDGE AND SESSIONS JUDGE, BARODA,

Edited and carried through the press, with Introduction, and brief notes in English

BY

# KAMALÂS'ANKARA PRÂNAS'ANKARA TRIVEDÎ, B. A.,

FELLOW OF THE UNIVERSITY OF BOMBAY, HEAD MASTER, NADIÂD HIGH SCHOOL (FORMERLY PROFESSOR OF ORIENTAL LANGUAGES, SÂMALADÂS COLLEGE, BHÂVANAGAB, AND ACTING PROFESSOR OF ORIENTAL LANGUAGES, ELPHINSTONE AND DECCAN COLLEGES ).

1st Edition — 300 Copies.

(Registered for copy-right under Act XXV. of 1867).

Bombay.

GOVERNMENT CENTRAL BOOK DEPÔT.

1902.

[All rights reserved].

Price 9 Rupees.

Bombay Sanskrit Series Ro. LXII.

### BOMBAY:

PRINTED AT JÂVAJI DÂDÂJI'S "NIRŅAYA-SÂGARA" PRESS.

## श्रीः

# रेखागणितम्

# सम्राड्जगन्नाथविरचितं

( द्वितीयभागात्मकं सप्तमाध्यायमारभ्य पश्चद्शाध्यायपर्यन्तम् )

स्वर्गवासिमहाशयधुवोपपदेन हर्षदरायात्मजेन हरिलालेन संस्करणार्थमङ्गीकृतं

त्रिवेद्युपपद्धारिणा

# प्राणशंकरसुनुना कमलाशंकरेण संशोधितं

खनिर्मिताङ्ग्लभाषाटिप्पण्या च सम्रुपेतम् ।

तच

# मुम्बापुरीस्थराजकीयग्रन्थशालाधिकारिणा

"निर्णयसागरा"ख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा शाके १८२४ बत्सरे १९०२ क्रिस्ताब्दे प्राकाश्यं नीतम् ।

प्रथमा आवृत्तिः

मूल्यं ९ रूप्यकाः।

इदं पुस्तकं मोहमय्यां निर्णयसागरास्ये मुद्रणालये मुद्रितम् ।

#### INTRODUCTION.

After the publication of the first volume and a major portion of the second volume I received a Ms of the work in charge of the Anandas'rama Library of Poona through my friend, Prof. S'rîdhara R. Bhândarakar, M. A. It is found to coincide mostly with D. Its *Varce Lectiones* are given in Appendix II. The various readings of V. in Books VII., VIII. and IX. are given in Appendix I. and those of the remaining books in footnotes.

I had a mind to give a rendering of this volume into English in my English notes for the benefit of those readers who do not know Sanskrit. But as the idea did not meet with the approval of one of the Superintendents of the Series, who was consulted on the point, it was given up. The notes are consequently very brief, containing mostly as they do, English equivalents of technical Sanskrit terms.

Râipur, Ahmedâbâd, 28th March 1902.

K. P. TRIVEDI.

# अनुक्रमणिका.

	<b>79.</b>		पृष्ठ.
तप्तमोऽध्यायः	9-20	षड्विंशतितमक्षेत्रम्	96-9
परिभाषा	9-2	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	95
प्रथमक्षेत्रम्	२—३	अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	२०–१
द्वितीयक्षेत्रम्	<b>á-</b> &	प्रकारान्तरम्	
तृतीयक्षेत्रम <u>्</u>	<b>8-4</b>	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	" <b>२</b> १
चतुर्थक्षेत्रम्	4	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
पव्यस्त्रेत्रम्	4	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	₹9–₹
षष्ठक्षेत्रम्	Ę	द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२२
सप्तमक्षेत्रम्	<b>६-७</b>	त्रयक्षिशत्तमक्षेत्रम्	`` २ <b>२</b> –३
<b>प्रकारान्तरम्</b>	v	चतुर्स्निशत्तमक्षेत्रम्	२३- <b>४</b>
अष्टमक्षेत्रम्	<b>9-</b> 6	पश्चित्रशत्तमक्षेत्रम्	<b>28-</b> 4
नवमक्षेत्रम्	6	षदत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	२५-६
दशमक्षेत्रम्	6 <b>-</b> 9	सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	₹€
एकादश्क्षेत्रम्	\$	अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	`` <b>२</b> ६-७
द्वाद्शक्षेत्रम्	90	एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	२७
त्रयोदशक्षेत्रम्	90-9	अष्टमोऽध्यायः	<b>२८-४३</b>
प्रकारान्तरम्	99	प्रथमक्षेत्रम्	२८
चतुर्दशक्षेत्रम्	99-5	द्वितीयक्षेत्रम्	२८-९
पश्चदशक्षेत्रम्	92	तृतीयक्षेत्रम् <b></b>	35
षोडशक्षेत्रम्	<b>9</b> २–३	चतुर्यक्षेत्रम्	₹०−9
सप्तदशक्षेत्रम्	9.5	पश्रमक्षेत्रम्	39
अष्टादशक्षेत्रम्	9 <b>3</b> – 8	षष्ठक्षेत्रम्	₹9-२
<b>एकोनविंश</b> तितमक्षेत्रम्	98-4	सप्तमक्षेत्रम्	<b>३</b> २
विंशतितमक्षेत्रम्	94-8	अष्टमक्षेत्रम्	<b>३२−३</b>
एकविंशतितमक्षेत्रम्	9 €	नवमक्षेत्रम्	33
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	90	दशमक्षेत्रम्	₹ <b>₹</b> -४
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	90	एकादशक्षेत्रम्	₹ <b>४</b> −'4
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	96-6	द्वादशक्षेत्रम्	३५
पवार्विशतितमक्षेत्रम्	96	त्रयोदशक्षेत्रम्	३५-६

Digitized by Google

	पृष्ठ.		মূম্ব.
चतुर्दशक्षेत्रम्	3 6	. अद्यदशक्षेत्रम्	५२
पश्चदशक्षेत्रम्	₹ € − ७	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	"
षोडशक्षेत्रम्	30-6	विंशतितमक्षेत्रम्	५३
सप्तदशक्षेत्रम्	३८	एकावेंशतितमक्षेत्रम्	"
<b>अ</b> द्यदशक्षेत्रम्	₹८ <b>-९</b>	द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	43-8
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	<b>३९-४</b> ०	त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	५४
विंशतितमक्षेत्रम्	¥•	चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	"
एकविंशतितमक्षेत्रम्	80-9	पत्रविंशतितमक्षेत्रम्	48-4
द्वाविंशतितमक्षेत्रम्	¥9- <b>२</b>	षड्विंशतितमक्षेत्रम्	<b>५</b> ५ .
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	४२	सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	,,
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	,,	अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	,,
पव्यविंशतितमक्षेत्रम्	,,	एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	"
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	¥₹	त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	५ ६
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	"	एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,,
नवमोऽध्यायः	88- <b>6</b> 0	द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
प्रथमक्षेत्रम्	**	त्रयस्त्रिशत्तमक्षेत्रम्	48-0
द्वितीयक्षेत्रम्		चतु स्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40
न्द्रतायक्षेत्रम् तृतीयक्षेत्रम्	9> ¥¥− <b>b</b> q	पश्चत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	"
रुतायसम् चतुर्थक्षेत्रम्	४५	षदत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	40-6
पश्चमक्षेत्रम्		सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	46
षष्ठक्षेत्रम्	&d-é	अष्टत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	५९-६०
<b>सप्तमस्</b> सप्तमक्षेत्रम्	-	दशमोऽध्यायः	<b>६१-१</b> २६
अष्टमक्षेत्रम्	" <b>४६−७</b>	_	
नवमक्षेत्रम् -	80	परिभाषा	Ę9
दशमक्षेत्रम् दशमक्षेत्रम्	¥'0-6	प्रथमक्षेत्रम्	€92
एकादशक्षेत्रम्	86	प्रकारान्तरम् विजीयशेलम	<b>६२−३</b>
द्वादशक्षेत्रम्	¥८-%	द्वितीयक्षेत्रम्	€ <b>3</b> −8
श्रायसम्प् त्रयोदशक्षेत्रम्		तृतीयक्षेत्रम् 	68-d
	४ <b>९</b> -५०	चतुर्थक्षेत्रम्	<i>६५-६</i>
चतुर्दशक्षेत्रम्	<b>40</b>	पश्चमक्षेत्रम्	46
पश्चदशक्षेत्रम्	40-9	षष्टक्षेत्रम्	Ę
षोडशक्षेत्रम्	49	सप्तमक्षेत्रम्	<b>६७−८</b>
सप्तदशक्षेत्रम्	49-5	अष्टमक्षेत्रम्	ĘS

	पृष्ठ.		पृष्ठ.
नवमक्षेत्रम्	E4-00	चत्वारिंश <b>त्तम</b> क्षेत्रम्	८९
दशमक्षेत्रम्	<b>v</b> o	एकचत्वारिंश <b>त्त</b> मक्षेत्रम्	<b>ر</b> ر
एकादशक्षेत्रम्	١٩	द्विचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	,
द्वादशक्षेत्रम्	<b>49–</b> ۶	त्रिचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	90
प्रकारान्तरम्	७२	चतुश्रत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	,,
त्रयोदशक्षेत्रम्	<b>ν</b> ξ- <b>γ</b>	परिभाषा	% %0-9
चतुर्दशक्षेत्रम्	80	पश्चवत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	89
पश्रदशक्षेत्रम्	<b>4-80</b>	षदचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	<b>\$9</b> –₹
षोडशक्षेत्रम्	ا ۲.۵	सप्तचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	९२
सप्तदशक्षेत्रम्	७५-६ <sup>i</sup>	अष्टचत्वारिंशतमक्षेत्रम्	<b>९</b> २–३
अष्टादशक्षेत्रम्	•	एकोनपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	43
एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	3-ev	पत्राशसमक्षेत्रम्	•
र्विशातितमक्षेत्रम्	96	एकपश्चाशासमक्षेत्रम्	. " ^३–४
एकविंशतितमक्षेत्रम्	७९	द्विपञ्चाशत्तमक्षेत्रम्	e, 8-4
द्वार्विशतितमक्षेत्रम्	49-60	त्रिपश्चाशत्तम <b>से</b> त्रम्	९५-६
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	60	चतुःपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	\$6
चतुर्विशतितमक्षेत्रम्	۷۹ -	पश्चपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	<b>\$ \( - \( \)</b>
पश्वविंशतितमक्षेत्रम्	د٩-२	षदपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	90
षड्विंशतितमक्षेत्रम्	८२-३	सप्तपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	<b>९७-</b> ८
सप्तर्विशतितमक्षेत्रम्	<b>د</b> ۶	अष्टपश्चाशत्तमक्षेत्रम्	96-9
अष्टाविंशतितमक्षेत्रम्	,,	एकोनषष्टितमक्षेत्र <b>म्</b>	<b>55</b>
एकोनत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	<3-8	षष्टितमक्षेत्रम्	99-900
त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	c8-4	एकषष्टितमक्षेत्रम्	900
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	< 4	द्विषष्टितमक्षेत्रम्	900-9
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	८५-६	त्रिषष्टितमक्षेत्रम्	909
त्रयक्रिशत्तमक्षेत्रम्	< <b>6</b>	चतुःषष्टितमक्षेत्रम्	902
चतु सिंशत्तमक्षेत्रम्	CE-0	प्रकारान्तरम्	१०२–३
पश्रिशत्तमक्षेत्रम्	60	पञ्चषष्टितमक्षेत्रम्	१०३
षद्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	99	प्रकारान्तरम्	,,
सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	66	षदषष्टितमक्षेत्रम्	१०४
अष्टित्रंशत्तमक्षेत्रम्	,,	सप्तषष्टितमक्षेत्रम्	,,
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	,,	अष्टषष्टितमक्षेत्रम्	908-4

¥

पृष्ठ. शततमक्षेत्रम् 939-3 एकाधिकशततमक्षेत्रम् 122 933-3 व्यधिकशततमक्षेत्रम् त्र्य**धिकशततमक्षेत्रम्** 933 चतुरधिकशततमक्षेत्रम् पश्चाधिकशततमक्षेत्रम् 454-8 षडिकशततमक्षेत्रम् 928 सप्ताधिकशततमक्षेत्रम् 928-4 अद्यधिकशततमक्षेत्रम् 934 नवाधिकशततमक्षेत्रम् 926 920-49 एकाद्द्योऽध्यायः परिभाषा 920-6 926 प्रथमक्षेत्रम् द्वितीयक्षेत्रम् 925 तृतीय**क्षेत्रम्** " प्रकारान्तरम् 930 चतुर्थक्षेत्रम् 930-9 पश्चमक्षेत्रम् 939 षष्ठक्षेत्रम् 939-8 सप्तमक्षेत्रम् 933 अष्टमक्षेत्रम् 933 नवमक्षेत्रम् 933-8 दशमक्षेत्रम् 456 एकादशक्षेत्रम् द्वादशक्षेत्रम् 934 त्रयोदशक्षेत्रम् " चतुर्दशक्षेत्रम् ,, पश्चदशक्षेत्रम् 936 षोडशक्षेत्रम् सप्तदशक्षेत्रम् 930 अष्टादशक्षेत्रम् " एकोनविंशतितमक्षेत्रम् 936

	पृष्ट.		पृष्ट.
विं <b>स</b> तितमक्षेत्रम्	936-5	दशमक्षेत्रम्	907-8
एकविंश्वतितमक्षेत्रम्	135	एकादशक्षेत्रम्	908-4
द्वार्वेशतितमक्षेत्रम्	980	द्वादशक्षेत्रम्	9 04-0
त्रयोविंशतितमक्षेत्रम्	980-2	त्रबोदशक्षेत्रम्	100-6
<b>चतुर्विश्व</b> तितमक्षेत्रम्	987-3	चतुर्दशक्षेत्रम्	906-69
पश्चविंशतितमक्षेत्रम्	8-£8P	पश्चदशक्षेत्रम्	969-2
षर्विश्वतितमक्षेत्रम्	988-4	त्रयोदशोऽध्यायः	१८३–२०४
सप्तविंशतितमक्षेत्रम्	9×4-E	प्रथमक्षेत्रम्	१८३
अष्टार्विशतितमक्षेत्रम्	986	द्वितीयक्षेत्रम्	968
एकोनर्त्रिशत्तमक्षेत्रम् -	186-0	तृतीयक्षेत्रम्	968-4
त्रिशत्तमक्षेत्रम्	986-5	चतुर्थक्षेत्रम्	964
एकत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	986-6	पश्चमक्षेत्रम्	964-6
द्वात्रिंशत्तमक्षेत्रम्	985	षष्ठक्षेत्रम्	966
त्रयिक्तंशत्तमक्षेत्रम्	986-40	सप्तमक्षेत्रम्	966-0
<b>चतुः क्षिंशत्तमक्षेत्रम्</b>	240-9	<b>अ</b> ष्टमक्षेत्रम्	164-6
पश्चत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	949-5	नवमक्षेत्रम्	966
षद्त्रिंशत्तमक्षेत्रम्	944-3	दशमक्षेत्रम्	966-8
सप्तत्रिंशत्तमक्षेत्रम्	145-8	एकादशक्षेत्रम्	969-90
अष्टत्रिंश <b>त्ता</b> मक्षेत्रम्	944-8	द्वादशक्षेत्रम्	950
एकोनचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	`	त्रयोदशक्षेत्रम्	959-2
चत्वारिंशत्तमक्षेत्रम् एकचत्वारिंशत्तमक्षेत्रम्	946-6	चतुर्दशक्षेत्रम्	953
· ·	946-8	पश्चदशक्षेत्रम्	997-3
द्वादशोऽध्यायः	960-65	प्रकारान्तरम्	958
प्रथमक्षेत्रम्	960	षोडशक्षेत्रम्	9 <b>९</b> ४–५
द्वितीयक्षेत्रम्	9 ६ ० – २	सप्तदशक्षेत्रम्	9 54-6
<b>त्रीयक्षेत्रम्</b>	१६२–३	अष्टादशक्षेत्रम्	998-6
<b>चतुर्थक्षेत्रम्</b>	9 & 3 - 4	एकोनविंशतितमक्षेत्रम्	
प <b>बमक्षेत्र</b> म्	964-6	विंशतितमक्षेत्रम्	२००–२
षष्ठक्षेत्रम्	988-0	एकविंशतितमक्षेत्रम्	२०२-४
सप्तमक्षेत्रम् अष्टमक्षेत्रम्	960-6	चतुर्दशोऽध्यायः	२०५–२१३
नवमक्षेत्रम् नवमक्षेत्रम्	966	प्रथमक्षेत्रम्	२०५
प्रकारान्तरम् प्रकारान्तरम्	9	द्वितीयक्षेत्रम्	२०५- <b>६</b>
			· · · · · ·

Digitized by Google

Appendix I. containing
the Vara Lectiones
of V. 1-4
Appendix II. containing
the Vara Lectiones
of the Ms. in charge
of the Anandas'rama
Library, Poona 5-8
Notes 9-15
Errata 16

ş

# ॥ अथ सप्तमोऽध्यायः प्रारभ्यते ॥

# तंत्रैकोनचत्वारिंशत्सेत्राणि सन्ति।

# अत्राङ्केर्गणितप्रकारा निरूपिताः॥

- १ अङ्को नाम रूपाणां समुदायः । तन्मते रूपेऽङ्कत्वाभावः । अन्ये तु गणनायोग्यमङ्कं वदन्ति तन्मते रूपेप्यङ्कत्वमस्ति गणनायोग्यत्वात्।
- २ यत्र लघ्वक्को बृहदक्कादसकृत् शोधितः सेन् बृहदक्को निःशेषः स्यात् तदा लघ्वक्को बृहदक्कस्यांशोऽस्ति । बृहदक्को गुणगुणितल-ध्वक्कतुत्योऽस्ति ।
- ३ यस्य भागद्वयं समानं भवति स समाद्वी ज्ञेयः।
- ४ यस्य भागद्वयं समानं न भवति स विषमाङ्को ज्ञेयः ।
- ५ समाद्वी यद्येकेन हीनोऽधिको वा भवति सोऽपि विषमाद्वी ज्ञेयः।
- ६ समाक्को द्विविधः । एकः समसमः ८ । एकः समविषमः ६ ।
- समसमो यथा । समाइः समेन हियमाणः समा लिब्धः प्राप्यते स समसमः ।
- ८ यः समाद्गः समेन हियमाणः विषमा लिब्धः प्राप्यते स समविष-मो ज्ञेयः ।
- ९ अथ विषमविषमाङ्कलक्षणम् । विषमाङ्को विषमेण हियमाणः वि-षमा लब्धः प्राप्यते स विषमविषमाङ्कः । यथा नवाङ्कः (९) त्रि-भक्तः त्रयं प्राप्यते ।
- १० योऽङ्को रूपातिरिक्ताङ्केन निःशेषो न भवति स प्रथमोऽङ्को ज्ञेयः। यथैकादशाङ्कः।
- ११ यो रूपातिरिक्ताक्केन विभागाईः स योगाक्को ज्ञेयः ।

१ तत्र कन K. २ Omitted in K.

- १२ यावद्गी रूपातिरिक्ताद्वेन भक्ती निःशेषी भवतस्तावद्गी मिल्कित-संज्ञी ज्ञेयो ।
- १३ यावद्वावेकातिरिक्तः कोऽपि हरो निःश्चेषं न करोति तौ मिन्ना-द्वी श्चेयो ।
- १४ योऽद्भः स्वेनैव गुणितः फलं तस्यैव वर्गो भवति ।
- १९ योऽइः खवर्गेण गुणितः घनसंज्ञो भवति ।
- १६ गुण्याद्वगुणकाद्वयोघीतो गुणनफलं क्षेत्रफलं भवति ।
- १७ गुण्यगुणको भुजसंज्ञी भवतः।
- १८ क्षेत्रफलं केनचिदद्वेन गुणितं घनफलं भवति ।
- १९ यत्र प्रथमाङ्को यद्गुणितो द्वितीयाङ्कतुल्यो भवति तद्गुणगुणितस्तृ-तीयाङ्कश्चतुर्थोङ्कतुल्यो भवति तदा तेऽङ्काः सजातीया भवन्ति ।
- २० क्षेत्रफलघनफले ते सजातीये भवतो ययोर्भुजावेकरूपौ सजा-तीयौ भवतः।
- २१ योऽइः खल्रियोगतुल्यो भवति स पूर्णसंज्ञो ज्ञेयः । यथा षट् ॥

# ॥ इति परिभाषा ॥

# अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

ययो राश्योः परस्परं भाजितयोरन्ते रूपं शेषं स्थात् तौ राशी भिष्ठसंज्ञी ज्ञेयो ।

यथा अबं बृहद्राशिः किल्पतः । जदं लघुराशिः किल्पतः । जदं अबमध्ये मुहुः शोधितं शेषं तअं तत् जदादृनमवशिष्टम् । पुनस्तअं जदान्मुहुः शोधितं शेषं जवं तत् तआदृनं जातम् । एत तअमध्ये मुहुः शोधितं शेषं कअं रूपम् । तसात् अबजदराशी भिन्नौ स्तः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यद्येतौ भिन्नौ न भवतः तदाऽन्यौ राज्ञी कल्पनीयौ । हम्रमुभयो-

रपवर्तनाङ्कः कल्पितः । ह्रझेनापव- अ.क.त ...... व रिंतं जदं निःशेषं मिविष्यति । जदं ज.व... द बतमिप निःशेषं करिष्यति । इदमेव ह्झ-ह्झं अबमिप निःशेषं करोति । तसात् तआं निःशेषं करिष्यति । मिलितराश्योरपवर्षाङ्कः तआं दवं निःशेषं करोति । तसात् ह्झं दवं निःशेषं करिष्यति । पूर्व ह्झं जदं निःशेषं चकार । तसात् जवमिप निःशेषं करिष्यति । जवं च तकं निःशेषं करिष्यति । तसात् ह्झं तकमिप निःशेषं करिष्यति । तआं निःशेषं करिष्यति । तसात् ह्झं तकमिप निःशेषं करिष्यति । तआं निःशेषं पूर्व कृतवान् । तसात् कथं रूपं निःशेषं करिष्यति । इदमगुद्धम् । यतो रूपं निःशेषं को-ऽप्यङ्को न करोति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

# अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

तत्र मिलितराइयोरपवर्त्ताङ्को महदृहः कल्प्योऽस्ति येन भक्तौ मिलितराशी निःशेषौ भवतः ।

यथा अवजदौ मिलितराशी किल्पतौ । तत्र यदि जदं न्यूनराशिः अवं महद्राशिं निःशेषं करोति तदा- अ .... व यमेव महद्रहोऽस्ति । यदि जदं अवं अ .... ह ..... व अ .... ह ..... व ज ... ह .... व ज ... ह ..... व ज ... ह .... व ज ... व ...

#### अस्योपपत्तिः ।

जझं अहं निःशेषं करोति । अहं च दशं निःशेषं करोति । त-सात् जझं दशमपि निःशेषं करिष्यति। जदमपि निःशेषं करिष्यति । जदं हवं निःशेषं करोति। तसात् जझं हवं निःशेषं करिष्यति। पूर्व जझं अहं निःशेषमकरोत्। तसात् जझं अवमपि निःशेषं करिष्यति।

इदं जझं महदद्वः कुतो जातः। अत्रोच्यते। यदि महान् न भवति तदाऽस्मादिषकं बत्तमुभयोरपर्वत्तकं कल्पितम्। इदं हवं निःशेषं क-रिष्यति। अहमपि निःशेषं करिष्यति। दझमपि च निःशेषं करिष्यति। जदं निःशेषमकरोत्। तस्माज्जझमपि निःशेषं करिष्यति। कल्पितं च जझादिषकम्। इदमनुपपन्नम्। तस्माज्जझं विनाऽन्यः कश्चन महदद्व उभयो राश्योरपर्वाद्वी न भविष्यति। इदमेवाऽस्माकिमष्टम्॥

### अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

अथ राशिद्धयाधिकमिलितराश्यपवर्त्तनार्थं मेहदङ्काः क-ल्पनीयः।

यथा अं बं जं त्रयो राशयः किल्पताः । प्रथमं अवराश्योरपर्वर्तनार्थ महद्द्वो दं कल्पनीयः । यदि दं अ ......
जं निःशेषं करोति तदाऽयमेव महद्द्वो व .....
हेयः। यद्येवं महद्द्वो न स्यात्तदा हं म द ...
हदद्वः किल्पतः । अयमं वं निःशेषं व .....
करोति यो महद्द्व एतह्न्यं निःशेषं व .....
करोति दमपि स एवाद्वो निःशेषं करिव्यति । तसाद् हं महद्द्वो दं लब्बद्वं ह ..
निःशेषं करिष्यति । इदं वाधितम् ।

यदि दं जं निःशेषं न करोति तदैतद्वयनिःशेषकारको महदइ
उत्पाद्यः । तद् हं कल्पितम् । इदं दं निःशेषं करिष्यति । अं बमिप निःशेषं करिष्यति । जमिप निःशेषं करिष्यति । तसाद्राशित्रय-निःशेषकारकोऽयं जातः । असादन्यो महदङ्को न भविष्यति । यदि

९ °रपवर्शको K. २ महदङ्गकल्पनं कियते । K. ३ अवं D. ४ करिष्यति K.

मवित तदा झं कल्पितम् । इदं आं बं निःशेषं करोति । दं निःशेषं करिष्यति । जं निःशेषं करोति । तसात् हमिप निःशेषं करिष्यति । वयं हादिषकोऽस्ति । इदमशुद्धम् । तसान्महदक्को हं भविष्यति ।

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

लघुराशिर्महद्राशेरंशोऽस्ति वा गुणगुणितांशोऽस्ति ।

यथा जदं अवां ऽशो वां ऽशा भवति । यदि जदं अवं निःशेषं करोति तदेदं तस्यांशो भवति । यदि अ .... व निःशेषं न करोति तदा विचहतिचहो - ज .... द पर्यस्य विभागाः कार्याः । यदि अव - अ ....... व ह ... इ जदौ राशी भिन्नो स्तस्तदा विभागा कर्णमताः कस्पनीयाः । यदि मिलितराशयः स्युस्तदाऽनयोरंपवर्चा हेन हुझेन तुस्या विभागा कार्याः। तदा प्रत्येकं जवं वतं तदं अवस्यांशा भविष्यन्ति । योगश्चांशा भविष्यन्ति ।

### अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

राश्चिद्धयमन्यराशिद्धयस्यैकरूपांशो यदि भवति तदा तयो-र्योगो राशिर्भविष्यति ।

यथा अवं जद्स्यांशः कल्पितः। तथैव हम् वतस्यांशः कल्पितः। तसाद् अबह्मयोगो जदवतयोगस्य स एवांशो भविष्यति।

### अस्योपपत्तिः ।

जदस्य किनिहोपिर अबतुल्यिनगगः कार्यः । वतस्य लिनिहो-पिर हम्मतुल्यिनगगः कार्याः । तसात् जकवलयोर्योगो अबह्मयोगतुल्यो ज ... क ... द भिन्यित । एवं कदलतयोर्योगोऽपि । ह .... म तसात् जदवतयोर्योगे अबह्मयोर्योग व .... ल ... त एकस्पो भिन्यित । इदमेनास्माकिमिष्टम् ॥

९ °रषवर्त्तनाङ्केन K.

### अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यदि राशिद्धयं राशिद्धयस्य यावदंशो भवति तदा द्वयो-योंगो राशिद्धययोगस्य स एव यावदंशो भविष्यति ।

यथा अवं जदस्य यावदंशः कल्पितस्तदा हम्मं वतस्य तावदंशः कल्पनीयः । तस्मात् अवहृश्ययोगोऽपि अ ... क ... ब जदवतयोगस्य स एव यावदंशो ज ....... द ह .... ह .... श भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अवस्य किवहोपिर जदांशैस्तुल्या विभागाः कार्याः । हुझे छ-विहोपिर वतांशतुल्या विभागाः कार्याः । अकं जदस्य हुछं वत-स्य चैकांशो भविष्यति । तसात् अकहुळयोगो जदवतयोगस्य स ए-वांशो भविष्यति । पुनर् अकं कवं हुळळझ्योरेकरूपमस्ति । तसात् द्वयोयोंगो जदवतयोगस्य एकरूपा यावदंशा भविष्यन्ति । इदमेवा-साकिमष्टम् ॥

# अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥

राशिद्वयं तथा भवति यथैकराशिद्वितीयराशेरंशो भ-वति । अन्यराशिद्वयं तथा भवति यथैकराशिद्वितीयराशे-रप्येकोंऽशो भवति । न्यूनं तद्राशिद्वयं पूर्वराशिद्वयमध्ये चेच्छोध्यते तदा शेषं शेषस्य स एवांशो भविष्यति ।

यथा अबं जदस्यांशः अहं जझस्य स एवांशोऽस्ति । अहं अबाच्छोधितं जझं जदाच्छोधितं तदा भ .... ह . . ब हबशेषं झदशेषस्य स एवांशो भविष्यति । व .... ज ...... म .... द

#### अस्योपपत्तिः ।

हवं जवस्य सोंऽशः कल्पितः बोंऽशः अहं जङ्गस्वास्ति । तसाद् अवं वङ्गस्य स एवांशो भविष्यति । जदस्यापि स एवांश आसीत्। वझजदे तुल्ये भविष्यतः । जझउभयोः शोध्यते । तदा वजं झद-समानमविश्वष्यते । तसात् हवं झदस्य स एवांशो भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

#### प्रकारान्तरम् ॥

यदि हवं झदस्य स एवांशो न भवति तदा कल्पितं हवं झतस्य स एवांशोऽस्ति । तसात् अवं जतस्य भ .... ह .. ब स एवांशो भविष्यति । अवं जदस्यापि व .... ज .... म ... त. द स एवांश आसीत् । तसात् जदजते समाने भविष्यतः। इदमशुद्धम् ॥ असादिष्टमेव समीचीनम् ॥

### अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

तथा राशिद्धयं चेद्भवति यथैकराशिद्धितीयराशेर्यावदं-शो भवति । अनयोर्मध्ये तथा राशिद्धयं शोध्यं तत्रैकराशि-द्वितीयराशेर्यावदंशो भवति । तदा शेषं शेषस्य तादृग् याव-दंशो भविष्यति ।

यथा अबं जदस्य यावन्तोंऽशा भवन्ति तावन्त एव अहं जझ-स्यांशा यदि भवन्ति तदा हवं झदस्य तावन्त एवांशा अवशिष्टा भविष्यन्ति ।

### अस्योपपत्तिः ।

वतं अबतुत्यं कार्यम् । इदं जदांशानुसारेण कि विहे विभक्तं कार्यम् । अहं लि विहे जझांशानुं- अ ..... ल ..... ह .... ह ... ह .... ह ... ह .... ह ... ह .... ह ... ह .... ह ... ह ...

१ °जुकारेण D.

वमं अलतुत्यं कल्पयेत्। तसाद् मकं शेषं शहस्य सोंऽशो भविष्यति योंऽशो वकं जदस्यास्ति। एवं लहतुत्यं तनं कल्पितम्। कनं शेषं शहस्य स एव भविष्यति तकं जदस्य योऽस्ति। अहतुत्यवमतने जशस्यांशो भवतस्तथा हवतुत्यमनं शहस्यांशो भविष्यति। इदमेवा-साकिमष्टम्॥

### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

यद्यक्कद्वयमिष्टाक्कद्वयस्य तुल्यांशं भवति वा यावदंशतुल्यं भवति तदांशोऽपि अंशस्य स एवांशो भवति य इष्टाक्क इष्टा-क्कस्यांशो भवति ।

यथा अवं जदस्यांशोऽस्ति हुझं वतस्य स एवांशोऽस्ति । तसात् अवं हुझस्य स एवांशो भविष्यति वा यावदंशा भविष्यन्ति यो जदं वतस्यास्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि जदस्य कि चिह्नोपिर अब तुल्यविभागः क्रियते । वतस्य लि चिह्नोपिर हृझ तुल्यो विभागः क्रियते अ....ब तदा जकं वलस्य सोंऽशो भवति अ- ज .... क .... द थवा यावदंशो भवति यथा अबं हृझ- ह ..... स स्यास्ति । तसात् जदं वतस्य स ए- वं शाकि अथवा यावदंशो भविष्यति । इदमेवासाकि मिष्टम् ॥

# अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

यद्यक्कद्वयं अभीष्टाक्कद्वयस्य गुणगुणितांशतुल्यं भवति तयोर्यदि विनिमयः क्रियते तदा यावदंशा यावदंशानां स एवांशो भवति । अथवा यावदंशास्तथा भविष्यन्ति ययेको द्वितीयस्य ।

९ जझस्य यथा भवतस्तथा &c. K.

यथा अबं यावदंशा जदस्यास्ति हम्नं तावन्त एव यावदंशा वत-स्यास्तीति।तसात् अबं हमस्य स एवांशो भविष्यति अथवा तथा या-वदंशा भविष्यन्ति यथा जदं वतस्यास्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अवस्य किचिहोपरि जदांशतुल्या विभागाः कार्याः । ह्झस्य छ-चिहे वतांशतुल्या विभागाः कार्याः । प्रत्येकम् अकं कवं प्रत्येकं हल्ल-झयोः स एवांशो भविष्यति वा तथा यावदंशा भविष्यन्ति यथा अवं हझ-स्यास्ति । यथा जदं वतस्यास्ति । तस्यात् अवं हझस्य स एवांशो भविष्यति अथवा तथा यावदंशाः भविष्यन्ति यथा जदं वतस्यास्ति । इदमेवास्याकिमिष्टम् ॥

### अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११॥

यद्यद्वयमध्येऽङ्कद्वयमेकनिष्पत्तिरूपं शोध्यते तदा शेषे तिष्ठपत्तिरूपे भविष्यतः।

यथा अञ्चलद्योर्मध्ये अहलझे शोध्येते । अञ्चलद्योर्निष्पत्तिः अहलझतुल्या कल्पिता। तदा हवझद्योर्निष्पत्तिरेतन्निष्पत्तितुल्यैवः भविष्यति।

#### अस्योपपत्तिः ।

यतः अबं जदस्य स एवांशो वा यावदंशोऽस्ति यः अहं जझ-स्यास्ति । तस्मात् शेषं हवं झदस्य स एवांशो अ .... ह .. व वा यावदंशो भविष्यति । तस्मात् अनयोर्नि- ज ..... म ... द ष्पत्तिः सैव निष्पत्तिर्भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

१ °को भविष्यति K. भा• २

### अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्गयो-गस्य द्वितीयाङ्गयोगेन सैव निष्पत्तिर्भविष्यति ।

यथा अवयोर्निष्पत्तिर्जदयोर्निष्पत्तितुत्या कित्यता। तसात् अज-योगस्य वदयोगेन निष्पत्तिः अवनिष्पत्तितुत्या भविष्यति।

#### अस्योपपत्तिः।

योंऽशो वा यावदंशा अं बस्यास्ति स एवांशो वा यावदंशा जं द-स्यास्ति । यदि योगः क्रियते तदा अजं बदस्य स एवांशो वा यावदंशो भविष्यति ब ... द ...... यथा अं बस्यास्ति । तसात् अजयोगवद-योगयोर्निष्पत्तिः अबदुत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

## अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

यदि चतुर्णामङ्कानां मध्ये प्रथमद्वितीययोनिष्पत्तिस्तु-तीयचतुर्थयोनिष्पत्तितुल्या भवति । तयोर्यदि विनिमयः क्रियते प्रथमतृतीययोनिष्पत्तिद्वितीयचतुर्थयोनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यथा अवनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुत्या कल्पिता। तदा अजनिष्य-त्तिर्वदनिष्पत्तितुत्या भविष्यति।

अस्रोपपत्तिः । व ... अं बस्य स एवांशो वा यावदंशोऽस्ति ज ..... व ...... यो जं दस्यास्ति । यदाऽनयोर्व्यत्यासः क्रियते तदा अं जस्य स एवांशो वा यावदंशो भवति यो बं दस्यास्ति । त-

सात् अजयोर्निष्पत्तिबद्दनिष्पत्तित्वत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टस् ।।

Digitized by Google

#### प्रकारान्तरम् ।

अनेनैव प्रकारेण योगान्तरयोर्निष्येतिनिश्चयः कार्यः । यथा अव-बजनिष्यत्तिद्देष्ट्रह्मनिष्यत्तितुल्या कल्पिता । यद्यनयोर्योगः क्रियते वान्तरं क्रियते तदा ह ..... ज द ... ह ...... झ अजजबयोर्निष्यत्तिर्द्शसहनिष्यत्तितुल्या भ-

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि व्यत्यासः क्रियते तदा अवदृहनिष्पत्तिर्बजह्झनिष्पत्ति-तुत्या भविष्यति । तसात् अजदृझयोर्निष्पत्तिर्बजहृझनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अजवजनिष्पत्तिदृझहृझनिष्पतितुत्या भविष्यति । इदमेवासाक्रमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

यत्र द्विप्रकारकाङ्का भवन्ति तत्र यदि प्रथमप्रकारे प्रथम-द्वितीययोर्निष्पत्तिद्वितीयप्रकारे प्रथमद्वितीयनिष्पत्तितुल्या भवति प्रथमप्रकारे द्वितीयतृतीयनिष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारे द्वि-तीयतृतीयनिष्पत्तिसमाना भवति तत्र यदि मध्यमनिष्पत्ति-स्त्यज्यते तदा प्रथमप्रकारे आद्यन्तनिष्पत्तिर्द्वितीयप्रकारस्या-द्यन्तनिष्पत्तिसमाना भवति ।

यथा अबजम् एकप्रकारकाङ्काः कल्पिताः । दहशं द्वितीयमका-रकाङ्काः कल्पिताः । तत्र अबयोर्निष्पत्तिर्देह-निष्पत्तित्त्त्या कल्पिता । बजयोर्निष्पत्तिर्देश- ब .....

निष्पत्तितुल्या कल्पिता । तसात् अजनिष्पत्ति- ज ·

र्द्रझनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । ह ....

अस्योपपत्तिः ।

यदि निष्पत्त्या विनिमयः क्रियते तदा अद्योर्निष्पत्तिकहिनिष्पत्ति-

९ °र्निष्पत्तेर्नि॰ K. २ निष्पत्तिविनिमयः K.

तुत्या भविष्यति । बह्रनिष्पत्तिर्ज्ञश्ननिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अद्दनिष्पत्तिर्ज्ञश्ननिष्पत्तितुत्या भविष्यति । यदि व्यत्यासः क्रियते तदा अजनिष्पत्तिर्द्शनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

### अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि रूपं द्वितीयाङ्कं यावद्वारं निःशेषं करोति तावद्वारं तृतीयाङ्कश्चतुर्थाङ्कं निःशेषं करोति चेत्तत्र विनिमये कियमाणे रूपं यावद्वारं तृतीयं निःशेषं करिष्यति तावद्वारं द्विन्तियं चतुर्थं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अबं कल्पितम् । एनमेकाङ्कस्तावद्वारं निःशेषं करोति याव-द्वारं जदं हम्नं निःशेषं करोति । तसादेका-क्को जदं तथा निःशेषं करिष्यति यथा अबं ज.. द हम्नं निःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हृझमध्ये यावन्ति जदानि सन्ति तावन्ति अबमध्ये रूपाणि सन्ति । यावन्तो हृझस्य कलचिह्नोपरि जदतुल्या विभागाः क्रियन्ते तावन्तः अबस्य वचिह्नतचिह्नोपरि रूपाइतुल्या विभागाः कार्याः । तसाद रूपं जदं तथा निःशेषं करिष्यति यथा प्रत्येकम् अववततः बानि हककलल्झान् निःशेषान् करिष्यन्ति । अपि च संपूर्णम् अवं संपूर्ण हृझं निःशेषं करिष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ षोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

तत्र गुण्यगुणकयोघीतो वा गुणकगुण्ययोघीतस्तुल्यो भवति ।

यथा अवगुणनफलं जसंज्ञं कल्पितम्। पुनर्वअगुणनफलं दं कल्पितम्। जं दं च मिथस्तुल्यमस्ति।

९ एकाङ्ग K. २ एकं K. . . .

अस्योपपत्तिः ।

थ ..

रूपं बं निःशेषं तथा करोति यथा अं जं ज ..... निःशेषयति । यतः अं बगुणितं जं कल्पितम् । द ......

पुनरेकम् अं तथा निःशेषं करोति यथा बं दं निःशेषयति । यतो बं अगुणितं दं कल्पितम् । यदि व्यत्यासः क्रियते तदैकं बं तथा निःशेषं करिष्यति यथा अं दं निःशेषं करोति । एकं बं निःशेषमकरोत् यथा अं जं निःशेषमकरोत् । तसाद् अं यावद्वारं जं निःशेषं करोति वावद्वारमेव दं निःशेषं करिष्यति । तसाद् अं यावद्वारं जं निःशेषं करोति वावद्वारमेव दं निःशेषं करिष्यति । तसाद् जं दं तुल्यं जातम् । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

यत्राङ्कद्वयं तृतीयाङ्केन गुण्यते तयोघीतयोर्निष्पत्तिसाद-

यया वं अगुणितं दघातः कल्पितः । पुनर्ज अगुणितं हघातः कल्पितः । दहनिष्पत्तिवीजनिष्पत्तितुल्या जाता ।

#### अस्योपपत्तिः ।

एकम् अं तावद्वारं निःशेषं करोति यावद्वारं बं दं निःशेषं करोति । एवं हि एकम् अं तावद्वारं निःशेषं करोति यावद्वारं जं हं निःशेषं करोति । तसाद् बं दं तावद्वारं निः- ब ... शेषं करिष्यति यावद्वारं जं हं निःशेषं करोति । ज ... . तसाद् बद्दनिष्पत्तिर्ज्जहनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । द ... .. . यदि व्यत्यासः कियते तदा बजनिष्पत्तिर्दहनिष्पत्ति- समाना भविष्यति । इदमेवासाकिषष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

योऽङ्कः अङ्कद्वयेन पृथक् गुण्यते तदा तयोईयोरङ्कयोर्नि-षत्तिस्तद्वयनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।

<sup>9</sup> एकं K.

यथा जं अगुणितं घातो दं कल्पितः । पुनर्जी बेन गुणितं

तश्च हं कल्पितः । तसाद् अबनिष्पत्तिर्दहनिष्पत्ति-

तुल्या भविष्यति । अस्योपपत्तिः । यतो जम् अगुणितं दं जातम् । अं जगुणितं तदापि दं भविष्यति । एवं हि जं बगुणितं हं जातम् । बं जगुणितं तदापि हं भविष्यति । तसात् दहृनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तित्त्या भविष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥ अधैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥ यत्र तथा चत्वारोऽङ्का भवन्ति येषु प्रथमद्वितीययोर्निष्प-त्तिस्तृतीयचतुर्थयोर्निष्पत्तिसमाना भवति । तदा प्रथम-चतुर्थघातो द्वितीयतृतीयघाततुल्यो भविष्यति । यदि चत्वा-रोऽङ्का भवन्ति तत्र प्रथमचतुर्थयोघीतो द्वितीयतृतीयघात-तुल्यश्चेद्भवति तदा प्रथमद्भितीयनिष्पत्तिस्तृतीयचतुर्थनि-ष्पत्तिसमाना भविष्यति। यथा अवजद्चत्वारोऽहाः सन्ति तत्र अवनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्ति-त्रत्यास्ति । तसाद् अदघातो बजवातसमानो भविष्यति । अस्योपपत्तिः । अम् दगुणितं घातश्च इं कल्पितः । बं जेन गुणितं घातो झं क-ल्पितः । पुनर् अजघातश्च वं कल्पितः । त-सादू अं जदाभ्यां गुणितं घातः वं हं जातः। तसात् जदनिष्पत्तिर्वहनिष्पत्त्या तुल्या भवि-

ष्यति । पुनर् अं बं जगुणितं वं झं घातः क-स्पितः । तसाद् अवनिष्पत्तिवंझनिष्पत्तिस-माना भविष्यति । अवनिष्पत्तिर्जदनिष्पत्ति-

<sup>9</sup> अथोनविं° K.

समानास्ति । जदनिष्पत्तिश्च बहनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् बहनि-ष्पत्तिवृद्गनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् वनिष्पत्तिर्हेन झेन तुल्या जाता । तसात् हुझे समाने जाते ।

पुनरिप **हं झं** समानं कल्पितम् । तसात् अवनिष्पत्तिर्जदिनि-षत्तितुल्या भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

पूर्वप्रकारेण वझनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमानास्ति । वहनिष्पत्ति-जेदनिष्पत्तिसमानास्ति । वहनिष्पत्तिर्वझनिष्पत्तिर्मिथस्तुत्यास्ति । कृतः । हझयोस्तुत्यत्वात् । अतः अबजदनिष्पत्तिर्मिथः समाना भवि-ष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

### अनेन क्षेत्रेणेदमपि सिद्धम्।

यदि तादशास्त्रयोक्का भवन्ति येषु प्रथमद्वितीययोर्निष्पत्तिर्द्वितीयतृतीययोर्निष्पत्तिसमाना भवति तत्र प्रथमतृतीयघातो द्वितीयवर्गतुल्यो
भवति । इदमपि ज्ञातम्। प्रथमतृतीयघातो यदि द्वितीयवर्गतुल्यो भवति
तदा प्रथमद्वितीयनिष्पत्तिर्द्वितीयतृतीयनिष्पत्तितुल्या भवति ॥

## अथ विंशतित्मं क्षेत्रम् ॥ २० ॥

यत्र लघ्वङ्का एकनिष्पत्ती तथा भवन्ति यथैतेम्यो लघ्वङ्कास्तिष्ठपत्ती न भवन्ति तदैतेऽङ्कास्तर्यामेव निष्पत्ती ये बृहदङ्कास्तान् निःशेषान् करिष्यन्ति । यथाक्रमं लघ्वङ्केषु लघ्वङ्कास्ते महदङ्केषु लघ्वङ्काक्षिःशेषान् करिष्यन्ति । लघ्व-देषु ये महदङ्कास्ते महदङ्केषु महदङ्काक्षिःशेषान् करिष्यन्ति । यथा अवजदे एकनिष्पत्ती कल्पिते । हशं वतं तस्यामेव नि-षत्ती लघ्वङ्की कल्पतौ । तसात् हशं अवं यावद्वारं निःशेषं करि-

ष्पति वतं जदं तावद्वारमेव निःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हम्म् अवस्यांशोऽस्ति वा यावद्गुणितोंऽशोऽस्ति। यदि यावद्गुणि-तोंऽशो भवति तदा हम्भस्य कचिह्नोपरि हकक्मी अवांशतुल्यो कल्पितो। तेदैते एवांशा अदस्य जद्राः भविष्यन्ति। तो च बललतो कल्पितो। हकं हा का ल वलस्य तल्रमाणं भविष्यति यल्रमाणं हम्मं वतस्य भवति। तसात् हकबलो हम्भवत्योर्न्यूनौ भविष्यतः। हम्भवत्योर्निः षाचितुल्यो भविष्यतः। हम्भवतो अस्यामेव निष्यत्तो न्यूनाङ्कौ कल्पितो। इदमशुद्धम्। तसात् हम्भम् अवस्यांशो भविष्यति। तदा वतं जद्रस्यांशो भवति। न यावद्गुणितोंऽशः। तसात् हम्मं यावद्वारम् अवं निःशेषं करिष्यति तावद्वारं वतं जदं निःशेषं करिष्यति। इदमेवा-साक्मिष्टम्॥

अधैकविंशतितमं क्षेत्रम्।। २१।।

ये लघ्यक्कास्तयैकनिष्पत्तौ यदि भवन्ति यथान्ये तेभ्यो लघ्यक्कास्तक्षिष्पत्तौ न भवन्ति । तदा तेऽक्का भिक्का भवन्ति। यथा अबौ लघ्यक्कौ एकस्यां निष्पत्तौ कल्पितौ। एतौ भिन्नौ भवि-घ्यतः।

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि मिन्नो न स्तस्तदोभयोर्ज अपवर्तनं कल्पितम् । जं यावद्वारम् अं निःशेषं करोति तत्फलं हं कल्पितम् । पुनर् जं बं यावद्वारं निःशेषं करोति तत्फलं दं कल्पितम् । तसात् जं ब ... हदाभ्यां गुण्यते तदाऽनयोर्घातः अं बं भविष्यति । तसात् ज — हदनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एतद्वयं हं दम् अबयोर्न्यूनमस्ति । इदमग्रद्धम् । असदिष्टमेव समी-चीनम् ॥

९ तदा **वते** त एवां K.

### अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

भिन्नाङ्कावल्पोस्तस्तिन्निष्पत्तावन्यावल्पावङ्को न भविष्यतः।
यथा अवी द्वौ भिन्नाङ्कावल्पो कल्पितौ । एतन्निष्पत्तावन्यावङ्कावल्पौ न मविष्यतः । यदि अन्यावङ्कौ एतन्निष्पत्तावल्पौ
स्थातां तदा जदौ कल्पितौ । तसात् जं अं हतुल्यं निःशेषं करिष्यति । दं वं हतुल्यं निःशेषं करिष्यति । दं ज
अं जतुल्यं निःशेषं करिष्यति । हं वं दतुल्यं निःशेषं करिष्यति । तसात् अवौ मिलिताङ्कौ जातौ । पूर्व कलिसतौ तु भिन्नाङ्कौ । इदं वाधितम् । असदिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

द्वयोर्भिन्नाङ्कयोरेकमङ्कमन्यस्तृतीयोऽङ्को निःशेषं करोति चेत्तदा तृतीयोऽङ्को द्वितीयाङ्केन सार्कं भिन्नो भविष्यति।

यथा अवी हो भिन्नाङ्को किल्पतो । जं तृतीयाङ्को यथा अं निः-शेषं करिष्यति तथा किल्पतः । तदा जैवाङ्को भिन्नो भ-विष्यतः । व

अस्योपपत्तिः ।

ज ...

यदि जबाही मिन्नी न भविष्यतः तदोभयोरपवर्तनार्थ दं कल्पितः । तसात् दं जं निःशेषं करिष्यति । जं अं निःशेषं करोति। तसात् दं अं निःशेषं करिष्यति । दं बमिप निःशेषं करोति। तसात् अबी मिलिताही जाती । कल्पिती मिन्नाही । इत्यशुद्धम् । तसादस्रदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यौ द्वावङ्कौ तृतीयाङ्काद्मिक्षौ स्तस्तयोर्घातोऽपि तस्मा-चृतीयाङ्काद्मिको भवति ।

९ **जं बाङ्गद्धिमो** भविष्यति K. भा॰ ३

यथा अबी जाङ्काद्रिको कल्पितो । अवयोर्घातो दं कल्पितः । तसा-दयं दाङ्को जाद्रिको भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि द्जावद्वी भिन्नी न भवतस्तदा द्वयोरपवर्तनाद्वी हं कल्पिकः।
हाद्वी दादं झतुल्यं निःशेषं करिष्यतीति कल्पितः ॥
तस्मात् ह्झाधातो दं भविष्यति । अं वेन गुणितं दं नःः
जातमस्ति । तस्मात् हआनिष्पत्तिव्यक्तिमणितुल्या
भविष्यति । हं जंनिःशेषं करोति । तस्मात् हं अं हिल्लिमात्वी स्वाति । स्वाति हं अं हल्लिमात्वी स्वाति । तस्मात् हं अं छ्यू जातौ । अस्यां

निष्पत्तावन्यौ लघ्वद्वौ न भवतः । एतावद्वौ बङ्गौ निःशेषौ करि-ष्यतः । तस्मात् हं वं निःशेषं करिष्यति। जं निःशेषं करोति । तस्मात् बजौ मिलिताद्वौ जातौ । कल्पितौ च भिष्नाद्वौ । इदमशुद्धम् ॥ तस्मा-दस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पश्चिविशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥ यद्येकाङ्को द्वितीयाङ्काद्विको भवति तदा तस्य वर्गोऽदि द्वितीयाङ्काद्विको भविष्यति ।

यथा अं बाद्भिनं कल्पितम् । जम् अअइस्य वर्षः कल्पितः। तस्मात् जं बाद्भिनं भविष्यति ।

बस्योपपत्तिः।

द्भद्रअभद्रौ तुन्यौ कस्पितौ । तसात् अं दं च भ ः दः बाद्रिनं भविष्यति । अभद्रदभद्रयोघीततुत्यं जमस्ति । व... तसात् जाद्रोऽपि बाद्रिन्नो भविष्यति । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ पर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ यदि द्वावङ्कावन्याभ्यामङ्काभ्यां प्रत्येकं भिन्नौ भवत-स्तदाऽऽद्याङ्कद्वयघातोऽन्यद्वयाङ्कघातात्रिको भवति । यथा औ बमहहूरं कल्पितं तथा जदमन्याहृद्धयं कल्पितम् । प्रत्येकं अं वं जद्गम्यां भिन्नमस्ति । अवयोर्घातो हं क-ल्पितः। जदयोर्घातो झं कल्पितः। तसात् ह्झा-विपि मिथो भिन्नो भविष्यतः। ज. द.... अस्योपपत्तिः।

बतः श्रं बं मत्येकं जाद्भिन्नमित । तसात् हमि जाद्भिनं भवि-ध्यति। पुनर् श्रं बं मत्येकं दाद्भिन्नमिति। तसात् हमि दाद्भिनं भवि-ध्यति । तसात् जं दं मत्येकं हाद्भिनं मविष्यति । तसात् झमि हा-द्भिनं मविष्यति । हैदमसाकिम्हम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

यावङ्की भिन्नी भवतस्तयोर्वर्गाविप भिन्नी भविष्यतः । एवं तयोर्घनाविप भिन्नी भवतः ।

यथा अबी भिन्नाक्की कल्पिती । अनयोर्वगीं जदी कल्पिती । इसी च घनी कल्पिती । तसादनयोर्वगीं जदी मिथो भिन्नी भवि-घ्यतः । इसी घनावपि मिथो भिन्नी भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः।

अबौ मिथो भिजौ स्तः । तस्मात् प्रत्येकस्य वर्गोऽपि द्वितीबाद्विज्ञो मिविष्यति । तस्मात् अं दाद्विज्ञं भ- भ ... विष्यति । अवर्गो जं दाद्विज्ञं भ- ब... विष्यति । प्रत्येकम् अं जं बदाम्यां ज्यान्ति । प्रत्येकम् अं जं बदाम्यां व....... हि...... हि..... हि..... हि..... हि..... हि.... हि.... हि.... हि.... हि... हि...

<sup>9</sup> इदमेवाº K.

### अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

यावङ्की भिन्नी भवतस्तयोयींगोऽपि प्रत्येकाद्विन्नो भवि-च्यति । यदि योगः प्रत्येकाद्विन्नो भविष्यति तदा तदङ्कयो-गयोरन्तरमपि भिन्नं भविष्यति ।

यथा अबबजी मिलाही कल्पिती । तस्मात् अ.....ब....ज अजम् अबाद्मिलं भविष्यति । द— अस्योपपत्तिः ।

यदि अजम् अबाद्भिन्नं न भवति तदोभयोरपवर्तनं दं कल्पितम्। एतत् दं बजस्याप्यपवर्तनं करिष्यति । तस्मात् अबबजी अभिन्नो भवतः । इदमग्रद्धम् ॥

अनेनैव प्रकारेण अर्ज बजाद्विनं भविष्यति ।

पुनरिप अजअवौ भिन्नो कल्पितौ तस्मात् अववजाविप भिन्नो भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि अवबजो भिन्नो न भवतस्तदोभयोरपवर्तनं दं कृत्पितम् । तदा दम् अजस्याप्यपवर्तनं करिष्यति । तस्मात् अजअबौ मिलितौ भविष्यतः । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टमेव समीचीनम् ॥

### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

यदि अवबजो मिलितो कल्पितो तदा अजबजाविप मिलि-ताहो मिविष्यतः। यदि अजबजो मिलिताहो न भ- अ.....ब...ज वतस्तदानयो रूपं विना कोऽप्यपवर्तको न भविष्यति। अवमिप रूपं विना न कोण्यपवर्तयति।तस्मात् अवबजो भिन्नो मिन-ष्यतः। इदमग्रद्धम् ॥ पुनरि अजबजी मिलितौ किस्तौ अबबजावि मिलितौ भवि-ध्यतः । यदि मिलितौ न स्तस्तदाऽनयो रूपं विनाऽपवर्तको न मिन-ध्यतीति।अजमि रूपं विना न कोऽप्यपवर्तयतीति।इदमशुद्धम् । इष्टमुपपन्नम् ॥

अथैकोनत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

योगाङ्कं प्रथमाङ्को निःशेषं करोति।

यथा अं योगाङ्कः किल्पतः। बम् अस्यापवर्तकं किल्पतम्। यदि बं प्रथमाङ्को भवति तदेष्टमस्माकं समीचीनम्। यदि बं अ.... प्रथमाङ्को न भवति तदा बस्यापवर्तकं जं किल्पतम्। ब., अनेनैव प्रकारेण जं प्रथमाङ्को भविष्यति। यद्ययं न स्था- ज— तदाऽन्यः कल्पनीयः। एवं कोऽप्यस्यापवर्तनाङ्को भविष्यति। तदेव जं किल्पतम्। तस्मात् जम् अमपि निःशेषं करिष्यति। इदमेवेष्टम्॥

अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

योऽद्गः कश्चित् स प्रथमाङ्गो भवति । अथवा तस्यापवर्तकः प्रथमाङ्गो भवति ।

यथा अं कल्पितम् । यदीदं प्रथमाद्गः स्यात्तदैविमष्टं जातम् । यदि प्रथमाद्गो न भवति तदा योगाद्गो भविष्यति । यो-गाद्गं प्रथमाद्गः निःशेषं करिष्यत्येव। इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

यमक्कं प्रथमाक्को निःशेषं न करोति तस्मात् प्रथमाक्को मिक्को भवति।

यथा अं प्रथमाद्वः कल्पितः। यमद्वं प्रथमाद्वो निःशेषं न अ... करोति सोऽद्वो बं कल्पितः। तस्मात् अं बाद्भिनं भविष्यति।

<sup>9</sup> तदैवं D.

अस्योपपत्तिः।

यदि द्वारपि भिन्नो न स्तस्तदैतयो रूपं विहासान्यः कश्चिदद्वोऽपर-र्तनं करिष्यति । अं च प्रथमाद्वः कल्पितः । इदमशुद्धस् ॥

अथ द्वात्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

प्रथमाङ्को यदि घाताङ्कं निःशेषं करोति तदा प्रथमाङ्क-स्तस्य घातस्यैकभुजमपि निःशेषं करिष्यति ।

यथा अं प्रथमाद्वः कल्पितः । बं घातफलाद्वः कल्पितः । घातफला-द्वस्य जदी भुजी कल्पिती । अं बं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तसात् अं जं निःशेषं करिष्यति वा दं निःशेषं करिष्यति । अस्योपपत्तिः ।

बिद अं जं निःशेषं करोति तदासदिष्टं समीचीनम्। बिद विःशेषं न करोति तदा अजौ मिथो मिनौ भविष्यतः । अ... पुनर् अं बं इतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । ब... तसात् अं चेत् हेन गुण्यते तदा बं भविष्यति । ज... इ... जद्मातोऽपि बं भविष्यति। तसात् अजनिष्पत्ति हूं... दहनिष्पत्त्या तुल्या भविष्यति। अजौ तथा न्यू-नाहौ स्तो यथाऽस्यां निष्पत्तावन्यौ न्यूनाहौ न भविष्यतः । तसात् अं हं निःशेषं करिष्यति। इदमेवासाकिमष्टम् ।

अथ त्रयख्रिशत्तमं क्षेत्रम्।। ३३ ॥

ज्ञाताङ्कनिष्पत्तौ छष्वङ्कानायुत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ।

यथा अवजम् अद्याः किल्पताः। एतेऽद्वा यदि मिश्रो मिनाः सन्ति तदास्यां निष्पत्तावेत एवाद्वा लघवो भविष्यन्ति । यदि मिलिताद्वाः स्युस्तदैतेषामपवर्तको महदद्वो दं किल्पतः। पुनरिदं कल्पनीयं दं अं हतुल्यं निःशेषं करोति वं झतुल्यं निःशेषं करोति जं च बतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् हं झं वम् एतेऽद्वास्तस्यां निष्पत्तौ लघ्वद्वा मिष्यन्ति।

बिद व भवन्ति तदा तकछं तस्यां निष्यतो छ-जद्भा मिक्यन्ति । तः अं कः वं छं जं महुक्यं व...... निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तस्यात् मतस्यातः ज....... वं मिक्यन्ति । दह्यातः अमितः । तस्यात् हत-निष्यतिर्मद्दिष्णितस्याना मिक्यिति । हं च ताद-विक्रमितः । तस्यात् मं दादिषकं भविष्यति । अवजं क्.... निःशेषं करिष्यति । पूर्वमेतेषां निःशेषको बृहद्शो व.... दं कल्पिः । इदमगुद्धम् । तस्यात् हं शं वं विना-ऽन्ये कष्वद्शा अस्यां निष्यतो न भविष्यन्ति । इदमेवासाक्रियदम् ॥ अथ श्वतिंक्षशत्ममं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

तत्र द्वाभ्यामङ्काभ्यां यो लष्यङ्को निःशेषको भवति ततुत्यादनं चिकीर्षितमस्ति ।

यथा अं बम् अद्भद्धयं कल्पितम् । यद्येतयोर्मध्ये छ्व्वद्शो महद्द्रः निःशेषं करोति तदा महद्द्रः एवेष्टः । यदि न करोत्येंभौ च मिथो भिन्नो मवतस्तदा अं बगुणितं कार्यम्। तदा घातफरुं जिमष्टं भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

जं अं वं प्रत्येकं निःशेषं करोतीति प्रकटमेवासि । यवन्यो कष्यक्को मनति तद् दं कल्पितम् । अवौ इतुल्यं झतुल्यमेनं धः...
निःशेषं करिष्यतः। तसात् अइघातो दं मविष्यति । व....
तथा बस्रवातोऽपि दं मविष्यति । तसात् अवनि- व....
पत्तिर्झहनिष्यतिसमाना मविष्यति । अवौ इ—
तथा बष्यक्को स्तो वथाऽस्यां निष्यत्तावन्यो छध्वक्को न अविष्यतः । तस्मात् अं झं निःशेषं करिष्यति । वं हे निःशेषे करिष्यति । पुनर्बम् अझाम्यां गुणितं जं दं जातम् । तस्मात् अझान्-

९ नि:श्रेषो K. २ D. inserts तदा.

व्यक्तिजंदनिष्यितित्था भविष्यति । तस्मात् जं महदद्वो दं रुष्वद्वमपि निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तस्मात् जात् कोऽपि रुष्वद्वो न भविष्यति यं अबौ निःशेषं कुरुतः ।

यदि अबी मिलिता हो स्तरतस्मात् झहो तस्यां निष्यत्ती रूपा ही किस्यती । तस्मात् अबनिष्यत्ति झहिनष्यत्तितुत्या भविष्यति । अहि-धातफलमथवा बझघातफलं च जं किल्पितम् । इदमेवास्माकिमष्टम् ।

अबौ जं निःशेषं कुरुत इति प्रकटमेवास्ति। अयं रुष्वङ्गः कुतोऽस्ति। यद्ययं रुष्वङ्गो न भवति तदाऽस्मात् रुष्वङ्गो दं कल्पितः। अमुम् अं

बतुष्यं निःश्वेषं करोति बं च ततुष्यं निःशेषं क-रोति । तस्मात् अवधातो दं भविष्यति । बतघा-तोऽपि दं भविष्यति । तस्मात् अबनिष्पत्तिः तवनि-ष्पत्तिसमाना भविष्यति । झहनिष्पत्तिसमाना आ-सीत् । तस्मात् झहनिष्पत्तिः तवनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । अस्यां निष्पत्तौ झहो छष्टको स्तः ।

द—त—

तस्मात् शं तं निःशेषं करिष्यति । पुनर्वे शेन गुणितं जं जातं तेन गु-णितं दं जातम् । शतनिष्पत्तिजेदनिष्पत्तितुल्या मविष्यति । तस्मात् जं महदद्दो दं रूष्यद्वं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम्। अस्मदिष्टमेव समीचीनम् ॥

# अथ पश्चित्रंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

यं लघ्यक्रमन्यौ कावप्यक्रौ निःशेषं कुरुतः सोऽक्रुसाः स्यामक्राभ्यां निःशेषितमन्यां क्रुं निःशेषं करिष्यति ।

यथा वतं रुध्वद्भः कल्पितः । अमुं अवजदाश्ची निःशेषं कुरुतः । पुनरेतावद्भी ह्याङ्कं निःशेषं कुरुतः । तस्मात् वताङ्कोऽपि ह्यं निःशेषं करिष्यति ।

९ K. omits अन्य in अन्याङ्गे.

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि वता हो हमं निःशेषं न करोति तस्मिन् कझमवशिष्टं कल्पि-तम्। कझं वताच्यूनमवशिष्टम्। पुनद् अवजदौ हकं निःशेषं कुरुतः।

कुतः । वतनिःशेषकरणात् । वतेन हकस्यापि अ.. व निःशेषकरणाच । पुनर् अवजदौ हशं निःशेषं ज...द कुरुतः । तसात् कझमपि निःशेषं करिष्यतः । वतं व.....त रुष्वक्कम् अवजदौ निःशेषं चक्रतुः । वतं कझा-दिषकमिति । इदमगुद्धम् । असदिष्टमेव समीचीनम् ॥

# अथ षट्त्रिंशसमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥

ताहशो लघ्वङ्कः कल्पनीयो यं द्वाभ्यामधिका अङ्का निः-शेषं कुर्वन्ति ।

यथा अवजास्तयोऽद्वाः कल्पिताः । लघ्यद्वस्तु दं कल्पितः । अमुम् अवौ निःशेषं कुरुतः । यदि जाद्वोऽपि दं निःशेषं करोति तदायमेव लघ्यद्वः सिद्धस्त्रिमिरद्वैरपि निःशेषो भवति ।

अत्रोपपत्तिः प्रकटैव।यदि दाङ्को लघुर्न भवति अ...
तस्मादन्यो लघ्वङ्को हः कल्पितः। अमुम् अबौ निः- ज.....
तस्मादन्यो लघ्वङ्को हः कल्पितः। अमुम् अबौ निः- ज.....
अषं करिष्यतः। तस्मात् हं दाङ्कोऽपि निःशेषं करि- ह.......

यदि जाक्को दं निःशेषं न करोति तदा पुनर्लघ्वक्को निष्पादनीयो यं जदौ निःशेषं कुरुतः । सोऽक्कः हं कल्पितः। अयं लघ्वक्को जातः । एनम् अवजदा निःशेषं कुर्वन्ति ।

अस्योपपत्तिः ।

यस्मात् अवौ दं निःशेषं कुरुतो दाक्को हं निःशेषं करोति। तस्मात्

Digitized by Google

अबी हमि निःशेषं करिष्यतः । जाह्रोऽपि हं निःशेषं करिष्यति । तस्मात् हाङ्गोऽपि अबजैनिः- ब... शेषो भैवति । अयं हाङ्गः कृतो लघुस्तत्र युक्तिः । ज.... य्ययं लघुनं भवति तदा झाङ्गो लघुः कल्पितः । ह...... एनम् अबजा निःशेषं कुर्वन्ति तस्मात् अबावपि निःशेषं कुरुतः । दाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यति । जाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यति । तस्मात् हाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यतः । तस्मात् हाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यतः । तस्मात् हाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यतः । तस्मात् हाङ्गोऽपि निःशेषं करिष्यति । हाङ्गो झादिषकः। इदमशुद्धम्। तस्मादिष्टमस्माकं समीचीनम् ॥

अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७॥

यमङ्कं यः कश्चनाङ्कः निःशेषं करोति तत्र छिष्धस्तन्नाम-कांशो भवति ।

यथा अं बाक्को निःशेषं करोति । यावद्वारं बाक्को अं निःशेषं करोति तावद्वारं रूपं जाक्कं निःशेषं करोतीति क- ल्यितम् । तसात् यावद्वारं जम् अं निःशेषं करोति व .... तावद्वारं रूपं बाक्कं निःशेषं करोति व .... तावद्वारं रूपं बाक्कं निःशेषं करिष्यति । तसाद्व्यं ज .... बस्य सोंऽशो भविष्यति योंऽशो जम् अअक्कस्यास्ति । रूपं बस्य बाक्कनामकोंऽशो जातः । तदा जम् अअक्कस्य सोंऽशो जातः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथाष्ट्रतिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८ ॥ यस्याद्वस्यांशो यन्नामको भवति तन्नामाद्वस्तमद्वं निःशेषं

यथा अधक्रस्य बमंशोऽस्ति । रूपं जस्य अ ....... स एवांशोऽस्तीति कल्पितम् । तस्मात् बं जनामकं ज ..... भविष्यति । रूपं जाक्रं तथा निःशेषं करोति यथा

करिष्यति ।

९ भविष्यति K. २ °वास्मदिष्टम् K.

बाद्धः अं निःश्चेषं करोति । तसाद्व्यं बं निःशेषं तथा करोति यथा जाद्धः अं निःशेषं करोति । तसात् जाद्धः बंभंशनामकः अं निःशेषं करिष्यति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥

तत्र यस्य बहवोंऽशाः प्राप्यन्ते तादृशो लघ्वङ्को निष्पाद-नीयोऽस्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यद्ययं लघ्वद्वो न भवति तदा तो लघ्वद्वः कल्पितः । कल्पिता अंशाः तलघ्वद्वस्य भविष्यन्ति । एतल्लघ्वद्वनामसदृशा अद्वा हद्झा एनं निःश्चेषं करिष्यन्ति । लघ्वद्वो वात् लघुरस्ति । इदमनुपपन्नम् । तसात् व एवेष्टाद्वः । इदमेवाऽस्माकिमष्टम् ॥ ३९ ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टी द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समभिधारूढितेन प्रणीते । मन्थेऽस्मिन्नाम्नि रेखागणित इति स्रकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति सप्तमः संगतोऽभूत् ॥ ७ ॥ इति श्रीजगन्नाथसम्राड्विरचिते रेखागणिते सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥

### अथाष्ट्रमोऽध्यायः प्रारभ्यते ॥ ८ ॥

॥ तत्र पञ्चविंशतिक्षेत्राणि सन्ति ॥

अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषामाद्यन्ती भि-ष्राङ्की चेद्रवतस्तदा तस्यां निष्पत्ती तान् विनाऽन्दे छष्वङ्का न भविष्यन्ति ।

यथा एकस्यां निष्पत्तौ अवजदा लब्बद्धाः कल्पिताः । अदौ मिथो भिन्नौ कल्पितौ । तस्मादस्यां निष्पत्तावेते लब्बद्धाः सन्ति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यद्येते लघ्वद्वा अस्यां निष्यत्तौ न भवन्ति तदा तस्यां निष्यत्तौ तेभ्यो लघवोऽन्येऽद्वा हझवताः कित्यताः।
तस्यात् अदिनिष्यित्तितिष्यत्तिसमाना भ- ह--विष्यति । अदौ यौ भिलाद्वौ तावस्यां नि- क्ष--- व--प्यतौ लघ्वद्वौ भविष्यतः । यावन्तोऽद्वा
अस्यां निष्यतौ भवन्ति तान् अदावेव निःशेषं करिष्यतः । तस्यात्
अं हं निःशेषं करिष्यति । अं हादिषकमित्ति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

एकनिष्पत्तौ ये छघ्वङ्का भवन्ति तेषामुत्पादनमिष्टमस्ति । यथा अवनिष्पत्तौ चतुर्णा लघ्वङ्कानामुत्पादनमिष्टमस्ति । अस्यां निष्पत्तौ अबौ लघ्वङ्को कल्पितौ । अवर्गः कार्यः । पुनर् अवधातः कार्यः । पुनर्ववर्गः कार्यः । फलानां च जदहसंज्ञा कार्या । पुनरेत- क्रयेण अं गुणनीयम् । बहुधातश्च कार्यः । एतेषां फलानि स्वत-क्कानि कल्पितानि ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अम् अबाम्यां गुणितं फरूं जं दमुत्पन्नम् । तदा अबनिष्पिः

जटनिष्पत्त्या त्रल्या भविष्यति। बम् अबाभ्यां गुणितं फलं दहसंज्ञं जातम् । तसाद दहनि- अ, २. व, ३. षात्तिः अबनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसा- झ,८.व,१२.त,१८.क६५७. देतत्रयमेकनिष्पत्तौ भविष्यति। पुनर् अम् एत-

भयगुणितं झवतं निष्पन्नं तदप्येकनिष्पत्तौ जातम् । हगुणितम् अवं फुं तकसंज्ञं जातम् । इदमपि पूर्वनिष्पत्तौ जातम् । तसाज्ञत्वा-रोऽड्डा एकस्यामेव निष्पत्तौ जाताः । एते रुघ्वड्डा ये अस्यां निष्पत्तौ नाताः । कुतः । अवयोर्भिन्नाइत्वात् । जही ऐतेषां वर्गी झकी धनौ त्रयाणामञ्चानामाद्यन्तौ चतुर्णामप्याद्यन्तौ भिन्नौ भिन्नौ पतितौ । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अनेन क्षेत्रेणेदं सिद्धम् । ये लघवस्त्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्तौ वर्गी भवतः। ये लघवश्चत्वारोष्ट्रा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्ती घनी भवतः ॥

# अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यावन्तो लघ्वका एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषामाद्यन्ती भिन्नी भवतः।

यथा अबजदा लघ्व इाश्चत्वार एक निष्पत्ती कल्पिताः । तत्र अदी भिन्नी भैवतः।

थ, ८. ब, १२. ज, १८. द, २७. अस्योपपत्तिः । ह, २. झ, ३.

अस्यां निष्पत्ती हुझी लघही व, ४. त, ६. क, ९. छ, ८. म, १२. न, १८. स, २७. गृहीतो । पनवतकास्त्रयोऽहा लघवो

गृहीताः । पुनर्छमनसाश्चत्वारो ल्व्वद्वास्तस्यामेव निष्पत्तौ गृहीताः । तसादेते अबजद्तुल्या भविष्यन्ति । छसी भिन्नी स्तः । अदाविष

भिन्नी भविष्यतः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

<sup>9</sup> अं कं K. २ K. एते (एती ? or एतयो. ?) अ भविष्यतः K.

# अथ चतुर्थक्षेत्रम् ॥ ४ ॥

तत्र कल्पितबहुनिष्पत्तिषु छघूनामङ्कानामुत्पादनमिष्ट-मस्ति ।

यथा अबनिष्पत्तिजदनिष्पत्तिहस्रनिष्पत्तयः कल्पिताः मद्बद्धयमस्यां निष्पत्तौ लष्ट्यद्वं भवति । अथ तं लप्ट्यद्व उत्पाद्यः यं बजी निःशेषं करिष्यतः । तथैकोऽह्वो वम् उत्पाद्यो यम् अं तथा निःशेषं करिष्यति यथा बं तं निःशेषं करोति । पुनर्ट कं तथा निःशेषं करोति यथा जं तं निःशेषं करोति । पुनर्लः लघ्वद्व उत्पाद्यो यथा छं कही निःशेषं करिष्यतः । पुनर्नसौ ल्प्बद्यौ उत्पाद्यौ यौ वतौ तथा निःशेषं कुरुतो यथा कं लं निःशेषयति । झं मं निःशेषं तथा करोति यथा इं छं निःशेषयति। तसात् नसलमअङ्कास्तास् निष्पत्तिषु उत्पना जाताः।

अस्योपपत्तिः ।

अबी वती क्रमेण त्रस्यं निःशेषं क़रुतः । वती नसी तुस्यं निःशेषं कुरुतः । तसात् नसौ अ. २. ब. ५. ज. ३. द. ४. इ. ५. झ. ६. अवनिष्यती भविष्यतः व, ६. त. १५. क, २०. ल, १०. म, २४. जदौ तकौ तुल्यं निःशेषं कुः न, ६. स, १५. न, ६. स, १५. छ, २०. स, २४. रुतः । पुनस्तकौ सङौ निः-शेषं कुरुतः । तसात् सङी जदनिष्पत्तितुल्यो जातो । हझौ लमौ तुल्यं निःशेषं करिष्यतः। तसात् लमी हञ्चनिष्पत्तितुत्यौ भविष्यतः। तसात् नसलमा ल-ष्वद्वा अस्यां निष्पत्तौ जाताः । यदि लब्बद्धा एते न भवन्ति तस्मात् गफछखा रुष्वद्भाः कल्पिताः। तसात् अबी गफी तुत्यनिष्पत्ती भवि-ष्यतः । पुनरबो लब्ब हो अस्यां निष्पत्ती स्तः । तसादेती गर्फ निः-शेषं करिष्यतः। अनेनैव प्रकारेण जदी फछी निःशेषं कुरुतः । हुझी छखौ निःशेषं कुरुतः । तसात् बजौ फं निःशेषं करिष्यतः । तं क्रम्ब**डं बजी** निःशेषं करिष्यतः । तस्मा**त्तं फं** निःशेषं करिष्यति । पुनस्तकनिष्पत्तिः फुळनिष्पत्तितस्या भविष्यति । तसात कं छं

निःशेषं करिष्यति । हं छनिःशेषंमासीत् तसात् कहाँ छं निःशेषं करिष्यतः । छ: लघ्वद्वोऽस्ति यं कहाँ निःशेषं करिष्यतः । तसात् छं छं निःशेषं करिष्यति । छं च लघ्वद्वोऽस्ति । इदमशुद्धम् । तसा-असलमा एव लघ्वद्वा भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

्घातफलाङ्कस्य घातफलाङ्केन निष्पत्तिस्तद्धुजनिष्पत्त्यो-र्घातो भविष्यति ।

यथा अघातफलाइस्य जदौ भुजौ कल्पितौ । बघातफलस्य हुझौ भुजौ कल्पितौ । तसात् अबयोर्नि-ष्यत्तिः जहदझनिष्यत्त्योर्घातो भविष्यति । ह,१२. अनयोर्निष्यत्त्योर्वतकं लघ्वद्वा प्राद्याः। त- ज,२. द,३. इ,४. झ,५. सात् जहनिष्यत्तिर्वतनिष्यत्तिसमाना भवि-

ष्यति । दश्निनष्यत्तिस्तकिनिष्यत्तिसमानास्ति । अनयोर्निष्यत्योर्घातो वकिनिष्यत्तिरस्ति । दृष्ट्घातो छः किल्पतः । तसात् वतिनिष्यत्ति- तुल्या जहिनिष्यत्तिः अलिनिष्यत्तिसमाना भविष्यति । दृश्गिनिष्यत्ति- तुल्या तकिनिष्यत्तिर्छेषनिष्यत्तितुल्या भविष्यति । तसात् वकिनिष्यत्ति- निष्यत्तिद्वयमातः अविनिष्यत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथ षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यदि बहवोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र यदि प्रथ-माङ्को द्वितीयं निःशेषं न करोति तदा कोऽप्यङ्कोऽग्रे निःशेषं न करिष्यति ।

यथा अबजदहमेकनिष्पत्तौ कल्पितम् । अं बं निःशेषं न करोति । तसात् कोऽपि कमपि निःशेषं न करिष्यति । यदि जदहनि- अ, १६. ब, २४. ज, ३६. द, ५४. इ, ८१ स्तौ अवता छष्यश्चा गृह्यन्ते

९ व्नि:शेषकमासीत K.

तदा शतौ भिन्नाङ्की भविष्यतः । शं च यदि रूपं नास्ति तदा श्रवनि-ष्पत्तिजीदनिष्पत्तेः समानास्ति । पुनर्जी दं निःशेषं न करोति तसात् शं वं निःशेषं न करिष्यति । रूपं च सर्व निःशेषं करोति । पुनर्श्न तं निःशेषं न करिष्यति । तसात् शतनिष्पत्तिजीद्दनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अय सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति आद्याङ्कोऽन्त्याङ्कं निःशेषं करोति तदा आद्याङ्को द्वितीयाङ्कमपि निःशेषं करिष्यति।

यथा अवजदं चत्वारोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अं दं निःश्चेषयति तदा बमपि निःशेषयति ।

अस्योपपत्तिः ।

यदि वं निःशेषं न करिष्यति तदान्त्या इमिप निःशेषं न करि-ष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

# अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तावङ्कद्वयमध्यंगा भवन्ति तैयो-र्निष्पत्ती यौ द्वावङ्को अन्यौ भविष्यतस्तयोरन्तर्गतास्तावन्त एवाङ्कास्तक्षिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

यथा अवयोर्मध्ये जदावद्दी पतिती । एते चत्वारः अजनिष्यती जाताः । अवयोर्निष्यत्ती हृझाव-न्याद्दी कल्पिती । अनयोर्मध्ये तथा द्वावद्दी पतिष्यतो यथेते चत्वारः अजनिष्यती भविष्यन्ति ।

९ °मध्यमा K. २ तक्रिष्पत्तौ K.

#### अस्योपपत्तिः ।

अजदबानां निष्पत्तौ वतकला लघडा गृहीताः। तसात् वलौ निज्ञौ मविष्यतः। अनयोर्निष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमानास्ति । हझिनिष्पत्तेः समानास्ति । तसात् एतौ द्वौ हझं तुल्यं निःशेषं करिष्यतः। पुनस्तथाद्वौ मनौ कल्पितौ यथा तं मं निःशेषं करिष्यति कं नमपि निःशेषं करिष्यति। तसात् वतकलनिष्पत्तौ हमनझा जाताः। अजदबानामपि निष्पत्तौ च जाताः। इदमेवासाकमिष्टम्।।

# अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

यौ द्वौ भिन्नाङ्कौ तयोर्मध्यगा यावन्तोऽङ्का एकनिष्यत्तौ सन्ति तदा रूपतद्द्वयान्यतराङ्कयोर्मध्ये तावन्त एवाङ्का एक-निष्यत्तौ भविष्यन्ति ।

यथा अबी द्वौ भिन्नाझौ किल्पतौ । अनयोर्भध्ये जदावझौ क-ल्पितौ । एते सर्वे एकनिष्पत्तौ सन्ति । पुनर्हझौ लध्वझौ अजनिष्पत्तौ गृहीतौ । पुनस्तस्यामेव निष्पत्तौ वतका लघवस्रयोऽङ्का गृहीताः । एवं लमनसास्तस्यामेव निष्पत्तौ गृहीताः । तस्मादेतेऽङ्का अजदबसमाना

भविष्यन्ति । हं हेन गुणितं फलं वं जातम् । पुनहेवधातो लं जातम् । तस्माद्रूपं हं निः-रोषं करिष्यति । हाक्को वं निःरोषं करि-ष्यति । वं लं तुल्यं निःरोषं करिष्यति ।

स, ८. ज, १२. द, १८ ब, २७ ह, २. झ, ३. व, ४. त, ६. क, ९. स, ८. म, १२. न, १८. स, २७

अमिप निःशेषं करिष्यति । तस्मात् रूपअमध्ये च हवौ एकनिष्यत्तौ द्वावहौ पिततौ । एवं रूपबयोर्मध्ये झकावहौ एकनिष्यत्तौ पिततौ । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

# अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

अङ्कद्वयस्य प्रत्येकाङ्करूपयोर्मध्ये एकनिष्पत्तौ यावन्तोऽङ्का पतिष्यन्ति तदा तयोरङ्कयोर्मध्येऽपि तावन्त एवाङ्का एकनिः ष्यत्तौ पतिष्यन्ति । यथा अवावही कल्पिती । लं रूपं कल्पितम् । अलयोर्मध्ये जदा-बहावेकिनिष्पत्ती पतिती वैशा लबयोर्मध्ये हृझावहावेकिनिष्पत्ती क-स्मिती । तदा अवयोर्मध्येऽपि द्वावहावेकिनिष्पत्ती पतिष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

लजयोनिष्पत्तिजेदनिष्पत्तिसमानास्ति । लः जं जतुल्यं निःशेषयति।

तदा जः दं जतुत्यं निःशेषं करिष्यति।त-स्मात् दं जस्य वर्गो भविष्यति।पुनर्लः जं तथा निःशेषं करोति यथा दः अं निःशेषं करोति। तदा जद्यातः अं भविष्यति।

क्ष, ८. त,१२.क, १८. **ब.**२७. द, ४. ब, ६. झ, ९. ज, २. ह, ३. छ, १.

एवं हि झः हवर्गो भविष्यति । हझघातो वं भविष्यति । जहघातम् वमित्त । तदा दवझा एकनिष्पत्ते भविष्यन्ति । पुनर्जहौ वगुणितौ कार्यो । फलं तं कं भवित । तस्मात् अतकवा एकनिष्पत्ते भविष्यन्ति । कुतः । जं दवाभ्यां गुणितं फलं अं तं दवनिष्पत्ते जातम् । जहनि-ष्पत्ताविष जातम् । पुनर्जहौ धगुणितौ फलो तकसंद्यं तस्यामेव निष्पत्ती आतम् । पुनर्ह बझगुणितं कं वं जातं वझनिष्पत्ते जहनिष्पत्ताविष । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यौ हो वर्गी स्तस्तयोर्मध्ये यदि कोऽप्यङ्कस्तादृशो भव-ति यथैकनिष्पत्तौ त्रयोऽङ्का भवन्ति तदा तयोर्वर्गयोर्निष्पत्ति-र्भुजयोर्निष्पत्तिवर्गो भवति ।

यथा अबो वर्गी कल्पितो । अनयोर्भुजो जदो कल्पितो । जद-योर्घातः फल्लं हसंज्ञं भवति । तसात् अहनिष्य-चिर्जदनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । एवं हबनि-ज, २. द, ३. ष्पत्तिजदनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् अब-मध्ये हं पतितम् । तसादेकनिष्पत्ती अहबा जाताः । अबनिष्पत्तिः

१ तथा K.

अइनिष्यत्तिवर्गतुस्या जदनिष्यत्तिकर्गतुस्या च जाता । इदमेवास्मा-कमिष्टम् ॥

### अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

द्वयोर्घनयोर्मध्ये द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णा-मङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति तदा घनस्य स्वघनेन निष्पत्ति-र्भुजनिष्पत्तिघनतुल्या भवति ।

यथा अबी वनी कल्पिती। जदी च मुजी कल्पिती। जदाभ्यां ह्झवास्त्रयोऽहा एकनिष्पत्ती भविष्यन्ति। तसाज्जह्वातः अं भविष्यति। दवघा- ह, ४. झ, ६. व, ९. त, १२. क, १८. व, १४. त, १२. व, १४. त, १२. व, १४. त, १२. व, १४. त, १२. व, १४. त, १४. व, १४. व

अतकवा अतनिष्पत्तौ जदनिष्पत्ताविष भविष्यन्ति । अवनिष्पत्ति-जदनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

येऽक्का एकरूपनिष्पत्ती भवन्ति तेषां वर्गा अप्येकरूपनि-ष्पत्ती भवन्ति । तथा घना अप्येकरूपनिष्पत्ती भवन्ति ।

यथा अवजासयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । दहसा एतेवां

वर्गाः किल्पताः । वतका घनाः अ, २. ब, ४. ज, ८. किल्पताः । यदि अं बेन गुण्यते द, ४. ल, ८. इ, १६. म, ३२. झ, ६४. तदा फलं लसंज्ञं भवति । बं जोन व,८. न, १६. स, ३२. त, ६४. ग,१२८. फ, २५६. क, ५१६. गुणितं मं भवति । तसात् दल-

हमझा एतेऽङ्का एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । तसात् दहयोर्निष्पत्तिहंझ-निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् वर्गी अप्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । पुनरिष अं छैहाभ्यां गुण्यते तदा नसे फले भवतः । जं हमाभ्यां

१ हलाभ्यां D.

गुण्यते तदा फले गफे भवतः । तसात् वनसतगफका एते सप्ताङ्का एकरूपनिष्यत्तो भविष्यन्ति । तसात् घना अप्येकरूपनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

ययोर्वर्गयोर्मध्ये एको द्वितीयवर्ग यदि निःशेषं करोति तदा तस्य भुजोऽपि द्वितीयस्य भुजं निःशेषं करिष्यति । यद्ये-काङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति तदा तस्य वर्गस्तद्वर्गे निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवर्गः कल्पितः । अस्य भुजो जः कल्पितः । द्वितीयो वर्गो वः कल्पितः । तस्य भुजो दः कल्पितः । यदि अः वं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जं दगुणितं हं भवति । अहवा जदनिष्यतितुत्या जाताः । आद्यो-ऽन्त्यं निःशेषं करोति । तसात् अः हं निःशेषं करिष्यति । तसाज्ञं दं निःशेषं करिष्यति । अ, ४. ह, ८. व, १६. ज, २. द, ४.

अही जदी चैकनिष्यत्ती स्तः । यदि जः दं निःशेषं करोति तदा अः हं निःशेषं करिष्यति । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति ।

असादिदं निश्चितं यदि वर्गी वर्ग निःशेषं न करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य वर्गोऽन्याङ्कवर्ग निःशेषं न करिष्यति ॥

# अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यद्येको घनो द्वितीयघनं निःशेषं करोति तदा तस्य मुजो द्वितीयभुजं निःशेषं करिष्यति । यत्रैकाङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति। शेषं करोति तदा तस्य घनोऽपि द्वितीयघनं निःशेषं करोति। यथा अंघनः कल्पितः । जं भुजः कल्पितः । बः अन्यघनः किल्पतः । दस्तस्य भुजः कल्पितः । यदि अः बंनिःशेषं करोति तदा जः दंनिःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जदाभ्यां हवझास्रयोऽहा एकनिष्पत्तावुत्पादिताः । पुनर्जदौ वगुणितौ फलं तं कम् । तदा अतकबा जदनिष्पत्तावुत्पत्स्यन्ते । अं वं निःशेषं करोति । तसात् आः तमपि निःशेषं करोति । जः दमपि निःशेषं करिष्यति ।

पुनर्जः दं निःशेषं कुर्यात् । तदा अः तं निःशेषं करिष्यति । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति । इदमे-वासाकमिष्टम् ॥

असादिदं निश्चितं यदि घनो घनं निःशेषं इ, ४. व, ८. झ, १६. न करोति तदा तस्य भुजोऽन्यभुजं निःशेषं

न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य घनो द्वितीयघनं निःशेषं न करिष्यति ॥

## अथ षोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ययोः सजातीयघातफलाङ्कयोर्मध्ये येद्येकाङ्करतथा पतित यथैतश्रयमेकनिष्पत्तौ भवति तदा घातफलयोर्निष्पत्तियो भवति सा सजातीयतद्भजनिष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ।

यथा सजातीयघातफले अबकल्पिते । अभुजौ जदौ कल्पितौ । बभुजौ हझौ कल्पितौ । जहनिष्पत्ति- ईझनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यदि दं ज, २. द, ३. ह, ४. झ, ६. हगुणितं वमुत्पन्नमिति कल्प्यते तदा अववा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

९ करिष्यति K. २ तथा एकाङ्को यदि पतिति K.

#### अत्रोपपत्तिः ।

दं जहाम्यां गुणितं फले अवे जाते । अनयोनिष्पत्तिर्ज्ञहनिष्प-चितुत्या मविष्यति । पुनर्हं दशाभ्यां गुणितं वबे उत्पन्ने । अनयो-निष्पत्तिर्दश्ननिष्पचितुत्या मविष्यति । जहनिष्पचितुत्यापि भविष्यति । अवनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तिर्वर्गतुत्यास्ति । जहनिष्पत्तिर्वर्गतुत्याऽपि भविष्यति । ईदमेवाऽस्माकमिष्टम् ॥ १६ ॥

# अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

सजातीययोर्घनफलयोर्मध्ये ताहशौ द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णामङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति घनफलस्य निष्पत्तिर्घनफलेन या भवति सा सजातीयभुजनिष्पत्तिघन-तुल्या भवति ।

यथा अबे सजातीये घनफले कल्पिते । अभुजा जदहाः कल्पि-

ताः । बभुजा **झत्रताः** कल्पिताः। जझनिष्पत्तिदेवनिष्पत्तितुल्यास्ति । इतनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । जं द्गु-णितं कमुत्पन्नम् । झं वगुणितं छ-

स, ३०. न, ६०. स, १२०. ब, २४०. क, ६. म, १२. ल, २४. ज, २. द, ३. ह, ५. झ, ४० व, ६. त, १०.

मुत्पनम् । तस्मात् कलौ सजातीयौ घातफलाङ्कौ भविष्यतः । अनयोर्नध्ये मः अङ्कः पति तदा कमलास्त्रयोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ पतिष्यन्ति । पुनर्हतौ मगुणितौ नसावुत्पन्नौ । एतयोर्निष्पत्तिहृतनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । जञ्जनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति । अनयोर्निष्पत्तिः कमल-निष्पत्तितुल्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तस्मात् अनसवाध-त्वारोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । अवनिष्पत्तिः अननिष्पत्तिघन-तुल्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिघन-तुल्यास्ति । इदमेवास्नाकिमष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये कश्चिदङ्कः पति । यद्येतेऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघातफले भविष्यतः ।

९ इदमेवास्मविष्टम् K.

यथा अवयोर्मध्ये जः कल्पितः । एते त्रयोऽपि एकनिष्पत्तौ क-ल्पिताः । पुनर्रुध्वद्वावस्यां निष्पत्तौ दही प्राच्चौ । एतौ अजौ तुल्यं निःशेषं ह, २. ह, ३. झ, ४. व, ६. करिष्यतः । पुनर्दः अं झतुल्यं निःशेषं

करोति। हः वं वतुल्यं निःशेषं करोतीत्यपि कल्पितम् । तसात् दश-घातः अं मविष्यति । हवधातो वं मविष्यति । तसात् अवी घातौ मविष्यतः । पुनरपि दवधातो जमस्ति । हञ्चघातोऽपि जमस्ति । तसात् अवौ सजाती वष्यति । तसात् अवौ सजातीयधातफले भविष्यतः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

# अथोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वयोरङ्कयोर्भध्ये द्वावङ्कौ पततः । यद्येते चत्वारोऽप्यङ्का एकनिष्पत्तो भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

यथा अवयोर्मध्ये जदौ पतितौ । अजदवा एते चत्वारो यद्येक-निष्पचौ भवन्ति तदा अवौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हश्रवासयो छव्यद्वा अजनिष्यतो गृहीताः। तसात् हवौ सजा-तीयघातफलाद्वौ मविष्यतः। इत्य भुजौ कलौ कल्पितौ। वस्य त, २४. स, ७२. भुजौ मनौ कल्पितौ। तसात् ह, १. झ, ३. व, ९. क, १. छ, १. म, ३. न, ३.

मविष्यति । ह्झनिष्पत्तिसमानापि मविष्यति । ह्झवम् अजदनिष्पत्ता-वस्ति । तसात् ह्झवम् अजदं तुल्यं निःशेषं करिष्यति । कल्पितं त-तुल्यं निःशेषं करोति । एवं हि ह्झवा जदबनिष्पत्तौ सन्ति । त-सात् ह्झवा जदबं तुल्यं निःशेषं करिष्यन्ति । कल्पितं च सतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् इतघातः तगुणितकळघाततुत्यः अं किल्पितम्। वसघातफळं बम् । तत् सगुणितमनघाततुत्यमितः । तसात् अबौधनफळाडौ जातौ । पुनस्तसौ वगुणितौ फळे दबौ भवतः । तसास्तसौ दबनिष्यत्तौ जातौ । कमनिष्पत्तावि । तसात् अबौ सजातीयघन-फळाडौ जातौ । इदमेवासाक्मिष्टम् ॥

# अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

तत्र ये त्रयोऽङ्का ५ किनिष्पत्ती यदि भवन्ति तत्र प्रथ-माङ्की वर्गो यदि भवति तदा तृतीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति।

यथा अबजास्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अं वर्गोऽस्ति । तदा जमपि वर्गो भविष्यति । कुतः । दहझा लघ्वद्वा अबजनि-

ष्पत्तौ गृहीताः। तसात् दश्गौ वर्गौ भवि-ष्यतः । पुनः बम् अभुजः कल्पितः। तं दभुजः कल्पितः। कं झभुजः कल्पितः।

अ, १६. ब, २४. ज, ३६. द, ४. ह, ६. झ, ९. व, ४. क, ३. त. २. ल. ६.

तसात् द्झनिष्पत्तिः अजनिष्पत्तिस-

माना भविष्यति । द्रश्नौ भिन्ना हो सः । तसादेतौ आजं निःशेषं करिष्यतः । यदि वर्गो वर्ग निःशेषं करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं करिष्यति । तसात् तं वं निःशेषं करिष्यति । पुनः कं छं तथा निःशेषं करोतीति कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्पितं समाना भविष्यति । तवर्गववर्गयोर्निष्पत्तिः कवर्गळवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तवर्गो दमस्ति । ववर्गः अमस्ति । कवर्गः श्रमस्ति । दअनिष्पत्तिश्रीजनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् जं छवर्गो भविष्यति । इदमेवास्नाकिमष्टम् ॥

अधैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

ये चत्वारोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्क-श्चेत् घनो भवति तदा चतुर्थोङ्कोऽपि घनो भविष्यति ।

९ एकरूपनिष्पशौ K.

यथा अवजदाश्चंत्वारोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः। अ: घनः कल्पितः। तदा दोऽपि घनो भविष्यति। अस्योगपत्तिः।

इसवताश्चतारो छव्दश अवजदनिष्यतौ प्राद्याः । तसात् हतौ पनौ भविष्यतः । अभुजो छं ह-मुजः कं तभुजो नं कल्पितः । स्त, ६४. व, ९६. ज, १४४. द, २१६. स्त्रा हतनिष्पत्तिः अदनिष्पत्ति- ह, ८. झ, १२. व, १४. त, २७. क, २. न, ३. स, ६. समानास्ति । हतौ च भिनाद्दौ

स्तः । तसात् इतौ अदौ निःशेषं करिष्यतः । यदि हं घनः असंज्ञ-घनं निःशेषं करोति तदा कमुजो लभुजं निःशेषं करिष्यति । पुनः कल्पितं नः सं तथा निःशेषं करोति यथा कः लं निःशेषं करोति । तसात् कलनिष्पत्तिनसनिष्पत्तेः समाना भविष्यति । कलघनयो-निष्पत्तिनसघनयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । कस्य घनो हं लघनः अं नघनः तम् । इअनिष्पत्तिस्तदनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् दः सघनो भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥ ्यावङ्कौ वर्गद्वयनिष्पत्तौ स्तस्तयोर्मध्ये यद्येकाङ्को वर्गो भवति तदा द्वितीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति ।

यथा अबी जदवर्गयोर्निष्पत्ती कल्पिती। यदि आः वर्गी भवति तदा बमपि वर्गी भविष्यति।

#### अस्योपपत्तिः ।

जदी वर्गों स्तः। अनयोर्मध्ये तथा एकाइः पतिष्यति यथैतत्रयमेक-निष्पत्तौ भविष्यति। एवम् अवयोर्मध्ये एकाइो भविष्यति। एते त्रयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ पति- अ, १६. द, ३६. ष्यन्ति। अः वर्गोऽस्ति। तस्मात् बः वर्गो मविष्यति। इदमेवास्मदिष्टम् ॥

<sup>🤋</sup> इदमेबास्मदिष्टम्  ${f K}$ .

# अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

यौ द्वावङ्कौ घननिष्पत्तौ भविष्यतस्तयोर्मध्ये यद्येको घनो भवति तदा द्वितीयोऽपि घनो भविष्यति ।

यथा अबौ जद्घनयोर्निष्पत्तौ कल्पितौ । तयोर्यदि अं घनस्तदा बाऽद्वोऽपि घनो भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जदौ धनौ स्तः । अनयोर्मध्ये तथा द्वावद्वौ पतिष्यतो यथैते च-त्वारोऽद्वा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति। एवं हि अवयो-र्मध्ये द्वावद्वौ तथा पतिष्यतो यथैतेऽपि चत्वारोऽद्वा अ, ६४. द, २१६. एकनिष्पत्तौ स्युः । अ: घनोऽस्ति। तस्मात् व: घनो जातः । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥ २६ ॥

### अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यावङ्कौ द्वयोर्वर्गयोर्निष्पत्तौ भवतस्तदैतौ घातफलाङ्कौ सजातीयौ भवतः।

यथा अबी जदवर्गयोर्निष्पत्ती कल्पिती । अबी सजातीयी घात-फलाडी भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः ।

अ, १८. ब, ३२.

जदयोर्मध्ये तथैकाइः पतिष्यति यथैते त्रयोऽप्ये-कनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । एवम् अवमध्येऽपि । तसात् अवौ सजातीयौ घातफलाइौ भविष्यतः ॥

### अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

यावङ्कौ द्वयोर्घनयोर्निष्पत्तौ स्तस्तदा तावङ्कौ सजातीय-घनफलाङ्कौ भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः क्षेत्रन्यासश्च पूर्वोक्तवत् ज्ञेयः ॥ जं, ८. ६, २७.

९ भविष्यतः K.

### अथ पद्विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥

यौ घातफलाङ्को सजातीयौ भवतस्तौ द्वयोर्वर्गयोर्नि-णत्तौ भवतः।

यथा अवौ घातफलाही सजातीयी कल्पिती । एती द्वयोर्वर्गयो-निष्पत्ती भविष्यतः ।

अस्योपपत्तिः।

थ,६.ज,१२.ब,२४.

एकाङ्को जसंज्ञकः अवयोर्मध्ये पतिष्यति । एते त्रयोऽप्यञ्का एकरूपनिष्पत्तो भविष्यन्ति । यदि दहझास्रयो लष्यञ्चा अजवनिष्पत्तौ गृद्यन्ते तदा अवनिष्पत्तिदृझवर्गयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥ यो घनफलाङ्को सजातीयो भवतस्तौ द्वयोर्घनयोर्निष्पत्तौ भविष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जदौ अवयोर्मध्ये पतितौ। एते चत्वार एकनिष्यौ भविष्यन्ति। पुनर्यदि ह्मवताश्चत्वारोऽह्या अजदबानां निष्पत्तौ लघवो गृ- अ, १६. ज, २४. द, ३६. ब, ५४. ह, ८. झ, १२. व, १८. त, २७. धन्ते तदा अवनिष्यत्तिहैतघ-

नयोर्निष्यत्त्या समाना भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥ २७ ॥ श्रीमद्राजाधिराजम्भुवरजयसिंहस्य तुष्ट्री द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सन्राड् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । प्रन्थेऽस्मिनाझि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-

र्यध्यायोऽध्येतुमोहापह इह विरतिं चाष्टमः संगतोऽभूत् ॥ ८ ॥

इति श्रीजगन्नाथसम्राड्विरचिते रेकागणिते अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८॥ यथा अवावद्रों कल्पितौ । लंहपं कल्पितम् । अलयोर्मध्ये जदा-बद्दावेकनिष्पत्ती पतितौ वैशा लबयोर्मध्ये हृझावद्वावेकनिष्पत्तौ क-स्मितौ । तदा अवसोर्मध्येऽपि द्वावद्वावेकनिष्पत्तौ पतिष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

लजयोर्निष्पत्तिजेदनिष्पत्तिसमानास्ति । लः जं जतुत्यं निःशेषयति । । जः कं जनलं निःशेषं करिष्यति । न

तदा जः दं जतुल्यं निःशेषं करिष्यति।त-स्मात् दं जस्य वर्गो भविष्यति।पुनर्रुः जं तथा निःशेषं करोति यथा दः अं निःशेषं करोति। तदा जदघातः अं भविष्यति।

स, ८. त, १२.क, १८. ब.२७. द, ४. व, ६. झ, ९. ज, २. ह, ३. छ, १.

एवं हि इः हवगों मिवष्यति । हझ्मातो बं मिवष्यति । जहमातम् वमित्त । तदा दवझा एकनिष्पत्तौ भिवष्यन्ति । पुनर्जहौ वगुणितौ कार्यौ । फलं तं कं भवित । तस्मात् अतकवा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । कुतः । जं दवाभ्यां गुणितं फलं अं तं दवनिष्पत्तौ जातम् । जहनि-ष्यत्ताविष जातम् । पुनर्जहौ बगुणितौ फलौ तकसंत्रं तस्यामेव निष्यत्तौ जातम् । पुनर्ह बझ्गुणितं कं बं जातं वझनिष्यत्तौ जहनिष्यत्ताविष । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अधैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यो द्वी वर्गी स्तस्तयोर्मध्ये यदि कोऽप्यङ्कस्तादृशो भव-ति यथैकनिष्पत्तौ त्रयोऽङ्का भवन्ति तदा तयोर्वर्गयोर्निष्पत्ति-र्भुजयोर्निष्पत्तिवर्गो भवति ।

यथा अबी वर्गी कल्पिती। अनयोर्भुजी जदी कल्पिती। जद-योर्घातः फछं हसंज्ञं भवति। तसात् अहनिष्प-चिर्जदनिष्पचिसमाना भविष्यति। एवं हबनि-ज, २. ६, ३. ष्पचिर्जदनिष्पचिसमाना भविष्यति। तसात् अव-मध्ये हं पतितम्। तसादेकनिष्पत्ती अहबा जाताः। अवनिष्पचिः

१ तथा K.

**अहिनष्पत्तिवर्गतुल्या जहिनष्यत्तिर्वर्गतुल्या च जाता । इदमेवास्मा**-

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

द्वयोर्धनयोर्मध्ये द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णा-मङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति तदा घनस्य स्वघनेन निष्पत्ति-र्भुजनिष्पत्तिघनतुल्या भवति ।

यथा अबी घनी कल्पिती । जदी च मुजी कल्पिती । जदाभ्यां ह्मवास्त्योऽहा एकनिष्पत्ती मिवष्यन्ति । तसाज्जह्वातः अं भिवष्यति । दवघातस्रा बं भिवष्यति । पुनर्जदी झगुणितो कार्यी फलं तको कल्पिती । तस्रात्

अतकवा अतिनष्पत्तौ जदनिष्पत्ताविष भविष्यन्ति । अवनिष्पत्ति-जदनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति । इदमेवासाक्रमिष्टम् ॥

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

येऽक्का एकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति तेषां वर्गा अप्येकरूपनिष्णत्तौ भवन्ति । तथा घना अप्येकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति ।

यथा अवजासयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । दहसा एतेषां

वर्गाः किल्पताः । वतका घनाः अ, २. ब, ४. ज, ८. किल्पताः । यदि अं बेन गुण्यते द, ४. ल, ८. ह, १६. म, ३२. म, ६४. तदा फर्छं लसंज्ञं भवति । बं जेन व,८. न, १६. स,३२. त, ६४. ग,१२८. फ, २५६. क, ५१९. गुणितं मं भवति । तसात् दल-

हमझा एतेऽङ्का एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । तस्मात् दहयोर्निष्पत्तिईझ-निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तस्मात् वर्गा अप्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । पुनरपि अं छैहाभ्यां गुण्यते तदा नसे फले भवतः । जं हमाभ्यां

१ ह्ळाभ्यां D.

गुण्यते तदा फले गफे भवतः । तस्मात् वनसतगफका एते सप्ताङ्का एकरूपनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । तस्मात् घना अप्येकरूपनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

ययोर्वर्गयोर्मध्ये एको द्वितीयवर्ग यदि निःशेषं करोति तदा तस्य भुजोऽपि द्वितीयस्य भुजं निःशेषं करिष्यति । यद्ये-काङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति तदा तस्य वर्गस्तद्वर्गे निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवर्गः कल्पितः । अस्य भुजो जः कल्पितः । द्वितीयो वर्गो वः कल्पितः । तस्य भुजो दः कल्पितः । यदि अः वं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जं दगुणितं हं भवति । आहवा जदनिष्यतितुत्या जाताः । आद्यो-ऽन्त्यं निःशेषं करोति । तसात् आः हं निःशेषं करिष्यति । तसाज्ञं दं निःशेषं करिष्यति । अ, ४. ह, ८. ब, १६. ज. २. इ, ४.

अही जदी चैकनिष्यत्ती स्तः । यदि जः दं निःशेषं करोति तदा अः हं निःशेषं करिष्यति । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति ।

असादिदं निश्चितं यदि वर्गो वर्ग निःशेषं न करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य वर्गोऽन्याङ्कवर्गे निःशेषं न करिष्यति ॥

# अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यद्येको घनो द्वितीयघनं निःशेषं करोति तदा तस्य भुजो द्वितीयभुजं निःशेषं करिष्यति । यत्रैकाङ्को द्वितीयाङ्कं निःशेषं करोति। शेषं करोति तदा तस्य घनोऽपि द्वितीयघनं निःशेषं करोति।

Digitized by Google

यथा अं घनः किल्पतः । जं भुजः किल्पतः । बः अन्यघनः क-ल्पितः । दस्तस्य भुजः किल्पतः । यदि आः बं निःशेषं करोति तदा जः दं निःशेषं करिष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

जदान्यां हवझास्त्रयोऽहा एकनिष्पत्तावुत्पादिताः । पुनर्जदौ वगुणितौ फलं तं कम् । तदा अतकवा जदनिष्पत्तावुत्पत्त्यन्ते । अं वं निःशेषं करोति । तसात् अः तमपि निःशेषं करोति । जः दमपि निःशेषं करिष्यति ।

पुनर्जः दं निःशेषं कुर्यात् । तदा आः तं निःशेषं करिष्यति । तसात् आः बं निःशेषं करिष्यति । इदमे-वास्माकमिष्टम् ॥ अ,८.त,१६.क,३२.ब,६४

असादिदं निश्चितं यदि घनो घनं निःशेषं ज, २. द, ४. न करोति तदा तस्य भुजोऽन्यभुजं निःशेषं

न करिष्यति । यद्येकाङ्कोऽन्याङ्कं निःशेषं न करोति तदा तस्य घनो द्वितीयघनं निःशेषं न करिष्यति ।।

# अथ षोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ययोः सजातीयघातफलाङ्कयोर्भध्ये यद्येकाङ्कर्सथा पतित यथैतन्त्रयमेकनिष्पत्तौ भवति तदा घातफलयोर्निष्पत्तियी भवति सा सजातीयतद्भजनिष्पत्तिवर्गतुल्या भवति ।

यथा सजातीयघातफले अबकल्पिते । अभुजौ जदौ कल्पितौ । बभुजौ हुझौ कल्पितौ । जहनिष्पत्ति-देझनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यदि दं ज, २. द, ३. ह, ४. झ, ६. हुगुणितं वमुत्पन्नमिति कल्प्यते तदा अववा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

९ करिष्यति K. २ तथा एकाङ्को यदि पतिति K.

#### अत्रोपपत्तिः ।

दं जहाम्यां गुणितं फले अवे जाते । अनयोर्निष्पत्तिर्ज्जहिनिष्प-तितुत्या भविष्यति । पुनर्हे दशाभ्यां गुणितं वबे उत्पन्ने । अनयोर्-निष्पत्तिर्द्शनिष्पतितुत्या भविष्यति । जहिनष्पत्तितुत्यापि भविष्यति । अबिनिष्पत्तिः अविनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । जहिनष्पत्तिवर्गतुत्याऽपि भविष्यति । ईदमेवाऽस्माकिमष्टम् ॥ १६ ॥

# अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥

सजातीययोर्घनफलयोर्मध्ये तादृशौ द्वावङ्कौ यदि तथा पततो यथा चतुर्णामङ्कानामेकनिष्पत्तिर्भवति घनफलस्य निष्पत्तिर्घनफलेन या भवति सा सजातीयभुजनिष्पत्तिघन-तुल्या भवति ।

यथा अबे सजातीये घनफले कल्पिते । अभुना जदहाः कल्पि-

ताः । बभुजा शयताः कल्पिताः। जञ्जनिष्पत्तिद्वनिष्पत्तितुल्यास्ति । इतनिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । जं द्गु-णितं कमुत्पन्नम् । झं वगुणितं ल-

स, ३०. न, ६०. स, १२०. ब, २४०. क, ६. म, १२. ल, २४. ज, २. द, ३. इ, ५. झ, ४. ब, ६. त, १०.

मुत्पन्नम् । तस्मात् कलौ सजातीयौ घातफलाङ्कौ भविष्यतः । अनयोर्नध्ये मः अङ्कः पति तदा कमलास्त्रयोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ पतिष्यन्ति । पुनर्हतौ मगुणितौ नसावुत्पनौ । एतयोर्निष्पत्तिर्हतनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । जञ्जनिष्पत्तितुत्यापि भविष्यति । अनयोर्निष्पत्तिः कमल-निष्पत्तितुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तितुत्याप्यस्ति । तस्मात् अनसवाध-त्वारोऽङ्का जञ्जनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । अवनिष्पत्तिः अननिष्पत्तिघन-तुत्यास्ति । जञ्जनिष्पत्तिघनतुत्या भविष्यति । इदमेवास्माकिमिष्टम् ॥

अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये कश्चिदङ्कः पति । यद्येतेऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघातफले भविष्यतः ।

१ इदमेवास्मदिष्टम् K.

यथा अखयोर्मध्ये जः कल्पितः। एते त्रयोऽपि एकनिष्पत्तौ क-ल्पिताः। पुनर्रुध्वद्वावस्यां निष्पत्तौ दहौ आसौ। एतौ अजी तुल्यं निःशेषं स, ८. ज, १२. ब, १८.

करिष्यतः । पुनर्दः अं झतुल्यं निःशेषं

करोति। हः वं वतुल्यं निःशेषं करोतीत्यपि कल्पितम् । तसात् दश-षातः अं भविष्यति । हषधातो वं भविष्यति । तसात् अवौ षातौ भविष्यतः । पुनरपि दवषातो जमस्ति । हश्चषातोऽपि जमस्ति । तसात् अवौ सजातीयधातफले भविष्यतः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

## अथोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वयोरङ्कयोर्मध्ये द्वावङ्कौ पततः । यद्येते चत्वारोऽप्यङ्का एकनिष्यत्तौ भवन्ति तदा तौ द्वावङ्कौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

यथा अबयोर्मध्ये जहाँ पतितौ । अजदबा एते चत्वारो यद्येक-निष्पत्तौ भवन्ति तदा अबौ सजातीयघनफलाङ्कौ भविष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हश्रवासयो छव्यद्वा अजनिष्यतो गृहीताः । तसात् हवौ सजा-तीयघातफलाद्वौ मविष्यतः । हस्य भुजौ कलौ कल्पितौ । वस्य त, २४. ज, ७२. द, २१६. ब, ६४८. मुजौ मनौ कल्पितौ । तसात् ह, १. झ, ३. व, ९. कमनिष्यत्तिकिनमिष्यत्तिसमाना

भविष्यति । ह्झनिष्पत्तिसमानापि भविष्यति । ह्झवम् अजदिनिष्पत्ता-वस्ति । तस्मात् ह्झवम् अजदं तुल्यं निःशेषं करिष्यति । कल्पितं त-तुल्यं निःशेषं करोति । एवं हि ह्झवा जदबनिष्पत्तौ सन्ति । त-स्मात् ह्झवा जदबं तुल्यं निःशेषं करिष्यन्ति । कल्पितं च सतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् इतघातः तगुणितकळघाततुत्यः अं किल्पित्म। वसघातफळं बम् । तत् सगुणितमनघाततुत्यमस्ति । तसात् अबौ धनफळाडौ जातौ । पुनस्तसौ वगुणितौ फळे दबौ भवतः । तसास्तसौ दबनिष्पत्तौ जातौ । कमनिष्पत्तावपि । तसात् अबौ सजातीयघन-फळाडौ जातौ । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

तत्र ये त्रयोऽङ्का एंकनिष्पत्ती यदि भवन्ति तत्र प्रथ-माङ्की वर्गो यदि भवति तदा तृतीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति।

यथा अवजास्रयोऽहा एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अं वर्गोऽस्ति । तदा जमपि वर्गो भविष्यति । कुतः । दहझा रुध्वहा अवजनि-

ष्पत्तौ गृहीताः। तसात् दश्गौ वर्गौ भवि-ष्यतः। पुनः वम् अभुजः कल्पितः। तं दभुजः कल्पितः। कं शभुजः कल्पितः। तसात् दश्गनिष्पत्तिः अजनिष्पत्तिस-

अ, १६. ब, २४. ज, ३६. इ, ४. इ, ६. झ, ९. व, ४. क, ३. त, २. ल, ६.

माना भविष्यति । दशौ भिन्नाशौ स्तः । तसादेतौ अजं निःशेषं करिष्यतः । यदि वर्गी वर्ग निःशेषं करोति तदा भुजो भुजं निःशेषं करिष्यति । तसात् तं वं निःशेषं करिष्यति । पुनः कं छं तथा निःशेषं करोतिति कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्पितं यथा तं वं निःशेषं करोति । तसात् तवनिष्पत्तिः कल्पित्तिसमाना भविष्यति । तवर्गववर्गयोर्निष्पत्तिः कवर्गल्योगीर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तवर्गी दमस्ति । ववर्गः अमस्ति । कवर्गः श्रमस्ति । दअनिष्पत्तिश्रीजनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् जं लवर्गो भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

ये चत्वारोऽङ्का एकनिष्पत्ती भवन्ति तेषां मध्ये प्रथमाङ्क-श्चेत् घनो भवति तदा चतुर्थोङ्कोऽपि घनो भविष्यति ।

९ एकरूपनिष्पत्ती K.

यथा अवजदाश्चंत्वारोऽङ्का एकनिष्पत्तौ कल्पिताः । अ: घनः कंल्पितः । तदा दोऽपि घनो भविष्यति । अस्योपपत्तिः ।

इश्वताश्चतारो छवडा अबजदनिष्पत्ती ग्राद्याः । तसात् इती धनौ भविष्यतः । अभुजो छं ह-भुजः कं तभुजो नं कल्पितः । अ, ६४. व, ९६. ज, १४४. द, २१६. स्वता इतनिष्पत्तिः अदिनिष्पत्ति- ह, ८. झ, १२. व, १४. त, ६७. क, २. न, ३. स, ६. समानास्ति । इतौ च भिनाहौ

स्तः । तसात् इतौ अदी निःशेषं करिष्यतः । यदि हं घनः असंज्ञ-घनं निःशेषं करोति तदा कमुजो लभुजं निःशेषं करिष्यति । पुनः कल्पितं नः सं तथा निःशेषं करोति यथा कः लं निःशेषं करोति । तसात् कलनिष्यत्तिनस्तिष्यतेः समाना मविष्यति । कल्प्यनयो-निष्यत्तिनस्त्रघनयोर्निष्यत्तिसमाना भविष्यति । कस्य घनो हं लघनः अं नघनः तम् । हअनिष्यत्तिस्तदनिष्यत्तिसमानास्ति । तसात् दः सघनो भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

श्रथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥ यावङ्कौ वर्गद्वयनिष्यती स्तस्तयोर्मध्ये यद्येकाङ्को वर्गो भवति तदा द्वितीयाङ्कोऽपि वर्गो भविष्यति ।

यथा असी जदवर्गयोर्निष्पत्तौ कल्पितौ । यदि आः वर्गो भवति तदा बमिप वर्गो भविष्यति ।

अस्योपपत्तिः ।

जदौ वर्गों स्तः। अनयोर्मध्ये तथा एकाङ्कः पतिष्यति यथैतत्रयमेक-निष्पत्तौ भविष्यति। एवम् अवयोर्मध्ये एकाङ्को भविष्यति। एते त्रयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ पति- अ, ४. ब, ९. ष्यन्ति। अः वर्गोऽस्ति। तस्मात् बः वर्गो भविष्यति। इदमेवास्मदिष्टम् ॥

 $<sup>\</sup>gamma$  इदमेवास्मदिष्टम्  ${f K}$ .

Digitized by Google

# अथ नवमाध्यायः प्रारभ्यते ॥ ९ ॥ तत्राष्ट्रत्रिंशत् क्षेत्राणि सन्ति ॥ १८ ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

द्वयोः सजातीयघातफलाङ्कयोघीतो वर्गो भवति।

्यथा अबी सजातीयघातफलाङ्की कल्पिती । अबघातो जः क-ल्पितः । असी वर्गी जातः ।

अस्योपपत्तिः ।

स, ६. व, ५४. द, ३६. ज, ३२४.

यदि अवर्गो दं किल्पतस्तदा अबनिष्पत्ति-दंजनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तत्र प्रत्येकाद्वयोर्भध्ये एकाद्वस्तया पतिष्यति यथा त्रयोऽद्वा एकनिष्पत्तौ पतिष्यन्ति । दं वर्गोऽस्ति । तस्मात् जं वर्गोऽपि भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ द्वितीयं धेत्रम् ॥ २ ॥

ययोरङ्कयोघीतो वर्गी भवति तावङ्कौ सजातीयघातफ-लाङ्कौ भविष्यतः।

यथा अवयोर्घातो जवर्गः कल्पितः । एतौ सजातीयघातफलाहौ भविष्यतः।

#### अस्योपपत्तिः ।

अवर्गी दः कल्पितः । दजवर्गयोर्निष्पत्तिः अबनिष्पत्तितुत्यास्ति । एतौ सजातीयघातफलाङ्की भविष्यतः॥

अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितम्।

**अ**, ४. **इ**, ९.

वर्गी वर्गगुणितो वर्गी भवति । अवर्गगुणितो वर्गी भवति । येन गुणितो वर्गी वर्गी भवति स चाङ्कोऽपि वर्ग एव भविष्यति । यदि वर्गी न भवति तदा सोऽप्यञ्चोऽवर्ग एव ॥

अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥ घनवर्गो घनो भवति । यथा अ: घनः कल्पितः । अस्य वर्गो ब: कल्पितः । जः भुजः कल्पितः । भुजवर्गो दः कल्पितः । रूपअप्रमाणयोर्मध्ये जदौ तथा पिततौ यथैते चत्वारोऽक्का व, १६. द, ४.
एकनिष्पत्तौ पितष्यन्ति । रूपअप्रमाणनिष्पत्तिः क, ३२. ज, १.
अवनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अवयोर्मध्ये तथा
वकौ पितष्यतो यथैते चत्वार एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । अं घनोऽस्ति ।
तसात् वमपि घनो भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

### अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

#### घनयोघीतो घनो भवति।

यथा अबी घनी कल्पिती। अनयोर्घाती जः कल्पितः। असा-विष घनो मविष्यति। कुतः। अवर्गो दः कृतः। अयं घनो मविष्यति। अवघनयोर्निष्पत्तिर्द्जनि- अ, ८, ब, २७. ष्पत्तिसमाना मविष्यति। दः घनोऽस्ति। तसात् जोऽपि घनो मविष्यति। इत्यसाकिमष्टम्॥

#### अथ पश्चमं क्षेत्रम्।। ५॥

धनः केनाप्यक्केन गुणितः सन् घनो भवति तदाऽसायक्को-ऽपि घनो भवति ।

यथा अ: घनो बगुणितो जं घनो जातः । तसात् ब: घनो मविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अप्रमाणस्य वर्गो दं घनो भविष्यति । अबयोर्निष्पत्तिर्द्जाघन-योर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति। अप्रमाणं घनोऽस्ति। त-सात् बः घनो भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥ भ, ८. ब, २७. इ, ६४. ज, २१६.

घनोऽघनगुणोऽघन एव भवति । यदि घनः केनाप्यक्केन गुणोऽघनो भवति तदा सोऽप्यक्कोऽघनो भविष्यति ॥

#### अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यस्याङ्कस्य वर्गो घनो भवति स घनो भविष्यति । यथा अं अङ्कः कल्पितः । अस्य वर्गो बं घनः कल्पितः । तसात् अमपि घनो भविष्यति ।

थ, ८. ४, ६४. ज, ५१२.

अस्योपपत्तिः ।

यदि अं बेन गुण्यते जं घनो भविष्यति । अबयोर्निष्यत्तिर्बज-घननिष्यत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अं घनो भविष्यति । इदगे-वासाकमिष्टम् ॥

### अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

योगाङ्कः केनचिदङ्केन गुणितः सन् धनफलाङ्को भवति ।
यथा अं योगसंज्ञाकः कल्पितः । एनं दः हृतुत्यं निःशेषं करोति । तसात् अं दहघातफलं भविष्यति ।
एतत् बेन गुण्यते तदा जं भविष्यति ।
इदं जं घनफलाङ्को भविष्यति । कुतः । दं
हृगुणितं अं जातम् । पुनर् अं बगुणितं जं जातम् । तसात् जः
घनफलाङ्को जातः । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

# अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

रूपादयोऽङ्का एकनिष्पत्ती यावन्तः स्युः रूपादेकान्त-रितास्तृतीयादयोऽङ्का वर्गाः स्युः । रूपाद् क्र्यन्तरिताश्चतुर्था-दयो घना भवन्ति । रूपात्पश्चान्तरिताः सप्तादयो वर्गा घनाश्च भवन्ति ।

यथा रूपादयः अवजदहङ्गा एकनिष्पत्ती कल्पिताः । तस्मात् बः वर्गो भनिष्यति । कुतः । यतो रूपं अं तथा निःशेषं करोति यथा अं बं निः- द, ८१. इ, २४३. झ, ७२९. शेषं करोति । तस्मात् अवर्गो बः भनि-ष्यति । अनेनैव प्रकारेण दं वर्गो भनिष्यति । पुनर्जाः घनोऽस्ति । कुतः । आसघातोत्पन्नत्वात् । एवं हि झोऽपि घनः । कुतः । यतो रूपनिष्पत्तिर्जेन तथास्ति यथा जनिष्पत्तिर्झेनास्ति । तसात् झः वर्गो जातः घनोऽपि जातः । एवमग्रेऽपि । इदमस्रदिष्टम् ॥

#### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

रूपादयोऽङ्का यद्येकनिष्यत्तौ भवन्ति तत्र यदि रूपाद् द्वितीयोऽङ्को वर्गो भवति तदा सर्वेऽङ्का वर्गा भवन्ति। यदि रूपाद्वितीयाङ्को घनो भवति तत्र सर्वे घना भविष्यन्ति।

यथा अबजदा रूपादयः कैल्पिताः । यदि आः वर्गी भवति बश्च

वर्ग एबास्ति । तसाज्जोऽपि वर्गो भविष्यति । यतो बजयोर्निष्पत्तिः अबयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । एवममेऽपि ।

१. अ, ४. ब, १६. ज, ६४. द, २५६. १. अ, ८. ब, ६४. ज, ५१२. द, ४०९६.

पुनरिप यदि आः घनो भवति । तस्य वर्गी वः घनो भविष्यति । रूपाचतुर्थो जः घन एवास्ति । दोऽपि घनः । यतः जदनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तितुल्यास्ति । इदमेवासाकमिष्टम् ॥ अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

रूपादयो यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र रूपाद्वि-तीयोऽङ्कश्चेद्वर्गो न भवति तत्र द्वितीयस्थानं द्वितीयस्थानं विना वर्गा न भवन्ति । यदि च रूपाद्वितीयोऽङ्को घनो न भवति तदा तृतीयतृतीयस्थानं विना घना न भविष्यन्ति ।

यथा अवजदह्झा एकरूपनिष्पत्ती कल्पिताः । यदि अं वर्गी न मवति तदा जमपि वर्गी न स्थात् । यदि वर्गी भवति तदा बजनिष्पत्तिः अवनिष्पत्तिसमा- १. ४, २, ४, ज, ८ नास्ति । तसात् जं वर्गश्चेत् अं वर्गी भवि-ष्यति । इदमशुद्धम् ।

अनेनैव प्रकारेण हमिप वर्गो न भविष्यति । पुनरिप यदि अं घनो न भवति तदा बमिप घनो न भविष्यति । यदि बं घनो भवति तदा बजनिष्पत्तिः अबनिष्पत्तिसमानास्ति । तसात् अमपि घनो भविष्यति । इदमशुद्धम् । एवमग्रेऽपि । इदमे-बास्मदिष्टम् ॥

### अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

रूपादयोऽङ्का यद्येकनिष्पत्तौ भवन्ति तदा तेषु लघ्यङ्क-स्तदङ्कतमाङ्कतुल्यं महदङ्कं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवजदहा एकनिष्पत्ती किल्पताः । जः हं निःशेषं करो-तीति किल्पतम् । तसात् जः हं बतुल्यं निःशेषं करिष्यति । कुतः । जदहास्रयोद्धा १. ४, ३, ३, ४, ज, २७. एकनिष्पत्ती तथा सन्ति यथा रूपं अं वं च एकनिष्पत्ती सन्ति । रूपं वं निःशेषं तथा करोति यथा जः हं निःशेषं करोति । तसात् जः हं बत्तल्यं निःशेषं करिष्यति । एतदेवेष्टम् ॥

#### अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

रूपादयोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति तत्र यदि प्रथमाङ्को-ऽन्त्याङ्कं निःशेषं करोति तदा स एवाङ्को रूपाद्वितीयाङ्कं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अवजदा एकरूपनिष्पत्ती कल्पिताः । हं प्रथमाद्यः क-ल्पितः । अयं दं निःशेषं करोति । तसात् १. भ, ४. व, १६. हं अमपि निःशेषं करिष्यति । ज, ६४. द, १५६.

यदि हं अं निःशेषं न करोति तदा ह, २. त, ८. व, ३२ आहो भिलाही भविष्यतः । अस्यां नि-

ृष्पत्ती च लघ्व हो भविष्यतः । पुनर्हः दं झतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । तसात् हझघातो दं भविष्यति । अजघातोऽपि दमस्ति । तसात् हअनिष्पत्तिर्जझनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । हंअं जझं क्रमेण तुल्यं निःशेषं करिष्येति । पुनर्हे जं वतुल्यं निःशेषं करोतीति क-

<sup>9</sup> हथी ज़ही K. २ करिच्यतः K.

ल्पितम् । इअनिष्पत्तिबैबनिष्पत्तिसमानास्तीति निश्चितम् । तस्मात् इं बं निःशेषं करिष्यति । हं बं ततुल्यं निःशेषं करिष्यतीति कल्पि-तम् । पुनर्हअनिष्पत्तिः अतनिष्पत्तिसमानास्तीति कल्पितम् । तदा इः अं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

# अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

रूपादयो यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्ती पतन्ति तेषु यदि रूपाद्वितीयोऽङ्कः प्रथमो भवति तेषु मध्ये महदक्कं तैरङ्के-विना कोऽपि निःशेषं न करिष्यति ।

यथा अवजदम् एकरूपनिष्यत्तौ कल्पितम् । अः प्रथमाद्यः कल्पि-तः । तदा दं महदद्वम् अवजं हित्वा कोऽपि निःशेषं न करिष्यति ।

यदि करिष्यति तदा हः करिष्यतीति कल्पितम् । हः प्रथमाञ्चो न

भविष्यति । यदि भविष्यति तदाऽसौ अं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तसात् इ: योगाङ्को भविष्यति । तं प्रथमाङ्को निःशेषं करिष्यति । स प्रथमाङ्को आदिशो

१ व्य, ५. ब, २५. ज, १२५. द, ६२५. इ---- व--- झ---

मविष्यति । असौ कं भविष्यतीति कल्पितम् । कं दं निःशेषं करिष्यति । तदा अमिप निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । तसात्सोऽइः अ एव भविष्यति नान्यः । कल्पितं च हः दं झतुल्यं निःशेषं करोति । तसात् अजघातो झह्घातसमानो भविष्यति । अहनिष्पत्ति- झंजनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अः हं निःशेषं करोति । तसात् झंजं निःशेषं करिष्यति । झं च अवजाद्भिन्नमस्ति । कुतः। यतो हः दं झतुल्यं निःशेषं करोति । हं च अवजाद्भिन्नमस्ति । पुनर्झः प्रथमाद्शो नास्तीति निश्चितम् । झम् अं विना कोऽपि निःशेषं न करोति । पुनर्झः जं वतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । वं वं निःशेषं करोतीति निश्चयः कार्यः । वम् अवाद्भिन्नमस्ति । प्रथमाद्शो नास्ति । आद्भिनोऽद्भर्तं निःशेषं न करिष्यति । कल्पितं वं वं ततुल्यं निःशेषं मा॰ ५

करिष्यतीति । निश्चितं तं अं नास्ति । वतयोषीती वमस्ति । ख-वगोंऽपि वमस्ति । तसात् अवनिष्यिस्तअनिष्यत्तिसमाना मिन-ध्यति । अं वं निःशेषं करोति। तम् अं निःशेषं करिष्यति । इदमशु-दम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४॥

यावस्तः प्रथमाङ्काः कल्प्यन्ते तैर्विनान्येऽपि प्रथमाङ्काः भविष्यन्ति ।

यथा अवजाः प्रथमाद्धाः किर्पताः । एक इष्ट रुष्वक्को प्राक्षों वं अवजा निःशेषं कुर्षन्ति । स
हदं किर्पतम् । असिन् रूपं संयो- हद, ३०. शद, ३१. क्य झदं किर्पतम् । यदि झदं प्रथ- झ.ह..........द.
माद्रो भवति तदासादसदिष्टं सि- दम् । यदि प्रथमाद्वो न भवति तदा कोऽपि प्रथमाद्वे प्रनं निःशेषं किरिष्यति । स च बः किर्पतः । वं च अवजमध्ये नास्ति । वदोत्त-नमध्ये भवति तदा हदं निःशेषं किरिष्यति । दझमपि निःशेषं किरिष्यति । तसात् झहं रूपमपि निःशेषं किरिष्यति । इदमगुद्धम्। तसात् वं अवजाद्वितः प्रथमाद्व उपलब्धः । इदमेवासाकिमिश्चम् ॥

## अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५॥

कस्पितप्रथमाङ्का यदि कमपि छध्वङ्कं निःशेषं करिष्य-मित तदा तं उध्वङ्कं तदन्यः प्रथमाङ्को निःशेषं न करिष्यति।

यथा अं लष्यद्वः करियतः । बजदाः प्रथमाङ्कास्तं निःश्चेषं कु-र्वन्तीति कल्पितम् । तदान्ये प्रथमाङ्का एनं ब, २. ज, ३. द, ५. निःशेषं न करिष्यन्ति । यदि करिष्यन्ति तदा अ, ३०. इः शतुल्यं निःशेषं करोतीति कल्पितम् । इन् तसात् हश्चातः अतुल्यो भविष्यति । बः

प्रथमाद्भः अं निःशेषं करोति। तसात्तस्यैकभुजमपि निःशेषं करिष्मति।

तसात् हं निःशेषं न करिष्यति । इं निःशेषं करिष्यति । एवं जदा-वपि । तसात् बजदा हं निःशेषं करिष्यन्ति । इं आत् न्यूनमस्ती-त्यशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

त्रयो लघ्वक्का यद्येकरूपनिष्यत्ती भवन्ति तदा तेषां मध्ये द्वयोद्वयोयोंगस्तृतीयाङ्कात् भिन्नो अविष्यति ।

यथा अवजा लघ्वहा एकनिष्यत्ती कल्पिताः । पुनर्दह्इशी लघ्वह्रो अत्यां निष्यत्तो गृहीतो । एतो भिन्नो स्तः । दहवर्गश्च अन्मस्ति । इसवर्गो जमस्ति । दहइस्र्यातो अनस्ति । दहइस्र्यातो अनस्ति । प्रत्येकं दहदस्रो इस्राद्विनो स्तः । ह... ह... स. तसात् दहदस्र्यातः अवयोगतुल्यो इसा-दिनो भविष्यति । तस्य वर्गाद्वि भिन्नो भविष्यति । एवं बजयोगः आदिनोऽस्ति । पुनर्दहइस्रो द्सादिनो स्तः । दहइस्र्यातश्च दस्राद्विनो भविष्यति । तद्यर्गाद्वि भिन्नो भविष्यति । तस्य वर्गश्च दिगुणदहहस्र्यातदहवर्गहस्रवर्गयोगतुल्यश्चास्ति । तस्य वर्गश्च दिगुणदहहस्र्यातदहवर्गहस्रवर्गयोगादिनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च स्ति । तस्य वर्गश्च दहस्र्याते दहइस्र्यातदहवर्गस्रह्वर्गयोगादिनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च स्त्रात् वतुल्यो दहहस्र्यातदहवर्गस्रह्वर्गयोगादिनो भविष्यति । तस्य वर्गश्च स्त्रात् वत्रल्यो दहहस्र्यातदहवर्गस्रह्याग्वेत्यात् दहहस्रवर्गयोगादिनो भविष्यति । इदमेवास्याकमिष्टम् ॥

अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७॥ रूपार् व्यतिरिक्ती यी भिन्नाक्की भवतस्तयोस्तृतीयाक्क-स्तिभ्यत्ती न भवति ।

यथा अबी भिनाही किस्पती । अनंगोर्निष्पत्ती तृतीयाहो न भवति । यदि भवति तदा जस्तृतीयाहो तस्मामेव नि-ष्पत्ती किस्पतः । तस्मात् अबनिष्पत्तिर्वजनिष्पत्ति-ज--तुल्या मविष्यति । अबी अस्यां निष्पत्ती लघ्वहो स्तः ।

<sup>9</sup> K. has one द्वयोः.

तसात् बर्जं निःशेषं करिष्यतः । तसात् आः बं निःशेषं करिष्यति । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

### अथाष्टादर्श क्षेत्रम् ॥ १८॥

तत्र यावन्तोऽङ्का एकरूपनिष्पत्तौ भवन्ति तेषामाद्यन्ताङ्कौ यदि भिन्नौ भवतस्तयोर्भध्ये कोऽपि रूपो न भवति तदान्त्या-ङ्काद् द्वितीयोऽङ्कोऽग्रेऽस्यां निष्पत्तौ नोत्पत्स्यते।

यथा अवजा एकरूपनिष्यत्ती कलिपताः । अजी मिन्नी यदि भवतोऽनयोर्मध्ये कोऽपि रूपो न भवति तदा जाद् द्वितीयोऽद्यः अबनिष्यत्ती न भवि- ह— ध्यति । यदि भवति तदा जदनिष्पत्तिः अब- निष्पत्तितुल्या कलिपता । तसात् अजनिष्पत्तिर्बद्निष्पत्तितुल्या मवि- ध्यति । अजी ल्रष्ट्वद्यो अस्यां निष्पत्तौ स्तः । तसात् अः बं निःशेषं करिष्यति । जमपि निःशेषं करिष्यतीत्यशुद्धम् । अस्यदिष्टं समी- चीनम् ॥

# अथेकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥ द्वयोर्निष्पत्तौ तृतीयाङ्कनिष्पादनमिष्टमस्ति यदि संभवः स्यात्।

यथा अबी अभिन्नाङ्की कल्पिती। बवर्गो जः कल्पितः । यदि अः जं निःशेषं करोति दतुल्यमिति कल्पितम् । तसात् दस्तृतीयाङ्को भ- अ, ६. ब, ६. द, ९. ज, ३६. विष्यति । कुतः । अद्घातो बवर्ग-तुल्यजसमोऽस्ति । तसात् अवनिष्पत्तिवैद्दनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

यदि आः जं निःशेषं न करोति तदा तृतीयाङ्कोऽस्यां निष्पत्तौ न भविष्यति । यदि भवति तदा द्वुल्यः कल्पितः । तसात् अद्धातो जातुल्यो भविष्यति । तसात् अं जं निःशेषं करिष्यति । इदमशु-द्वम । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥ यत्राङ्कत्रयमेकनिष्पत्तावस्ति तत्र निष्पत्ती चतुर्थाङ्कोत्पा-दनमिष्टमस्ति यदि ततुरपादनं संभवति ।

यथा अवजा अद्वाः किल्पताः । अजी भिन्नाद्वौ न भवतः । तसात् वं जेन गुणितं दं जातम् । आ दं अ, ८. च, १२. इतुल्यं निःशेषं करोतीति किल्पतम् । तसात् ज, १८. इ, २७. इ: चतुर्थोद्वो भविष्यति । यतः अहघातो द, २१६. वजघातत्त्र्लोऽस्ति । अवनिष्पत्तिज्ञंद्वनिष्पत्तित्त्या भविष्यति ।

यदि आः दं निःशेषं न करिष्यति तदा अ, २०. ब, ३०. चतुर्थोक्को न भविष्यति । यदि भविष्यति तदा अ, ४५ ६— इ: कल्पितः । तसात् अहघातो दतुल्यो भवि- द, १३५०. ष्यति । तसात् आः दं निःशेषं करिष्यतीत्यग्रुद्धम् । असादिष्टमेव समीचीनम् ॥

अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥ यावन्तः समाङ्कास्तेषां योगः समाङ्को भवति ।

यथा अवं बजं जदं समाद्वाः किल्पताः । एतेषां योगः अदोऽपि समाद्वो भविष्यति । कुतः । प्रत्येकस्य समाद्ध-स्याद्धे भवति । अद्बीङ्कानां योगो योगाद्धे भवति । तसात् अदस्याद्धे जातम् । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

समतुल्यविषमाङ्कयोगः समो भवति ।

यथा अवं बर्ज जदं दहं विषमाद्याः कल्पिताः । एतेषां योगः समाद्रो मविष्यति । कुतः । यदि अ...ब.... ज.....द.....ह प्रत्येकविषमाद्वात् रूपं पृथक् कि-यते तदा समाद्वः शेषो भविष्यति । रूपाणां योग एकः समाद्वो भवि- ष्यति । समाज्ञानां योगध्य समाज्ञ एव भवति । तस्मात् अहं समाज्ञो भविष्यतीत्यसाक्रमिष्टम् ॥

अथ त्रयोविंशतितमं शेषम् ॥ २३ ॥ विषमतुल्यविषमाङ्कयोगः विषमाङ्को भवति ।

यथा अववजजदा विषमाइतुस्या विषमाझाः कस्पिताः । एतेषां योगो विषमाझो मविष्यति । कुतः । यदि जदात् दहतुल्यं रूपं पृथक् कियते तदा जहं समाझोऽविशिष्यते । अजं समाझोऽस्ति । कुतः । समतुल्यविषमाइयोगत्वात् । तसात् अहमपि समाझो भविष्यति । दहं रूपमस्ति । तसात् अदं विषमाझो भविष्यति । इदमेवासाक-मिष्टम् ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

यदि समाङ्कात् समाङ्कः पृथिकियते तदा शेषः समाङ्को भवति ।

यथा अनसमाद्वात् वर्जं समाद्वः पृथक्तियते । तदा अर्जं स-माद्वोऽवशिष्यते । कुतः । यदि नजादी अनाद्वीत् अ..... ज....व शोध्यते तदा अजार्द्वमनशिष्यते । तस्मात् अज-स्यार्द्व जातम् । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

अथ पश्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥ यदि समाङ्कात् विषमाङ्कः पृथक्रियते तदा शेषं विषमाङ्को भवति ।

यथा अवसमाद्वात् बजिवनगद्गः पृथिकियते । तदा शेषं अजं विषमाद्वो मिविष्यति । कृतः । बजात् अदं स्पतुल्यं पृथिकियते । शेषं दवं समाद्वोऽविश्व- अ..... ज. द.... व स्यते । अवात् दवं शोध्यम् । अदं समाद्वोऽविश्व-

रूपमिता । तस्मात् सेषं आर्ज विषमाद्शी भविष्यति । इदमेवास्माक-मिष्टम् ॥

अथ षर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ विषमाङ्कात् समाङ्कः पृथक्रियते तदा शेषं विषमाङ्कोऽव-शिष्यते ।

यथा अविविध्माद्वात् अवसमाद्धः प्रथिक्षयते तदा अजं शेषं विषमाद्वो भविष्यति । कुतः । यदि वद्रूष् अवे योज्यते तदा अदं समाद्वो भविष्यति । दज्जश्च विषमाद्वोऽस्ति । तसात् अजः विषमाद्वो भविष्यति । इदमेवेष्टम्॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

विषमाङ्कात् विषमाङ्कः पृथिकियते तदा शेषं समाङ्को भ-

यथा अवविषमाद्वात् वजविषमाद्वः प्रथक्तियते । तत्र अजः शेषं समाद्वोऽविशिष्यते । यदि अववजयोविद्रूष् प्रथक्तियते । शेषः अजं समाद्वः स्वात् । इदमेषा-स्नाकिमष्टम् ॥

अथाष्टाविशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८॥ विषमाङ्कसमाङ्कषातः समाङ्को भवति । यथा अं विषमाङ्को वं समाङ्कः । अनयोर्घातो अ... जः समाङ्को भविष्यति । कृतः । समत्रस्यविषमाङ-

योगः समो भवति । इदमेवास्माकमिष्टम् ॥

अयोनत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९॥ विषमाङ्कयोघीतो विषमाङ्को भवति । यथा अवयोर्विषमाङ्कयोघीतो जः विष- म...

गाङ्को भवति । कुतः । विषमतुत्यविषमाङ्कयोगो जः.....
विषमो भवति । इदमेवेष्टम् ॥

# अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥ विषमाङ्कः समाङ्कं समतुल्यं निःशेषं करिष्यति ।

यथा अं विषमाद्वी बसमाद्वं जतुल्यं निःशेषं करोति । तदा जं समाद्वी भविष्यति ।

अथैकत्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

विषमाङ्को विषमाङ्कं विषमाङ्कतुल्यं निःशेषं करोति।

यथा आ बं जतुत्यं निःशेषं करोति । तदा भ... जः विषमा शो भविष्यति । यदि न भविष्यति तदा ब..... समाद्यः कल्पनीयः । तसात् आजयोषीतो बतुल्यः ज.... समाद्वो भविष्यति । इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ द्वार्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

विषमाङ्कः समाङ्कं चेन्निःशेषं करोति तदा तस्यार्द्धमिप निःशेषं करिप्यति ।

यथा आः बर्जं निःशेषं करोति । तदा बदतुल्यं बजार्द्धमपि निःशेषं करिष्यति । कुतः । आः बर्जं हम्मतुल्यं अ...
निःशेषं करिष्यतीति कल्पितम् । तसात् हमं ब.....द....ज
समाद्रो भविष्यति । अस्य अधे हवं कल्पितम् । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥ यो विषमाङ्क इष्टाङ्कान्निको भवति तदा तद्विगुणाङ्कादः पि भिन्नो भविष्यति । यथा अः जदाद्विनोऽस्ति । तद्विगुणात् हजादिष भिन्नो भवि-ष्यति ।

यदि न भवति तदा कल्पितं बम् उभयोरपवर्तनं भ... करोतीति । अयं च विषमाङ्कोऽस्ति । जदमपि ज.... द.... ह निःशेषं करिष्यति । तसात् अं जदं च मिलिताङ्को भविष्यतः । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ चतुर्खिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

क्र्यादिद्विगुणोत्तरा अङ्काः समसमाङ्का भविष्यन्ति ॥

यथा आः द्याइः कल्पितः । द्विगुणा बजदाः कल्पिताः । एते समाइाः सन्तीति प्रकटमेर्वं चास्ति । एतेषामादिः आः द्विमि- अ, २ तोऽस्ति । स एव प्रथमाइः। एतसादिषकाइ एनं कोऽपि निः- ब, ४ शेषं न करिष्यति । योऽइ एतेष्वन्यतमाइं निःशेषयत्यसा- वंतेष्वन्यतमाइः जिःशेषयत्यसा- वंतेष्वन्यतमाइः जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ पश्चित्रंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥
यस्याङ्कस्यार्ग्धे विषमाङ्को भवति स समविषमाङ्कः स्यात् ।
यथा अवस्यार्ग्धम् अजं कल्पितम् । अजं अवं वारद्वयं निःशेषं करोति । अयं समसमाङ्को न भविष्यति ।
यदि भविष्यति तदाऽस्यार्ग्धे समाङ्को भविष्यति । तसादयं समविषमाद्वो जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथ षट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥ योऽक्को क्र्यादिद्विगुणेषु मध्ये न भवति यस्यार्द्ध विषमाङ्कश्च न भवति सोऽक्कः समसमः समविषमश्च भवति ।

<sup>9</sup> वास्ति K.

भा॰ ८

यथा असम्। अस्यार्थम् आजं कल्पितम्। अयं सम इति प्रकटमेवास्ति। अर्धभावात् । समसमः कृतोऽस्ति । अर्द्धस्य समत्वात् । समविषमः कृतोऽस्ति । यतोऽस्यार्द्धार्द्धकरणेनान्त्यार्द्धे रूपं विना विषमो भवति । स विषमो रूपातिरिक्तोऽस्ति
यतो द्यादिद्विगुणाङ्केभ्यो नोत्पन्नोऽस्ति। स विषमाङ्क एनं कल्पितं समतुल्यं निःशेषं करिष्यति । इदमेवाऽस्माकिमष्टम् ॥

#### अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७॥

यावन्तोऽङ्का एकनिष्पत्तौ भवन्ति प्रथमतुल्यं द्वितीया-द्यदि पृथक्रियते अन्त्याच्च पृथक्रियते तदा द्वितीयक्षेषस्य प्रथमाङ्केन तथा निष्पत्तिभीविष्यति यथान्त्यक्षेषस्य अवाद्य-ङ्कयोगेन यथास्ति।

यथा अबं जदं झवं तनम् एते एकरूपनिष्यत्तौ सन्तीति किल्पतम् । अवतुल्यं जदात् दहं पृथकार्यम् । पुनरबतुल्यं मनं तना- ज.... ह...... द
तपृथकार्यम् । तसात् जहअबयोर्निष्पत्तिस्तमस्य झवजदअबानां योगेन या निष्पत्तिस्तस्य हा

#### अत्रोपपत्तिः ।

जदतुल्यं छनं तनात्पृथकार्य । झवतुल्यं कनं च पृथकार्यम् । तसात् तनकनयोर्निष्पत्तिः कनछननिष्पत्तितुल्यास्ति । छनमनयोरपि निष्पत्तितुल्यास्ति । तककनयोर्निष्पत्तिः कछछननिष्पत्तिसमानास्ति । छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात् छममननिष्पत्तितुल्यज्ञह्अव-निष्पत्तिस्तमस्य कनछनमनयोगतुल्यझवजदअवयोगेन निष्पत्ति-स्ततुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

# अथाष्टर्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८ ॥

रूपादयोङ्का द्विगुणोत्तरा द्विमितनिष्पत्तौ यदि भवन्ति सरूपाणामेतेषां योगः प्रथमाङ्को यदि भवत्यस्य योगस्यान्त्या-इस्य च घातः संपूर्णोङ्को भवति ।

यथा रूपादयोद्घा अवजदा द्विमितनिष्पत्तौ कल्पिताः । एतेषां योगो इतुल्यः प्रथमाङ्कः कल्पितः । तसात् हदयोघीतो झवतुल्यः संपूर्णोद्धो भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हादयो अवजदनिष्पत्तितुल्याः तकलमा अङ्गा प्राधाः । तसात् अदिनिष्पत्तिर्हमिनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् हदयोर्घातः अमयोर्घात-तुल्यो भविष्यति । तसात् अमयोर्घातो झवतुल्यो भविष्यति । अः द्विमितः। तसात् झवं मात् द्विगुणं भविष्यति । तसात् मं झवम् एत-

योनिष्पत्तिर्लमयोनिष्पत्तितुल्या मनिष्यति । पुनहेतुल्यं कसं तकात् पृथकार्यम् । पुनहेतुल्यं वगं स्वात् पृथकार्यम् । तसात् त-सहनिष्पत्तिर्झगस्य निष्पत्तिर्मलत-कह्योगेन या भवति तत्तुल्या भविष्यति । तसं हत्वल्यमस्ति ।

तसात् झगम् एतदङ्कयोगतुल्यं भविष्यति। हतुल्यं गवं रूपअबजद-योगेन तुल्यं भविष्यति। तसात् झवं रूपअबजदहतकलमयोग-तुल्यं भविष्यति। अङ्केषु प्रत्येकं झवं निःशेषं करोति। तसात् झव-मेतद्भागतुल्यं भविष्यति। एतैर्विनाऽन्येन विभागो न लभ्यते। यदि लभ्यते तदा नविभागः कल्पितः। अयं फतुल्यं निःशेषं करोति। त-सात् फनयोषीतो झवो भविष्यति। एवं हद्यातो झवतुल्यो भवि- ष्यति । तसात् इफिनिष्यतिनेदिनिष्यितिल्या भविष्यति । अव-जदमध्ये नो नास्ति । तसात् दं निःशेषं न करिष्यति । हः फं निःशेषं न करिष्यति । हः प्रथमाङ्कोऽस्ति । तसात् हफो भिनाङो भविष्यतः । तसात् फः दं निःशेषं करिष्यति । अः प्रथमाङ्कोऽस्ति । तसात् दम् अवजं विना कोऽपि निःशेषं न करिष्यति । तसात् फः तन्मध्ये कोऽपि भविष्यति । स च वः कल्पितः । पुनर्बद्योर्निष्पति-हस्योर्निष्पत्तितुल्यास्ति । हद्योर्घातो बस्योर्घाततुल्यो भविष्यति झखतुल्यश्च । तसात् वं स्तृत्यं झवं निःशेषं करिष्यति । वः झवं नतुल्यं निःशेषमकरोत् । तसात् नस्त्रौ एकरूपौ भविष्यतः । क-लिपतौ तु भिन्नौ । इदमशुद्धम् । तसात् झवं विना कोऽपि विभागो न भविष्यति । अयं ससर्वविभागयोगतुल्यो जातः । संपूर्णाङ्ग्य जातः । इदमेवासाकिमष्टम् ॥ ६८ ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टचे द्विजेद्रः श्रीमत्सन्नाद् जगन्नाथ इति समिष्मारूदितेन प्रणीते । प्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेसागणित इति सुकोणावनोषप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरतिं नन्दतुस्यो गतोऽभृत् ॥९॥

> इति श्रीजगन्नायसम्राड्विरचिते रेकागणिते नवमोऽध्यायः समाप्तः॥ ९॥

# अथ दशमाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १०॥

# ॥ तत्र नवोत्तरशतमितानि क्षेत्राणि सन्ति ॥

# तंत्रादौ परिभाषा।

- रेखाणां क्षेत्रफलस्य घनफलस्य वा यौनि प्रमाणानि निःशेषकार-काणि प्राप्यन्ते तानि मिलितप्रमाणौन्युच्यन्ते ।
- २ यानि प्रमाणानि निःशेषाणि न भवन्ति तानि भिन्नप्रमाणानि स्युः।
- यासां रेखाणां वर्गाः केनचित् क्षेत्रफलेन निःशेषा भवन्ति ता रेखा मिलितवर्गामिषाः स्युः ।
- यासां रेखाणां वर्गा एवं न भवन्ति ता रेखा भिन्नवर्गाभिधाः स्युः ।
- ९ अथैकेष्ट्री रेला कल्पनीया तद्यतिरिक्ताः कल्पितरेलास्तास्र काश्चि-चस्याः सकाशात् केवलिभिन्नाः स्युः काश्चिद्भिन्ना भिन्नवर्गाश्च स्युः सा रेला तन्मिलिताश्च रेलास्तस्या वर्गो यत्क्षेत्रफलं तद्वर्गमिलित-मसौ मूलदराशिरित्युच्यते ।
- **१ या रे**खा तद्भिन्ना भवति यत्क्षेत्रफलं तद्वर्गाद्भिन्नं भवति यद्गेसा-वर्गस्तत्क्षेत्रत्रस्यो भवति ते करणीशब्दवाच्या भवन्ति ।

#### ॥ इति परिभाषा ॥

# अथ प्रेथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

ब्रह्लघुप्रमाणद्वयमस्ति । तत्र ब्रहत्प्रमाणे किंचिदधिकमर्छे शोध्यं यच्छेषं तस्मात् किंचिदधिकमर्छे पुनः शोध्यमेवं मुहः-करणेन यदन्तिमं लघुखण्डमुत्पन्नं तल्लघुराशेर्न्यूनं भविष्यति ।

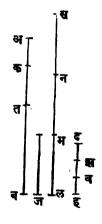
<sup>9</sup> D., V. and K. omit this sentence. २ प्रमाणं नि:शेषकारकं प्राप्यते तदा तानि V., D., K. ३ प्रमाणान्युच्यन्ते J. ४ अथैकेष्टरेखा J.; अथेषा रेखा K. ५ केवलं भिनाः J. ६ तत्क्षेत्रफलमिलितवर्गश्च D.; तत्क्षेत्रवर्गमिलितव्य B. ७ तन्मूलद् J. ८ ते वर्गाः करणशब्दवाच्या भवन्ति J. ९ प्रथमक्षेत्रम् V.

यथा बृह्त्प्रमाणम् अवं किल्पतम् । रुषुप्रमाणं अं किल्पतम् । पुनर्जप्रमाणस्य यावद्वुणाः केल्प्या यथा अवादिधिका भवन्ति । ते च रुससंज्ञकाः कल्प्याः । पुनः प्रत्येकं रुमं मनं नसं जतुत्यं किल्पितम् । पुनर् अवात् वतं किंचिदिधिकमर्द्ध प्रथक्षियम् । पुनर् अतात् किंचिदिधिकमर्द्ध तकं प्रथक्षार्यम् । एवं मुहुः कार्यम् । यावन्तो रुसे जविभागाः सन्ति तावन्त एव अवे यथा विभागा भवन्ति तावत्पर्यन्तं कार्याः । ते च वततककअसंज्ञका भवन्ति । तस्मा-च्छेषं कअं जाक्यूनं भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अकस्य तावन्तो घाताः पूर्वेतुल्या प्राद्याः । ते च दहसंज्ञकाः

कर्याः । तसात् दहम् अबाश्यूनं मिवष्यति । कृतः । दशस्य अकतुल्यत्वात् । श्रवं कताश्यून-मस्ति । वहं तबानितान्तं न्यूनमस्ति । पुनर् अबं सलान्युनमस्ति । तसात् दहं सलात् नितान्त-मल्पं भविष्यति । पुनर्दशसनयोर्निष्पत्तिश्चितनमनि-ष्पत्तितुल्यास्ति वहमल्ययोर्निष्पत्तेरपि तुल्यास्ति । तसात् दहसलनिष्पत्तिदंशसननिष्पत्तितुल्या भ-विष्यति । दहं सलाश्यूनमस्ति । तसात् दश-तुल्यम् अकं सनतुल्यात् जाश्यूनं भविष्यति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥



#### प्रकारान्तरम् ।

न्यूनाधिकप्रमाणयोर्मध्ये बृहत्प्रमाणात् कोऽपि विभागः शोध्यः।पुनः शेषात्तिक्षिषसिंतुल्यो विभागः शोध्यः। एतत्त-

१ प्राह्माः J., V. २ J. omits विभागः. ३ वहमळयोरपिनिष्पतेखु- ल्यास्ति J. ४ °दुल्यविभागः J., V.

च्छेषादपि। चरमावशिष्टं प्रमाणं लघुप्रमाणाच्यूनं भविष्यति। यथा गफफछयोनिष्पत्तिः कल्पिता । पुनः सर्ने जतुल्यं पृथका-र्यम् । सननस्वयोनिष्पत्तिः गफफछनिष्पत्तितुल्या कार्या । तसात् ससं

जात खल्पं भविष्यति । सखखनयोर्निष्पत्तिर्ग-छछफयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । पुनः खनस्य मिस्स स्वाप्ति । पुनः खनस्य मिस्स स्वाप्ति । पुनः खनस्य मिस्स स्वाप्ति । पुनः सननमयोर्निष्पत्तिः सममलिनिष्पत्तिश्च ग- फ छछफनिष्पत्तितुल्या कार्यो । एवं तावत्कार्य या-वत् **खननममला दह**मध्ये **खन**तुल्या भवन्ति । पुनर्नेखखसनिष्पत्तिमेननसनिष्पत्तितुल्यास्ति । पुनर्नस्वमननिष्पत्तिः स्वसनसनिष्पत्तितुल्यास्ति।

खसश्च नसात् खल्पोस्ति । तसान्नखं मनात् खल्पं भविष्यति । एवं हि मनं लमात् खल्पं भविष्यति । तस्मात् संपूर्णे खलं दहादिषकं भविष्यति । इदं च अबादिषकमस्ति । तसात् संपूर्णः खलः अबा-द्धिको भविष्यति । सलः असादत्यधिकोऽस्ति । पुनः प्रत्येकसलः लमनिष्पत्तिः सममननिष्पत्तिः सननखनिष्पत्तिश्च गफफछयोर्नि-षत्तितुल्यास्ति । अस्यां निष्पत्तौ अबात् बशं पृथकार्यम् । अशात् शतं अतात् तकं पृथकार्ये यावत् अबविभागाः सलभागसमाना-स्तस्यामेवनिष्यत्तौ भवन्ति । तस्मात् अकअबयोर्निष्पत्तिः खससल-निष्पत्तितुल्या भविष्यति । पुनः अकसखनिष्पत्तिः अबसलनिष्पत्ति-तुस्या भविष्यति । अबः सलान्यूनोऽस्ति । तसात् अकं सखान्यूनं . भविष्यति । तच जात्र्यूनमस्ति । तसात् अर्कं जानितान्तं स्वर्यं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

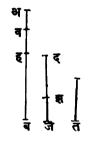
अथ द्विंतीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥ म्यूनाधिकप्रमाणयोर्भध्येऽधिकप्रमाणास्यूनं प्रमाणं शोध्यं

१ द्वितीयक्षेत्रम् V.

तावद्यावच्छेषं न्यूनप्रमाणात् स्वल्पमवशिष्यते । पुनर्न्यूनप्र-माणात् स्वल्पं शोध्यम् । पुनस्तच्छेषं तच्छेषाच्छोध्यम् । एवं मुहुः कार्यम् । यद्येवं निःशेषं न भवति तदा ते प्रमाणे भिन्ने स्तः ।

यथा अबजदं प्रमाणद्वयं तादृशं किल्पतम् । यद्येते प्रमाणे भिन्ने न भवतस्तदोभयोरपवर्तकस्तः किल्पतः । पुनर्जदं अबात्तावच्छोध्यं यथा अहं शेषं जदान्यूनमविशिष्यते । पुनरहं जदाच्छोध्यं शेषं जझं तच अहाच्छोध्यं शेषम् अवम् । हबम् अबाद्यीदिषिकमस्ति ।

हवं अहाद्वीदिधिकमस्ति । अनेन प्रकारेण शेषं ताच्यूनं भविष्यति । तश्च अवं कल्पितम् । पुनस्तः दजं निःशेषं करोति । तसात् हबमपि निःशेषं करिष्यति । अवं च पूर्वमेव निःशेषमकरोत् । तसादहमपि निःशेषं करिष्यति । इदं झदं निःशेषं करोति। जदं च पूर्वमेव निःशेषमकरोत् । तसात् जञ्जमपि निःशेषं करिष्यति । इदं हवं



निःशेषं करिष्यति । तं हवं निःशेषं करिष्यति । अहं निःशेषमक-रोत् । तसादवमपि निःशेषं करिष्यति । अवं ताच छपुरस्ति । इदम-शुद्धम् । इष्टं समीचीनम् ॥

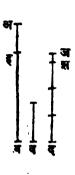
# अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

महत्प्रमाणस्य मिलितप्रमाणद्वयनिःशेषकारकस्योत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ।

यथा अवजदप्रमाणे मिलिते कल्पिते। तसाचित रुघुप्रमाणं जदम् अवं निःशेषं करोति तदेदमेवेष्टम्। यदि न करोति तदा जदान्यूनं अहमविशष्टं कल्पितम्। इदं जदं निःशेषं करिष्यति। अनेन प्रका-

१ तृतीयक्षेत्रम्  $\nabla$ . २ J. inserts तत्र before महत्प्रमाणस्य. ३ तदेव- मेबे  $^{\circ}$  D. ४ अनेनैव J.,  $\nabla$ .

रेण चरमं तादशप्रमाणमुत्पनं स्यातः येत स्वीपरिस्थप्रमाणानि निःश्रेप-यिष्यति । यतो मिलितप्रमाणे स्तः । तसात् कल्पितं जाम आहं निःशेषं करोति। इदं महत्प्रमाणं प्रमाण-द्वयमपि निःशेषयति। यदि ईदं महत्यमाणं न भवति तदा वं मैहत्प्रमाणं कल्पितं यहयं निःशेषयति । तस्मादिदं जदं निःशेषं करिष्यति । ह्वमिप निः-श्चेषं करिष्यति । अबं निःशेषं करोति स । तसात आहं निःशेषं करिष्यति । झदं निःशेषं करिष्यति । जर्झ निःशेषं करिष्यति । जॅंझं वाह्यवित । इद्मग्रद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥



अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितं यत् प्रमाणं प्रमाणद्वयं निःशेषं करोति तत प्रमाणद्वयनिःशेषकारकं महत प्रमाणं च निःशेषयति ।

# अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

बैहनां मिल्तिप्रमाणानां निःशेषकारकं महत् प्रमाणं चि-कीर्षितमस्ति ।

यथा अबजा मिलितप्रमाणानि कल्पितानि । अबनिःशेषकारकं महत् प्रमाणं दं फल्पितम् । यदि दः जं निःशेषं करोति तदिदं महत् प्रमाणं त्रयाणामपि नि:-शोषकारकमस्ति । यदिदं महत् प्रमाणं न भवति तदा हं महत् प्रमाणं कल्पितम् । तदिदम् अबं निःशेषं करिष्यति । दमपि निःशेषयति । द्ध लघुरस्ति । इदमशुद्धम् ॥

९ बत् खोपरिप्रमाणानि  $D_{\bullet}$ ,  $K_{\bullet}$ ,  $V_{\bullet}$  २ महत् प्रमाणमिदं न भवति  $J_{\bullet}$ 3 द्वयोर्नि:शेवकारकं महत् प्रमाणं कल्पितम् J. ४ K. has इदं सम्बद्धा for ज्ञमं चात् लध्वस्ति. ५ मिलितप्रमाणनिःशेषकारकमहत् प्रमाणं J.

यदि दं जं निःशेषं न करोति तदा हं महत् प्रमाणं किल्पतम् । एतचैतद्वयं निःशेषं करोति । हः दं निःशेषयति । तदा अवगपि निःशेषं करोति । तसादिदं महत् प्रमाणमस्ति यतस्वयमपि निःशेषं करोति । । यदीदं न करोति तदा झं महत् प्रमाणं किल्पन्तम् । झम् अवो निःशेषं करिष्यति । तदा । स्वम् अवो निःशेषं करिष्यति । तदा । मि निःशेषं करिष्यति । पुनः स दं जं ने ज द ह ॥ निःशेषं करोति । तदा हमपि निःशेषं करिष्यति । इदम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥ इदं च तसाह्रध्वस्ति । इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥ मिलितयोः प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्वयोरङ्कयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा अविष्माणे हे मिलिते कल्पिते । हं प्रमाणं तृतीयं कल्पनीयं येन द्वयोरपवर्तः स्यात् । हः अं यावद्वारं निःशेषयित तत्रं लघ्वद्वः जः कल्पनीयः । हर्पमाणं वप्रमाणं यावद्वारं निःशेषयित तत्प्रमाणं दः कल्पितः। तस्मात् हअनिष्पत्तिः रूपजनिष्पत्ति- तुल्या भविष्यति । अहयोर्निष्पत्तिज्ञेरूपयोर्निष्पत्तिः क्षपदयोर्निष्पत्तिः न्यास्ति । हवयोर्निष्पत्तिः रूपदयोर्निष्पत्तितुः स्यास्ति । तसात् अवयोर्निष्पत्तिज्ञेद्दनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एतौ जदावद्वो स्तः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

ें जिंद अंब ह

१ करिष्यति J, V. २ भवति K., J., V. ३ This sentence is omitted in D. and J. They read the next sentence as follows:—पुनर्दे जं झं नि:शेषं करोति D. पुनर्झे दं जं नि:शेषं करोति J. ४ मिलितप्रमाणयो J. ५ तत् प्रमाणं जं कल्पितं J. ६ यावद्वारं हं वं नि:शेषं करोति तदङ्गं दं कल्पितम् J.

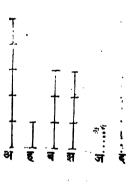
# अंध षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

ययोर्द्धयोः प्रमाणयोर्निष्पत्तिर्द्धयोरङ्कयोर्निष्पत्तितुल्या भ र्वेति ते मिलितप्रमाणे भवतः।

यथा अवं प्रमाणे कल्पिते । जदावद्गी कल्पिती । अवनिष्पत्ति-र्जदिनिष्पत्तितुल्या कल्पिता । तदा अबी मिलिती भविष्यतः।

#### अस्योपपत्तिः ।

अप्रमाणस्य जतुल्या विभागाः कल्पिताः । तसात् हपमाणमुत्पन्न जातम्। पुनर्हस्य द्तुल्या घातामाद्याः। लब्धा-हो ईमसंज्ञोऽस्ति। तसात् अहनिष्पत्तिजैरूप-निष्पत्तितुल्या भविष्यति । हम्ननिष्पत्तिरू-पदनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् अझ-निष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अ-बनिष्पत्तितुल्यापि भविष्यति । तसात् बझौ समानौ भविष्यतः । अङ्गौ मिलितप्रमाणौ स्तः। तसात् अबौ मिलितप्रमाणौ भविष्यतः। इदमसदिष्टम् ॥



# अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

द्वयोर्मिलितरेखावर्गयोर्निष्पत्तिर्द्वयोरङ्कवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति । यदि रेखाद्वयवर्गयोर्निष्पत्तिरङ्कवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति तदा ते रेखे मिलिते भवतः। यद्यङ्कवर्गयोर्निष्पत्ती रेखावर्गतुल्या न भवति तदा ते रेखे भिन्ने ज्ञातच्ये।

າ अथ is omitted in V. २ भविष्यति J. ३ असी V. ४ झरं-ज्ञकः  $\mathbf{K}$ ., झसंज्ञकोऽस्ति  $\mathbf{V}$ . ५ अझे मिलितप्रमाणे  $\mathbf{J}$ . ६ ०दिष्ट समी-चीनम् J. ७ वर्निष्पत्तेस्तुत्या V.

यथा अबरेलाद्वयं कल्पितम् यदि ते मिक्रिते रेले भवतस्तदैतबोनिव्यत्तिर्द्वयोगिष्पेत्तितुस्या भविष्यति । तो द्वावङ्को
जदी कल्पितां। अवयोर्वर्गयोनिव्यति। अवयोर्वर्गयोनिव्यति। अद्वर्गयोगिष्पत्तिजदिनष्पत्तिवर्गो भविष्यति।
जदिनष्पत्तिः अवनिष्पत्तिस्तुस्यास्ति । तसाद्वयो रेला-

पुनरि अवयोर्वर्गयोर्निष्पत्तिर्जदयोर्वर्गयोर्निष्पत्तितुल्या कल्पिता।

इझाँ जदस्य भुजौ कल्पितौ । तसाद्रेसावर्गयो-निष्पत्ती रेसानिष्पत्तिवर्गतुल्या जाता । जदनिष्प-तिर्इझनिष्पत्तिवर्गोऽस्ति । तसाद्रेसयोर्निष्पत्तिरक्तयो निष्पत्तितुल्या जाता । तसात्ते रेसे मिलिते संपैने ।

वर्गयोनिष्पत्तिर्द्वयोरङ्खवर्गयोनिष्पत्तितुल्या जाता ।

**3** 

पुनरिप रेखावर्गयोर्निष्पत्तिरङ्कद्वयवर्गनिष्पत्ति-तुल्या न भवति तदा ते रेखे भिन्ने भवतः । यदि भिन्ने न भवतस्तदा मिछिते कल्पिते । तैदा अनयो-र्वर्गनिष्पत्तिरङ्कद्वयवर्गनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । इद-

**ज....** 

₹..

₹.

मशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अनेनदं निश्चितं रेखे यदि मिछिते स्पातां तयोर्वगीविप मिछिती भवतः । यदि रेखावर्गी भिन्नी तदा रेखे अपि भिन्ने भवतः । अस्य विकोमता नास्ति ॥

९ °निम्मतेसुस्या V. १ J. omits तौ. १ जाते J. ४ J. Omits त्ता. ५ °र्वर्गयोनिं J. ६ J. Omits स्याताम्.

#### अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

यानि चत्वारि प्रमाणानि सजातीयानि सन्ति तेषु प्रथम-ब्रितीयो यदि मिलितो स्तस्तदा मृतीयचतुर्थावपि मिलितो भविष्यतः । यदा प्रथमद्वितीयो भिन्नो भवतस्तदा नृतीयच-तुर्थावपि भिन्नो भविष्यतः ।

यथा अवजदानै स्वारि प्रमाणानि सजातीयानि क लिपतानि । तत्र अवी यदि मिलिती स्यातां तदा तौ द्वयोर इ- योनिष्यतौ स्याताम् । जदावप्य इयोनिष्यतौ म- विष्यतः । तदा जदरेखे मिलिते भविष्यतः । यदि अवी मिली जदावपि भिन्नी भविष्यतः । कुतः । विषयि मिन्नी न भवतः मिलितौ भवतस्तदा द्वयोर इ- योनिष्यतौ भविष्यतः। अवावप्येताह शौ भविष्यतः । अविष्यतः । अविष्यतः । अविष्यतः । अविष्यतः । अविष्यतः । अविष्यतः । असिदिष्टं समीचीनम् ॥

यदि प्रमाणानि रेखा भवन्ति तत्र अञ्चवर्गी मिलिती वा भिन्नी भवतस्तदा जदावप्येताहशी भविष्यतः । कुतः । अनयोर्वर्गयोः स- जातीयत्वात् ॥

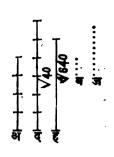
### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

तार्द्दशं रेखाद्वयमुत्पादनीयं यथेष्टरेखया प्रत्येकं भिन्नं स्यात्। तयोरेकस्या रेखाया वर्गः कित्पतरेखावर्गाद्विनः स्यात्तथा कल्पनीयो भवति।

यथा इष्टरेखा अं कल्पिता । ययोरक्कयोर्निष्पत्तिर्वर्गनिष्पत्तितुल्या

<sup>9</sup> यदि V. २ चत्वारः प्रमाणाः संजातीयाः कल्पिताः D., K., V. ३ This sentence is omitted in K. and V. ४ J. inserts तदा after मिन्नो. ५ इष्टमस्मत्समी° V. ६ तादशरेखा° J. ७ इष्टमा रेखया K., J., V.

न भवति तथा द्वावद्वी मासी । तांवद्वी बजी कल्पिती । पुनर् अवर्गदवर्गयोर्निष्पत्तित्वयोरद्व-योर्निष्पत्तितुत्या कार्या । तसात् दम् असंज्ञाद्विन्नं भविष्यति । कुतः । अनयोर्वर्गी द्वयोरद्वर्गनिष्पत्ती न स्तः । अनयोर्वर्गी मिलिती भविष्यतः । कुतैः । अन् नयोर्वर्गनिष्पत्तिर्द्वयोर्निष्पत्तितुत्यास्ति । पुनर् अदरेखयोर्मध्ये हरेखा एकनिष्पत्ती निष्कास्या ।



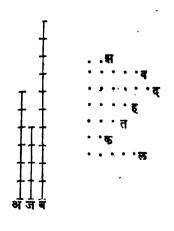
तस्गोदिमे अरेखाहरेखे भिन्ने भविष्यतः । अनयोवर्गाविष भिन्नो म-विष्यतः । कुतः । अवर्गहवर्गयोर्निष्पत्तिः अद्दिनष्पत्तितुत्यास्ति । अद्द-निष्पत्तिः अहनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । अः दाद्विनोऽस्ति । तस्मात् अहवर्गाविष भिन्नो भविष्यतः । ययोर्वर्गो भिन्नो भवतस्तो भिन्नोऽपि भिन्नो भवतः । इँदमेवाऽस्माकिमिष्टम् ॥

अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

एकप्रमाणेन यावन्ति प्रमाणानि मिलितानि सन्ति तानि मिथोऽपि मिलितानि र्रयुः ।

यथा अबौ द्वे प्रमाणे जप्रमा-णेन मिलिते कल्पिते । अजप्रमा-णयोनिष्पत्तिदृहाद्वयोनिष्पत्तेस्तुल्या कल्पिता । पुनर्जबप्रमाणयोनिष्पत्ति-भवाद्वनिष्पत्तितुल्या कल्पिता ।

अस्यां निष्यत्तौ त्रयो लघ्व इास्त-कला प्राद्धाः । तत्र अवप्रमाणयो-निष्पत्तिस्तला इयोर्निष्पत्तितुल्या भ-विष्यति । तसादेते द्वे प्रमाणे मिल्रिते भवतः । इदमेवेष्टम् ॥



९ यतः J. २ एते अहरेखे J. ३ यतः J. ४ इत्येवेष्टम् J. ५ K. inserts अन्ये here; J. has अन्यानि. ६ भवन्ति J. ७ भविष्यतः J.

### अर्थेकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

यदि द्वे प्रमाणे मिलिते भवतस्तदा तयोयोंगोऽपि तेन मिलितो भवंति तयोरन्तरमपि ताभ्यां मिलितं भविष्यति ।

यथा अववजे द्वे प्रमाणे मिलिते कल्पिते । अनयोरपवर्तको दः
कल्पितः । तदाँ दो ऽपि अनयोर्योगस्याप्यपवर्तको भविष्यति ।

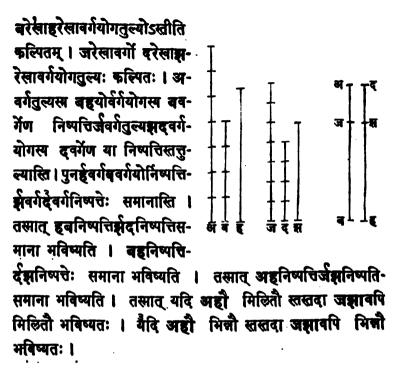
यैदि दः उभयोर्थोगमेकं प्रमाणं च निःशेषं करोति तदा द्वितीय-प्रमाणमपि निःशेषं करिष्यति । ईंदमेवासाकमिष्टम् ॥

#### अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

यत्र चतस्रो रेखाः सजातीया भवन्ति तत्र यदि प्रथमरेखावर्गो द्वितीयरेखावर्गप्रथममिलितान्यरेखावर्गयोगतुल्यो
भवति तदा तृतीयरेखावर्गश्चतुर्थरेखावर्गतृतीयरेखामिलितान्यरेखावर्गयोगतुल्यो भविष्यति । यदि प्रथमरेखावर्गो
द्वितीयरेखावर्गस्य प्रथमरेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन
तुल्यो भवति तदा तृतीयरेखावर्गोऽपि चतुर्थरेखावर्गस्य तृतीयरेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति ।

यथा अबजदाश्चतस्रो रेखाः सजातीयाः कल्पिताः । अरेखावर्गी

१ भविष्यति J., V. १ तदानयोथोंगस्मापि दोऽपवर्तको भविष्यति । J. ३ यदि दः योगं निःशेषं करोति दमुभयोः (एकं) प्रमाणं च निःशेषं करोति तदा &c. J. ४ इदमेवेष्टम् J.



#### पुनः प्रकारान्तरम् ।

अववजदहहशाश्चतस्रो रेखाः किल्पताः । तत्र अववर्गवजवर्गयोर्निष्पत्तिदृहवर्गश्चहवर्गिनिष्पत्तेस्तुत्यास्ति । तसात् अववर्गस्य निष्पत्तिः अववर्गवजवर्गान्तरेण तथास्ति यथा
दृहवर्गस्य निष्पत्तिदृहवर्गश्चहवर्गान्तरेणास्ति । अवस्य ज
निष्पत्तिः अववर्गवजवर्गान्तरभुजेन तथास्ति यथा दृहस्य
निष्पत्तिदृहवर्गहञ्चवर्गयोरन्तरभुजेनास्ति । अवस् अववजवर्गान्तरभुजेन मिलितं भवति । तदा दृहं दृहवर्गहृश्चर्गान्तरभुजेन मिलितं भविष्यति । यदि ते भिन्ना व
पविष्यन्ति तदा एतेऽपि भिन्ना भविष्यन्ति ॥

<sup>9</sup> बहुवर्गयोगतुस्यो° J. २ °वर्गयोर्निष्पत्तेः J. ३ मिन्नी तदा मिन्नी अविष्यतः J.

#### अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

न्यूनाधिके द्वे रेखे भवतस्तदा छघुरेखावर्गचतुर्थाशतु-न्यमेकं क्षेत्रं बृहद्रेखाखण्डोपेरि कार्य यथा द्वितीयखण्डोपरि कृतं क्षेत्रं वर्गो भवति । तत्रेदं क्षेत्रं बृहद्रेखाया द्वे खण्डे यदि मिलिते कॅरिप्यति तदा बृहद्रेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य बृहद्रेखामिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । यदि च बृहद्रेखावर्गः पूर्वोक्तरूपो भवति तदा क्षेत्रं बृहद्रे-खावा मिलिते द्वे खण्डे करिष्यति ।

वना अधिकरेला बजं कल्पिता रुघुरेला अं कल्पिता। अवर्गचतु-र्गाञ्चः अरुघुरेलामा अर्धवर्गतुल्योऽस्ति । एतत्तुल्यं बजरेलालण्डो-

परि क्षेत्रं कार्य यथा द्वितीयस-ण्डोपरि शेषक्षेत्रं वर्गरूपं भवति । तदेयं बजरेसा दचिन्होपरि स-ण्डिता भविष्यति नैत्विधता ।

ह द ब<del>-----</del>ज

यतो अरेखार्घवर्गो बजरेखार्घवर्गतो न्यूनोऽस्ति तस्मात् बदं महत्ख-ण्डं कल्पितम् । दहरेखाजदतुल्या प्रथकार्या । पुनर्बददज्योर्घातः अवर्गचतुर्योश्चतुल्योऽस्ति । अयं चतुर्गुणः अवर्गतुल्यो मवति । अ-स्मिन् बहवर्गश्चेद्योज्यते तदा बजवर्गसमानो भवति । तस्मात् बजवर्गः अवर्गबहवर्गयोर्योगतुल्यो भवति । तस्माद्यदि बददजौ मिलितौ मवतस्तदा बहवजौ मिलितौ भविष्यतः । कुतः । बजं जदेन मिलितमस्ति । जदं जहेन मिलितमस्ति । तस्मात् बजं जहेन मिलितं मविष्यति । पुनरपि यदि बजं बहेन मिलितं स्यात् तदा बदं दजेन मिलितं मविष्यति । कुतः । बजं हजेन मिलितमस्ति । हजं दजेन

<sup>9.</sup> J. has यत्र in the beginning. २. कार्यम् । परं तथा कार्य यथा D., K., V. ३. करोति J. ४. अवर्गचतुर्योशतुस्यं बजरेखाखण्डोपरि &c. J. ५. J. omits न त्विंदा.

मिलितं चास्ति । तसात् बर्जं दजेन मिलितं भविष्यति । तसात् बदं दजेन मिलितं भविष्यति । ईदमेवेष्टमसाकम् ॥

#### अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

द्वे रेखे न्यूनाधिके यदि भवतस्तत्र न्यूनरेखावर्गचतुर्याश-तुल्यं क्षेत्रं बृहद्रेखाखण्डोपरि तथा कार्य यथा शेषखण्डक्षेत्रं वर्गरूपमवशिष्यते । तत्क्षेत्रं यद्यधिकरेखायाः खण्डद्वयं भिन्नं करोति तदा महद्रेखावर्गी लघुरेखावर्गस्य महद्रेखाभिन्नान्य-रेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । यदि महद्रेखावर्ग ईहशो भवति तदा क्षेत्रं तस्या रेखायाः खण्डद्वयं भिन्नं करिष्यति ।

उपरितनक्षेत्रेणैव निश्चितं बजरेखावर्गः अवर्गबद्धवर्गयोगतुल्यो-ऽस्ति । यदि बदं दजादिनं भवति तदा बर्जं बहाद्वितं भवि-ष्यति । कुतः । यदि मिलितं स्यात् तदा बद्दजी मिलिती म-

**e** 18

विष्यतः । इदमशुद्धम् ।

पुनरिप यदि बजबही भिन्नी भवतस्तदा बददजाविप भिन्नी भ-विष्यतः । कुतः । यदि मिलितौ भवतस्तदा बजबहौ मिलितौ भविष्यतः । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५॥

यानि समकोणक्षेत्राणि भवन्ति तेषां भुजा यद्यक्रसं-ज्ञाही भवन्ति तदा तत्क्षेत्रमप्यक्रसंज्ञाही भवति ।

J. omits असाकम्.
 J. has त्रयोदशक्षेत्रोक्तद्वे रेखे.
 चेत् J. ४. भविष्यतः J. ५. भविष्यन्ति J.

यथा बजक्षेत्रं कल्पितम् । अबअजी तस्य भुजी कल्पिती । अबभुजोपरि बदं समकोणसम-चतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । इदमङ्ग-संज्ञार्ड भविष्यति । क्षेत्रं चानेन मिलितमस्ति। कुतः। अजम् अद-तुल्येन अबेन मिलितमस्ति । त-

सात क्षेत्रमप्यइसंज्ञाई भविष्यति । इदमेवीसाकमिष्टम् ॥

# अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६॥

यद्यक्र संज्ञाई भुजोपर्यक्र संज्ञाई क्षेत्रं भवति तैदा द्विती-यमुजोऽप्यङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अवभुजोपरि बजक्षेत्रं कल्पितम्। अजभुज उत्पन्नः। तत्र अबोपरि बद्समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । तसादिदं बजक्षेत्रेण मिलितं मविष्यति । कुतः । उभयोरद्वसंज्ञाई-लात्।तसात् दअम् अबतुत्यम् अजेन मिलितं मविष्यति। तसात् अजम् अङ्ग-

संज्ञाई भविष्यति । इदमस्रदिष्टम् । अस्य क्षेत्रं पूर्वोक्तवदस्ति ॥

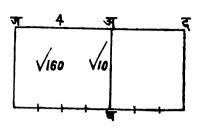
# अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

यत् क्षेत्रं चतुर्भिः कोणैः समकोणमस्ति तस्य यदि मुजौ भिन्नो भवतो भुजवर्गी च मिलितो भवतस्तदा तत् क्षेत्रं करणीरूपं भविष्यति । तस्यैवै मध्यक्षेत्रसंज्ञा कृता । यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सापि करणीगतैव स्यात्। इयं रेखा मध्यरेखाभिधाना भवति ।

<sup>9</sup> J. omits अस्माकम्. २ तदुत्पन्नद्वितीय J. ३ J has तस्यैव एवनै-( यवनै ? )मध्यक्षेत्रमिति संज्ञा.

यभा क्षेत्रं बजम्। अवअजी भुजी निन्नी कल्पिती । पुनर्

अबभुजोपरि बद्समकोण-समचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । त-स्मादिदमङ्कसंज्ञाई मविष्यति कल्पितक्षेत्राद्भिनं च पतिष्यति । रेस्वयोभिन्नत्वात् । तस्मात् क्षेत्रं करणीरूपं मविष्यति । एवं हि



यस्या रेखाया वर्गः क्षेत्रतुल्यो भवति तदा सापि रेखा करणीरूपा भविष्यति । इदमेवेष्टम् । पूर्ववत् क्षेत्रं कार्यम् ॥

अथ मध्यरेखाः कदाचित् मिथो मिलिता भवन्ति । यथा **अव**रेखा अद्भसंज्ञाही कल्पिता । यस्य क्षेत्रस्यैक्सुजः अर्जं भवति द्वितीयम अबेरलाचतुर्यौशतुल्यो भवति ततुक्षेत्रतुल्यो यस्या रेलाया वर्गो भवति सा रेखा मध्यरेखा भवति । सैव रेखा बजधेत्रतुल्यो यस्याः रेखाया वर्गो भविष्यति तया मिल्रिता भवति । क्रतः । अनयो रेख-योर्वर्गी रूपस्य चतुर्णी च निष्पत्तौ भविष्यतः। रूपं चत्वारः वर्गी स्तः। कदाचिन्मध्यरेखा भिन्ना भवन्ति मिलितवर्गाश्च भवन्ति । कुतः । यस्या रेखाया वर्गस्तत्क्षेत्रतुत्यो भवति यस्य क्षेत्रस्यैको भुजः अजं द्वितीयश्व अबार्धवरयो भवति तदा सा रेखा मध्या भवति । अस्या वर्गस्तद्रेसावर्गमिलितो भवति यस्या रेसाया वर्गो बजसेत्रतुल्योऽस्ति । वतोऽनयोर्वर्गी अवर्गाङ्कद्वयनिष्यती स्तः । कदाचित्ता मध्वरेखा भिन्ना तद्वर्गीश्व भिन्ना भवन्ति । कुतः । यस्या रेखावा वर्गस्तेन क्षेत्रेण तुल्यो भवति बस्य क्षेत्रसैक्भुजः अवं द्वितीयभुवः अजरेखावा भिन्नो भवति तस्य वर्गोऽइसंज्ञाहीं भवति सा रेखा नध्या भवति तदेखातो भिन्ना भविष्यति यस्मा रेखाया नर्गे बजक्षेत्रतस्यो भवति । यतोऽनयोर्वगी भिन्नो भवतः ।

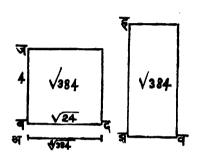
<sup>9</sup> भिज़रेसात्वात् J. २ क्षेत्रं पूर्ववत् कार्यम् J. ३ विद D., K.

#### अधाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

अङ्कसंज्ञाहरेखोपरि क्षेत्रं कार्यम् । मध्यरेखाचर्गतुस्यं क्षेत्रं चेद्भवति तदा तदुत्पन्नभुजः करणीरूपो भवति । तस्य वर्गो-ऽङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अं मध्यरेखा कल्पिता बजम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता। जदले-

त्रम् अवर्गतुल्यं कल्पितम् । पुनर्य-स्य भुनौ भिन्नौ भवतोऽइसंज्ञाही वर्गौ च भवतस्तत्सेत्रं हवं क-ल्पितम् । जदहवसमानक्षेत्रयो-वकोणझकोणौ समानौ स्तः । तदा जबहझनिष्पत्तिईवबदनि-ष्पत्तितुल्या भविष्यति। जबहझौ



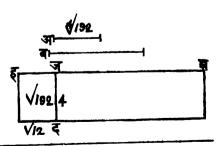
मिलितवर्गों स्तः । तसात् झवबदाविप मिलितवर्गों भविष्यतः । पुनर्ज-दक्षेत्रबदवर्गों मियो मिली स्तः । तसात् जवबदाविप मिथो मिली मविष्यतः । तसात् बदवर्ग एवाइसंज्ञाहीं जातः । इदमेवेष्टम् ॥

अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥

मध्यरेखामिलिता रेखापि मध्या भवति ।

यथा अं मध्यरेखा कल्पिता । एतन्मिलिता बरेखा कल्पिता । अ-

इसंज्ञाईद जरेलोपरि तदे-खाद्मयवर्ग जुल्यं दहक्षेत्रं द-झक्षेत्रं कार्यम् । एते क्षेत्रे मिछिते मविष्यतः । इजं जझेन मिछितं मविष्यति । इजस्य वर्गोऽइसंज्ञाहींऽस्ति ।



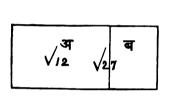
९ तके अवरेका वर्ग तुरवं क्षेत्रं भवति J. ९ J. inserts अरेका वर्गतुरुषं after क्षेत्रं. ३ J. omits पुनर्.

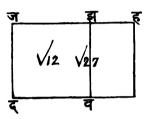
इजजदौ भिन्नो स्तः । तसात् जझमप्येवमेव भविष्यति । तसात् दझं मध्यक्षेत्रं जातम् । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

द्वयोर्मध्ययोः क्षेत्रयोरन्तरं करणीरूपं भवति ।

एको मध्यः अबः कल्पितः । द्वितीयो मध्यः अः कल्पितः । अन्तरं वं कल्पितम् । जदम् अक्संज्ञाई कल्पितम् । अस्योपिर अव-





तुल्यं क्षेत्रं कार्यम् । अस्य द्वितीयो भुजो जहो भविष्यति । पुनर्द्वि-तीयक्षेत्रतुल्यं क्षेत्रं कार्यम् । तत्र जझं द्वितीयो भुजो भविष्यति । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । एती जदात् संकाञात् भिन्नो भविष्यतः । हवं करणीरूपं भविष्यति । यदि करणीरूपं न भवति तदाइसंज्ञाई कल्पितम् । तदुत्पन्नभुजो झहः अइसंज्ञाहों भविष्यति । अस्य वर्गो जझवर्गश्चाइसंज्ञाहोंऽस्ति । पुनर्ज-श्राह्योर्भिन्नत्वात् जझझहयोष्ठीतोऽनयो रेखयोर्वर्गद्विनो भविष्यति। तसात् जझझहवर्गो जझझहयोद्विगुणघाताद्विनो भवतः । तसात् संपूर्ण मिलितं जहवर्गतुल्यं जझझहअइसंज्ञाहवर्गयोर्भिनं भविष्यति । तसात् तत्करणीरूपं भविष्यति । कल्पितं चाइसंज्ञाहम् । इदमर्ग्रे-द्वम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

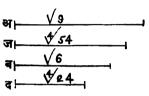
<sup>9</sup> J. drops सकाशात्. २ एवं क्षेत्रान्तरं करणीरूपं भविष्यति । यदि करणीरूपं न भवति J. ३ जझझहयोधीतो भिन्नोऽस्ति । जझझहयोधीनत्वात् । तस्मात् &c. D. ४ इदमञ्जपमम् J.

#### अथैकंविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

तत्र तादृशमध्यरेखाद्वयोत्पादनं चिकीर्षितमस्ति ययोर्भ-ध्यरेखयोः केवलं वर्गावेव मिलितौ भवत एतौ चाङ्कसं-ज्ञाईक्षेत्रभुजौ भवतः।

अथ प्रथमं द्वे रेखे अबसंज्ञे कल्पिते । अनयोर्वर्गावेव केवलमङ्कसं-ज्ञाहीं भवतः। अनयोर्मध्ये जरेखा मध्य-

निष्पत्तिरूपा कल्पिता । दरेखा चतुर्थ्य-स्यां निष्पत्तौ कल्पिता । अबघातो जवर्गतुल्यो मध्यक्षेत्रं भविष्यति । त-स्मात् जं मध्यरेखा भविष्यति । अब-



निष्पत्तिर्जदनिष्पत्तितुत्यास्ति । अबयोः केवलं वर्गी मिलितौ स्तः । त-सात् जदयोरिप केवलं वर्गी मिलिष्यतः । दोऽपि मध्यरेसा भवि-ध्यति । जदयोधीतो बवर्गतुत्योऽइसंज्ञाहीऽस्ति । तसात् जदाविष्टे मध्ये रेसे जाते ॥

# अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

ये द्वे मध्ये रेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रस्य द्वी भुजी भवतस्तादृशरेखाद्वयस्योत्पादनमिष्टमस्ति।

अवजास्तिस्रो रेसाः केवलवर्गमिलिताः कल्पिताः। अवयोर्मध्ये

दरेसा मध्यनिष्यत्तौ कल्पिता । अजयोर्निष्यत्तितुल्या दहनि-ष्यत्तिः कल्पिता । अदिनिष्य-त्तितुल्या बदनिष्पत्तिज्ञेह-निष्पत्तितुल्या मविष्यति ।

अबयोर्घातो दवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् देरेसा मध्या भविष्यति ।

<sup>9</sup> अवैकविशं J. २ मिलितौ स्तः J. ३ दं मध्यरेखा भविष्यति J.

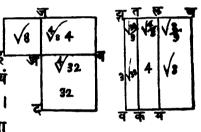
अजी केवलवर्गमिलिती स्तः। तसात् दहाविष केवलवर्गमिलिती मवि-ष्यतः। तसात् इरेसा मध्यरेसादरेसायाः केवलवर्गमिलिता मवि-ष्यति। दहयोषीतो बजयोषीतेन तुल्योऽस्ति। तसात् दहाविष्टमध्य-रेसे भविष्यतः।

अथ त्रयोविश्वतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

यस्य क्षेत्रस्य द्वी भुजौ मध्यरेखे भवतस्तयोः केवलवर्गी मिलिती स्तस्तदा तत् क्षेत्रं केवलमङ्कसंज्ञाई भविष्यति वा मध्यसंज्ञकं भविष्यति ।

बजक्षेत्रस्य अबअजी द्वौ भुजौ च मध्यौ कल्पितौ । द्वयोर्भुजयो-

रुपरि बदजही समकोण-समचतुर्भुजी कार्यी। झवरे-साइसंज्ञाही कल्पिता। तस्मा ह उपरि बदबजजहस्रेत्राणां तुल्यं वतकलमनक्षेत्रत्रयं कार्यम् । तत्र झततललना उत्पन्ना भुजा



मविष्यन्ति । प्रत्येकं शतलनयोर्वर्गी केवलमङ्कसंज्ञाहीं सः । एतौ च मिलितरेसारूपौ सः । अबअजवर्गयोर्मिलितत्वात् । बद्धेत्रबज्ञक्षेत्रयोर्निष्यिदिअअजिनिष्यत्तितुत्यास्ति । बअअङ्गयोरिप निष्यत्तितुत्यास्ति । तदा बज्रक्षेत्रज्ञङ्कषेत्रयोरिप निष्यतितुत्या मैविष्यति । तसात् वतकलमनानि त्रीणि क्षेत्राणि शततललनासिसो रेसान्धैकनिष्यत्तौ भविष्यन्ति । शतलनयोर्घातस्तलवर्गतुत्यो भविष्यति । शतलनयोर्घातस्तलवर्गतुत्यो भविष्यति । शतलनयोर्घातस्तलवर्गतुत्यो भविष्यति । शतलनयोर्घातस्तलवर्गतुत्यो भविष्यति । शतलनयोर्घातस्तलवर्गात्वस्याते । शतलनयोर्घातस्तलवर्गात्वस्याते । स्वत्यत्वस्यति । यदि तल्यस्ति । यदि तल्यस्ति । यदि तल्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्ति । स्वत्यस्यस

<sup>9 °</sup>मिळितवर्गी J. २ जाता J.

## अथ चतुर्विञ्चतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

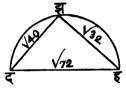
तत्र तादशरेखाद्वयस्योत्पादनमिष्टमस्ति ययोः केवलवर्गा-वङ्कसंज्ञाहीं मिलिती भवतोऽधिकरेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य महद्रेखामिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवेत् तथो-त्पादनमिष्टमस्ति ।

तदा द्वावद्भवर्गराशी कल्प्यो ययोरन्तरं वर्गो न भवति । तौ अब-बज्ञो वर्गी कल्पितो । पुनर्दहरेखाद्भसंज्ञाही कल्पिता । अस्योपिर द्शहं वृत्तार्धं कार्यम् । तत्र दहवर्गद्शव-र्गयोर्निष्पत्तिः अबअजनिष्पत्तितुल्या कल्पि-

गयानिष्पत्तः अ**बअ**जानिष्पत्तितुल्या काल्पः ता । तस्मात् दहदश्गौ इष्टरेखे भविष्यतः।

#### अस्योपपत्तिः ।

दर्भ पूर्णज्या कल्पिता । हर्झरेखा संयो- अर्जे ज्या । तत्र देहवर्गद्शवर्गयोर्निष्पत्तिद्वयोर-



क्र्योनिष्पत्तितुस्यास्ति । वर्गराश्योनिष्पत्तौ न स्तः । तसादेतद्रेसाद्वयं केवलमिलितवर्गो भविष्यति । पुनर्दहरेसावर्गोऽक्रसंज्ञाहोऽस्ति । त-सात् द्रश्नमप्येवं भविष्यति । पुनर्दहवर्गो द्रश्नवर्गहश्नवर्गयोगतुस्यो-ऽस्ति । तदा द्रहवर्गस्य हृश्नवर्गेण निष्पत्तिस्यथा भविष्यति यथा अब-बजाक्रवर्गराश्योनिष्पत्तितुस्या भविष्यति । तसात् हृश्नं दृहेन मि-लितं भविष्यति । कुतः।यतोऽनयोर्वर्गौ द्वयोरक्रयोर्वर्गयोर्निष्पत्तौ स्तः। तसाह्रे रेसे इष्टे जाते ॥

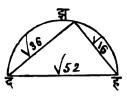
अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

तादृशरेखाद्वयस्योत्पादनिमष्टमस्ति ययोर्वर्गावङ्कसंज्ञाहीं भवतः पुनः केवलवर्गीं मिलिती यथा भवतः । पुनर्बृहद्देखा-वर्गो लघुरेखावर्गस्य महद्रेखाभिष्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति ।

**१ द्हद्श**वर्गयो° J. भा• ११

ययोर्वर्गराक्योयोंगो वर्गो न भवति तौ अजवजी राशी कल्पिती।

पुनर्दहरेखा अद्भसंज्ञार्हा कल्पिता। शेषमुपरि-तनक्षेत्रोक्तवत् कार्यं यथा दझरेखोत्पना भ-वति । तसात् दहदझरेखे इष्टे भविष्यतः । कुतः । अनयोर्वर्गी अखअजाइयोर्निष्पत्तौ स्तः । सा निष्पत्तिर्वर्गनिष्पत्तिसदशी नास्ति । तसात्तौ केवलवर्गमिलितौ भविष्यतः। दहम्



भ....ज ...ब

भद्रसंज्ञाईमितः । तसात् द्रश्नवर्गोऽद्रसंज्ञाहीं भविष्यति । अववज-योर्निष्पत्तिर्वर्गद्वयनिष्पत्तिनीस्ति । द्रहृहञ्चवर्गी तस्यां निष्पत्तौ स्तः । तसात् द्रहृवर्गो द्रश्नवर्गस्य तद्रेसाभिन्नान्यरेसावर्गस्य च योगेन तु-ल्योऽस्ति।यथेष्टं कल्पितं तथा सिद्धम् । अस्य क्षेत्रसुपरितनवद्वोध्यम् ॥

## अथ पद्विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥

अत्र तथा मध्यरेखाद्वयोत्पादनिमष्टमस्ति ययोर्वगौं केव-लिमिलितौ मवतः। रेखे चाङ्कसंज्ञाहैंकक्षेत्रस्य भुजौ भवतः। पुनरिषकरेखावगौं लघुरेखावर्गस्य मिलितान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति।

अबरेखे तथा कल्पिते यथा अवर्गी बरेखावर्गस्य अरेखामिलितान्य-

रेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति।अनयो-र्मध्ये एका रेसा मध्यनिष्पत्तौ निष्कास्य।सा जरेसा कल्प्या। एताभ्योऽन्या चतुर्थी अस्यां निष्पत्तौ निष्कास्या।सा दरेसा कल्पिता। तत्र जदरेसे मध्यरेसे जाते। अनयोर्वगौ

केवलमिलितौ भविष्यतोऽइसंज्ञाईक्षेत्रस्य च भुजौ भविष्यतः । अइसं-ज्ञाईक्षेत्रस्य च भुजौ भविष्यतः । अनयोर्जवर्गो दवर्गजमिलितरेखा-

<sup>9</sup> D. inserts प्रकारेण before कार्य. २ क्षेत्रं पूर्वोक्तमेव बोध्यम् । J. ३ तत्र J.

वर्गोक्तवर्गयोगतुल्यो भविष्यति । यत एतौ अवयोर्निष्पत्तौ स्तः। इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥

तत्र तथा मध्यरेखाद्वयमिष्टमस्ति ययोर्वर्गी केवलमिलिती स्तोऽक्कसंज्ञाईक्षेत्रस्य भुजौ स्तः । अधिकरेखावर्गी लघुरेखा-वर्गस्य बृहद्रेखाभिन्नरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति ।

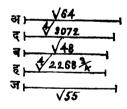
पुनर् अबरेसे तथा कल्प्ये यथा अवर्गो बवर्गस्य अरेसाभिन्नान्य-रेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति । रोषं पूर्वोक्तवत् ज्ञेयं ॥

अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

तत्र तथा मध्यरेखाद्वयोत्पादनमिष्टमस्ति यथा द्वे मध्यरेखे केवछवर्गमिछिते मध्यक्षेत्रस्य च भुजौ भवतोऽधिकरेखा-वर्गो छघुरेखावर्गस्य च महद्रेखामिछितान्यरेखावर्गस्य च यो-गेन तुल्यो भवति ।

अबजासिसो रेसास्तथा कल्प्या यथा अवर्गी जैवर्गस्य अरेसा-

मिलितान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो म-वित । अवमध्ये दरेसा मध्यनिष्पत्ती क-ल्पनीया । पुनईरेसान्या तथा तुल्या यथा दइनिष्पत्तिः अजनिष्पत्तितुल्या भवति । तसात् दही इष्टमध्यरेसे भविष्यतः ॥



#### अथोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

द्वे मध्यरेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रभुजौ यथा भवत-स्तथा कल्पनीये । पुनरधिकरेखावर्गो लघुरेखावर्गस्य बृह-द्रेखाभिन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुँल्यो यथा भवति ।

१ तत्र तथा अवजासिक्षो रेखा कल्प्या यथा J. २ जनर्गभरेखामिलितरेखा-वर्गबोगतुल्यो J. ३ D. inserts the words तस्या निष्पत्तिः अरेखया तथा मिवच्यति यथा अजरेखयास्ति । after भवति । ४ तुल्योऽस्ति J.

अस्य प्रकारस्त्वनन्तरोक्तक्षेत्रवत् ज्ञेयः । विशेषस्तु अवर्गो जवर्गस्य अरेसाभिन्नान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्योऽस्ति ॥

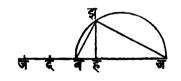
#### अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

ताहशरेखाद्वयोत्पादनमिष्टमित ययोरेखयोर्वगौं मिथो भिन्नौ स्तो वर्गयोगश्चाङ्कसंज्ञाहीं भवति रेखयोर्घातो द्विगुणो मध्यक्षेत्रं भवति ।

पुनर् अबबजो द्वे रेखे कल्पिते । तत्र अबवर्गो बजवर्गस्य अबरे-सामिन्नान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति । अबरेसोपरि अझब-वृत्ताद्वे कार्यम् । बजवर्गस्य चतुर्थोश्चतुल्यं क्षेत्रम् अबरेसासण्डोपरि तथा कार्ये शेषसण्डस्य क्षेत्रं यैथा वर्गरूपं भैवेत् । अस्या अबरेसाया इचिद्वोपरि विमागद्वयं भैविष्यति ।

पुनर्हिचिहात् हझलम्बो निष्कास्यः । पुनर् अझझबरेसे संयोज्ये । एते इष्टरेसे भविष्यतः । कुतः । अझझबयोर्निष्पत्तिः अहहझयो-

निष्यचितुत्यास्ति । हझहबयोरिप निष्यचितुत्यास्ति । तसात् अझ-झबवर्गनिष्यचिः अहहबभिन्नरे-खयोर्निष्यचेखुल्यास्तीति । त-



सात् अझझबयोर्वगीं भिन्नो भविष्यतः । अनयोर्वगीं अबअङ्कसंज्ञा-हेवर्गेण समानो स्तः । तसादनयोर्वर्गयोगोऽप्यङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति । अहहबयोर्घातो हझवर्गतुल्योऽस्ति । बदवर्गस्य तुल्य आसीत् । बदवर्गश्य बजवर्गचतुर्थोशोऽस्ति । तसात् हझवर्गो बदवर्गसमानो भविष्यति । पुनर् अबअझयोर्निष्पत्तिक्सबझहयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति ।

९ J. has तत्र in the beginning. २ A and J. have यश after कार्य. ३ Omitted in A and J. in which it is used before. ४ भवति A., J. ५ रेखवा J. ६ करिष्पति D.

तसात् अझझबघातः अबबद्धाततुल्यो मिवष्यति । तसात् अझ-झबद्विगुणघातः अबबजमध्यक्षेत्रेण समानो भविष्यति । इदमेवा-साकमिष्टम् ॥

#### अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

तत्र तादृशरेखाद्वयस्योत्पादनिमृष्टं ययो रेखयोर्वगौं भिक्तौ भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भवति । तयोर्घातो द्विगुणो-ऽक्कसंज्ञाहीं भवति ।

तत्र तथा मध्यरेखे अबबजे किल्पते। अनयोर्वर्गी केवलमिलितो। एताव इसंज्ञाईक्षेत्रस्य भुजो भवतः। एकस्या वर्गो द्वितीयरेखावर्गस्य तदन्यभिन्नरेखावर्गस्य च योगेन समानो भवति तथा कल्पनीयः।

पुनरनयो रेखयोरुपरि पूर्वोक्त-प्रकारेण तथा क्षेत्रं कार्यं यथा अझझबे इष्टरेखे उत्पन्ने भवतः।

अन्योर्वर्गी अहह्रबभिन्नरेसावर्गनिष्पत्तौ स्तस्तसाद्भिन्नौ जातौ । अन-योर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रं कुतो जातम् । यतोऽनयोर्वर्गी अवमध्यवर्गयो-स्तुत्यौ स्तः । अनयोद्धिगुणो घातोऽइसंजाहः कथम् । अवबज्जघातक्षे-त्रस्याङ्कसंजाहिस्य तुल्यत्वात् । इदमेवेष्टं । क्षेत्रमुपरितनवत् ॥

### अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

तत्र तादृशरेखाद्वयोत्पादनिमष्टं ययोर्वगौं भिन्नौ स्तः । तयोर्वगयोगो मध्यक्षेत्रं भवति । तयोर्द्विगुणो घातो द्विगुण-प्रथममध्यक्षेत्रं भवति । तयोर्द्विगुणो घातो द्विगुणप्रथममध्य-क्षेत्राद्विन्नं वा मध्यक्षेत्रं भवति ।

१ मिविष्यतः J. २ पूर्वकमप्रकारेण क्षेत्रं A. ३ व्होंऽस्ति **अववज्र** J. ४ व्हेतस्थत्वात् J.

तत्र द्वे मध्यरेखे अबबजे कल्पिते। अनयोर्वर्गी केवलमिलिती भ-वतः। रेखे च मध्यक्षेत्रस्य मुजौ भवतः। एकस्या वर्गी द्वितीयरेखा-वर्गस्य प्रथमरेखामिन्नान्यरेखाव-र्गस्य च योगेन तुल्यो भवतीति केल्पिते। अनयोरुपरितनप्रकारे-णैव अझबझे इष्टरेखे उत्पाद्ये। जंदं ब ह

अनयोर्वर्गी भिन्नी भवतः । अन-

योर्योगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भैवतीति पूर्वोक्तप्रकारेणैव श्रेयः । अनयोः अश्वब्रश्चयोद्विगुणो घातो मध्यक्षेत्रम् । कुतः । अबब्रजघातमध्यक्षेत्रतुल्योऽस्ति । ततो मध्यक्षेत्रं प्रथममध्यक्षेत्रात् मिन्नं कुतोऽस्ति । यसा-द्वज्ञो भिन्नो सः । अनयोर्भिन्नत्वात् । अबवर्गः अबब्रजघातश्च मिन्नो भविष्यति । इदमेवेष्टम् । क्षेत्रं पूर्ववत् ॥

अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥

ययोभिन्नरेखयोर्वगीवङ्कसंज्ञाहीं भैवतस्तयोर्योगतुल्या या रेखा सा करणीगता भविष्यति । इयं रेखा योगजारूयोच्यते ।

यथा अजरेला अवबजयोगोत्पन्ना करणीरूपा भवति । तयो-

द्विगुणघातोऽइसंज्ञाहेवर्गयोगात् भिन्नो भविष्यति । अनयोभिन्न-

त्वात् । तसात् अस्य अजस्य वर्गो द्वाम्यां वर्गाभ्यां भिन्नो भविष्यति । तसादियं करणीगता भविष्यति ॥

अथ चतुर्खिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

ययोर्मध्यरेखयोः केवलवर्गी मिलितौ भवतोऽक्कसंज्ञाईक्षे-त्रस्य द्वौ भुजौ भवतस्तयो रेखयोर्योगतुल्या या रेखा भवति सा करणीरूपा भविष्यति । इयं प्रथममध्ययोगरेखोरूयते ।

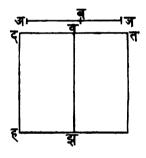
९ मिष्यतीति J. २ कल्प्यते A. ३ भविष्यतीति J. ४ मध्यक्षेत्ररूपे जातः । अवस्यज्ञघातरूपस्य मध्यक्षेत्रस्य तुस्यत्वात् । A. ५ J. inserts मिषः before मिष्रो. ६ भविष्यतः J. ७ १ स्थास्ति J.

यथा अवबजयोगोत्पना अजरेखा करणीरूपास्ति । अनयोर्भि-नत्वादनयोर्द्विगुणघातोऽप्यनयोर्वर्ग-योगात् भिन्नो भविष्यति । तसात् रेखावर्गो द्विगुणघाताद्विन्नो भविष्यति । तसादियं करणीरूपा भविष्यति ॥ अथ पश्चित्रंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

ये मध्यरेखे केवलवर्गमिलिते मध्यक्षेत्रस्य भुजरूपे स्तस्तदा तयोर्थोगतुल्या या रेखा सा करणीरूपा भविष्यति । इयं च द्वितीयमध्ययोगरेखासंज्ञा ज्ञेया ।

यथा अजरेला अवबजयोगोत्पनास्ति । दहरेलाइसंज्ञाही

किल्पता। अस्या उपिर अववर्गवजवर्गयो-गतुल्यं दशक्षेत्रं कार्यम्। द्वयोद्विंगुणघात-तुल्यं शतक्षेत्रं च कार्यम् । तदैते भिन्ने भविष्यतः । रेखयोभिन्नत्वात् । तसात् दववतरेले भिन्ने भविष्यतः। अनयोर्वर्गा-बद्धसंज्ञाहीं भविष्यतः। तसात् इतं योग-रेखा भविष्यति। दहम् अद्भसंज्ञाहेरेला म-



विष्यति । तसात् इतक्षेत्रं करणीरूपं भविष्यति। तसात् अजरेला क-रणीरूपा भविष्यति ।

# र्थय पट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६ ॥

यदि द्वयो रेखयोर्वगौँ भिन्नौ भवतो वर्गयोगश्चाङ्कसंज्ञाहीं भवति तयोद्धिगुणघातो मध्यक्षेत्रसंज्ञको भवति तद्योगतुल्या या रेखा सा करणीक्पा भविष्यति । इयमधिकरेखासंज्ञा ।

यथा अजरेखा अबबजयोगींगो-त्पन्ना स्यात् । अस्या विचारः क्षेत्रं च <sup>अ</sup> ब ज पूर्ववत् न्नेयं ॥

९ षद्त्रिशं J.

### अथ सप्तित्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७ ॥

ययो रेखयोर्वर्गी भिन्नी भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भ-वति द्विगुणघातोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति तद्रेखाद्वययोगतुल्या या रेखा भवति सा करणीगता भविष्यति । अस्या वर्गी-ऽङ्कसंज्ञाहरेखामध्यरेखयोर्वर्गयोगतुल्योऽस्ति ।

यथा अववज्योगोत्पन्ना अजरेसास्ति । अस्याः क्षेत्रं विचारश्च पूर्ववत् ज्ञेयम् ।

### अथौष्टत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३८॥

ययोर्वगौं भिन्नौ भवतो वर्गयोगश्च मध्यक्षेत्रं भवति तद्दिगुणितघातो मध्यक्षेत्रं भवत्यनयोर्वगयोगमध्यक्षेत्रं द्विगुणघातमध्यक्षेत्राद्विनं भवति तदा तयो रेखयोर्योगतुल्या या
रेखा भवति सा करणीर्रूपा भवति । अस्या वर्गो मध्यरेखाद्वयवर्गयोगतुल्यो भवति ।

यथा अजरेखा अबबजयोगोत्पन्नास्ति । अस्या विचारः क्षेत्रं च पूर्वोक्तवत् ज्ञेयम् ॥

अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥ योगरेखाया योज्यखण्डे एकचिह्ने भवतः ।

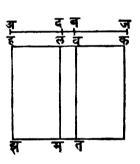
यंद्यन्यसिक्षिद्धे भवतस्तदा तिचिद्धं दं किल्पितम् । अववज-वर्गयोगअदद्जवर्गयोगान्तरिमद्दमद्वसंज्ञार्हरूपम् । द्विगुणअववज-घातद्विगुणअदद्जघातयोरन्तरं द्व-योर्मध्ययोरन्तररूपमस्ति । तसादन्तर- अ दं वं जं मद्वसंज्ञार्हे करणीरूपं च भविष्यति । इदमग्रुद्धम् । इष्टं समीचीनम् ॥

९ सप्तित्रं J. २ पूर्वोक्तवत् K. ३ अथाष्टित्रं J. ४ °रेखा J. ५ A. inserts यथा योगरेखा अर्ज अवबज्जे खण्डे एते बनिह एव भवतः । ६ J. has तक्त्युनाधिके यदि &c. ७ J. has इष्टम् for इदम्.

# अथ चत्वारिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४० ॥ प्रथममध्यवोगरेलाया अपि योज्यलण्डे एकचिह्ने भवतो नान्यत्र ।

# अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४१ ॥ द्वितीयमध्ययोगरेखाया योज्यखण्डे एकचिहे भवतः । यद्यन्यत्र सात्तदा दविहं कल्पितम् । तत्र हझरेखाइसंज्ञाही

कल्पिता । अस्या उपरि अबबजयोर्वर्ग-योगतुल्यं झवक्षेत्रं कार्यम् । अनयोद्विगुण-षाततुल्यं कतं क्षेत्रं कार्यम् । तसात् हक-रेखाया विनिद्दोपरि द्वौ विभागौ स्तः । तसादियं योगरेखा भविष्यति । पुन-ईझरेखोपरि अददजवर्गयोगतुल्यं झल-क्षेत्रं कार्यम् । तत्र मकक्षेत्रं द्वयोर्घातयो-

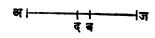


र्द्धिगुणतुस्यं भविष्यति । तसात् इकरेलाया लचिहे विमागद्वयं जातम् । इयं योगरेला भविष्यति । इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

## अथ द्विचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४२ ॥

अधिकरेखाया अप्येकिचिहे एव खण्डद्वयं भविष्यति नान्यत्र।

यबन्यत्र भवति तदा दिचिहं कल्पि-तम् । पूर्वोक्तप्रकारेणैवात्रानुपपत्तिर्ज्ञेया ॥



#### अथ त्रिचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४३ ॥

अक्कुसंज्ञार्हरेखावर्गमध्यरेखावर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तस्या अपि योज्यखण्डे एकचिह्ने भवतः।

यद्यन्यत्र भवतस्तदा दिचिह्नं किल्प-तम्। पूर्वोक्तप्रकारेणात्राप्यनुपपितिर्ज्ञेया ॥

#### अथ चतुश्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४४ ॥

द्वयोर्मध्यरेखयोर्वर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तस्या रेखाया अपि योज्यखण्डे एकचिह्ने एव भविष्यतो नान्यत्र।

#### अथ शेषक्षेत्राणां परिभाषा प्रथमं लिख्यते ॥

योगरेसाया महत्स्वण्डवर्गो छघुस्वण्डवर्गस्य बृहद्रेस्नामिलितान्यरे-स्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति पुनर्महत्स्वण्डं चेदिष्टसंज्ञाहरेस्नामिलितं भवति तदा सा प्रथमयोगरेस्नोच्यते ।

यदि तत्र लघुसण्डरेसावर्ग इष्टसंज्ञार्हरेसामिलितो भवति तदा सा द्वितीययोगरेसामिषा भवति ।

यदि खण्डद्वयस्य वर्गी केवलाङ्कसंज्ञाहीं भवतस्तदा तृतीययोगरेखा-संज्ञका भवति ।

यदि महत्त्वण्डवर्गो लघुत्वण्डवर्गस्य महत्त्वण्डिभन्नान्यरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति पुनर्महत्त्वण्डं चेद्रइसंज्ञाई स्यात्तदेयं चतुर्थी योगः संज्ञा रेखा भवति ।

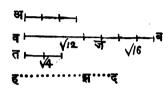
यदि च लघुसण्डमङ्कसंज्ञाई भवति तदा पश्चमी योगसंज्ञा रेखा भवति।

<sup>9.</sup> अङ्गसंज्ञाईमध्यरेसावर्गयोगतुस्यो J.

यदि द्वे खण्डे केवलवर्गसंज्ञाहें भवतस्तदा षष्टी योगसंज्ञा रेखा मबति ॥

अथ पश्चचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४५ ॥ तत्र प्रथमयोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।

तत्र प्रथमं अरेखा इष्टसंज्ञाही कल्प्या । पुनस्तन्मिकता बजरेखा कल्पिता । द्वौ वर्गराश्यक्कौ दहदझौ तथा कल्प्या यथाऽनयोरन्तरं झहं वर्गराशिर्न भवति। पुनर्बेजवर्गजवव-र्गयोर्निष्पत्तिर्दह्रझहनिष्पत्तितुल्या क-ल्पिता । तसात् बवं प्रथमयोगरेखा भविष्यति ।



#### अस्योपपत्तिः ।

बर्जं महत्खण्डमङ्कसंज्ञार्हमस्ति । जवखण्डमसाद्भिन्नमस्ति । केवलं मिलितवर्गो भवति । वर्गश्चाइसंज्ञाहीं ऽस्ति । बजवर्गजववर्गयोरन्तरं त्तवर्गतुल्यं भवतीति कल्पितम् । तसात् बजवर्गजवर्गयोरन्तरं तवर्ग-तुल्यं भवतीति कल्पितम् । यसात् बजवर्गतवर्गयोनिष्पत्तिदेहदश्-योर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् तं बजेन मिलितं भविष्यति । बजवर्गोऽपि जबवर्गतवर्गयोगत्रस्यो भविष्यति ।

अथ षद्चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४६ ॥ तत्र द्वितीययोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।

प्रथमिष्टसंज्ञाही अरेखा कल्पिता । तन्मिलिता जबरेखा कल्पि-ता । द्वावद्रो पूर्ववत् कल्प्यौ । जबज-ववर्गयोर्निष्पत्तिङ्गेहदहनिष्पत्तितुल्या क-ल्पिता । तसात् बवं द्वितीययोगरेखा मविष्यति ।

<del></del>		
व <del>-                                   </del>	जे	<b>√</b> 9 ब
" ∨3	<b>स</b>	<b>'द</b>

<sup>9.</sup> कल्पितौ D.

#### अस्मोपपत्तिः ।

जबं लघुलण्डमद्वसंज्ञाईमस्ति । वजस्य केवलवर्गोऽद्वसंज्ञाहींऽस्ति । वजमहत्लण्डस्य वर्गो जववर्गस्य वजिमिलतरेलावर्गस्य च योगेन तुल्योऽस्ति । क्षेत्रं च पूर्ववत् श्रेयम् ॥

# अथ सप्तचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४७ ॥ तत्र तृतीययोगरेखोत्पादनमिष्टम् ।

तत्र प्रथमिष्टसंज्ञाहरेखा अकल्पिता । द्वी वर्गराश्यद्वी झवझती कल्पितो । अनयोरन्तरं वतं यथा वर्गो न मवति तथा कार्यो । अन्याङ्को व पिक्क कल्पितः । अयं वर्गराश्चिनीस्ति । क

पुनरस्य निष्पत्तिवेतेन वर्गराश्योनिष्य-त्तिने भवेत्तथा कल्प्या। पुनर् अरे-

स्वावर्गनिष्पत्तिर्वदवर्गेण तथा कल्प्या यथा हस्य निष्पत्तिर्भतेनासि । बद्वर्गस्य निष्पतिर्देजवर्गेण तथास्ति यथा इतिनिष्पत्तिर्वतेनासिः । तसात् बजं तृतीययोगरेसा जाता ॥

#### अस्योपपत्तिः ।

बजसण्डे अरेसामिने सः। सण्डयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं सः। बद्दवर्गे द्जरेसावर्गबद्रेसामिछितकरेसावर्गयोगतुल्योऽस्ति। कुतः। बद्दवर्गः कवर्गश्च झत्रश्चविष्पत्तावस्ति॥

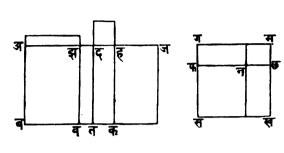
अथाष्टचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४८ ॥
तत्र चतुर्थयोगरेखोत्पादनमिष्टमस्ति ।
प्रथमयोगरेखोक्तप्रकारोऽत्रापि कार्यः । विशेषस्तु दशक्कृहौ द्वी वर्ग-

१. प्रथममङ्करं° J.

राशी तथा कल्प्यौ यथैतय	j
र्योगो वर्गराशिन भवति । तसा	. अ———— त् व ———————————————————————————————————
बजवर्गी जववर्गवरेसाभिन्नत	•
वर्गयोर्योगतुत्योऽस्ति । कुतः	2
•	
यतो वजवर्गतवर्गी दहदश्रयो	निष्पत्ती स्तः ॥
अथैकोनपञ्चाद	गत्तमं क्षेत्रम्॥ ४९॥
तत्र पञ्चमयोगरेखोत्पा	
तत्र द्वितीययोगरेखोक्त-	•
प्रकारोऽत्र कार्यः । परं च	a
दह्रमहराशी चतुर्थयोगरेखो-	
कवत्कार्यो ।	E # *
	तमं क्षेत्रम्॥ ५०॥
	•
तत्र षष्टयोगरेखोत्पादन	ामष्टम् ।
तत्र ब्रितीयरेखोक्तवस्य-	<b>a</b>
	व ज
चतुर्थरेस्रोक्तवत्कार्यो । इद-	<del>π</del>
मेवासाकमिष्टम् ॥	ह झ
अर्थेकपञ्चारा	त्तमं क्षेत्रम् ॥ ५१ ॥
तत्रैकक्षेत्रस्यैको भूजोऽ	प्रसं <b>ज्ञा</b> र्हो भवति द्वितीयभुजः
प्रथमयोगरेखा भवति तन्न	यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रफड-
तुस्यो भवति सा योगरेखा	. अञ्चलि ।
यथा बजसन्तम् । एक वर	इसंश्रार्हः अवशुकः। द्वितीयः प्रकान-
यागरेला अजभुनः। अजस्य	दिनहे हो विभागी कल्पनीयी यथा
अदं महत्त्वण्डं देजं न्यूनलण्ड	इं च कल्पितं भवेत्।
् पुनदेजं इचिहेऽदितं कार्य	म् । पुनर्देहवर्गी दजवर्गचतुर्थाशतुल्यः
=	

<sup>9.</sup> व्यं च न्यूनसण्डं J.

अद्स्यैकसण्डो-परि तथा कार्यो यथा शेषसण्ड-क्षेत्रं वर्गतुस्यम-वशिष्यते । त-सात् अद्रेसा-या अचिडोपरि



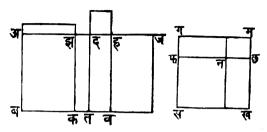
सण्डद्वयं भविष्यति । अझझदौ मिलितौ मविष्यतः । पुनर्झवदतह-करेसा अबरेसायाः समानान्तराः कार्याः । पुनर् अवसेत्रतुस्यं सन-क्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । वदक्षेत्रतुर्वं मनं समकोणसम-चतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । गखक्षेत्रं समकोणसमचतुर्भुजं संपूर्ण कार्यम्। सनसमकोणसमचतुर्भुजक्षेत्रस्य निष्पत्तिनगक्षेत्रेण सफफगनिष्पत्ति-रूपा फननछनिष्पत्तिरूपनगनमक्षेत्रनिष्पत्तितुत्यास्ति । तदा नगक्षेत्रं सनक्षेत्रनमक्षेत्रयोर्मध्ये एकनिष्यतौ पतिष्यति । तदा अववदयोर्म-ध्येऽप्येकनिष्यत्तौ पतिष्यति । तहक्षेत्रं द्वयोर्म<sup>ध्</sup>ये एकनिष्यत्तावासीत् । कुतः । अझदहनिष्यत्तिदेहझदनिष्यत्तितुल्यास्ति । तसात् नगतहौ समानी मविष्यतः । तसात् वर्जं गखतुत्यं भविष्यति । तसादस्य भुजो योगरेखा मविष्यति । कुतः । अ**झझदौ अदे**न मिलिताव**इ**-संज्ञाहीं स्तः । तस्मात् अववदी सननमतुत्यावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् सफफगवर्गावइसंज्ञाहीं भविष्यतः । पुनर् अववदौ अइ-संज्ञाहीं। तहहलमध्यक्षेत्राभ्यां भिन्नी स्तः। तसात् सननगी भिन्नी भविष्यतः । तैंसात् सफफगौ मिन्नौ भविष्यतः । तसात् बजतुत्यो बस्या रेखाया वर्गः सा सगरेखा योगरेखा भविष्यति ॥

अथ द्विपश्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५२ ॥ यस्य क्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञार्हो भवति द्वितीयो भुजो

१. °क्षेत्रस्य J. २. °मंध्येऽप्येकनि° J. ३. °मंध्येऽप्येकनि° J. ४. तस्मात् सर्गं योगरेसा भविष्यति । D., K.

## हितीययोगरेखा भवति यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा प्रथममध्ययोगरेखा भविष्यति ।

यथा बजक्षेत्रम् अबम् अइसंज्ञाहीं मुजः अजं द्विती-ययोगरेसामुजश्च कल्प्यः ।



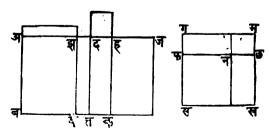
उपरितनप्रकारवत्कार्यम् । परं च अवक्षेत्रवद्क्षेत्रे मिथो मिछिते मध्यक्षेत्रे मविष्यतः । अतमध्यक्षेत्रेण च मिछिते मविष्यतः । दककजी अञ्चलं क्षेत्रे भविष्यतः । तस्तात् सनमनौ मिछितमध्यक्षेत्रे भविष्यतः । तस्तात् सनमनौ मिछितमध्यक्षेत्रे भविष्यतः । तस्तात् सफफगौ केव- कमध्यमिछितवर्गी अञ्चलं क्षाईनगक्षेत्रस्य भुजौ भविष्यतः । तस्तात् सगरेस्ता प्रथममध्ययोगरेसा भविष्यति ॥

# अथ त्रिपश्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५३ ॥

एकक्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञार्हरेखा द्वितीयभुजश्च तृतीय-योगरेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा द्वितीयमध्ययोगरेखा भविष्यति ।

्तेत्र क्षेत्रं द्वौ भुजौ चोपरितनोक्तवत्कल्प्यं तदुक्तवत्। कार्यं च।

परं च अववद-क्षेत्रे मध्यमिलिते मविष्यतः । द-ककजी च मध्यी मविष्यतः । अतं च तजाद्विसं भ-



<sup>1.</sup> मिषण्यति J. २. तत् क्षेत्रं J.

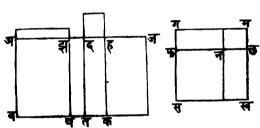
विष्यति । तसात् सवनमसेत्रे मध्यमिकिते मविष्यतः । नगमख-क्षेत्रे च मध्यमिने भविष्यतः । तसात् सफफगे मध्यकेवस्रवर्गमि-स्रिते भुजौ नगमध्यकेत्रस्य भविष्यतः । तसात् सगं द्वितीयमध्ययो-गरेखा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ चतुःपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५४ ॥

एकक्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहीं द्वितीयो भुजर्श्वेतुर्थी यो-गरेखा । अस्य वर्गतुल्यो भुजोऽधिकरेखास्ति ।

अस्य विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ह्रेयम् । विशेषस्तु असम्बद्धी

भिनो भविष्यतः । अतःसेत्रं सनब-मयोगतुत्यमद्गसं-ज्ञाई भविष्यति । तज्ञक्षेत्ररूपो न-गनस्वयोगो मध्यो



भविष्यति । तसात् सफफगौ भिभवगौँ भविष्यतः । द्वयोर्वर्गयो-गोऽद्वसंज्ञाहौँ भविष्यति । द्विगुणघातो मध्यो भविष्यति । तसात् सगम् अधिकरेसा भविष्यति ॥

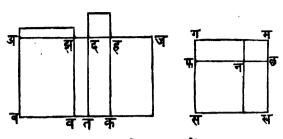
### अथ पञ्चपश्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५५ ॥

क्षेत्रस्यैकमुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति द्वितीको पश्चमयोग-रेखा भवति । ऍतत्तुल्यो यस्या रेखाया वर्गः सोऽङ्कसंज्ञाई-रेखावर्गमध्यरेखावर्गयोगतुल्यो भवति ।

अस्यापि प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् छेर्यम् । परं चात्र अझझदौ

१. J. drops मुजः. २. A. has चतुर्वयोगरेखा. ३. सविष्यति A., J. ४. एतस्क्षेत्रतुस्यो J. ५. विचारः J. ६. बोध्यम्. J.

भिन्नी भवतः । अतस्त्रेत्ररूपः सननमयोगो मध्यो भवति । तजसेत्ररूपो नगनस्तयो-



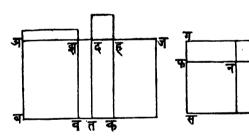
गोऽइसंज्ञाहीं भवति । तसात् सफफगौ भिन्नवर्गी भविष्यतः । अनयोर्योगो मध्यो भैवति । द्विगुणघातोऽइसंज्ञाहीं भविष्यति । तसात् सगवर्गोऽइसंज्ञाईमध्ययोगतुल्यो भविष्यति ॥

#### अथ पर्पद्याशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५६ ॥

क्षेत्रस्यैकमुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयश्च पष्टी योगरेखा भवति । अस्य तुल्यो वर्गी मध्यद्वयवर्गयोगतुल्यो भवति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । अपरम् अझझदौ भिन्नौ भ-

विष्यतः । अत-क्षेत्ररूपसननमी मध्यी भवतः । तजक्षेत्ररूपनग-नस्ती मध्यी भ-वतः । पूर्वसात्



मध्याद्वित्रों भवतः । तसात् सफफगौ भिनवर्गी भवतः । अनयो-र्वर्गयोगो मध्यो भविष्यति । द्विगुणघातो मध्यो भविष्यति । प्रथमा-द्वित्तश्च । तसात् सगवर्गो मध्यद्वययोगतुत्यो भविष्यति । इँदमिष्टम् ॥

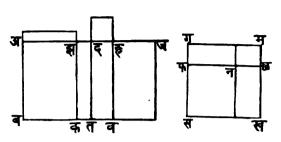
अथ सप्तपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५७ ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां योगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं भवति । तदा द्वितीयो भुजः प्रथमयोगरेखा भविष्यति ।

<sup>9.</sup> भविष्यति J. २. भिन्नी वर्गी J. ३. इदमेवेष्टम् J. भा॰ १३

अबयोगरेसाया जिचेहे द्वे सण्डे कल्पनीये । पुनर्दहभद्रसंज्ञाई-

रेखायां अबन-गंतुल्यं हझक्षेत्रं कल्प्यम्।तसात् दहरेखाया द्वि-तीयो भुजः प्रथ-मयोगरेखा भवि-



ष्यति । अजवगां हवक्षेत्रतुत्यो जबवर्गस्तकक्षेत्रतुत्यः केल्प्यः । शेषं लक्षम् अजजबिद्वगुणघाततुत्यमविश्यते । कश्चं मिचहोपि अर्द्धं कार्यम् । पुनर्दहसमानान्तरा मनरेखा कार्या । तत्र अजजववर्गयोग्गोऽइसंज्ञाहींऽस्ति । तसात् हकक्षेत्रमइसंज्ञाही भैविष्यति । दकम् अइसंज्ञाहींऽस्ति । तसात् हकक्षेत्रमइसंज्ञाही भैविष्यति । अजजवघातो मध्योऽस्ति । तसात् लश्चं मध्यो भविष्यति । कश्चं केवलवर्गाकसंज्ञाहीं भविष्यति । तसात् लश्चं मध्यो भविष्यति । अजजबवर्गयोगः अजजबिद्धन् गुणघातादिषकोऽस्ति । तसात् दकं कश्चादिषकं भविष्यति । अजजबवर्गयोर्मध्यनिष्यति । अजजबवर्गयोर्मध्यनिष्यति । कनं दत्तकयोर्मध्यनिष्यति । कनं दत्तकयोर्मध्यनिष्यति । कनं दत्तकयोर्मध्यनिष्यति । कनं दत्तकयोर्मध्यनिष्यति । कमं दववकयोर्मध्यनिष्यति ।

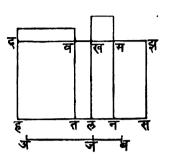
पुनर्दवकमनिष्पत्तिः कमवकनिष्पत्तितुल्यास्ति । पुनः कझवर्गच-तुर्थोश्चरूपः कमवर्गो दके कार्यः । तदा दकं विचेहे मिलितविभागं भवति । तसात् दकवर्गः कझवर्गस्य मिलितान्यरेसावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । इदिमष्टम् ।

अथाष्ट्रपञ्चाशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ५८ ॥ अङ्कसंज्ञाहरेखायां प्रथममध्ययोगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तदा द्वितीयो भुजो द्वितीययोगरेखा भवति ।

૧. कાર્ય: A, ર. અર્ધિતં A, ર. અસ્તિ A, ૪. સંજ્ઞાઈ મવતિ J.

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत् ज्ञेयः । अत्र हकं मध्यो भविष्यति । अज-

जवनर्गयोगो ह्यतकरूपो मध्यमिलि-तो भवतः । कुतः । अजजवयोरङ्ग-संज्ञाईत्वात् । तसात् दकक्झो के-वलवर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । कझम् अद्वसंज्ञाईमस्ति । तसाद् दकवर्गः कझवर्गमिलितरेसावर्गयोयोगतुस्यो भ-विष्यति । कुतः । दववकयोर्मिलित-



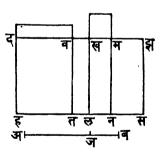
त्वात् । तसाह्यं द्वितीययोगरेखा भविष्यति ॥

# अथैकोनपष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ५९ ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां द्वितीयमध्ययोगरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्ये द्वितीयभुजस्तृतीययोगरेखा भविष्यति ।

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत्। परं हकम् अत्र मध्यो मविष्यति। यतः आज-

जबवर्गी मध्यमिलिती स्तः । लझं मध्यो हकाद्विलो भविष्यति । अ-जजबयोर्भिन्नत्वात् । तसात् दककझे वर्गावद्वसंज्ञाहीं भैविष्यतः । मिश्रो मिन्नो दहादपि मिन्नो भविष्यतः । दकवर्गः कझमिलितरेसावर्गयोर्थाग-तुल्यो मविष्यति । दववकयोर्मिलित-



त्वात् । तस्मात् **दझं** तृतीया योगरेस्ना भविष्यति ॥

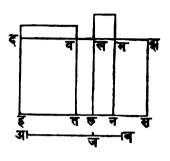
अथ षष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६० ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायामधिकरेखाया वर्गतुल्यं क्षेत्रं यद् भ-वति ततुत्पन्नो ब्रितीयभुजश्चतुर्थी योगरेखा भवति।

<sup>9.</sup> J. omits भविष्यत:.

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत्। परमत्र द्ववकी भिन्नी भविष्यतः।

अजजबवर्गयोभिन्नत्वात् । इकम् अञ्चलं हाईमस्ति । कुतः । अजज-वयोर्वर्गयोगस्याञ्चसं ज्ञाईत्वात् । स्रझं मध्यमस्ति । तसात् दकक्रमयोर्वर्गा-वञ्चसं ज्ञाईं मिवष्यतः । दकम् अञ्चलं-ज्ञाईमस्ति । अस्य वर्गः क्रझवर्गदक-भिन्नरेसावर्गयोर्योगतुस्योऽस्ति । दव-



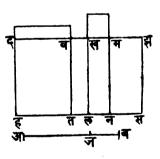
वक्रयोर्भिन्नत्वात् । तस्माइझं चतुर्थी योगरेखा मविष्यति ॥

# अथैकषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६१ ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायामङ्कसंज्ञाहरेखामध्ययोगवर्गतुल्यं क्षेत्रं यदा भवति तदा द्वितीयो भुजः पश्चमी योगरेखा भविष्यति।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परमत्र दखवकी मिन्नी मविष्यतः।

अजजबवर्गयोभिन्नत्वात्। हकं मध्यो भविष्यति। अजजबवर्गयोभिध्यत्वात्। छन्नम् अङ्कसंज्ञाहे भविष्यति। तसात् दककञ्चयोर्वर्गावङ्कसंज्ञाहीं भविष्यतः। कञ्चम् अङ्कसंज्ञाहेमस्ति । दकवर्गः कञ्चवर्गभिन्नरेसावर्गयोगतुस्योऽस्ति । दकवकयोर्भिन्नत्वात्॥ तसात् द्शं पञ्चमी योगरेसा भविष्यति॥



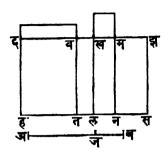
अथ द्विषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६२ ॥ अङ्कसंज्ञाईरेखायां द्वयोर्मध्ययोर्योगवर्गतुल्यं क्षेत्रं चेत् तदा द्वितीयोत्पन्नभुजः षष्टी योगरेखा भविष्यति ।

१ अङ्गसंज्ञाईरेखामध्ययोगवर्गतुल्यं क्षेत्रमङ्गसंज्ञाईरेखायां यदा भवति र्रो.

limby, **of** Califo**ral**a

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्वोक्तवद्वोध्यम् । परमत्र द्ववकौ भिन्नो भवि-

ष्यतः । हकं मध्यं भिविष्यति । स्रक्षं मध्यं भवति । हकात् भिन्नं च । तसात् दककञ्चवगीवद्वसंज्ञाहीं भवि-ष्यतः । मिथो भिन्नो भविष्यतः । दहादपि भिन्नो भविष्यतः । दकवर्गः कञ्चवगीभन्नरेखावगयोगतुल्यो भवि-ष्यति । तसात् द्रञ्गं षष्टी योगरेखा भविष्यति । इदिमिष्टम् ॥



#### अथ त्रिषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६३ ॥

योगरेखया या रेखा मिलितांस्ति सापि तादृश्येव योग-रेखा भवति ।

यथा अवयोगरेखाया जिनिहे योज्यविमागद्वयं कल्पितम् । तिन्मि-लिता दहरेखा कल्पिता। पुनर् अबद-इनिष्पत्तितुल्या अजद्झनिष्पत्तिः के-ल्प्या। तदा जबझहो शेषौ तस्यामेव

निष्पचौ स्तः । प्रत्येकं अजजबौ दश्रश्रहाभ्यां मिलिती स्तः । तथैवाङ्कसंज्ञाहीं स्तः । अथवाऽनयोर्वगीं मिलिताङ्कसंज्ञाहीं स्तः । अजजबनिष्पत्तिर्श्रश्रहनिष्पत्तितुल्यास्ति । अजजबौ मिन्नौ स्तः तसात्
दश्रश्रहावि मिन्नौ मविष्यतः । यदि अजवगीं जबवर्गअजमिलितरेसावर्गयोगतुल्यो भवत्यथवा जबवर्गअजमिन्नरेसावर्गयोगतुल्यो भवति
तदा दश्रवर्गो श्रहवर्गदश्रमिलितरेसावर्गयोगतुल्यो वा श्रहवर्गदश्रमिन्नरेसावर्गयोगतुल्यो भविष्यति । तसात् अबं यादशी योगरेसा भवति
दह्मिप तथैव भविष्यति ॥

९ मिलिता भवति J. २ कल्पिता A. J.

NO MINU AMMONIAO

## अथ चतुःषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६४ ॥ मध्ययोगरेखाया या रेखा मिलिता भवति सा तादृश्येव मध्ययोगरेखा भवति ।

यथा अवं प्रथममध्ययोगरेखा वा द्वितीयमध्ययोगरेखास्ति । अस्या जिन्हे द्वौ विमागौ कल्प्यो । तन्मि-

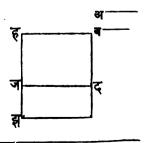
िलता दहरेखा कल्पिता । पुनर् अबदहनिष्पत्तितुत्या अजदझनि-

ष्पत्तिः कल्प्या । जबझहिनिष्पत्तिः कल्प्या । प्रत्येकं अजजवे दझझहाम्यां मिलिते भविष्यतः । तथैव मध्ये भविष्यतः । अजजवो भिन्नो स्तः । तसात् दझझहावपि भिन्नो भविष्यतः । अजवर्गअजजबघातयोर्निष्पत्तिः अजजबिन-ष्पत्तिरूपा इयं दझवर्गदझझहघातनिष्पत्तितुल्यदझझहिनष्पति-तुल्यास्ति । पुनर् अजवर्गदझवर्गयोर्निष्पत्तिः अजजबघातदझ-झहघातनिष्पत्तितुल्यास्ति । द्वौ वर्गी मिलितो स्तः । तस्मात् घाता-वपि मिलितो भविष्यतः । द्वौ वर्गावद्वसंज्ञाहीं वा मध्यो भवतः । तदा घातावपि अद्वसंज्ञाहीं वा मध्यो भवतः । अवयोर्मध्ये यादशी मध्यरेसा भवति दहमपि सैवं भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्वोक्तवद्वोध्यम्॥

#### प्रकारान्तरम् ॥

अरेखा प्रथममध्ययोगरेखा वा द्वितीयमध्यरेखा कल्पिता । तन्मि-

लिता बरेसा कल्पिता। जदरेसा अइसं-ह्याई। कल्पिता। अस्यां दहसेत्रम् अव-गीतुल्यं कार्यम्। देशसेत्रं बवर्गतुल्यं च कार्यम्। तसात् जहं द्वितीययोगरेसा वा तृतीययोगरेसा भविष्यति। जझम् एतन्मिलतं भविष्यति। तसात् जझमपि



९ तथैव J. २ ब्रवर्गतुस्यं द्याक्षेत्रं कार्यम् J.

तादृश्येव भविष्यति । दृश्चतुल्यो यस्य वर्गः स प्रथममध्ययोगो वा द्वितीयमध्ययोगो वा भविष्यति । यथा अप् ॥

## अथ पञ्चषष्टितमं क्षेत्रम् ॥ ६५ ॥ अधिकरेखातो या मिलिता रेखा भवति साप्यधिकरेखा ।

यथा अब अधिकरेखाया जिचहे विभागद्वयं कृतम् । दहं तस्या मिलिता कल्पिता । पुनर्दहरेलायां अचिहे तस्यामेव निष्पत्तौ विभागद्वयं कार्यम् । तत्र अजजबनिष्पत्तिर्दश्न-

ब्रह्मनिष्पत्तित्तत्या भविष्यति । अज-जबयोर्वर्गी भिन्नी स्तः। तसात् दश्चश्रहयोरिप वर्गी भिन्नी भविष्यतः। अजजबयोर्वर्गयोर्निष्पत्तिर्देशशहवर्गनिष्पत्तित्वस्यास्ति । वर्गयोगनिष्यत्तिर्दश्रस्रहवर्गयोगनिष्यत्तिरस्ति । तस्मात् योगस्य योगेन तथास्ति यथैकस्य द्वितीयेन । एको द्वितीयेन मिलितोऽस्ति । योगो यो-गेन मिलितो भविष्यति । अजजबवर्गयोगोऽङ्कसंज्ञाहींऽस्ति । तसात दश्रशहवर्गयोगोऽप्यद्वसंज्ञाहीं भविष्यति । पुनरपि अजजबद्विगुणघातो मध्योऽस्ति । तैसात् दञ्जञ्जहघातो द्विगुणस्तेन मिलितोऽपि मध्यो भविष्यति ॥

#### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

अधिका रेखा आ: कल्पिता। बं मिलितरेखा कल्पिता। अनयोर्व-गीं जैदोपरि कार्यों। तसात् अवगीत् द्वितीयो जहमुजोत्पन्नो भविष्यति । इयं चतुर्थी योगरे-स्वास्ति । जझं च तन्मिलितं भविष्यति । इदमपि तथैव भविष्यति । तसात् या रेखा दश्ववर्गतुल्या भवति साऽधिका भविष्यति ॥

९ तसाद द्विगुणो दशसहाधातस्तेन मिलितोऽपि &c. J. २ अम् अधिका रेसा कल्पिता J. ३ अङ्कसंश्राईजदोपरि &c. J.

#### अथ ६६ क्षेत्रम् ॥

अक्रुसंज्ञार्हमध्ययोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तन्मिलितरेखाया अपि वर्गोऽक्कुसंज्ञार्द्दमध्ययोगतुल्यो भवति । तस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् अ ज व नोध्यम् ॥ द क्कि

#### अथ ६७ क्षेत्रम् ॥

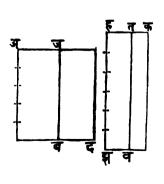
द्वयोर्मध्ययोर्थोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गोऽस्ति तस्या मिलितरेखाया वर्गोऽपि मध्ययोगतुल्यो भवति ।

#### अथ ६८ क्षेत्रम्॥

यस्या रेखाया वर्गोऽङ्कसंज्ञाईक्षेत्रमध्यक्षेत्रयोगसमो भ-वति सा रेखा योगरेखा वा प्रथममध्ययोगरेखाथबाऽधि-करेखा भविष्यति वा अस्या वर्गोऽङ्कसंज्ञाईमध्ययोगतुल्यो भविष्यति।

यथा अवम् अइसंज्ञाहिक्षेत्रं जदं मध्यक्षेत्रं कल्पितम् । पुनईज्ञम् अङ्कसंज्ञाहिरेला कल्पिता । अस्यां रेलायां हवक्षेत्रं वक्कक्षेत्रं तत्क्षेत्रद्वय-

तुल्यंकार्यम् । तसादुत्पन्नो इत्तभुजो-ऽक्कसंज्ञाहीं भविष्यति । तकं केवलव-गोंऽक्कसंज्ञाहों भविष्यति । यदि इत-रेला तकादिषका भवति पुनईत-वर्गः तकवर्गहतमिलितरेलावर्गयोग-तुल्यः स्यात्तदा हकरेला प्रथमयोग-रेला भविष्यति । यस्या रेलाया वर्गो झकक्षेत्रतुल्योऽस्ति सा योगरेला



<sup>9</sup> भविष्यति A. २ पूर्ववत् J. ३ प्रवमसंबोगरेका J.

भविष्यति । यदि इतवर्गः तकवर्गइतिभन्नरेस्नावर्गयोगर्तुस्यः स्यात् तदा इकरेसा चतुर्थयोगरेसा भविष्यति । यस्या वर्गो झैकक्षेत्रतुस्यः स्यात् साधिकरेसा भविष्यति ।

यैदि तकरेला इतरेलाया अधिका स्यात् पुनस्तकवर्गो इतविर्ग-तकमिछितरेलावर्गयोगर्जुंच्यः स्यात् तदा इकं द्वितीययोगरेला म-विष्यति । यस्या रेलाया वर्गो झकक्षेत्रज्ञल्यः स्यात् सा प्रथममध्ययोग-रेला भविष्यति । पुनर्यदि तकवर्गो इतवर्गतकभिन्नरेलीवर्गयोगर्समः स्यात् तदा इकरेला पद्ममी योगरेला भविष्यति । यस्या वर्गो झैक-क्षेत्रसमः स्यात् तस्या वर्गोऽइसंज्ञाईमध्ययोगसमः स्यात् । इद-मेवेष्टम् ॥

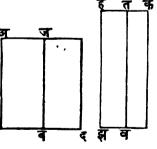
### अथ ६९ क्षेत्रम्।।

यस्या रेखाया वर्गी मिथो भिन्नयोर्मध्यक्षेत्रयोर्योगेन तुल्यो भवति तदा सा रेखा द्वितीयमध्ययोगरेखा भविष्यत्यथवा तस्या वर्गी मध्यद्वययोगतुल्यो भविष्यति ।

द्वे मध्यक्षेत्रे अवजदे कल्प्ये । झहम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता । अस्या उपरि कल्पितक्षेत्रद्वयतुल्यं हव-क्षेत्रं वक्षेत्रं च कार्यम् । तसाद-

सत्र वकसत्र च कायम् । तसादुत्यनी हततक भुजी मिथो मिन्नी मविष्यतः । हझयोरिप मिन्नी मविष्यतः ।
अनयोर्वर्गाव इसंज्ञाही मविष्यतः ।
अनयोरिषक रेस्तावर्गी छष्ठरेस्तावर्गस्याधिकरेस्तामिलितरेस्ताया वा मिन्नरे-

स्राया वर्गस्य योगेन तुल्यो भविष्यति ।



१ समः J. २ एतत्क्षेत्र J. ३ पुनर्यदि J. ४ °रेखातोऽधिका मवति तकव-गंश्व J. ५ हतरेखातकरेखामिलितरेखा ° J. ६ °तुल्यो भवति सा द्वितीय ° J. ७ J. omits रेखायाः. ८ एतत्क्षेत्र ° J. ९ भवति J. १० J. omits पुनर्. ११ J. Omits रेखा. १२ °तुल्यो भवति तदा J. १३ एतत्क्षेत्र ° J. भा० १४

हकं तृतीययोगरेखा वा षष्ठी योगरेखा भविष्यति । तद्रेखावर्ग एतत्-क्षेत्रतुल्य उपरितनोक्तरेखयोरन्यतराया वर्गो भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्व-बद्बोध्यम् । इदमेवेष्टम् ॥

### अथ ७० क्षेत्रम्॥

ये द्वे रेखे भिन्ने भवतस्तयोः केवलवर्गावङ्कसंज्ञाहीं भवत-स्तत्रैकतुल्यं यदि द्वितीयात्पृथक्रियते तदा शेषं करणीरूपं भवति । इयमेवान्तररेखोच्यते ।

यथा अबम् अजात् पृथक् कृतम्। रोषं बर्जं करणीरूपमवशिष्टम् ।
कुतः । एते भिन्ने स्तः । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं तयोर्योगः अबअजघातद्विगुणमध्यक्षेत्राद्विनोऽस्ति । तसात् स एव वर्गः रोषात्
वर्गाद्पि भिन्नो भविष्यति । तसात् बजवर्गः करणीरूपो भविष्यति ।
एवं बजमपि करणीरूपं भविष्यति ॥

#### अथ ७१ क्षेत्रम्॥

ययोर्मध्यरेखयोः केवलवर्गौ मिलितौ भवतोऽङ्कसंज्ञाही क्षेत्रभुजावनयोरेखयोरन्तरं करणीरूपं भविष्यति । इदं प्रथ-ममध्यान्तराभिधानम् ॥

यथा अबम् अजात् पृथक् कृतम् तदा शेषं बजं करणीरूपमव-शिष्टम् । कृतः । अनयोर्भिन्नत्वात् । अन-योद्विगुणघातोऽइसंज्ञार्हरूपोऽनयोर्वर्गयोगाद् ज्या विश्वराद् भिन्नो भविष्यति । तसात् द्विगु-

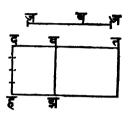
णघातः रोषबजनर्गादिपि भिन्नो भविष्यति । तसात् बजं करणीरूपं भविष्यति ॥

अथ ७२ क्षेत्रम् ॥ केवलवर्गमिलिते द्वे मध्यरेखे मध्यक्षेत्रस्य भुजौ मवतस्त-

१ अबअजायोभिन्नत्वात् A. J.

दाऽनयोरन्तरं करणीरूपं भविष्यति । अस्याभिधानं द्विती-यमध्यान्तररेखेति ।

यथा अबम् अजात् पृथक् कृतं शेषं बर्जं करणीरूपं स्यात्। पुनर्द-इम् अइसंज्ञाहरेखा कल्पिता । अस्या उपरि अबअजवर्गयोगतुल्यं इतक्षेत्रं कार्यम् । अ-बअजघातद्विगुणतुल्यं हवक्षेत्रं कार्यम् । शेषं **झतक्षेत्रं बज**वर्गतुल्यमवशिष्यते । कुतः। अबअजयोर्भिन्नत्वात् । हतहवी मध्यक्षेत्रे



भिने भविष्यतः । उत्पन्नौ दतदवभुजौ मिथो भिन्नो भविष्यतः । वर्गावइसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् वतम् अन्तररेखा भविष्यति । इसतं करणीरूपमस्ति । तसात् बजमपि करणीरूपं भविष्यति ॥

#### अथ ७३ क्षेत्रम्॥

तैयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति ययोभिन्नरेखयोर्वगीं भिन्नौ स्तो वर्गयोगोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्विगुणघातश्च मध्य-क्षेत्रतुल्यो भवति । इयं न्यूनरेखोच्यते ।

यथा अबम् अजात्प्रथक् कृतम्। शेषं बजं करणीरूपमवशिष्टम्। अस्य विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् बोध्यम् ॥

#### अथ ७४ क्षेत्रम् ॥

द्वेयो रेखयोर्वगौं भिन्नी स्तो वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भवति द्विगुणघातश्चाङ्कसंज्ञार्ही भवति । अनयोरन्तरं करणी-रूपं भवति । इयमङ्कसंज्ञाईयोगमध्यरेखोच्यते ।

विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

<sup>9</sup> इयं द्वितीयमध्यान्तररेखोच्यते A., J. २ J. Omits कृत:, 3 ययो रेखयोर्वर्गे भिन्नीस्तरतयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति A., J. v. A. and J. have वयो: in the beginning and तयो: for अनयो:.

#### अथ ७५ क्षेत्रम् ॥

द्वयोभिन्नवर्गरेखयोर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतुल्यो भवति द्विगु-णघातः प्रथममध्यक्षेत्राद्धिन्नं मध्यक्षेत्रं भवति । अनयो रेखयोरन्तरं करणीरूपं भवति । इयं मध्ययोगजमध्यरेखो-च्यते ।

विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । ईदमेवेष्टम् ॥

### अथ ७६ क्षेत्रम् ॥

अन्तररेखायामेकैव रेखा लगति या तस्याः पूर्वस्वरूपं करोति ।

यद्येवं न भवति तदा अबरेखायां बजरेखाबदरेखे लग्ने । ताम्यां तस्याः पूर्वस्वरूपमेव कृतिमिति कल्पितस्याः पूर्वस्वरूपमेव कृतिमिति कल्पितम् । अजजबयोर्वगीर अजजबघातद्विगुणअबर्वगयोगेन तुल्यो स्तः । अददबर्वगयोगोऽपि अददबघातद्विगुणअबर्वगयोगेन तुल्योऽस्ति । अजजबवर्गअददबर्वगयोरन्तरं च द्वयोरइसंज्ञाईयोरन्तररूपम् । अजजबघातद्विगुणअददबघातद्विगुणयोरन्तरं द्वयोर्मध्ययोरन्तररूपं द्वयं समानं भविष्यति ।
इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

### अथ ७७ क्षेत्रम् ॥

प्रथममध्यान्तररेखयैकैव रेखा मिलति याँ तस्याः प्रथ-मस्वरूपं करोति ।

यद्येवं न भवति तदा अबरेखायां बजबदरेखे संलग्ने । अबस्य प्रथमखरूपं कृतम् । तदा अजजबवर्गयोः अददबवर्गयोश्चान्तरं द्वयोर्मध्ययोरन्तररू-

पम् अजजबघातद्विगुणः अदद्बघातद्विगुणः अनयोरन्तरस्य द्वयो-रक्कसंज्ञाईयोरन्तररूपस्य समानमस्तीत्यशुद्धम् । इष्टं समीचीनम् । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

### अथ ७८ क्षेत्रम् ॥

द्वितीयमध्यान्तररेखामेकैव रेखा मिलिष्यति याऽस्याः पूर्वस्वरूपं करिष्यति।

यद्येवं न भवति तदा कल्पितम् अबरेखया बजबदरेखे मिलिते

अस्याः पूर्वस्वरूपं कुरुतः । पुनईझरेसा अङ्कसं-ज्ञार्हा कल्पिता । अस्यां अजजबयोर्वर्गयोगो झकक्षेत्रं कार्यम् । अबवर्गतुत्यं झवक्षेत्रं च कार्यम् । शेषं तकक्षेत्रम् अजजबघातद्विगुण-तुत्यमवशिष्यते । द्वयोर्वर्गयोगो मध्यक्षेत्रतु-ल्योऽस्ति । द्विगुणघातश्च प्रथममध्यक्षेत्राद्भित्रः

मध्यक्षेत्रतुल्योऽस्ति । तदा हककवरेले मिथो

मिने मविष्यतः । अनयोर्वर्गावद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् हवम् अन्तररेखा भविष्यति ।

पुनरिप ह्झरेखोपरि अदद्ववर्गयोगझळक्षेत्रं कार्यम् । तसात् तलक्षेत्रम् अददबघातद्विगुणतुल्यं भविष्यति । हलरेखालवरेखावर्गी केवलमङ्कसंज्ञाहीं भविष्यतः । इवमन्तररेखास्ति । तसात् हवरेखया वक-रेस्तावलरेखे संलग्ने । आभ्यामन्तररेखा प्रथमरूपा कृतेत्यशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

#### अथ ७९ क्षेत्रम् ॥

न्यूनरेखायामप्येकैव रेखा लगति या तस्याः पूर्वस्वरूपं करोति।

यचेवं न स्यात् अबरेखायां बजबदरेखे संलग्ने।पूर्वस्वरूपं कृतम्। विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

#### अथ ८० क्षेत्रम्॥

अङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखायामेकैव रेखा लगति याऽस्याः पूर्वस्वरूपं करोति ।

यधेवं न स्यात् अबरेखायां बजरेखाबदरेखे संख्ये । आभ्यां पूर्वस्वरूपं च कृतम् । अस्य विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ज्ञेयम् ॥

### अथ ८१ क्षेत्रम्।।

मध्ययोगमध्यरेखायामप्येकैव रेखा लगति याऽस्याः पूर्व-स्वरूपं करोति ।

अवरेखायां बजबदरेखे संलग्ने पूर्वस्वरूपं कुरुतः । विचारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

#### ॥ अथ शेषक्षेत्राणां परिभाषोच्यते ॥

यद्यन्तररेखयैका रेखा मिलति पूर्वेखरूपं च करोति तत्र संपूर्णरे-खावर्गो ल्यारेखावर्गसंपूर्णरेखामिलितान्यरेखावर्गयोगेन तुल्यो भवति । संपूर्णरेखाइसंज्ञाहरेखा चेद्भवति तदान्तररेखा प्रथमान्तररेखा भवति ।

यैदि लग्गरेलाइसंज्ञाही भवति तदेयं द्वितीयान्तररेला भविष्यति । यद्यनयोः काप्यइसंज्ञाही न भवति तदेयं तृतीयान्तररेला भविष्यति ।

पुनः संपूर्णरेखावर्गो लग्नरेखावर्गसंपूर्णरेखाभिन्नान्यरेखावर्गयोगेन तुस्यो भवति ।

संपूर्णरेखा चाइसंज्ञाही भवति तदेयं चतुर्थ्यन्तररेखा स्यात् । यदि लग्गरेखाइसंज्ञाही भवति तदा पश्चम्यन्तररेखा भवति । यदि काप्यद्वसंज्ञाही न भवति तदा षष्ठचन्तररेखा भवति । ॥ इति परिभाषा ॥

<sup>9.</sup> पूर्वोक्तलक्षणाकान्ता यदि लप्तरेखा &c. J., A.

#### अथ ८२ क्षेत्रम्॥

#### प्रथमान्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

प्रथमिष्टरेखाइसंज्ञाही औ: कल्पिता । तन्मिलिता बजरेखा कल्पिता । दहद्भी वर्गराव्यक्की तथा कल्प्यो यथाऽनयोरन्तरं झहं वर्गा न भवित । अन्मान्तरने पुनर्बजवर्गजववर्गयोनिष्पितिर्दह्महिनिष्पत्ति- ता कि विवास कल्प्या । तसात् बवं प्रथमान्तर- हा विवास विष्यति । कुतः । बजरेखाङ्कसं- ज्ञाहीस्ति । जवरेखा बजरेखा केवलवर्गमिलितास्ति । अस्या वर्गीऽइ-संज्ञाहीऽस्ति । इयं जवरेखा बजरेखातो भिन्नास्ति । पुनर्बजवर्गस्य जववर्गणान्तरं सवर्गः कल्पितः । तसात् बजवर्गस्य तवर्गेण निष्पत्ति- दहद्मवर्गराव्योनिष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् तं बजेन मिलितं भविष्यति । बजवर्गो जववर्गतवर्गयोगतुल्यो भविष्यति ॥

#### अथ ८३ क्षेत्रम् ॥

#### तत्र द्वितीयान्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

तत्राइसंज्ञाहरेखा अं कैल्प्या । जवरखैतिन्मिलता कल्पिता । द्वावद्वी पूर्ववत् कल्प्यो । पुनर्जववर्गबजवर्गयोर्निष्पत्तिक्शहदहनिष्पत्तितुल्या क- अन्ति । स्वावद्वी विष्पत्ति । विष्यति । विष्यति । विष्यति । जवं केवलकुतः । जबस्याइसंज्ञाहित्वात् । जवं केवलवर्गाद्वसंज्ञाहरेखास्ति । जबवर्गो जववर्गतवर्गयोगतुल्योऽस्ति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ ८४ क्षेत्रम् ॥ तत्र तृतीयान्तररेखोत्पादनमिष्टम् ।

<sup>9 °</sup>मिष्टमस्ति J. २ अं A., J. ३ बतो J. ४ डिल्पता A.

प्रथमाइसंज्ञाहरेसा अं कल्पिता । द्वी वर्गराश्यक्की झवझती कल्पिती यथा तवम् अन्तरं वर्गा न भवति ।
हम् अन्योऽह्रोऽवर्गराशिस्तथा कल्प्यो यथा वा विकास क्रिया विकास क्रिया वा विकास क्रिया वा विकास क्रिया न भवति ।
पुनर् अवर्गजववर्गयोर्निष्पत्तिहृं झवयोर्नि- हा विकास क्रिया । पुनर्वजवर्गन् व्यानिष्पत्तिङ्गवत्वनिष्पत्तितुल्या कल्प्या । तसात् वदं तृतीया-न्तररेसा भविष्यति । कुतः । बजजदी केवलवर्गाह्मसंज्ञाहीं स्तः आद्विजी सः । बजवर्गो जद्वर्गवजमिलितकवर्गयोगतुल्योऽस्ति ।
यतोऽनयोर्वर्गी झवझतनिष्पत्ती सः ।

#### अथ ८५ क्षेत्रम् ॥

## तत्र चतुर्थ्यन्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

अत्रोपरितनप्रकारवत् । परं द्वौ वर्गराशी दश्रसहौ तथा कल्प्यौ यथेतयोर्थोगो दहं वर्गराशिर्न भवति । बजवर्गो जववर्गबजभिन्नतवर्गतुल्यो अस्मामामामा भविष्यति । कुतः । बजवर्गतवर्गयोर्नि- विज्ञानिष्पत्तितुल्यास्ति । क्षेत्रं द—— स— ह च पूर्ववत् ॥

### अथ ८६ क्षेत्रम्॥

### तत्र पश्चम्यन्तररेखोत्पादनमिष्टम्।

1ज

९ J. inserts यतः. १ J. omits न. ३ A. and J. have दितीयान्तररेखोत्पादनप्रकारः.

## अथ ८७ क्षेत्रम् ॥ तत्र पष्टचन्तररेखोत्पादनमिष्टम् ॥

प्रैकारः पूर्ववत् । परं दहझही वर्गरा-स्यद्भौ तथा कल्प्यौ यथैतयोर्योगो वर्ग-राशिर्न भवति । क्षेत्रं च पूर्ववद्बोध्यम् ॥

अ ⊢	<del>4-4-1-1</del> -4	
₹	<del>-</del>	— ज
त⊢—	<del></del> 1	
द⋯ः	•••इ••••ह	

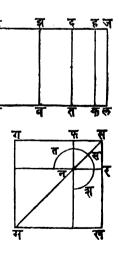
#### अथ ८८ क्षेत्रम् ॥

क्षेत्रस्यैको भुजोऽक्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयो भुजः प्रथ-मान्तररेखा भवति । यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुस्यो भवति सान्तररेखा भविष्यति ।

यथा बझं क्षेत्रं कल्पितम्। अङ्कसंज्ञाहरेखा अबं कल्पिता। प्रथमान्त-ररेखा अझम्। अझरेखया झजरेखा तथा योज्या यथा प्रथमरूपा भवति।

पुनर्बजक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । पुनर्झजरेला दिचिहेऽद्विता कार्या । पुनर् अजरेलाखण्डोपरि जदवर्गतुल्यो झजवर्गस्य चतुर्थाशस्तथा

कार्यो यथा शेषसण्डक्षेत्रं वर्गतुत्यमवशिष्यते। तसात् अजरेसाया हचिहे विभागो भविष्य-ति।पुनर् अहरेसादजरेसानिष्पत्तिर्दजरेसा-जहरेसानिष्पत्तितुत्या भविष्यति । जहं च स्वण्डद्वयमध्ये लघुसण्डमस्ति । तसात् जहं जदाल्लघु भविष्यति । जदं च अहाल्लघु भविष्यति । पुनहचिह्दचिह्नाभ्यां हकरेसा-दतरेसे अबरेसासमानान्तरे कार्ये । पुनः समं समकोणसमचतुर्भुजं बह्नक्षेत्रतुत्यं कार्यम् । अस्य कर्णेन सनं समकोणसमच-तुर्भुजं हलक्षेत्रतुत्यं कार्यम् । पुनः स्वगक्षे-



<sup>9</sup> A. and J. have तृतीयान्तररेखोत्पादनप्रकार:. २ द्हद्शी A. ३ द्वी विमागी भविष्यत: A., J.

त्रस्य रेखाः पूर्णा कार्याः । तदा समसमकोणसमचतुर्भुजस्य नि
णितः खफक्षेत्रेण तथास्ति यथा खफक्षेत्रस्य निष्पत्तिः सनस
मकोणसमचतुर्भुजेनास्ति । कृतः । यत एतद्वयं गससफिनिष्पत्तौ

अस्ति । तदा खफक्षेत्रं द्वयोः समकोणसमचतुर्भुजयोर्गघ्ये एकनि
ण्यतौ भविष्यति । तदा बहक्षेत्रहलक्षेत्रस्य मध्येऽपि खफक्षेत्रमेक
निष्पत्तौ भविष्यति । दलक्षेत्रं बहक्षेत्रहलक्षेत्रस्य मध्येऽपि एकनि
ण्यतावासीत् । तस्मात् दलक्षेत्रखफक्षेत्रे समाने भविष्यतः । पुनर्दव
क्षेत्रं च रगक्षेत्रेण समानं भविष्यति । तस्मात् खवक्षेत्रं तसकाक्षेत्रस्य

सनसमकोणसमचतुर्भुजयोगेन समानं भविष्यति । पुनर्बद्गश्चेषक्षेत्रं

नमसमकोणसमचतुर्भुजयोगेन समानं भविष्यति । पुनर्बद्गश्चेषक्षेत्रं

नमसमकोणसमचतुर्भुजयोगेन समानं भविष्यति । अस्य भुजः

फगोऽस्ति । तस्मात् फगमन्तररेखा भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अजनगों जझनर्गस्य अजिमिलितरेखानर्गस्य च योगेन समान्तोऽस्ति । तसाद्यदि जदनर्गतुल्यो जझनर्गस्य चतुर्योशः अजिरेखा-खण्डे तथा कार्यो यथा शेषसण्डक्षेत्रं नर्गतुल्यमनिशाण्यते तदा अजिरेखाया हिन्हे मिलिते द्वे खण्डे मिनिष्यतः। अजिरेखा चाइसंज्ञाहीस्ति। तसात् बहक्षेत्रतुल्यं समं समकोणसमचतुर्भुजं हलक्षेत्रतुल्यं सनंसमकोणसमचतुर्भुजमङ्कसंज्ञाहें भविष्यतः। तसात् गसरेखासफर्रेखयोर्नर्गानङ्कसंज्ञाहीं भविष्यतः। झजिरेखा अजिरेखातो भिन्नास्ति। तसात् दलरेखा जझरेखाया मिलितापि मिलितआहरेखाअजिरेखयोर्गिन्ना भविष्यति। तसात् दलक्षेत्रतुल्यं खफक्षेत्रं बहक्षेत्रतुल्यसम-

Digitized by Google

१ J. has तसात् अज्ञह्जे मिलिते जाते । after मविष्यतः. १ J. has तसाद्वलक्षेत्रतुस्यं ज्ञह्मक्षेत्रं धह्क्षेत्रतुस्यसम्बोणसमचतुर्भुजाद्भित्रं भविष्यति । after मविष्यति.

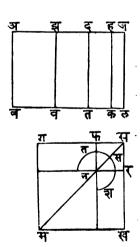
समकोणसमचतुर्भुजात् भिन्नं भविष्यति । तसात् गसरेखासफरेखे मिथो भिन्ने भविष्यतः । फगं चान्तररेखा भविष्यति । एवं यस्या रेखाया वर्गो बझक्षेत्रेण तुल्यो भवति सैवान्तररेखा भविष्यति ॥

### अथ ८९ क्षेत्रम् ॥

यदि क्षेत्रस्थैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयभुजो द्वि-तीयान्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्गोऽनेन क्षेत्रेण तुल्यो भवति सा प्रथममध्यान्तररेखा भवति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हवक्षेत्रतुल्यं समसमकोण-

समचतुर्भुजं हरुक्षेत्रतुल्यं सनसमकोण-समचतुर्भुजं चैतद्वयं मिलितमध्यक्षेत्रं मिन-ध्यति । कुतः । अहहज्योर्मिलितरेला-त्वात् । पुनर्दलक्षेत्रतुल्यं खफक्षेत्रमङ्कसं-ज्ञाई भिवध्यति । तस्मात् गसरेला सफरेला चैते मध्यरेले भिवध्यतः । अन-योर्वगौ मिलितौ भिवध्यतः । एतौ भुजौ अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रस्य भिवध्यतः । तसात् फगरेला यस्या वर्गो ब्रह्मक्षेत्रतुल्योऽस्ति सा प्रथममध्यान्तररेला भविष्यति ॥

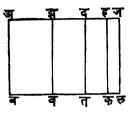


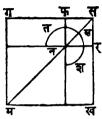
### अथ ९० क्षेत्रम् ॥

यस्य क्षेत्रस्यैकभुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयभुजस्तृती-यान्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेखा भवति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हबक्षेत्रतुत्यं समसमकोणसम-

चतुर्भुजं इलक्षेत्रतुल्यं सनसमकोणसम-चतुर्भुजं चैते मिलितमध्यक्षेत्रे भवि-ध्यतः। कुतः। यतः अहहजौ मिलिते रेले स्तः। झलं दलक्षेत्रतुल्यमपि खफ-क्षेत्रं मध्यक्षेत्रपूर्वक्षेत्राम्यां भिन्नं भविष्य-ति। तसात् गस्रेखासफरेले मध्यरेले केवलवर्गमिलिते मविष्यतः। एते च मध्य-क्षेत्रस्य भुजौ भविष्यतः। तस्मात् फगरे-खावर्गो बझक्षेत्रतुल्योऽस्ति। सं च द्विती-यमध्यान्तररेला भविष्यति॥



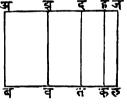


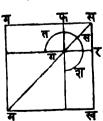
अथ ९१ क्षेत्रम् ॥

यस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञाहों भवति द्वितीयभुजश्चतुर्था-न्तररेखा भवति तदा यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा न्यूनरेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च अहहुजरेले अपि च हब-

क्षेत्रहरुक्षेत्रतुल्ये समक्षेत्रसमक्षेत्रे भिने भविष्यतः । अनयोर्थोगोऽङ्कसंज्ञाहों भविष्यति । पुनर्झरुक्षेत्रतुल्यं द्विगुणखफक्षेत्रं मध्यो भविष्यति । तसात् गससफौ भिन्नवर्गौ भविष्यतः । अनयोर्वर्गयोगोऽङ्कसंज्ञाहों भविष्यति । अनयोर्द्विगुणो घातो मध्यो भविष्यति । तसात् फगरेखावर्गो बङ्गक्षेत्रतुल्यो भविष्यति ॥





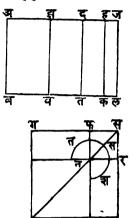
अथ ९२ क्षेत्रम् ॥

यस्य क्षेत्रस्यैको भुजोऽङ्कसंज्ञार्हो भवति द्वितीयश्च प-

<sup>9</sup> J. has तस्मात् for स च. २ °दुस्यो न्यूनरेस्ना भवति D.

श्रम्यन्तररेखा भवति पुनर्यद्रेखावर्ग एतत्क्षेत्रतुल्यो भवति सा अङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखा भवति।

प्रकारः क्षेत्रं चौपैरितनक्षेत्रवत् । परं च अहहजरेले अपि च हबक्षेत्रहलक्षेत्रतुल्ये समक्षेत्रसनक्षेत्रे मिन्ने भविष्यतः । अनयोर्योगो मध्यो भवि-ष्यति । झलक्षेत्रतुल्यं द्विगुणखफक्षेत्रम-इसंज्ञाई भविष्यति । तसात् गससफौ भिन्नवर्गी भविष्यतः । अनयोर्वर्गयोगो मध्यो भविष्यति । द्विगुणघातश्चाइसंज्ञाहीं भविष्यति । तसात् फगवर्गो बझक्षेत्रतुल्यो-ऽित । सोऽइसंज्ञाहयुक्तमध्यो भविष्यति ॥



अथ ९३ क्षेत्रम् ॥

यस्यैकभुजोऽङ्कसंज्ञाहीं भवति द्वितीयश्च षष्टचन्तररेखा भवति तत्र यस्या रेखाया वर्ग एतत्क्षेत्रतुरुयो भवति सा मध्ययुक्तमध्यरेखा भवति।

क्षेत्रं प्रकारश्च पूर्ववत् । परं चात्र आहह्यरेखे हवहरुक्षेत्रतुल्ये

समक्षेत्रसमक्षेत्रे च भिन्ने भविष्यतः । अनयोयोंगो मध्यो भविष्यति । प्रनक्रिलक्षे-त्रतुल्यद्विगुणस्त्रफक्षेत्रं मध्यो भविष्यति प्रथममध्याद्भिन्नो भविष्यति । तसात् गस-सफी भिन्नवर्गी भविष्यतः। अनयोर्वर्ग-योगो मध्यो भविष्यति । अनयोद्धिगुणो घातश्च मध्यो भविष्यति । प्रथममध्या-द्रिनो भवति । तसात् फगरेखावर्गी बझ-क्षेत्रत्रस्योऽस्ति । सा मध्ययुक्तमध्या भवि-ष्यति । इदमेवेष्टम् ।

ख

१ च पूर्ववत् J.

#### अथ ९४ क्षेत्रम्॥

अङ्कसंज्ञार्हरेखायामन्तररेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तदोत्पन्नो द्वितीयभुजः प्रथमान्तररेखा भविष्यति ।

यथान्तररेखा अबं कल्प्या। यान्तररेखा अनया मिलित्वा प्रथमरूपं करोति सा बजरेखा कल्पिता। अङ्कसंज्ञाहरेखा च दहं कल्पिता।

पुनर्दहरेखोपरि अबवर्गतुल्यं दतक्षेत्रं कार्यम् । तसादुत्पन्नो दवभुजः प्रथमान्तर-रेखा भविष्यति । उपपत्तिः ।

पुनर्दहरेखायाम् अजवर्गतुल्यं दन-क्षेत्रं कार्यम् । बजवर्गतुल्यं च नझ-क्षेत्रं कार्यम् । तसात् तझक्षेत्रं द्विगुण- इ व क मझ द व क मझ ह त ल न

अजजबघातसमानं भविष्यति । पुनर्वझरेखा किचिहेऽदिता कार्या । पुनः कलरेखा दहरेखायाः समानान्तरा कार्या । अजजबवर्गावद्वसं- ज्ञाहीं खेः । ततो दनक्षेत्रनझक्षेत्रे दमरेखामझरेखे अपि मिलिता- क्रमंज्ञाहें भविष्यतः । तसात् दझरेखा संपूर्णाक्रसंज्ञाहीं भविष्यति । अजजबघातो मध्यक्षेत्रज्ञल्योऽखि । तदा झलक्षेत्रझतक्षेत्रे अपि मध्यक्षेत्रे मविष्यतः । झववर्गोऽप्यक्कसंज्ञाहों भविष्यति । दहरेखाया दझरेखाया भिन्नो भविष्यति । पुनर् अजजबघातः अजवर्गबजवर्ग- मध्ये एकनिष्पत्तावैखि । तसात् झलक्षेत्रं दनक्षेत्रनझक्षेत्रमध्ये एकनिष्पत्तौ भविष्यति । पुनर्दमझकनिष्यत्तिः झकरेखाझमरेखानि- ष्पत्तितुल्याखि । यदि झकर्गतुल्यझवर्गचतुर्थाशतुल्यं क्षेत्रं दझ-रेखाखण्डे तथा कार्य यथा शेषलण्डक्षेत्रं वर्गरूपं भवति दझरेखाया मचिहे मिलिते हे खण्डे भविष्यतः । पुनर्दझरेखावर्गो झवरेखावर्गस्य दझरेखामिलितरेखावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । असदिष्टं समीचीनम् ॥

<sup>9</sup> या रेखा एतां (एनां A., J.) पूर्वस्वरूपं करोति K. २ भविष्यतः A., K. ३ भविष्यतः K., A., J.

### अथ ९५ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां प्रथममध्यान्तररेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तदोत्पन्नो भुजो द्वितीयान्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च दनक्षेत्रनझक्षेत्रे मध्यमिलिते मिविष्यतः । तसात् हझक्षेत्रं मध्यं भवि- ध्यति । दझरेसायाः केवलवर्गोऽइसंज्ञाहीं भू व ज्यानिष्यति । प्रनर्भतक्षेत्रतेलयो द्विगणअज- व व क मङ्ग

भविष्यति । पुनर्झतक्षेत्रर्तुं स्यो द्विगुणअज-जबघातोऽइसंज्ञाहीं भविष्यति । तसात् झवरेसा अङ्कसंज्ञाही भविष्यति । झदरे-स्वावर्गी झवरेसावर्गस्य हदरेसामिछितरे-स्वावर्गस्य चयोगेन तुस्यो भविष्यति। कुतः। इ व क मझ

दममझयोर्मिछितत्वात्। तसात् दवरेसा द्वितीयान्तररेसा भविष्यति॥

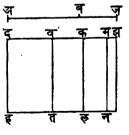
### अथ ९६ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखोपरि द्वितीयमध्यान्तररेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तदोत्पन्नभुजस्तृतीयान्तररेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च हझक्षेत्रमपि मध्यं मविष्यति । दननझयोर्मध्ये मिलितत्वात् । दझवर्गः के-

वलमङ्कसंज्ञाहीं ऽस्ति। तझक्षेत्रमपि मध्योऽस्ति। प्रथममध्याद्विनोऽस्ति । अजजवयोर्भिन्न-त्वात्। तसात् झवरेखापि केवलवर्गाङ्कसं-ज्ञाही मविष्यति। दझाद्विना भविष्यति। दझाद्विना भविष्यति। दझाविनो झववर्गस्य दझमिलितरेखावर्गयो-

गेन तुल्यो भविष्यति । कुतः । **दममश्**यो-



र्मिलितत्वात् । तसात् **दवं** तृतीयान्तररेखा भविष्यति ॥

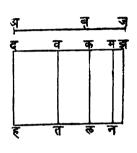
९ °तुल्य° A.

#### अथ ९७ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेखायां न्यूनरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्यं तत्री-त्पन्नभुजश्चतुर्ध्यन्तररेखा भविष्यति ।

अस्य प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । अजबजवर्गयोभिन्नत्वेन दनक्षेत्र-

नझक्षेत्रे भिन्ने भविष्यतः । दमरेखामझ-रेखे अपि भिन्ने भविष्यतः । द्वयोर्वर्गयोर्थो-गस्याइसंज्ञाईत्वेन हझक्षेत्रमप्यइसंज्ञाई भवि-ष्यति । दझरेखा चाङ्कसंज्ञाही भविष्यति । द्विगुणअजजबघातस्य मध्यभावित्वेन तझ-क्षेत्रमपि मध्यं भविष्यति । वझरेखापि के-वलवर्गोद्ससंज्ञाहीस्ति । दशक्यों वशक्यिस

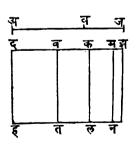


दश्मभिन्नरेस्नावर्गस्य च योगेन तुल्योऽस्ति । कुतः । दममञ्जयोर्भिन-त्वात् । तस्मात् दवं चतुर्थ्यन्तररेखा भविष्यति ॥

### अथ ९८ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाहरेलायामङ्कसंज्ञाहरेलायुक्तमध्यरेलावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्ये तत्रोत्पन्नभुजः पश्चम्यन्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं अजबजवर्गयोर्भिन्नत्वेन दनक्षेत्रनश्-क्षेत्रे भिन्ने भविष्यतः । दममझरेखापि भिना मविष्यति । द्वयोर्वर्गयोर्योगस्य मध्यभावि-त्वेन दशं केवलवर्गसंज्ञाहों भविष्यति। द्विगुणअजबजघातस्या इसंज्ञाईभावित्वेन झ-वरेखा अङ्कसंज्ञाही भविष्यति । तसात् दझ-रेखावर्गो झवरेखावर्गस्य दझरेखाभिन्नरे-स्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति



दममझयोर्भिन्नत्वात् । दमरेखा पश्चम्यन्तररेखा भविष्यति ॥

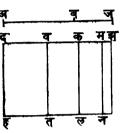
<sup>9</sup> च J.

## अथ ९९ क्षेत्रम् ॥

अक्रुसंज्ञाहिरेखायां मध्ययुक्तमध्यरेखावर्गतुल्यं क्षेत्रं कार्य तत्रोत्पन्नद्वितीयभुजः षष्टचन्तररेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं च अजबजवर्गयोर्मिन्नभावित्वेन दनक्षेत्रनझक्षेत्रे भिन्ने भविष्यतः । दम-

मझरेखापि भिना भविष्यति । द्वयोर्व- अ र्गयोर्योगस्य मध्यक्षेत्रभावित्वेन तथा द्विगु-णञ्जबज्जघातस्य मध्यमावित्वेन प्रथमम-ध्याद्भिन्नत्वेन च दश्रझवरेसे केवछवर्गाइसं-ज्ञार्हे भविष्यतः। भिन्ने च भविष्यतः। केबर्जवमीवद्रसंज्ञाहीं भविष्यतः । दझवर्गी



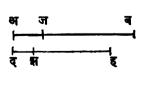
अखर्कास्य दञ्जभिन्नरेस्नावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । दमम-झयोर्भिनत्वात् । तसात् दर्वं षष्ठचन्तररेखा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

### अथ १०० क्षेत्रम् ॥

#### अन्तररेखामिलितरेखा ताहृज्येवान्तररेखा भवति ।

यथा अजम् अन्तररेखा कल्पिता। दझं मिलितरेखा कल्प्या । पुनर् अजरेलायां जबरेला तथा युक्तौं कार्या यथा पूर्वस्तपं करोति। पुनर्दञ्चरेसाञ्चहरेसानिष्पत्तिः अजजबनिष्पत्तितुल्या कल्प्यो ।

यदि अबवर्गी बजवर्गस्य अजमिलितरेखाया अथवा भिन्न-रेखाया वर्गस्य योगतुल्यो भवति तदा दह-रेखा झहरेखे ताँहशे साः। पुनरपि प्रत्येकं अववजी प्रत्येकदहझहाम्यां मिलितत्वेन प्रत्येकमञ्चसंज्ञाहीं भवति वा वगी इसंज्ञाहीं



<sup>9</sup> J. adds मिशो. २ J. Omits this sentence. ३ J. Omits कल्प्या. ४ योज्या A., K., J. ५ कल्पिता A., K., J. ६ सहशे A., J. वगोंऽङ्कसंज्ञाहीं भवति A.

मवति । तदा द्वितीयरेखापि तथैव भविष्यति । तसात् अर्ज यान्तर-रेखा भवति दृश्चमपि तथैवान्तररेखा भविष्यति ॥

#### अथ १०१ क्षेत्रम् ॥

मध्यान्तररेखया या मिलिता रेखा भवति सा मध्यान्तर-रेखासदृशी भवति ।

यथा अजं प्रथममध्यान्तररेखा वा द्वितीयमध्यान्तररेखा कल्पिता । तदेखा मिलिता दझरेखा कल्पिता । पुनर् अजरेखया लगा जबरेखा तथा कल्प्या में अजरेखां पूर्वरूपां करोति । दझ- हि इह्योर्निष्पत्तिः अजजबिनष्पत्तितुल्यास्ति । प्रत्येकम् अबजबी दहह्झाभ्यां मध्यखजातीयेन मिलितौ स्तः । या- हशो मध्यसजातीयोऽस्ति तावचेथेव प्रत्येकम् अबबजयोर्मध्योऽस्ति । अबबजी भिन्नौ स्तः । तसात् दहह्झावपि भिन्नौ मवेताम् । अबवर्ग- निष्पत्तिः अबबजघातेन तथास्ति यथा दह्वर्गनिष्पत्तिदेहहङ्गघातेन नास्ति । अबवर्गदह्वर्गयोर्निष्पत्तिः अबबजघातदहङ्गहघातनिष्पत्त्या समानास्ति । अबवर्गदह्वर्गी मिलितौ स्तः । तसात् अबबजघात- दहहङ्गघातावपि मिलितौ भविष्यतः ।

यदि अववज्ञघातोऽइसंज्ञाहीं भवति तदा दहहझघातोऽप्यइ-संज्ञाहीं भविष्यति । यदि अववज्ञघातो मध्यो भवति तदा दहहझ-घातोऽपि मध्यो भविष्यति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

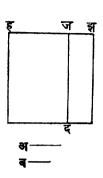
### अथ १०२ क्षेत्रम् ॥

न्यूनरेखया मिलिता रेखा न्यूना भवति।

यथा अं न्यूना रेखा कल्पिता । तन्मिलिता बरेखा कल्पिता । अन-

<sup>9</sup> V. inserts द्वयोर्मच्यान्तररेखयोर्मध्ये उन्तररेखा आजं यथा भवति तवैव मध्यान्तरं द्वामपि भविष्यति.

योर्वर्गतुल्ये क्षेत्रे जदश्वसंज्ञाहरेखायां कार्ये। अवर्गतुल्यं क्षेत्रं जदरेखायां यचिह्नतीयो भुजो जहं चतुर्थ्यन्तररेखा भवति । बवर्गतुल्यं क्षेत्रं जदरेखायां यत् कृतं तदुत्पन्नो जझभुजो जह-मिलितोऽस्ति । तसात् जझमपि चतुर्थ्यन्तररेखा भवति । तसाव्देखावर्गो दझक्षेत्रतुल्यो भवति सा बरेखा भवति । इयं न्यूनरेखा भविष्यति ॥



अथ १०३ क्षेत्रम्॥

अङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखाया मिलिता रेखा भवति साप्य-ङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखा भैवति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ १०४ क्षेत्रम् ॥

मध्ययुक्तमध्यरेखया या मिलिता रेखा भवति सापि मध्य युक्तमध्यरेखा भवति ।

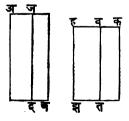
प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

अथ १०५ क्षेत्रम् ॥

अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रस्य मध्यक्षेत्रेण यदन्तरमस्ति तत्तुल्यो यस्या र रेखाया वर्गो भवति सा रेखान्तररेखा वा न्यूनरेखा भवति।

यथा अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रं अबम् कल्पितम्। मध्यक्षेत्रम् अदं कल्पितम्। अङ्कसंज्ञाईक्षेत्रस्य मध्यक्षेत्रेणान्तरं जबक्षेत्रं क-

लिस्तम्। पुनह्ंझम् अङ्कसंज्ञाहरेखा कल्पिता। अस्याम् अबक्षेत्रतुल्यं झकक्षेत्रं कार्यम्। तस्या-मेव अद्क्षेत्रतुल्यं झवक्षेत्रं कार्यम्। तस्या-हकरेखा अङ्कसंज्ञाही भविष्यति । हवरेखा च केवछवर्गाङ्कसंज्ञाही भविष्यति। यदि हक-



९ भवेत् V. २ क्षेत्रमध्यक्षेत्रयोर्यदन्तरमस्ति K., A., J. ३ भविष्यति V.

रेलावर्गो हवरेलावर्गस्य हकरेलामिळितरेलावर्गस्य च योगेम तुल्मो भेवेत् तदा वकं प्रथमान्तररेला भविष्यति ।

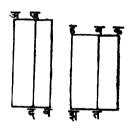
यद्रेलावर्गस्तकक्षेत्रतुल्यज्ञबक्षेत्रसमानी भवति सा अन्तररेला भवति । यदि हकरेलावर्गो हवरेलावर्गस्य हकरेलाभिन्नरेलावर्गस्य च योगेन तुल्यो भवति तदा वकरेला चतुर्थी अन्तररेला भविष्यति । पुनस्तकक्षेत्रतुल्यज्ञबक्षेत्रसमानो यद्रेलावर्गो भवति सा न्यूनरेला भविष्यति ॥

#### अथ १०६ क्षेत्रम्।।

मध्यक्षेत्रस्याङ्कसंज्ञाईक्षेत्रेणान्तरतुल्यो यद्रेसावर्गो भवति सा प्रथममध्यान्तररेखा भविष्यति वाङ्कसंज्ञाईयुक्तमध्यरेखा भविष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं त्वत्र अबं मध्यक्षेत्रं मविष्यति ।

हकरेला केवलवर्गाङ्कसंज्ञाही भविष्यति । हवरेला चाङ्कसंज्ञाही भविष्यति । वेकरेला द्वितीयान्तररेला वा पञ्चम्यन्तररेला भवि-ष्यति । जबक्षेत्रतुस्यो यद्रेलावर्गी भवित स प्रथममध्यान्तररेला भविष्यति वाङ्कसं-ज्ञाहियुक्तमध्यरेला भविष्यति ।



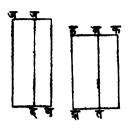
## अथ १०७ क्षेत्रम् ॥

मध्यक्षेत्रतिक्रमध्यक्षेत्रान्तरतुल्यो यद्रेखावर्गे भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेखा वा मध्ययुक्तमध्यान्तररेखा भ-विष्यति ।

प्रकारः क्षेत्रं च पूर्ववत् । परं त्वन्न इक्रेसाइकरेसे भिक्तरेसे

१ भवति V. २ Omitted in K., A., J.

मिथो मविष्यतः । अनयोः केवल्यमिइसं-झार्ही मविष्यतः । वकं तृतीयान्तररेला तदा मविष्यति यदा हकरेलावर्गो ह्वरे-स्नावर्गस्य हकमिलितरेलावर्गस्य च योगेन तुल्यो भविष्यति । पुनः सैव वकरेला पष्ठचन्तररेला तदा भविष्यति यदा हकरे-



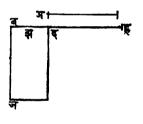
स्वावर्गो हवरेसावर्गस्य हकभिष्ठरेसावर्गस्य च योगेन तुस्यो भवति । तसात् यद्रेसावर्गो जबक्षेत्रतुस्यो भवति सा द्वितीयमध्यान्तररेस्य धा मध्ययुक्तमध्यरेसा भविष्यति ॥

अथ १०८ क्षेत्रम् ॥

अन्तररेखा योगरेखा न भवति ।

यदि भवति तदा कस्पितम् अरेखा अन्तररेखा भवति योगरेखायि ।

बजम् अङ्कसंज्ञाहरेसा कल्पिता। अरेसावर्ग-तुल्यं क्षेत्रं बजरेसायां दजक्षेत्रं कार्यम्। तदोत्पन्नो वद्भुजः प्रथमयोगरेसा मविष्य-ति। कुतः। अरेसाया योगरेसात्वात्। स एवोत्पन्नो बद्भुजः प्रथमान्तररेसा स-विष्यति। यतः अरेसा अन्तररेसास्ति।



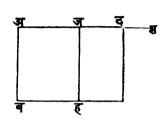
तदा किल्पतं बदरेखाया झचिहे योज्यखण्डे बझं महत्खण्डं किल्प-तम् । इदं बझम् अझंसज्ञाहरेखा भविष्यति । झदं केवछवगी इसंज्ञाही रेखा भविष्यति । बदरेखया दहरेखा संख्या तथा कल्प्या यथा बद-रेखां पूर्वे रूपां करोति । तसात् बहरेखा अइसंज्ञाही रेखा भविष्यति । इदरेखा केवछवगी इसंज्ञाही खि । शेषं झहरेखा अइसंज्ञाही भविष्यति । तसात् झहरेखा झदरेख्या वा दहरेख्या सह केवछवगी इसंज्ञाही भविष्यति । तसात् दहरेखा वा दझरेखा अन्तररेखा भविष्यति । अस्या एव दहरेखाया बदझरेखाया वर्गोऽइसंज्ञाही आसीत् । इदम-ग्रद्धम् । असादिष्टं समीचीनम् ॥

#### अथ १०९ क्षेत्रम् ॥

मध्यरेखातः करणीरूपा रेखा बहुच उत्पत्स्यन्ते तासां मध्ये कापि ब्रितीयोत्पन्ना प्रथमानुकारा न भवति ।

यथा अबरेखा अइसंज्ञाही कल्पिता । अस्यां अझरेखा लम्बरूपा

किरिता । अर्जं अझे मध्यरेखा किरिता । पुनर् अहक्षेत्रं संपूर्णे कार्यम् । इदं अहक्षेत्रं मध्यक्षेत्रं न मविष्यति । कुतः । मध्यक्षेत्रतुल्यम् अबरेखायां क्षेत्रं यदि कियते तदो-त्यन्त्रभुजवर्गोऽह्ससंज्ञाहीं मवति । अ-



हक्षेत्रोत्पन्नभुजश्च मध्यरेसास्ति । पुनर्जदरेसावर्गः अहक्षेत्रतुत्यो-ऽस्तीति कल्पितम् । इयं जदरेसा अजरेसासदृशी न भवति । पुनर्द्रहक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । इदं दृहक्षेत्रम् अहक्षेत्रसदृशं न भविष्यति । कुतः । अहक्षेत्रस्योत्पन्नभुजो मध्योऽस्ति । दृहक्षेत्रस्योत्प-न्नभुजो जदमस्ति । पुनर्द्रहक्षेत्रतुत्यो यद्देसावर्गो भवति सापि जद्द-रेसासदृशी न भविष्यति । अजरेसासदृशी अपि न भविष्यति । अनेनैव प्रकारेण तद्देसातो जङ्गरेसातुत्यं पृथिक्रयते क्षेत्राणि च कियन्ते तदा तादृश्यो बहुचो रेसा भविष्यन्ति परं पूर्वीनुकारा न भवेगुः।

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टौ द्विजेन्द्रः

श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समिभारू दितेन प्रणीते । प्रन्थे ऽसिनाम्नि रेखागणित इति सुकोणाव बोधप्रदात-र्याच्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति दिक्षितः संगतोऽभूत् ॥

> ॥ इति श्रीसम्राङ्जगन्नाथविरिचते रेकागणिते दशमोऽभ्यायः संपूर्णः॥ १०॥

१ याः तुस्याः सन्ति तासां J. १ पूर्णे V. ३ पूर्णे V.

#### अथैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

### ॥ असिनेकचत्वारिंशत् क्षेत्राणि सन्ति ॥

### तंत्रादौ परिभाषा ॥

- १ यस्य क्षेत्रस्य दैर्ध्य विस्तारः पिण्डश्चोपलम्यते तत् घनक्षेत्रसंज्ञकं मवति । इदं क्षेत्रं घरातलेषु संपूर्ण भवति ।
- २ घरातले शङ्करूपा निषण्णा या रेखा भवति तन्मूलात् सर्वतो नि-स्रता रेखा यदि मूलयोगेन समकोणमुत्पादयन्ति तदा सा रेखा घरातले लम्बो भवति ।
- ६ घरातलेऽन्यधरातलं भित्तिवत् संलग्नं यदि मवति तद्योगतो निस्नत-रेखाम्यां यदि समकोणो भवति तदा संलग्नं घरातलं लम्बवद्भवति।
- श्र ये घरातले उभयतो वर्द्धिते यदि न मिल्लतस्तदा ते समानान्तरे मवतः ।
- येषां घनक्षेत्राणां घरातलानि सजातीयानि संख्यया समानानि क्षेत्रफलेनापि समानानि स्युद्धानि समानानि सजातीयानि भैवन्ति।
- यदि तेषां घरातलानां क्षेत्रफलानि समानानि न भवन्ति तैदैतानि केवलसजातीयानि भवन्ति ।
- ७ यस्य घनक्षेत्रस्य द्वे घरातले त्रिभुजे भवतस्त्रीणि घरातलानि समा-नान्तरभुजचतुर्भुजानि भवन्ति तच्छेदितघनक्षेत्रं भवति ।
- ८ व्यासोपरि सर्वतो वृत्तत्रमणेन यद् घनफलमुत्पद्यते तद् गोलक्षेत्रं भवति ।
- ९ अनेकासघरातलान्निःसतानि स्च्यप्रघरातलानि यद्येकत्र मिल्रन्ति तत् क्षेत्रं र्स्चीफलकशङ्कुघनक्षेत्रं भवति ।

Digitized by Google

<sup>9</sup> Omitted in V.; J. has अत्र for तत्र. २ दैर्घ्यविस्तारिषण्डा उपलभ्यन्ते K., A., J. ३ निष्टताः सर्वतो रेखा J. ४ J. Omits भवन्ति. ५ K., J., and A. omit तेषां. ६ तदा तानि V., J. ७ K. and A. have एक for अनेकास. ८ सूचीफळकषनं क्षेत्रं D.

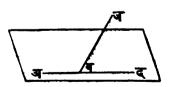
- १० समकोणचतुर्भुजक्षेत्रैकभुजैश्रमणेन बत् क्षेत्रं कूपाकारं भवति । तत् समतळमस्तकपरिधिरूपं शङ्क्षधनक्षेत्रं भवति ।
- ११ अस्य क्षेत्रस्य स्थिरमुजो छम्बो मवति ।
- १२ समकोणत्रिभुजक्षेत्रस्य समकोणभुजं स्थिरं कृत्वा त्रिभुजम्रमणेन यत् क्षेत्रमुत्यचते स शङ्कर्भवति ।
- १३ यदि समकोणसंबंन्धिमुजी समानी मवतस्तदा शङ्कुश्चिरसि स-मानकोणो मवति ।
- १ ४ यदि स्विरमुजो द्वितीयभुजादिषको भवति तदा शङ्कर्न्यूनकोणो भविष्यति ।
- १९ यदि स्वरभुको न्यूनो भवति तदा शङ्करिककोणो भवति ।
- १६ अस्य शङ्कोः स्थिरभुज एव ढम्बो भवति ।
- १७ ज्यादिघरात्रख्योगजनितकोणो घनकोणो भवति ।
- १८ शङ्कक्षेत्रसमतलमस्तकशङ्कक्षेत्रयोः खलम्बन्यासयोर्निष्पत्तिः समाना यदि भवति तदा ते क्षेत्रे सजातीये भवतः।

॥ इति परिभाषा ॥ अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

एकस्याः सरलरेखाया एकं खण्डं धरातले एकं पिण्डे भवितुं नाईति ।

यदि भवति तदा **अवजं** सरहारेखा कल्पिता । अस्या अवसण्डं

घरातछे बज्जखण्डं पिण्डे कल्पितम् । घरातछे तु रेखा वर्द्धयितुं शक्यते । अवरेखा घरातछे एव दिचह्दपर्यन्तं वर्द्धनीया । अवजरेखाअवदरेखे एकरूपे भवतः । इदमगुद्धम् । अ-स्मदिष्टं समीचीनम् ॥



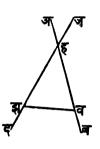
९ भुजो निष्णो यथा भवति तद्भवणेन K., A., J. २ धरातळकोणानां योगजनितकोणो चनकोणो भवति । K., A., J. ३ प्रथयक्षेत्रम् V.

### अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २॥

ये द्वे सेरलरेखे मिथः संपातं कुरुतस्ते एकस्मिन् धरातले भवतः यत्रिभुजं तदप्येकस्मिन् धरातले भवति ।

यथा अबजदे द्वे रेखे इचिहे संगतकारिण्या कल्पिते । पुनरनयोः

श्निविद्यचिद्धे कल्पिते । श्नवरेखा संख्या कार्या । तस्मात् हश्नवित्रभुजमेकधरातले भविष्यति । यदि न मवति तदा कस्यापि भुजस्यैकं खण्डं धरातले भविष्यति । द्वितीयं च पिण्डे । इदमगुद्धम् । ते कल्पिते रेखे त्रिभुजधरातले खः । तस्माचे रेखे एकस्मिन् धरातले जाते । इदमेवेष्टम् ॥

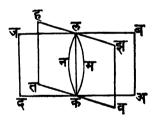


### अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

द्धे घरातले यदि मिथः संपातं कुरुत एतयोः संपाते एँ-कैव सरला रेखा भवति ।

यथा अबजदमेकं घरातलं हझवतं द्वितीयं घरातलम् । अद-

मुजतवभुजयोः संपातः कचिहे क-ल्पितः । बजभुजहङ्गभुजयोः संपातः छचिहे कल्पितः । यदि कचिह्नसंपात-छचिह्नसंपातयोगी रेखा लगा सा धरातलद्वयेप्येका न भवति तदैकसिन् धरातले कमलरेखा कल्पिता । द्वितीय-



धरातले कनलरेसा कल्पिता । एते रेस्ने सरले स्तः । आम्यां स्थान-द्वये मिथः संपातः कृतः। इदमग्रद्धम्। तसात् कलं धरातलद्वये एकैव योज्यरेसा भविष्यति । इयमेव धरातलद्वयसंपातयोज्यरेसास्ति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

१ V. omits अथ. २ सरछे रेखे V. ३ संपातं कुरुत इति कल्पितम् J. ४ सरछेका रेखा भविष्यति J. ५ J. omits संपात. ६ सरलरेखा J. ७ J. omits अस्माकम्.

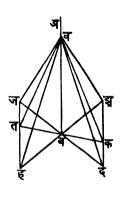
#### मकारान्तरम् ॥

किचिह्नस्रचिद्वे अवजद्धरातले स्तः । एकधरातलगतचिद्वद्वये एका रेखा योजयितुं शक्यते । तसात् अवजद्धरातले कलरेखा योज्या । पुनरपि कचिह्नलचिह्ने हझवतधरातले स्तः धरातले चिह्नदेये कलरेखा संयोजितास्ति । द्वयोश्चिह्योः सरला एकैव रेखा लगति। तसात् कलम् एकैव रेखा धरातलद्वर्थे भविष्यति॥

## अथ चतुर्थे क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

द्वे रेखे यद्येकचिहे संपातं कुरुतः संपातचिहादेको लम्बो रेखाद्वये भवति तदा यस्मिन् धरातले ते द्वे रेखे स्तस्तत्र स लम्बो लम्ब एव भवति।

यथा जदहझरेले बचिहे कृतसंपाते कल्पिते । अनयोरुपरि अब-रेखा लम्बः कल्पितः । पुनर्ब**जं बहं बदं बझं**़ समानं पृथक् कार्यम् । पुनरबलम्बोपरि वचिहं कल्पितम् । पुनर्जियं **हवं झवं दवं** रेखाः संयोज्याः । तत्र चत्वारि त्रिभुजानि भविष्यन्ति। तेषां भुजाः कोणाश्च मिथः समाना भविष्यन्ति । पुनर्जहरेला दझरेला च संयोज्या । जबहत्रि-भुजद्बझत्रिभुजयोरिप भुजौ कोणौ मिथः स-मानौ भविष्यतः । वजहित्रभुजस्य वद्मित्रि-भुजस्य च भुजो कोणो च मिथः समानौ भवि-



ष्यतः । यसिन् धरातले जदहझरेले स्तस्तसिन् तबकरेला बिचह-गता कार्या । पुनस्तवरेखा कवरेखा च संयोज्या । बजतत्रिभुजे बद्कत्रिभुजे बचिद्दसंपातसन्मुखकोणयोः साम्येन बजतकोण-बदककोणयोः साम्येन च बजभुजबदभुजयोः साम्येनापि जतभुज-तबभुजौ दक्भुजकबभुजयोः समानौ भविष्यतः । वजतत्रिभुजे वद्कत्रिभुजे वदवजभुजयोः समानभावित्वेन जतभुजद्कभुजयो-

रिष समानभावित्वेन वद्ककोणवज्ञतकोणयोः समानभावित्वेन च वत्रभुजवक्रभुजौ समानौ भविष्यतः । वक्कबित्रभुजे वत्बित्रभुजे च मिथो भुजयोः साम्येन वबतकोणवबककोणौ समानौ भविष्यतः । तस्मात् वबतकोणवबककोणौ समकोणौ भविष्यतः ।

अनेनैव प्रकारेण तिसानेव धरातले बिचिह्नगता रेखा कल्प्यते । अबरेखया तस्याः संपातः समकोणो भविष्यति । तस्मात् आबरेखा तत्र धरातले लम्बो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यासिस्रो रेखा एकस्मिन् चिह्ने संपातं करिष्यन्ति तत्सं-पातचिह्नात् यो लम्बस्तिसृषु रेखासु पतित तदा ता रेखा एकधरातले भविष्यन्ति ।

यथा बजं बदं बहं रेखा बैचिहे संपातकारिण्यः कल्पिताः। अबरेखा

तिसृषु रेखासु लम्बः कल्पितः । यद्येता रेखा ऍक-सिन् घरातले न भवन्ति तदा यसिन् धरातले बजबहे रेखे स्तस्तदन्यत्र घरातले बदरेखा क-ल्प्या । यसिन् धरातले अबबदरेखे स्तस्ते उभे घरातले मिथः समानान्तरे न भैवेताम् । कुँतः । बचिह्ने मिलितत्वात् । तदा बङ्गरेखानयोः सं-

म ज ज

पातरेला कल्पिता । तसात् अवदअवझकोणी प्रत्येकं समकोणी अवतः । एकं च द्विंतीयलण्डमस्ति । इदमशुद्धम् । असादिष्टं समी-चीनम् ॥

अथ षष्ठं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥ यो द्वौ लम्बावेकस्मिन् घरातले भवतस्तौ मिथः समा-नान्तरौ भवतः ।

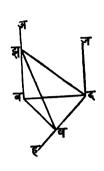
Digitized by Google

<sup>9.</sup> J. inserts तथा after समानभावित्वेन. २. एवं तस्मिन्नेव. J. ३. बचिह्र संपतिताः K., A., J. ४. एकधरातले J. ५. J. Omits सिथ:

६. स्थाताम् J. ७. J. Omits कृतः. ८. द्वितीयस्य खण्ड V., J.

यथा अबं जदम् एकत्र धरातले द्वौ लम्बौ कल्पितौ । पुनस्तस्मि-नेव धरातले बदरेसा संयोज्या । अस्यां दहलम्बः कार्यः । अबलम्बे

श्रिक्तं केल्प्यम् । दहरेखातो बझतुल्यं दवं पृथकार्यम् । पुनश्रेदश्ववववरेखाः संयोज्याः । श्वदित्रभुजे वद्वित्रभुजे श्वद्वभुजौ समा-नौ स्तः । बद्भुजो द्वयोरेक एवास्ति । श्वद्कोण-वद्वकोणौ समकोणौ स्तः । श्रद्भुजववभुजौ समानौ भविष्यतः । पुनश्वदित्रभुजे श्ववित्रभु-जे भुजयोः समानमावित्वेन श्ववकोणश्वदवकोणौ



समानी भविष्यतः । श्रववकोणः समकोणोऽस्ति । तसात् श्रदवकोणः समकोणो भविष्यति । तसात् दहरेला दबदशदजरेलासु लम्बो भ-विष्यति । एतास्तिस्रो रेला एकस्मिन् धरातले भविष्यन्ति । बश्चअरेला तस्मिन् धरातलेऽस्ति । तस्मात् अवजदे रेले एकधरातले जाते । आम्यां बदरेलया संपातः कृतः । संपाताम्यन्तरकोणौ समकोणौ जातौ । तस्मात् अवजदे समानान्तरे जाते ॥

# अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥

द्वाभ्यां रेखाभ्यां समानान्तराभ्यां यद्येकरेखा संपातं करोति तदेयं रेखा तयोर्द्वयोर्धरातले भविष्यति ।

यथा हमरेखया अवजदरेखयोः समानान्तरयोः संपातः कृतः।
तदा हमरेखा अवजदयोर्घरातले भिन- ज ह व
प्यति। यदि हमरेखा तयोर्घरातले न भवति
तदा तयोर्घरातले हवझरेखा कल्प्या ।
तसात् दमरेखा हवझरेखे सरले वा मूल- ज ह ह

९ चैत्रक J. २ कल्पितम् J. ३ समानी J. ४ V.omits पुनर् ५ यदि न भवति J.

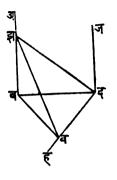
### अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

द्वयोः समानान्तररेखयोरेका धरातले लम्बो भवति तदा द्वितीया रेखापि तस्मिन्नेव धरातले लम्बो भवति।

यथा अबजदरेखयोः समानान्तरयोः अबं लम्बः कल्पितः । तदा

जदोऽपि लम्बो भविष्यति । धरातले बदरेसा संयोज्या । बदरेसायां दहलम्बश्चोनीतः । अबरेसायां झचिहं कल्पितम् । बझतुत्यं दवं प्रयक्तार्यम् । झदं झवं ववं रेसाः संयोज्याः ।

उपरितनप्रकारेण निश्चितं वद्झः समकोणो जातः । दहं द्वद्झंयोः संवन्धिघरातले लम्बो भविष्यति । अवजदयोर्धरातलेऽपि। तसात् जदं दहद्वयोर्धरातले लम्बो भवि-ष्यति । अवमप्यसिन् धरातले लम्बोऽस्ति ।



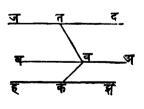
ष्यति । अवसप्यस्मिन् धरातले लम्बोऽस्ति । तदा तस्मिन् धरातले जदमपि लम्बो मविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

एकया रेखया या बह्व्यो रेखाः समानान्तरा भवन्ति ताः सर्वो अपि मिथः समानान्तरा भविष्यन्ति ।

यथा जदं हझम् एते अबरेखातः समानान्तरे कल्पिते। एतास्ति-

स्रोऽप्येकधरातले न सन्ति । विचिह्नात् वतवको द्वौ लम्बौ निष्कासितौ । तस्मात् जतहकरेसे वतवकरेस्वयोर्धरातले लम्बौ भविष्यतः । कुतः । अबं तस्मिन् धरातले सम्बोऽस्ति । तत एतौ समानास्तरौ भवि-



ध्यतः । कुतः । एँकसिन्नेव धरातले छम्बत्वात् । इदमेवेष्टम् ॥

Digitized by Google

१ V ° श्र कार्यः J. २ अखं यस्मिन् धरातले G. K., A., J. ३ एका रेखा बद्गीनां रेखानां समानान्तरा भवति ता रेखा एकधरातले न भवन्ति तदा K., A., J. ४ एतस्मिने K., A., J.

#### अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

यदैककोणभुजौ तदन्यकोणभुजयोः समानान्तरौ भवतः पुनरेतौ एकधरातले न भवतस्तदेतौ कोणौ समानौ भ-विष्यतः ।

यथा बकोणहकोणी कल्पिती । बअभुजो दहभुजस्य

न्तरः कल्प्यः । बज्ञभुजो ह्रञ्गभुजस्य समानान्तरः कल्प्यः । पुनर्बअहदी समानी पृथक् पृथक् कृती । एवं बजहसी समानी पृथक् कृती। अजं दशम् अदं बहं जझं रेखाः संयोज्याः । अदं जझं प्रत्येकं बहात समानं सेमानान्तरं चास्ति । एतावि समानौ सैमानान्तरौ भविष्यतः । तदा अजदुआविष समानौ

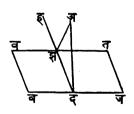
सैमानान्तरौ भविष्यतः । तसात् अ**बज**त्रिभुज**दह**झत्रिभुजयोर्भुज्ञौ

मियः समानौ भविष्यतः । बकोणहकोणाविष समानौ भविष्यतः । ईदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

एकस्मिन् धरातले पिण्डात् लम्बनिष्कासनमिष्टमस्ति । यथा अचिहात वजधरातले लम्बो निष्कासितव्यः। तत्र धरातले

बजरेखा कल्पिता । अचिहात् बजरेखायाम् अदलम्बो नि<sup>ष</sup>कास्यः । दचिह्नात्तसिनेव धरातले दहलम्बो निष्कास्यः। अचिहात् **दहो**परि **अझ**लम्बो नि<sup>ष</sup>कास्यः । अयं धरातले लम्बो भविष्यति । कुतः । झचिह्नात्



**झवत**रेखा तत्र धरातले बजसमानान्तरा कार्या। तसात् बजरेखा अझदत्रिभुजस्म घरातले लम्बो भविष्यति । तवमपि लम्बो भविष्यति । तदा अशं धरातले लम्बो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

<sup>9</sup> समानान्तरितौ K., A, J. २ समानान्तरितं A., K., J. ३ समाबा-न्तरितौ A., K., J. ४ इदमेवेष्टम् J. ५ निष्काशन° J. ६ निष्कार्यः J.

## अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥ तत्र धरातले तत्रत्येष्टचिह्नात् लैम्बो निष्कास्यः ।

यथा अचिहात् अबधरातछे छम्बः कार्यः । पुनरन्यसात् कै-

ल्पितचिद्वात् दबलम्बो धरातले निष्कास्यः। अंचिद्वात् अजं बदस्य समानान्तरकार्यम्। ईदमेवासादिष्टम्॥

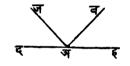
ज द

अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥१३॥

एकस्मिन् धरातले द्वौ लम्बौ एकचिह्ने न भवतः।

यथा अवअजी लम्बी एकसिन् चिह्ने कल्पिती । पुनर्दहरेसा

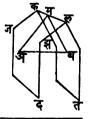
असिन् धरातले छम्बयोर्धरातले संपातयो॰ गरेखा कल्पिता । तसात् बअदकोण-जअदकोणो समानौ भविष्यतः । इत्यशु-द्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥



अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥
एका रेखा द्वयोर्धरातलयोर्यदि लम्बरूपा भवति तदा तौ
धरातलौ समानान्तरौ भवतः ।

यथा जदझतौ द्वौ धरातलौ कल्पितौ । उभयोरुपरि अबं लम्बः

किल्पतः । यदि समानान्तरौ न भवतस्तदा क-ल्पितं किल्रेसायां द्वाविष मिलिष्यतः । अस्य मचिन्हं किल्पतम् । पुनर्मअमबरेसे संयोज्ये । अबमित्रभुने अकोणबकोणौ प्रत्येकं समकोणौ भविष्यतः । इदमशुद्धम् । असिदिष्टं समीचीनम् ॥



<sup>9</sup> लम्बनिष्कासनं निरूप्यते A.; K. लम्बनिष्काशनं निरूप्यते J. २ कृतः D., A, J. ३ K., J. and J. have पिण्डकल्पित°. ४ निष्काश्यः J. ५ J., A., and K. insert यथ्यं लम्बः अविके पतितस्तदायं लम्बो जातः । यदि न पतित तदा after निष्कास्यः. ६ इदमेवेष्टम् J. ७ A. and K. have रेखा in place of संपातयोगरेखा.

#### अथ पत्रदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि द्वयोर्धरातलयोरेकस्मिन् धरातले एकचिहात् निः-स्रुते द्वे रेखे स्तर्तदा द्वितीयधरातले एकचिहादेव निःस्तरे-खयोः समानान्तरे यदि भवतस्तदा ते धरातले अपि मिथः समानान्तरे भविष्यतः।

यथा बचिदहचिद्दे कल्पिते । बअरेखा हदरेखायाः समाना-

न्तरा बजरेला हझरेलायाः समानान्तरा कल्प्या । पुनर्बनिहात् बवलम्बो हिनिहस्य घरातले नि-फ्लास्यः । पुनरसिन्नेव घरातले वतरेला हद-रेलायाः समानान्तरा निष्कास्या । वकरेला हझरेलायाः समानान्तरा निष्कास्या । वतवक-रेले बअवजरेलयोः समानान्तरे भविष्यतः ।



बबरेला वतवकरेलयोर्छम्बोऽस्ति । तसात् बअबजरेलयोरुपरि रूम्बो भविष्यति । तदा धरातल्रह्रयेऽपि रूम्बो भविष्यति । तदा ह्रे धरातले समानान्तरे भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

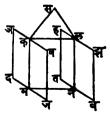
### अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

ये द्वे समानान्तरे घरातले एकघरातले संपातं कुरुत-स्तदा द्वे संपातरेखे समानान्तरे भविष्यतः।

यथा अबजद्धरातल्**हझवत**घरातले द्वे समानान्तरे **कलमन-**धरातले संपातं कुरुत इति कल्पितम् । तसात्

कमसंपातरेला छनसंपातरेला एते द्वे समानान्तरे भविष्यतः । यदि न भवतस्तदा सचिद्वे मि-लिते कल्पिते ।

यदि एते धरातले वर्द्धिते सचिद्वे मिलिष्यतः। इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥



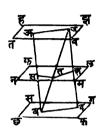
<sup>9</sup> निष्काइयः J. २ निष्काइया J.

#### अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

यावन्ति धरातलानि समानान्तराणि द्वयो रेखयोः संपातं कुर्वन्ति तानि रेखयोरेकनिष्पत्तौ संपातं करिष्यन्ति ॥

यथा हम्रवत्वरातलं कलमन्धरातलं सगफक्ष्वरातलं

तानि समानान्तराणि अबरेखाया असबचिद्वेषु जदरेखाया जशदचिद्देषु संपातं कुर्वन्तीति कस्पितानि । पुनर्बजअजबदरेखा योज्याः बजरेखा कलमनधरातले तचिहे संपातं क-रोति । पुनस्तसरेखा तशरेखा संयोज्या । तत्र हवकमाभ्यां अबजित्रभुजे अजतसरेखयोः सं-

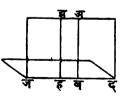


पातः कृतः । तत्र अजतसरेखे समानान्तरे भविष्यतः । एवं बदतश-रेखे समानान्तरे भविष्यतः । तसात् अससवनिष्यत्तिजेततवनिष्य-त्तितुत्या जशशदनिष्पत्तितुत्या च भविष्यति । ईदमिष्टम् ॥

### अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८ ॥

एकरिमन धरातले यो लम्बो भवति तत्संसक्तधरातलं तस्मिन् धरातले लम्बो भविष्यति ।

यथा अबम् एकस्मिन् धरातले लम्बोऽस्ति । अत्र एकं धरातलं संब्रमम् । उभयोर्घरातलयोर्जदसंपातरेखा उत्पन्ना । अत्र हचिहं कल्पितम् । हझल-म्बो जदरेखायाः संलग्नधरातले कार्यः । अयं प्रथमधरातले लम्बो भविष्यति । या रेखा अस्मिन् धरातले हृचिह्नात् निःसृता-



स्ताः सर्वी अपि प्रथमधरातले लम्बो भविष्यति । एवं यश्विहं जद-रेखायां भवति तत्रैतादृशमेव भवति । तसात् द्वयोर्धरातस्र्योः संपातः समकोणो भविष्यति ॥

१ इदमेवेष्टम् J.

## अथैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९ ॥

द्वे धरातले मिया संपातं कुरुत एकस्मिन् धरातले च **लम्बरूपे भवतः। अनयोः संपातरेखापि लम्बरूपा भवि**-प्यति ।

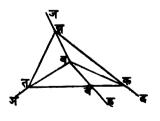
यथा अवजद्भरातलं हृश्वतभरातलं च अनयोः संपातरेला कलरेला कल्पिता । यसिन् धरातल्रह्मयं लम्बरू-पमिता तिसान् धरातले यदि कलरेखा लम्ब-रूपा न भवति तदा छचिहात् छम्छम्बः अज-धरातले अदसंपातरेखायां निष्कासः । छनल-म्बश्च तझघरातले झवसंपातरेखायां निष्कासः। एते द्वे लमलनरेखे तसिन् धरातले लम्बरूपे म-विष्यतः । इदमशुद्धम् । असदिष्टं समीचीनम् ॥

## अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २०॥

यदा त्रयो धरातलकोणा एकं घनकोणं वेष्टयन्ति तदा कोणद्वययोगस्तृतीयकोणादधिको भवति ।

यथा अवजकोणः अबदकोणो जबदकोणो वघनकोणं वेष्ट-

यन्ति । तदैते श्रयः कोणा यदि समाना भवन्ति तदेष्टं प्रकटमेव । यदि न्यना-विके स्तस्तदा अ**बद**कोणः प्रत्येकशेष-कोणादिषको भवतीति कल्पितम् । तत्र अबदकोणात् अबहकोणः अबज-कोणतुल्यः पृथकार्यः। पुनर् अवभुज-



द्वभुजयोरुपरि तनिइकिचिहे कल्पिते । पुनस्तवकरेखा संयोज्या । पुनर्षवतुत्यं बझं प्रथकार्यम् । पुनस्तझकझरेले संयोज्ये । एवं तब-

<sup>9</sup> निष्कात्यः K., A., J. २ निष्कात्यः K., A., J. ३ इष्टं समी-चीनम् V.

श्रित्रमुने तबवित्रमुने च तबमुन एक एवासि । श्रवमुनववमुनौ समानौ सः । द्वयोर्भुनयोरन्तर्गतकोणोऽपि समान एव । तदा तंश्र-तबो समानौ मविष्यतः । तश्रश्रकयोर्थोगस्तकादिभकोऽस्ति । तस्सात् श्रकं वकादिभकं भविष्यति । तसात् श्रवककोणो ववकको-णादिभको मविष्यति । तसात् अवज्ञकोणदबज्जकोणयोर्थोगः अवद-कोणादिभको भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

घनकोणं यावन्ति धरातलानि वेष्टयन्ति तेषां योगश्चतुः-समकोणास्यूनो भवति ।

यथा बेघनकोणं झबहकोणहबवकोणझबवकोणा वेष्टितं कु-वेन्ति । पुनर्हझझवहवरेखाः संयोज्याः । पुनर्हझबत्रिमुजे तिचहं कल्पितम् । हत-झतवतरेखाः संयोज्याः । सर्वे नवकोणा

**हतझ**त्रिभुज**हतव**त्रिभुज<mark>झतव</mark>त्रिभुजेषु नैवकोणानां तेषां योगः षदसमकोणतुल्यो-

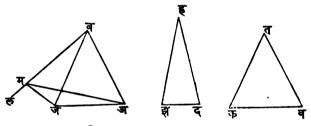
ऽस्ति । तेषु नवकोणेषु द्वी कोणी हिचिहे द्वी झिचिहे द्वी विचिहे स्ति स्तेषां योगो हुझवित्रमुजस्य षद्कोणा भैवन्ति ते च द्विसमकोणतुल्या भिवन्ति । तस्मात् तिचहस्य त्रयः कोणाश्चतुःसमकोणतुल्या भैवन्ति । षद्कोणा हृबझित्रमुजहृबवित्रमुजझबवित्रभुजानां ता- हृज्ञा हृचिहृझचिह्वचिह्नेम्यो भवन्ति । तेषां योगः प्रथमषद्कोणयोगादिषको भविष्यति । तस्मात् बचिहृस्य त्रयः कोणास्तिचह्नकोणत्रयेम्यो न्यूना भविष्यन्ति । तस्मात् चतुर्भ्यः समकोणेम्यो न्यूना भविष्यन्ति । तस्मात् चतुर्भ्यः समकोणेम्यो न्यूना भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

९ तवतझी V. २ बघनकोणो K., J. ३ °गैवेंछितमस्ति । K., J. ४ तेषां नवकोणावां V. ५ मिवष्यन्ति V. ६ मिवष्यन्ति V. ७ तबिहं च चतुःसमकोणाज्यूनं जातम् । इदमेनेष्टम् । K., A., & J. in place of the last part.

## अथ द्वाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २२ ॥

यदि त्रयो धरातलकोणाः समानभुजा भवन्ति तेषां प्रत्येकद्वययोगस्तृतीयादंधिकोस्ति चेत् तदा तत्कोणसम्मुख- भुजेम्यस्त्रिभुजो भवितुमईति तत्र भुजद्वययोगो तृतीयभुजा- दिधको भविष्यति।

यथा बहतास्रयो घरातलकोणाः किल्पताः । बअबजहदहझतव-तकाः समानभुजाः किल्पताः । पुनर् अजदझवकतत्कोणसन्मुसभुजाः किल्पताः । यदि सन्मुसभुजा मिथः समाना भवन्ति तदा भुजद्वय-योगस्तृतीयभुजादिषको भविष्यति । यदि न्युनािषकास्तदा वकम् अ-



धिकं कल्पितम् । जबरेसातो बचिह्ने जबलकोणो हकोणतुत्यः कार्यः । पुनर्बमं बजतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्जमअमरेसे संयोज्ये । तसात् जमभुजो दश्भभुजतुल्यो भविष्यति । अजजमयोगोऽसादिधकोऽस्ति । अमं वकादिधकमस्ति । कुतः । अबमकोणो बकोणहकोणयोगतुल्य-स्तकोणादिधकोऽस्ति । भुजाश्च मिथः समानाः सन्ति । तसात् अजजमयोगो वकादिधको भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

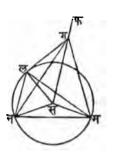
# अथ त्रयोविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २३ ॥

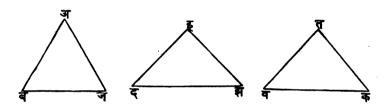
तादृशत्रयधरातलकोणेभ्यः पृथक् घनकोणिचकीर्पास्ति येषां धरातलकोणानां योगश्चतुर्भ्यः समकोणेभ्यो न्यूनः स्यात् प्रत्येककोणद्वययोगस्तृतीयकोणादिधकः स्यात् ।

<sup>9</sup> समकोणाः समभुजा J. २ °द्धिको भवति तदा V.

यथा अहतत्रयो घरातलकोणाः कल्पिताः । एषां भुजाः समानाः कार्याः । ते अबअजदहहझतवतकाः कल्पिताः । पुनरेतत्कोणस-

न्मुलभुजेम्यो बजदझवकसंज्ञेम्य एकं त्रिमुजं कार्यम् । तित्रमुजं लमनं किल्पतम् । तत्र लमभुजो बजतुल्यो मनभुजो दझभुजतुल्यो लनभुजो वकभुजतुल्यश्च किल्पतः । पुनरसिन् । त्रिमुजे लमनवृत्तं कार्यम् । अस्य केन्द्रं सिचिहं किल्पतम् । पुनः सलसमसनरेखाः संयोज्याः । बजं लमतुल्यमित । बअभुजजअभुजौ लस-





भुजसमभुजतुल्यौ मविष्यतो वा न्यूनौ वाऽधिकौ भविष्यतः । यदि समानौ स्तस्तदा अकोणो लसमकोणतुल्यो भविष्यति । एवं हकोणो मसनकोणतुल्यो भविष्यति । तकोणश्च नसलकोणतुल्यो भविष्यति । तदा त्रयाणां कोणानां योगः सकोणत्रयतुल्यो भविष्यति । तदा चतुर्भिः समकोणेस्तुल्यो भविष्यति । कल्पितं च कोणत्रययोगश्चतुर्म्यः सम-कोणेम्यो न्यूनोऽस्ति । इदमनुपपन्नम् ॥

पुनर्यदि बअभुजजअभुजो लसभुजसमभुजयोर्न्यूनौ स्तो बज-भुजो लमभुजे स्थाप्यस्तदा अकोणो लसमित्रभुजान्तः पतिष्यति । तसात् अकोणो लसमकोणादिषको मिवष्यति । एवं हकोणो मसन-कोणादिषको मिवष्यति । तकोणो नसलकोणादिषको मिवष्यति । तसात् त्रयाणां कोणानां योगः समकोणचतुष्ट्यादिषको भविष्यति ।

तसात् प्रैत्येककोणानां भुजो व्यासाद्वीदिषको मविष्यति । पुनः सिष्ठात् सफलम्बो वृते शक्कुवत् करूप्यः । पुनस्तसात् लम्बात् सगं तै। दशरेसायास्तुत्यं पृथकार्य यस्या वर्गो लैसवर्गयुतः अववर्गतुत्यो भवेत् पुनर्गलगमगनरेसाः संयोज्याः । तसात् गधनकोण इष्टो मविष्यति । कुतः । यैतस्रयः कोणा ये धनकोणसमाश्चिष्टास्तेषां भुजा इष्टानां त्रयाणां कोणानां भुजैः समानाः सन्ति । एतष्यमाणां सन्युस्यभुजाश्च इष्टकोणत्रयसम्बस्युजसमानाः सन्ति । तसीदेते त्रयः कोणा इष्टकोणत्रयसमाना भविष्यन्ति । इद्मेवेष्टम् ।

अथ च अकोणो छसमत्रिभुजानतः कुतः पति । यतः पत्येकं छसभुजमसभुजयोर्बअभुजतुल्यजअभुजतुल्यं पृथक्कियते । पुनर्छचिन्हमचिन्हं केन्द्रं कृत्वा बआतुल्यजआतुल्यन्यासार्घ कृत्वा
वृत्तद्वयं कार्यम् । एते द्वे वृत्ते त्रिभुजान्तः संपातं करिष्यतः । यदि
त्रिभुजान्तः संपातं न करिष्यतस्तदा छमभुजतुल्यवजभुजो बआमुजजअभुजयोगान्यूनो न मविष्यति । इदमग्रुद्धम् ।

यदि वृत्तसंपातिचा छिन्द्रमिना च रेखे संयोज्येते तदा वअ-जित्रभुजतुल्यं लसनित्रभुजान्तरेकं त्रिभुजमुत्पन्नं भविष्यति । तसा-दुत्पन्नत्रिभुजमस्तककोणः सकोणादिषको भविष्यति । मस्तककोण-सन्मुखमुजोत्पन्नी द्वौ कोणौ लकोणमकोणयोर्क्यूनौ भविष्यतः ॥

अथ चतुर्विशतितमं क्षेत्रम् ॥ २४ ॥

समानान्तरघरातलघनक्षेत्रसन्मुखधरातलानि समानमु-जानि भवन्ति ।

यथा घनक्षेत्रम् अवं कल्पितम् । अजहद्दघरातलबझवतघरातले

१ प्रत्येकं A. २ तथा प्रयक्षार्थे यथास्य वर्गः A., K., J. ३ अववर्गस्यस्व-र्गवोर्थोगतुस्यो भवति A., K., J. ४-५ गकोणत्रयाणां तिसो भुजाः कल्पितघरा-तककोणत्रयसन्भुवभुजैः समानाः । A., J., and K. in place of the sentence marked. ६ J. omits एते. ७ तसादुरपत्रश्चिभुजयस्तकको-णसन्भुवभुजोत्पत्रौ द्वौ कोणी स्वकोणमकोणयोर्न्यूनौ भविष्यतो मसाककोणः स्वको-शाद्यिको भविष्यति । K., A.

सन्मुलघरातके कल्पिते । अनवोर्भुजाः समाना मविष्यन्ति । कुतः । अजहद्धेरातके झजअब-धरातक्ष्वहृद्दत्वधरातके च समानान्तरिते पति-ते सः । एवं झबह्जधरातक्ष्वतद्वअधरातके पतिते सः । तदा जअसंपातरेखाहृद्दसंपातरेखे समानान्तरे भविष्यतः । अनेनैव प्रकारेण जह-



संपातरेखा अदसंपातरेखे मिथः समानान्तरे भविष्यतः । एवं श्रवस्तर-संपातौ समानान्तरौ भविष्यतः । एवं श्रवस्रतसंपातौ समानान्तरौ मविष्यतः । तसात् अजहद्धरातल्लब्स्वत्वत्वरातले च समानान्तर-समानसुचे मविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ पञ्चविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २५ ॥

समानान्तरधरातलस्य धनक्षेत्रस्य मिश्रः सन्मुखधरात-लयोर्मध्यगतसमानान्तरं धरातलं भागद्वयं चेत् करोति तदा अनयोः लण्डयोर्निष्यत्तिर्धरातलखण्डयोर्निष्यत्तिसमामा भविष्यति ।

यथा अवं घनक्षेत्रं किर्पतम् । अस्य वत्रअकघरात्रक्वलमन-सन्मुखघरात्रक्योः समानान्तरघरात्रलेन जदहृक्षेत्र खण्डद्वयं कूँतमिति किर्पितम् । तत्र अजसण्डह्व-सण्डयोनिष्पत्तिः अक्षघरात्रल्लण्डनहृघरात्रल्लण्डयो-निष्पत्तितुल्या मविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अमभुज उभयदिशि सगपर्यन्तं वर्द्धनीयः । हअ-दिशायां अफं फर्छं हअतुल्यं पृथकार्यम् । हमदि-शायां मखं खरं हमतुल्यं पृथकार्यम् । क्षेत्रं संपूर्ण

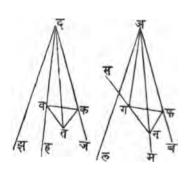
श्राया मस्त स्वर हमतुल्य पृथकायम् । क्षत्र सपूर्ण कं १ यतः K., A. २ घरातछं झजअबधरातछबहृद्तधरातछयोः समानान्त-राजयोः समानान्तरेणेदं पतितमित्ता । A., K., J. ३ K., A., and J. have मून्योः instead of धरातछखण्डयोः. ४ इतमस्तीति J. ५ अजधरातछखण्ड-योनिष्यत्वा तत्या मनिष्यति । K., A. ६ पूर्ण J., V.

कार्यम् । यदि संपूर्णे छञ्चम् अञ्चयावद्धातरूपं हनयावद्धातरूपस्य रम्भस्य समानं भवति तदा छजं घनक्षेत्रं अज्ञघनक्षेत्रयावद्धातरूपं हवघनक्षेत्रयावद्धातरूपं जरघनक्षेत्रयावद्धातरूपं हवघनक्षेत्रयावद्धातरूपं अवदि छञ्चं रमान्यते । यदि छम्नं रमान्यते । यदि छजं घनक्षेत्रं जरघनक्षेत्रान्यूनं भविष्यति । यदि अधिकं स्यात्तदा इदमप्यधिकं भवति । तसात् अञ्चनह्यात्रस्य अज्ञहवघनक्षेत्रसण्डयोर्निष्पत्तिः अज्ञहवघनक्षेत्रसण्डयोर्निष्पत्त्योः समाना भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

# अथ षड्विंशित्तितमं क्षेत्रम् ॥ २६ ॥ एकरेखैकिचिह्रोपरि घनक्षेत्रकोणतुल्यकोणचिकीर्पास्ति ।

यथा अबरेखातः अचिहे ताहशो दघनक्षेत्रकोणर्तुल्यः कोणः

कर्तव्योऽस्ति । यथा जदहं ज-दशं हदशं घरातलकोणाः वेष्ट-यन्ति । तत्र दहरेखायां विचढं कल्पितम् । पुनर्वचिद्वात् जदश-कोणघरातले वत्तलम्बो निष्कास्यः । पुनस्तदरेखा योज्या । पुनर्वअरे-खाया अचिद्वे बआलकोणबअम-कोणी जदशकोणजदतकोणतुल्यौ



कार्यो । पुनरमरेखाया दततुल्यम् अनं पृथकार्यम् । पुनर्निचिह्नात् नसलम्बो बअलकोणधरातले निष्कास्यः । पुनरसाल्लम्बात्तवतु-ल्यं नगं पृथकार्यम् । पुनर्गअरेखा संयोज्या । तसात् अधनक्षेत्र-कोणः असांकिमष्टो भविष्यति ॥

#### अस्योपपत्तिः ।

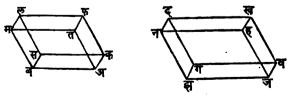
दजरेसायां कचिद्वं कल्पनीयम् । पुनर्वकरेसा कतरेसा संयोज्या

१ तुल्पकोणनिकीषांस्ति K. २ अस्मिदिष्टो K., A.

पुनर् अवरेलातो दकतुल्यम् अफं पृथक्कार्यम् । पुनर्गफनफरेले संयोज्ये । अनं दततुल्यं नगं वततुल्यमितः । अनगकोणदतव-कोणौ प्रत्येकं समकोणौ तः । तसात् अगं दवसमानं भविष्यति । पुनरि वअमकोणजदतकोणौ समानौ कृतौ तः । फअभुजअन-भुजौ कद्मुजदतभुजयोः समानौ तः । फनमुजः कत्मुजेन समानौ भविष्यति । नगमुजतवभुजौ पूर्वं समानावात्ताम् । फनगकोणकत-वकोणौ प्रत्येकं समकोणौ तः । तसात् फणभुजः कवभुजेन समानौ जातः । फअभुजअगमुजौ कद्मुजदवभुजयोः समानावात्ताम् । त-सात् फअभुजअगमुजौ कद्मुजदवभुजयोः समानावात्ताम् । त-सात् फअभुजअगमुजौ कद्मुजदवभुजयोः समानावात्ताम् । त-सात् फअभुजअगमुजौ समानौ भविष्यतः । एवं निश्चीयते गअलकोणवद्मकोणौ समानौ भविष्यतः । वअलकोणजद्मकोणौ समानौ कृतावात्तां । तसात् त्रयो घरातलकोणा अघनकोणसंलमा दघनकोणनेष्ठकानां त्रयाणां घरातलकोणानां समाना भविष्यन्ति । पुनर् अघनकोणो दघनकोणेन समानो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ सप्तर्विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २७ ॥ एकरेखायां समानान्तरघनक्षेत्रसजातीयघनक्षेत्रस्य चिकी-र्षास्ति ।

यथा अबरेखायां जदंसमानान्तरघरातलघनक्षेत्रसर्जातीयघन-क्षेत्रं कर्त्तव्यमस्ति । पुनर् अचिहे जकोणतुल्यो घनकोणः कार्यः । पुन-र्जञ्जवनिष्पत्तितुल्या अवअकयोनिष्पत्तिः कार्या । जञ्जजहयो-



निष्पत्तितुत्या अवअतयोर्निष्पत्तिः कार्या । पुनस्तवधरातलं पूर्णं कार्यम् । तिचहवचिहमचिहेभ्यः तफरेसामलरेसावसरेसा अकरे-

९ ज़द्धनक्षेत्रसजातीयधनक्षेत्रं कृतम् । K., A. २ समानजातीय $^{\circ}$  D. मा $\circ$  १९

सया तुल्याः समानान्तराश्च कार्याः । पुनः फकफलकसलसरेखाः संयोज्याः । तसात् घनक्षेत्रमिष्टं संपूर्णे भविष्यति । इष्टघनक्षेत्रसजा-तीयं च भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथाष्टाविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २८ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रस्य मिथः सैन्मुखधरातलयोः कर्णगतधरातलमर्द्धं करोति। तच्छेदितक्षेत्रद्वयमुत्पादयति च। यथा अनुधनक्षेत्रम् । तक्षवनसन्मस्वधरातलयोजेहकर्णस्यकर्ण-

यथा अबघनक्षेत्रम् । तअवबसन्मुखघरातलयोर्जदकर्णह्झकर्ण्-गतजदह्झधरातलेन खण्डद्वयं कृतम् । अतो जाते लेदितक्षेत्रे समाने भविष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

असिन् छेदितक्षेत्रे घनक्षेत्रसन्मुखघरातलानि वेष्टितानि सन्ति । सन्मुखभूतलानि मिथः समानानि सन्ति ।

कर्णगतधरातलं द्वयोरेकमेबास्ति । त्रिभुजेऽपि समाने स्तः । कुतः । ये धरातले कर्णगतधरा-तलेनाद्विते स्तस्तेषामेते त्रिभुजे अर्द्वरूपे स्तः । तस्मात् उमे क्षेत्रे समाने स्तः । इदमेवेष्टम् ॥

अनेनेदं निश्चितं छेदितक्षेत्रं यदि समाना-न्तरधरातलपूर्णं क्रियते तदा छेदितघनक्षेत्रं संपूर्णघनक्षेत्रस्यार्द्धं भवति ॥

#### अथैकोनत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ २९ ॥

एकस्मिन् धरातले समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि मुख-रेखान्तर्गतानि यावन्ति सन्ति तेषां लम्बाश्चेत्समाना भवन्ति तानि घनक्षेत्राणि समानानि भवन्ति ।

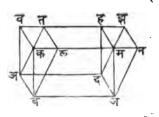
यथा बहबझे द्वे घनक्षेत्रे अबजद धरातलोपरि कल्पिते । वझ-

१ सन्मुखकर्णगतसन्मुखधरातलं K., A. २ D. omits मुखरेखान्त-र्गतानि.

रेखाकनरेखयोरन्तरे कल्पिते। अनयो-र्लम्बो यदि समानौ भवतस्तदेते घन-क्षेत्रे समाने भविष्यतः।

अस्योपपत्तिः ।

अलच्छेदितघनक्षेत्रं दनच्छेदितघ-नक्षेत्रं च समानमस्ति । कुतः । अवत-



त्रिभुजदहझत्रिभुजयोः समानत्वात् । बक्तस्त्रिभुजजमनत्रिभुजे च समाने स्तः । वकस्त्रत्वरातस्तं हमनझधरातस्तं च समानमस्ति । अबक्तवधरातस्रं दजमहधरातस्रं च समानमस्ति । अबस्त्रतधरातस्रं दझनजधरातस्रं च समानम् । एतयोः शेषं छेदितधनक्षेत्रे योज्यते । तदा द्वे घनक्षेत्रे मिथः समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३० ॥

एकस्मिन् धरातले यावन्ति समानान्तरधरातलानि घन-क्षेत्राणि भवन्ति समानलम्बानि च रेखाद्वयान्तर्गतानि न भवन्ति तदैतान्यपि समानानि भवन्ति ।

यथा बहबझे द्वे घनक्षेत्रे अवजद्धरातले कल्पिते। एकस्य मुखं लहं द्वितीयस्य मुखं सझं कल्पितम्। अन-योर्लम्बो समानो स्तः। तदैतौ समानौ भवि॰ क्व क्व म

अस्योपपत्तिः ।

कसरेला नचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया छत-रेला च मचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनीया । गृहरेला

विच्हपर्यन्तं वर्द्धनीया । पुनर् अमबनद्वजफरेखाः संयोज्याः । तदा ववं घनक्षेत्रमुत्पन्नं भविष्यति । अस्य मुखं नवमस्ति । इदं घनक्षेत्र-

<sup>9</sup> Omitted in K., A. 3 Omitted in K., A.



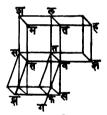
निष्टक्षेत्रद्वयेन सार्द्धमेकस्मिन् धरातलेऽस्ति । द्वयो रेखयोरन्तर्गतमस्ति । इदमुत्पन्नं घनक्षेत्रं प्रत्येकं घनक्षेत्रेण समानं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथैकत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३१ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि चेत् समानधरातले भव-नित समानलम्बानि चेद्भवन्ति निजधरातले लम्बरूपाणि भवन्ति तदा समानानि भवन्ति ।

यथा बकझले द्वे घनक्षेत्रे अबजदघरातले हझवतघरातले स्तः । झबरेला सचिइपर्यन्तं वर्द्धनीया । अद्युल्यं वसं प्रथकार्यम् । वचिहोपरि सवगकोणो दअबकोणतुल्यः कार्यः । अबतुल्यं वफं प्रथकार्यम् । वतअनो समानलम्बौ दअबधरातले सवगधरातले स्तः ।
तसात् वकोणअकोणौ घनकोणौ समानौ भविष्यतः ।





पुनः फसघनक्षेत्रं संपूर्णं कार्यम्। इदं बकघनक्षेत्रतुल्यं भविष्यति ।
पुनः सचिद्वात् समरेला तवरेलायाः समानान्तरा कार्या । इतं तथा
वर्द्धनीयं यथा मचिद्वे मिलति । तवं तथा वर्द्धनीयं यथा खचिद्वे
मिलति । पुनर्वशाखसे घनक्षेत्रे पूर्णे कार्ये । तदा खसफसघनक्षेत्रे
समाने भविष्यतः । तसात् खसबकघनक्षेत्रे समाने भविष्यतः ।
मूलखसनिष्पचिर्वशेन तथास्ति यथा मृतखसयोनिष्पचिर्वमेनास्ति ।
खसफसी समानौ स्तः । तसात् भृत्युक्तसतुल्यघनक्षेत्रयोनिष्पचिमूलबक्योनिष्पचिरपि वशेन तथास्ति यथा मृत्युक्तसतुल्यघनस्तुल्यघरात-

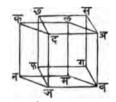
१ झललफयोझेलबकदुल्ययोर्निष्यत्तिर्वद्दोन तथास्ति यथा झलफसपरातल-योझेलबकधरातलयोद्धाल्ययोर्निष्यत्तिर्वद्दा<sup>®</sup> J.

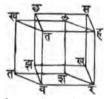
स्र्योनिष्पत्ति**झेल्बक्**धरातस्र्योरपि निष्पत्तिवेशधरातलेनास्ति । तदैते धनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ द्वात्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३२ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणि समानधरातले चेद्रवन्ति पिण्डाश्च तद्धरातले लम्बरूपा न भवन्ति लम्बाश्च तुल्या भवन्ति तदैतानि समानानि भवन्ति ।

यथा वैकरखे बदरतधरातले कल्पिते । यदि असवगजफदछ-लम्ना बदभूतलात् मके भूतले चेत् निर्फासा इसरखवझतछ-





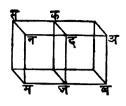
ल्रम्बाः शखे भूतले च नि<sup>र्</sup>कास्या उमे क्षेत्रे पूर्णे कार्ये । तदा बकव-क्षे समाने भविष्यतः । एवं हि रखरक्षे समाने भविष्यतः । बक्लरक्षे समाने आस्ताम् । तसात् बकरखे अपि समाने भविष्यतः । इद-मिष्टम् ॥

#### अथ त्रयस्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३३ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्राणां यदि लम्बाः समाना भव-न्ति तदा तेषां निष्पत्तिर्धरातलनिष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा बकझलघनक्षेत्रयोबिदझते उमे धरातले कल्पिते । पुन-जीदरेखोपरि झतधरातलतुल्यजनधरातलं कार्यम् । अदनं संपूर्णा सरलैकरेखा भवति । पुनर्जसं घनक्षेत्रं पूर्ण कार्यम् । यदि जसघन-

<sup>9</sup> Omitted in A., and K. २ A. K. and J. have आ in place of ₹ althrough. ३ A., K. and D. insert कृतः after कल्पिते; V. has also कृतः on the margin. ४ निष्काऱ्यन्ते J. ५ तसात् V.



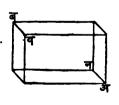


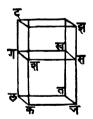
क्षेत्रे बक्षधनक्षेत्रे समानलम्बे समानधरातले च भवतः तैदा जसघन-क्षेत्रं झलघनक्षेत्रेण समानं भविष्यति । कुतः । धरातलयोर्लम्बयोश्च साम्यात् । जसघनक्षेत्रवक्षघनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्धरातलयोर्निष्पत्तितुल्या जाता । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ चतुर्स्त्रिशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३४ ॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रयोः पिण्डौ स्वस्वधरातलयोर्छ-म्बरूपौ यदि भवतो घनक्षेत्रे समाने च भवतस्तदा धरात-लयोर्निष्पत्तिर्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भवति यदि तयो-रेतैद्रूपा निष्पत्तिः स्यात्तदा ते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः।

यथा अबजद्घनक्षेत्रे अवजलयोर्धरातलयोः कल्पिते । वबिपण्ड-ल्रद्दिपण्डौ लैम्बरूपौ यदि समानौ भवतस्तदैतयोर्धनक्षेत्रयोर्निष्पत्ति-द्वियोर्धरातलयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । यदि घनक्षेत्रे समाने भवत-





र्स्तयोर्धरातलेऽपि समाने भविष्यतस्तदैतयोर्धरातलयोर्निष्पत्तिर्लम्ब-योर्बिलोमनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यद्येतद्रूपानिष्पत्तिः स्यात्तदा ते

१ तस्मात् V. २ ईटशी K. and A. ३ J. drops लम्बरूपी. ४ °स्त-दातयो $^\circ$  J.

द्वे घरातले समाने भविष्यतः । तसात् द्वे घनक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । यदि वबलदौ लम्बौ समानौ न स्तः लैदमिषकं किल्पतम् । तसात् वबतुल्यं लगं पृथकार्यम् । लगं तखं जसं कशं ववतुल्यं पृथकार्यम् । पुनर्गखं खसं सशं शगं रेखाः संबोज्याः । तसात् अबं जगमुभे घनक्षेत्रे समानलम्बे भविष्यतः । तदैतयोर्निष्पत्तिर्धरातलयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । यदि कद्धरातलकगधरातले जद्धनक्षेत्रजगधनक्षेत्रयोर्भूमी कल्पिते अन्योर्लम्बौ समौ भविष्यतः । जद्दजगयोर्निष्पत्तिः कद्कगयोर्निष्पत्तिः समाना भविष्यति । लद्दलगयोर्रिष निष्पत्तिसमाना भविष्यति ।

यदि अबजदे घनक्षेत्रे समाने भैविष्यतस्तदैतयोर्निष्पतिर्जगघन-क्षेत्रेणैकरूपा भविष्यति । इयम् अवधरातलजलभरातलयोर्निष्पति-तुल्या भविष्यति । लदरेखाया निष्पत्तिर्लगरेखया वबरेखया चैकरूपा-स्ति । इयं विलोमनिष्पत्तिर्जाता । यदि अवजलनिष्पत्तितुल्यघनक्षेत्रयोः अबजगयोर्निष्पत्तिर्जदजगनिष्पत्तितुल्यलदलगयोर्निष्पत्तितुल्या भवति तदा उभे घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

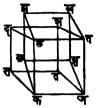
#### अथ पञ्चत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३५ ॥

समानान्तरधरातले उभे घनक्षेत्रे स्तस्तयोः पिण्डे धरा-तले लम्बरूपे न भवतस्ते द्वे घनक्षेत्रे समाने भवतस्तदा तयोर्धरातलयोर्निष्पत्तिर्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भवति यद्येताहशोर्निष्पत्तिर्भवति तदा द्वे घनक्षेत्रे समाने भवतः।

यथा अवजदे द्वे घनक्षेत्रे अवजलयोर्धरातलयोः कल्पिते । पुन-र्धरातलयोः कोणचिहेभ्यः अफझखवरगहलम्बास्तथा जझकछल-झतखलम्बाः निष्कास्याः । पुनर् अरजझे द्वे घनक्षेत्रे अवजदयो-

१ J. inserts तदा. २ J. has समाने. ३ भवतः J. and V.





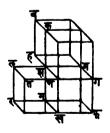
र्षनक्षेत्रयोः समाने संपूर्णे कार्ये । अरज्ञझ्योः क्षेत्रयोर्निश्चयेनेष्टसिद्ध-मस्ति । तसात् अवजदयोर्षनक्षेत्रयोरि । इष्टमसाकं निश्चितं भवि-ष्यति । कुतः । धरातल्लस्वयोः साम्यात् । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ पट्त्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३६॥

समानान्तरधरातलघनक्षेत्रयोः सजातीययोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति ।

यथा अवजदे घनक्षेत्रे किल्पते । तत्र अझजतयोर्निष्पत्तिः कझ-सत्तयोर्निष्पत्तितुल्या हैझवतिनष्पत्तितुल्या च किल्पता । पुनहेझरेखा वर्द्धनीया । वत्ततुल्यं झनं कार्यम् । पुनः कझरेखा वर्द्धनीया । सत-तुल्यं झमं कार्यम् । पुनर्गकफझखलानि घनक्षेत्राणि संपूर्णानि कार्याणि । एषु घनक्षेत्रेषु हे घनक्षेत्रे कमेणैकैकं विहाय चेद्रहेते तदा





तेऽभिमुल्खंसमानान्तरधरातलेन कृतसंपाते भविष्यतः । खल्डघनक्षेत्रं जद्घनक्षेत्रस्य समानं भविष्यति । तसात् अवगकघनक्षेत्रनिष्पत्ति-र्श्वहज्ञननिष्पत्तितुल्या भविष्यति । गकफज्ञघनक्षेत्रनिष्पत्तिः कज्ञज्ञस्य-

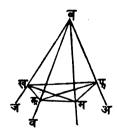
१ हझवतयोर्निष्पत्ति V. २ V. has सन्मुख for अभिमुख. ३ J. has खबरातलसमानान्तर .

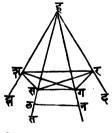
निष्पतितुत्या भविष्यति । फञ्चघनक्षेत्रजद्यनक्षेत्रतुत्यखरुघनक्षेत्र-योनिष्पत्तिः अञ्चञ्चलनिष्पत्तितुत्या भविष्यति । तसात् अवजद्घन-क्षेत्रनिष्पत्तिर्भुजयोनिष्पत्तेर्घनतुत्यास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ सप्तत्रिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३७ ॥

समानकोणधरातलद्वये चेन्निषणणे द्वे रेखे भवतस्तत्र भुज-द्वयरेखासंपातजनितकोणौ द्वितीयरेखाभुजद्वयसंपातजनित-कोणाभ्यां यथाकमं चेत्समानौ भवतः पुनर्निषण्णरेखातः कस्मादिप चिहादेको लम्बो धरातले नेयः पुनर्लम्बनिपातात् कोणपर्यन्तं रेखा कार्या तत्रास्यां रेखायां निषण्णरेखयोत्पन्नौ कोणो तदा समानौ भविष्यतः।

यथा अवजं दहशं द्वी धरातलकोणी कल्पिती। तत्र ववहते रेखे तथा निषण्णे कल्पिते यथोत्पन्नः अवयकोण उत्पन्नदहश्रकोणेन समानो भवति । एवं जववकोणो शहतकोणेन समानो भवति । पुनर्ववरेखाया हतरेखाया कचिहलचिह्नाभ्यां कमलम्बलनलम्बी अवजकोणधरातले दहश्रकोणधरातले मचिहनचिह्नस्थाने पतिताविति कल्पिती । पुनर्भवनहे द्वे रेखे योजिते । तसात् मबवउत्पन्नकोण-नहत्तउत्पन्नकोणो मिथः समानो भविष्यतः।





अत्रोपपत्तिः ।

बकं हसं तुल्यं कार्य यदि बकहली समानी न भवतः । पुनः

**१ हस**दुत्यं J.

भा० २०

सिवहात् सगलम्बो हनरेलायां नेयः । पुनर्भिवहगिवहाम्याम् अबरेखादहरेलयोरुपरि मफगरौ द्वौ लम्बौ नेयौ । पुनर्जवझहरेलयोरुपरि मखगशौ द्वौ लम्बौ नेयौ । पुनः फखरशकफसरकखसशरेखाः संयोज्याः । तसात् बकवर्गः कमवर्गबमवर्गयोयोगेन समानोऽस्ति । मबवर्गस्तु मफवर्गफबवर्गयोयोगेन समानो भविष्यति ।
तसात् बकवर्गः कमवर्गमफवर्गफबवर्गाणां योगेन समानो भविष्यति ।
तसात् कफम् अबे लम्बो भविष्यति । अनेनैव निश्चितं
कखं जबे लम्बो भविष्यति । सरं दहे लम्बो भविष्यति ।
सशं झहे लम्बो भविष्यति । बफकित्रभुने हरसित्रभुने बकोणहकोणौ समानौ सः । फकोणरकोणौ प्रत्येकं समकोणौ सः । बकभुजहसभुनौ मिथः समानौ सः । तदा बफं हरं तुल्यं भविष्यति ।
फकं रसतुल्यं भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण निश्चितं बखं हृशतुल्यं भविष्यति । तसात् वफखित्रभुजे हरशित्रभुजे बकोणहकोणयोः साम्यात् कोणयोभूजयोः साम्याच फखरशो समानौ भविष्यतः । फखरशभुजयोरुपरितनकोणौ मिथः समानौ भविष्यतः । मफखित्रभुजे गरशित्रभुजे पूर्वकोणाः समकोणेभ्यश्चेच्छोध्यन्ते तदा द्वौ कोणौ द्वयोः कोणयोः समानाववशिष्यतः । फखरशभुजौ च समानौ स्तः ।
तसात् फमरगौ समानौ भविष्यतः । फकं च रसतुल्यमितः । यदि
फकवर्गरसवर्गयोः फमवर्गरगवर्गौ चेच्छोध्येते तदा मकवर्गगसवर्गौ समानाववशिष्यतः । पुनर्मकवर्गगसवर्गौ बकहससमानवर्गयोः
शोध्येते तदा शेषं बमवर्गगहवर्गौ समानाववशिष्यतः ।

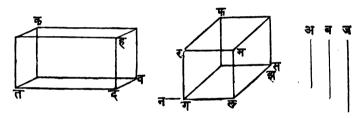
पुनर्निश्चयः कार्यः । बकमित्रिभुजे हसगित्रभुजे भुजा मिशः समानाः सन्ति । तसात् मववकोणनहत्तकोणौ समानौ भविष्यतः । इदमेवेष्टम् ॥

१ पुनरेतौ वर्गी बकहस्तवर्गयोः.

## अथाष्टत्रिंशसमं क्षेत्रम् ॥ ३८॥

यदि मिथो द्वे घनक्षेत्रे समानकोणे भवत एकघनक्षेत्रस्य त्रयो भुजा एकरूपनिष्पत्तौ यदि भवन्ति द्वितीयघनक्षेत्रस्य त्रयो भुजाः प्रथमभुजत्रयमध्ये मध्येनिष्पत्तितुल्याश्चेद्रवन्ति तदा ते द्वे घनक्षेत्रे मिथः समाने भविष्यतः ।

यथा अवजासिसो रेखा एकरूपनिष्यतौ कल्पिताः । पुनर्दहरेखा अरेखातुल्या कल्पिता । पुनर्दिचिहे एको घनकोणः कल्प्यः । पुन-देवमुजो बतुल्यः कार्यः । दत्तभुजश्च जतुल्यः कार्यः । पुनर्दक्षघन- क्षेत्रं समानान्तरभुजं पूर्णं कार्यम् । पुनर्रुमरेखा बतुल्या कल्पिता ।



छिचिहोपरि एकघनकोणो दकोणतुल्यस्तथा कार्यो यथा मलनकोणो हदतकोणतुल्यो भवति । मलझकोणश्च हदवकोणतुल्यो भवति । झलनकोणो वदतकोणतुल्यो भवति । पुनर्लसलगौ बतुल्यो पृथक् कार्यो । पुनर्लफघनक्षेत्रं पूर्णं कार्यम् । दकं घनक्षेत्रं लफघनक्षेत्रं मिथः समानं भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

यदि द्वलस्तमानभुजौ पिण्डौ कल्पितौ तदा दकं घनक्षेत्रं लफं घनक्षेत्रं हतमगघरातलयोर्निष्पत्तौ भविष्यतः । हतमगौ मिथः समानौ स्तः । कुतः । हदतकोणमलगकोणयोर्मिथः साम्यात् । दहभुजम-

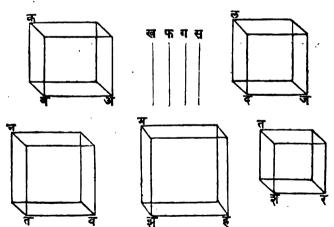
१-समानकोणे द्वे घनक्षेत्रे V., and J. २ मध्यनिष्पत्तिमुज° (मध्यमुज-निष्पत्ति°?) J.

स्र अनुजनिष्पत्तिर्र्शन्यु जदत्तभुजयोः निष्पत्त्या तुस्यास्ति । तसात् द्वे विष्येतः । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथैकोनचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ३९ ॥

यदि द्वयो रेखयोः सजातीयसमानान्तरधरातले घनक्षेत्रे भवतोऽन्ययोर्द्वयो रेखयोः सजातीयसमानान्तरधरातले घन- क्षेत्रे यदि भवतो यद्येताश्चतन्नो रेखा एकनिष्पत्तौ भवन्ति तदैतानि घनक्षेत्राण्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । यदि घनक्षे- त्राण्येकनिष्पत्तौ भवन्ति तदा रेखा अप्येकनिष्पत्तौ भवि- ष्यन्ति ।

यथा अवजदयोरुपरि अकजले द्वे घनक्षेत्रे सजातीये कल्पिते। हझवतयोरुपरि हमवने द्वे अन्ये घनक्षेत्रे कल्पिते। पुनरेताश्चतको रेला एकनिष्पत्तौ कल्पिताः। पुनरवजदनिष्पत्तितुत्या जदरेला सरेलानिष्पत्तिः कल्पिता। सरेलागरेलयोनिष्पत्तिः कल्पिता। हझ-



वतनिष्पत्तितुत्या वतफरेखानिष्पत्तिः कल्पिता । फेरेखाखरेखयोरपि निष्पत्तिः कल्पिता । तदा अकजलघनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः अवगरेखानिष्प-

<sup>1</sup> J. inserts तथैब.

त्तितुत्या भविष्यति । हमवनधनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्हझखरेखयोर्निष्पत्तितु-त्या भविष्यति । अवगरेखानिष्पत्तिर्हझखरेखानिष्पत्तितुत्यास्ति । तसादेतानि घनक्षेत्राण्येकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति ।

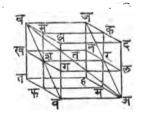
पुनरेतानि घनक्षेत्राण्येकरूपनिष्पत्तौ कल्पितानि । अबजदनिष्पति-ईझरशतुल्या कार्या । रशोपरि रतं घनक्षेत्रं वनघनक्षेत्रवत् कार्यम् । इदमपि हमघनक्षेत्रवत् भविष्यति । अकजल्योर्निष्पत्तिर्हमरतयो-निष्पत्तितुल्यास्ति । हमवनयोर्निष्पत्तितुल्यासीत् । तसात् वनरते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । सजातीये आस्ताम् । तसात् वत्तरेसा रशरेसा समाना जाता । तदैता रेखा एकनिष्पत्तौ भविष्यन्ति । इद-मेवासाकमिष्टम् ॥

अथ चत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४० ॥

घनहस्तक्षेत्रस्य मिधः सन्मुखधरातलयोर्भुजानामर्द्धं कार्य-मर्द्धचिद्वेषु धरातलद्वयं मिथः संपातकेर्तृ घनहस्तच्छेदकं कार्यं तदा धरातलयोः संपातरेखाघनहस्तकर्णयोः संपातो भविष्यत्यर्द्धे।

यथा अबं घनहस्तः कल्पितः । दहझते द्वे सन्मुखधरातले

किल्पते । द्वयोर्धरालयोर्भुजानां किचिइल-चिद्वमचिइनचिद्देषु तथा सचिइगचिइफ-चिद्वस्वचिद्देष्टदे कृतम् । अर्द्धचिद्देषु कफ-धरातललखधरातले संमाप्ते किल्पते । द्वयो-धरातलयोः संपातरेखा रशं किल्पता । घनइस्तकर्णम् अवं किल्पतम् । तदा अव-रशरेखे तचिद्वोपर्यदें संपातं करिष्यतः ।



अस्योपपत्तिः ।

जररअरेखे संयोज्ये । अरलित्रभुजे जरनत्रिभुजे लकोणनकोणी

<sup>9 °</sup>कारक पु. २ अर्धे संपातो भविष्यति.

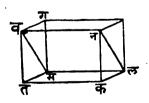
समकोणी सः । एतत्संबन्धिभुजी समानी । तदा अरभुजजरभुजी समानी भविष्यतः । पुनर्छरअकोणनरजकोणी समानी भविष्यतः । पुनर् अरनकोण उभयत्र योज्यते । तदा छरअकोणअरनकोण-योयोंगो द्वाभ्यां समकोणाभ्यां तुल्यो नरजकोणनरअकोणयोयोंगेन तुल्यो भविष्यति । तसात् जरअसरछैकरेखा स्यात् । पुनर्वशास्रवरेसे संयोज्ये ।

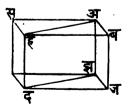
इदं निश्चितम् । अनयोर्थोगोऽपि सरलैकरेखा भविष्यति । जबअष-रेखा इतरेखायाः समाने समानान्तरे स्तः । तदा अजबबरेखे मिशः समाने समानान्तरे च भविष्यतः । अबकर्णोऽनयोर्धरातलेऽस्ति । तस्मा-दियं रेखा रशं छेत्यति । अरतित्रभुने बशतित्रभुने अरभुजबश-भुनौ समानौ स्तः । अनयोश्चिभुनयोः कोणावपि मिशः समानौ स्तः । तस्मात् अतं तबसमानं भविष्यति । रतं तशसमानं भविष्यति । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

#### अथैकचत्वारिंशत्तमं क्षेत्रम् ॥ ४१ ॥

यंगोरछेदितक्षेत्रयोः समानलम्बयोरेकस्य भूमिसिभु-जास्ति। द्वितीयस्य भूमी चतुर्भुजा समानान्तरभुजा पूर्वभूमे-द्विगुणास्ति। तदा ते छेदितक्षेत्रे समाने भविष्यतः।

यथा अवजदहशक्षेत्रं वतक्ष्यमनं द्वितीयं छेदितक्षेत्रं कल्पितस्। प्रथमस्य भूमिवदचतुर्भुजा द्वितीयस्य भूमिनकलत्रिभुजा कल्पिता।





पुनर्नेलचतुर्भुजं समानान्तरमुजं संपूर्ण कार्यम् । इदं बदचतुर्भुज-

<sup>9</sup> द्वयो° V. २ तदैते V.

समानं भविष्यति । पुनर्जसं घनक्षेत्रं कगं च संपूर्ण कार्यम् । एते द्वे घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । कुतः । मूमिलम्बानां समैत्वात् । तदै-तयोरद्धें छेदितक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुश्चै द्विजेन्द्रः सम्राड् श्रीमज्जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । प्रन्येऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्य्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति प्राप भूचन्द्रतुल्यः ॥ ॥ इति श्रीसम्राङ्जगन्नाथविरचिते रेखागणिते

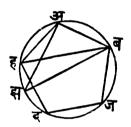
पकादशोऽध्यायः संपूर्णः॥११॥

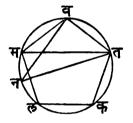
<sup>9</sup> साम्यात् J. J. drops अपि समाने।

# अथ ब्राद्शोऽध्यायः ॥ १२ ॥ तैत्र पञ्चदश क्षेत्राणि सन्ति ॥ १५ ॥ अथ प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

द्वे क्षेत्रे सजातीये द्वयोर्वृत्तयोर्मध्ये यदि स्यातां तदा तयोः क्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वृत्तव्यासवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

यथा अवजदहक्षेत्रं वतकलमक्षेत्रं च कल्पितम् । वझतनी व्यासौ कल्पितो । पुनर् अझवनबहतमरेखाः संयोज्याः । तदा अबहित्रभुजे वतमित्रभुजे अकोणवकोणौ समानौ स्तः । कोणयोः संवन्धिभुजौ सजातीयौ स्तः । अहबकोणतुल्यअझबकोणो वतम-तुल्यवनतकोणतुल्यो भविष्यति । तसात् अझबित्रभुजवनत-



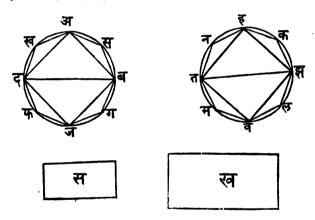


त्रिमुजे झअवकोणवनतकोणयोः साम्येन झअवकोणनवतकोणयोः समकोणभावित्वेन सजातीये भविष्यतः । अवयतभुजयोर्निष्पत्तिर्वझ-तनभुजयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । अवजदहक्षेत्रवतक्रुमक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः अववतयोर्निष्पत्तिवर्गतुल्यास्ति । तसात् द्वैयोः क्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्वझतननिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तसात् वझतनयोर्वर्गनिष्पत्तित्तुल्या भविष्यति । तसात् वझतनयोर्वर्गनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अँथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥ वृत्तफल्रयोर्निष्पत्तिर्व्यासवर्गयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

<sup>9</sup> अत्र V. २ V. drops अथ. ३ V. inserts तयो: ४ V. drops अथ. ৭ भवति V.

यथा अजहबन्ते किल्पते । बद्दस्तौ तैत्क्षेत्रयोर्व्यासौ किल्पतौ । यदि बद्दर्गस्तवर्गयोर्निष्पत्तिः अजन्त्रप्तरुवन्तप्तरुवन्तिष्पत्ति- वुल्या न भवति तदा अजन्त्तक्षेत्रसक्षेत्रनिष्पत्तिवुल्या किल्पता । सक्षेत्रं प्रथमनृत्तप्तरुवन्तं किल्पतम् । हवनृत्तप्ररुसक्षेत्रयोर्गन्तरं खक्षेत्रं किल्पतम् । पुनर्झहत्त्वप्रस्वत्वापे हिचहविद्वयोर्धदेते कार्ये । पुनर्झहहत्ततववद्भरेलाः संयोज्याः । तसात् हवक्षेत्रं हवनृत्ता- द्वेषर्णादिकं भविष्यति । पुनश्चत्वारि चापानि किचहलचिद्धमचिद्ध- निचहेप्वद्वितानि कार्याणि । एतेषां चापानां पूर्णज्याः संयोज्याः । तसात् चापानां मध्ये चत्वारि त्रिभुजान्युत्पद्यन्ते । प्रत्येकं क्षेत्रं सार्द्वादिषकं भविष्यति ।



अनेन प्रकारेण त्रिभुजानि ताबदुत्पादनीयानि यावच्छेषवृत्तख-ण्डानि खक्षेत्रात् न्यूनानि भवन्ति । तसात् बहुभुजोत्पन्नं क्षेत्रं कम-क्षेत्रं सक्षेत्रादिषकं भविष्यति । पुनर् अजवृत्ते सफक्षेत्रं कमक्षेत्र-सजातीयं कार्यम् । तसात् बदवर्गझतवर्गयोर्निष्पत्तिः सफक्षेत्रकम-क्षेत्रयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । अजवृत्तफल्लस्य सक्षेत्रफल्लस्य च

<sup>9</sup> V. has तयोः for तत्क्षेत्रयोः २ अजग्रत्तफलकल्पितान्यक्षेत्रनिष्पतितुल्या कल्पिता। तत्क्षेत्रं प्रथमश्रत्तफलान्यूनं सक्षेत्रं कल्पितम्। K., A.
३ °रन्तरतुल्यं K., A. ४ खखण्डाधीं K., A.

निष्णतितुत्यासीत् । तसात् सफक्षेत्रकमक्षेत्रवोनिष्णतिः अज-वृत्तफलस्य सक्षेत्रफलस्य च निष्णत्तिसमाना भविष्यति । पुनः सफक्षेत्रअजवृत्तफलस्य निष्णत्तिः कमक्षेत्रसक्षेत्रनिष्णतितुत्यास्ति । कमक्षेत्रं सक्षेत्राद्धिकमस्ति । तसात् सफक्षेत्रफलं अजवृत्तफलाद-धिकं भविष्यति । इदमगुद्धम् ॥

पुनर्बद्वर्गझतवर्गयोर्निष्पत्तिः अजनृत्तक्षेत्रह्ववृत्ताद्धिकान्य-क्षेत्रनिष्पत्तिमाना कल्पिता । तसात् झतबद्वर्गयोर्निष्पत्तिस्वयास्ति यथा ह्वाद्धिकक्षेत्रस्य निष्पत्तिः अजनृत्तफलेनास्ति वा हुववृत्तफलस्य अजनृत्तफलान्यूनक्षेत्रेण निष्पत्तिस्तत्तुल्यास्ति ।

पूर्वप्रकारेणैवेदमप्यशुद्धं कुर्मः । तसादसादिष्टं समीचीनम् ॥

## अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

त्रयम्निफलराङ्कोः खण्डचतुष्टयं कार्यं तत्रै पुनः खण्डद्वयं शङ्कुरूपं समानजातीयं कत्त्रीव्यमस्ति । तस्यैव शङ्कोः शेषे द्वे खण्डे छेदितक्षेत्ररूपे शङ्कधीदिधके समाने भवतस्त्रया कत्त्रीव्यम् ।

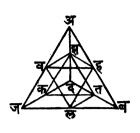
यथा अवजदशकोः अवजित्रभुजं भूमिः दं मुसं कल्पितम् । पुनस्तस्य षद् भुजा हझतवकलिचेहेष्वद्विताः कार्याः । पुनर्ह्झ्स- वहवझततकझकतलवलरेखाः संयोज्याः । एवं कृतेऽस्मदिष्टं सिद्धं सविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अहवझशडोर्झतकदशडोश्च त्रयो भुजा मिथः समानाः सन्ति !

१ ह्यक्षेत्रस्य म्यूनक्षेत्रनिष्पत्या तुल्यास्ति । K., A. १ पूर्ववदेतद्प्यनुप-पन्नम् । K., A. ३ तत्र सण्डद्वयं शङ्कर्णं समानं सजावीयं कर्त्तव्यमस्ति । K., A., V.

कृतः । अनयोर्भुजा वृतच्छक्कोर्भुजार्द्धमिताः सन्ति । एतानि त्रिभुजानि सजातीयानि भ-विष्यन्ति । कृतः । केचित्कोणा मिलिताः सन्ति । केचित्कोणाः समानाः सन्ति । कृतः । एतेषां कोणानां भुजा बृहद्भुजेभ्यः समानान्तराः सन्ति । तसादेतौ शक्क मिथः



सजातीयौ समानौ च भविष्यतः । बृहच्छ होः सजातीयौ च पतिध्यतः । पुनर्बृहच्छ होरर्द्धे छेदितक्षेत्रे समानलम्बेऽविशिष्येते । तसादेतयोर्द्धयोरछेदितक्षेत्रयोर्झतल्खं धरातलमेकमेव भविष्यति । पुनरेकच्छेदितक्षेत्रस्य भूमिईवल्जबचतुर्भुजं समानान्तरभुजं भविष्यति ।
द्वितीयस्य भूमिवल्जजिभुजं भविष्यति । इदं त्रिभुजं हवल्जबक्षेत्रस्यार्द्धमस्ति । तसादुभे छेदितक्षेत्रे अपि समाने भविष्यतः । यस्य
च्छेदितक्षेत्रस्य भूमिवल्जजिभुजमस्ति तत् अहवझशङ्कोरिषकमस्ति ।
कुतः । एतयोः समभूमिसमलम्बत्वात् । असादेतच्छेदितक्षेत्रद्धयं
बृहच्छ होरर्द्धादिषकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ चतुर्थे क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

त्रिभुजभूमिकयोस्त्रिफलकयोः समानलम्बयोः शङ्कोः प्रत्येकस्य पूर्ववच्छङ्कद्वयं छेदितक्षेत्रद्वयं च क्रियते तदानयोर्भू-भ्योर्निष्पत्तिरनयोरछेदितक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भविष्यति ।

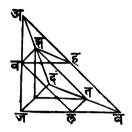
यथा अवजदमेको मनसगं द्वितीयः श्रङ्कः कल्पितः । अनयोः श्रङ्कोर्भध्ये उमौ शङ्क् द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्ववत्कार्ये । तदा अवजितन्धः भुजमनसित्रभुजयोर्निष्पत्तिः अवजदशङ्कोश्छेदितक्षेत्रद्वयस्य मनसग-श्रङ्कोश्छेदितक्षेत्रद्वयेन या निष्पत्तिस्तस्याः समाना भविष्यति ।

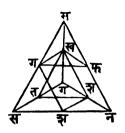
#### अस्योपपत्तिः ।

बजजलयोर्निष्पत्तिर्नससशयोर्निष्पत्तितुल्यासि । तसात् जबज-

९ K. and A. insert समाना here. २ तसादे॰ V.

ल्लनिष्पत्तिवर्गतुल्या अबजित्रभुजवलजित्रभुजनिष्पत्तिनससशनिष्प-त्तिवर्गतुल्यमनसत्रिभुजरसशत्रिभुजनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।





तदा अबजित्रभुजमनसित्रभुजयोर्निष्पित्रवेलजित्रभुजरशसित्रभुजयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । इयं निष्पत्तिर्यस्य च्छेदितक्षेत्रस्य वलजित्रभुजं
भूमिः पुनर्यस्य च्छेदितक्षेत्रस्य रसशित्रभुजं भूमिरनयोर्गिष्पत्तिसमाना
भविष्यति । कुतः । अनयोर्छम्बसाम्यात् । प्रत्येकं छेदितक्षेत्रस्यार्द्धमस्ति । तसादि यस्य च्छेदितघनक्षेत्रस्य भूमिर्वलजित्रभुजमस्ति पुनर्यस्य
च्छेदितघनक्षेत्रस्य भूमी रसशित्रभुजमनयोर्निष्पत्तिद्वगुणयोर्निष्पत्तिसमानास्ति । पुनर्द्वगुणयोर्निष्पत्तिः अबजदशङ्कोरछेदितक्षेत्रद्वयस्य मनसगशङ्कोरछेदितक्षेत्रद्वयेन या निष्पत्तिस्तस्याः समानास्ति । तस्मात्
अबजदशङ्कभूमिमनसगशङ्कभूम्योर्निष्पत्तिः अबजदशङ्कोरछेदितक्षेतद्वयस्य मनशगशङ्कोरछोदितक्षेत्रद्वयस्य च या निष्पत्तिस्तस्याः समानास्ति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

अनेन क्षेत्रेणेदं निश्चितम् । चतुर्णा शक्क्नां मध्ये प्रत्येकस्य द्वौ शक्कू द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्ववत् कार्येते । एवमुत्पन्नशक्क्नां द्वौ शक्कू द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्ववत् कार्येते । एवमुत्पन्नशक्क्नां द्वौ शक्कू द्वे छेदितक्षेत्रे कार्ये । एवमप्रेऽपि यथेच्छं कार्ये । तदा प्रत्येकशक्कुभूमेिन-ष्पत्तिद्वितीयशक्कुभूम्या तथा स्यात् यथा प्रथमशक्कोश्छेदितक्षेत्रयोद्वितीयशक्कोश्छेदितक्षेत्राभ्यामस्ति । एकप्रथमस्य द्वितीयेन निष्पत्तिस्तथा मवति यथा सर्वेषां प्रथमानां योगस्य द्वितीययोगेन सह यथा निष्पत्तिः

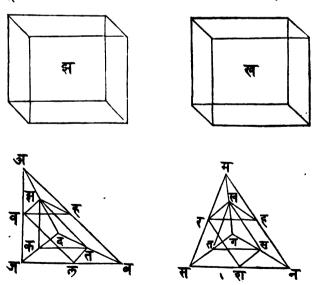
१ यतोऽनयोर्लम्बाः समानाः सन्ति । К., А.

स्यात् । तसात् अवजभूमेर्निष्पत्तिर्मनसभूस्या तथा भवति यथा प्रथमशङ्कोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य द्वितीयशङ्कोदछेदितक्षेत्रयोगेनास्ति ॥

## अथ पश्चमं क्षेत्रम्॥ ५॥

द्रौ शङ्कु त्रिभुजभूमी समानलम्बौ च यदि भवतस्तदा शङ्कोर्निष्पत्तिर्द्वयोर्भूम्योर्निष्पत्तिसमाना भवति ।

यथा अवजदमनसगी द्वी शङ्क किल्पती । यदि अवजम्मिमनसभूम्योर्निष्पत्तिः अवजदमनसगशङ्कोर्निष्पत्तिसमाना न स्यात्
तदा अवजदशङ्कुनिष्पत्तिमनसगक्षेत्रादन्यन्यूनाधिकक्षेत्रनिष्पत्तितुत्या
भवतीति किल्पतम् । प्रथमं खक्षेत्रं मनसगशङ्कोर्न्यूनं किल्पतम् । मनसगशङ्कुखक्षेत्रयोरन्तरं झक्षेत्रं किल्पतम् । पुनर्मनसगशङ्कोद्वी शङ्कृ द्वे छेदितक्षेत्रे च पूर्वप्रकारेण कृते । प्रत्येकमुत्पनशङ्कृनां
द्वौ शङ्कृ द्वे छेदितक्षेत्रे च कुर्मः । एवं पुनरप्युत्पनशङ्कृनां करणेन



यावत् छघुशङ्क्नां योगो झश्चेत्रान्यूनो भवति तावत्कार्यम् ।

९ कार्ये K., A.

तसात् सर्वेषां छेदितक्षेत्राणां योगः स्वक्षेत्रादिषको भविष्यति । पुनर् अवजदशहोः शङ्कु च्छेदितक्षेत्राणि तावन्ति कार्याणि यावन्ति मनसगशहोः शङ्कु च्छेदितक्षेत्राणि कृतानि । तसात् अवजभ्मेनिष्पत्तिर्मनसम्म्या तथा स्यात् यथा अवजदशहोः सर्व-च्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिर्मनसगशहोश्छेदितक्षेत्रयोगेनास्ति । पुनर् अवजमनसम्म्योनिष्पत्तिः अवजदशङ्काः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिः अवजदशङ्काः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिः अवजदशङ्काः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिः मनसगशहोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा अवजदशङ्काः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पत्तिः अवजदशङ्काः तथास्ति यथा मनसगशहोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पतिः अवजदशङ्काः तथास्ति यथा मनसगशहोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पतिः स्वधनक्षेत्रेणास्ति । तदा मनसगशहोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगस्य निष्पतिः स्वधनक्षेत्रेणास्ति । तदा मनसगशहोः सर्वच्छेदितक्षेत्रयोगः स्वधनक्षेत्रादिधकोऽस्ति । तसात् अवजदशङ्कोः सर्वच्छे-दितक्षेत्रयोगः स्वधनक्षेत्रादिधकोऽस्ति । तसात् अवजदशङ्कोः सर्वच्छे-दितक्षेत्रयोगः अवजदशङ्कतोऽिको भविष्यति । इदमग्रद्धम् ॥

पुनः स्वक्षेत्रं मनसगशक्कोरिधकं कल्पितम् । तसात् मनसभूमे-निष्पत्तिः अवजभूम्या तथा भविष्यति यथा मनसगशक्कोर्निष्पत्तिः अवजदशक्कोर्न्युनक्षेत्रेणास्ति ।

उपरितनप्रकारेणैवेदैमशुद्धं करिष्यामः । तस्मादस्मदिष्टं समी-चीनम् ॥

#### अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

यत् छेदितक्षेत्रमस्ति तस्य त्रयः समानाः शङ्कवस्त्रिभुज-भूमिकाः कर्त्तुं शक्यन्ते ।

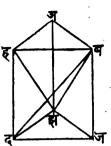
यथा अबजदह्रझच्छेदितक्षेत्रं जझद्भूमौ कल्पितम् । पुनर्बद्व-

९ सर्वच्छेदित° K., A. २ °वेदमप्यशुद्धम् । K., A.

श्राहरेखाः संयोज्याः । रेखायोगेन त्रयः स-मानाः शक्कवश्चिभुजभूमिकाः संपद्यन्ते ।

अत्रोपपत्तिः।

यस्य शङ्कोर्भूमिर्जबद्दित्रभुजं मुसं झ-चिह्नं यस्य च शङ्कोर्बद्दहित्रभुजं भूमिर्भुसं झचिहमस्ति एतौ शङ्क् समौ सः। छेदितक्षेत्रस्य



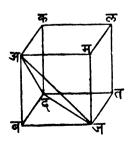
अबह्झशङ्करविशष्टः । अझं द्वितीयशङ्करमानोस्ति । कुतः । यतो बिचहमुभयोर्भुलं कल्पितम् । अनयोर्भूमिश्च अझहह्झद्तिभुजो कल्पितो । तसात् त्रय उत्पन्नशङ्कवः समाना जाताः ।

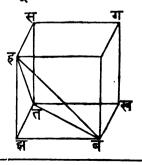
अनेन क्षेत्रेणेदमि ज्ञातं त्रिभुजभूमिकशङ्कोरछेदितक्षेत्रं संपूर्ण चेत् क्रियते तदा शङ्करछेदितक्षेत्रस्य व्यंशो भविष्यति ॥ ६ ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रं ॥ ७ ॥

त्रिश्वजभूमिको शङ्क् यदि समानौ भवतस्तदा तयोर्भू-म्योनिष्पत्तिस्तल्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । यैदि तयोः शङ्कोर्भूमिनिष्पत्तिर्लम्बयोर्विलोमनिष्पत्तितुल्या भव-ति तदा तौ समानौ भवतः ।

यथा अवजदराङ्क्रहम्भवतराङ्क् कल्पितौ । अनयोः राङ्कोर्द्वे घनक्षेत्रे समानान्तरधरातले बलझगे संपूर्णे कार्ये । एते द्वे घनक्षेत्रे





१ यदीहशी निष्पत्तिस्तदा तौ समानौ स्तः । К., А.

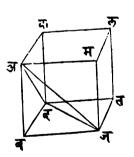
यदि समाने भवतस्तदानयोर्भृम्योर्निष्यत्तिरनयोर्कम्बिनिष्यत्तेस्तुत्या भविष्यति । यदि घनक्षेत्रभूम्योर्निष्यत्तिरेतह्नम्बिनिष्यतेर्विलोमतुत्या भविष्यति तदैते घनक्षेत्रे समाने भविष्यतः । अनयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्य- तिर्मिथस्तथास्ति यथाऽनयोः षढंशस्य परस्परनिष्पत्तिरस्ति । अनयोः षढंशैः किर्पतशङ्कु भवतः ।

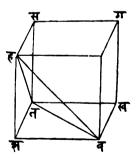
अथ घनक्षेत्रभ्रम्योर्निष्पत्तिर्भृम्योरद्धस्य निष्पत्तितुत्यास्ति । अनयो-भूम्योरद्धे कल्पितशङ्कः भूमी भवतः । अनयोर्घनक्षेत्रलम्बयोर्निष्पत्तिः कल्पितशङ्कलम्बयोर्निष्पत्तिरस्ति । कृतः । यत एतत्घनक्षेत्रलम्बौ कल्पितशङ्कलम्बावेकरूपौ स्तः । तसात् द्वयोः कल्पितयोः शङ्कोर-स्मदिष्टं स्पष्टं भविष्यति ॥

#### अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

त्रिभुजभूमिकौ द्वौ शङ्क् यदा सजातीयौ भवतस्तदा तयोर्निष्पत्तिः सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुल्या भविष्यति ।

यथा अवजदशङ्कहम्भवतशङ्कृ कल्पितौ । यद्यनयोर्बल्झगे द्वे घ-नक्षेत्रे पूर्णे क्रियेते तदैतयोर्घनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिरनयोर्भुजनिष्पत्तिघन-





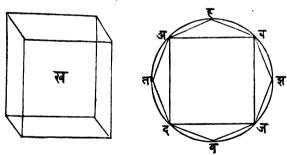
तुल्या भविष्यति । यत एतौ सजातीयौ स्तः । कल्पितशङ्क् च घनक्षेत्र-योर्निष्पत्तितुल्यौ स्तः । कल्पितशङ्कक्षेत्रस्य भुजौ द्वयोर्घनक्षेत्रभुजयो-निष्पत्तौ स्तः । तसादस्मिन् शङ्कद्वयेऽस्मदिष्टं सेत्स्यति । क्षेत्रं च पूर्ववत् ॥

#### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

समतलमस्तकपरिधेः शङ्कः समतलमस्तकपरिधितृती-यांशो भवति ।

यदि तृतीयांशो न भवति तदा तृतीयांशाल्यूनः कल्पितः। तसात् समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रं त्रिगुणितशङ्कोरधिकं भविष्यति। तच खघनक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पितम्। तत्क्षेत्रस्य शङ्कोश्च भूमिः अबजदृवृत्तं कल्पितम्। असिन् वृत्ते समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। असिन् समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम्। असिन् समकोणसमचतुर्भुजं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रोच्छ्रायतुल्यं घनक्षेत्रं कार्यम्। इदं तत्क्षेत्रार्द्धादिधिकं भविष्यति।

पुनश्चत्वारि चापानि ह्झवतिचिहेष्वर्द्धितानि । तेषु पूर्णजीवाः संयोज्याः । उत्पन्नत्रिभुजेषु च्छेदितक्षेत्रं तावदेवोच्छ्तं कार्यम् । एतानि च्छेदितक्षेत्राणि समतल्लमस्तकपरिचिक्षेत्रशेषखण्डचतुष्टयेम्योऽधिकानि भविष्यन्ति । एवं तावच्छेदितक्षेत्राणि कार्याणि यावत् समतलमस्तकपरि- धिक्षेत्रशेषखण्डानि खक्षेत्राच्युनानि भवन्ति ॥



धत्रोपैपसं घनक्षेत्रं त्रिगुणितशङ्कोरधिकं भविष्यति । पुनश्छेदि-तक्षेत्रभूमौ तावदेवोच्छ्रितः सफलकः शङ्कयोगैशङ्कः कार्यः। एवमुत्पर्के-शङ्करछेदितक्षेत्रतुल्यो भविष्यति । एवमुत्पन्नशङ्कुक्षिगुणितः सन्

१ अत्रोत्पन्नानि घनक्षेत्राणि त्रिगुणितशङ्कोरिषकानि भविष्यन्ति । K., A. २ K. and A. insert प्रत्येकं here. ३ °योगाः शङ्कवः कार्याः K., A. ४ °शङ्कवच्छेदितक्षेत्रतुल्या भविष्यन्ति K., A.

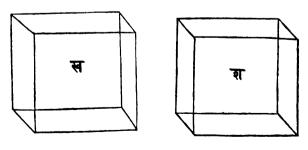
छेदितक्षेत्रयोगतुल्यो भविष्यति । तानि छेदितक्षेत्राणि कल्पितशृङ्कोः । त्रिगुणादिषकानि भवन्ति । बः उत्पन्नसफलकशङ्कः कल्पित-श्चक्कन्तस्तिष्ठति । अयंकल्पितशङ्कोरिषको भविष्यति । इदमशुद्धम् ॥

पुनः स शङ्कः समतन्नमस्तकपरिधितृतीयांशात् स्वधनफलक्षेत्र-तुल्योऽधिकः कल्पितः । तसात् तेत् क्षेत्रं त्रिगुणितशङ्कोर्न्यूनं मविष्यति ।

पुनः पूर्ववत् कल्पितशङ्कन्तरनेनोच्छ्रायेण सफलकशङ्कुस्तथा कार्यो यथा शेषखण्डानि खक्षेत्राच्यूनानि भविष्यन्ति । अयं सफल्कक्षिगुणितः सन् समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रादिषको भविष्यति । साम्रश्चर्रोभूँमौ तावदुच्छ्रितं छेदितक्षेत्रं कार्यम्। एतानि च्छेदितक्षेत्राणि त्रिगुणितसाम्रशङ्कुतुल्यानि भवन्ति । अयं त्रिगुणसफलकशङ्कुश्च समतल्यस्तकपरिधिक्षेत्रादिषकोऽस्ति । तसात् छेदितक्षेत्राण्यप्यधि-कानि भविष्यन्ति । इदमशुद्धम् । अस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

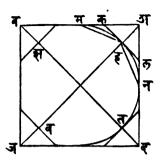
#### प्रकारान्तरम् ॥

यत् घनक्षेत्रं समतलमस्तकपरििषक्षेत्रज्यंशान्यूनं भवति तत् क्षेत्रं शक्कोरिप न्यूनं भविष्यत्यिषकेऽिषकं च तत् । तत्र प्रथमतः घन-क्षेत्रं न्यूनं क्षेत्रं कल्पितम् । इदं त्रिगुणितं समतलमस्तकपरििषक्षेत्रात् खक्षेत्रतुल्यं न्यूनं भविष्यति ।



९ K. and A. insert अयं सफलकशङ्कश्च बृहत्शङ्कोरन्तरितोऽस्ति ।. १ K. and A. have समस्त्रमस्त्रकपरिधिक्षेत्रं instead of तत्सेत्रं.

पुनः प्रोक्तवत् समतलमस्तकपरिभिक्षेत्रान्तरछेदितक्षेत्राणि तावन्ति
तथा कार्याणि यथा तत् क्षेत्रं शेषसण्डानि खक्षेत्रास्यूनानि भवन्ति ।
एतानि छेदितक्षेत्राणि कल्पितन्यूनघनक्षेत्रात् त्रिगुणादिभकानि भविघ्यन्ति । पुनः शङ्कन्तः सफलकशङ्कः कार्यरछेदितक्षेत्रभूमौ । इदं



सफलकशकुक्षेत्रं शैक्कोर्न्यूनं भविष्यति । इदं छेदितक्षेत्राणां तत्र्यं-शेन तुल्यं भविष्यति । स च त्र्यंशो न्यूनघनक्षेत्राद्धिकोऽस्ति । कल्पितघनक्षेत्रं समतलमस्तकपरिघित्र्यंशात् न्यनमस्ति । शङ्कोर्नितान्तं न्यूनं भविष्यति । पुनर्प्यधिकं घनक्षेत्रं कल्पितम् । इदं त्रिगुणितं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रात् खक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पि-तम् । पुर्नेवृत्ते समकोणसमचतुर्भुजं क्षेत्रं कार्यम् । तत्र तत्क्षेत्रोच्छ्राय-तुल्यमेकं घनक्षेत्रं कार्यम् । एतत्कल्पितघनक्षेत्रादिधकं वा भविष्यति वा न भविष्यति । यद्यधिकं भवति तदा शक्षेत्रतुल्यमधिकं कल्पितम् । अस्य समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रस्य चान्तरं खघनक्षेत्रादिधकं भविष्यति । पुनः केन्द्रे खपनक्षेत्रकोणे च रेखाः संयोज्याः । एता वृत्तस्य ह्रम्वत-चिह्नेषु संपातं करिष्यन्ति । पुनः संपातचिह्नेभ्यो वृँत्तपालिपर्यन्तं रेखा निष्कास्याः । एता रेखा तदन्तरार्द्धेभ्योऽधिकाः । कृतः । अवअद-रेले मचिद्वनचिद्ववृत्तपालिसंलमे कार्ये । लहकरेला हचिद्वलमा कल्प्या। वे द्वे रेखे छचिइकचिहे कृतसंपाते कल्पिते । पुनईम-इनरेले संयोज्ये । तत्र अमअनरेले समाने भविष्यतः । इककमरेले समाने भविष्यतः । अकं कहादधिकमस्ति । कुतः । इस्य समकोण-

<sup>9</sup> K. and A. insert कल्पित. २ °इत्तोपिर K., A. ३ चतुर्भुं नक्षे- त्रकोणेषु K., A. ४ इत्तपालिस्पर्श कुर्वत्यः K., A.

त्वात् । कमादप्यिषकं भविष्यति । अकहित्रभुजं कमहित्रभुजा-दिषकं भविष्यति । अलहित्रभुजं लहनित्रभुजादिषकं भविष्यति । तसात् अलकित्रभुजमन्तराद्धीदिषकं भविष्यति । एवं शेषान्तरा-द्धीत् शेषत्रिभुजमिषकं भविष्यति ।

अनेनैव प्रकारेण तथा कार्य यथान्तरक्षेत्राणि खक्षेत्राच्यूनानि भविष्यन्ति । शेषं तथा घनक्षेत्रं भविष्यति तथा कल्पितघनक्षेत्रादिषकं न भविष्यति । इदं समतल्लमस्तकपरिधिक्षेत्रादिषकमितः । पुनरस्व भूमौ व्यंशतुल्यः साम्रशङ्कः कार्यः । क्षेत्रस्य व्यंशो भविष्यति । तसा-दयं कल्पितघनक्षेत्रादिषको न भविष्यति । अयं च सफलककल्पि-तशक्कोरिषकोऽस्ति । तसात् यद् घनक्षेत्रमिषकं भवति तत्समतल-मस्तकपरिधिनृतीयांशात् तच्छक्कोरप्यिषकं भविष्यति ।

पुनर्निश्चितं यद् घनक्षेत्रं तु शङ्कतुल्यं भवति तत्समतल्लमस्तकपरि-भिक्षेत्रत्र्यंशतुल्यमेव मविष्यति ॥

#### अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

सजातीयसमतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयस्याथवा सजातीय-शङ्कद्वयस्य च निष्पत्तिर्वृत्तयोर्व्यासनिष्पत्तेर्घनतुल्या भवति ।

यथा अवजदहझवतवृँते समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयस्य वा शङ्कद्वयस्य म्मी कल्पिते । अनयोर्व्यासो बदझतो कल्पितो । कल-मनो लम्बो कल्पितो । यदि बदझतव्यासनिष्पत्तिधनतुल्या अवज-दलशङ्कह्मवतनशङ्कोर्निष्पत्तिनी भवति तदा प्रथमशङ्क्रनिष्पत्ति-दित्तीयाच्यूनाधिकधनक्षेत्रनिष्पत्तितुल्या भवतीति कल्पितम् । प्रथमं न्यूनधनक्षेत्रं कल्पितम् । व्यासान्तरं अधनक्षेत्रम् । पुनर्वृत्तान्तः सम-

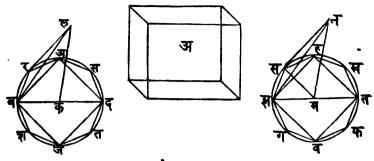
<sup>9 °</sup>क्षेत्रत्रिगुणादिषिकं K., A. २ समतलमस्तकपरिषित्र्यंशादिषिकतत्क्षेत्र-शङ्कोरप्यिषिकं भविष्यति । K., A. ३ °श्त्राभूमी समतलमस्तकपरिषिक्षेत्रद्वयस्य वा शङ्कद्वयस्य कल्पिते । K., A. ४ प्रयमं न्यूनघनक्षेत्रं अधनतुत्यं कल्पितम् । K., A. ५ अस्यान्तरं V.

कोणसमचर्तुर्भुजं कार्यम् । अस्योपिर प्रथमशङ्क्ल्र्यतुल्यः शङ्करः कल्पितः । पुनः शेषाणि चत्वारि चापान्यद्धितानि कार्याणि । तेषु पूर्णज्याः संयोज्याः । पतासु शङ्कवः कार्याः ।

् एवमनेन प्रकारेण तावच्छ**ड्र**वः कार्याः यावच्छेषखण्डानि अघ-नक्षेत्रात्र्यूनानि स्युः । तदा एभ्य एकः साम्रसफलकः श्रङ्करुत्पचते । हसझगवफतखं तस्य भूमिर्भविष्यति । अस्य मस्तकं कल्पितशङ्क-मस्तकं भविष्यति । अयं शङ्कः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रादिषको भविष्यति । पुनर् अबजदवृत्ते अरबशजतदसक्षेत्रमुत्पनशक्कोर्भूमेः सजातीयं कल्पितम् । एतत्क्षेत्रोपरिकल्पितशङ्कतुल्यमुख एकः शङ्कः कार्यः। एतौ द्वौ शहू सजातीयौ भविष्यतः । कुतः । छक्कबद्योर्निष्पत्तिः निमझतनिष्पत्तिसमानास्ति । कल्पितशङ्कोः सजातीयत्वात् । तस्मात् लकमननिष्पत्तिर्बेकझमनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । रकसमनिष्प-त्तिसमानापि भविष्यति । तसात् बक्छत्रिभुजश्मनत्रिभुजे सजातीये भविष्यतः । एवं रकलसमनत्रिभुजे अपि सजातीये भविष्यतः । कुतः । कमयोः समकोणत्वात् । अनयोः संबन्धिमुजौ सजातीयौ । तसात बलमनयोनिष्पत्तिः रलसनयोश्य सैव निष्पत्तिभविष्यति । पुनरिप बकरत्रिभुजझमसत्रिभुजे सजातीये स्तः । बकरकोणझम-सकोणयोः समानभावित्वेन । पुनस्तत्संबन्धिभुजयोः सजातीयत्वेन बरझसयोर्निष्पत्तिः सैव भविष्यति । बरलत्रिभुजझसनत्रिभुजयो-र्भुजो मिथः सजातीयो भविष्यतः । तसादेतत्रिभुजद्वयं सजातीयं संत्स्यति । **बरकऌशङ्कः असमन**शङ्कश्चोभौ सजातीयौ भविष्यतः । कुतः । भनयोर्वेष्टितत्रिभुजयोः सजातीयत्वात् । एवं वेष्टिताः सर्वेऽपि शद्भवः सजातीयाः पतिष्यन्ति । प्रत्येकशद्भोः स्वसजातीयशक्कना निष्पत्तिस्तयोः सजातीयभुजयोर्धनतुल्या भविष्यति । बद्दशतयोर्नि-

९ K. and A. insert हझवतं.
 २ अवनक्षेत्राज्युनानि स्यु: K., A.
 ३ सालफलकशङ्करत्यवते K., A.
 ४ अस्य मस्तकं न मस्तकं भविष्यति
 K., A.
 ५ भविष्यति K., A.

ष्पत्तेर्घनतुत्यापि भविष्यति । तसात् बदशतनिष्पत्तिषनतुत्या अब-



जद्छशङ्कन्तःपातिसास्रोत्पर्नशङ्कह्झवतनशङ्कन्तःपातिसास्रोत्पन-शङ्कोर्निष्पचितुत्या भविष्यति । अबजद्छशङ्कन्तःपातीयसासशङ्को-निष्पचिः अबजद्छशङ्कना तथा भविष्यति यथा हझवतनान्तशङ्कोः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रेणास्ति । अयं हझवतनान्तःपातिसासशङ्कः कल्पि-तन्यूनघनक्षेत्राधिकोऽस्ति । तसात् अबजद्छान्तःपौतिसासशङ्कः अबजद्छशङ्कोरिधको भविष्यति । इदमशुद्धम् ।

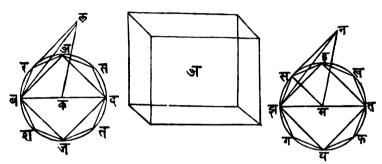
पुनर्बद्शतिवणितिर्घनतुत्या प्रथमशङ्कृद्वितीयशङ्किषक्षनक्षेत्र-निष्पत्तिः कल्पिता। तदा शतवदिनिष्पत्तिष्ठनतुत्या ह्शवतनशङ्कु-अवजद्रलशङ्कुन्यूनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्भविष्यति । पूर्वरीत्या ऍनमप्यशुद्धं कुर्मः । तदेष्टमस्मत् सेत्स्यति । पुनः समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रेष्वपि सेत्स्यति ॥

## अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रयोः समानलम्बयोर्निष्पत्तिस्तयो-भूमिनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । एवं द्वयोः शङ्कोरपि निज-भूमिनिष्पत्तिसमाना भविष्यति ।

९ K. and A. insert शङ्कोर्निष्पत्ति. १ °न्तर्गतसकलशङ्कानिष्पत्तितुस्या भिविष्यति । K., A. ३ K., and A. have सफलकशङ्कः for °पातिसालशङ्कः ४ इदमप्यनुपपन्नम् । इष्टमस्मत्समीचीनम् । K., A. ५ भ-विष्यति K., A.

क्षेत्रं पूर्ववत् कल्पनीयम् । यदि अवजदभ्मिह्झवतभ्योर्निष्पत्तिर्यस्य शङ्कोर्लम्बः कल्रमस्ति यस्य च लम्बो मनमस्त्येतयोर्निष्पत्तिसमा यदि न स्यात् तदा प्रथमशङ्कोर्निष्पत्तिद्वितीयशङ्कोर्न्यूनघनक्षेत्रेण समानास्तीति कल्पितम् । पूर्ववद्वितीयशङ्कन्तःपातिसासशङ्कः कल्पितघनक्षेत्रादिषको भवति तथा कार्यः । प्रथमशङ्कन्तःपातिसास्रशङ्कः सजातीयः कार्यः । एतौ समानलम्बौ भविष्यतः । द्वयोः



सासशङ्कोर्निष्पत्तिबेदवर्गञ्चतवर्गनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । अवज-दवृत्तहञ्चवतवृत्त्योर्निष्पत्तिसमानापि भविष्यति । कलल्यनस्य शङ्कोः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रनिष्पत्तेरिष समा भविष्यति । तस्मात् प्रथमसासस-फलकशङ्कोर्निष्पत्तिः प्रथमशङ्कना तथास्ति यथा द्वितीयसासशङ्कोर्नि-ष्पत्तिः कल्पितन्यूनघनक्षेत्रेणास्ति । द्वितीयः सासशङ्कः कल्पितघनक्षे-त्रादिधकोऽस्ति । तदा प्रथमसासशङ्कः प्रथमशङ्कोरिषको भविष्यति । इदमशुद्धम् ॥

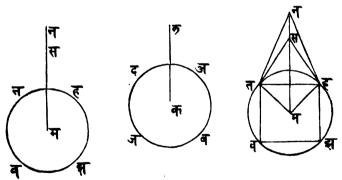
एवं सा निष्पत्तिर्यदाऽधिकघनक्षेत्रेण भवति तदा साप्यशुद्धैव भविष्यति । तसात् शङ्कद्वयेऽपीष्टमस्माकं समीचीनम् । तदा समत-क्रमस्तकपरिधिद्वयेपीष्टमुपपन्नम् ॥

अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥ यदि समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रे वा शङ्कद्वये वा समाने

**९** निष्पत्तेः समानापि भविष्यति । V,

भवतस्तदा तयोर्भूम्योर्निष्पत्तिर्छम्बनिष्पत्तेर्विलोमा भविष्य-ति । ऐतद्रपा निष्पत्तिर्भविष्यति तदा समानौ भवतः ।

यथैकक्षेत्रस्य भूमिः अबजदृत्तं कलिपता । कलं लम्बश्च क-लिपतः । यद्वितीयक्षेत्रभूमी हृझवतं कलिपता । मनं लम्बश्च क-लिपतः । यदि द्वौ लम्बो समानो भवतो यदा भूमी समाने भविष्यतः । तदास्मिदृष्टमुत्पन्नं भविष्यति । यदि समानौ न भवतस्तदा मनलम्बः कल्ललम्बाद्धिकः कलिपतः । पुनर्मनलम्बात् कनतुत्यं मसं पृथकार्यम् । तदा हवभूमौ मैसलम्बतुत्यशङ्करुत्पाद्यः । प्रथमम् अबजद्वलशङ्क-हृझवतनशङ्क् समानौ कलिपतौ । तदानयोः शङ्कोर्निष्पत्तिर्ह्झवतः सशङ्कना एकरूपा भविष्यति । पुनरेकशङ्कोर्निष्पत्तिर्ह्झवतस्रशङ्कना तथास्ति यथा भूमेर्निष्पत्तिर्म्म्यास्ति द्वितीयशङ्कोर्निष्पत्तिर्मनलम्ब-मसलम्बनिष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् अबजद्भूमिह्झवतभूम्योर्नि-ष्पत्तिमेनस्पत्तितुत्यास्ति । तसात् अबजद्भूमिह्झवतभूम्योर्नि-ष्पत्तिमेनस्पत्ति। सनकलनिष्पत्तेत्यास्ति । मनकलनिष्पत्तेरिप स-माना भविष्यति ।



पुर्निनष्पत्तय एतद्रूपाः कॅल्प्याः । तदा अवजदलशङ्कहञ्चवतनश-द्कोर्निष्पत्तिहेञ्चवतसशङ्कुना एकरूपा भविष्यति । तसादेतौ समानौ भविष्यतः । एवं समतलमस्तकपरिधिक्षेत्रद्वयमपि । इदमेवासदिष्टम् ॥

<sup>9</sup> ईंदशी निष्पत्तिबेत् समानौ भविष्यतः K., A. २ °क्षेत्रस्य V. ३ मळ- छम्बे च K., A. ४ कल्पिताः K., A.

अथ यैत्कथितं ह्झ्यत्नशङ्कह्झ्यत्तसशङ्कोर्निष्यित्तर्मनमसनिष्यत्तितुत्यास्ति तदेतदर्थम् । मनमसनिष्यत्तिझृत्तनझृत्तसशङ्कोर्निष्यत्तितुत्या न भवति तदा झृत्तनशङ्कोर्न्न्यिकेन केनचित् शङ्कुना
तिल्लप्तिः कित्यता। तदा न्यूनं घनक्षेत्रं कित्यतम् । पुनर्झत्सशङ्कोरन्तः सासशङ्कर्यथा मवति तथा कार्यः । केल्पतम् सेत्रादिषको
झृत्तनशङ्कभूमावन्यः शङ्कः कार्यः । एतयोः सासशङ्कोरन्तिसभुजशङ्कवः तुत्यसंख्याकाः पतिष्यन्ति तदैकस्य स्वसजातीयेन निष्यत्तिस्तया मविष्यति यथा सर्वेषां निष्यत्तिः सर्वेरिष । यथा हृतमनस्य
स्वसजातीयेन हृतमसेन निष्यत्तिः सर्वेरिष । यथा हृतमनस्य
स्वसजातीयेन हृतमसेन निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहसासशङ्कोः छषुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहसासशङ्कोः छषुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिस्तुल्यास्ति । तदैकतरस्य वृहसासशङ्कोः छषुसासशङ्कोश्च निष्यत्तिः स्वेष्टशङ्कना तथास्ति
न्यूनसफलकशङ्कर्न्यूनघनक्षेत्रेण निष्यत्त्या तुत्यास्ति । न्यूनसफलकशङ्कर्न्यूनघनक्षेत्रादिषकोऽस्ति । वृहच्छङ्कः स्वशङ्कोरप्यिको भविष्यति ।
इदमशुद्धम् ॥

एवमिकवनक्षेत्रेण या निष्पत्तिर्भविष्यति साप्यशुद्धैव । तसात् मनमसयोर्निष्पत्तिः शृङ्कोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति ॥

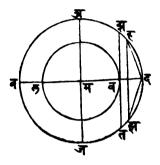
अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

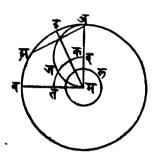
एककेन्द्रकवृत्तद्वयस्य मध्य एकं क्षेत्रं तथा कर्तुमिच्छास्ति यथास्य भुजा लघुक्षेत्रं न स्पृशन्ति ।

यथा अबजदवृत्तं छबवृत्तं मकेन्द्रं कल्पितम् । पुनरजव्यासबद-व्यासौ द्वयोर्वृत्तयोर्कम्बवत्कृतसंपातौ कल्पितौ । पुनर्विचिहात् झवतरे-स्वा वछवृत्तपाछिछमा निष्कास्या । इयं झवतरेसा अजरेसायाः समा-नान्तरा भविष्यति । पुनर् अदचापार्द्धं कार्यम् । पुनरद्धितं यावत्

१ च यदिदं कल्पितं K., A. इदं for अथ in V. २ न्यूनघनक्षेत्रादिषकः K., A. ३ पुनःपुनरिषेतं V.

हदचार्ष श्रद्धचापाष्ट्यूनं भवति । हश्चरेखा श्रतरेखायाः समानान्तरा कार्यो । इयं वलवृत्ते संपातं न करिष्यति । पुनर्हदपूर्णज्या संयोज्या । पुनर्हदचापतुल्यानि वृत्तचापानि कार्याण्येतेषां पूर्णजीवाः च सं-योज्याः । इष्टमसाकं मविष्यति ॥





प्रकारान्तरम् ।

केन्द्रोपिर अमबसमकोणः कार्यः । पुनर् अमोपिर अजमं वृत्तार्दं कार्यम् । पुनर् अलरेखोपिर दिचिहं केल्पितम् । पुनर्मकेन्द्रे मदव्या-सार्द्धेन दजतवृत्तं कार्यम् । पुनर् अमबकोणसाद्धे पुनः पुनस्ताव-त्कार्यं यावदर्द्धरेखा दजचापे किचिहे लगति । सा मकरेखा कल्पिता। इयं रेखा हचिह्दपर्यन्तं वद्धिता कार्या । पुनर् अहरेखा योज्या । इयं झचिह्दपर्यन्तं वद्धिता कार्या । तदास्मात् अझरेखा वलवृत्तं न लगिष्यति । कुतः । महस्य मकादिधकत्वात् । मदादप्यिक-त्वात् । मदं मलादिधकमिता । अझचापदुल्यानि वृत्तसण्डानि भवि-ष्यन्ति । यद्येषां पूर्षजीवा योज्यते तदास्माकिमष्टं सेर्तस्मिति ॥

# अय चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥ एककेन्द्रकयोगीं छयोर्भध्ये एँकं बहुधरातलयुक्तं घनक्षेत्रं

१ °जीवा च संयोज्या V. २ कल्पयेत् K., A. ३ आहरेसा संयोज्या । इवं रेसा झिविदपर्यन्तं वर्धिता कार्या K., A. ४ अविष्यति K., A. ५ K., A. insert बृहद्रोस्त्रन्तः.

तथा कर्जुमिच्छास्ति यथा कल्पितानि धरातलानि लघुगोर्छ न स्पृशन्ति । पुनर्यद्यन्यगोले एतत्सजातीयघनक्षेत्रमन्यत् कुर्मस्तदानयोर्धनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्द्वयोर्गोलयोर्व्यासनिष्पत्तेर्यम-तुल्या भविष्यति ।

ययोगों छयोरेकं केन्द्रमस्ति तयोः केन्द्रगतमेकं धरातलं किस्तिं तद्धरातलबृहद्वृत्तसंपाताद्वजद्वृत्तमुत्पनं कार्यम् । छन्नुवृत्तसंपातात् हृझवतवृत्तं कार्यम् । द्वयोः केन्द्रं किन्दिं किस्पतम् । पुनर् आजव्यास-वद्वयासौ लम्बरूपौ कृतसंपातौ किस्पतौ । पुनर् आवजद्वृत्तमध्ये समानबहुभुजं क्षेत्रं तथा कार्य यथा हृझवतलघुवृत्तं न स्पृशति । तथा वमं मलं लअं भुजाः किस्पताः । पुनमिकरेसा संयोज्या । सिनिद्द-पर्यन्तं विद्धता कार्या । लक्करेसा च योज्या निनद्दपर्यन्तं विद्धता । किन्द्दितो लम्बः अवजद्वृत्तधरातले तथा पात्यो यथा बृहद्दीलं

स्पृश्चिति । स लम्बः कगं किल्पतः । पुनरेकं धरातलं लिबिह्निचिह्नगचिह्नगतं किल्पतम् । पुनरेकं छित्त्वस्यद्धरातलं मगसचिह्नगतं किल्पतम् । प्रथमधरातल्बृहद्गोलयोः संपातात् लगनम् अ-द्धेवृत्तमुत्पन्नं किल्पतम् । द्वितीयधरातलमहद्गो-लसंपातात् मगसम् अर्द्धवृत्तमुत्पनं किल्पतम् । पुनर्लगचापं मगसम् अर्द्धवृत्तमुत्पनं किल्पतम् । पुनर्लगचापं मगसम् अर्द्धवृत्तमुत्पनं किल्पतम् । पुनर्लगचापं मगनापं प्रत्येकं वृत्तस्य चतुर्थी-



शो भविष्यति । लगचापस्य लखखफफगखण्डानि कार्याणि । मगचापस्य मररशशगखण्डानि कार्याणि।एतानि समानानि कार्याणि। अबचापस्य यावन्ति खण्डानि तेषां समानानीत्यर्थः।पुनर् रखरेखाश-फरेखा च संयोज्या।पुनर् रचिद्वात् मससंपातरेखायां रतलम्बो नेयः। खचिद्वात् लनसंपातरेखायां खसलम्बो नेयः। एतौ लम्बी अबजद-

९ कियते for कुर्मः K., A. २ कल्पितम् for उत्पन्नं कार्यम् K., A. ३ बृहद्रोलाद्वहिनं गच्छति K., A. ४ खण्डसमानीत्यर्थः K., A. ५ कार्थः K., A.

धरातले लम्बी भविष्यतः । एती च समानान्तरी भविष्यतः समानी च भविष्यत। कुतः। मरलखनापयोः साम्यात्। एतौ रतखसौ रैमख-ल्रद्विगुणचापयोः पूर्णजीवयोरैर्द्धरूपौ जातौ । पुनरेतौ रतस्वसौ मतलसरेले समाने प्रथक् करिष्यतः । पुनस्तसरेला संयोज्या । इयं तसरेखा मलरेखायाः समानान्तरा भविष्यति । कुतः । कततमयो-र्निष्पत्तिः कससळयोर्निष्पत्तिसमानास्ति । तसं मलात् न्यूनं भवि-ष्यति । कुतः । एतौ कतकमयोर्निष्पत्तौ स्तः । रखरेखा तसरेखा च मियः समानान्तरे भविष्यतः समाने च भविष्यतः । कुतः । रतरेखा खसरेखा च मिथः समाना समानान्तरा च भवति । तसात् रखलम-रेखे मिथः संमानान्तरे भविष्यतः। रखं लमान्यूनं भविष्यति। तसात् रमलखनतुर्भुजं एकसिन् धरातले भविष्यति । इदं चतुर्भुजं तस्य घनक्षेत्रस्यैकं फलकं भविष्यति । अनेन लैंघुवृत्तस्य गोलस्य स्पर्शो न कृतः। कुतः। अस्य रममळळखेः समैक्षिभुजैः स्पर्शो न कृतः । पुनश्चतुर्थमुजो रखम् एभ्यो न्यूनोऽस्ति । एवं निश्चीयते रश-फखचतुर्भुजमप्येकधरातले भविष्यति । लघुगोलस्परी न करिष्यति गशफत्रिभुजमपि लघुगोल्स्परी न करिष्यति ।

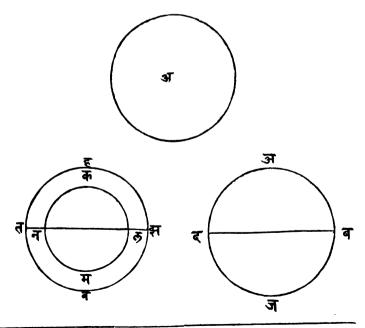
अनेनैव प्रकारेण सर्वचापेषु खण्डेषु चैतंद्व्पाण्यसाणि कार्याणि । तदासाकिमष्टघनक्षेत्रं पूर्ण भविष्यति । एतद्धनक्षेत्रसजातीयमन्य-सिन् गोले यदि कार्य भवेत्तदोभे घनक्षेत्रे शङ्क्नां योगेनोत्पद्येते । कीदशानां शङ्क्नाम् । येषां भूमिर्घनक्षेत्राणां फलकानि पतिष्यन्ति । शङ्क्नां मुखं च गोल्योः केन्द्रं भविष्यति । यावन्तः शङ्कव एकसिन् गोले भवन्ति तावन्त एव द्वितीयगोले भवन्ति मिथश्च सजातीयानि भविष्यन्ति । कुतः । वेष्टितघरातलानां सजातीयत्वात् । तसादेक-गोलस्यैकशङ्कोर्निष्यत्तिर्द्वितीयगोलस्य स्जातीयशङ्कना तथास्ति यथैषां

९ द्विगुणरमस्तळचापयोः V. २ अर्थी जातौ K., A. ३ लघुवृत्तगोलस्य V. ४ एतदूपफलकानि A. ५ भविष्यन्ति V. ६ स्वसजातीय $^\circ$  V.

सजातीयभुजनिष्पत्तिघनतुस्या स्यात् । एषां भुजा गोलयोर्व्यासा-द्वीमताः सन्ति । तसादनयोर्निष्पत्तिर्व्यासाद्वीनष्पत्तिघनतुस्या भवि-ष्यति । व्यासाद्वियोर्निष्पत्तिः व्यासनिष्पत्तितुस्यास्ति । तसात् शङ्कृनां निष्पत्तिगोलव्यासयोर्निष्पत्तिघनतुस्या भविष्यति । यथैकशङ्को-रेकशङ्कुना निष्पत्तिस्तथा सर्वयोगशङ्कोः सर्वयोगशङ्कुना निष्पत्तिः । सर्वयोगशङ्कुस्तु तदेव घनक्षेत्रमस्ति । तसाद्धनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिर्द्वयो-व्यासयोर्निष्पत्तिघनतुस्या भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

#### अथ पञ्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

गोलस्य निष्पत्तिर्गोलेन व्यासयोर्निष्पत्तिघनतुल्या भवति । यथा अजगोलः कल्पितः । बदं व्यासः कल्पितः । द्वितीयो हव-गोलो झतं व्यासध्य कल्पितः । यदि बद्दझतव्यासनिष्पत्तिघनतुल्या गोलैयोर्निष्पत्तिर्न भवति तदा अजगोलनिष्पत्तिर्हवन्यूनाधिकगोलेन



१ अजगोलहबगोलयोर्निष्पत्तिन चेत् K., A.

भविष्यतीति कल्पितम् । तदा ह्वाक्यूनो अगोङः कल्पितः । पुनह्वगोलकेन्द्रे अगोलतुल्यः कमगोलः कल्पितः । पुनह्वक्षेत्रमध्ये
बहुत्रयुक्तं धनक्षेत्रं तथा कार्य यथा कमगोले स्पर्शं न करोति । पुनर्
अजगोलमध्ये एकं क्षेत्रं तद्धनक्षेत्रसजातीयं कल्पितम् । तसात्
बद्शतनिष्पत्तिषनतुल्या अजगोलस्य धनक्षेत्रस्य ह्वगोलस्य धनक्षेत्रनिष्पत्तिरस्ति । बद्शतनिष्पत्तिषनतुल्या अजगोलअगोलयोर्निष्पत्तिः
कल्पितासीत् । तथा अजकमगोलयोर्निष्पत्तितुल्याप्यस्ति । तसात्
अजगोलधनक्षेत्रह्वगोलधनक्षेत्रयोर्निष्पत्तिः अजकमगोलयोर्निष्पतितुल्या भविष्यति । अजधनक्षेत्रस्य निष्पत्तिः अजगोलेन तथा
भविष्यति यथा ह्वगोलधनक्षेत्रस्य निष्पत्तिः कमगोलधनक्षेत्रणास्ति । कमगोलो ह्वगोलधनक्षेत्राच्यूनोऽस्ति । तसात् अजगोलः
अजगोलधनक्षेत्राच्यूनो भविष्यति । इदमगुद्धम् ॥

पुनर्बद्धतिनिष्पत्तिघनतुत्या अजगोल्रह्वगोलाधिकयोर्निष्पत्तिः किल्पता । तसात् झतबदिनिष्पत्तिघनतुत्या हवगोलस्य अजगोलास्यू-नगोलेन निष्पत्तिर्भविष्यति । इदमप्यगुद्धं कुर्मः । तसादसदिष्टं समीचीनम् ।

श्रीमद्राजाधिराजमभुवरजयसिंहस्य तुष्टे द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राङ् जगन्नाथ इति समिभधारूढितेन प्रणीते । श्रन्थेऽस्मिन्नाम्नि रेस्नागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरतिं द्वादश्वः संगतोऽभूत् ॥ ॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

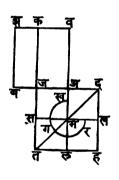
१ अजगोल्युस्यकमगोल्योर्निष्पत्तिः K., V.

# ॥ अथ त्रयोदशाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १३ ॥ ॥ तत्रैकविंशतिक्षेत्राणि सन्ति ॥ २१ ॥ तत्र प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

एकस्या रेखायास्तया खण्डद्वयं कार्य यथा संपूर्णरे-खाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन तथा स्यात् यथा महत्खण्डस्य च लघुखण्डेनास्ति । अर्द्धरेखा महत्खण्डेन युक्ता कार्या तस्या वर्गः पद्मगुणितार्द्धरेखावर्गनुस्यो भवति ।

यथा अबरेखा कल्पिता । अस्या महत्सण्डम् आजं कल्पितम् । अदं रेखार्घ कल्पितम् । अर्द्धरेखयानया आजं युतं कृतं तसात् जद-

वर्गः पद्मगुणितेन अद्वर्गेण तुल्यो भविष्यति । कुँतः । जदरेस्रोपिर जहं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । अल्रेरेसा निष्कासनीया । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अबरेस्रोपिर अझं समकोणसमचतु-र्भुजं कार्यम् । तजरेसा कचिह्नपर्यन्तं वर्द्धनी-या । अबतुल्या अवरेसा अदरेसातुल्याया अमरेसाया द्विगुणास्ति । तदा अकक्षेत्रं अस-क्षेत्राद्विगुणं भविष्यति । बकक्षेत्रं अबबजघात-



तुल्यं अजनगतुल्यलसक्षेत्रेण समानमस्ति । तसात् चतुर्गुणअद्व-गेतुल्यं अझसमकोणसमचतुर्भुजं खगरक्षेत्रस्य समानं मविष्यति। यदि अदनर्गो योज्यते तदा सर्वे जहं पश्चगुणितअद्वर्गतुल्यं मविष्यति।

१ यस्या रेखाया V., D. तथैकरेखाया खण्डद्वयिकीर्पास्त यथा संपूर्णरेखाया निष्पत्तिमंहत्खण्डेन महत्खण्डलघुखण्डयोनिष्पत्तितुल्या स्थात् तत्र रेखार्थ महत्खः ज्डेन युक्तं तद्वर्गः पश्चगुणितरेखार्द्ववर्गतुल्यो भवति ॥ K., A. २ अद्म्म् अर्द्ध-रेखा कल्पिता । अनया अत्रं V. ३ अस्योपपत्तः K., A.

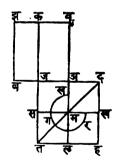
#### अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

पूर्वप्रकारेण अवबजवातः अजवर्गतुत्योऽस्ति । पुनर् अवअज-धात उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा अववर्गतुत्यः अदवर्गश्चतुर्गुणः अवअजधाततुत्यद्विगुणअदअजधातअजवर्गयोगस्य तुत्यो भवि-ध्यति । पुनर् अदवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा पश्चगुणित-अदवर्गतुत्यो जदवर्गो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३॥

यस्या रेखाया न्यूनाधिके खण्डे क्रियेते तस्या रेखाया वर्गः पश्चगुणितैकखण्डवर्गसमो भवति । द्वितीये खण्डे एका रेखा तथा योज्या यथा द्विगुणप्रथमखण्डतुल्या भवति । तदा द्वितीयखण्डयोज्यरेखायाश्च निष्पत्तिद्वितीखण्डेन तथास्ति यथा द्वितीयखण्डस्य निष्पत्तियोगरेखयास्ति ।

यथा द्जरेसा कल्पिता । अस्या वर्गो द्असण्डस्य पश्चगुणितवर्गतुत्यः कल्पितः । जबं योगरेसा कल्पिता । तदा अबरेसा जिन्होपरि पूर्वोक्तनिष्पत्तेभीगद्वयं प्राप्स्यति । महत्स्रण्डम् अजं भविष्यति ।



#### अत्रोपपत्तिः ।

क्षेत्रं पूर्ववत् पूर्णं कार्यम् । अखक्षेत्रं जह्नक्षेत्राच्छोध्यम् । तदा श्रेषं खगरक्षेत्रं चतुर्गुणअद्वर्गतुल्यं भविष्यति । अववर्गतुल्यं भविष्यति । अकक्षेत्रं मजक्षेत्राद्विगुणमस्ति । मजमहयोगतुल्यमप्यस्ति । श्रेषं

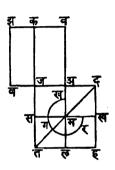
१ द्वितीयक्षेत्रम् and so in other places. V. २ प्रथमसण्ड-द्विगुणतुल्या K., A. ३ पूर्वोक्तनिष्यत्ते: is omitted in K., A.

लसक्षेत्रम् अजवर्गतुत्यं जङ्गक्षेत्रसमानं भविष्यति । इदं अबव-जघातोऽस्ति । ततोऽस्मदिष्टं समीचीनम् ॥

## अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

यदि जदवर्गात् दअवर्गः शोध्यते तदा शेषं दअअजवातस्य द्वि-

गुणेन अबअजघाततुत्येन अजवर्गयुक्तेन तुल्यमवशिष्यते । इदं चतुर्गुणितद् अवर्गेण समानं भविष्यति । अबवर्गतुल्यं भविष्यति । पुनर् अबअजघातो द्वयोः शोध्यते तदा शेषः अजवर्गः अबबजघाततुल्यो भविष्यति । ततो-ऽसादिष्टं समीचीनं भविष्यति । क्षेत्रं पूर्वोक्तवत् श्रेयम् ॥



#### अथ पश्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यस्या रेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन महत्खण्डलघुखण्ड-निष्पत्त्या तुल्या भवति । पुनर्महत्खण्डस्यार्द्ध लघुखण्डयुक्तं कार्यम् । तदा योगवर्गः पैऋगुणितेन महत्खण्डार्द्धवर्गेण समो भविष्यति ।

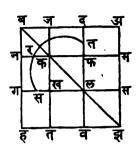
यथा अबरेखा किल्पता। तस्या महत्खण्डम् अजं किल्पतम्। मह-त्खण्डस्याद्धे दजं किल्पतम्। तसात् दबवर्गः पश्चगुणितज्जदवर्गसमो भविष्यति।

#### अस्योपपत्तिः ।

अबरेखोपरि अहं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । बझकर्णः सं-

१ तुस्यं चतुर्गुणित &c. D., V. २ पुनस्तत्रैव महत्स्वण्डस्यार्थ चेयोज्यते К., A. ३ पश्रपुणितमहस्स्वण्डार्थवर्गसमो भवति К., A. भा॰ २४

योज्यः । पुनर्दवजतरेसे अझरेसायाः समानान्तरे निष्कास्ये । क्षेत्रं संपूर्णं कार्यम् । अदद्जरेसयोः समानभावित्वेन अफसेत्रजफसेत्रकगक्षेत्रगतक्षेत्राणि मियः समानानि भविष्यन्ति । मलक्षेत्रसवक्षेत्रफखसेत्रलतक्षेत्राणि चत्वारि समकोणसमन्वर्त्रभुजक्षेत्राणि समानानि भविष्यन्ति ।



अबबजधातो जहक्षेत्रतुल्यः तरसक्षेत्रतुल्योऽपि अजवर्गस्य मतक्षेत्रतुल्यस्य समो भविष्यति । चृतुर्गुणफखक्षेत्रतुल्योऽपि भविष्यति । पुनः फखक्षेत्रमुभयोर्युक्तं कार्यम् । तदा दगक्षेत्रं दबवर्गतुल्यं पञ्चगुणि-तफखक्षेत्रं भविष्यति । पञ्चगुणितद्जवर्गस्यापि समानं भविष्यति ।

# अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

अबबजवाततुस्यः अजजबवातजबवर्गयोगोऽस्ति । अयं द्ज-जबवातो द्विगुणो जबवर्गयुतस्तेन तुल्योऽस्ति । अयं अजवर्गतु-ल्योऽस्ति चतुर्गुणद्जवर्गतुल्यो मविष्यति । पुनर्दजवर्ग उभयोर्युक्तः कार्यः । तदा दजजबवातो द्विगुणो दजवर्गजबवर्गयुतो दबवर्गतुल्यः पश्चगुणितद्जवर्गसमो मविष्यति । ईदमेवेष्टम् ॥

# अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७॥

रेखाया द्वे खण्डे तथा कार्ये यथा सर्वरेखाया महत्ख-ण्डेन निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्पत्तितुल्या भवति । पुना रेखायां महत्खण्डतुल्या रेखा योज्या । तत्र योगेनी-त्पन्नरेखाया निष्पत्तिः प्रथमरेखया तथा भवेत् यथा प्रथम-रेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेनास्ति ।

१ पूर्ण K., A. २ °योगो द्विगुणक् जाज्ञ घातेन जाज्ञ वर्गयुतेन तुस्थो भवति K., A. ३ यॉज्यः K., A. ४ इष्टमिक्मेन K. ५ योगोत्पन्न B. ६ भवति B.

यथा अबरेखाया जिचिह्ने तथाविधे खण्डे कृते । अस्याम् अजं महत्खण्डं कल्पितम् । पुनर्महत्खण्डतुल्या अदरेखा योजिता । त-दोत्पन्नद्वरेखाया अचिह्ने तादृशे खण्डे भविष्यतः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अबस्य निष्पत्तिः अजतुत्यअद्रेखया तथास्ति यथा अजनिष्पत्ति-जबेनास्ति । तसात् दअअबयोर्निष्पत्तिबेजजअनिष्पत्तितुत्या भवि-ष्यति । तसात् देबबअनिष्पत्तिबेअअजतुत्यअदिनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवास्मदिष्टम् ।

पुनरिप न्यूनखण्डतुल्यं महत्खण्डात्पृथकार्यम् । तदा महत्खण्डं तस्यामेव निष्पत्तौ विभागं प्राप्स्यति । न्यूनखण्डं च महत्खण्डं भवि-ष्यति । यथा दबरेखाया अचिहे तस्यामेव निष्पत्तौ उमे खण्डे क-ल्पिते । महत्खण्डम् अबं कल्पितम् । पुनदेअरेखातुल्या अजरेखा अबरेखायाः पृथक् कृता । तसात् अबरेखाया जचिहोपिर तस्यां निष्पत्तौ द्वे खण्डे भविष्यतः । अजरेखा च महत्खण्डं भविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

दबअबनिष्पत्तिबंअअद्वुल्यअजनिष्पत्तिः। तसात् दअवुल्य-अजस्य अबेन निष्पत्तिजीबजअनिष्पत्तेः समाना भविष्यति। तसात् अबअजयोर्निष्पत्तिः अजजबनिष्पत्तितुल्या भविष्यति। इदमेवेष्टम्॥

#### अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८॥

यदा रेखायाः स्वमहत्खण्डेन निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुख-ण्डनिष्पत्तितुल्या भवति तदा सर्वरेखाया वर्गो लघुखण्ड-वर्गयुतः सन् त्रिगुणमहत्खण्डवर्गतुल्यो भविष्यति ।

यथा अबरेखा कल्पिता। जवन्यूनखण्डं तस्यां निष्पत्तौ कल्पितम्। तदा अववर्गवजवर्गयोगस्तिगुणितअजवर्गेण तुल्यो भविष्यति।

९ द्वनिष्पत्तिः अवेन V., D. २ विभक्तं भविष्यति K., A. ३ निष्प-त्तिसमानास्ति । तस्मात् V. ४ यस्मा देखायाः K.,A.

#### अस्योपपत्तिः ।

अबबजवर्गयोगो द्विगुणअबबजघातअजवर्गयोगसमानोऽस्ति । तसात् अबबजवर्गयोगः त्रिगुणितेन अजवर्गेण तुल्यो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

या रेखाङ्कसंज्ञाही भवति तस्यास्तथा द्वे खण्डे कार्ये यथा सैर्वमहत्खण्डयोर्निष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डयोर्निष्पत्ति-तुल्या भवति । तत्र प्रत्येकं खण्डमन्तररेखा भविष्यति ।

यथा अबरेला कल्पितमहत्लण्डं च अजं कल्पितम् । पुनर् अदरेला अबर्रेल् योज्या । तसात् दजर्गः पञ्चगुणितद् अ-वर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् दअरेला दजरेला च मिथो भिन्ना भविष्यति । अनयोर्वर्गो केवल्पद्वसंज्ञाहीं भविष्यतः । तसात् अजम् अन्तररेला भविष्यति । पुनर्यदि अजवर्गतुल्यं अबरेलोपिर क्षेत्रं कार्य तदोत्पन्नद्वितीयभुजो जबरेला भविष्यति । तसात् जबरे-लाप्यन्तररेला भविष्यति । इदमेवास्मदिष्टम् ॥

# अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

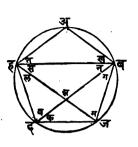
समपश्चास्रक्षेत्रमध्ये त्रयः कोणा यदि समाना भवन्ति तदा शेषा अपि कोणाः समाना भवन्ति ।

यथा अवजदहपञ्चभुनं क्षेत्रं कल्पितम् । अजदकोणाः समानाः कल्पिताः । पुनर्बहबदरेखे संयोज्ये । बहुअत्रिभुने बजदित्रभुने अकोणजकोणयोः समानभावित्वेन अकोणजकोणसंबित्धभुनानां साम्यभावित्वेन तकोणककोणौ समानौ भविष्यतः । एवं बहुबद्द- मुजाविष समानौ भविष्यतः । बहुद्दकोणबद्दह्कोणाविष समानौ भविष्यतः । तसात् संपूर्णो हकोणः संपूर्णदकोणतुत्यो भविष्यति ।

९ सर्वरेखामइत्स<sup>°</sup> V. २ कियते K., A.

पुनरेवं निश्चीयते बकोणो जकोणतुल्यो भविष्यति । पुनर्जदह-

कोणाः समानाः किल्पताः । जहरेखा च संयोज्या । तदा बदजित्रभुजे दहजित्र-भुजे जकोणदकोणयोः साम्यात् जकोण-दकोणसंबन्धिभुजयोः साम्येन च गकोण-लकोणौ समानौ भविष्यतः । एवं बद्द-जहभुजाविष समानौ भविष्यतः । वकोण-मकोणाविष समानौ भविष्यतः । तसात्



दश्जश्भभुजाविष समानौ भविष्यतः । शेषौ श्रवश्चहाविष समानौ भविष्यतः । तैसात् नकोणसकोणाविष समानौ भविष्यतः । खकोण-तकोणौ समानावास्ताम् । कुतः । अवअहभुजयोः साम्यात् । त-सात् सवो बकोणः सर्वहकोणतुल्यो जातः ।

एवं निश्चितम् अकोणो जकोणतुल्यो भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥ अथैकादशं क्षेत्रम् ॥ ११ ॥

वृत्तक्षेत्रान्तः समत्रिभुजस्य भुजवर्गस्त्रिगुणितव्यासार्छ-वर्गतुल्यो भविष्यति ।

यथा अबजं समत्रिभुजं क्षेत्रं देंकेन्द्रं अबजवृत्तान्तःपाति कल्पि-

तम् । पुनर् अदहरेखा हजरेखा च संयोज्या । तसात् अजहचापं वृत्ताई भ-विष्यति। अजचापं वृत्तित्रभागो भविष्यति। जहचापं वृत्तषष्ठांशो भविष्यति । अहव-गश्चतुर्गुणितअदवर्गतुल्योऽस्ति । अह-वर्गः अजजहवर्गयोगतुल्योऽस्ति । अज-वर्गअदवर्गयोगेनापि समानो भविष्यति ।



१ पुन: K., A. २ जाती K., A. ३ A. and K. insert हि aftr एवम्. ४ दकेन्द्रजञ्जान्तः V.

तसात् अजअदवर्गयोगश्चतुर्गुण अदवर्गेण समानो भविष्यति । तसात् अदवर्ग उभयोः शोध्यः । तदा अजवर्गस्निमुणअदवर्गतुत्यो-ऽवशिष्यते । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

#### अथ द्वादशं क्षेत्रम् ॥ १२ ॥

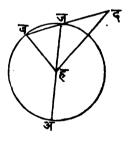
वृत्तस्यान्तः समानषड्भुजक्षेत्रमस्ति तथा समानदशभुज-मि क्षेत्रमस्ति तयोः क्षेत्रयोर्भुजयोगस्य समानषड्भुजेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा षड्भुजस्य देशभुजभुजेनास्ति ।

यथा अवजवृत्ते दशमुनस्य भुजो बजं कल्पितः । बज्रमुजो दिनद्वपर्यन्तं वर्द्धनीयः । षड्भुजक्षेत्रमुजतुल्यं जदं पृथकार्यम् । ब-दस्य जदेन निष्पत्तिद्वजजबनिष्पत्तिः ।

#### अस्योपपत्तिः ।

अबचापं चतुर्गुणबजचापतुल्यमित । तदा अहबकोणश्चतुर्गुण-बहुजकोणतुल्यो भविष्यति । पुनर् अहबकोणो बजहकोणात् द्विगु-

णोऽस्ति । बजहकोणो दकोणाहिगुणोऽस्ति । कुतः । जदजहयोः साम्यात् । तस्मात् अहबकोणश्चतुर्गुणितदकोणतुल्यो भवि-ध्यति । तस्मात् बहजकोणबदहकोणो बजहत्रिभुजे बदहत्रिभुजे च समानौ भवि-ध्यतः । द्वयोस्तिभुजयोर्बकोण एक एवास्ति । तस्मादुमे त्रिभुजे सजातीये भविष्यतः ।



तसात् द्वभुजस्य निष्पत्तिर्बह्भुजेन बह्भुजबज्जभुजनिष्पत्तिस-माना भविष्यति । बहुजदौ समानौ स्तः । तसात् बद्दज्ययोनि-ष्पत्तिद्वज्जबयोनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

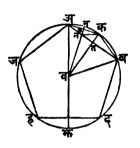
९ दशभुजेनास्ति D. २ कार्यम् । A., K. ३ °निष्पत्तितुस्या मिनिष्यति V.

#### अथ त्रयोदशं क्षेत्रम् ॥ १३ ॥

वृत्तपश्चमांशस्य पूर्णजीवावर्गः षष्ठांशपूर्णज्यावर्गदशमांश-पूर्णज्यावर्गयोर्योगेन तुल्यो भवति ।

यथा अवदहजवृत्तं बकेन्द्रं कल्पितम् । पश्चमांशज्या अवं क-ल्पितम् । पुनर् अवझं व्यासः कल्पितः । वबरेखा संयोज्या । पुन-

विचिद्वात् अबरेखोपरि वतकं लम्बो देयः।
पुनर् अककवरेखे संयोज्ये। अकरेखोपरि
वलमं लम्बो देयः। पुनः कनरेखा संयोज्या। तदा बमचापं साई दशमांशोऽस्ति। बझचापं त्रिगुणदशमांशतुल्यमस्ति। तदा बवझकोणो द्विगुणबवमकोणतुल्यो मविष्यति। अयं बवझकोणो द्वि-



गुणबअवकोणतुल्योऽस्ति । कुतः । बववअभुजयोः साम्यात् । बवनित्रभुजे बवअत्रिभुजे बवनबअवकोणौ समानौ स्तः । उभयो- विबनकोण एक एवास्ति । तसादुभे त्रिभुजे सजातीये भविष्यतः । तसात् अबबवयोर्निष्पत्तिवेबबनयोर्निष्पत्तिसमाना भविष्यति । तसात् अबबनयोर्घातो बववर्गतुल्यो भविष्यति । बवं वृत्तषष्ठांशस्य पूर्णजीवास्ति ।

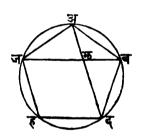
पुनरिप वलम् अके लम्बोऽस्ति । तसात् अकं लिबहे अर्द्ध भिव-ध्यति । नअनकयोः साम्येन नकअकोणनअककोणौ कनअत्रि-भुजे समानौ भिवष्यतः । एवं वकअत्रिभुजे कवअकोणकअब-कोणौ समानौ भिवष्यतः । कअवकोणो वकअत्रिभुजे कनअ-त्रिभुजे एक एवास्ति । तसादेते त्रिभुजे सजातीये भिवष्यतः । तसात् बअभुजनिष्पत्तिः अकभुजेन अकभुजअनभुजयोर्निष्पत्तिसमाना भिवष्यति । तसात् नअअवषातः अकवर्गनुत्यो भिवष्यति । अकं दशमांशस्य पूर्णजीवास्ति । अववनषातः अवअनषातयुक्तः अववर्ग- तुल्योऽस्ति । तसात् पञ्चांशपूर्णजीवावर्गः षष्ठांशपूर्णजीवावर्गदशमांश-पूर्णजीवावर्गयोर्योगतुल्यो जातः । इदमेवासाकमिष्टम् ॥

# अथ चतुर्दशं क्षेत्रम् ॥ १४ ॥

वृत्तान्तः समभुजपञ्चास्रक्षेत्रस्य कोणद्वयसन्मुखजीवयोः संपातो यदि भवति तत्र पूर्णजीवाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डस्य निष्पत्तिर्रुघुखण्डेनास्ति । मह-त्खण्डं च पञ्चसमभुजक्षेत्रस्य भुजतुल्यं भविष्यति ।

यथा अवदहजपञ्चसमभुजे अदपूर्णजीवाजवपूर्णजीवयोः संपातो झिचहे कल्पितः । अवझित्रभुजवजअत्रिभुजे सजातीये भविष्यतः ।

कुतः । बअझकोणबजअकोणयोः साम्यात् । उभयोर्बकोण एक एवास्ति । तस्मात् जबभुजनिष्पत्तिबेअभुजतुल्यअजभुजेन तथास्ति यथा अजभुजस्य
बझभुजेनास्ति । पुनरिष झबअकोणझअबकोणयोः समानभावित्वेन जझअकोणः
द्विगुणझअबकोणतुल्यो भविष्यति ।



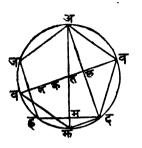
पुनरिप जहद्वापं बद्वापाद्विगुणमिस्त । तेन जअझकोणो झअब-कोणाद्विगुणो भवति । तसात् जझअकोणजअझकोणो समानो भविष्यतः । तसात् अजं झजं समानं भविष्यति । तसात् बज-जझयोनिष्पत्तिज्ञझझबयोनिष्पत्तिसमाना भविष्यति । झजम् अजस-मानमिस्त । एवम् अदपूर्णजीवा झचिह्ने एतनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

#### अथ पश्चदशं क्षेत्रम् ॥ १५ ॥

यदि वृत्तव्यासोऽङ्कर्सज्ञाहीं भवति तदा पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेखा भविष्यति ।

यथा वृत्तं पञ्चसमभुजं च अबदहर्जं कल्पितम्। पुनर् अझव्यास-

बवव्यासौ निष्कास्यौ । पुनर् अदरेखा सं-योज्या । पुनस्तबचतुर्थाशतुरुयं तकं पृथ-कार्यम् । तदा अलतित्रभुजअमदित्रभुजे अकोणस्यैकत्वेन लकोणमकोणयोश्च स-मानमावित्वेन सजातीये भविष्यतः । त-सात् अतस्य बततुरुयस्य निष्पत्तिरुतेन तथास्ति यथा अदस्य दमेनास्ति । पुन-



र्वतचतुर्थीशतुल्यतकनिष्पत्तिर्छतेन तथास्ति यथा छदाईस्य दमे-नास्ति । लदार्द्धस्य दहार्द्धेनापि । पुनः कलतकयोर्निष्पत्तिस्तथास्ति यथा हदलस्य निष्पत्तिदेलेनास्ति । तसात् कलवर्गतकवर्गयोर्निष्पत्ति-**हेदलवर्गदलवर्गयोनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । अदं** पञ्चसम्भुजको-णस्य पूर्णजीवास्ति । दहं पञ्चसमकोणमुजोऽस्ति । एतयोर्योगो यदि मनित तदाऽनयोर्दिचिद्दे तथा विभागौ भविष्यतो यथा सर्वयोगस्य नि-ष्पत्तिः अदेन अददहनिष्पत्तितुल्या भविष्यति । हदलवर्गः पश्चगुः णितदलवर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् कलवर्गः पश्चगुणकतवर्गः-तुत्यो भविष्यति । बकं पश्चगुणतकतुल्यमस्ति । तसात् बककतयो-निष्पत्तिरुककतनिष्पत्तिवर्गतुल्या भविष्यति । तसात् लकं बकतक-योर्मध्यनिष्पत्तौ पतितम् । तसात् बक्तवर्गः पश्चगुणलक्तवर्गतुल्यो भविष्यति । तसात् बककलवर्गी पैञ्चरूपयोर्निष्पत्ती भविष्यतः । तैदा किं भविष्यति । एते द्वे रेखे भिन्ने भविष्यतः । अनयोर्वर्गी चाइसंज्ञाही भविष्यतः । बकम् अइसंज्ञाईमस्ति । अस्य वर्गः कल-वर्गबल्लभिनरेखावर्गयोर्थोगतुल्योऽस्ति । तदा बलरेखा चतुर्थ्यन्तर-रेसा भविष्यति । बवबल्रघाततुल्यो बअवर्गोऽस्ति । तसात् बअं न्यूनरेखा भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

९ पद्महस्य रूपस्य च K., A. ২ Omitted in K., A. মা॰ ২५

#### पुनः प्रकारान्तरम् ॥

दश्ररेला संयोज्या। इयं रेला छतरेलाबाः समानान्तरा मविष्यति। कृतः। अदश्रस्य समकोणत्वात्। अतअश्रयोनिष्पत्तिस्त्रछश्रदयोनिष्पित्तुल्या भविष्यति। तसात् छतं दश्रस्मार्द्धं भविष्यति। इदं किमितः। दशसमभुजस्य क्षेत्रस्य भुजार्द्धं भवति। पुनः कनं तकतुल्यं प्रथकार्यम्। तसात् तनं षट्समभुजस्य क्षेत्रस्य भुजार्द्धतृल्यं भविष्यति। छनस्य तनिद्धे एताद्दशे सण्डे जाते छनस्य तनेन निष्पत्तः तनछत्तनिष्पत्तितुल्यास्ति। तसात् छकवर्गः पश्चगुणतकवर्गेतुल्यो भविष्यति। तसात् वकवर्गः पश्चविंशतिगुणतकवर्गेतुल्यो भविष्यति। पश्चगुणलकवर्गेणापि तुल्यो भविष्यति। पुनः पूर्वप्रकारेण एतामुपपत्ति पूर्णो कुर्मः॥

# अथ पोडशं क्षेत्रम् ॥ १६ ॥

गोलान्तश्चतुःफलकः शङ्कस्तथा कर्त्तव्योऽस्ति यथा प्रति-फलकं त्रिभुजं समभुजं भवति । अस्य गोलस्य व्यासवर्गः शङ्कभुजस्य सार्ज्यवर्गतुल्यः पतिष्यति ।

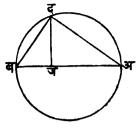
यथा गोलव्यासः अबं किल्पतः । अस्योपिर वृत्तार्द्धं कार्यम् । पुन-व्यासितृतीयांशं जबं पृथकार्यम् । जिन्हात् जदलम्बो निष्कास्यः । अदरेखा संयोज्या । एकमन्यवृत्तं कार्ये यस्य व्यासार्द्धं दज्जतुत्यं भवति । पुनरस्य वृत्तान्तः कल्पमं समानित्रभुजं कार्यम् । वृत्तकेन्द्रं च झं किल्पतम् । पुनरस्मात्केन्द्रात् इवलम्बो वृत्तघरातले द्वयोदिशोः कार्यः । जअतुत्यं झनं पृथकार्यम् । पुनः कनमनलनरेखाः संयोज्याः । तस्मात् कल्पमनशङ्करिष्टो भविष्यति ।

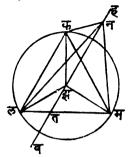
#### अस्योपपत्तिः ।

अबबजयोर्निष्पत्तिः अददजनिष्पत्तिवर्गतुत्यास्ति । अवं बजा-त्रिगुणमस्ति । तसात् अदवर्गो दजवर्गात्रिगुणो भविष्यति । कझ-

९ व्यासात् V.

बर्गादपि त्रिगुणो भविष्यति । तसात् छकम् अदसमानं भविष्यति ।





अनेनेव प्रकारेण सर्वे भुजाः कार्याः । पुनरिष कश्ननित्रभुजद्ज-अत्रिभुजयोद्वीं कोणी समकोणी स्तः । कोणसंवन्धिमुजी च समानी स्तः । तसात् कनम् अद्वुल्यं भविष्यति । अनेन प्रकारेण सर्वा रेखाः समाना भविष्यन्ति । तसात् सर्वे शङ्कुभुजाः समाना भविष्यन्ति । पुनर्जवद्वुल्यं भविष्यति । वते व्याद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तदेदं वृत्तं किच्दिल्लाद्वे कार्यम् । तस्योपिर वर्तनं च कार्यम् । तस्यति । अद्वर्गः सन्ति । तस्याद्यं शङ्करण्डास्ति । स्वप्यति । अद्वर्गः अववर्गयोर्निष्यत्तिः अज्ञञ्जवयोर्निष्पत्तिदुल्यास्ति । तस्यात् गोल्ल्यास्वर्गः शङ्करुजस्य सार्द्वतुल्यः पतितः । इदमस्याकिमष्टम् ॥

## अथ सप्तदशं क्षेत्रम् ॥ १७ ॥

गोलान्तर्धनहस्तसंज्ञं क्षेत्रं केर्नुमिष्छास्ति तदा गोलव्यास-वर्गो घनहस्तभुजवर्गात्रिगुणो भवति ।

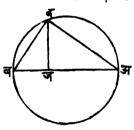
यथा अबं व्यासः कल्पितः । जिचिहेऽस्य तृतीयांशः कार्यः। अस्योपरि अदबं वृत्तार्द्धे कार्यम् । जदलम्बश्च निष्कास्यः। बदरेसा संयोज्या । बदरेसातुल्या हृझरेसा निष्कास्या ।

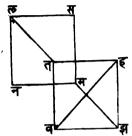
९ V. inserts पुनः here. २ कियते K., A. ३ V. omits अद्देशा संयोज्या।.

हमरेलोपरि मतं समकोणसमचतुर्भुजं कार्यम् । पुनर्झतसमकोणसम-चतुर्भुजोपरि झरुं घनहस्तक्षेत्रं कार्यम् । इदिमष्टं मविष्यति ।

#### अस्योपपत्तिः ।

हवरेखा सवरेखा च संयोज्या । सवरेखावर्गः सहवर्गहववर्ग-योगतुल्योऽस्ति । हववर्गो झहवर्गझववर्गयोगतुल्योऽस्ति । तस्रात्





सववर्गो हझवर्गात्रिगुणो भविष्यति । बद्दवर्गात्रिगुणोऽपि भविष्यति । अवबज्ञयोर्निष्पत्तिः अववर्गबद्दवर्गनिष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् अव-वर्गो बद्दवर्गात्रिगुणो भविष्यति । तसात् अवसवौ समानौ भविष्यतः। यदि सवरेखायामर्द्धवृत्तं क्रियते तस्य चेद् श्रेमणं क्रियते तदा हचिहे छिगिष्यति । कुतः । सहवं समकोणोऽस्ति । एवं घनहस्तस्य सर्वकोणेषु छिगष्यति । तसादयं घनहस्तः अवगोछान्तःपाती भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥

## अथाष्टादशं क्षेत्रम् ॥ १८॥

वृत्तान्तरैष्टास्रं धनक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति येथा प्रतिफल-कघनहस्ते सर्वभुजानां समत्वात् त्रिभुजं समानभुजं प्रत्यस्रं त्रिभुजं समानभुजं पतत्यस्य गोलस्य व्यासवर्गो घनक्षेत्रभु-जवर्गाद्विगुणे पतिष्यति ।

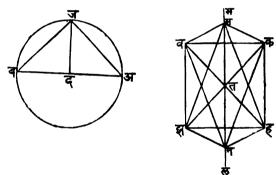
यथा अबं व्यासः कल्पितः। अयं दिचिहेऽद्वितः कार्यः। अजवम्

१ कृतम् K., A. २ आमणं V. ३ अष्टफलकघनक्षेत्रं K., A. ४ यथा पतिति K., A.

अर्द्ध वृत्तं कार्यम् । दजलम्बो निष्कास्यः । जबरेसा च संयोज्या । पुनर्जवतुत्या हझरेसा निष्कास्या । पुनर्हझरेसोपरि हवं समको-णसमचतुर्भुजं कार्यम् । पुनर्हवरेसा झकरेसा च संयोज्या । एते रेसे तिचिह्ने संपातं करिष्यतः । पुनस्तिचिह्नात् लमलम्बः समकोणसमचतुर्भुजस्य धरातले उभयतः कार्यः । पुनर् अद्तुत्यं नतं तसं च पृथ-कार्यम् । पुनर्नम्बन्धन्यनकनहसझसवसकसरेसाः संयोज्याः । तसात् हनझवकसम् इष्ट्यनक्षेत्रं भविष्यति ।

#### अत्रोपपत्तिः ।

बद्जद्समानरेसावर्गयोगतुल्यो बजवर्गोऽस्ति । बजवर्गो ह्रभव-



गेतुस्योऽस्ति । हझवर्गो हतझतसमानरेखयोर्वगयोगतुस्योऽस्ति । त-सात् तहं तझं प्रत्येकं दबतुस्यं भविष्यति । पुनस्तवं तकं दबस-मानं भविष्यति । तनतसी दबतुस्यावास्ताम् । तसात् नचिहे सचिहे समकोणसमचतुर्भुजकोणेषु यावत्यो रेखा लगिष्यन्ति ताः सर्वाः समाना भविष्यन्ति । तदाष्टौ भुजाः समाना भविष्यन्ति । यदि नसरेखायाम् अबरेखातुस्यायां वृत्तार्द्धे क्रियते तदा तैद्धमणेन तत्सम-कोणसमचतुर्भुजकोणेषु लगिष्यति । कुतः । सर्वेषां लम्बानां दज्जतु-स्यत्वात् । तसादिदं घनक्षेत्रं गोलान्तर्गतं भविष्यति । अबवर्गो बज-

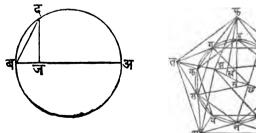
<sup>9</sup> तद्भामणेन D., V. तदा तत् V., D.

वर्गाह्रिगुणोऽस्ति । तदा गोलव्यासवर्गो धनसेत्रभुजवर्गाद्विगुणो भवि-ष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

अयैकोनविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ १९॥

गोलान्तर्विशतिफलकयुतं क्षेत्रमुत्पादियतुं येथेष्टमस्ति प्र-तिफलकं त्रिभुजं समानभुजं यथा भवति।यदि गोलव्यासोऽ-क्कसंज्ञार्हो भवति तदास्य क्षेत्रस्य भुजो न्यूनरेखा पतिष्यति।

यथा अवं व्यासः किल्पतः । असात् पश्चमांशो बजं पृथक् कार्यम् । अबव्यासोपिर अदबम् अर्द्धवृत्तं कार्यम् । पुनर्जद्रुक्न्वो निष्कास्यः । बदरेसा च संयोज्या । पुनरेकं वृत्तं कार्य यस्य व्यासार्द्धे बद्दुल्यं भविष्यति । तद्वृत्तं ह्झवं किल्पतम् । तद्वृत्तान्तर्ह्झत्वक-पैश्चसमभुजं कार्यम् । पुनरस्य पश्चचापानां लमनसगचिद्धेष्वर्द्धे कार्यम् । ततो दशपूर्णजीवाः संयोज्याः । प्रयमपश्चसमानभुजानां पश्च-कोणम्यो वृत्तव्यासार्द्धेतुल्याः पश्च लम्बाः स्वाप्यास्ते च लम्बा हफझ-खतरवशकतसंश्चकाः किल्पताः । पुनर्दशभुजकोणेषु रेसाः संयोज्याः । तसात् लमनसगपश्चसमानभुजं वृत्तेऽन्यत् क्षेत्रं भविष्यति । पुनर्दशभुजकोणेभ्यो लम्बमस्तकेषु च दशरेसाः संयोज्याः । एता रेसाः प्रत्येकं वृत्तान्तः समपश्चभुजभुजेन तुल्या भविष्यन्ति । पश्चित्रभुजानि समभुजान्युत्पन्नानि भविष्यन्ति । एषां भूमिर्वृत्तान्तः पश्चभुजस्य



९ इतान्तं K., A. २ इध्यते परंतु प्रतिफलकं &c. K., A. इष्टमस्ति । प्रतिफलकं V. ३ समानाः V.

भुजा भविष्यति । पुनिक्सभुजानां शीर्षे रेखाः संयोज्याः । एता रेखाः समानाः समानान्तरा वृत्तान्तः पश्चभुजभुजेन समानाः पित-ष्यन्ति । पुनः पश्चक्षेत्राणि त्रिभुजानि भृविष्यन्ति । पुनर्वृत्तकेन्द्रं सिन्दं किल्पतम्। सिन्द्दात् वृत्तोभयदिशि धरातल्योर्लम्बो निष्कासः। ततो लम्बात् सखरेखा वृत्तषढंशस्य पूर्णजीवातुल्या पृथकार्या । वृत्त-दशमांशस्य पूर्णजीवातुल्या खझरेखा पृथकार्या । एवं द्वितीयदिशि छसं वृत्तदशमांशपूर्णजीवातुल्यं पृथकृतम् । पुनः सह्व्यासार्द्धे योजनीयम् । खफरेखा सहरेखायाः समाना समानान्तरा च योज्या । पुनरुपरितनपश्चसमभुजकोणझिन्द्दयो रेखाः संयोज्याः । तस्मात् पश्चित्रभुजान्यन्यान्युत्पचन्ते । पुनर्वृत्तान्तः पश्चसमभुजकोणछिन्द्दयो रेखाः संयोज्याः । तस्मात् पश्चित्रभुजान्यन्यान्युत्पचन्ते । पुनर्वृत्तान्तः पश्चसमभुजकोणछिन्द्दयो रेखाः संयोज्याः । तस्मादिष्टं क्षेत्रं संपूर्णं मविष्यति । संयुक्ता रेखाः प्रत्येकं पश्चसमभुजस्य भुजा भविष्यन्ति ।

सझरेलायाः खिचहे एताहशौ विभागौ जातौ सझरेलाया निष्पत्तिः सखरेलाया तथा सखरेलाया निष्पत्तिः खझरेलयास्ति । तसात् सझरेलातुल्यछखरेलाझखरेलयोर्घातः सखरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । तसात् खफरेला छखलझरेलयोर्भध्यनिष्पत्तौ पतिष्यति । यदि छझरेलायामर्द्धे वृत्तं कियते तदा फिचहे छगिष्यति । पुनः क्षेत्राणां सर्वेषु कोणेषु छगिष्यति । पुनः सखरेला अचिहेऽद्धीकृता । तसात् झअरेलावर्गः पञ्चगुणितखअरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । छझरेलासखरेलयोर्निष्पत्तिझअखअरेलयोर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् छझरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणखसरेलावर्गतुल्यो भिवष्यति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणखदरेलावर्गन्तुल्या भिवष्यति । अबरेलावर्गः पञ्चगुणखदरेलावर्गन्तुल्या भिवष्यति । अवश्वरावदवर्गी अबबजयोर्निष्पत्तौ सः । तसात् छझरेला अबतुल्या भविष्यति । तसादिदं क्षेत्रं गोछान्तर्गतं भविष्यति । अस्य भुजः पञ्चसमभुजभुजतुल्योऽस्ति । तसादिस्य भुजो न्यूनरेला भविष्यति । इदिमष्टम् ।

पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेखा ततो भवति यतो वृत्तव्यासोऽङ्कसं-ज्ञाहीं भवति । अत्र तु गोलव्यासोऽङ्कसंज्ञाहींऽस्ति । वृत्तव्यासोऽङ्कसं-ज्ञाहीं नास्ति । परं तु वृत्तव्यासार्द्धवर्गो गोलव्यासवर्गस्य पश्चमांशोऽस्ति । तदा वृत्तव्यासः केवलमङ्कसंज्ञाहीं भविष्यति । यस्य वृत्तस्य व्यासोऽ-इसंज्ञाहीं भवत्यन्यवृत्तव्यासवर्गः केवलमङ्कसंज्ञाहीं भवति तदा प्रथमव्या-सनिष्पत्तिर्द्धितीयवृत्तव्यासेन तथा भवति यथा प्रथमवृत्तान्तः पश्चसम-भुजभुजस्य निष्पतिर्द्धितीयवृत्ते पश्चसमभुजभुजेनास्ति । यदि द्वयो-व्यासयोर्वर्गी मिलितौ भवतस्तदा द्वयोर्भुजयोरिप वर्गी मिलितौ मवि-ष्यतः । तस्मादस्य क्षेत्रस्य पश्चसमभुजस्य भुजो न्यूनरेखया केवलवर्ग-मिलितो भविष्यति । न्यूनरेखया या मिलिता रेखा स्वात् सा केवल-वर्गमिलिता भविष्यति । तदा सापि न्यूनरेखा भवति । तस्मादस्य क्षेत्रस्य भुजो न्यूनरेखा भविष्यति ॥

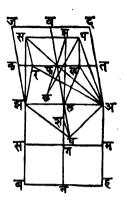
# अथ विंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २० ॥

गोलस्यान्तः समभुजद्वादशफलकं क्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति यथा प्रत्येकं फलकः पश्चसमभुजः समानकोणो भविष्यति । अस्य क्षेत्रस्य भुजोऽन्तररेखा भविष्यति यदि व्यासोऽङ्कसं-ज्ञाहीं भविष्यति ।

यथा अवअजे उमे धरातले अगोलान्तर्गतघनहस्तक्षेत्रस्य किराते। एकं धरातलं द्वितीये धरातले लम्बन्त् किरातं भवति । पुनरेतद्वयो-धरातलयोः सर्वभुजानां वतकलमनसचिहेष्वद्धं कार्यम् । पुन-रेतिचिहेषु मिथः संपातकारिण्यः धरातलभुजानां समानान्तरा रेखाः संयोज्याः । प्रत्येकं तफरेखाकफरेखागलरेखानां रचिह्वखचिह्वश-चिहेषु द्वाविमी तथा कार्यी यथा प्रत्येकस्य खमहत्खण्डेन तथा निष्पत्तिभैवति या महत्खण्डस्य लघुखण्डेनास्ति । प्रतासां महत्ख-ण्डानि फरफखगशसंज्ञानि किरातानि । पुनः खरशचिहेम्यः

<sup>9</sup> मवति K., A. २ संपातकर्म्यः V. ३ द्वौ विभागौ V.

लम्बाः फखरेखातुस्या उभयोधरातलयो-निष्कास्याः । एते लम्बाः खथरसशघाः कल्पताः । पुनर् अखअघअथंथसस-झश्चरेखाः संयोज्याः । तसात् तफवर्ग-तखवर्गयोः अतवर्गतखवर्गयोवी योगः अखवर्गतुल्यो भवति । अयं त्रिगुणख-फवर्गतुल्योऽस्ति । त्रिगुणखथवर्गस्यापि तुल्योऽस्ति । पुनर् अथवर्गश्चतुर्गुणखथव-गीतुल्योऽस्ति । तसात् अथरेखा द्विगुण-



खफरेसातुल्या भविष्यति । तदा खरतुल्या भविष्यति । यसतु-ल्यापि भविष्यति। एतत्प्रकारेण निश्चितम् अघरेला घझरेला झसरेला थसरेखा समाना भविष्यन्ति । तसात् अथथससम्रम्भघघर्अभुजाः भविष्यन्ति । पुनः **फश**लम्बः अजधरातले खफतुत्यः निष्कास्यः । पुनर्झललखरेले संयोज्ये । तदा फत्रतुल्यफलरेन साया निष्पत्तिः शघतुल्यसफरेसया कीदृश्यस्ति । यादृशी झफ्-रेबातुत्यसफरेबाया निष्पत्तिः शलरेखातुल्यतखरेखयास्ति । फल-रेखा शघरेखायाः समानान्तराख्ति । तदा अफरेखा छञ्चरेखायाः समानान्तरा भविष्यति । तसात् झलघं सरलैका रेखा भविष्यति । अल्झं सरलेका रेलास्ति तसात् अथसझघं पद्मसम्भुजं एकधसातके भविष्यति यतो झलघरेलाअलझरेलयोर्धरातलमस्ति । तसिन् पुनर् असं अरं द्वे रेखे संयोज्ये । तररेखा फचिहे एतादृक्खण्डितास्ति यथा सर्वरेखाया महत्खण्डेन निष्पत्तिर्महत्खण्डस्य लघुखण्डेन चास्ति । अस्या महत्स्वण्डं तफमस्ति । तसात् तरवर्गरफवर्गौ तरवर्गरसवर्ग-तुल्यो स्तः । तद्योगः तअवर्गतुल्यस्य तफवर्गत्रिगुणोऽस्ति । पुनस्त-अवर्ग उभयोयोज्यः । तसात् तरवर्गरसवर्गतवर्गाणां

<sup>9</sup> अत V. २ V. has रघ aftar घथ, ३ अतसम्भं V. ४ यत् V. भा॰ २६

असवर्गतुल्यचतुर्गुणतअवर्गसमानो जातः । अझवर्गस्तु चतुर्गुण-अतवर्गसम आसीत् । तसात् असरेखा अझरेखा च समा मवि-ष्यति । तसात् अझसअसझकोणो समानो भविष्यतः । एवं निश्चीयते रसझकोणस्तयोः कोणयोः समानो भविष्यति । तसात् पश्चमुजस्य कोणाः समाना जाताः । इदं पश्चमुजं क्षेत्रं घनहस्तस्यैक-मुजे पतितम् । घनहस्तस्य द्वादशमुजाः सन्ति । यदि प्रत्येकमुजे पश्च-मुजोपरि एतादृशं कियते चेत्तदा क्षेत्रं पूर्ण द्वादशासं भविष्यति । प्रत्येकफलके पश्चपञ्चभुजा भवन्ति ।

पुनर्शफरेसा निष्कास्या यथा घनहस्ते कर्णे छचिहे संपातं करोति । तसात् फछरेसा घनहस्तकर्णार्द्धं करिष्यति । इयं फछरेसा घनहस्तकर्णार्द्धं करिष्यति । इयं फछरेसा घनहस्तस्य अजार्द्धं प्रत्यास्ति । पुनर्छसरेसायाः फिचहोपर्येताहशौ विभागौ जातौ सर्वरेसाया महत्स्वण्डेन निष्पत्तिस्तथास्ति यथा महत्स्वण्डस्य लघुस्रण्डेनास्ति । छझवर्गश्रफवर्गयोगः छझझथवर्गयोग् गतुल्यर्रुछथवर्गतुल्योऽपि त्रिगुण्छफवर्गसमोऽस्ति । छफं घनहस्तस्य भुजार्द्धमस्ति । घनहस्तकर्णार्द्धं घनहस्तार्द्धस्य त्रिगुणस्य सममस्ति । या रेसार्रुछचिहात् पश्चभुजकोणपर्यन्तं निःसरिष्यन्ति ताः सर्वा अपि समाना भविष्यन्ति । तसात् घनहस्तावेष्टको गोल एतत्सेत्रावेष्टकोऽपि मविष्यति । यदि घनहस्तभुजस्योभे सण्डे एताहशे क्रियेते यथा सर्वभुजस्य महत्स्वण्डेन यथा निष्पत्तिभवति तथा महत्स्वण्डस्य लघु-स्वण्डेन मवति तदा पश्चभुजस्य भुजो घनहस्तभुजस्य महत्स्वण्डं भवेत् । तसादियमन्तररेसा भविष्यति । इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

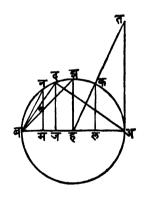
अथैकविंशतितमं क्षेत्रम् ॥ २१ ॥

एतनिश्चयं कर्नुमीहामहे । किं तत् । यानि पश्चक्षेत्राणि गोलान्तर्गतान्युक्तानि यद्येतानि एकगोले भवन्ति तदैतेषां भुजा एकगोले भवितुमईन्ति नवेति विचार्यते ।

<sup>1</sup> अस in V. २ सचिहे in V.

यथा अबं गोलव्यासः किल्पतः । व्यासोपिर अझबमर्द्धवृत्तं कार्यम् । अबं हिचिहेऽद्धितं कार्यं जिचिहे तृतीयांशः कर्त्तव्यः । हझजदलम्बो निष्कास्यो । पुनर्बझरेलाअदरेलाबदरेलाः संयोज्याः । तदा अदं शङ्कभुजो भविष्यति । बदं धनहस्तभुजो भविष्यति । वझं अष्टाझघनक्षेत्रस्य भुजो भविष्यति । पुनर् अतलम्बः अबतुल्यः अबरेलोपिर निष्कास्यः । तहरेला संयोज्या । पुनः कलरेला तअरेलायाः समानान्तरा निष्कास्या । तसात् तअअहयोर्निष्पत्तिः कल्लल्हयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् तअअहयोर्निष्पत्तिः कल्लल्हयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । तआवर्गश्चतुर्गुणअहवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् कल्वर्गश्चतुर्गुणल्हवर्गतुल्यो भविष्यति । कह्वर्गतुल्यो निष्पति । तसात् कल्वर्गश्चतुर्गुणल्हवर्गतुल्यो भविष्यति । कह्वर्गतुल्यो निष्पति । कह्वर्गतुल्यो

अहवर्गः पश्चगुणलहवर्गतुल्योऽस्ति । अ-वकल्योर्निष्पत्तिः अहल्ह्योर्निष्पत्तितु-ल्यास्ति । तसात् अववर्गः पश्चगुणकल्-वर्गतुल्यो मविष्यति । तसात् कलं विश-त्यसक्षेत्रस्य व्यासार्द्धं भविष्यति । अवं वहाद्दिगुणमस्ति । अजं च वजात् द्विगु-णमस्ति । तसात् जवं जहात् द्विगुणं भविष्यति । तसात् हवं अह्तुल्यं त्रिगु-



णहजतुल्यं भविष्यति । तसात् अहवर्गो नवगुणहजवर्गतुल्यो भविष्यति । पञ्चलहवर्गतुल्यश्चासीत् । तसात् लहं हजादिषकं भविष्यति । हमं लहतुल्यं पृथकार्यम् । मनलम्बो निष्कास्यः प्रत्येकं लमं मनं च लकतुल्यं भविष्यति । लअं मबतुल्यं भविष्यति । लअं मबतुल्यं भविष्यति । लमं विश्वतिफलकक्षेत्रवृत्तस्य व्यासार्द्वतुल्यमस्ति । प्रत्येकम् अलं मबं दशांशस्य पूर्णज्या भविष्यति । पुनर्बनरेका संयोज्या । तदा पञ्चभुजस्य भुजो भविष्यति । अयं विशत्यसक्षेत्रस्य भुजो जातः । पुनर्दवस्य सचिद्दे द्वौ विभागो कार्यो महत्त्वण्डं बसं कल्पितम् । तत्

द्वादशास्त्रभुजो भविष्यति । इदं प्रकटमस्ति । अदं गोलान्तर्गतशङ्कभुजोऽष्टासभुजस्य बङ्गभुजादिषकोस्ति । पुनर्वझं बद्धनहस्तभुजादिषकमस्ति । बदं विश्रत्यसभुजाद् बनादिषकमस्ति । तदा बनं
द्वादशफलकभुजात् बसादिषकं भविष्यति । कुतः । अजवर्गश्रवुर्गुणबजवर्गतुत्योऽस्ति । दबर्गसिगुणबजवर्गेण तुल्योऽस्ति ।
तसात् अजं दबादिषकं भविष्यति । अममत्यिषकं भविष्यति ।
प्रत्येकम् अमे दमे च उमे महत्स्वण्डे मलबसे सः । तसात् मलतुत्यं
मनं बसादिषकं भविष्यति । बसमत्यिकं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

श्रीमद्राजाधिराजप्रभुवरजयसिंहस्य तुष्टी द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राड् जगन्नाथ इति समिभधारुदितेन प्रणीते । अन्थेऽसिन्नाझि रेखागणित इति सुकोणावबोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विरति विश्वसंख्यो गतोऽयम् ॥

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

# ॥ अथ चतुर्दशाध्यायः प्रारभ्यते ॥ १४ ॥

॥ अत्र दश क्षेत्राणि सन्ति ॥ १० ॥ अ**य प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥** 

वृत्तकेन्द्रात् पश्चभुजस्य भुजोपरि यो लम्बो भवति स वृत्तपष्ठांशपूर्णजीवादशमांशपूर्णजीवायोगस्यार्द्धं भवति ।

यथा दकेन्द्रोपरि अवजवृत्तं वर्जं पश्चभुजस्य भुजो दहलम्बश्च

किल्पतः । अयं लम्बो झपर्यन्तं वर्द्धनीयः । जझरेखा च कार्या । इयं वृत्तदशमांशपूर्णजीवा जाता । दजं जझादिषकमितः । तसात् हझं दहान्यूनं भविष्यति । कुतः । जझस्य जदान्यूनत्वात् । पुनर्दहात् हवं हझतुल्यं पृथक् कार्यम् । जवरेखा संयोज्या । अद-



जकोणो जदशकोणाचतुर्गुणोऽस्ति । दश्गजकोणाद्विगुणोऽस्ति । जव-श्मकोणादिप द्विगुणोऽस्ति । जवश्मकोणो वदजकोणवजदकोणयोगो बदजकोणाद्विगुणोऽस्ति । तसात् वजदकोणवदजकोणो समानौ भविष्यतः । एवं वजभुजवदभुजौ समानौ भविष्यतः । तसात् जशश्हयोगो हदसमानो जातः । अयं द्विगुणो द्विगुणहदसमानो भवति । द्विगुणं हदं दशमांशपूर्णज्याषष्ठांशपूर्णज्यायोगादुल्यमस्ति । तसात् हदं षष्ठांशपूर्णज्यादशमांशपूर्णज्यायोगाद्धं जातम् । इदमेवा-साकिमष्टम् ॥

अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

पश्चसमभुजस्य भुजवर्गोऽस्य कोणसन्मुलपूर्णज्यावर्गो-ऽनयोर्योगः पञ्चगुणितव्यासार्द्धवर्गतुल्यो भवति ।

<sup>1</sup> तत्र V.

यथा अबजवृत्तं बजं पश्चभुजस्य भुजः अजं तत्कोणस्य पूर्णज्या

अद्शं व्यासः कल्पितः । जश्गरेसा संयो-ज्या । इयं दशमांशपूर्णज्यास्ति । अजनर्ग-जश्गवर्गयोगः अञ्चवर्गजुल्यो दश्गवर्गाच-तुर्गुणोऽस्ति । पुनदेशवर्ग उभयोर्थोज्यः । अयं दश्गवर्गो जश्गवर्गयुक्तो जनवर्गसमा-नोऽस्ति । तसात् अजवर्गनजवर्गयोगः पश्च-



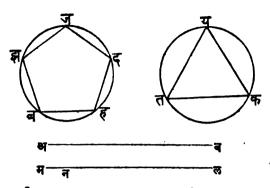
गुणितद्भवर्गसमानो जातः । इदमेवास्माकिमष्टम् ॥

# अथं तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यद्येकगोले द्वादशफलकघनक्षेत्रमथ च विंशत्यस्रघ-नक्षेत्रं चोभे भवेतां तदा द्वादशास्त्रस्य पद्यभुजं विंशत्यस्रस्य च त्रिभुजमेते द्वे क्षेत्रे एकवृत्ते भैविष्यतः।

यथा अबं गोलस व्यासः कल्पितः । जदहवश्नं द्वादशासघनक्षेत्रे पश्चभुजं कल्पितम् । तयकं विंशत्यसघनक्षेत्रस्य त्रिभुजं कल्पितम् । दश्चरेखा कल्पितगोल्रघनहस्तस्य भुजः कल्पितः । लमरेखा विंशत्य-ल्रघनक्षेत्रस्य वृत्ते व्यासार्द्धे कल्पितम् । अस्या लमरेखाया निच्हे तथाविषं खण्डद्वयं कृतं यथा सर्वरेखाया निष्पत्तिर्महत्खण्डेन भवति तथा महत्खण्डस्य निष्पत्तिर्लेष्ठसण्डेन भवति । तन्महत्खण्डं लनं कल्पितम् । इदं लनं वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या भविष्यति । तयरेखान्वगों लमलनयोर्वगयोगतुल्यो भविष्यति । लमरेखानिष्पत्तिर्लन-रेखया तथास्ति यथा श्रद्दनिष्पत्तिर्जदेनास्ति । पश्चगुणितल्यमवर्ग-रेखया तथास्ति यथा श्रद्दनिष्पत्तिर्जदेनास्ति । पश्चगुणितल्यमवर्ग-

१ पतिष्यतः K., A.



सिगुणितझदवर्गतुल्योऽस्ति । यतो लमपञ्चवर्गा झदस्य त्रयो वर्गाश्च पृथक् अववर्गतुल्याः सन्ति । तसात् लमपञ्चवर्गा लनपञ्चवर्गाश्च सर्वेषां योगतुल्यः पञ्चगुणिततयवर्गा भवति । अयं त्रिगुणझदवर्गि सिगुणद्वजवर्गश्चानयोयोगतुल्योऽस्ति । यसिन् वृत्ते तयकं त्रिभुजं पति तत् व्यासार्द्धत्रिगुणवर्गतुल्यस्तयवर्गो भवति । यद्वृत्तान्तर्जद्वस्त्रयं पञ्चभुजं पति तत्र पञ्चगुणतद्व्यासार्द्धवर्गतुल्यो झदद्वजवर्गयोगोऽस्ति । यद्वृत्तान्तस्त्यकत्रिभुजं पति पञ्चदशगुणतद्यासार्द्धवर्गतुल्यो भवति । यद्वृत्तान्तर्जद्वस्त्रयं पञ्चगुणतद्यवर्गो भवति । यद्वृत्तान्तर्जद्वस्त्रस्यभुजं पति पञ्चदशगुणितत्यासार्द्धवर्गतुल्यस्तिगुणो झददजवर्गयोगो भवति । पञ्चगुणस्तयवर्गस्तिगुणझददजवर्गयोगतुल्यो भवति । तसात् यसिन् वृत्ते तयकत्रिभुजं पति अथ च यद्वृत्ते जदहवझं पञ्चभुजं पति द्रयोवर्यासार्द्धवर्गी तुल्यो भवतः । तसाद् व्यासार्द्धवर्गयोनस्तुल्यस्त्रयं जिल्यो भवतः । तसाद् व्यासार्द्धवर्गयोनस्तुल्यत्वाद्वर्गे तुल्यो भवतः । तसाद् व्यासार्द्धवर्गयोनस्तुल्यत्वाद्वर्गे तुल्यो जाते । इदमेवासाकिमप्टम् ॥

## अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥

द्वादशफलकघनक्षेत्रस्य पश्चभुजा यस्मिन् वृत्ते पतन्ति तदृत्तकेन्द्राक्षिःसतो लम्बः पश्चभुजस्य भुजं यदा गच्छति तदा पश्चभुजस्यैकभुजलम्बयोधीतस्त्रिशद्धणितो द्वादशफलक-घनक्षेत्रस्य संपूर्णधरातलतुल्यो भवति ।

यथा अवं तद्वृतं कल्पितं यस्यान्तद्वीदशफलक्वनसेत्रस्य पश्चमु-

जक्षेत्रं पतितम्। पश्चभुजक्षेत्रं च अबजदहं कल्पितम् । झतं लम्बः कल्पितः । अस्य पद्म-मुजस्य पद्मत्रिभुजानि भविष्यन्ति यथैकं तेषां **झदज**मस्ति । तसात् द्वादशास्त्रघनक्षेत्रस्य षष्टित्रिभुजानि भविष्यन्ति । झतलम्ब एक-भुजेन गुणितस्तदा त्रिभुजद्वयक्षेत्रफलतुल्यो



भविष्यति । तसात् त्रिंशत्घाताः संपूर्णधरातल्जुल्या भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

#### अथ पञ्चमं क्षेत्रम् ॥ ५ ॥

यद्रतान्तर्विश्रत्येस्रघनक्षेत्रस्य त्रिभुजं पतति तत्केन्द्रात् लम्बस्त्रिभुजस्य भुजे यदा गच्छति तदा त्रिभुजैकभुजलम्बघा-तिसाद्वणो विंशत्यैस्रघनक्षेत्रस्य संपूर्णधरातलतुल्यो भवति।

यशा अर्ब तद्वत्तं कल्पितं यदन्तर्विशत्येंस्रधनक्षेत्रस्य अवज्ञ-त्रिभुजं पतितम् । दहं स्रम्बः कल्पितः । त-सादस्य त्रिभुजस्य त्रीणि त्रिभुजानि भविष्य-न्ति । तेषु यथैकं द्वजमस्ति । विशत्यसघ-नक्षेत्रस्य ईदशानि षष्टित्रिभुजानि पतिष्यन्ति । त्रिभुजस्यैकमुजेन लम्बश्चेद्रुण्यते षष्टित्रिभुजा-न्तर्गतक्षेत्रद्वयफलतुल्यो भविष्यति । तसात्



विंशदूषाताः संपूर्णधरातलतुल्या भविष्यन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

# अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

# द्वादशफलकघनक्षेत्रं विंशतिफलकघनक्षेत्रं च यदैकगोला-

१ द्वादशफलक ° K., A. २ K., &. A. have फलक for अस. ३ फलक K., A. ४ फलक K., A. ५ K., A. have फलक for अस.

न्तः पति । तदैतद्धरातलयोर्निष्पत्तिस्यथा भवति यथा तद्गो-लान्तर्घनहस्तभुजनिष्पत्तिर्विशत्यस्रघनक्षेत्रभुजेनास्ति ।

अबजं तद्वृतं कल्पितं यदन्तर्द्वयोर्घनक्षेत्रयोः पञ्चभुजं त्रिभुजं

च पतितम् । अबं त्रिभुजस्य भुजः

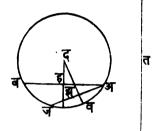
कल्पितः । अजं पश्चभुजस्य भुजः

कल्पितः । तरेखा घनहस्तभुजः क-

ल्पितः। पुनर्दहलम्बः अबरेखायां नि-

ष्कांस्यः । द्शलम्बः अजरेखायां नि-

ष्कारेयः पुनरयं लम्बो विचहपर्यन्तं



वर्द्धनीयः । पुनरवरेसा संयोज्या । इयं वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या मिवष्यति । तसात् दश्चं वृत्तवश्चाशपूर्णजीवयोयोंगार्द्धतुल्यं भविष्यति । द्वयोः पूर्णजीवयोयोंगार्द्धस्य निष्पत्तिः षडंशजीवार्द्धेन तथास्ति यथा षडंशार्द्धजीवानिष्पत्तिर्दशमांशजीवार्द्धेनास्ति । तसात् अद्वह्योरपीदृश्येव निष्पत्तिभिविष्यति । एवं तरेसाअजरेस्योरपि निष्पत्तिभिविष्यति । तसात्त्ररेसाअजरेस्योरपि निष्पत्तिभिविष्यति । तसात्त्ररेसाअजरेसानिष्पत्तिर्दश्चदृशेसानिष्पत्तितुल्या भविष्यति । तसात् अजद्भ्षघातो दृहतरेस्योघीत-तुल्यो भविष्यति । पुनिस्श्वशुणितैकघातस्त्रिश्चद्धणितद्वितीयघाततुल्यो भविष्यति । पुनिस्श्वशुणितौकघातस्त्रिशद्धणितद्वितीयघाततुल्यो भविष्यति । दृश्चअजघातस्त्रिशद्धणितो द्वौदश्चरक्षभरातलक्षेत्रफल-तुल्योऽस्ति । तसात् दृहरेसातरेस्ययोघीतस्त्रिश्चर्धणितस्तद्धरातल एवा-स्ति । दृश्चअजघातस्त्रिशद्धणितो विश्वत्यस्रघनक्षेत्रधरातलतुल्योऽस्ति । तसात्तरेस्याचिष्यत्तिः अवरेस्यया तथास्ति यथा द्वादशास्रघरातलक्षेत्रस्य विश्वत्यस्रघरातलेनास्ति । इदमेवेष्टम् ॥

अथ सप्तमं क्षेत्रम् ॥ ७ ॥ वृत्तान्तर्गतपञ्चभुजक्षेत्रकोणस्य पूर्णजीवायाः पञ्चगुणः

१-२ निष्कास्यः V. ३ द्वादशास्त्र $^\circ V$ . ४ त्रिंशहुणः V.

मा० २७

## षडंशः तद्वृत्तव्यासस्य त्रयश्चतुर्भागाश्चानवोर्घातः पत्रशुक्र-क्षेत्रफळतुस्यो भवति ।

यथा आहं वृत्तं कल्पितम् । तन्मध्ये आवकळजं पश्चभुजक्षेत्रं

किल्पतम् । सन्मुखकोणस्य बजपूर्णज्या किल्पता । अदह्व्यासः किल्पतः । दहं झिचिहे अदितं कार्यम् । तसात् अझं व्यासस्य त्रयश्चतुर्मागा भविष्यन्ति । जतस्य जयं तृतीयांशः पृथकार्यः । तसात् बवं बजस्य पश्चषष्ठांशा भवन्ति । अझिनिष्पत्तिः अदेन तथास्ति यथा बत्तनिष्पत्तिः तवेनास्ति ।



अभ्रतवधातो बतअद्धाततुल्योऽस्ति । अयं द्विगुणितअद्बक्षेत्रफ-छतुल्योऽस्ति । द्भम् अद्स्यार्द्धमस्ति । तदा बतअझ्धातः अद्बत्रि-भुजस्य त्रिगुणक्षेत्रफलतुल्यो भविष्यति । तवअझ्धातो बतअझ्धा-तयुतस्तदा अझ्बबधातः पश्चभुजस्य क्षेत्रफलं भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथाष्टमं क्षेत्रम् ॥ ८ ॥

द्वादशधरातलविशतिधरातलक्षेत्रे यदि गोलमध्ये पतत-स्तदा तद्धरातलयोर्निष्पत्तिगीलान्तर्गतघनहस्तभुजविशतिध-रातलक्षेत्रभुजयोर्निष्पत्तितुल्या भवति ।

पश्चभुजं त्रिभुजं वृत्तं व्यासश्च पूर्वोक्तवत् कल्पनीयः । बजं घनह-

स्तस्य भुजः संयोज्यः । तसात् अयं व्या-सस्य त्रयश्चतुर्थोशाः मिवष्यन्ति । तदा अ-यस्य बजपश्चगुणितषष्ठांशजसस्य च घातः पश्चभुजक्षेत्रफलतुल्योऽस्ति । तसात् अयमंशं द्वादशगुणजसेन गुणितं अथवा दशगुणित-वजेन चेद्गुण्यते तदा द्वादशधरातलक्षेत्रस्य संपूर्णधरातलफलं भवति । अयमंशं चेत्



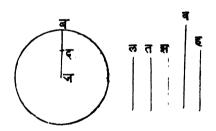
शतेन गुण्यते तदा त्रिभुजक्षेत्रफलद्विगुणं भवति । तसात् अयसंशं दशगुणितश्चतेन गुण्यते तदा विंशतिधरातलक्षेत्रस्य फलं भवति । तसात् द्वयोर्धरातलयोर्निष्यत्तिज्ञेबञ्चतनिष्यत्तितुल्या भवेत्। इदमेवेष्टम्॥

## अथ नवमं क्षेत्रम् ॥ ९ ॥

इष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्य यथा सर्वरेखामहत्खण्ड-योनिष्पत्तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्पत्तितुल्या भवति तदा सर्वरेखावर्गमहत्खण्डवर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति पुनः सर्वरेखावर्गलघुखण्डवर्गयोगतुल्यो यस्या रेखाया वर्गो भवति तदाऽनयोरेखयोनिष्पत्तितुल्या गोलान्तर्गतघनहस्तभु-जविशतिषरातलभुजयोनिष्पत्तिर्भवति ॥

यथा बजरेला कल्पिता। अस्या दिचेहे तथा खण्डद्वयं कृतं यथा

संपूर्णरेखा महत्खण्डयोनिष्य-तिर्महत्खण्डलघुखण्डनिष्यत्ति-तुल्या जाता । महत्खण्डं जदं कल्पितम् । पुनर्जबव्यासार्द्धेन अवं वृत्तं कार्यम् । हरेखात्रि-मुजस्य भुजः कल्पितः । वरे-खा पश्चभुजकोणस्य पूर्णज्या



किल्पता । झरेखा सा रेखा कल्प्या यस्या वर्गो जबवर्गजदवर्गयोग-तुल्योऽस्ति । तरेखा च सा रेखा कल्प्या यस्या वर्गो जबवर्गबदवर्ग-योगतुल्योऽस्ति । लरेखा च जदतुल्या किल्पता । तत्र हरेखावर्गो बजरेखावर्गात्रिगुणोऽस्ति । तरेखावर्गश्च दजरेखावर्गात्रिगुणोऽस्ति । लरेखावर्गादिपि त्रिगुणोऽस्ति । तसात् हरेखानिष्पत्तिर्बजरेखया तथा-स्ति यथा तरेखानिष्पत्तिर्लरेखयास्ति । पुनईहरेखानिष्पत्तिस्तरेखया तथास्ति यथा बजरेखानिष्पत्तिर्लरेखयास्ति । यदि वरेखाया एता-ह्यां खण्डद्वयं कियते यथा संपूर्णरेखाया महत्खण्डेन निष्पत्तिर्महत्ख- ण्डलघुलण्डयोर्निष्पत्तितुल्या भवति तदास्य महत्त्वण्डं झतुल्यं ग्री ष्यति । तसात् वरेखाझरेखयोर्निष्पत्तिर्वजरेखाळरेखयोर्निष्पत्तितुला भविष्यति । हरेखातरेखयोरिष निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् वरेखाहे खयोर्निष्पत्तिर्झरेखातरेखयोर्निष्पत्तितुल्या भविष्यति । इदमेवेष्टम्॥

# अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १०॥

तत्रेष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्य यथा सर्वरेखानिष्पि महत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डलघुखण्डयोरस्ति। ये वे प्रकारा अस्यां रेखायां भवन्ति ते ते प्रकारा एतन्निष्पत्तिनि भागगतास्वन्यरेखासु भवन्ति।

यथा अबं जिचेहे एतिकृषित्तिसहशं सण्डद्वयं किष्पतम् । पुनर्महत्सण्डं च अजं किष्पतम् । अन्या रेसा दृहं किष्पता । अस्या
झिचेहे तिकृष्णती सण्डद्वयं किष्पतम् । पुनर्महत्सण्डं दृझं किष्पतम् ।
अवअजनिष्पत्तिः अजजबयोर्निष्पत्तितुस्यास्ति । पुनर्दहद्द्वसिन्ध्यित्दृद्वस्यात्त्रह्मवर्गनिष्पत्तितुस्यास्ति । अववज्ञघातअजवर्गयोर्निष्पत्तिः दृहृङ्गघातद्दृश्चर्यानिष्पत्तितुस्यास्ति । चतुर्गुणअववज्ञघातअजवर्गयोगनिष्पत्तिः अजवर्वेण तथास्ति यथा चतुर्गुणितदहृहृङ्गघातव्यवज्योगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति । अववज्योगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति । अववज्योगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति । अवअजयोर्निष्पत्तिदृश्चर्योर्निष्पत्तिगुणदृह्गिष्पत्तिदृश्चनास्ति । अवअजयोर्निष्पत्तिदृश्चर्योर्निष्पत्तितुस्यास्ति । अववजनिष्पत्तिदृहृङ्गनिष्पत्तितुस्यास्ति । तसात्
अवदृश्ननिष्पत्तिः अजदृश्ननिष्पत्तितुस्यास्ति । जवहृश्ननिष्पत्तेरपि

१ निष्प<del>र</del>यापि V.

महत्त्वः ज्ञुल्यास्ति । तसात् ये प्रकारा अजजवयोर्भवन्ति ते सर्वे प्रकारा स्मारं दहह्ययोर्भवन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

ने । इन यदि 'इन श्रीमद्राजाधिराजप्रमुवरजयसिंहस्य तुथ्नै द्विजेन्द्रः श्रीमत्सन्राद्ध् जगन्नाय इति समिभधारूढितेन प्रणीते श्रन्थेऽसिन्नाम्नि रेखागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विर्रति शक्रतुल्यो गतोऽभूत्॥

॥ इति चतुर्वद्योऽध्यायः ॥ १४ ॥

2 3 mg

1

35 F

15.55 15.55

1.

i.

१ V. omits इति.

ण्डलघुसण्डयोर्निष्पत्तितुत्या भवति तदास्य महत्स्वण्डं झतुल्यं भवि-ष्यति । तसात् वरेसाझरेसयोर्निष्पत्तिर्बजरेसाल्ठरेसयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । हरेसात्तरेसयोरपि निष्पत्तितुत्यास्ति । तसात् वरेसाहरे-स्वयोर्निष्पत्तिर्झरेसात्तरेसयोर्निष्पत्तितुत्या भविष्यति । इदमेवेष्टम् ॥

## अथ दशमं क्षेत्रम् ॥ १० ॥

तत्रेष्टरेखायाः खण्डद्वयं तथा कार्यं यथा सर्वरेखानिष्पत्ति-मेहत्खण्डेन तथास्ति यथा महत्खण्डलघुखण्डयोरस्ति। ये ये प्रकारा अस्यां रेखायां भवन्ति ते ते प्रकारा एतन्निष्पत्तिनि-भागगतास्वन्यरेखासु भवन्ति।

यथा अबं जिन्हे एतिन्यत्तिसदृशं सण्डद्वयं किल्पितम् । पुनर्भहत्सण्डं च अजं किल्पितम् । अन्या रेसा दृष्टं किल्पिता । अस्या
झिन्हे तिन्नष्यत्तौ सण्डद्वयं किल्पितम् । पुनर्भहत्सण्डं दृशं किल्पितम् ।
अवअजनिष्पत्तिः अजजवयोर्निष्पत्तितुस्यास्ति । पुनर्दहद्शनिष्पत्तिदृश्गशहिनष्पत्तितुस्यास्ति । अववज्ञघातअजनर्गयोर्निष्पत्तिदृहृहृश्चातदृश्चर्गनिष्पत्तितुस्यास्ति । चतुर्गुणअववज्ञघातअजन्
वर्गनिष्पत्तिश्चतुर्गुणदृहृहृश्चघातदृश्चर्गनिष्पत्तितुस्यास्ति । चतुर्गुणअववज्ञघातअज्ञवर्गयोगनिष्पत्तिः अजवर्मण तथास्ति यथा चतुर्गुणितदृहृङ्गघातदृश्चवर्गयोगस्य निष्पत्तिदृश्चर्गणास्ति । अववज्ञयोगनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति यथा दृहृङ्गयोगनिष्पत्तिर्दृश्चेनास्ति । तस्मात् द्विगुणअवनिष्पत्तिः अजेन तथास्ति यथा द्विगुणदृह्निष्पत्तिदृश्चेनास्ति । अवअज्ञयोर्निष्पत्तिदृश्चर्योर्निष्पत्तितुत्यास्ति । अववज्ञनिष्पत्तिदृहृश्चनिष्पत्तितुत्यास्ति । तस्मात्
अवदृह्निष्पत्तिः अजदृश्चनिष्पत्तितुत्यास्ति । जबहृश्चनिष्पतेरपि

१ निष्पस्यापि V.

तुल्यास्ति । तसात् ये प्रकारा अजजबयोर्भवन्ति ते सर्वे प्रकारा दहहञ्जयोर्भवन्ति । इदमेवेष्टम् ॥

श्रीमद्राजाघिराजमभुवरजयसिंहस्य तुश्चै द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राद्ध् जगन्नाय इति समभिधारुदितेन प्रणीते अन्थेऽसिन्नाम्नि रेसागणित इति सुकोणावनोधप्रदात-र्यध्यायोऽध्येतृमोहापह इह विर्रात शक्कतुल्यो गतोऽभूत्॥

॥ इति चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

<sup>9</sup> V. omits इति.

## ॥ अथ पश्चदृशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

॥ अस्मिन्यट् क्षेत्राणि ॥ ६ ॥ ॥ अथा प्रथमं क्षेत्रम् ॥ १ ॥

तत्र व्यासार्ग्वस्य तथाविधे द्विसण्डे केर्त्तव्ये यथा व्यासा-र्ज्वस्य महत्सण्डे या निष्पत्तिस्तथामहत्सण्डस्य लघुसण्डेन भवति तदा वृत्तदशमांशस्य पूर्णज्या महत्स्वण्डं भवति ।

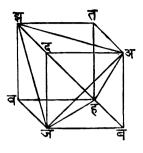
ल्यास्ति । अबबद्योर्निष्पत्तिर्वश्नश्रह्योर्निष्पत्तितुल्यास्ति । तसात् अवश्नह्यातो बद्वश्नधाततुल्यो भविष्यति । अवं वहतुल्यमस्ति । तसात् वस्त्रह्यातो बद्वश्नधातर्तुल्यो भविष्यति । वहश्नह्धातो वश्नवर्गतुल्योऽस्ति । तसात् वश्नं बजतुल्यं बद्तुल्यं भविष्यति । तसात् वश्नं बजतुल्यं बद्तुल्यं भविष्यति । तसात् वर्जं वृत्तदश्चमांशस्य पूर्णजीवा भविष्यति। इदमेवासाकिमिष्टम् ॥

## अथ द्वितीयं क्षेत्रम् ॥ २ ॥

घनहस्तक्षेत्रमध्ये यस्य फैलकाः समाना भवन्ति ताहराः शङ्करुत्पादनीयोऽस्ति ।

१ V. omits अथ. २ अपेक्षिते K., A. ३ V. notices तदा also. ४ समो K., A. ५ V. omits अथ. ६ फळकानि समानानि K., A. ७ ताहशराङ्गचिकीषोस्ति.

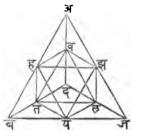
यथा बझं घनहस्तः कल्पितः । अझ-झजअजअहजहझहरेखाः संयोज्याः । तसात् अजझहमसाकिमष्टं भविष्यति । कुतः । अस्य भुजा घनहस्तभुजानां कर्णा भविष्यन्ति । इदिमष्टम् ॥



## अथ तृतीयं क्षेत्रम् ॥ ३ ॥

यस्य शङ्कोः फलकानां भुजाः समाना भैविष्यन्ति त-स्यान्तरष्टफलकक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदं शङ्कः कल्पितः । अस्य षड् अपि भुजा अद्धिताः । अद्धीचिद्वेषु रेखाः संयोज्याः । वझलयतहम् अष्टभुजक्षेत्रमुत्प-त्रं भविष्यति । इदमेवासाकिमष्टम् ॥



# अथ चतुर्थ क्षेत्रम् ॥ ४ ॥ घनहस्तक्षेत्रान्तरष्टफलकक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

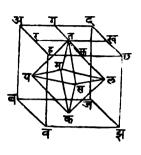
यथा अवजदहवझछं घनहस्तः कित्पतः । घनहस्तफलककर्ण-संपातचिद्वेषु रेखाः संयोज्याः । यतलकमस्थष्टफलकक्षेत्रमुत्पन्नं भविष्यति ।

### अस्योपपत्तिः ।

तचिहात् गफरेखा हअरेखायाः समानान्तरा निष्कास्या । रख-

१ V. omits अथ. २ भवन्ति V. ३ V. omits अथ.

रेखा च अद्देखा समानान्तरा निष्कास्या। अनेनैव प्रकारेण सर्वभुजेषु रेखाः संयोज्याः। तदैताः रेखाः समाना भविष्यन्ति । एता रेखास्तत्संपातचिद्देषु तत्संबन्धिभुजयोध्य रूप्ताध्य भविष्यन्ति । एतासु द्वे द्वे रेखे समकोणसंबन्धिभुजा भविष्यन्ति । तसा-देतत्कणीः समाना भविष्यन्ति । एता एव क्षेत्रभुजाः सन्ति । इदमेवेष्टम् ॥



## अथ पद्ममं क्षेत्रम्॥ ५॥

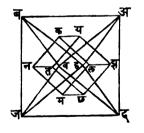
## अष्टफलकक्षेत्रमध्ये एकं घनहस्तक्षेत्रं कर्त्तुमिच्छास्ति ।

यथा अवजदहवम् अष्टफलकक्षेत्रं कल्पितम् । त्रिभुजानां केन्द्रा-ण्युत्पादनीयानि । केन्द्रेषु च रेखाः संयोज्याः । तत्र झवतयकल्पमन-मिष्टं घनहस्तक्षेत्रमुत्पन्नम् ।

### अस्योपपत्तिः ।

यदि केन्द्रेभ्यक्षिभुजभुजेषु लम्बा निष्कास्यास्ते सर्वेऽपि लम्बाः

समाना भविष्यन्ति । ते लम्बाः समानकोण-संबन्धिभुजा भविष्यन्ति । कुतः । अष्टफल-कक्षेत्रस्य फलकद्वयसंबन्धजनितकोणाः ख-समाना भैवन्ति । समाप्तकोणस्य भुजा धन-हस्तभुजतुत्या मिथः समाना भविष्यन्ति । तेषां मध्ये चत्वारश्चत्वार एकधरातलवेष्टनं



करिष्यन्ति । यदि केन्द्रेषु कोणचिह्नेषु च रेखाः संयोज्यन्ते तदैता रेखाः समाना भविष्यन्ति । समानकोणसंबन्धिभुजा भविष्यन्ति ।

९ सम्बा भविष्यन्ति V. २ V. omits अथ. ३ भविष्यन्ति K., A.

प्रत्येकचतुर्भुजस्य कर्णाः समाना भविष्यन्ति । तसात् समचतुर्भुज-समकोणा भविष्यन्ति । तदोत्पन्नं घनहस्तक्षेत्रं भविष्यति । इदमवेष्टेम्।

## अथ पष्टं क्षेत्रम् ॥ ६ ॥

तत्र विशतिफलकक्षेत्रमध्ये द्वादशफलकक्षेत्रचिकीर्षास्ति । यथा अवजहदयझछतयकलं विशतिफलकक्षेत्रं कल्पितम् । अस्य त्रिभुजानां केन्द्राण्युत्पादनीयानि । तेषु चिह्नानि कार्याणि । तत्र रेसाः संयोज्याः । तस्मादुत्पन्नं क्षेत्रमिष्टं भविष्यति ।

### अस्योपपत्तिः ।

यदि एभ्यः केन्द्रेभ्यो लम्बार्स्विभुजेषु निष्कास्यन्ते । एते लम्बाः

समाना भविष्यन्ति । समकोणसंबन्धिभुजा भविष्यन्ति । तसात् कोणसन्मुसभुजाः सं-माना भविष्यन्ति । तासु पञ्चपञ्चरेसा एकघ-रातैले वेष्टनं कुर्वन्ति ।

पुनरि यदि विंशतिफलकक्षेत्रकर्णः सन्मु-स्वकोणगतो भवति । कर्णाद्धीच पश्चित्रभुजेषु लम्बा निष्कास्याः । त्रिभुजानि तथाविधानि कार्याणि येषां कोणाः कर्णशिरःसंभक्ता भव-नित । एते लम्बाः समानाश्च स्यः । पुनर्यत्र

छम्बाः पतन्ति ततः कर्णोपरि छम्बा निष्कास्याः । तदैते छम्बा एकस्मिन्नेव चिह्ने पतिष्यन्ति । तसात् पञ्चरेस्वा याः केन्द्रसंसक्ता-स्ता एकसिन्नेव घरातछे भविष्यन्ति । पुनरपि त्रिमुजकेन्द्राणामन्तराणि छम्बानां संपातचिह्नात् समानानि भविष्यन्ति । प्रत्येककेन्द्रद्वयान्तर-मपि मिथः समानमस्ति । तदा पञ्चसमभुजकोणा अपि समाना भवि-

९  $V.\ omits$  अथ. २ त्रिभुजभुजेषु निष्कास्यन्ते  $V.\$ ३  $V.\ inserts$  अपि. ४  $^{\circ}$ तळवेष्टनं  $V.\$ ५ संसक्ता V.

व्यन्ति । पश्चसम्भुजक्षेत्रस्य ऋयक्षयः कोणाः इष्टक्षेत्रस्य कोणाः स्यः । तस्मादिष्टक्षेत्रस्य कोणा अपि समाना भविष्यन्ति । इदमेवास्य-कमिष्टम् ॥

श्रीमद्भाजाधिराजमभुवरजयसिंहस्य तुष्टौ द्विजेन्द्रः श्रीमत्सम्राह् जगन्नाथ इति समभिधारुदितेन प्रणीते । मन्येऽसिम्बाम्नि रेसाग्रियत इति सुकोणायबोधप्रदादन-र्यध्यायोऽध्येतृमोहायह इह विरति विश्वसंक्यो सकोऽन्ये ॥

पारम्पर्धवद्यादेतदागतं घरणीतके ॥

तद्विष्मिनं महाराजजनसिंहात्वा पुनः ।

प्रकाशितं मगा सम्यग् गणकानन्दहेतवे ॥
२ V. has after this समाप्तोऽयं प्रन्थः । शुर्भ भूयात् । सं० १७८४.

युगवसुनगभूवर्षे शुनि शुक्ते युगतिथौ रवेर्गरे ।

व्यक्तिकाकमणिः किल समाजामाक्षया प्रसाम ॥ १ ॥

जिल्पकारकीयं प्रोक्तं अद्याणा विश्वकरीचे ।

<sup>9</sup> K., A. have-

### APPENDIX I.

Collation of the Ms. of the Rekhaganita in the Benares Sanskrit College Library, the one copied by Lokamani under instructions from Jayasimha.

### DESIGNATED V.

### Books VII., VIII., IX.

Page 1 L. 2 तत्रोनचत्वारिंशत्°.

" L. 6 सन् is omitted.

L. 10 समानं भागद्ववं for भागद्वयं समानं.

 $_{,,}$   $_{L}$ .  $_{18}$  स विषमविषमः ।

Page 3 L. 5 and 12 °रपवर्श्नदः.

" L. 18 **अह**शेषं.

Page 4 L. 8 °रपवर्तको.

••

,,

 $_{,,}$  L. 10 महदङ्करूपनं कियते.

L. 17 करिप्यति for करोति.

Page 5 L. 4 चतुर्थक्षेत्रम्.

 ${
m L.}~~11-12~$ °रपवर्त्तनाह्वेन.

,, L. 16 °वोंगो राशियोगस्य स एवांशो भविष्यति.

Page 7 L. 1 जहासुमयो:.

,, L. 3 पुनः प्रकारान्तरम्.

. L. 10 अथाष्ट्रमक्षेत्रम्

Page 8 L. 4 जझस्यांशी यथा भवतस्तथा.

 ${f L}$ .  ${f 6}$  नवमक्षेत्रम्.

Page 9 L. 2-3 याबदंशो भविष्यति.

L. 13 अधैकादशक्षेत्रम्

Page 11 L. 2 °र्निष्पत्तेर्निश्वयः.

.. L. 12 erg is omitted.

,, L. 25 निष्पत्तिविनिमयः.

Page 12 L. 10-11 तसाइपं अवं

```
Page 14 L. 2 करिपतम.
         L.
               9 अयोनविंशति°.
         L. 19-20 मं कल्पितम्.
         L.~20 सं कल्पितम्.
         L. 21 सं हं जातम्.
Page 16 L. 3 तदा वते त एवां°.
Page 17 L. 2 हो भिनाहा°.
         L. 12 मिलाक्रो for मिली.
         L. 14-15 जं बाझदिमो भविष्यति.
Page 18 L. 22 Pagi for Pagi.
Page 19 L. 9 इदमेवास्माक°.
Page 23 L. 2 तं अं.
          L. 11 निःशेषो.
         L. 17 अं वं प्रत्येकं जां निःशेषं.
Page 26 L. 3 भविष्यति.
         L. 11-12 For तज्ञामक: the Ms. has हरनामक: on
                   the margin (p. 150 Ms.).
Page 28 L.
               1 प्रारभ्यते is omitted.
Page 29 L.
              5 मं बं.
         L. 18 मविष्यतः for भवतः.
Page 30 L. 1 अब चतुर्थे क्षेत्रम्.
         L. 5 तलध्वहः.
  ,,
         L. 8 ललपाइ:.
         L. 9 तथा is omitted.
         L. 11 लसनमभ\S।°.
Page 31 L. 1 छनि:शेषकमासीत.
         L. 3-4 तस्मात् लसनमा.
  ,,
         L. 5 अथ पद्ममक्षेत्रम्.
         L. 7 भवति for भविष्यति.
  ,,
Page 32 L. 6 अय सप्तमक्षेत्रम्.
         L.
```

7 आव**डो**°.

Page 33 L. 3 अवनिष्यत्तिसमास्ति. Page 34 L. 2 तथा for यथा.

Page~35~L. 4 घनस्य घनेन निष्यित्त°.

" L. 23, विष्यतिसमा भविष्यति.

Page 36 L. 1 वनसतगफकएते.

" L. 18 इदमेवास्माकमिष्टम् after करिष्यति.

 ${f L}$ . 22 पश्चदशं क्षेत्रम्.

Page 37 L. 1 जः भुजः कल्पितः.

, L. 7 करिष्यति for करोति.

Page 38 L. 6 इदमेवास्मदिष्टम्.

" L. 20 अनयोर्निष्पत्तिः कमिन्यत्तितुल्या आसीत् । ज्रह्मनिष्पत्तितुल्याप्यासीत् । कृतः । हं कमाभ्यां गुणितौ अनौ
जातौ । पुनः स्वनिष्पत्तिमेलनिष्पत्तितुल्यास्ति । ज्रह्मनिष्पत्तित्तस्याप्यस्ति । &c.

 ${f L}$ . 23 इदमेवास्मदिष्टम्.

Page 39 L. 5 करोति । हः जं झतुल्यं निःशेषं करोति इति कल्पितम् । पुनर्दः जं बतुल्यं निःशेषं करोति । हः बं खतुल्यं निःशेषं करोति । क्षः वं खतुल्यं निःशेषं करोति । &c.

 ${f L}$ . 6 **अबी** सजातीयी घाती.

Page 40 L. 1 हतघातः कलघातत्रस्यः.

 ${f L}$ . 7 एकरूपनिष्पत्ती.

Page 41 L. 15 इदमेवास्मदिष्टम्.

Page 42 L. 14 भविष्यत: for भवत:.

Page 43 after L. 13 and before अस्योपपत्ति: L. 14 the Ms. has यथा आबी घनफलाड़ी सजातीयों कल्पिती। एती द्वर्योधनयोनिष्यता भविष्यतः।

,, L. 25 समाप्तः is omitted.

Page 44 L. 3 तत्र प्रथमक्षेत्रम्.

, L. 12 अथ द्वितीयक्षेत्रम्.

L. 24 अथ तृतीयक्षेत्रम्.

Page 45 L. 8 अथ चतुर्थक्षेत्रम्.

 $\mathbf{L}^{-1}$ ं क्षेत्रम्.

Page 46

हेत्रम्.

इः for योगाइ:.

# वर्गो भविष्यति, the Ms. has यतो रूप-



### निष्पत्तिः बेन तथास्ति वथा बनिष्पत्तिः बेनास्ति । अने-नैव प्रकारेण श्रुः वर्गे भविष्यति । पुनर्काः घनोऽस्ति ।

Page 47 L. 15 दशमं क्षेत्रम्.

L. 17 'बेदवर्गी भवति for 'बेहुर्गी न अवति.

 ${f L}$ .  $22 ext{-}3$  अविनिष्पत्तिसमास्ति ।

Page 48 L. 24-5 हुआ जारी कमेण तुल्यं निःशेषं करिष्यतः.

Page 49 L. 2 हः वं निःशेषं करिष्यति.

Page 50 L. 10 हुई कल्पित:.

Page 51 L. 3 इष्टमस्मत्समीचीनम्।

" L. 14-15 तस्य दशस्य वर्गश्च दहहश्चघातो द्विगुणः दहवर्ग-हञ्चपंगोगतुल्यश्वास्ति ।

Page 52 L. 15 अथैकोनविंशं क्षेत्रम्.

Page 53 L. 1 विंशतितमं क्षेत्रम्.

L. 14 एकविंशतितमं क्षेत्रम.

Page 54 L. 5 विषमतुस्वा विषमाङ्काः

Page 55 L. 17 अष्टाविशतितमं क्षेत्रम्.

Page 57 L. 10 प्रकटमेवास्ति.

,, L. 15 पत्रत्रिशत्तमं क्षेत्रम्.

Page 59 L. 18-19 कहुयोगेन तुल्या अविष्यतिः

Page 60 L. 18 The Ms. omits start:

### APPENDIX II.

The Variae Lectiones of the Ms. of the work in charge of the Anandas'rama, Poona, as compared with the text. The Ms. was received for collation through Prof. S. R. Bhandarakar.

Page 1 L. 2 The Ms. drops श्रीलक्ष्मीनृशिंहाय नमः ॥

,, L. 3-4 For the first verse गणाधिपं—the Ms. has two verses गजानसं गणाधिपं—as found in K.

Page 2 L. 5 तदुच्छिमं for तद्विच्छिमं.

Page 3 L. 1 प्रारम्यते is dropped.

Page 3 L. 2 अत्र for तत्रासिन्,

,, सन्ति after पश्चदशाध्यायाः.

,, L. 3 The Ms. omits the sentence तत्र प्रथमा°— प्रदर्शन्ते.

,  ${f L}$ . 5 बिन्दुर्वाच्यः for बिन्दुशन्दवाच्यः.

L. 7 विस्तारदैर्ध्ययोर्थक्रियते for यच विस्तारदैर्ध्याभ्यां भियते.

,, त**र् धरातलं** तदेष क्षेत्रम् for तस्रातलक्षेत्रसंत्रं भवति.

,, ,, After भवति the Ms. inserts तद्भिविधम्। एकं जल्बत् समं द्वितीवं विषमम्.

,, L. 8 एका वका अन्या सस्ला for एका सरला अन्या वका.

" L. 10-11 विन्दुनाच्छायन्ते for विन्दुनाच्छादिता इव दृत्यन्ते.

L. 11 क्रेया is omitted.

" L. 12-13 भरातस्मिप समं विषमं च होयम्। समं यथा। यत्र विन्दृत् for अथ धरातल°—विन्दृत्.

L. 14 अवति for सात्.

, L. 15 अन्यथा विषमम् is dropped.

" L. 17 या सूच्यु for सूच्यु and स for सैव.

 $_{
m p}$ ,  $_{
m L}$ .  $_{
m 18}$  समकोणः विषमकोणः  $_{
m for}$  समो विषसः

, ,, After विवयकोषण the Ms. inserts अग्र समकोण-विवयकोषककृष्यम्

```
3 L. 19 भवत: for स्त:.
Page
        4 L. 4 समकोणस्त for इह समकोण:.
Page
                सरलक्रटिलरेखाभ्यां is dropped.
                8 तत्र is dropped.
                 उच्यते for भवति.
          L. 9 तच is dropped.
         L. 12 The Ms. agrees with D. for तसादेव &c.
   "
                    in place of बकाकारा &c.
         L. 14 वृत्तं क्षेत्रं for वृत्तक्षेत्रं.
        5 L. 1 मध्यविन्दु for बिन्दु:.
Page
          L. 2 Hald for Rula.
           L. 4 केन्द्रगा नं भवति for केन्द्रगा न स्थात्.
           L. 11 तत् त्रिअणं for तत्.
           L. 12 यत्रेको° for यस्येको°.
                  न्यूनकोणी for न्यूनी.
                 स्तः is dropped.
                  अधिककोणं त्रिभुजं for अधिककोणत्रिभुजं.
   ,,
        6 L.
                1 ₹ is dropped.
                  न्यूनकोणं भवेत् for न्यूनकोणत्रिभुतं स्यात्.
                3 अथ च after समानं.
                  यद्यपि for अपि.
                5 अथ च after समानं.
                  मिथः is dropped.
            "
                6 आयतं च श्रेयम् for आयत्तवंत्रम्.
           L.
                7 समं for च समं
   ,,
                   विषमकोणं सम<sup>°</sup> for विषमकोणसम<sup>°</sup>.
Page
                2 च before श्रेयम्.
                6 The Ms. agrees with D. and K. in its
   "
                     omission.
        8 L.
                 8 यावतः for यावन्तः.
           L. 11 तस्य for तत्र.
          ^\circL. 13 यत्राल्प^\circ for यत्र च स्वल्प^\circ. \cdots
                   The Ms. inserts wash after "-at.
   "
```

Page 8 L. 14 'रेसाद्वयसंयोगं for 'रेसाद्वयसंयोगः.

" L. 19 प्रथमक्षेत्रम् for प्रथमं क्षेत्रम्.

" L. 20 तत्र is dropped.

L. 21 च is dropped.

Page 9 L. 2 बकेन्द्रं.

,,

" " द्वितीयं is dropped.

" L. 4 ततः for तत्र.

 ${f L}_{f s}$   ${f 5}$  जातं समानित्रभुजम् ${f \cdot}$ 

.. L. 7 अतो for यतो.

" L. 8 The Ms. inserts कुत: before अजरूत स

 ${f L}$ .  ${f 11}$  अथ द्वितीयक्षेत्रम्.

 $\mathbf{L}$ . 12 तत्र is dropped.

" L. 14 कल्पितम् is dropped.

, L. 17-18 तदेव for **दव.** 

" L. 18 ₹ is dropped.

" L. 19 पुनर is dropped.

Page 10 L. 1 दशरेका समानास्ति।

L. 2 तत्र and अस्ति are dropped.

" L.  $3 \blacktriangleleft \text{ is dropped.}$ 

" " पुनर् is dropped.

,, , , च and अस्ति are dropped.

,, L. 5 °समाना जातास्तीति.

Page 10 L. 6 अथ तृतीयक्षेत्रम्.

L. 8 इति चेत् is dropped.

Hereafter only material changes are noted, as the Ms. is found to agree mostly with D.

Page 14 L. 6 इसी तु for इसी तौ.

Page 15 L. 10 कार्यम् for कृतम्.

Page 25 L. 15 'दिषको भवति for 'दिषको भवतीति निरूप्यते.

Page 35 L. 7 The Ms. inserts तस्मादुक्तमेव सिद्धम् after इदमञ्जपकम्.

Page 60 L. 2 यथान्येष्ट° for यथेष्ट°.

Page 62 L. 13 After °णोस्ति, the Ms. reads as under:—
यदा अवं आजं तुल्यं भविष्यति तदा तविहं खिवहं
भविष्यति द्ताजं सरके कारेखा भविष्यति । यदा अवं आजादिघकं स्यात् तदायवा तविहं खिवहं न भविष्यति अथवा
अन्यचिहं भविष्यति । तिचहं हाखरेखोपरि पतिष्यति वा हाखरेखाया बहिः पतिष्यति । क्षेत्रज्ञवेऽपि &c•

Page 82 L. 5-6 खण्डद्वयं समानं कार्यमध्या खण्डद्वयं च न्यूनाधिकं कार्ये तदा खण्डद्वयघात &c.

Page 108 L. 13-16 व्याससूत्रवृत्तपालिसंपातजनितः वृत्तान्तर्गतकोणः सर-लरेखोत्पन्नेभ्यः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्योऽधिको भवति । लम्बवृत्तपालिसंपातजनितः कोणः सर्वेभ्यो न्यूनकोणेभ्यो न्युनो भवति ॥

Page 124 L. 17-18 तत्र बृत्ताद्वहिर्द्रस्थितैकिचहादेका रेखा कर्णानुकारा वृत्त-पालिमात्रलमा कार्या &c.

Page 134 L. 19 बकोणः संपूर्णसण्डद्वययोगतुत्यद्कोणतुत्योऽस्ति for ब कोण उभयोरेक एवास्ति । शेषम् is dropped.

Page 144 L. 5 महान् गुणगुणितलघुतुल्यो भवति is dropped.

,, L. 7 लघोर्याबद्धाततुल्यं भवति महान् गुणगुणितलघुतुल्यं भवति तत्रेको राशिद्वितीयराभे &c.

Page 147 L. 16 द्वितीये for तृतीयगुणनफले.

Page 199 L. 3-4 पुनस्तगं तनतुल्यं प्रवक् कार्यम् । मसं सम्रतुल्यं .....

 ${f L}$ . 8 मगक्षेत्रं for सबक्षेत्रं.

 $_{,,}$  m L. 9 हस्तक्षेत्रं for सफ्यक्षेत्रं.

" L. 10 ह्वलण्डोपरि for अहलण्डोपरि.

" " हसक्षेत्रं for अफक्षेत्रं.

" L.~11 आह्दितीय $^\circ$  for ह्वदितीय $^\circ$ .

,, " मसक्षेत्रं for हसक्षेत्रं

Page 201 L. 20 झहवर्गेणा° for दह्दर्गेणा°. Vol. II.

Page 5 L. 6 भवन्ति for भवति.

,, L. 15-16 तदानयोर्योगः राश्चियोगस्य एवांशो भविष्यति for तदा तयोर्योगो राश्चिभविष्यति ।

Page 69 L. 19 कल्पनीया भवति for कल्पनीयो भवति.

### NOTES.

#### BOOK VII.

#### DEFINITIONS.

A number.

बृहदक्को गुणगुणितस्ववद्वतुस्योऽस्ति=The greater number is a multiple (lit. equal to the less number repeated a number of times) of the less number.

समाङ्क=An even number.
विषमाङ्क=An odd number.
छडिश्र=A quotient.
प्रथमाङ्क=A prime number.
बोगाङ्क=A composite number.
मिडितसंश्रो=Commensurable.
इर=A divisor.
भिनाङ्क=Incommensurable.
समसम=Evenly even.

A समसम number is defined as one which, when divided by an even number, gives an even quotient. This is not a very accurate definition. 24 when divided by 8 gives 3 as its quotient, and when divided by 6 gives 4 as its quotient. Is 24 then समसम according to definition 6 of समिष्यम according to definition 8? To make the definitions 6 and 8 accurate, therefore, we should understand समेन to be equal to बावस्समेन, i. e., all even numbers.

A समसम number is thus equal to that which all even numbers which measure it measure it by even numbers; and a समितिस number is one which all even numbers which measure it measure it by odd numbers.

A gof or perfect number is one which is equal to the sum of

its measures. Thus the numbers that measure 6 are 1, 2, and 3 and their sum (1+2+3) is 6. The numbers that measure 28 are 1, 2, 4, 7 and 14 and their sum (1+2+4+7+14) is 28. A list of such numbers is given in the Introduction to Vol. I. *Vide* Intro. p. 12 foot note.

Prop. I.

अपवर्तनाङ=A common measure.

Prop. IV.

A small number or quantity is a part of a large number or of its multiple.

Prop. VI.

यावदंशः=Parts.

Bil.'s def. of parts is as under:-

When a less number does not measure a greater one, the less is parts of the greater.

The enunciation of Prop. VI. is-

If two numbers are the same parts of two other numbers, then the sun of the first two shall be the same parts of the sum of the second two.

6 and 8 are the same parts of 9 and 12, therefore 14 is the same parts of 21.

Prop. XI.

निष्यसि=Ratio.

Prop. XXVIII.

The latter part of the definition seems faulty. 'तदा तावङ्काविष मित्री भविष्यतः' should be the reading in place of 'तदा तदङ्कवोगयो-स्नारमपि मित्रं मविष्यति।'

Prop. XXXVII.

If one number measures another number, the quotient is a part called by that name (i. e. by the name of the divisor).

Bil.'s enunciation of it is as under:-

'If a number measure any number, the number measured shall have a part after the denomination, of the number measuring.

The Prop. means that if 3 measure any number, that number

has a third part, if 4 measure any number, that number has a fourth part and so fourth.

Prop. XXXVIII.

Bil.'s enunciation of it is:-

'If a number have any part, the number whereof the part taketh its denomination shall measure it.'

#### BOOK VIII.

Prop. XVI.

If between two like superficial numbers there is a mean proportional number, then the ratio of the products shall be equal to the square of the ratio of their sides of like proportion.

सञातीयघातफडाङ्की=Products of two numbers which are their sides (भुजी) are called घातफडाङ्की and when the sides are in the same ratio, the products are said to be like or similar.

6 and 24 have 2 and 3 and 4 and 6 respectively as their sides and 2 and 3 are in the same ratio as are 4 and 6. 6 and 24 are their like superficial or plain numbers.

Prop. XVII.

:

· **X** :

संज्ञातीयजनके=Solid numbers are those which are products of three numbers. Like solid numbers, 30 and 240, have 2, 3 and 5, and 4, 6 and 10 as their sides and these sides are in the same ratio. Therefore 30 and 240 are similar solid numbers.

#### BOOK IX.

Prop. XIL

Page 49 कविषतस् in L. 3 seems to be improper. It should be जातस्.

Prop. XXVII.

Page 55 L 15. It should be होष: अर्ज जदम् instead of होष:

Prop. XXXVII.

If in a certain series of numbers which are in the same ratio a number equal to the second be taken from the first and also from the last, then the ratio of the first remainder to the first

number shall be equal to that of the second remainder to the sum of all the terms in the series except the last.

अवायक्रयोगेन is the reading of all the Mss. It is equal to the sum of all the terms beginning with अन except the last. Prop. XXXVIII.

This Prop. pertains to a perfect number. In a certain series of numbers beginning with unity, in which each succeeding number is double of the preceding one and the terms are in a duplicate ratio, if the sum of the terms be a prime number, then the product of this sum and the last number shall be a perfect number.

1, 2, 4, 8, 16—The sum of this series is 31, a prime number. Then the product of 16 and 31, which is 496, is a perfect number.

#### BOOK X.

#### Definitions.

मिकितप्रमाणानि=Commensurable magnitudes (lines, superficies and solids).

सिम्म्यमाणानि=Incommensurable magnitudes.

मिलितवर्गाभिषा रेखा:=Lines commensurable in power.

भिववगंभिषा रेखा=Lines incommensurable in power.

मूखद्राचि:=Rational. It comprehends

- 1 The line first supposed and set forth,
- 2 Lines commensurable to it,
- 3 The square on it,
- 4 Such superficies as are commensurable to the square.

करणी=Surds or irrational. It comprehends

- 1. The line which is incommensurable to the first line supposed and set forth,
- 2. The superficies which is incommensurable to the square described on the rational line first supposed and set forth,
- 3. The line the square of which shall be equal to the above superficies.

करणी or रजज़करणी originally meant a cord of reeds used by

the sacrificial priest to measure the side of a square altar. It then came to mean the side of a square and lastly the square root of a number which cannot be worked out exact, but which can be represented only graphically. *Vide* Dr. Thebaut's Article on the *S'ulva Sūtras* in the Journal of the Asiatic Society of Bengal 1875, pp. 274-5.

Prop. XV.

If the sides containing a rectangle be rational, the rectangle shall also be rational.

अक्रसंज्ञाई=rational.

Prop. XVII.

It teaches what a medial superficies and a medial line are. A rectangle which has its sides commensurable in power only and not in length shall be irrational and is called a medial superficies; and the line the square of which is equal to this figure is irrational and is called a medial line.

Prop. XXXIV.

It teaches the formation of the first bi-medial line. If two medial lines commensurable in power only and containing a rational superficies be added together the line thus formed shall be irrational and is called the first bi-medial line.

Prop. XXXV.

It teaches the formation of the second bi-medial line. If two medial lines commensurable in power only and containing a medial superficies be added together, the whole line is irrational and is called the second bi-medial line.

Prop. XXXVI.

अधिकरेला=A greater line.

If two lines be incommensurable in power, the sum of their squares be rational and twice their rectangle be a medial superficies, then the whole line formed by these two lines shall be irrational and is called a greater line.

Second definitions p. 90.

प्रथमकार्गनिक=The first binominal line.

This and other lines are all explained in the Intro. to Vol. I. pp. 15-19.

Prop. LII.

प्रयममध्ययोगरेला=The first bimedial line.

Prop. LXX.

अन्तररेखा=A residual line.

Prop. LXXIII.

न्यूनरेखा=A less line.

Third Definitions (p. 110).

प्रथमान्तररेखा=The first residual line.

Prop. LXXXIX.

प्रथमसम्बाह्य = The first medial residual line.

BOOK XI.

Definitions.

Que:=Depth.

धनक्षेत्रस्=A solid body.

sis:=A cone or a pyramid.

छेदितवनक्षेत्रम्=A prism.

गोकक्षेत्रम्=A sphere.

स्चीफककशकूषनक्षेत्रम्=A pyramid.

समतकमस्तकपरिधिरूपं शङ्कुघनक्षेत्रम् or समतकमस्तकशङ्कुक्षेत्रम्=A

cylinder.

धनकोण:=A solid angle.

Prop. XIX.

संपातरेखा=Common section.

Prop. XXIV.

समानान्तरधरातस्थनक्षेत्रम्=A parallelepiped.

Prop. XL.

धनहस्तक्षेत्रम्=A parallelepiped.

#### BOOK XII.

Prop. III.

त्रवस्त्रकदशङ्कः=A pyramid having a triangle as its base.

Every pyramid having a triangle as its base may be divided

into four parts of which two are pyramids equal and like to one another and the other two are equal prisms greater than half the whole pyramid.

Prop. IV.

If two pyramids of equal altitudes having triangles as their bases be each divided into two pyramids and two prisms as in the preceding proposition, then the ratio of their bases shall be equal to that of the prisms.

Prop. IX.

A cone (शक्कु) is a third part of a cylinder (समतस्मस्तकपरिधि) having the selfsame base (तस्त) and altitude (मस्तकपरिधि) with it.

Prop. XIV.

Two concentric spheres being given, it is required to inscribe in the greater sphere a solid figure of many sides (i. e. a polyhedron), the superficies of which shall not touch the less sphere and if a similar polyhedron be inscribed in another sphere, these two polyhedrons shall be in treble ratio of that in which the diameters of the spheres are.

#### BOOK XIII.

Prop. II.

No enunciation is given for this Prop. and it simply seems to be an alternative proof of the 1st Prop. Prop. IV.

For this also no enunciation is given and the Prop. seems to be an alternative proof of Prop. III.

### ERRATA.

Page.	Line.	Incorrect	Correct.
2	21	पुत	एतत्
3	8	कृतवान्	<b>कृतव</b> त्
24	21	°मन्यांकं	<sup>°</sup> मन्बा <del>ङ</del> ्क
85	19	द्वाविंशतितमं	द्वात्रिंशत्तमं

RETURN TO the circulation desk of any University of California Library or to the NORTHERN REGIONAL LIBRARY FACILITY Bldg. 400, Richmond Field Station University of California

Richmond, CA 94804-4698

#### ALL BOOKS MAY BE RECALLED AFTER 7 DAYS

- 2-month loans may be renewed by calling (510) 642-6753
- 1-year loans may be recharged by bringing books to NRLF
- Renewals and recharges may be made
   4 days prior to due date

DUE AS STAMPED BELOW			
NOV 2 6 2003			
		, ill del cons	
	<del></del>		
DD20 15M 4-02			



